॥ श्रीः ॥

तथा

श्रीयुत लाला भक्तराम मेम्बर धर्मसभा
जालंधरने सज्जनोंके विनोदार्थ संग्रह किया

नववींबार—विस्तारपूर्वक

बम्बई

मुद्रितकर प्रकाशित किया.

॥ श्रीः ॥

रागरत्नाकरका-

अक्षरोंके क्रमसे पदोंका सूचीपत्र।



(ओ-औ)

(अं)

(ख)

(ग)

(घ)

(च)

(छ)

(ज)

(भ)

(म)

॥ इति रागरत्नाकर पदसूची समाप्त ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ।

रागरत्नाकर ।



मंगलाचरणश्लोकाः ।

अंसालंबितवामकुण्डलधरं मंदोन्नतभ्रूलतं
किंचित्कुंचितकोमलाधरपुटं साचिप्रसारेक्षणम् ॥
आलोलांगुलिपल्लवैर्मुरलिकामापूरयंतं मुदा
मूले कल्पतरोस्त्रिभंगललितं ध्याये जगन्मोहनम् ॥ १ ॥
जातु प्रार्थयते न पार्थिवपदं नैन्द्रे पदे मोदते
संधत्ते नवयोगसिद्धिषु धियं मोक्षं च नाकांक्षति ॥
कालिंदीवनसीमनि स्थिरतडिन्मेघद्युतौ केवलं
शुद्धे ब्रह्मणि बल्लवीभुजलताबद्धे मनो धावति ॥ २ ॥
ज्ञातं काणभुजं मतं परिचितैवान्वीक्षिकी शिक्षिता
मीमांसा विदितैव सांख्यसरणिर्योगे वितीर्णा मतिः ॥
वेदांतः परिशीलितः सरभसं किंतु स्फुरन्माधुरी-
धारा काचन नंदसूनुमुरली मच्चित्तमाकर्षति ॥ ३ ॥
काषायान्न च भोजनादिनियमान्नो वा वने वासतो
व्याख्यानादथवा मुनिव्रतभराच्चित्तोद्भवः क्षीयते ॥
किन्तु स्फीतकलिंदशैलतनयातीरेषु विक्रीडतो
गोविन्दस्य पदारविन्दभजनारंभस्य लेशादपि ॥ ४ ॥
मेघैर्मेदुरमंबरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमै-



नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय ॥
इत्थं नंदनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंजद्रुमं
राधामाधवयोर्जयंति यमुनाकूले रहःकेलयः ॥ ५ ॥
फुल्लेंदीवरकांतमिंदुवदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ॥
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूषं भजे ॥ ६ ॥
वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात
पीतांबरादरुणविम्बफलाधरोष्ठात ॥
पूर्णेन्दुसुंदरमुखादरविन्दनेत्रात
कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥ ७ ॥
ध्यानाभ्यासवशीकृतेन मनसा यन्निर्गुणं निष्क्रियं
ज्योतिः किंचन योगिनो यदि परं पश्यंति पश्यंतु ते ॥
अस्माकं तु तदेव लोचनचमत्काराय भूयाच्चिरं
कालिन्दीपुलिनेषु यत्किमपि तन्नीलं महो धावति ॥ ८ ॥
कुर्वंति केऽपि कृतिनः क्वचिदप्यनंतं
स्वांतं विधाय विषयांतरशांतिमेव ॥
त्वत्पादपद्मविगलन्मकरंदबिंदु-
मास्वाद्य माद्यति मुहुर्मधुलिण्मनो मे ॥ ९ ॥
केचिन्निगृह्य करणानि विसृज्य भोग-
मास्थाय योगममलात्मधियो यतन्ते ॥
नारायणस्य महिमानमनंतपार-
मास्वादयन्नमृतमारमहं तु मुक्तः ॥ १० ॥

दोहा—श्रीगुरु श्रीगोविंदपद, मङ्गलहित करुँ ध्यान।
मङ्गल श्रीव्रजराज वर, जो पाऊँ सन्मान ॥ १ ॥

गोपी गोपी जगतमें, जिनकी उलटी रीति ।
तिनके पग वन्दन करूँ, करी कृष्णसों प्रीति ॥ २ ॥
हाथ जोरि विनती करों, सुनो गरीब निवाज ।
अपनोही करि जानिये, बाँहगहेकी लाज ॥ ३ ॥
नन्दरायके लाडिले, भक्तन प्राण अधार ।
भक्तरामके उर बसो, पहिरे फूलनहार
भक्ति भक्त भगवन्त गुरु, चतुर नाम वपु एक ।
तिनके पगवन्दन किये, नाशत विघ्न अनेक ॥ ५ ॥
तिनपर भ्रमर समान नित, अटकि रहै मन मोर ।
भक्तराम कबहू नहीं, चितवें काहू ओर ॥ ६ ॥
हर्षि देहु वर मांगहू, यशुमति जीवनमूर ।
नित दासनके पगनकी, भक्तरामको धूर ॥ ७ ॥

समाजी वचन ।

श्रीब्रजराजकुमारवरगाइये, आनन्दकीनिधिवरगाइये ॥
भक्तनकोमनभावतोगाइये, श्रीलाडिलीललनवरगाइये ॥
दोहा—नवरसमें कवियन कह्यो, सरस अधिक शृङ्गार ।
ताहूमें अतिसरस पुनि, सो यह रासविहार ॥ १ ॥
नवहि अङ्ग शृङ्गारके, होरी चोरी दान ।
छलहिकरन वनऋतुगमन, विरहमिलन अरु मान ॥ २ ॥
नागरिया नवनागरी, खेलत रास विलास ।
पल पल वारों हे सखी, नित नव नागरिदास ॥ ३ ॥
चन्द्रमिटै दिनकर मिटै, मिटै त्रिगुण विस्तार ।
दृढव्रत श्रीहरिवंशको, मिटै न नित्य विहार ॥ ४ ॥
काहूके बल भजनको, काहूके आचार ।

व्यास भरोसे कुँवरके, सोवत पाँव पसा ॥ ६ ॥
मुरली मदनगुपालकी, बाजत गहर गँभीर ।
कृष्णनाम बाजत सुनी, कालिन्दीके तीर ॥ ६ ॥
सुख मन रूप अनूपहै, कहे वरणे कवि न्द ।
अब वृन्दावन वरणिहौं, जहँ वृन्दावनचन्द ॥ ७ ॥
वृन्दावन आनन्दघन, कछु छवि वरणि न जाय ।
कृष्णललित लीलाकरण, धारिरह्यो जड़ताय ॥ ८ ॥
मुक्ति कहै गोपालसों, मेरी मुक्ति बताय ।
ब्रज रज उड़ मस्तक लगै, मुक्ति मुक्त है जाय ॥ ९ ॥
नारायण ब्रज भूमिको, सुरपति नावै माथ ।
जहाँ आय गोपी भये, श्री गोपेश्वर नाथ ॥ १० ॥
धनि वृन्दावन धाम है, धनि वृन्दावन नाम ।
धनि वृन्दावन रसिक जो, सुमिरै राधाश्याम ॥ ११ ॥

श्रीठाकुरजीको वचन ।

दोहा—राधे मेरी लाडिली, मेरी ओर तू देख ।
मैं तोहिं राखों नयनमें, काजरकीसी रेख ॥ १२ ॥
राधे आधे नयनसों, तिरछी चितवन चाय ।
जो निशान आगे चलै, पाछेको फहिराय ॥ १३ ॥
लटसम्हार प्रियनागरी, कहा सयोहै तोहि ।
तेरी लट नागिनिभई, डसा चहतहै मोहि ॥ १४ ॥
राधेजूके वदनपै, वेंदी अति छवि देय ।
मानो फूली केतकी, भ्रमर वासना लेय ॥ १५ ॥
प्यारीजूके वदनपै, वसत चालिसों चोर ।
दश सारस दश हंसहैं, दश चातक दश मोर ॥ १६ ॥
गोरेमुखपै तिल बन्यो, ताहि करूँ परणाम ।

मानों चन्द्र बिछायके, पौढ़े शालिग्राम ॥ १७ ॥
लट छूटी तियशीशते, गहि कपोल लपटाय ।
मानो छौना नागको, पीपी अमी अघाय ॥ १८ ॥
व्रजवासी वल्लभ सदा, मेरे जीवन प्रान ।
इन्हें न नेक बिसारिहों, मोहिं नंदकी आन ॥ १९ ॥
व्रज तज अनत न जाइहों, मेरे है यह टेक ।
भूतल भार उतारिहों, धरिहों रूप अनेक ॥ २

श्रीप्रियाजीको वचन ।

मैं बेटी वृषभानुकी, राधा मेरो नाम ।
तीनलोकमें गाइये, बरसानो नंदगाम ॥ २१ ॥
बंशीवारे मोहना, बंशी नेक बजाय ।
तेरी बंशी मन हर्यो, घर अँगना न सुहाय ॥२२॥
आउ पियारे मोहना, पलक झाँप तोहिं लेऊँ ।
ना मैं देखौं और को, ना त्वहिं देखन देऊँ ॥ २३ ॥

सखियनको वचन ।

ऐरे कठिन अहीरके, नेक पीर पहिचान ।
तव मुख दर्शन कारणे, छांडि दई कुलकान ॥ २४ ॥
मोर मुकुट कटि काछनी, पीतांबरवनमाल ।
यह मूरति मम मन बसो, सदा बिहारीलाल ॥ २५ ॥
कर मुरली लकुटी गहे, घूँघरवारे केश ।
यह बानिक नयनन बसो, श्याम मनोहर वेश ॥२६॥
मोहनि मूरति श्यामकी, मो मन रही समाय ।
ज्यों मेहँदीके पातपै, लाली लखी न जाय ॥ १७ ॥
मनमोहन मन मोहना, मनमोहन मनमाहिं ॥
या मोहन ते सोहना, तीनलोकमें नाहिं ॥ २८ ॥

चलो सखी तहँ जाइये, जहाँ बसें ब्रजराज ।
गोरस बेचन प्रेमरस, एक पंथ द्वै काज ॥ २९ ॥
मोर मुकुटकी लटक पर, अटक रहे दृग मोर ।
कान्हकुँवर सखि यमुनतट, नटवर नंदकिशोर ॥ ३० ॥
जिन मोरनके पंख हरि, राखत अपने शीश ।
तिनके भागनकी सखी, कौन करिसकै रीश ॥ ३१ ॥
वृंदावनके वृक्ष को, मर्म न जानै कोय ।
डार पात फल फूलमें, राधे राधे होय ॥ ३२ ॥
वृंदावन बानिक बन्यो, भ्रमर करत गुंजार ।
दुलहिनि प्यारी राधिका, दूलह नंदकुमार ॥ ३३ ॥
ब्रज चौरासी कोशमें, चार गाम निज धाम ।
वृंदावन औ मधुपुरी, बरसानो नँदगाम ॥ ३४ ॥
नँद नंदीश्वर राजहीं, बरसाने वृषभान ।
दोनों कुलदीपक भये, गावत वेद पुरान ॥ ३५ ॥
ब्रज समुद्र मथुरा कमल, वृंदावन मकरंद ।
ब्रजवनिता सब पुष्प हैं, मधुकर गोकुलचन्द ॥ ३६ ॥
उत उरझी कुंडल अलक, इत बेसर वनमाल ।
गौर श्याम उरझे दोउ, मंडल रास रसाल ॥ ३७ ॥
प्रेम सरोवर प्रेमको, भरयो रहै दिन रैन ।
जहँ प्रियप्यारी पग धरैं, लाल धरैं दोउ नैन ॥ ३८ ॥
मोरमुकुटकी निरखि छबि, लाजत मदन करोर ।
चंद्र बदन सुख सदन पै, भावक नैन चकोर ॥ ३९ ॥
कमलनको रवि एकहै, रविको कमल अनेक ।
हमसे तुमको बहुत हैं, तुमसे हमको एक ॥ ४० ॥
जलमें बसै कमोदनी, चन्दा बसै अकाश ।

जो जाके मनमें बसै, बसै सो ताके पास ॥ ४१ ॥
बाहँ छुड़ाये जात हौ, निबल जानिकै मोहिं ।
हिरदै ते जब जाउगे, सबल सराहों तोहिं ॥ ४२ ॥
जो मोसों मोसी करो, तो नहिं कहौं कठोर ।
तुमहौ तैसी कीजिये, सुनो रसिक शिरमोर ॥ ४३ ॥
पाग बनो पटुका बनो, बनो लालको भेख ।
राधावल्लभ लालकी, दौर आरती देख ॥ ४४ ॥

अथ बाललीलाके पद ।

राग भैरव ।

बंदौं श्रीहरिपद सुखदाई । जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अंधरेको सब कछु दरशाई । बहिरो सुनै गूँग पुनि बोलै रंक चलै शिर छत्र धराई । सूरदास स्वामी करुणामय बारंबार नमो तिहिं पाई ॥ १ ॥

राग रामकली ।

भयो जयकार जन्में मुरारी ॥ शीश वसुदेव लै चले हैं कृष्णको शूपमें खेलत विहारी । लालके शीशपर मुकुट सिहरा बन्यो हार हमेल छबि ललित पियारी । सूरके प्रभु अवतार लियो भक्तहित बढ्यो आनंद गोकुल मँझारी ॥ २ ॥

राग आसावरी ।

देखोरे अद्भुत अविगतिकी गति कैसो रूप धर्योहै॥ तीनलोक जाके उदर भवनमें शूपके कोन पर्यो है ॥ जामुख दरश काज सनकादिक चतुराई सब ठानी है॥ सो मुख चूमत मात यशोदा दूध धार लपटानी है ॥ जिन कानन गजकी विपदा सुनि गरुडासन विसरायो है ॥ तिन काननके निकट यशोदा हुलरायो

गुणगायो है ॥ जिन्हीं भुजा प्रहलाद उबारयो प्रगट होय खँभ फारयो है ॥ सो भुज पकर ग्वाल अरु गोपी ठाढे होय दुलारयो है ॥ जाके काज रुद्र ब्रह्मादिक कठिन योग व्रत साध्यो है ॥ ताको धाय नंदकी रानी ऊँखल सों गहि बांध्यो है ॥ जाको मुनिजन ध्यान धरत हैं शंभु समाधि न टारी है ॥ सो ठाकुर है सूरदासको गोकुल गोप विहारी है ॥ २ ॥

राग बिलावल।

आदि सनातन हरि अविनासी। सदा निरंतर घट घट वासी ॥ पूरणब्रह्म पुराण बखाने। चतुरानन शिव अंत न जाने ॥ महिमा अगम निगम जिहिं गावे। सो यशुदा लिये गोद खिलावे ॥ एक निरंतर ध्यावें ज्ञानी। पुरुष पुरातन है निर्वानी ॥ शुक शारदको नाम अधारा। नारद शेष न पावें पारा ॥ जप तप संयम ध्यान न आवे। सोइ नंदके आंगन धावे॥ लोचन श्रवण न रसना नासा। बिन पद पाणि करे परकासा ॥ अरुण असित सित बरण न धारे। मुनि मनसामें कहा विचारे ॥ विश्वंभर निज नाम कहावे। घर घर गोरस जाय चुरावे ॥ जरा मरण ते रहित अमाया। मात पिता सुत बंधु न जाया ॥ आदि अनंत रहे जलशायी। परमानन्द सदा सुखदायी ॥ ज्ञानरूप हिरदेमें बोले। सो बछरनके पाछे डोलै ॥ जल थल अनल अनिल नभ छाया। पांच तत्त्वमें जग उपजाया ॥ लोक रचै पालै अरु मारे। चौदह भुवन पलकमें धारे ॥ काल डरै जाके डर भारी। सो ऊँखल बाँध्यो महतारी ॥ माया प्रकट सकल जग मोहै। अकरण करण करै सोई सोहै ॥ जाकी माया लखै न कोई। निर्गुण सगुण धरे वपु दोई ॥ शिव सनकादिक अंत न पावें। सो गोपनकी गाय

ावें ॥ गुण अनंत अविगतिहिं जनावे । यश अपार श्रुति पार पावे ॥ चरणकमल नित रमा पलोवे । चाहत नेक नयन भर ावे ॥ अगम अगोचर लीला धारी । सो राधावश कुंजबि-ारी ॥ जो रस ब्रह्मादिक नहिं पायो । सो रस गोकुल गलिन हायो ॥ बड़भागी यह सब व्रजवासी । जिनके सँग खेलें विनाशी ॥ सूर सुयश कहि कहा बखानै । गोविंद ाति ोविंद जानै ॥ ४ ॥

साख मुनिजन भेरें देव अस्तुति करें स्मृति पुराण गुण वेद ावें । तुम प्रभु एक अनेक ह्वै रमि रहे अमित जगजंतु नहिं ंत पावें ॥ शेष महेश गंधर्व किन्नर थके व्यास ब्रह्मादि नहिं ार पावें । चरण पाताल औ शीश आकाशमें चंद्र सूरज दोउ ्न सुहावें ॥ यही परतीत तेरी चहुँ युगनमें भक्तके हेतु धारि दे धावें । कहत मिहरदास निवास लियो नंदगृह कान्ह ुत जान यशुमति खिलावें ॥ ५ ॥

राग रामकली ।

हौं इक नई बात सुनि आई ॥ महरि यशोदा ढोटा जायो र घर बजत बधाई । द्वारे भीर गोप गोपिनकी महिमा वरणि जाई । अति आनंद होत गोकुलमें रत्न भूमि निधि छाई । ाचत तरुण वृद्ध अरु बालक गोरस कीच मचाई । सूरदास ्वामी सुखसागर सुंदर श्याम कन्हाई ॥ ६ ॥

राग भैरव ।

देखो री यह कैसो बालक रानी यशोमति जाया है । सुंदर वरण कमलदललोचन देखत चंद्र लजाया है ॥ पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी प्रगट नन्दघर आया है । मोर मुकुट पीतांबर सोहै

केसर तिलक लगाया है ॥ कानन कुंडल गलबिच माला कोटि-
भानु छबि छायाहै । शंख चक्र गदा पद्म विराजे चतुर्भुज रूप
बनायाहै ॥ परमेश्वर पुरुषोत्तम स्वामी यशुमति सुत कहलाया
है। मच्छ कच्छ वराह औ वामन रामरूप दरशायाहै ॥ खंभ फार
प्रगटे नरहरि वपु जन प्रहलाद छुडायाहै । परशुराम बुध निहक-
लंक ह्वै भुवका भार मिटायाहै ॥ कालियमर्दन कंसनिकन्दन
गोपीनाथ कहायाहै । मधुसूदन माधव मुकुन्द प्रभु भक्तवछल
पद पांयाहै ॥ शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहसमुख
गायाहै ॥ सो परब्रह्म प्रगट ह्वै ब्रजमें लूट लूट दधि खायाहै ।
परमानंद कृष्ण मनमोहन चरणकमल चित लायाहै ॥ ७ ॥

राग बड़हंस ॥

मोहिं नंदघर लै चलो ढाढिनियाँ मचल रही ॥ पुत्र भयो
सब जगने जान्यो मोते क्यों न कही ॥ मोहि मिलै नख शिखलौं
गहनो लाऊँतो बात सही ॥ जरदोजीके वस्त्र मिलैंगे फरिया चोली
नई । कृष्णकृपाबिन को या जगमें जिन मेरी बांह गही ॥ ८ ॥

राग आसावरी ॥

आज बधाइयां वे बाबानंद दे दर्बार ॥ हुआ सुत सोहना वे
मनदा मोहना सुकुमार ॥ आई मिल गोपियां वे गावें हर्ष मंग-
लचार । गुणी जन गावँदे वे नाचें देदे करतार ॥ ९ ॥

सवैया ॥

पूत सुपूत जन्यो यशुदा,इतनी सुनिके वसुधा सब दौरी। देव-
नको सु अनंद भयो सुन, धावत गावत मंगल गौरी ॥ नंद

कछू इतनो जो दियो घनश्याम कुबेरहुकी मति बौरी ॥ देखत
ोहिं लुटाय दियो न बची बछिया छछिया न पिछौरी ॥१०॥

घनाक्षरी।

फूल गये गोप गृह गोपिकन भूल गये, हुलसी मचाई माने प्रेम
रसाईमें। कीच मची दधिकी अधिक गैल गैलन में कन
सबै पगे आनँद बधाईमें ॥ छोटी सुठि चोटी है कछोटी कटी
ोटी भई, फैलगई थौन बड़े स्वेदकी अवाईमें। राजी दिल
ोदन विनोदन विहँसि नन्द, नाचे आज आँगन कन्हाईकी
ाईमें ॥ ११ ॥

राग प्रभाती।

गिरिधर लोरी लै मथुराके वासी ॥ चिरजीवो वसुदेवके नंदन
बलि बलि माता घोरी। भूपर भार भयो अतिभारी सुर समूह सब
जाय पुकारी। जगतपिता जगनायक स्वामी धर्म्म कथा जगथोरी॥
गगन गिरासों यों हरि भाषो असुर मार संतन पतिराखो आदि
पुरुष तेरो अंत न पायो धरहु भक्त हित खोरी। वसुदेव देवकी अति-
मानें पूरणब्रह्म जान सन्माने स्तुति करत बहोर बहोरी कंसके
भय चित चोरी ॥ नंद यशोदा हर्ष निरख मन पायो निर्धन मनहुँ
परमधन आदि युगादि धरणिधर माधव लखि न जात गति तोरी।
व्रजवधुआं मिल नँदगृह आईं भाग भले हरि दर्शन पाईं हिल
मिल पलना देत झुलाईं हाथ गहे पट डोरी ॥ दैत्यानी इक कंस
पठाई कर छल विष स्तन पर लाई बनि वरांगना अति छबि
सुंदर ब्रज बधुआं चित चोरी। पलनासों हरि जाय उठाये चूमि
नयन स्तन मुख लाये ऐसी चूस करी मेरे ललना लीने प्राण

निचोरी॥यमलार्जुनको दर्शन दीनो नारद वचन सफल करलीनो ऊखलसों प्रभु आप बँधाये बिमल वृक्ष दोउ जाय गिराये शब्द-भयो घनघोरी।तृणावर्त अघासुर मारे और दैत्य कइ कोटि सँहारे कहा कहों अगणित गुण तोरे इक रसना प्रभु मोरी ॥ १२ ॥

राग पीलो ।

आज श्रीगोकुलमें बजत बधावरारी। यशुमति नन्दलाल पायो कंसराज काल पायो गोपिनने ग्वाल पायो वनको शृङ्गार री ॥ गौअन गोपाल पायो याचकन भाग पायो सखियन सुहाग पायो प्रिया वर सांवरा री। देवनने प्राण पायो गुणियनने गान पायो भक्तन भगवान पायो सूर सुखदावरा री॥ १३ ॥

राग आसावरी।

आज नंदजू तुम्हारे घरमें पुत्र जन्म सुनि आयो। लग्नशोधि ज्योतिषको गिनिकै चाहत तुम्हैं सुनायो ॥ संवत सरस भाद्रपद मासे आठें तिथि बुधवार। कृष्णपक्ष रोहिणी अर्द्धनिशि हर्षण योग उदार ॥ वृष है लग्न उच्चके निशिपति तनय बहुत सुखदेहै ।चौथे सिंह राशिके दिनपति जीति सकलमें ह्वै है॥ पांचें बुध कन्याके जो हैं पुत्रन बहुत बढैहैं । छठेहैं शुक्र तुलाके बल्युत शत्रुरहन नहिं पैहैं॥ऊँच नीच युवती बहु करिहैं सातें राहु परैहैं। भागभवनमें मकर महीसुत पूर्णैश्वर्य करैहैं ॥ कर्म भवनमें ईश शनीचर श्याम वर्ण तनु ह्वैहैं। लाभ भवनमें मीन बृहस्पति नौनिधि घरमें एहैं॥आदि सनातन हरि अविनाशी घट घट अन्तर्यामी । सो तुम्हरे गृह आय प्रगट भये सूरदासके स्वामी ॥ १४ ॥

राग भैरव ।

मैं योगी यश गाया री बाला मैं योगी यश गया ॥ तेरे सुतके दर्शन कारण मैं काशी तजि धाया ॥ परब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम सकल लोक जा माया ॥ अलख निरंजन देखन कारण सकल लोक फिर आया ॥ धनि तेरो भाग यशोदा रानी जिन ऐसो सुत जाया । गुणन बडे छोटे मत भूलो अलख रूप धर आया ॥ जो नो लीजिय रावल करो आपनी दाया । देहु अशीश मेरे बालकको अविचल बाढै काया ॥ ना मैं लेहौं पाटपटम्बर ना मैं कंचन माया । मुख देखों तेरे बालकको यह मेरे गुरुने बताया ॥ कर जोरे विनवैं नँदरानी सुन योगिनके गया । मुख देखन नहिं देहौं रावल बालक जात डराया ॥ जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो क्यों जात डराया ॥ तीन लोकका साहिब मेरा तेरे भवन छिपाया ॥ कृष्णलालको लाई यशोदा कर अंचल मुख छाया । गोद पसार चरणरज बंदी अति आनंद बढाया ॥ निरख निरख मुख पंकज लोचन नयननीर बहाया । सूरश्याम परिकर्मा करके शृंगीनाद बजाया ॥ १५ ॥

दर्श तो दिखाजा छैला दर्शतो दिखाजा॥दिलदा महरम साँवरा यार ॥ जांघनि काछनि कटि पीतांबर श्रवणन कुंडल शीश मुकुट अरु घूँघरवारी अलकें झलकें नयनोंमें समाजा ॥ बंशीधुन यमुना तीरे नाचत गावत गोपन संग नंदजूके किशोर मेरी तपन बुझाजा। जानकीदास भये निराश निकसत नाहीं पापी श्वास स्वप्नहूँमें दर्शदेके सकल दुख मिटाजा ॥ १६ ॥

राग भूपाली ।

बोलता क्यों नहीं रे मिजाजी बोलता क्यों नहीं रे ॥ शिरतेरे ककरेजी चीरा गल मोतियनकी माल रे । हाथमें दुधारा खांडा मारता क्यों नहीं रे ॥ १७ ॥

राग बिलावल ।

काहू जोगियाकी लागी नजर मेरो बारो कन्हैया रोवै री । मेरी गली जिन आउरे जोगिया अलख अलख कर बोलै री ॥ घर घर हाथ दिखावे यशोदा बार बार मुख जोवै री । राई लोन उतारत छिन छिन सूरको प्रभु सुख सोवै री ॥ १८ ॥

राग भैरव ।

चल रे योगी नंदभवनमें यशुमति तोहिं बुलावे । लटकत लटकत शंकर आवैं मनमें मोद बढावैं ॥ नंद भवनमें आये योगी राई लोन कर लीनो । वार फेर लालाके ऊपर हाथ शीसपै दीनो ॥ व्यथा भई सब दूर वदनकी किलकि उठे नँदलाला । खुशी भई नँदजूकी रानी दीनी मोतियन माला ॥ रहु रे योगी नंदभवनमें ब्रजमें वासो कीजे । जब जब मेरो लाला रोवे तब तब दर्शन दीजे ॥ तुमतो योगी परम मनोहर तुमको वेद बखानै । बूढो बाबू नाम हमारो सूरश्याम मोहिं जानै ॥ १९ ॥

राग बिलावल ।

कर पग गहि अँगुठा मुख मेलत । प्रभु पौढे पालने अकेले हर्षि हर्षि अपने रँग खेलत ॥ शिव शोचत विधि बुद्धि विचारत वट बाढ्यो सागर जल झेलत । विडारि चले युग प्रलय जानकर दिगपति दिगदंती न सकेलत ॥ मुनि मन भीत भये भू कंपत शेष सकुच सहसो फण पेलत । सो सुख सूर भयो सब गोकुल किलकत कान्ह शकट पग ठेलत ॥ २० ॥

शोभित कर नवनीत लिये । घुटरन चलत रेणु तनु मण्डित मुख दधि लेप किये ॥ चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक दिये । लट लटकन मनु मत्त मधुपगण मादक मधुहि पिये ॥

कठुला कंठ वज्रकेहरि नख गजत रुचिर हिये । धन्य सूर एकौ पल यह सुख का शतकल्प जियें ॥ २१ ॥

राग भैरव।

जागिये गोपाल लाल जननी बलिजाई। उठो तात भयो प्रात रजनीको तिमिर गयो खेलत सब ग्वाल बाल मोहन कन्हाई ॥ उठो मेरे आनँदकँद किरणचन्द मन्द २ प्रकट प्रकाश भानु कमलन सुखदाई। संगी सब पुरत बेनु तुम वि... । छुटे धेनु उठो लाल तजो सेज सुंदर वर गई ॥ मुख ते पट दूर कियो यशुदाको दर्श दियो माखन दधि मांगि लियो विविध रस मिठाई। जेंवत दोउ राम श्याम सकल मङ्गल गुणनिधान जूठनि रहि थारमें सो मानदास पाई ॥ २२ ॥

जागिये व्रजराज कुँवर कमल कोश फूले। कुमुद वृन्द सकुच भये भृङ्ग लता झूले ॥ तमचर खग शोर सुनो बोलत बनराई। रंभत गौ क्षीर देन बछरा हित धाई॥ विधु मलीन रवि प्रकाश गावत व्रज नारी। सूरश्याम प्रात उठे अम्बुज कर धारी ॥ २३ ॥

राग रामकली।

मोहन जाग हौं बलि गई। ग्वाल बाल सब द्वार ठाढे बेर वनको भई। पीतपट कर दूर मुखते छांड दे अलसई॥ अति अनन्दित होत यशुमति देख द्युति नित नई। सूरके प्रभु दरश दीजे अरुण किरण छई ॥ २४ ॥

राग भैरव।

जागो बंशीवारे ललना जागो मोरे प्यारे ॥ रजनी बीती भोर भयोहै घर घर खुले किंवारे। गोपी दही मथत सुनियत हैं कँगनाके झनकारे ॥ उठो लालजी भोर भयोहै सुर नर ठाढे द्वारे।

ग्वाल बाल सब करत कुलाहल जय जय शब्द उचारे ॥ माखन रोटी हाथमें लीन्हीं गौअनके रखवारे । मीराके प्रभु गिरिधर नागर शरण आयांको तारे ॥ २५ ॥

जागो हो मोरे जगत उजियारे।कोटि मदन मुसुकनि पर वारत कमलनयन अँखियनके तारे ॥ ग्वाल बच्छ सबरे सँग लैके यमुनतीर वन जाउ सवारे । परमानंद कहत नंदरानी दूर जनि जाउ मेरे ब्रजके रखवारे ॥ २६ ॥

राग ललित ।

जागो जागो हो गोपाल । नाहिन अति सोइयत है प्रात परम शुचिकाल॥फिर फिर जात निरखि मुख छिन छिन सब गोपनके बाल । बिन विकसे मनो कमल कोश ते ते मधुकरकी माल ॥ जो तुम मोहि पतियाउ न सूर प्रभु सुन्दर श्याम तमाल । तो उठिये आपन अवलोकिये तजि निद्रा नयनन विशाल ॥ २७ ॥

राग विलावल ।

कौन परी नँदलालहिं बानि । प्रातसमय जागनकी बिरियां सोवत हैं पीताम्बर तानि ॥ प्रात यशोदा कबकी ठाढी दधि ओदन भोजन घृत सानि । उठो श्याम कछु करो कलेऊ सुन्दर बदन दिखाओ आनि॥संग सखा सब द्वारे ठाढे मधुबन धेनु चरावन जानि। सूरश्याम सुन्दर अलसाने सोवत हैं अजहूं निशि मानि ॥२८॥

राग भैरव ।

दधिके मतवारे कान्ह खोलो प्यारे पलकें । शीश मुकुट लटें छूटीं और छूटीं अलकें ॥ सुर नर मुनि द्वार ठाढे दरश कारण किलकें । नासिकाको मोति सोहै बीच लाल ललकें ॥ कटि पीतांवर मुरली कर श्रवणन कुण्डल झलकें सूरदास मदनमोहन दरश देहु भलकें ॥ २९ ॥

राग बिलावल।

नन्दनँदन वृन्दावनचन्द । यह कहि जननि जगावत लालन जागो मेरे आनँदकन्द ॥आलस भरे उठे मनमोहन चलत चाल ठुमकत अतिमन्द । पोंछि वदन अंचलसों यशुमति उर लगाय उपज्यो आनन्द ॥ सब व्रजयुवती आईं देखनको दर्शन न मिट्यो दुख द्वंद । व्रजपति श्रीगोपाल परिपूरण जाको गावत श्रुति छन्द ॥ ३० ॥

बलि बलि जाउँ मधुर सुर गावो।अबकी बेर मेरे कुँवर कन्हैया नन्दहि नाच दिखावो ॥ तारी दै दै अपने करकी परमप्रीति उपजावो। आन जन्तु धुनि सुनि डरपत कत मो भुज कंठ लगावो॥ जिन शंका जिय करो लाल मेरे काहेको शर्मावो। बाँह उठाय काल्हकी नाईं धौरी धेनु बुलावो ॥ नाचो नेक जाउँ बलि तेरी मेरी साध पुरावो। रत्नजटित किंकिणि पग नूपुर अपने रंग बजावो ॥ कनक खंभ प्रतिबिंब आपनो नव नवनीत खवावो। परमदयालु सूरके उरते टारे नेक न जावो॥ ३१ ॥

राग बिलावल।

बलि बलि जाउँ छबीले लालके। धूसर धूर घुटुरुवन डोलन बोलन वचन रसालके ॥ छिटकरहीं चहुँदिशि जो लटुरिया लटकनि लटकन भालके। मोतिन सहित नासिका नथुनी कंठ कमलदल मालके ॥ कछु इक हाथ कछुक मुख माखन चितवन नयन विशालके । सूरदास प्रभु प्रेम मगनहै ढिग न तजत व्रजबालके ॥ ३२ ॥

आउ गुपाल शृँगार बनाऊँ । अति सुगन्धको करूँ उबटनो उष्णोदक नहवाऊँ॥ अंगअँगोछि गुहों तेरी बेनी फूलन रचि रचि भाल बनाऊँ। सुरंगलाल कर्तारी चीरा रत्न खचित शिर पेंच

बनाऊँ ॥ बागो लाल सुनहरी छापा हरीइजार चरण चरचाऊँ । पटुका सरस बैंजनी रँगको हँसुली हेम हमेल धराऊँ॥गजमोतिनके हार मनोहर वनमाला लै उर पहिराऊँ । लै दर्पण देखो मेरे बारे निरखि निरखि छबि नयन सिराऊँ ॥ मधु मेवा पकवान मिठाई अपने कर लै तुम्हैं खवाऊँ। विष्णुदासको यही कृपाफल बालचरित हौं निशिदिन गाऊँ ॥ ३३ ॥

राग देश ।

धूर भरे अँग खेलत मोहन आछी बनी शिर सुन्दर चोटी । देखो री कागके भाग भले हैं हाथसों लै गयो माखन रोटी ॥ खात पियत कूदत भए अँगना पाइन पाइन पर्त कछोटी।सूरदास प्रभु या छबि निरखत बारि डारों शिर रवि शशि कोटी ॥३४ ॥

राग गौरी ।

कहन लागे मोहन मैया मैया । नंदरायसों बाबा बाबा अरु हलधर सों भैया ॥ खेलत फिरत सकल गोकुलमें घर घर बजत बधैया । परमानन्द दासको ठाकुर ब्रजजन केलि करैया ॥३५॥

राग रामकली ।

हौं लालको मुख देखन आई। कल्ह मुख देख गई दधि बेचन जातहि गयो बिकाई ॥ दिनसों दूनो लाभ भयो घर काजर बछिया जाई । आई हों धाय थमाय सङ्गकी मोहन देहु जगाई॥ इतनी सुनत बिहँसि उठ बैठे नागरि निकट बुलाई । सूरदास प्रभु चतुर ग्वालिनी सैन सँकेत बताई ॥ ३६ ॥

राग विलावल ।

मैया मोहिं बडो कर लै री। दूध दही घृत माखन मेवा जब मांगों तब दै री॥कछू हौस राखे जिन मेरी जोइ जोइ मोहिं रुचै

री। होउँ सबल सबहिनमें जैसे सदा रहौं निर्भय री ॥ सूर कंस गहि केश पछारों करिहौं मथुरा जय री ॥ ३७ ॥

राग रामकली।

मैया मेरी कब बाढैगी चोटी। किती बेर मोहिं दूध पियत भइ यह अजहूँ है छोटी ॥ तू जो कहत बलकी बेनी ज्यों हो है लांबी मोटी। काढ़त गुहत न्हवात जैहैं नागिनसी भुइँ लोटी ॥ काचो दूध पियावत मोहन देती माखन रोटी ॥ सूर मैया याही सर रिझयो हरि हलधरकी जोटी ॥ ३८ ॥

राग सारंग।

अब मेरी खेलन जात बलैया। जबहिं मोहिं देखत लरिकन संग तबहिं खिझत बल भैया ॥ मोको कहत तात वसुदेव है देवकी तेरी मैया। मोललियो कछु दे वसुदेवहि कर कर यतन बडैया ॥ पाछे नंद सुनत हैं ठाढे तब हँस हँस उर लैया। सूर नंद बलरामहिं हटक्यो सुन मन हर्ष कन्हैया ॥ ३९ ॥

राग सोरठ।

मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो। मोसों कहत मोलको लीनो कब यशुमतिने जायो ॥ कहा करूँ या रिसके मारे खेलन हौं नहिं जात। पुनि पुनि कहत कौन है माता कौन है तेरो तात ॥ गोरे नंद यशोदा गोरी तुम कत श्याम शरीर। तारी दै दै ग्वाल हँसत है सीख देत बलवीर ॥ तू मोहींको मारन सीखी दाउहिं कभू न खीझै। मोहनको मुख रिस समेत लखि सुनि सुनि यशुमति रीझै। सुनो कान्ह बलभद्र चवाई जन्महिको वह धूत। सूरदास मोहिं गोधनकी सौं हौं जननी तू पूत ॥ ४० ॥

राग रेखता।

इस नंदके फरजंदने बाँकी अदा धरी। भौंहैं कमान झुक रही गोशेसे आ मिली ॥ तिरछा मुकुट धर शीशपर मुरली अधर धरी। कानोंमें कुंडल झलकते गल मोतियोंकी लरी ॥ चितवन जो तेरी भाला जिन घायल मुझे करी। शिर मुकुट सोहै मोरका और पाग जरकरी ॥ इमि सूर कहै श्याम सों धन्य आजकी घरी ॥ ४१ ॥

राग बिलावल।

नंदभवनको भूषण माई। यशुदाको लाल वीर हलधरको राधा-रमण परम सुखदाई ॥ शिवको धन संतनको सर्वस महिमा वेद पुराणन गाई। इंद्रको इन्द्र देव देवनको ब्रह्मको ब्रह्म अधिक अधिकाई ॥ कालको काल ईश ईशनको अतिहि अतुल तोल्यो नहिं जाई। नंददासको जीवन गिरिधर गोकुल गामको कुँवर कन्हाई ॥ ४२ ॥

राग रामकली।

हाहा लेहु एको कोर। बहुत बेर भई है भूँखे देख मेरी ओर॥ मेल मिश्री दूध औटचो पीउ ह्वै है जोर। अबहीं खेलन टेरि हैं तुव ग्वाल भयो अति भोर ॥ जगे पक्षी द्रुम द्रुमन प्रति करन लागे शोर। खेलबेको उठि भजोगे मान मोर निहोर ॥ लेहुँ ल-लन बलाय तेरी जोर अंचल ओर। बदनचंद्र विलोकि शीतल होत हृदयो मोर ॥ बैठ जननी गोद जेंवन लगे गोविंद थोर। रसिकबालक सहज लीला करत माखन चोर ॥ ४३ ॥

मानो बात लालन मोरी। करो भोजन रोष भूलो हौं जो मैया तोरी ॥ दूध दधि नवनीत घृतपक परसि राख्यो थार। कहा लोट-त धरणिमें मेरे लाल होत अबार॥ गोद बैठो हौं जिवाऊँ गाऊँ तेरे गीत। खेलबेको तोहिं बोलत ग्वाल तेरे मीत ॥ कहो जाको ताहि

हूँ बैठें तेरे पास। करौ दधि मंथान उदयो सूर कमल विकास॥ गायके सुनि वचन हँसि उर आय लगे गुपाल। कियो भोजन दियो अतिसुख रसिक नयनविशाल॥ ४४॥

राग धनाश्री।

महरानेते पांडे आयो। ब्रज घर घर बूझत नँदगवर पुत्र भयो सुनिकै उठधायो॥ पहुँच्यो आय नंदके द्वारे यशुमति देखि अनंद बढायो। पांव धोय भीतर बैठायो भोजनको निज भवन लिपायो जो भावे सो भोजन कीजे विप्र मनहिं अति हर्ष बढायो। बडी वैस विधि भयो दाहिनो धनि यशुदा ऐसो सुत जायो॥ धेनु दुहाय दूध लै आई पाँडे रुचिकर खीर चढायो। घृत मिष्टान्न खीर मिश्रित करि परसि कृष्णहित ध्यान लगायो॥ नयन उघार विप्र जो देखे खात कन्हैया देखन पायो। देखो आय यशोदा सुतकृत सिद्ध पाक यह आन जुँठायो॥ महरि विनयकरि दोउकर जोरयो घृत मधु पय फिर बहुत मँगायो। सूर श्याम कत करत अचगरी बारम्बार ब्राह्मणहिं खिझायो॥ ४५॥

राग रामकली।

पांडे भोग न लागन पावै। कर कर पाक जभी अर्पत है तभी ताहि छुइ आवै॥इच्छाकर मैं ब्राह्मण नोत्यो ताको श्याम खिझावै। वह अपने ठाकुरहिं जिमावत तू तबहीं छुइ आवै॥ जननी दोष देत कत मोको विधि विधान कर ध्यावै। नयन मूँदि कर जोर नाम लै बारंबार बुलावै॥यह अंतर नहिं होत भक्त सों क्यों मेरे मनभावै॥ सूरदास बलि बलि विलास पर जन्म पाय यश गावै॥ ४६॥

राग विलावल।

सफल जन्म मेरो आज भयो। धनि गोकुल धनि नंद यशोदा जिनके हरि अवतार लियो॥प्रगट भयो पुण्य अब सुकृत फल दीन-

बंधु मोहिं दर्श दियो। बारंबार नंदके आँगन लोटत द्विज आनंद भयो ॥ मैं अपराध कियो विनजाने को जाने किहिं वेष जियो। सूरदास प्रभु भक्त हेतु वश यशुमतिके अवतार लियो ॥ ४७ ॥

राग झँझोटी।

चंद्र खिलौना लेहौं मैया मेरी चंद्र खिलौना लेहौं ॥ धौरीको पयपान न करिहौं वेणी शिर न गुंथैहौं। मोतिन माल न धारिहौं उरपर झँगुली कंठ न लैहौं ॥ जैहौं लोट अभी धरणीपर तेरी गोद न ऐहौं। लाल कहैहौं नंद बबाको तेरो सुत न कहैहौं ॥ कान लाय कछु कहत यशोदा दाउहि नाहिं सुनैहौं। चंदा-हूते अति सुंदर तोहिं नवल दुलहिया ब्यैहौं ॥ तेरी सौंह मेरी सुन मैया अबहीं व्याहन जैहौं। सूरदास सब सखा बराती नूतन मंगल गैहौं ॥ ४८ ॥

राग बिलावल।

सुन सुत एक कथा कहुँ प्यारी। कमलनयन मन आनँद उपज्यो रसिक शिरोमणि देत हुँकारी॥दशरथ नृपति हुते रघुवंशी तिनके प्रगट भये सुत चारी। तिनमें राम एक व्रतधारी जनकसुता ताकी वर नारी ॥ तात वचन सुनि राज्य तज्योहै भ्राता सहित भये वनचारी ॥ तहँ तिन जाय कनकमृग मारयो राजिवलोचन गर्व प्रहारी ॥ रावण हरण सियाको कीन्हों सुनत श्यामघन नींद बिसारी। सूर श्याम प्रभु रटत चापको लक्ष्मण देहु जननी भ्रम भारी ॥ ४९ ॥

राग सारंग।

नंद बुलावत हैं गोपाल। आवो वेगि बलैया लेहौं मोहन श्याम तमाम॥ परस्यो थार धरयो मग जोवत क्यों न चलो तातकाल। हौं वारी इनप्रति पाँयन पर दौर दिखावो चाल॥ छाँड देहु तुम लाल

लटपटी यह गति मंद मराल। सो राजा जो पहिले पहुँचे सूर सो भवन उताल।जो जैहै बलराम अगमने तो हँसिहैं सब ग्वाल५०॥

लावनी।

रूप रसिक मोहन मनोज मनहरण सकल गुण गरवीले। छैल छबीले चपल लोचन चकोर चित चटकीले॥रत्नजटित शिरमुकुट लटक रहि सिमट श्याम लट घुँघुरारी। बालविहारी क लाल चतुर तेरी बलिहारी॥ लोलकमोती कान कपोलन झ कबनी निर्मल प्यारी। ज्योति उज्यारी हमें हरबार दर्श दे गिरि-धारी॥ दंत छटासी विज्जु घटा मुख देख शरद शशि शरमीले। छैल०॥ मंद हँसन मृदु वचन तोतरे वय किशोर भोली भाली। करत चोचले अधर अमोलक पीक रच रही लाली॥ फूल गुलाब चिबुक सुंदरता रुचिर कंठछवि वनमाली।करसरोजमें बुन्द मेहँदी अमन्दहै बहु प्रतिपाली॥ फूलछरीसी नरम कमर करधनी शब्द भये तुरसीले॥ छैल० ॥ झँगुली झीन जरीपट कछनी श्यामल गात सुहात भले। चाल निराली चरण कोमल पंकजके पात भले॥ पग नूपुर झंकार परम उत्तम यशुमतिके तात भले। संग सखनके निकट यमुना बछरान चरात भले॥ ब्रज युवतिनके प्रेम भोर भये घर घर माखन गटकीले॥ छैल० ॥ गावैं बाग विलास चरित हरि शरद रैनि रसरास करैं। मुनिजन मोहे कृष्ण कंसादिक खल-दल नाश करैं॥ गिरिधारी महराज सदा श्रीब्रज वृंदावन बास करैं। हरिचरित्रको श्रवण सुन सुन कर मन अभिलाष करैं॥हाथ जोर कर करैं बीनती नारायण दिल दरदीले॥ छैल० ॥ ५१ ॥

माखनचोरीलीला।

राग रामकली।

माखन तनक दे री माय। तनक करपर तनक रोटी माँगत चरण चलाय॥ कनक भूपर तनक रेंग्वा करन पकरयो धाय। कंपियो गिरि शेष शंक्यो उदधि अति अकुलाय॥ मेरे मनके तनक मोहन लागे मोहिं बलाय। तनक मुखपर तनक बतियां बोलत हैं तुतराय॥ यशुमतिके प्राण जीवन धन लिये उरमें लाय। नंदकुँवर गिरिधरन ऊपर सूर बलि बलि जाय॥ ८२॥

राग भैरव।

विलँब तजि माखन देरी माई। बछरे हमरे दूर निकस गये दधि मथती देर लाई॥ जो न देय तोरे बछरे न चारूं हौं नहिं विपिनको जाई॥ यह लै अपनी कारि कमरिया मुरली और लकुटाई॥ इतनी कह हरि अतिहि रिसाने लोटत भूमि कन्हाई। धूर सहित सब अँग लिपटाने मैया लेत उठाई॥ गोदी बीच बिठाय यशोदा मुख चूमत दूध पिलाई। धनि धनि भाग सूर जननी जाके कृष्ण करत लरिकाई॥ ८३॥

राग भैरवी।

दोऊ भैया मैयासों माँगत दे मा माखन रोटी॥ बलदाऊ गही नासिका मोती कान्ह गही कर चोटी।मानो हंस मोर भखु लीन्हों कवि कृत उपमा छोटी॥ यह छवि निरखि नंद आनंदे प्रेम मगन गये लोटी। सूरदास धनि धन्य यशोदा भाग भले कर्मनकी मोटी॥८४॥

राग रामकली।

मोहिं दधि मथन दे बलिगई।जाऊँ बलि बलि बदन ऊपर छाँड मथनी गई॥ देहुँ तबहिं नवनीत लौंदा आर किन यह ठई। सुत-सनेह विलोकि यशुमति प्रेम पुलकित भई॥ लै उछंग लगाय उरसों प्राणजीवन जई। बालकेलि गुपालकी व्रज आश कर निन नई॥ ५५॥

राग बिलावल।

नेक मेरे बारे कान्ह छाँडिदे मथनियां॥ कंठमें बघनहा सोहै नाकमें नथुनियां। नयननते नीर मानो मोतिनकी मनियां॥नेक रहो देहों माखन मेरे प्राण धनियां। और जिन करो मेरे छगन मगनियां॥ सुर नर मुनि काहूके ध्यान न अवनियां। सूर सुत देख सुख लेत नंदरनियां॥ ५६॥

राग गौरी।

मैया री मोहिं माखन भावै। जो मेवा पकवान कहत तू मोहिं नहीं रुचि आवै॥ व्रजयुवती इक पाछे ठाढी सुनत श्यामकी बात। मनमें कहत कभूं अपने घर देखौं माखन खात॥ बैठे जाय मथनियांके ढिग तब मैं रहों छिपानी। सूरदास प्रभु अंतर्यामी ग्वालिन मनकी जानी॥ ५७॥

गये श्याम तिहिं ग्वालिनिके घर।देख्यो जाय द्वार नहिंकोऊ इत उत चितै चले तब भीतर॥हरि आवत गोपी जब जान्योआपन रही छिपाई। सूने सदन मथनियांके ढिग बैठिगयेअरगाई॥माखन भरी कमोरी देखी लै लै लागे खान। चितै रहे मणि खंभ छांह तन तासों करैं सयान॥प्रथम आज मैं चोरी आयो भलो बन्योहै संग। आप खात प्रतिबिंब खवावत गिरत कहतका रंग॥ जो चाहो सब

देहुँ कमोरी अति मीठो कत डारत । तुम्हैं देख मैं अति सुख पायो तुम जिय कहा विचारत ॥ सुन सुन बात श्यामके मुखकी उमंग हँसी सुकुमारी । सूरदास प्रभु निरख ग्वालि मुख तब भजि चले मुरारी ॥ ५८ ॥

राग बिलावल ।

आज सखी मणि खंभ निकट हरि जहँ गोरसकी खोरी । निज प्रतिबिंब सिखावत या शिशु प्रगट करै निज चोरी ॥ अर्द्ध विभाग आजते हम तुम भली बनी है जोरी । माखन खाउ कतहि डारतहो छाँडि देहु मति भोरी ॥ हिस्सा न लेहो सभी चाहतहो यही बात है थोरी । मीठो परम अधिक रुचि लागै देहो काढि कमोरी ॥ प्रेम उमँग धीरज न रह्यो तब प्रगट हँसी मुख मोरी । सूरदास प्रभु सकुचि निरखि मुख चले कुंजकी ओरी ॥ ५९ ॥

ग्वालिन घर गये श्याम सांझकी अँधेरी । मंदिरमें गये समाय श्यामल तनु लखि न जाय देह महरूप कहोको करै निबेरी ॥ दीपक गृह दान करयो भुजा चार प्रगट धरयो देखत भइ चकित ग्वलि इत उत को हेरी ॥ श्याम हृदय अति विशाल माखन दधि बिंदु जाल मन मोह्यो नंदलाल बाल कहो बेरी । युवती अति भइ निहाल भुज भरके अंकमाल सूरदास प्रभु कृपालु डारयो तनु फेरी ॥ ६० ॥

राग रामकली ।

माखन चोर री हौं पायो ॥ जावत कहाँ जान कैसे पावत बहुत दिन नहीं खायो । श्रीमुखते उचरी द्वै दतियां तब हँसि कंठलगायो ॥ परमानंद प्रभु प्राण जीवन धन वेद विमल यश गायो ॥ ६१ ॥

सखि मोहिं हरि दर्शनको चाव ॥ साँवरेसों प्रीति बाढी लाख लोग रिसाव । श्यामसुंदर कमल लोचन अंग अंग नित भाव ॥ सूर हरिके रूप राची लाज रहो चाहे जाव ॥ ६२ ॥

कवित्त।

धेनुके चरैया प्यारे भैया बलभद्रजूके, नंदके ललैया मोरे अँगनामें आउ रे। दही दूध बहु प्याऊं माखन बनो मो लाऊं, मीठी मीठी तान नेक गायके सुनाउ रे। प्यारे नंदके किशोर मेरेचित्तहूके चोर, नेक तो अधरधर बाँसुरी बजाउ रे। या छबि ऊपर कोटि काम वारि वारि, डारों दया सखी प्रेमवश हियमें समाउ रे ॥ आया कर साँवरे गलिन इन झूमझूम, साँझ औ सवेरे मोको दर्श तो दिखाया कर। जाय कर जमुनाके तट रोज रोज प्यारे, बांसुरी अनोखी इक लहजा सुनाया कर ॥ कादर कहत छाया कर नैनोंबिच मेरे आय, रूखो सूखो थार गरीबोंको पाया कर। खाया कर माखन मलाई दधि लूट लूट, कर हावभाव मेरे हियमें समाया कर ॥ ६४ ॥

चीरकी चटक औ लटक नव कुंडलकी, भौंहकी मटक मोहिं आँखिन दिखाउ रे। जा दिना सुजान गुण रूपके निधन कान्ह, बांसुरी बजाय तनु तपन मिटाउ रे। एहो बनवारी बलिहारी जाऊँ तेरी आज, मेरी कुंज आय नेक मीठी तान गाउ रे ॥ नंदके इत किशोर चित्तचोर मोर पंखवारे, वंशीवारे साँवरे पियारे आउ रे ॥ ६५ ॥

राग पीलू।

वंशीवारे तु मेरी गली आजा रे। तेरे बिन देखे कल ना परतहै टुक मुखडा दिखलाजा रे ॥ रैनि दिना मोहिं ध्यान तिहारो वंशीकी टेर सुनाजा रे। चरणदास सुखदेव पियारे मेरोहि माखन खाजा रे ॥ ६६ ॥

सवैया।

जोगिया ध्यान धरें जिसको तपसी तनु गारके खाक रमावें। चारहु वेद न पावत भेद बडे तिवेंदी नहीं गति पावें ॥ स्वर्ग रु

मृत्यु पतालहुम जाका नाम लियत सभा शिर नाव । चरणदास कहै गोपसुता ताहि माखन दे देकै नाच नचावैं ॥ ६७ ॥ शंकर-से मुनि जाहि रटैं चतुरानन चारिहु आनन गावैं । जो हिय नेसुक आवतही रसखान महाजन मूढ कहावैं ॥ जापर देव अदेव भुजंगम वारत प्राणन बार न लावैं ॥ ताहि अहीर कि छोहरियां छछिया भरि छाँछ पै नाच नचावैं ॥ ६८ ॥

कवित्त

ब्रह्माहूके ध्यानमें न आवै कभू एक क्षण शंकर समाधि लाय ध्यान धरै गाढो है। ऋषि और मुनि जाको रैन दिन धरैं ध्यान, [illegible] निरंजन जाको मायाको न आवै अंत, ध्यानी ध्यान लाय रहैं सहैं धूप जाड़ो है। देखो भाग्य व्रजवनितनकेरी आज आली, ह्वै कै हू अनत नवनीत मांगै ठाढो है ॥ ६९ ॥ जाके पदपरसको तरसत विश्व व्रज, ग्वालनको खेलमांझ कंधन चढाये हैं। जाकी यह माया सुर नर मुनि बांधि राखे, सोई गर यशुदा पै ऊखल बँधाये हैं ॥ जाके देव यज्ञमें बुलावें नाहिं आवें सो तो, नंद एक थार मांझ जेमके सिहाये हैं। जाने लै नचाये सब दारुमयी पूतरी ज्यों, प्रेमवश गोपिनके हियमें समाये हैं ॥७०॥ दीनहूके बंधु ग्वाल सोचो दुःख तत काल, अविनाशी नंदलाल वदनमें गाये हैं। गावत हैं नेति नेति नेति कहि चारों वेद, शेषके सहस्रमुख पार नहिं पाये हैं॥ ब्रह्मा आदि सनकादि जाको धरैं ध्यान सदा, शंकर समाधि लाय हीयमें रमाये हैं। कहै मयाराम देखो भाग्य व्रजग्वालिनके, ऐसे घनश्याम [illegible]

[illegible] । भार भयो वाके गयो वासों मेरो वैर भयो, धींगीसी गुजरियाने आन लियो भागके । [illegible]

सब तोरडारे बासन मब फोर डारे, दूध ढरकाय दियो बंदरा बुलायके। नंदरानी मुसकानी कछु कछु सकुचानी, सूरश्याम उँलूभों लियो शीश पै चढायके॥ ७२॥

ब्रजकी अहीरनाके भागभले देखो भैया देवनाके देव कैसी सेवनाकर पायो है। शिव औ विरंचि जाको पार नहीं पावें नाहि गोकुलाकी नारी करतारी दे नचायो है॥ नारद मुनी से पढ़ि पचिहारे व्यासजूकी वाणीसों विमल यश गायो है। कहैं रणधीर भाग्य भले हैं अहीरनीके प्रेमको पयोधि ब्रज बीथिन बहायो है॥ ७३॥

उराहनो लीला।

दोहा—योग ध्यान आवें नहीं, यज्ञ भाग ना लेयँ।
ताको ब्रजकी गोपिका, हँसि हँसि माखन देयँ॥

राग कान्हरो।

माखनकी चोरी रे। तुम सीखो हो करन जब लागे करन चित चोरी रे॥ जबते दृष्टि परे नँदनंदन पाछे फिरों दौरादौरी रे। लोकलाज मर्यादा तोरी वन वन विहरत नवल किशोरी रे॥ आशकरण प्रभु मोहन नागर निगम शृंखला तोरी रे॥ ७४॥

राग देवगंधार।

जो तुम सुनो यशोदा गोरी। नंदनँदन मेरे मंदिरमें आज करत हैं चोरी॥ हौं भइ आन अचानक ठाढी कह्यो भवनमें कोरी। रहे छिपाय सकुच रंचक ह्वै मनो भई मति भोरी॥ मोहिं भयो माखन पछतावो रीती देखि कमोरी। जब गहि बाहिं कुलाहल कीन्हों तब गहि चरण निहोरी॥ लागे लेन नयन जल भर भर मैं

हरि कान न तोरी । सूरदास प्रभु देत निशदिन ऐसे अल्प मलोरी ॥ ७५ ॥

राग ठुमरी ।

तेरो री कन्हैया बलको भैया री यशोदा मैया आज मेरे घर आयो । दधि मेरो खायो मटुकिया फोरी रह्यो मह्यो ढरकायो ॥ जो पकरूं तो हाथ न आवे ढूँढ फिरी नहिं पायो । जानकीदास याहि बरजो क्यों ना पूत अनोखो जायो ॥ ७६ ॥

राग मलार ।

यहां लों नेक चलो नँदरानी जू । अपने सुतके कौतुक देखो कियो दूधमें पानी जू ॥ मेरे शिरकी चटक चुनरी ले गोरसमें सानी जू । हमरो तुमरो वैर कहाहै फोरी दधिकी मथानी जू ॥ या व्रजको बसिबो हम छांडैं यह निश्चय कर जानी जू । परमानन्द दासको ठाकुर गोकुल कियो रजधानी जू ॥ ७७ ॥

राग ईमन ।

रानीजू लीजिये यह गाम॥दीजिये हमको विदा राम,राम है जु हमारी॥बसि हैं अनतहिं जाय बात लखि लई है तुम्हारी ॥ आपन तो नाहीं करत री सुतको देत पठाय । तीस दिनाकी बात है यह कापै सहियो जाय॥रानी० ॥ मेरे शिरपर बसो गाम काहेको छोरो।श्याम आपनो जान मानले मेरो निहोरो ॥ जो कछु तुमते सुत कही मोहिं कहो समुझाय । मैं तो यह जानों नहीं तुम लीजो सौंह धराय ॥ ग्वालिन गामको मत छोरे ॥ काल्ह तीसरे पहर श्याम गयो भवनन माहीं । वाने कियो जो जियान आवत मुखते कहि नाहीं ॥ बछरा छोरे खरिकते बांधनको नाजाय । सखा भीर ले द्वारे पैठे दूध दही ढरकाय ॥ रानी० ॥ जेतो खा-

यो दही दूध करै लयो मोते लेखो। दुगनो चौगुनो नौगुनो सौगुनो लेहु विशोखो॥ माट भरे दधि दूधके घरमें चाखत नाय। मोहिं यही अचरज बडो पावत तुम घर जाय॥ ग्वालिन०॥ काहेको घरको छुये जौलौं कहुँ मिलत परायो। अपनो सुन्दर मान काहू पै न जान लुटायो॥ आप खाय तौहूँ महें मर्कट देत खवाय। जो वे भी चाखत नहीं देत भूमि ढरकाय॥गारी ॥

राग भैरवी।

मेरी भरी मटुकिया लै गयो री। कछु खायो कछु ग्वालन खवायो रीतीकर मोहिं देगयो री॥ वृन्दावनकी कुंजगलिनमें ऊँची नीची मोते कहि गयो री। परमानन्द व्रजवासी साँवरो अँगुठा दिखाय रस लै गयो री॥ ७९॥

राग जंगला काफी।

दधि पीगयो री माई आज॥ तेरो नट खट करगयो चट पट यह कहा सीख तैं दई कृष्णको व्रजनारियोंके पट खोलनकी री॥ चला जाय नट खट पीगयो गट गट फिर दिखतारी नहीं॥ एक रोज गूजरीका दांव जो लगा लहिंगेमें पकर वाको दाब लाई री॥ तू जो कहे थी मेरो नट नहीं चोर अब याहि ले री माई॥ व्रजकी सखी सब देखनको धाई आज पकरे गये हैं. यादवराई री॥ खोलके दिखावो इतवार नहीं आवे जाने किसको पकर लाई री॥ भीतर प्रभुने ऐसो रूप लियो धार गूजरीको पति-भर्तार बनो री॥ गूजर जैसी पगडी औ तगडी गूजर जैसी डाढी गोडोलौं लटकाई री॥बोली व्रजनारी ऐसी बावरी भई तु आपनी तो ताली तैंने बजवाई री॥तूतो कहेथी तेरो नट पकरो ले गूजरको पकरलाई री॥ छल कृत रूप देख गूजरी विहाल भई काढके घूंघट बडी

शर्माई री ॥ दूसरी कोठरीमें आप रहे बोल मैं तो यहां बैठो माइ री ॥ एक बोली ब्रजनारी तू तो बावरी भई आपनी तो हाँसी तैंने करवाई री ॥ कहे जियाराम यह तो पूर्ण ब्रह्म गति ऋषियोंने नहीं पाई री ॥ ८० ॥

राग रेखता ।

सुनिये यशोदा रानी छोडें ये व्रज तिहारो । कहिं जायके बसैंगी अतिही करैं किनारो ॥ नित कहां तलक सहिये नुकसान तेरे सुतको। घर जायके हमारे माखन चुरावे सारो ॥ तेरेही पास बालक यह बनके आय बैठे । जब जाय घर मखिनके सुंदर तरुण निहारो॥ छीके पैहो कमोरी लठियाते फोरडारे । दधिकी मथनियां तोरके माखन सभी बिगारो ॥ नित करे हानि हमरी रंगीन याहि बरजो । ऐसो चपल यह ढीठ है यशुदाजी सुत तिहारो ॥८१ ॥

राग देश ।

गारी मत दीजो मों गरीबिनीको जायो है।तेरो जो बिगारयो सो तो मोसों आन कहो बीर मैं तो काहू बातको नहीं तरसायो है ॥ दधिकी मटुकिया भरी अँगनामें आनिधरी तोल २ लीजो बीर जेतो जाको खायोहै ॥ सूरदास प्रभु प्यारे नेकहू न हूजे न्यारे कान्हरा सो पूत मैंने बडे पुण्य पायो है ॥ ८२ ॥

राग रामकली ।

मैया मेरी मैं नहिं माखन खायो ॥ भोर भयो गैयनके पाछे मधुवन मोहिं पठायो ।चार पहर बंशीवट भटक्यो सांझ परी घर आयो ॥ मैं बालक बैयनको छोटो छींको किस विधि पायो।ग्वाल-बाल सब बैर पडे हैं बरवश मुख लपटायो ॥ तू जननी मनकी अति भोरी इनके कहे पतियायो । जिय तेरे कछु भेद उपज है जा-

न परायो जायो ॥ यह ले अपनी लकुट कमरिया बहुतहिं नाच नचायो। सूरदास तब हँसी यशोदा लै उर कण्ठ लगायो ॥८३॥

राग काफी।

बर्ज री महरी मोहनको चञ्चल चोर चतुर सुत तेरो ॥ आँगन आवे गोरस खावे दधि मटुकी भूपर पटकावे बाल रुआवे धूम मचावे ऐसो नित उठ करत बखेरो ॥ पलनापर उ टिकावे तापर चढकर माखन लावे कपि बालनको टेर खिलावे देखत दुखित भयो मन मेरो ॥ छिपकर भीतर जाय निकासे अंध-कार में मणी प्रकाशै ना पावे तो गारी देवै आग लगो उजरो घर तेरो॥साँझहिं धेनु वत्स ले आवै यशुदाजू दुख सह्यो न जावै राख गाम अपनो हम जावें केशव जन मन प्रेम घनेरो ॥ ८४ ॥

राग भैरवी।

कान्ह नित नये उरहना लावै। दूध दही घर काहूकी कमी नहिं नाहक धूम मचावै॥तनक दहीके कारण मोहन माखन चोर कहावै। सूर श्यामको यशुमति मैया बारंबार सिखावै ॥ ८५ ॥

राग शहानो।

देख चरित मोहिं अचरज आवै। जो करता जग पालक हरता सो अब नन्दको लाल कहावै ॥ बिन कर चरण श्रवण नासा दृग नेति नेति जाको श्रुति गावै। ताको पकर महरि अँगुरीते आंग-नमें चलिबो सिखरावै ॥ ब्रह्म अनादि अलक्ष अगोचर ज्योति अजन्म अनन्त कहावै। सो शशि वदन सदन शोभाको नँदरानी निज गोद खिलावै॥ जाके डर डोलत नभ धरणी काल कराल सदा भय पावै।सो ब्रजराज आज जननीकी भौंह चढीको निरखि डरावै ॥ जाके सुमिरणते जीवनको भव बंधन छनमें छुटजावै।

सोई आज बँध्यो ऊखलते निरखनको सगरो ब्रज धावै ॥ पूरण-काम क्षीरसागरपति मांग मांग दधि माखन खावै । भक्ताधीन सदा नारायण प्रेम कि महिमा प्रगट दिखावै ॥ ८६ ॥

राग रामकली ।

यशोदा तू बडी कृपण री माई। दूध दही सब विधिको दीन्हों सुतडर धरत छिपाई॥बालक बहुत नहीं री तेरे एकै कुँवरकन्हाई। सोऊ तो घरही घर डोले माखन खात चुराई॥वृद्ध वैस पूरे पुण्य-नते तैं वैठी निधि पाई। ताहूके खइबे पीबेको कहा इती चतुराई ॥ सुनो न वचन चतुर नागरिके यशुमति नन्द सुनाई । सूर श्यामको चोरीके मिस देखनको यह आई ॥ ८७ ॥

राग गूजरी ।

यशोदा कान्हहू ते दधि प्यारो । डार देहु कर मथत मथानी तरसत नन्ददुलारो॥दूध दही माखनसे वारे जाहि करत तू गारो। कुम्हिलानो मुखचन्द्र देख छवि काहे न नेक निहारो ॥ ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत सो व्रज गैयन चारो। सूर श्याम-पर बलि बलि जैयें जीवन प्राण हमारो ॥ ८८ ॥

राग धनाश्री ।

यशोदा तेरो कठिन हियो री माई । कमलनयन माखनके कारण बाँधे ऊखल लाई ॥जो संपदा देव मुनि दुर्लभ सुपनेहुँ दे न दिखाई।याही ते तू गर्व भरी है घर बैठे निधि पाई॥तब काहूको सुत रोवत सुनि दौरि लेत हिय लाई।अब काहे घरके लरिकासों करत इती जडताई ॥ बारंबार सजल लोचन भरि जोवत कुँवर-कन्हाई।कहा करूं बलि जाऊं छोरती तेरी सौंह दिवाई॥जो मूरति जल थलमें व्यापक निगमन खोजि न पाई। सो यशुमति अपने आंगनमें दै करतारि नचाई ॥ सुरपालक प्रभु असुर सँहारक

त्रिभुवन जाहि डराई । सूरदास स्वामीकी लीला निगम नेति नितगाई ॥ ८९ ॥

राग सारंग ।

यह सुनिकै हलधर तहँ आये । देखि श्याम ऊखलसों बांधे तबहिं दोउ लोचन भर आये ॥ मैं बरज्यो कइ बेर कन्हैया भली करी दोउ हाथ बँधाये । अजहूं छांडोगे लँगराई दोउ कर जननि पै आये ॥ श्यामहिं छोर मोहि बरु बांधो निकसत सगुन भले नहिं पाये । मेरे प्राण जीवन धन माधो तिनकर भुज मोहिं बँधे दिखाये ॥ माता मों कहा करो ढिठाई शेष रूप कहिं नाम सुनाये॥सूरदास तब कहत यशोदा दोउभैयातुमइक ह्वै आये॥९०॥

अब घर काहूके जनि जाहु । तुम्हरे आज कमी कहेकी कत तुम अनतहिं खाहु ॥ जरै जेवरी जिन तुम बांधे वरै हाथ महराय। नंद मोहिं अतित्रास करेगो बांधे कुँवर कन्हाय ॥ बलि जाऊँ अपने हलधरकी छोरतहैं जो श्याम । सूरदास प्रभु खात फिरो जिन माखन दधि तुम धाम ॥ ९१ ॥

मगरोकन लीला ।

राग आडा कालिंगडा ।

छांडो मोरी गैल नातो गारी मैं सुनाऊँगी । औरनके भूले कहूँ मोते जिन अटको अभी यशुमति पै पकर लै जाऊँगी ॥ पहले-हीसों अपनी बड़ाई कहा करूं मैं देखियो तो कैसो तुम्हें नाच नचाऊँगी । जो मैं तुम्हें सूधो न बनाऊं नारायण तो मैं निज बापकी न आजमे कहाऊँगी ॥ ९२ ॥

राग दादरा ।

प्यारे जिन मेरी बाँह गहो ॥ मारगमें सब लोग देखतहैं दूरी क्यों न रहो । मनमें तुम्हरे कौन बातहै सोई क्यों न कहो ॥ कहि

हौं जाय आज यशुमतिसों हमरी बाट रोकत हो । इतनेपै नहिं मानत आनँदघन लरकाही तुम हो ॥ ९३ ॥

राग सोरठ ।

छांडो लँगर मोरी बहियां गहो ना ॥ मैं तो नारि पराये घरकी मेरे भरोसे गुपाल रहो ना। जो तुम मेरी बैहां गहतहो नैन मिलाय मेरे प्राण हरो ना ॥ वृंदावनकी कुंजगलीमें रीत छोड अनरीत करो ना । मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरणकमल चित टारे टरो ना ॥ ९४ ॥

राग मलार ।

छैल गैल मत रोकै तू हमारी रे । चाल कुचाल चलो जिन चंचल चर्चा करै सब पुर नर नारी रे ॥ हम सुकुमार ठाढी कांपत हैं शिरपर दधिकी मटुकिया भारी रे । नारायण ब्रज कौन बसे- गो ऐसी अनीति जो करनी विचारी रे ॥ ९५ ॥

राग विहाग ।

बरजो नहीं मानत बार बार । जब मैं जात सखी दधि बेचन भाजत कंकर मार मार॥ले लकुटीमटुकी महि पटकत घूंघट देखत टार टार । हरवा तोरत गरवा लगावत करत कंचुकी तार तार ॥ कपटी कुटिल कठोर श्याम वन देखत छबि तरु डार डार । हरि विलास ब्रजराज हठीलो बैठगई मैं हार हार ॥ ९६ ॥

राग झंझोटी ।

बडो खोटा ढोटा नन्दको आली ।जाको नाम कहत वनमाली मिल्यो यमुना तट हँस हँस मटकत लपट झपट पटकी मटुकी चट दधि गट नटखट कठिन हियो मोहिं देत चलो गयो गाली॥ माथेपै मुकुटधरे कानमें कुंडल पहरे भाल पर तिलक गोरोचन- को करे गल बैजंती,मुक्तमाल आली मुख तमोलकी लाली ।

कटि पीत वसन मानो घन दामिन नूपुर बजत वरणे छबि को कवि देखतही मन हरयो युगल प्रभु तिरछी चितवनशाली ॥ ९७ ॥

लावनी।

सुनो यशोदारानी तेरे गिरिधारीने नाहक लूटी।मैं देत दुहाई बबा नन्दजूकी हाहाग्वाके छूटी॥मैं दधि बेचन जात वृन्दावन शिर धरे गोरसकी मटकी। आन अचानक तेरे कान्हाने मे झटकी॥जब झटकी हिरदैमें खटकी लटकी शिरमें आ अटकी। मैं व्याकुल ह्वै गई रही ना सुरत मोहि घुँघुट पटकी॥ ऐसी भई सुध हरन गिरी मैं धरन मेरी मटुकी फूटी ॥ मैं देत०॥एक सखी कह चुकी दूसरी कहै सुनो यशुदारानी । आज या ब्रजमें तेरे कान्हाने धूम ऐसी ठानी ॥ बाट बाट पै रोकत डोले नहीं भरन देवे पानी। पानी भरनमें दान मांगत ऐसो दधिको दानी॥करकी चूरी गई करक मेरी मोहनमाला न्यारी टूटी ॥ मैं देत० ॥९८॥

राग देश।

सुन री गुण कान्ह कुँवरके॥तेरो री सुत चपल कहावे यमुनाके तट वंशीवटके निकट नट झटक मटक दधि गटक पियो ॥ वद-नकी छबि कान्हा मुकुटको शिर धरे कदमके तरुतर कुँवर दुरयो ॥ बांसुरी बजाई मेरी सुध बिसराई कान्हा देख ललाई मेरो कर पकरयो ॥ ९९ ॥

ठुमरी।

मोको डगर चलत दीन्हीं गारी रे। ऐसो री ढीठ बनवारी री गोइयां बिनती सकल कर हारी रे ॥नीर भरन मैं चलीहूँ धामसों बीच मिले पनघटमें कान्ह रे। वह तो जाने न दे पनघटको सनद पिया निरखत सगरी पनिहारी रे ॥ १०० ॥

नयनोंकी मारीरे कटारी मेरे ॥ सुनियो री मेरी पार परोसन ढीठ भयो गिरिधारी ॥ यमुनाके तट भेंट भई मोसों ऐसो छैल बिहारी ॥ सास बुरी घर ननँद हठीली देवर सुने देय गारी ॥ मधुर अली घर जात बनैं ना पीर उठी अति भारी ॥ १०८ ॥

राग भूपाली ।

लंगर मोरी गागर फोर गयो ॥ सखी जान कहांसां अचक आय लंगर० ॥ नई चुन्दरिया चीर २ कर निपट निडर पुनि आंख दिखावे देख बीर अति कोमल बेहां दोउ कर पकर मरोर गयो ॥ मोसो कहे सुन एरी सुन्दरी तो समान ब्रज सुघर न कोउ नख-शिख लों छबिपरख निरख मुख सघन कुंजकी ओर गयो ॥ कहँ-लग कहों कुचाल ढीटकी नाम लेत मेरो जीया कांपे नारायण मैं घनो बरजरहि मोतियनकी लर तोर गयो ॥ १०९ ॥

राग रेखता ।

सुनले यशोदा रानी तू लालकी बडाई । सब लोक लाज बान यमुनामें धो बहाई ॥ भोरहि में गई जो जल भरने काज भयना । पीछेसों आ अचानक उन मूँद मेरे नयना ॥ डरपी मैं हाथ को है तब बोले टेढे बैना । हों तो रही अकेली वा संग ग्वाल सैना ॥ तब सबने हो हो करके तारी मेरी बजाई ॥ सुनले० ॥ हँस हँसके छैल मोसों करने लगो ठठोली । वह छबि निहारे मुखकी अब कासों जाय तोली ॥ निरखे कबू बदनको कबहू तू छूटे चोली । मैं तो सकुचकी मारी वासों कछू न बोली ॥ पुनि वहाँ मेरी झटकी गागर धरणि गिराई ॥ सुनले० ॥ कबहु कहे बना री तू क्यों अकेली आई । के बरसें तेरे पतिकी तोसों भई लराई ॥ तू चल भवन हमारे कर मोसों मित्रताई । विधनाने

मेरी जोरी भली बनाई ॥ नागयण वाकी बातें सुनके मैं अति लजाई ॥ सुनल० ॥ ११० ॥

सुनिये यशोदा कान दे अरजी यही हमारी । हम छांडजांय ब्रजको मरजी यही तुम्हारी ॥ नित घाट बाट नट खट जेहर झड़ाक पटके । बैयाँ मरोरे झटपट छातीमों हार झटके ॥ कूद कूद कर कन्हाई घूंघट मम्हार खोले । ठोढीमों कर लगाके कीमी बात बोले ॥ निज दृष्टि बाण करके भौंहें कमान तान । चोरी सिवाय रसके वह और कछु न जाने ॥ चोरी करे मों चोरी घरमें डगरमें पावे । भाजनको तोर फोरी माखन दही लुटावे ॥ कोई सखी इकेली घरमें बगरमें पावे । हँमके शरीर मसके वाको दया न आवे ॥ हम बारबार तुमपे करती पुकार हारी ॥ तुमने दया हमारी कबहूँ नहीं विचारी॥कीजे कृपा शिताबी हम गोपकी कुमारी । दीजे निकाम देखूं कैसो रसिक बिहारी ॥ १११ ॥

राग झूलनाके स्वरमें ।

लिये फिरत सँग सँग सखियनका जाने मोहनी डारीहै । ढूंढत डोलत आप आपको ऐसो खेल खिलारीहै ॥ आप अमृतघट आपहि पीवै आपहि प्यावन हारीहै । आपहि दृष्ट अदृष्ट आपही आपहि गोपकुमारी है ॥ वंशी बजन दिशा अवलोकन घूंघट ओट निहारी है । सब सखियनमें चतुर राधिका श्रीवृषभानु-दुलारी है ॥ सुनो सखी जाके सँग डोलो सोइ त्रिया वपु-धारी है । लीजे पकर निकस कहुँ जाय न यही रसिक बनवारी है ॥ ११२ ॥

गोचारनलीला ।

राग रामकली ।

मैया मैं गाय चरावन जैहों । तू कह नंदमहर बाबासों बड़ो भयो न डरैहों ॥ श्रीदामा आदि सखा सब अपने औ दाऊ संग लैहों । बंसीवटकी शीतल छैयां खेलत अतिसुख पैहों ॥ दह्यु भात कामर भर लैहों भूख लगे तब खैहों । परमानंद प्रभु तृपा लगे जब यमुनाजलहि अचैहों ॥ ११३ ॥

राग सारंग ।

शीश मुकुट मणि विराज कर्ण कुंडल अधिक साज अधर लाल चिबुक सुंदर यशुमतिको प्यारो । कमलनयन कुंवर लाल कुंकुमको तिलक भाल गुंजमाल कंठधार कान्ह कमरी वारो । चारत वन धेनु जात मुखमें मुरली सुहात गोपिनको चित चुरात कहियत नंदवारो । अतिस्वरूप श्याम गात दरश देख पाप जात सिहरदास प्रभु प्रवीन पतित तारन हारो ॥ ११४ ॥

राग बिलावल ।

खेलनमें का काको गुसैयां । हरि हारे जीते श्रीदामा बरबश ही कत करत रुसैयां ॥ जाति पांति हमते बड़ नाहीं ना हम बसत तुम्हरी छैयां । अति अधिकार जनावत याते जाते अधिक तुम्हारे गैयां ॥ रूठ करे तासों को खेले हाहाखात परत तब पैयां । सूरदास प्रभु खेल्योही चाहें दाव दियो कर नंद दुहैयां ॥ ११५ ॥

राग जंगलासिंध ।

न्यारी करो प्रभु अपनी गैयां । नाहिन बनत लाल हम तुमसों कहा भयो दश गैयां अधिकैयां ॥ ना हम चाकर नंदबबाके ना

तुम हमरे नाथ गुसैयां । आपन रहत नींदको मातो हम चारत तेरी बन बन गैयां ॥ कबहूं जाय कदम चढ बैठे हम गैयन सँग लगत पठैयां । मानी हार सूरके प्रभुने अब नहिं जाऊँ मोहिं नंदकी दुहैया ॥ ११६ ॥

राग टोडी ।

आज कौने धों बन चरावन गाय कहा धों भई बडी बेर कहूँ सुध लेहुँ कौन विधि ग्वालि करत अवसेर ॥ वृन्दावन आदि सकल बन ढूंढ्यों जहिं गायनकी टेर । सूरदास प्रभु रसिकशिरो- मणि कैसे दुराए दुरत डुँगरनकी ओट सुमेर ॥ ११७ ॥

राग सारंग ।

ब्रजवासिन पटतर कोउ नाहीं । ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत तिनकी जूठन लै लै खाहीं ॥ धन्य नंद धन्य जननि यशोदा धन्य जहां अवतार कन्हाई । धन्य धन्य वृन्दावनके तरु जहं विहरत प्रभु त्रिभुवन राई ॥ हलधर कहत छाक जेंवत संग मीठो लगत सराहन जाई । सूरदासप्रभु विश्वंभरहैं ग्वालन कौर अघाई ११८

राग हमीर कल्याण ।

ठुमक गति चलन अनोखी चाल । मोर मुकट मकराकृत कुंडल केसर बेंदी भाल ॥ आगे गैयां पाछे गैयां संग सोहैं ब्रजबाल । विष्णुदास मुरलीधरकी छबि देखत भई निहाल ॥ ११९ ॥

राग केदार ।

बन आये बनवारी । शिर धार चन्दन खौरि मोतियनकी गल- माला मोर मुकट पीताम्बर सोहै कुंडलकी छबि अति न्यारी ॥

वृन्दावनकी कुंजगलीमें चाल चलन गति अति प्यारी । चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि चरणकमलपर बलिहारी ॥ १२० ॥

राग जंगला ।

चले आते हैं मोहन बनमें धेनु चराये हुए । लिये बंशी अधर पर धर मधुर सुर गाये हुए ॥ उड़ी गोरज परी मुखपै छबीले लालाहूके । लटकता नाकमें मोती कुंडल झलकाये हुए ॥ मुकुटकी लटकपै अटकी मोरी अखियां यह लाला । लगई जो मन मेरा जुलफें नागिन बल खाये हुए॥नयननकी सैनदे मोही सकल ब्रजहूकी बाला । परी बस प्रेमके ऐसी छूटनी नहीं छुडाये हुए ॥ अपने कृष्णदासपै कीजिये कृपा नन्दजके लाला । दीजिये दर्शन चरणसों रहूं लिपटाये हुए ॥ १२१ ॥

राग कान्हरो ।

देखन दे मोरी बैरन पलकें । निरख स्वरूप मदनमोहनको बीच परत बजरमी मलकें ॥ आगे आगे धेनु पाछे नंदनन्दन गोचरणन रज मंडित अलकें । कुण्डल करण कोटि रवि पसरे सरस कपोलनमें कछु झलकें॥ऐसो स्वरूप निरख मेरी सजनी वारी किये इस पूत कमलके । नन्ददास जननकी यह गति तरफत मीन भाव बिन जलके ॥ १२२ ॥

राग खम्माच ।

लटक लटक चलन चाल मोहन आवे । भावे मन अधर मुरली धरि सुर बजावै ॥ ——

. . . मोहन । सूरत राज । भ्रुकुटी कुटिल चपल नयन अरुण अधर मधुर बैन गति गयंद चारु तिलक भालपर विराजै ॥ लछमनदास श्याम रूप नखसिख शोभा अनूप रसिक भूप निरखि बदन कोटि मदन लाजै ॥ १२३ ॥

राग गौरी ।

लटकत चलत युवति सुखदानी । सन्ध्या समय सखा मंडल-में शोभित तनु गोरज लपटानी॥मोर मुकुट गुंजा पियरो पट मुख मुरली बाजत मृदुबानी । चतुर्भुज प्रभु गिरिधारी आये बन ते ले आरती वारत नन्दरानी ॥ १२४ ॥

राग गौरी ।

मैया मोरी कमरी चोर लही । मैं बनजात चरावन गैया ... देख गही ॥ एक कहै कान्हा तेरी कामर यमुनामें जात बही । एक कहै श्याम तेरी कामर सुरभी खाय गई । एक कहत नाचो मेरे आगे लैदेहों और नई । सूरदास यशुमतिके आगे अंशुअन ढार दई ॥ १२५ ॥

राग कान्हरो ।

पौढे श्याम जननि गुणगावत । आज गयो मेरो गाय चरावन यह कहि मन हुलसावत ॥ कौन पुण्य तपते मैं पायों ऐसो सुंदर बाल । हर्ष हर्षके देत सखनको सूर सुमनकी माल ॥ १२६ ॥

कालीदमनलीला ।

छन्द ।

गेंदके संग कूद बालक यमुना जल पैठे धायके । नाग नागिन करत क्रीडा हरि उतरे तहां जायके ॥ कौन दिशाते आयो रे बालक कहां तुम्हारो गाम है । कौन सखीके पुत्र जो कहिये कहा तिहारो नामहै ॥ पूर्व दिशाते आये री नागिन गोकुल हमरो गामहै । मात यशोदा पिता नंदजू कृष्ण हमरो नाम है ॥ प्रभुके सम्मुख कहते नागिन जारे बालक भागके । तेरो रूप देखे दया उपजे नाग मारै जागके ॥ भागे कुलको दाग लागे अब भागे

कैसे बने । होनी होय सो होय री नागिन नागनो नाथे नेन ॥ असुर राजा दुखी धरणी नृप चोर बन आइयां । कंससेती इन्द्र कीनो नाग नाथन आइयां ॥ के बालक तुम मग जो भूले के घर नारि रिसाइयां । के तुम्हरे मन क्रोध उपज्यो बालक जूझन आइयां ॥ ना नागिन हम मग जो भूले ना घर नारि रिसाइयां । ना हमरे मन क्रोध उपज्यो नाग नाथन आइयां ॥ ले बालक गलहार माला सवा लाखकी चोरियां । मोतो ले घर जाउ रे बालक नागसो देउँ चोरियां ॥ कहा करों गलहार माला सवा लखकी चोरियां ॥ वृन्दावनमें गडो हिंडोला नागकी करों डोरियां ॥ चौंसठ चोप सरोर नागिन नाग जाय जगाइयां । जागो हो बलवंत योधा बालक जूझन आइयां ॥ जब उठ हो जलके राजा इन्द्र जल बहगइयां । प्रभुके मुकुटको झपट कीनो शब्द ताल बजाइयां ॥ दोऊने मिलके इंद्र कीनो राग भेद सुहाइयां । सहस फण प्रति निर्त कीनो थेइ थेइ शब्द उचारियां ॥ कर जोरि नागिन करत स्तुति कुटुम सहित उठ धाइयां । नाथ अब अपराध क्षमा कर कृपा हम पति पाइयां ॥ वामन बलिके द्वार हरिजू आप रूप बढाइयां । मच्छ कच्छ वाराह नरसिंह रामरूप दिखाइयां ॥ हम दासी प्रभुजू तिहारी मन मारे छोडो नागको । प्राणदान तुम देहु हमको राखो नाथ सुहागको ॥ नंदनंदन तब भये राजी दियो काली छोडके । करि अनुग्रह दास कीनो ताके मदको तोडके ॥ कालीदहमें नाग नाथ्यो मथुरा कंस पछारियां । प्रभु मदनमोहन रहस मंगल याहि विधिसों गाइयां ॥ १२७ ॥

राग काफी ।

कालीके फनन ऊपर निर्त्तत गोपाललाल अद्भुत छवि कहि न जाय त्रिभुवन मन मोहैं । ताता थेई थेई करत हरत सबके चित्त जा

गात सुर नर मुनिजन चित्र लिखे सोहैं॥ रुनक झुनक नूपुर धुनि उठत उठत पैंजनी पग ठुमक ठुमक किंकिणी कटि बाजत चित करखें। विद्याधर गंधर्व किन्नर जहां उघटेत गत जय जय जय भाषत सुरबधू पुष्प बरखें॥ ज्यों ज्यों फण ऊंचे करत त्यों त्यों कृष्ण मारैं लात देत न अवकाश प्रभु नाचत गतिधीमें। तरुण वदन गरल वमन मरल किये या विधि कर लटक लटक प्रभु ललित रंग भीने॥नारदादि शिव विरंचि तज प्रपंच धरत ताको पग दुर्लभ सोई उरग शीश धारें। विद्याधर प्रभु दयाल तज विवाद कियो निहाल काली नेरे धन्य भाग विसरत न विसारें॥ १२८॥

तांडव गति मुंडन पर निर्तत वनमाली। पंपंपं पग पटकत फंफंफं फनन ऊपर विंविविं विनती करत नागवधू आली॥संसंसं सनकादिक नंनंनं नारदादि गंगंगं गंधर्व सभी देत ताली॥ सूरदास प्रभुकी वानी किंकिंकिं किनहूं न जानी चंचंचं चरण धरत अभय भयो काली॥ १२९॥

राग कान्हरो।

जबहिं श्याम तनु अति विस्तारयो। पटपटात टूटत अँगजान्यो शरण२अहिराज पुकारयो॥ यह वाणी सुनतहिं करुणामय तबहि गये सकुचाये। यही वचन सुन द्रुपदसुताके दीनों वसन बढाये॥ यही वचन गजराज सुनायो गरुड छाँड तहँ धाये। यही वचनसुन लाक्षागृहमें पांडव जरत बचाये॥यह वाणी सहिजात न प्रभु पै ऐसे परमकृपाल। सूरदास प्रभु अंग सकोरयो व्याकुल देख्यो व्याल॥ १३०॥

वंदौं मैं चरण सरोज तिहारे। सुंदर श्याम कमलदल लोचन ललित त्रिभंग प्राणपति प्यारे॥ जे पद पद्म सदाशिवको धन

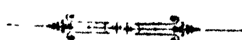
सिन्धुसुता उतरे नहिं टारे।जे पद पद्म तात रिस त्रासत मन बच क्रम प्रह्लाद सम्हारे॥जे पद पद्म फिरत वृन्दावन अहि शिर धरि अगणित रिपु मारे। जे पद पद्म परस ब्रज युवती सर्वस दै सुत सदन बिसारे॥जेपद पद्म लोकत्रयपावन सुरसरि दरश कटत अघ भारे। जे पद पद्म परसि ऋषिपत्नी नृप अरु व्याध अमित नर तारे॥जे पद पद्म फिरत पांडव गृह दूत भये सब काज संवारे।ते पद पंकज सूरदास प्रभु त्रिविध ताप दुख हरण हमारे ॥ १३१ ॥

श्याम कमलपद नखकी शोभा। जे नख चन्द्र इन्द्र सुर परसे शिव विरंचि मनलोभा॥जे नख चन्द्र सनक मुनि ध्यावैं नहि पावत मर्माहीं।जे नख चन्द्र प्रगट ब्रज युवती निरखिरहर्षाहीं॥जे नख चन्द्र फणींद्र हृदय ते एको निमिष न टारत। जे नख चन्द्र महामुनि नारद पलक कहूं न विसारत॥जे नख चन्द्र भजन खल नाशत रमाहृदय नित परशत। सूर श्याम नख चन्द्र विमल छवि गोपीजन मिल दर्शत ॥ १३२ ॥

राग विहाग।

अबकी राखि लेहु गोपाल। दशो दिशानें दुसह दवागिनि उपजी है यहि काल॥पटकत बांस कांस कुश चटकत लटकत ताल तमाल। उचटत अतिअङ्गार फुटत फिर झपटत लपट कराल॥धूमि धुंधि बाढी धुर अम्बर चमकत बिच बिच ज्वाल। हरिन बराह मोर चातक पिक जरत जीव बेहाल ॥जिन जिय डरो नयन सब मूंदो हँसि बोले नँदलाल। सूर अनल सब बदन समानी अभय करे ब्रजबाल ॥ १३३ ॥

गोवर्द्धनलीला।



राग मलार।

देखो माई बादरकी वरिआई मदनगोपाल धरचो कर गिरि-
र इंद्र ढीठ झर लाई॥ जाके राज्य सदा सुख कीनो ताको
। सेवक करै स्वामिसों सरवरि इन बातन पति जा
ढीठ बलि खात हमारी देखो अकिल गँवाई। सूरदास तिनका
काको डर जिहिं बन सिंह कन्हाई॥ १३४॥

राग बिलावल।

राखि लेहु गोकुलके नायक। भीजत ग्वाल गाय गोसुत सब
विषम बूँद लागत जनु सायक॥ वर्षत मूसलधार सेनपति
महामेघ मघवाके पायक। तुम बिन ऐसो कौन नन्दसुत यह
दुसह मेटिबे लायक॥ अघमर्दन बकवदन विदारन बकी-
शन सब सुखदायक। सूरदास तिनको काको डर जिनको
मसे सदा सहायक॥ १३५॥

राग लावनी।

साँवरे शरणागत तेरी। इंद्रने आय ब्रज घेरी॥ देखोजी यह
बादर मिल आये। दामिनी दमकत भरलाये॥ मेघभर लोका
बरसावें। भाग अब कहो कितको जावें॥ कहोजी अब कैसे बने
परचो इंद्रसों बैर। कोप्योहै पृथिवीको पालक होगी किसविधि ठैर॥
जुगत हम बहुतेरी हेरी॥साँवरे०॥ कही हम तुम्हरी सब मानी।
भट गिरिवरकी मन ठानी इंद्रकी झूँठ सभी जानी। लखी हम
तुम्हरी नादानी॥ गोकुल राजा नन्दजू जाघर कुँवरकन्हाय।
वृथा वचन अब होत तिहारो जनकी करो सहाय॥ यतनमें नहिं

लाओ देरी ॥सॉंव०॥कहत हम तुम्हरे गुण भारी । पूतना बालक-
पन मारी॥दुष्टनी माया विस्तारी । बनी आप सुन्दर नारी॥कुचमें
जहर लगायके दियो कृष्ण मुखमाहिं । एक मासको रूप निहारो
जीवत छोड़ी नाहिं॥मारकर मारगमें गेरी ॥ सॉंवरे०॥ जो निर्मल
जल यमुनाको कियो । तुरतही दावनल तैं पियो ॥ अभय ब्रज-
वासिनको करदियो । खैंच कर मन सबको हर लियो ॥ ब्रज तेरी-
को सॉंवरे करै इंद्र बेहाल । अबके सहाय करो नँदनन्दन करुणा-
सिन्धु गोपाल ॥ शरण यह ब्रज मण्डल तेरी ॥ सांवरे० ॥ अधर
हरि आपन मुसुकाये । वचन यह मुखते बतलाये ॥ कहो तुम ह्यां
कैसे आये । सभी मिल गिरिवरपै आये धाये ॥ नखपर गिरिवर
धारके कियो कृष्णने खेल । गोवर्द्धनके शीशपर दियो सुदर्शन
मेल ॥ अधर धर वंशीको टेरी॥सॉंवरे०॥सोहै शिर पचरंगी चीरा-
लगे मुख पाननको बीरा । गले मोतिनकी माल हीरा ॥ सोहै
कटि पीतांबर पीरा ।सात कोसके बीचमें गोवर्द्धन विस्तार । सात
वर्षको रूप हरीको लीनो पुष्प समान ॥ अशीशां दे रही ब्रज
नारी ॥ सांवरे० ॥ इंद्रकर कोप कोप गरजे । नहीं जल गिरिवर
पर बरसे ॥ दामिनी घन घनमें चमके । कि मूशलधारपरी बरसे ॥
वर्ष वर्षके हारचो सुरपति तब जन्यो जगदीश । दोनों हाथ पसार
के धरचो चरणमें शीश ॥ मेरी बुधि मायाने फेरी ॥ सॉंवरे० ॥
अचंभव याको कछु नाहीं। इंद्र तो लाख कोटि ताईं ॥ बनावत
पल छिनके माहीं । बिगारत देर कछू नाहीं ॥ उत्पति परले जगत-
की गिरिधारीको खेल । गंगाधर ब्रह्मा शिव ध्यावें इंद्र बिचारो
कौन ॥ नामते काटो यम बेरी ॥ सॉंवरे० ॥ १३६ ॥

प्रथम सनेहलीला ।

राग गौरी ।

बूझत श्याम कौन तू गोरी । कहां रहत काकी है बेटी देखी नहीं कबहुं ब्रज तन आवत खेलत रहत आपनी पोरी ॥ रहत श्रवणन नंद ढोटा करत फिरत माखनकी चोरी । तुम्हरो चोर हम लीनो खेलन चलो संग मिलजोरी ॥ सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि बातन भुरे राधिका भोरी ॥ १२७ ॥

राग धनाश्री ।

प्रथम सनेह दोउअन मन मान्यो । नयन सैन बातें सबकीनी गुप्त प्रीति शिशुता प्रगटान्यो ॥ खेलन कभूं हमारे आवो नंद सदन ब्रजधाम द्वारे आय टेर मोहिं लीजो कान्ह है मेरो नाम ॥ जो जानो घर दूर हमारो बोलत लेहों टेर । तुम्हें सौंह वृषभानु बबाकी प्रात सांझ इक बेर ॥ सूधी निपट देखियत तुमको नाते करियत साथ । सूर श्याम नागर उत नागरि राधा हरि मिल गाथ ॥ १२८ ॥

राग आसावरी ।

खेलनके मिस कुँवरि राधिका नंदमहर घर आई हो । सकुच सहित मधुरे सुर बोली घर हैं कुँवर कन्हाई हो ॥ सुनत श्याम कोकिल धुनि वाणी निकसे अति अतुराई हो । माता सों कछु कलह करत हारि डारयो रिस बिसराई हो ॥ मैया री तू इनको चीन्हति बारंबार बताई हो । यमुना तीर कालिह मैं भूल्यो बाहँ पकरि मेरी लाई हो ॥ अब तो यहां तोहिं सकुचति है मैं दै सौंह बुलाई हो । सूर श्याम ऐसे गुण आगर नागरि बहुत रिझाई हो ॥ १२९ ॥

कवित्त ।

कीर्ति महरानी वृषभानु आदि गोप गोपी कैसे या कलीके माहिं धन्य कहलावते ॥ कोन तप करतो या ब्रज माहिं बसनेको कोन सो वैकुंठहूके सुख विसरावते ॥ नागरिया जोपै राधे प्रगट न होती नाहिं श्याम पर कामहूके विपती कहावते ॥ छाय जाती जडता बिलाय जाते कवि सब जग जातो रस तो रसिक कहा गावते ॥ १४० ॥

आँखमिचौनीलीला ।

राग गौरी ।

हो प्यारी लागे ब्रजकी डगर । लुक लुक खेलत आँख मिचौनी चरण पखारी नगर ॥ सात पांच मिल खेलन निकसी कोकिला वनकी डगर । परमानंद प्रभुकी छवि निरखत मोहि रह्यो ब्रज सगर ॥ १४१ ॥

राग आसावरी ।

गावें देदे तारियां हो ब्रजकी नारियां सुकुमार । नंदके नंदनहो ब्रजके चंदन रस गार ॥ मिलि बरसानेकी गोरी गारी गावें नवल-किशोरी तुम सुनो नंदके नंदा । तुमको पूछे सब ब्रज चंदा ॥ तेरी बहन छैलछिनगारी । हमारे श्रीदामा ते यारी ॥ तेरी बडी विनोद-नताई । जाकी सब जग करत हँसाई ॥ नंदनंदन तेरी बूआ । सो करै झूठके पूआ ॥ नँदनंदन तेरी काकी । सो कामकलामें पाकी ॥ नंदनंदन तेरी मौसी । सो रहत सदा मन हौंसी ॥ नंदनंदनतेरीमासी । सो सब अबलनमें नासी ॥ नंद नंदन तेरी नानी । वाकी बात न हमते छानी ॥ नंदनंदन तेरी दादी । सो सदा फिरै उन्मादी ॥ गोरे नंद यशोदा मैया । तुम कारे कौनके दैया ॥ सुध न्हाय यशोदा रानी । काहु कारे ते रति मानी ॥ अपनी यशुमतिको गहि आनो ।

सो आय मिले वृषभाना ॥ यह नँद वृषभानु मनेही। यहएक प्राण द्वै देही ॥ वे नंदगामकी बाला । यां बर्सानेके लाला ॥ गठ जोरे आनि करावो । हथलेो हमें दिवावो॥यह रहस किशोरी गायो । सो वास सदा ब्रज पायो ॥ १४२ ॥

राग जंगला।

यशोदाने कारी अँधेरीमें जायो । याते कारो रूप [illegible] कीरति गोद गोपाल लिये मुख चूमत मोद बढायो ॥ [illegible] राशि मयंक मुखी मेरी राधेको रूप लजायो ॥ नाम अनेक सुने घनश्यामके जबसे गर्ग गृह आयो ॥ ना हमने वसुदेव सुने वासुदेव कहांते आयो ॥ कर्मकी रेख मिटै ना सजनी वेद पुराणन गायो॥सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको वेद विमल यश गायो॥ १४३॥

भूषण अपने लेरी मैया मोरकि चंद्रिका कांचकि मणियां गुंजाफल मोहिं देरी ॥ दुरादुरीमें खेलन सखन संग खेलन में नहिं पैहौं । मुख शशि प्रभा बराही राखों इनको कहां दुरैहौं ॥ आज सदन वृषभानु गोपके खेलन में जो गयो ॥ सगरे सखा अगमने भागे में ही चोर भयो॥जबहिं महरि वृषभानु गोपघर गहि अंचर मोहिं रोक्यो।वदन चूमि मिष्टान्न हाथ धर अंग अंग अवलोक्यो॥ तब वृषभानु सभाते आये नंदकुमार न होई । परमानंद कुंवरिको दूलह कहत रहे सबकोई ॥ १४४ ॥

मैया मोहिं ऐसी दुलहिन भावै।काहू गोपकी तनक ढोटनियां रुनक झुनक चलि आवै ॥ कर [illegible] पाक रसाल अपने कर मोहिं परोसि जिमावै । करअंचर पट ओट बबाते ठाढी व्यार दुरावै ॥ मोहिं उठाय गोद बैठारै कर मनुहार मनावै।अहो मेरे लाल कहो बाबा तें तेरो व्याह करावै॥नंदराय नँदरानी दोउ मिलि मोद समुद्र बढावै । परमानन्द दासको ठाकुर वेद विमल यश गावै॥ १४५॥

वंशीलीला ।

राग गौरी ।

माई विधि हू ते परम प्रवीन । जिन जगत कियो आधीन ॥ लालकी बांसुरिया ॥ चारवदन उपदेश विधाता थापी थिरचर नीत।आठ वदन गर्जत गरबीली क्यों चलि है यह रीत॥एक बेर श्रीपतिके सिखये पायो विधि उर ज्ञान।याके तो ब्रजराज लाडिलो लग्योंही रहत नित कान ॥ अतुल विभूति रची चतुरानन एक कमल करठाम । हरि कर कमल युगल पर राजत क्यों न बढ़ अभिमान॥एक मराल पेठ आरोहन विधि भयो महा प्रशंस।इन तो सकल विमान किये गोपीजन मानस हंस॥श्रीवैकुंठनाथ पुराभिन सेवत जापद रेन। याके तो मुख सुख सिंहासन कर बैठी निज ऐन ॥ अधर सुधा रस कुल व्रत टारे नहीं सिखा नहि नारा । तदपि गदाधर नँदनंदको याही ते अनुराग ॥ १४६ ॥

राग कान्हरो ।

बँसुरिया त्रिपभरी बाजी ।

दोहा—बंशी बंशी नामके, काहु धरयो प्रबीन । तान तानकी डोरसों, खैंचत हैं मनमीन॥अहो बांसकी बँसुरिया, तें तप कीन्हों कौन । अधर सुधा पियको पिये, हम तरसत चित भौन ॥ अरी अभाकर मुरलिया, परिहैं तेरे पाँय । और सुखी सुन होतहैं,महादुखी हम हाय ॥ अहो बाँसकी बँसुरिया,निकसी पर्वत फोर। जो मैं ऐसी जानती,डारत तोर मरोर ॥ ऐ अभिमानी मुरलिया, करी सुहागिन श्याम ॥ अरी चलाये सबन पै, भले चामके दाम ॥ तू है व्रजकी मुरलिया, हमहैं ब्रजकी नार। तीन लोकमें गाइये बंशी

औ ब्रजनार ॥ नयननके चल तीर तनु, रह्यो परत नहिं भौन ॥ तापर बंशी बाज मत, देत कटे पर लौन ॥ १४७ ॥

कवित्त।

बांसुरी बजेतो ब्रज हम न बसेंगी बीर बाँसुरी बसावो लाल हमें बिदा दीजिये। जेते राग तेते दाग जेते छेद तेते भेद जेतो शोर तेतो घोर रोम रोम छीजिये ॥ तानके तिरीछे बान लागत [illegible] आन श्रवण न सुने जाय वनमें बसीजिये ॥ वनशीको [illegible] श्याम विनै कर्त ब्रज वाम ऐसी कीनी सूर प्रभु ऐसी हूं न कीजिये॥

जा दिनते बसी अवतरी यहि गोकुलमें तादिन ते कीन्ह्यों श्याम अधर निवासु री। कुञ्ज कुञ्ज डोलैं याहि संगसों किलोलैं किये लीन्ह्यों सौति राग भाग सुखसों बिलासु री॥ बंदीदीन दीन ह्वै रही हैं हम मोहन बिन एक छिन पावत न बोलिबो सुपासु री ॥ बांसुरी सुनत नैन आंसु आय जात पीर पांसुरी समात औ पिरात गांसु गांसु री ॥ १४८ ॥

राग परज।

बंसुरी तू कवन गुमान भरी । सोनेकी नाहीं रूपेकी नाहीं नाहीं रतन जरी ॥ जात मिफत तेरी सब कोइ जानै मधुवनकी लकरी। क्या री भयो जब हरि मुख लागी बाजत विरहभरी॥ सूर श्याम प्रभु अब क्या करिये अधरन लागत री ॥ १४९ ॥

राग भूपाली कल्याण।

री बशी कौन तप तैं कियो । रहत गिरिधर मुखहिं लागी अधरनको रस पियो ॥ श्यामसुन्दर कमल लोचन तोहिं तन मन दियो। सूर श्रीगोपाल वश भये जगतमें यश लियो ॥ १५० ॥

राग देश।

श्याम तिहारी मदन मुरलिया तनक सी ने मन मोह्यो। यह

सजीव जंतु जल थलके नाद स्वाद सुर पोख्यो॥धरणीते गोवर्द्धन धाय्यो कोमल प्राणअधार । अब हरि लटक रहत हैं टेढे तनक मुरलिया भार ॥ हमैं छुड़ाय अधर रस पीवे करे न रंचक कान । सूरदास प्रभु निकस कुंजते चेरी मोन भइ आन ॥ १५१ ॥

राग दादरा ।

चोरे सखी वंशी आज दावँ भलो पायो है।यह उपकार प्यारी सदा हम मानेंगी गोरीराग रसिक सांवरे रिझायो है ॥ बहुत अधरामृत चुवायो श्याम मुरली बीच दिन दिनकी कसक आज काढ़ पायो है । रसिक प्रीतम जोपे विनती करे हजारवार तोहू या बांसुरीको भेद ना बतायो है ॥ १५२ ॥

राग देश ।

सखी याकी वंशी लीजे चोर ॥ जिन गोपाल किये अपने वश प्रीति सबनसों तोर । अधरनको रस लेत मुरलिया हम तरसत निशि भोर ॥ छिन इक घर भीतर निशि वासर धरत न कबहूं छोर । कबहुँक कर कबहू अधरनपर कबहू कटि उर मोर ॥ नाजानूं कछु मेल मोहनी राखी सबअंग कोर । सूरदास प्रभुको मन सजनी बँध्यो है नादकी डोर ॥ १५३ ॥

कौन बसत या वृन्दावनमें सो मुरलीको चोर ॥ जानी नहीं लई काहू करमें कटिमें उरसों जोर । चोरी नाह बरजोरी एरी प्यारी सो मुरलीको चोर॥राजाहीको दिये बनेगी यही न्यावकी तोर । वृन्दावन छिन रूप सुघर पिया बाट गँवाई ढूंढो काननके कछु देहु अकोर ॥ १५४ ॥

राग खम्माच ।

किन लई देहु बताय मुरलिया राधे ॥ प्राणते प्यारी तिहारी सौंह मोहिं जीवत हों गुणगाय ॥ सब सुरन सुर नर मुनि मोहे बँसु-

री नेक रजाय ॥ यह बिनती बलिहार सुनो क्या ना प्यारीजी होत सहाय ॥ १५५ ॥

राग काफी।

मुरलिया जो पाऊं तो मैं तेरेही गुणगाऊं। सुनहो कुँवरि किशोरी राधे श्रीराधे राधे गाय सुनाऊं ॥ चरण छुवाय कहनहों तुमसों तेरोहि ध्यान लगाऊं। यह बिनती बलिहार बिहार हि हाथ बिकाऊं ॥ १५६ ॥

राग भूपाली।

बंशी मेरी प्यारी दीजो प्रान प्रान प्रान। यहि ठौर काल्हि भूल्यो री सुखदान दान दान ॥ नहिं कामकी तिहारी दीजै आन आन आन। जाते करूं मैं तेरी री गुण गान गान गान ॥ बिनती सुनो हमारी दे कान कान कान। कीजै कृपा रसिकपै जन जान जान जान ॥ १५७ ॥

राग ईमन।

काल्ह सखी यहि ठौर बांसुरी भूल बिसारी। लै जो गई तुम धाम बात हम सुनी है तुम्हारी॥तुम्हरे काम न आवहि बंसी हमरी देहु। हम आतुर होय मांगते तुम नाहिं नाहिं जु करो ॥ बांसुरी दीजिये ब्रजनारि बंसी कैसी होत नहीं हम नयनन देखी। पिता तुम्हारे साधु लाल तुम कपट विशेखी ॥ इत उत खेलत तुम फिरो वाहीं भूलरही। सांच शपथ बाबाकी सौं तेरी बँसुरी नाहिं लई॥ बांसुरी कैसी है ब्रजनाथ बंशी हमरी देहु काहेको रारि बढावो। समझ बूझ मनमाहिं काहेको लोग हँसावो ॥ लोगहँसैं चर्चा करैं प्यारी मनमें शोच विचार। यह बंसी मनमोहनी तुम देती क्यों न गवांर ॥ बंसी दीजिये० ॥ हमको कहत गँवारि आपनी करत बडाई। मारूं गुलचा गाल तोहूं बाबाकी जाई ॥ तुमसे केते ग्वा-रिया माँगत हम पैं आय। चतुराई तुम छांडिके जाय चरावो

गाय ॥ बंसी कैसी० ॥ या बंसीकी मार कहा तुम ग्वालिन जानो। तीन लोक पटतर तासों मेरो मन मानो ॥ या बंसी खोजत फिरे शिव विरंचि मुनिनाथ । परचावो परचे नही तुम कहा नचावन हाथ ॥ बंसी दीजिये० ॥ नंद सिहरके कुंवर कान्ह तोहि कौन पतीजे । भूल गये कहूं अनत दोष हमको नहि दीजे ॥ ले लकरी मुखपे धरी बंसुरी याको नाम । जिन वर ऐसे रत हैं उजरत तिन-के गाम ॥ बंसी कैसी० ॥ बसो कि उजर जाउ तुझे क्या परी हमारी । तुमसी हैं लखचार नद वर गोबरहारी । इकलख संग चलें लखआवें लखजांय । लख ठाडी दर्शन करें लख खडी खडी ललचायं ॥ बंसी दीजिये० ॥ सुधरमयानी नारि हाथगहि बंसीलाई । पूरण परमानंद सांवरे मुख हि बजाई ॥ ले बंसी ग्वालिन मिली घुंघट बदन छिपाय । सूरदास हारी गूजरिया जीते यादव राय ॥ बांसुरी लीजिये व्रजनाथ ॥ १९८ ॥

राग कल्याण ।

श्यामकी बंशी बन पाई । उठो यशोदा मैया खोलो किवारिया मैं बंसी गृह देनेको आई ॥ बहुत दिननके उनींदे मोहन सोने दे वृषभानुकि जाई । इतनी सुनत निकसि आये मोहन अंतर्यामी प्रभु कुँवर कन्हाई ॥ मुरलीके संग पहुंची हमारी दे राधे वृषभानुकि जाई । हमजानी कछु मान बढेगो तुम हरि हमको चोरी लगाई ॥ श्रवणन सुनी नयन नहि देखी चलो ठौर हम देहि बताई । सूर-दास गुण कहँ लग वरणे दोनोंमें एके चतुराई ॥ १९९ ॥

वेणीगूंथनलीला ।

राग कल्याण ।

वेणी गूंथ कहा कोई जाने मेरीसी तेरी सौंह राधे ॥ बिच बिच फूल श्वेत पित राते को करसके एरी सौंह राधे ॥ बैठे

रसिक सँवारन बारन कोमल कर कँगहीसों साधे। हरिदासके स्वामी श्यामा नखशिखलौं बनाई दे काजर नखहीसों आधे ॥ १६० ॥

राग दादरा।

प्यारीको शृंगार करत नँदलाला। बार बार में मोती पोहे कन बिच झलके बाला ॥ कलीदार जरीको लहँगा ऊपर दुशाला। पुरुषोत्तम प्रभु रसिक शिरोमणि छबि निर… ब्रजबाला ॥ १६१ ॥

राग गौरी।

तेरो मुख नीको कि मेरो राधा प्यारी। दर्पण हाथ लिये नँदनंदन साँची कहो वृषभानु दुलारी ॥ हम का कहैं तुमहीं क्यों ना देखो मैं गोरी तुम श्याम बिहारी। हमरो वदन ज्यों चंदाकी उजारी तुमरो वदन जैसे रैन अंध्यारी ॥ तिहारे शीशपर मुकुट बिराजै हमरे शीशपर तुम गिरिधारी। चंद्र सखी भज बालकृष्ण छबि दोउ ओर प्रीति बढी अति भारी ॥ १६२ ॥

राग विहाग।

बेसर कौनकी अतिनीकी। होड परी लालन औ ललना चौंप बडी अति जीकी ॥ न्यावपरो ललताके आगे कौन ललित कौन फीकी। दामोदर हित विलग न मानो झुकनझुकी प्यारी-जीकी ॥ १६३ ॥

राग श्यामकल्याण।

राधा प्यारी रूप उजारी मोतन नेक हेरो। मेरी प्यारी तन. मन धन छबि ऊपर वारो नाम उचारों मैं तेरो ॥ हँस मुसकाय वदन तन हेरो मोहिं करो चरणनको चेरो। अली किशोरी एक बार कहो लाल बिहारी मेरो ॥ १६४ ॥

राग खेमटा ।

तेरो मुख चंद्र री चकोर भेरे नैना । पलहुं न लागे पलक बिन देखे भूल गये गत पलहूं लगे ना । हरबगत मिलबेको निशिदिन ऐसे मिले मानों कबहूं मिले ना ॥ भगवत रसिक रसकी यह बातें रसिक बिना कोइ समझ सकेना ॥ १६५ ॥

तू है मुख कमल नयन अलि मेरे । और आस्न अनुरागी लंपट हरबगत इत फिरत न फेरे ॥ पान करत मकरंद रूप रस भूल नहीं फिर इत उत हेरे । भगवत रसिक भये मनवारे बसत रहत छके मद तेरे ॥ १६६ ॥

प्रीतम तुम मो दृगन बसतहो । कहा भोरसे ह्वै पूछतहो कै चतुराई कर जो हँसत हो ॥ लीजे परख स्वरूप आपनो पुतरिनमें तुमहीं जो लसतहो । बृन्दावन हित रूपरसिक तुम कुंज लड़ावत हिय हुलसतहो ॥ १६७ ॥

रागजंगला सवैया ।

चैन नहीं दिन रैन परे जबते तुम नैनन नेक निहारे ॥ काज बिसार दिये घरके ब्रजराज में लाज समाज बिसारे ॥ सो बिनती मनमोहन मानियो मोसों कहूं जिन हूजियो न्यारे ॥ मोहि सदा चितसों अति चाहियो नीकेके नेह निबाहियो प्यारे ॥ १६८ ॥

गौर ग्वालकी लाला ।

ठुमरी ।

चन्दा सो बदन जामें चन्दनको बिंदा दिये चन्दा तन चित वन चन्दा छवि छाई प्यारी । चन्दनकी सारी सोहै चन्दनको हार हिय चन्दनको लहँगा सोहै चन्दा मुख भाई प्यारी ॥ चन्दनकी कंचुकी चन्दनकी चन्दनी चन्दनकी [illegible] तन भाई

प्यारी । कहा कहूँ कछु कहत न आवे तिहारो मुख देख चन्दा गयोहै लजाई प्यारी ॥ १६९ ॥

राग विहाग ।

यह कहिके प्रिय धाम गई ॥ चौंक परे हरि जब यह जानी अब यह कहा भई ॥ दोष न होय कछू सखि मेरो उपमा चंद दई प्रेम न भरी नख शिखलौं प्यारी यौवन गर्व मई ॥ लावो मनाय सखीरी यामिनि जात वही । पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत लावो वेगि सही ॥ १७० ॥

राग गौड़मलार ।

वृषभानु कुँवरि जब देखों।तब जन्म सफल करि लेखों॥मैं राधा राधा गाऊँ । राधा हित वेणु बजाऊँ॥ मैं राधारमण कहाऊँ।काहे दूजा नाम धराऊँ॥जहँ राधा चर्चा कीजै । तहँ प्रथम जान मोहिं दीजे॥जहँ राधा राधा गावें । तहँ सुनबेको हम आवैं ॥ श्रीराधा मेरी सम्पति । श्रीराधा मेरी दम्पति ॥ श्रीराधा मेरी शोभा । श्रीराधाको चित लोभा ॥ मैं :राधाके संग नीको । राधा बिन लागत फीको ॥ १७१ ॥

राग खेमटा ।

देखी कहूँ गलिनमें मो प्राण जीवनी । एहो सुजान प्यारी हम चूक क्या विचारी क्यों दुरगई लतनमें दे दर्श आनन्दनी॥ जब चलत चाल छबिसों तब हलत हार उरसो ठुम ठुम चरन धरन पै तू गति गयन्दनी ॥ तेरी छटा चरणकी निंदत रवी किरणकी हाहा कुँवरि किशोरी तू है सुख समूहनी । यह सुनत बचन मेरो पाषाण द्रवत हेरो हित रूप लाल नेरो एहो दुख-निकन्दनी ॥ १७२ ॥

राग देश ।

राधा दे राधा कित गई।वृन्दाविपिन अछत प्यारी बिन सब विपरीत भई ॥ मेरे मन्द भाग्यसों काहू पोच प्रकृति सिखई । श्याम स्वामिनी जो मिले तो बाढै प्रीति नई ॥ १७३ ॥

राग पीलू ।

मेरी सुध आन लियो प्यारी राधा । तनहूं लडैती राधे मनहूं लडैती हरत सकल दुख बाधा ॥ कुंजमहलमें सदाहि रमनहो सुख संपति लिये साधा । विठ्ठल विपिन विनोद विहारन सर्वस प्राण अगाधा ॥ १७४ ॥

राग सोरठ ।

श्रीराधा प्यारी देखीहै चितकी चोर । लागी काहू ठौर मैने देखी है चितकी चोर ॥ चन्द्रवदनि मृगलोचनि राधे जैसे चन्द्र चकोर । नई प्रीति सो सबरस बाढ्यो जोबना करनही जोर ॥ पाँयनमें नूपुर धुनि बाजे गजगति चलती तोर । या छवि निरखिके मगन भये गुण गावत दास किशोर ॥ १७५ ॥

राग विभास ।

मेरी तो जीवन राधा बिन देखे नहिं चैन । मोसे तो कछु चूक परी ना कैसे रूठी सुखदैन ॥ पैयां परूं मैं तोरे ललिता तोरे विशाखा तुम जैयो प्यारी लैन । धीरज प्यारीजूके देखे श्रीराधाजूके देखे शीतल होंगे मेरे नैन ॥ १७६ ॥

राग विहाग ।

तुम कहुँ देखी री इत जात रूप गरविनी प्यारी राधा॥ चम्पक वरण गात मन रंजक खंजन चख कुरंग मद गंजन अमल कमल मुख ज्योति विलोकत होत शरद शशि आधा॥अहो सुगन्ध मृग-

शावक नयनी कहूँ देखी प्यारी पिकबैनी सुषुमा सिन्धु अगाधा॥ अहो मराल मानसर वासिक अहो अलिन्द मकरंद उपासिक देहु बताय मोहिं दाया करि होन अपत अपराधा॥ अहो कदम्ब अहो अंब निंब बट मोहन सुखद छांह यमुना तट हरत तापकी बाधा॥ सन्तत देत गोप गोधन सुख कबहुँ नहिं महिमकन मेरो दुख उपकारी वपु वेद बखानत अबहिं मौन क्यों साधा॥ आरत व पुकारत लालन मन जो फँस्यो विरहीके हालन मदन जाल बांधा॥ अतिशय विकल देखि बनवारी प्रकट भई वृषभानु दुलारी सूरदास प्रभुको लगाय उर पुरवत रसकी साधा॥ १७७॥

राग काफी।

करविचार वृषभानु दुलारी। ग्वालरूप धर छलन कृष्णको नन्दगामकी ओर सिधारी॥ जहँ हरि अपनी गाय चरावैं तहां आप चल आई। देख रूप मोहे मुरलीधर भूलगये चतुराई॥ अरे मित्र क्या नाम तिहारो वाम कहां है तेरो। मैं तो तोहिं कभूं नहिं देख्यो करत सदा ब्रज फेरो॥ गोरे ग्वाल भानुपुरके हम गोधन वृन्द चरावें। रसिक विहारी गाय हमारी आई भज कहँ पावें॥ १७८॥

राग देश।

गुन सुन वृषभानु कुवँरिके॥ जाके लाल तुम रहो अधीन। वह तो गृहसे सटक बन रहत अटक नहिं मानत हटक इत उत हो फिरत॥ ऐसी फिरे इतरात नहीं काहूको सुहात मन माने तित जात नहीं नेकहू डरत। बेटी बडेकी कहावै दधि बेचबेको जावै ताहि लाजहू न आवै सब नाम धरत॥ इक मेरी सुन लीजै ऐसी नार ना पतीजै व्याह कहूँ जासों कीजै तेरो चित्त हरत॥ जाकी मुख उजियारी देख रीझोगे विहारी पियो वारि वारि पानी जब प्रीति करत॥ १७९॥

राग प्रभाती ।

सखा तुम बोलो न बात विचारी । कहो कौनसी बाल जगत-
में जैसी है भानुदुलारी ॥ भानु नगरके बसन हार तुम प्यारीकी
अनुहारी ॥ रवि शशि कोटि मदन हूँकी छबि दीजे तुम पर वारी
॥ कहो कौनसे मैं व्याह कराऊं रची कवन विधि नारी । करत
वास हिरदैं मेरे में कीरति कुँवर दुलारी ॥ प्रेम विवश कछु सुरति
रही ना तनुकी दशा विसारी । लिये लगाय वेग उर प्यारी तब
हँसि रसिक विहारी ॥ १८० ॥

राग देश ।

सखी री मैं हूँ नंद किशोर । मैं दधि दान लेत वृन्दावन रोकतहूं
बर जोर॥यह जो माननी मान कर बैठत बिनती करूं कर जोर ।
पुरुषोत्तम प्रभु मैं हूँ रसिक वर यह मेरी चितचोर ॥ १८१ ॥

रास लीला ।

राग गौडमलार ।

शरद निशि देखि हरि हर्ष पायो । विपिन वृन्दावनहिं सुभग
फूले सुमन रास रुचि श्यामके मनहिं आयो ॥ परम उज्वल
रैनि चमक रहि भूमिपर सदा फल तरुन प्रति सुभग लागै । ते-
सोई परम रमणीक यमुना पुलिन त्रिविध बहे पवन आनंद जागै
राधिकारमण बन भवन सुख देखके अधर धर वेणु सुर ललित
गाई । नाम ले ले सकल गोप कन्यानके सबनके श्रवण यह
ध्वनि सुनाई ॥ सुनत उपज्यो मयन परत ना काहू चैन शब्द सुन
श्रवण भईं विकल भारी । सूर प्रभु ध्यान करके चली उठ सबै
भवन जन नेह तज घोष नारी ॥ १८२ ॥

राग कल्याण ।

जब हरि मुरली नाद प्रकाश्यो । जंगम जड थावर चर कीन्हें पाहन जलज विकाश्यो ॥ स्वर्ग पताल दशोदिशि पूरण धुनि आच्छादित कीनो । निशि हरि कल्प समान बढाई गोपिनको सुख दीनो ॥ भर्मत भये जीव जल थलके तनुकी सुध न सम्हार । सूर श्याम मुख बेण विराजत [illegible] ॥ १८३ ॥

राग झंझोटी ।

बंसी यमुना पै बाज रही रे लाल छबि निरखन कैसे जाऊं री आज ॥ बंसीकी टेर सुनी मेरे श्रवणन तन मन सुधि बिसरी रे लाल ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहै चन्दन खौर लगी रे लाल ॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छबि चरणन चेरी भई रे लाल ॥ १८४ ॥

राग यमन ।

वृन्दावन सघन कुंज माधुरी लतान तरे यमुना पुलिनमें मधुर बजी बांसुरी । जबसे धुनि परी कान मानो लागे मयन बान प्राननकी कहा चले पीर होत पांसुरी ॥ व्याप्यो जो अनंग तामें अंगसुध भूल गई कोई कछू कहो कोई करो उपहासु री । ऐसे व्रजाधीश जीसों प्रीति नई, रीति बाढी जाके उर बसगई प्रेमपुंज गांसु री ॥ १८५ ॥

कवित्त ।

एक उठ दौरी एक भूल गई पौरी एक राख भर कौरी सुध रही नाहिं तनमें ॥ एक खुले बार एक छतियां उघार एक भूषणको डर चली दामिनी ज्यों घनमें ॥ एक उजियारी गोपी नाथने निहारी बारी एक भई बौरी डोलै मदन उमंगमें ॥ ऊधम भयो है घरी चार व्रज मंडलमें बांसुरी बजाई कान्ह जभी वृन्दावनमें ॥ १८६ ॥

बाजी घर आईं बाजी देखबेको धाईं बाजी मुरझाईं सुनि तान गिरिवरधरकी ॥ बाजी हँस बोलें बाजी करत कलोलें बाजी संग लाग डोलें सुधि बिसारी सब घरकी ॥ बाजी ना धरें धीर बाजी ना सम्हारें चीर बाजिनके उठी पीर दावानल भरकी ॥ बाजी कहें बाजी बाजी बाजी कहें कहां बाजी बाजी कहें बाजी बंसी सांवरे सुघरकी ॥ १८७ ॥

राग भैरव ।

बांसुरी बजाई आज रंगसो मुरारी । शिव समाधि भूल गई मुनि जनकी तारी॥वेद भनत ब्रह्मा भूले भूले ब्रह्मचारी । सुनतही आनंद भयो लगी है करारी ॥ रंभा सब ताल चूकी भूलि नृत्य-कारी । यमुना जल उलट बह्यो सुध ना सँभारी ॥ श्रीवृंदावन बंसी बजी तीन लोक प्यारी । ग्वालबाल मगन भये ब्रजकी सब नारी ॥ सुन्दर श्याम मोहनी मूरत नटवर वपु धारी । सूर किशोर मदन मोहन चरणों बलिहारी ॥ १८८

राग जंगला ।

वृन्दावन कुंज धाम विचरत पिय प्यारी।कातिककी शरद रैनि चंद्रकी उजारी ॥ पवन मंद मंद चलत फूली फुल वारी । विकसे सर कमल फुले शोभा अतिभारी॥झरना चहुँओर झरत यमुना सुखकारी । आनँदकी रैनि जान मुरली मुखधारी ॥ लैलैके नाम सकल टेरी ब्रजनारी ॥ सुनके धुनि भवन त्याग धाईं सुत डारी॥ उलटे तनुचीर पहर आईं मिल सारी । वीणा मृदंग चंग बाजत करतारी ॥ दास सुखानंद प्यारे चरणन बलिहारी ॥ १८९ ॥

राग कल्याण ।

प्यारी में ऐसे देखे श्याम ॥ बांसुरी बजावत गावत कल्याण ॥ कनकी में ठाढी भैयां सुध बुध भूल गैयां छौने जेसे जादूडारा भूले मांपे काम ॥ जब धुन कान पैया देहकी ना सुध रहिया तन मन

हर लीनो विरहोंवाले कान्ह॥ मीराबाई प्रेम पाया गिरिधर लाल ध्याया देह सों विदेह भैयाँ लागो पग ध्यान ॥ १९० ॥

राग विहाग।

निशि काहेको वन उठ धाई। हँस हँस श्याम कहत हो सुंदरि मारगहिं [illegible] आज अब देर लगाई। अति भ्रम भयो विपिन क्यों आई मारग वह कह सबन बताई॥जाहु जाहु गृह तुरत युवतिगण खीझत गुरुजन लोग लुगाई।की गोकुलते गमन कियो तुम इन बातन कछु नाहिं भलाइ ॥ यह सुनिकै ब्रज बाम चकित भईं कहा करत गिरिधर चतुराई।सूर नाम लैलै सबहिनको मुरली बारंबार बजाई ॥१९१॥

राग प्रभाती।

सानूँ मुड़ घर वंजन कह्यो वे श्यामां। सांई सांई वे करें दया साराजग वे ठगे दया असां माप्यांते चोरी इकन्योहडा लगाया, यमुना किनारे श्यामां ॥ वचन की तोई जब चीर हमारे हरें वे श्यामां॥यमुना किनारे श्यामां धेनु चराइया जब मुरलीकी धुनक सुनाइया वे श्यामां॥ सूरके स्वामी प्रभु शरण तिहारी अब लज्जा हमारी राखो वे श्यामां ॥ १९२ ॥

राग कान्हरा।

कैसे रास रसहि मैं गाऊँ। श्रीराधिका श्यामकी प्यारी तुम्हरी कृपा वास ब्रज पाऊं ॥ आनदेव स्वपने नहिं जानूं दंपतिको शिर नाऊं । भजन प्रताप चरण महिमा ते गुरुकी कृपा दिखाऊं ॥ वृंदावन बीथिन यमुना तट आनँदकुटी छवाऊं । सूरदास प्रभु तिहारे मिलनको वेद विमल यश गाऊँ ॥ १९३ ॥

महारानी श्री राधे रानी । जाके बल मैंने सबते तोरी लोक वेद कुलकानी ॥ प्राण जीवनधन लाल बिहारीको बार पीवत हैं पानी।भगवत रसिक अनन्य सहायक सब ऊपर सुखदानी॥१९४॥

परम धन राधे नाम अधार ।जाहि श्याम मुरलीमें टेरत सुमिरत वारंवार॥ यंत्र मंत्र और वेद तंत्रमें सभी तारको तार । श्रीशुक प्रकट कियो नहिं याते जानि सारको सार ॥ कोटिन रूप धरे नँदनंदन तऊ न पायो पार । व्यासदास अब प्रकट बखानत डार भारमें भार ॥ १९५ ॥

राग देश ।

रच्यो श्रीवृंदावन रास गोविंद । चलो सखी देखन चलिये नवलअनंद ॥ यमुनाके नीरे तीरे शीतल सुगंध त्रिविध पवन डोलै अति गति मंद ॥ खंजरी सरंगी बाजे ताल मृदंग । वीण उपंग मुरली मौहर मुहचंग ॥ भालमें तिलक सोहै मृगमद रेख । मुरली मनोहरजीको नटवर भेख ॥ ब्रह्मा देखें विष्णु नारीनरेश । देखन आये शंभु गौरी गणेश॥वृंदावन माहिं रच्यो रास विलास । गुण गावें स्वामी माथुरी दास ॥ १९६ ॥

राग केदारा ।

सुनि धुन मुरली बैन बाजे हरि रास रच्यो । कुंज द्रुम बेली प्रफुलित मंडल कंचन मणिन रच्यो ॥ निर्तत युगल किशोर युवतिजन रासमें राग केदार रच्यो । हरिदासके स्वामी श्यामा कुज बिहारी नीकेही आज गोपाल नच्यो ॥ १९७ ॥

कवित्त ।

तालन पै ताल पै तमालन पै मालन पै बृंदावन बीथिन विहार बंसीबटपै।छितिपै छवाननपै छाजत छटाननपै ललित लताननपै लाडिलीकी लटपै ॥ कहैं पदमाकर अखंड रास मंडल पै मंडत

उमंड महा कालिंदीके तटपै ॥ कैसी छबि छाई आज शरद जुन्हाई आली जैसी छबि छाई या कन्हाईके मुकुट पै ॥ १९८ ॥

सवैया ।

शूकर ह्वै कब रास रच्यो अरु वामन ह्वै कब गोपी नचाई । मीन ह्वै कौनके चीर हरे :कच्छुवा ह्वै कब बीन बजाई ॥ होय नृसिंह कहो हरि जू तुम कौनकी छातिन रेख लगाई । वृषुभानु-सुता प्रगटी जबते तबते तुम केलि कलानिधि पाई ॥ १९९ ॥

राग पीलू ।

ठाढी रहरी लाड गहेली मैं माला सुरझाऊं । नकबेसरकी ग्रंथि जो ढीली ताहू सुभग बनाऊं ॥ एरी टेढी चाल छाँड मैं सूधी चलन सिखाऊं । वृन्दावन हित रूप फूलकी माल रीझ जो पाऊं ॥ २०० ॥

प्रीतम रहे पिया मन लीयें प्रिया रहे मन पीको । सखी रहैं दोउअन मन लीयें रंग बढै नित हीको ॥ कानन छबि ते नये दिखावें प्राण बढे नित हीको । वृंदावन हित रूप विहारन सकल त्रियन शिर टीको ॥ २०१ ॥

सवया ।

सोनजुहीकी बनी पगिया रु चमेलीको गुच्छ रह्यो झुकि न्यारो। दो दल फूल कदंबके कुंडल सेवती जामाहु घूम घुमारो ॥ नौ तुलसी पटुका घनश्याम गुलाब हजार चमेलीको न्यारो । फूलन आज विचित्र बन्यो देखो कैसो शृँगारच्योहै प्यारीने प्यारो॥२०२॥

सारी सँवारी है सोनजुही अरु जूहीकी तापै लगाई किनारी । पंकजके दलको लहिंगा अँगिया गुलाबासकी शोभित न्यारी ॥ चमेलीको हार हमेल गुलाबकी मौरकी बेंदी दै भाल सँवारी । आज विचित्र सँवारिकै देखिये कैसी शृंगारी है प्यारेने प्यारी२०३

राग पीलू ।

संग चलीं ब्रजबाल लाल करतालन लै लै जोरी । लाई गति मृदंग उपजाईं झाईं वन घनघोरी ॥ ततथेई धुमकिट ततथेई यह धुन सुनले जोरी । वल्लभ रसिक बिहारी प्यारी प्यारी तान झकोरी ॥ २०४ ॥

कवित्त ।

माथे पै मुकुट देख चंद्रिका चटक देख छबिकी लटक देख रूप रस पीजिये । लोचन बिशाल देख गरे गुंजमाल देख अधर सुलाल देख चित्तचौंप कीजिये ॥ कुंडल हलन देख अलकैं वलन देख पलकैं चलन देख सरबस दीजिये । पीतांबर छोर देख मुरलीकी घोर देख सांवरेकी ओर देख देखवो ही कीजिये ॥२०५॥

राग पीलू ।

भाग्यवान वृषभानु सुतासी को तिय त्रिभुवन माहीं । जाको पति त्रिभुवन मनमोहन दिये रहत गल बाहीं ॥ है अधीन संगहि संग डोलत जहां कुँवारि चल जाहीं । रसिक लख्यो जो सुख वृंदावन सो त्रिभुवनमें नहीं ॥ २०६ ॥

कवित्त ।

वृन्दावन धाम नीको ब्रजको विश्राम नीको श्यामा श्याम नाम नीको मंदिर अनंदको । कालीदह न्हान नीको यमुनाको नीर नीको रेणुकाको खान नीको स्वाद नीको कंदको ॥ राधाकृष्ण कुंड नीको संतनको संग नीको गौरश्याम रंग नीको अंग युग चंदको । नील पीत पट नीको बंसीवट तट नीको ललितकिशोरी नीकी नट नीको नंदको ॥ २०७ ॥

भ्रकुटी तनीको नकबेसर बनीको लट नगन फनीको लखि फूल्यो कंज फीको है । मैनकी मनीको नैनबानकी अनीको चोखे

सैन रजनीको हौंस हुलसन हीको है ॥ रूप रानीको कैधों रमार-मनीको गज-गती गमनी कैधों सिंधु मूर जीको है। बेनीबंद नीको मृदुहास फंद नीको मुख चंदहूसे नीको वृषभानुनंदनीकोहै ॥२०८॥

छंद।

जैसी है मृदु पटकन चटकन कटतारनकी। त्रियतन मोर-मुकुटकी लटकन कल कुंडल हारन की ॥ साँवरे पिय संग निर्तत ब्रजकी चंचल बाला। मानो घन मंडल मंजुल खेलत दामिनिसी बाला ॥ २०९ ॥

सवैया।

मंडल रासविलास महारस मंडल श्रीवृषभानु दुलारी। पंडित कोक सँगीत भरी गुण कोटिन राजत गोपकुमारी॥प्रीतमके भुज-दंडमें शोभित संगमें अंग अनंगनवारी। तान तरंगन रंग बढ्यो ऐसे राधिका माधवकी बलिहारी ॥ २१० ॥

जामा बन्यो जरीतामको सुन्दर लाल सुबंद रु जर्द किनारी। झालरदार बन्यो पटुका अरु मोतिनकी छबि जात कहा री॥जैसि कि चाल चलै गजराज कहैं बलिहारी है मौज तिहारी ॥ देखत नैनन ताक रही झुक झाँक झरोखन बाँकेविहारी ॥ २११ ॥

कवित्त।

सुंदर सुजान कान्ह सुंदर है पाग शीश सुन्दरसे नैंन धर सुंदर बँसुरिया। सुन्दरसी भ्रूकमान सुन्दर पलक बान सुन्द्र मुसक्यान चितवन चितहरिया। सुन्द्र बाजूबंद राजै सुन्द्र वनमाल साजै सुन्द्र गलहार मोती जामो जो केशरिया। सुन्द्र कंकन अमोल सुन्द्र कुंडल कपोल सुन्द्र नारायण बोल दीन दर्द हरिया ॥२१२॥ वारि डारों शरदइंदु मुखछबि गोविंद पै दिनेशहु वारि डारों नखन छटान पर। कोटिकाम वारि डारों अंग अंग श्याम लखि वारि

डारों अलि आलि कुंचित लटान पर ॥ नैननकी कोरनपै कँजहूको वारि डारों वारि डारों हंसहूको चाल लटकान पर । देख सखी आज ब्रजराज छबि कहा कहूँ कामधेनु वारि डारों भ्रुकुटीमटान पर ॥ २१३ ॥ नैनन चकोर मुख चंद्रहूको वारि डारों वारि डारों चित मनमोहन चितचोर पै । प्राणहूको वारि डारों हंसन दशन लाल हेरन कुटिल वाके लोचनकी कोर पै ॥ वारि डारों मैन रंग अंग अंग श्याम श्याम हिलन मिलन रस रासकी झकोर पै । अतिही सुघर बर सोहत त्रिभंगी लाल सर्वहू वारि डारों ग्रीवाकी मरोर पै ॥ २१४ ॥ मुकुट के रंगन पै इंद्र को धनुष वारों अमल कमल वारों लोचन विशाल पर । कुंडलप्रभापै कोटि प्रभाकर वारि डरों कोटिकमदन वारों बदनरसाल पर ॥ तनुकी तरुण पर नीरद सजल वारों चपला चमक उर मोतिनकी माल पर । चाल पै मराल वारों मनहूको वारि डारों और कहा कहा वारों छबि नंदलाल पर ॥ २१५ ॥

राग जैजैवंती ।

आवरी बावरी ऊजरी पाग पै मेलके बाँध्यो है मंजर चोटा । चंचल लोचन चाल मनोहर आन्यो अबै गहि खंजन जोटा ॥ देखत रूप ठगोरीसी लागत ऐन मैन मानो कमलके जोटा । नंददास रस रास कोटिन वारों आज बन्यो ब्रजराजको ढोटा ॥ २१६ ॥

राग बिलावल ।

आली री रासमंडल मध्य निरतत मदन मोहन अधिक प्यार लाडिली रूप निधान । चरण चारु हँसत भेद मिलवत गति भाँति भाँति भ्रूविलास मंद हास लेत नयननहीमें मान ॥ दोऊ

मिलि राग अलापत गावत होडा होडी उघटत देकर तारी तान। परमानंद निरख गोपीजन वारतहैं निज प्रान ॥ २१७ ॥

राग भैरवी ।

निरतत गोपाल संग राधिका बनी । बाहुदंड भुजन मेलि मंडल मध्य करत केलि सरस गान श्याम करैं संग भामिनी॥ मोरमुकुट कुण्डल छबि काछनी बनी विचित्र झलकत उरहार विमल थकित चाँदनी । परममुदित सुर नर मुनि वर्षत सब कुसुममाल वारत तन मन प्राण कृष्णदास स्वामिनी ॥ २१८ ॥

राग अँझोटी ।

गोपी गोपाल लाल रास मंडल माहीं । ताताथेई ता सुधंग निरतत गहि बाहीं ॥ द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम मृदंग छन नन नन रूप रंग हगता हगता लतंग उघटत रसनाई । बीच लाल बीच बाल प्रति प्रति अति द्युति रसाल अविगत गति अति उदार निरखि हग सराही ॥ श्रीराधा मुख शरद चंद पोंछत जल श्रम अनन्द श्रीब्रजचन्द लटक करत मुकुट छाहीं ॥ तत्तत तत सुघर गात सारिगम पदनी ग ठाठ और पदहि प्रलाद दांप दंपति अति सादहीं । गावत रस भरे अनंद तान तान सुर अभंग उमँगत छबि अति अनन्द रीझत हरि राधहीं ॥ छाये देवन विमान देखत सुर शक्र भान देवांगन निधान रीझि प्राण वारहीं । चकित थकित यमुना नीर खग मृग जग मग :शरीर धन नन्दके कुमार बलि बलि जाय सूरदास रास सुख तिहारहीं ॥ २१९ ॥

राग देश ।

लालको नाचन शिखवत प्यारी । जैसोइ सुभग बन्यो श्रीवृंदावन तैसी शरद उजियारी ॥ मान गुमान लकुट लिये ठाढी

डरपत कुंजबिहारी । थेई थेई करत लाल मनमोहन उरप तुरप गति न्यारी ॥ वंशीबट यमुना तट कुंजन रहस रच्यो गिरिधारी । कोउ मृदंग कोउ वीण बजावत कोई हँसत दै तारी ॥ छबिसों गावत खडी नचावत रोम रोम बलिहारी। देख देख ब्रह्मादिक नारद अचरज सोच बिचारी ॥ व्यास स्वामिनी सो छबि निरखत रीझ देत करतारी ॥ २२० ॥

राग काफी ।

देखो री या मुकुटकी लटकन । निरतत रास लिये राधा सँग वैजंती बेसरकी अटकन॥पीतांबर छुटि जात छिनै छिन नूपुर शब्द पगनकी पटकन। सूर श्यामकी या छबि ऊपर झूण्ठो ज्ञान योगको भटकन ॥ २२१ ॥

राग विहाग ।

आज बनवारी बन्योहै मुरारी । सखी कुञ्जबिहारी गिरिधारी सँग सोहे राधा प्यारी वृषभानुकी दुलारी ॥ दोनों मिलकर निरत करत हैं राधा अरु गिरिधारी । मोरको मुकुट धारी चंदनकी खौर न्यारी भ्रुकुटी कुटिल अलकैं घूँघरवारी ॥ टेढी चितवन प्यारी नासिका मोती सँवारी मुरली अधर सप्त सुरन उचारी । मोहिं लीनी ब्रजनारी देहकी दशा बिसारी दया सखी पाँयन परके लीनी बलिहारी ॥ २२२ ॥

राग रेखता ।

नाचै छली छबीला नँदका कुमार है।गल बाहिं दै प्रियाके सुंदर शृङ्गार है॥इत मंद मंद झीनी नूपुर अवाज है। उत पायजेब पायल घन कीसी गाज है ॥ पगिया लसी कुँवरके शिरपेंच लाल है ॥ भ्रुकुटी लगी ललोई प्यारीके भाल है ॥ कटि काछनी सुचोली पटुका किनारका । कानों जड़ाऊ झुमका गल हीर हार है ॥ दा-

मिनि सुरंगी सेला कीरति कुमारिका।मोतिनकी माल सुंदर शोभा अपार है॥गुंजा गले गुनीके तर गुंजमाल है। छतियां लगी लला- सों वंसी रसाल है ॥ नासा बुलाक बेसर माथेपै मुकुट सोहै । दोनों झुके परस्पर छबि वेशुमार है ॥ प्यारीके नख छटापर रवि चंद्र कोटि मोहै । केशव खड़ा विलोकै प्राणन अधार है ॥२२३॥

मानलीला।

राग सोरठ।

चलो तो बताऊँ विहारीजी म्हारे महलों फूलीहै केशर क्यारी। अतिसुन्दर बहुत अमोलक रंग रँगीली हैं छै बारी॥ यों मत जानो झूंठ कहत है म्हाने सौंह तिहारी। ब्रजनिधि तुमसों लगन लगी है प्रीति पुरातन यारी॥ २२४॥

राग कान्हरो।

लालन मेरेही आये आज सुहावनी रात। तन मन फूली अंग ना समावत कुंजन करत बधाये॥इक रसना गुण कहँ लग बरणों नखशिख रूप मेरे हीयमें समाये। गिरिवरधर पिय रस वशकर लीनो कृष्णदास बलिजाये॥ २२५॥

राग कान्हरो।

एजी अब तो जान न दूँगी शकुन भलेजी॥ बहुत दिनन मेरे घर आये कर गरवों उर हार। श्यामसुन्दर पिया अतिही रँगि- लवा साँची तो कहो तुम काके बसोजी॥ २२६॥

राग कमोद।

वारियांवे लाल वारियां॥ तुसां आमनां फेरा पामनां कुंज हमारियां॥ कौन सखीके तुम रँग राते हमसे अधिक प्यारियां॥ ऊँची अटारियांते लाल किवारियां तक रहियां बाट तिहारियां॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर या छबि पर बलिहारियां॥ २२७॥

राग दादरा ।

सखी नँदलाल आवन नहिं पावैं।भीतर चरन धरन जिन दीजो चाहे जिते ललचावैं ॥ ऐसेनको विश्वास कहाँ री कपटकी बात बनावैं।नारायण इक मेरे भवन विन अन्त चाहे जहां जावैं२२८॥

राग झन्झोटी।

मोहिं मत रोकै तू एरी ब्रज नागरी । रूपकी निधानहै तू सभी गुणखानहै तू तेरे सम कौन आज तेरो बडो भाग री ॥ कहेतो मैं नृत्य करूं बांसुरीमें राग भरूं कान्हरो केदारो भैरव सोरठ बिहाग री। तू तो सदा उपकारी हितहूकी करनहारी आज नारायण मोसों क्यों राखे लाग री॥ २२९ ॥

सवैया ।

द्वारके द्वैग्गिया पौरिके पौरिया पैहरुवा घरकेघनश्यामहैं।दासके दास सखीनके सेवक पारपरोसनके धनधाम हैं॥श्रीधर कान्ह कह्यो सुन भामिन मानभरी नहिं बोलत बामहैं॥ चूक अबकहि माफ करो वृषभानुललीके गलीके गुलामहैं ॥ २३० ॥

राग पञ्चम ।

जागत जागत रैनि बिहानी। कहि गये साँझ आवन मेरे गृह बसे अनत अनते रति मानी॥उर बिच नख क्षत प्रगट देखियत यह शोभा अति बानी ।भाल महावर अधरन अंजन पीक कपोल निशानी॥निशि मग जोवत बीती मोको आये प्रात यह जानी । चतुर्भुज प्रभु गिरिधर सिधारो तहां जो तुम्हरे मन मानी॥२३१॥

राग ठुमरी खम्माच ।

प्यारे तेरे जियाकी न जानी जात बात रे। कहूँ तो सांझ आधीरात रहत कहूँ पिछलीरात कहूँ प्रात रे॥उनहीं सों जाओ बतराओ

सुख पाओ तुम जिन यह सिखाये दाँव घात रे। अब तोसों भूलके न बोलूं नारायण जहाँ गल अपनी बसात रे ॥ २३२ ॥

राग देश।

अब आये प्रात क्यों मेरे धाम । तुम जाओ जहां जाके जागे हो याम वश किये तुम्हें सो धन धन्य बाम ॥ पग धरत धरन पर डगमगात मुख वचन कहत तुतरात जात कत भूल परे इत कौन काम ॥ अंजन अधरन पर पीक गाल जावक है भाल दोउ नयन लाल बिन गुनकि माल कहाँ पहरी श्याम ॥ तुम्हरे जिया भावत है जो बाल में परखी रसिक बिहारीलाल अब कीजे पिया वा घर आगम ॥ २३३ ॥

राग भैरव।

सांची कहो रँगीले लाल। जावकमें कहाँ पाग रंगाई रंगरेजिन कोइ मिलि है ग्वाल॥ चंदन रंग कपोलन दीये अरुण अधर भये श्याम तमाल। माला कहाँ मिली बिन गुनकी नखशिख देखत भई बिहाल ॥ जिन तुम्हरे मन इच्छा पुजई धन्य धन्य पिया धन वे बाल। सूर श्याम छबि अद्भुत राजत यही देख मोको जंजाल ॥ २३४ ॥

राग रामकली।

आज हरि रैनि उनींदे आये। अंजन अधर ललाट महावर नयन तमोर खवाये ॥ शिथिलत वसन मरगजी माला कंकन पीठ सुहाये। लटपटी पाग अटपटे भूषण बिनु गुन हार बनाये॥ शिथिल गात अरु चाल डगमगी भ्रुकुटी चंदन लाये। सूरदास यही अचंभौ तीन तिलक कहाँ पाये ॥ २३५ ॥

राग बिलावल ।

नयनकी चंचलता कहा कीने भीने रंग कौनके हो श्याम हमसे कहा दुरावत । औरके बदन देखनेको नेम लियो किधों पलकन मध्य राखी प्यारी ताके भार भये नहिं आवत ॥ मधुप गंध लुब्ध सेज समीप निशि बसे संग लागे आवत रतिकीरति गावत । सूरदास प्रभु मदनमोहन तनुकी प्रीति प्रगट भई है मुख नहिं बनत बनावत ॥ २३६ ॥

राग भैरव ।

भोर भये उठि आये मोहन कहा बनावत बात । बिन गुन माल विराजत ऊपर सब अंग चिह्न लखात ॥ बंदन रंग कपोलन दीये मोहन चंद्र दुरात । धौंदीके प्रभु वाही जाओ तुम जहँ जागे सारी रात ॥ २३७ ॥

राग जैजैवंती ।

रंगरहे लाल उनहीं त्रियन संग छबि निरखत गति परत और और । ले दर्पण छबि बदन निहारो प्यारे अधरन अंजन लाग्यो ठौर ठौर ॥ हमसो अवधि बदि अनत विरम रहे करत फिरत प्रीति नई पौर पौर । जाओ जी जाओ तुम जहाँ सारी रैन जागे काहेको आवत प्रात मेरे दौर दौर ॥ २३८ ॥

राग बरवा ।

तुम जाओ जी जाओ जाके रहेहो रात । म्हारे काहेको आये जब भयो प्रभात ॥ लटपट पेच उनींदेसे नयना डगमग डग-मग डगमगात । कपटी कुटिल में तोहिंते कहतहों मैं ना मानूंगी तोरी एक बात ॥ हाहा करतहौं पैयां परतहौं अबकी चूक मेरी करो जी माफ । जुगलसम्मदास पिया मैं ना मानूंगी तुम वाहीके जाओ जाके लगेहो गात ॥ २३९ ॥

राग प्रभाती।

लाल तुम कहाँसे आये जगे ॥ सगरी रैनिके हमने पछाने थारी नजर खुमार भरी अँखियां॥ नयन घुमावत लट लटकावत होंठन बिन बोलन लगे । अधरन अजन भाल महावर चरणधरत डगमगे ॥ आनँद घन पिया वाहीं जाओ तुम जहाँ तुम्हारे सगे ॥ २४० ॥

ठुमरी खम्माच।

प्यारे मेरे गरवामें जिन डारो बैयां । छुओ न लंगर मेरो पकरो ना कर तुम छाँडो अब कपट वलैयां ॥ जाओ पिया वाही मन-भाईके भवनमें जाके निशि परत हो पैयां । झूठी झूठी सौंहैं क्यों खाओ नारायण जानूं मैं तिहारी चतुरैयां ॥ २४१ ॥

राग केदार।

सीखे हो छल बल नट नागर ॥ मदनमोहनकी माधुरी मूरत सब गुणमें हो आगर ॥ ऐसी निठुराई काहू ना बदीयन चतुराई गुणसागर ॥ २४२ ॥

राग मलार।

राधाजूकी सहज अटपटी बोलन । अहो पिया कौन बसत त्रिया उरपाई कहां बिन मोलन ॥ मोहूँ सों गुण रूप आगरी नीले अंगन चोलन। बडे बडे नयन अरुण कजरारे सुन्दर अधर कपोलन॥उमँग उमँग पिया सम्मुख आवे मनभावत करत कलोलन॥ भगवत रसिक कहो क्यों ना मांची नाहिं करो अनबोलन २४३॥

राग ठुमरी।

प्यारी जी तिहारे बिन कल ना परत है। मंदिर अटारी चित्र-सारी औ फुलवारी मोहिं कछू प्रिय ना लगत है॥ घनो समझायो

इत उत बहलायो पुनि तौहू मन धीर ना धरत है । एतो हठ आगे कब कीयो नारायण जेतो हठ आज तू करत है ॥ २४४ ॥

राग जोगिया ।

सांची कहो किधों हांसी करो जी । आज कहा कारण जो मोसों बेर बेर कहो यहांसे टरो जी ॥ कौन सखी कित में घर वाको तुम जाको मोहिं दोष धरो जी । नारायण यह अचरज मोको झूंठ कहत नहिं नेक डरो जी ॥ २४५ ॥

राग जंगला ।

राधा प्यारी तोहिं मनावन आयो । जबते तू निकसी मंदिर ते मोहिं न कछू सुहायो ॥ भीतर बाहर द्वार पौंरि लौं राधा नाम न पायो । किशोरी गोपालकी यह इक बिनती हाहा करत हरायो ॥ २४६ ॥

राग पीलू ।

राधा प्यारी बात सुनो इक मोरी । मैं आयो चाहतहों तुम पै बीच लियो उन घेरी ॥ जतन अनेक बिनती कर हार्यो कैसे जात न फेरी । परवश पर्चो दास परमानंद काहि सुनावों टेरी ॥ २४७ ॥

राग भूपाली ।

बिनती कुँवरि किशोरी मेरी मान मान मान । बिन चूक मोते मान की मत ठान ठान ठान ॥ काहेको बैठी श्यामा भौंहें तान तान तान । तू ही तो मेरे जीवन धन प्रान प्रान प्रान ॥ मेरे हिया कि पीरको तू जान जान जान । जन जान रसिक लीजे दीजे दान दान दान ॥ २४८ ॥

राग विहाग ।

एतो श्रम नाहिंन तबहुँ भयो । सुन राधिका जेतो श्रम मोको तें यह मान दयो ॥ धरणीधर विधि वेद उधारे मधु सों शत्रु हयो ।

द्विज नृप किये दुसह दुख मेटे बलिको राज्य लियो ॥ तोरचो धनुष स्वयंवर कीनो रावण अजित जयो ।अघ बक बच्छ अरिष्ट केशि मथि दावानल अँचयो ॥ त्रिय वपु धरचो असुर सुर मोहे को जग जो न दयो । गुरुसुत मृतक ज्यायबे काजे सागर शोध लियो ॥ जानूं नहीं कहा या रिसमें सहजहि होत नयो । सूरसो बल अब तोहिं मनावत मोहिं सब बिसर गयो ॥ २४९ ॥

राग पूरवी ।

हमसे रूठ रहत क्यों प्यारी।कित मुख फेर फेर दृग बैठो कौन चूक वृषभानु दुलारी ॥ गयो सखन सँग मैं यमुना तट जहँ जल भरत रहीं व्रजनारी । मोते कहन लगी गागर भर लालन देहु उठाय हमारी ॥ मैं न सुनी जब कही सबन मिल लेंगीं समझ तुम्हें बनवारी । देहैं मान कराय राधिका सों सब दई आय दरशारी ॥ जो वे कहत करत हौ सोई तुम समझत नहिं भोरी भारी । एककी सात लगाय सुनावत झूठी ग्वालन रसिक बिहारी ॥ २५० ॥

राग खंमाच ।

इक अरज हमारी सुन भानकी दुलारी मान तज कीरतिकुमारी प्यारी हो । ऐसी चूक क्या किशोरी मोते सांची कहदेवजी काहेको बैठी मुख मोरी जीकी ज्यारी हो॥कृपा अब कीजे लाय उर लीजे अधर रस पीजे दीजे दुख टारी हो । कहै रसिकबिहारी चरण शिर धारी कुँवारि सुखकारी तू तो भोरी भारी हो ॥२५१॥

राग भूपाली ।

हमते न प्राणप्यारी मुख मोरिबो करो । वृषभानुकी दुलारी चित चोरिबो करो ॥ कछु दोष नाहिं मेरो री क्यों मान कीजिये । रजनी विहात सजनी री रिस छांडि दीजिये ॥ मोतन निहार

गोरी मैं तो हूँ शरण तोरी । आननहै चंद्र तेरो री लोचन मेरे चकोरी ॥ कीजै कृपा किशोरी दीजै अधरसुधा री । लीजै लगाय अपने री हिरदे रसिकविहारी ॥ २९२ ॥

राग देश ।

तुम सुनो राधिका विनय कान । नहिं सोहत मान तजिये सुजान॥ अब करो कृपा जन अपनो जान । ऐसी काहेको रही हो मौन ठान ॥ मेरे तू ही है जीवन अधार अब वेगि मिलो नहिं जात प्रान॥ तुम देहु बात मोको बताय प्यारी जाते अब गइ रिसाय अपराध कौन कहो गुणनिधान । सुनि रसिकविहारीजूकी बात मेरे आनँद उरमें नहीं समात हँसि मिलिये कंठमें डारि पान॥२९३॥

राग धनाश्री ।

सांची कहो कै प्यारी हांसी । काहेको इतनी रिस पावत कत होत तुम उदासी ॥ पुनि पुनि कहत कहा तबहीं ते कहाँ ठगीसी ठाढी । इकटक चितै रही हिरदे तन मानो चित्र लिखि काढी ॥ समझी नहीं कहा मन आई मदन त्रसै तू आगे । सूर श्याम अति भये आतुरे भुजा गहन तब लागे ॥ २९४ ॥

लावनी ।

उठो अब मान तजो गोरी।रही है रैनि बहुत थोरी ॥ सदासों तुम मनकी भोरी । कहूं मैं शपथ खाय तोरी ॥ दोहा-औरनके बहँकावते, करि बैठनहो रोप । झूंठ सांच परखत नहीं, वृथा देत हो दोष॥ यही मोहिं अचरज है भारी॥ तनक हँस चितवो सुकुमारी ॥ शशि मुखपै हौं बलिहारी ॥ दोहा-अपनी ओर निहारके, देहु अभय वरदान । क्षमा करो सब चूक अब, जो कछु भई अजान॥ इतनी विनती मानो मोरी । तिहारे गुण नितप्रति गाऊं । विना आज्ञा न कहूँ जाऊं ॥ दोहा-ताहू पै हग अरुण कर, भ्रुकटी

लेत चढ़ाय । जोरावर सों निबल की, काहू विधि न बसाय ॥ हारे हू हार जीते हूँ हार ॥ जिन्हैं तुम समझो हितकारी । सोई अति कपटी ब्रजनारी । दोहा—हममें फूट करायके, आप अलग मुसक्यात । नारायण तुमने करी, खरी न्यावकी वात ॥ भलेको दंड बुरे पै प्यार ॥ २५५ ॥

राग विहाग ।

तनक हँस हेरो मेरी ओर । हम चितवत तुम चितवो नाहीं काहे भई हो कठोर ॥ निशिदिन तुम्हरोही नाम रटत हों चातक ज्यों घन घोर॥कृष्ण प्रिया दर्शनके लोभी जैसे चंद्र चकोर२५६

सवैया ।

एक समें ब्रजकुंजनमें री नाचत ग्वाली सभी दय तारी॥नाचत चन्द्रभगा ललितादिक नैनकी सैनमां ताल विचारी ॥ वा रिस धार लियो जियमें उन रूठ परी वृषभानुदुलारी ॥ मैं ना कह्यो कछु जान उन्हें तुम लावो मनायके प्यारी हमारी ॥ २५७ ॥

गुर्जरीरागेण प्रतिमंठताले गीयते ।

मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधूनिचयेन ॥ सापराधतया मयापि न वारितातिभयेन॥ हरि हरि हतादरतया गता सा कुपितेव ॥ध्रु०॥ किं करिष्यति किं वदिष्यति सा चिरं विरहेण ॥ किं जनेन धनेन किं मम जीवितेन गृहेण ॥ हरि हरि० ॥ चिंतयामि तदाननं कुटिलभ्रु रोषभरेण॥शोणपद्ममिवोपरिभ्रमताकुलं भ्रमरेण॥ हरि हरि०॥ तामहं हृदि संगतामनिशं भृशं रमयामि॥किं वनेनुसरामि तामिह किं वृथा विलपामि ॥ हरि हरि०॥ तन्वि खिन्नमसूयया हृदयं तवाकलयामि ॥ तन्न वेद्मि कुतो गतासि न तेन तेनुनयामि॥ हरि हरि०॥ दृश्यसे पुरतोगता गतमेव मे विदधासि ॥ किं पुरेव स संभ्रमं परिरंभणं न ददासि॥हरि हरि०॥ क्षम्यतामपरं

कदापि तवेदृशं न करोमि ॥ देहि सुन्दरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि ॥ हरि हरि० ॥ वर्णितं जयदेवकेन हरेरिदं प्रणतेन ॥ तिंदु बिल्वसमुद्रसंभवरोहिणीरमणेन ॥ हरि हरि० ॥ २५८ ॥

राग देश सोरठ ।

ललिता राधा नेक मनायदे ॥ मैं बलिजाउँ नाम तेरे पै दुखमें सुख सरसायदे ॥ तू सजनी अति चतुर शिरोमणि मेरे मनकी प्रीति जतायदे । व्यास स्वामिनी रतिगुनगतिले सरवस पियाको रिझायदे ॥ २५९ ॥

राग बरवा ।

चलो री क्यों ना माननी कुंजकुटीर । तुम बिन कुँवर कोटि बनिता युत मथत वदनकी पीर ॥ गदगदसुर विरहाकुल पुलकत स्रवत विलोचन नीर ॥ क्वासि क्वासि वृषभानु नंदिनी विलपत विपिन अधीर ॥ बंशी विशद व्याल माला उर पंचानन पिक कीर । मलै जो गरल हुताशन मारुत शाखामृग रिपु चीर ॥ हित हरिवंश परम कोमल चित चली चपल पिय तीर । सुन भयभीत वज्रको पंजर सुरत सूर रणवीर ॥ २६० ॥

राग केदारा ।

जाके दरशको जग तरसत है ताहि दरश तू दे मेरी प्यारी ॥ जाकी मुरलीकी धुनि सुर मोहे ता तन नेक चितै मेरी प्यारी ॥ शिव विरंचि जाको पार न पावत सो तेरे पग परसे री प्यारी ॥ सूरदास वश तीन लोक जाके सो तेरे वश है मेरी प्यारी ॥ २६१ ॥

राग बिहाग ।

अलबेली लख लटक मुकुटकी । मान छाँड़ वृषभानुनंदिनी मान किये क्या नागर नटकी ॥ है कछु सुरत तोहिं वा दिनकी ।

जब वनमालसों बेसर अटकी। कर गह कमल कमल मुख मोहन मुरझाई तब नेक न हटकी॥ सो मुख लियो छिपाय सुन्दरी नयन ओट कर घूँघट मटकी। नख भौं लिखै सिखै क्या सजनी कीन चहत कछु टोना टटकी॥ कर गहि बाहि मनावत मोहन मानत नाहिं मान मद अटकी। युगल युगलको वदन विलोकत भुज भर भेट मेट तप घटकी॥ २६२॥

राग बरवा।

मान तज चल सजनी ब्रजचंदा बुलावें री। हा हा हठको काम नहीं है क्यों जीया तरसावै री॥ जो हमरे सँग चलो न भामिनि वह तो आपही आवें री। घन छाया सम जोबन जानो पल छिनमें यह जावे री॥ यमुना निकट कदमकी छैयां गोपी संग नचावे री॥ मुरलीधर तेरो ध्यान धरत है तेरो ही गुण गावे री॥ २६३॥

राग केदार।

छाँडदे माननी श्याम संग रूठिबो। रहत तू अलीन जलमीन लौं सुन्दरी करो किन कृपा नव रंग पर टूटिबो॥ वेगि चल वेगि चल जात यामिनि घटत कुंजमें केलिकर अमीरस घूटिबो॥ बालकृष्ण दास नवनाथ नंदन कुँवर सेज चढ ललन सँग मदन गढ लूटिबो॥ २६४॥

राग देश।

तुम काहेको लाडिली मान करत। वाकी प्रकृति जैसी है तैसी तुम जानो वाके गुण अवगुण कत जियामें धरत॥ ताहीसों कीजिये कोप कुँवारि बिन कारण बैठत लर लर तुमसे तो पिया प्यारो नित ही डरत। व्यास स्वामिनी चतुर नारि मैं तोहि मनावत गई जो हारि कब देखूंगी पियासे तोको अंक भरत॥ २६५॥

राग जिलेमें।

तोसी त्रिया नहिं भवन भटू री। रूपराशि रसराशि रसिक वर तोहिं देख नँदलाल लटू री॥ लेकर गांठ दई जो दृष्टि भर तेरी सुरंग चूँदरी वाको पीतपटू री। नन्ददास प्रभु गिरिधर नागर तू नागरी वे नागर नटू री॥ २६६॥

रैनि गई री प्यारी छाँडो हठे री। सुन वृषभानु कुँवारि हरि तो वश निशिदिन तेरोहि नाम रटे री॥ मदन गुपाल निरख नयनन भर वेगि चलो अब काहे नटे री। दास गोविंद प्रभुकी छबि निरखे प्रीति करेसे तेरी कहा घटे री॥ २६७॥

कवित्त।

हाहा री हठीली हठ छाँडदे छबीली अली भूले हू न कान्ह आज पान हू न खातहैं॥ तेरी चितवनको चाहतहै गोपाल लाल तजे सब ख्याल प्राण तोहीमें बसात हैं। मेरो कह्यो मान प्यारी चल देख तू अटारी ठाढे बनवारी अब देर क्यों लगात हैं॥ करके शृँगार तू उतारति है बार बार तू तो इतरात उत रात बीती जात है॥ २६८॥

राग जिलामें।

तोसी नहीं कोऊ देखी री हठीली। ज्यों ज्यों मैं अब तोहिं मनावत त्यों त्यों तू होवे अति गरवीली॥ ऐसे समय बल रोष न कीजे भौहैं कमान तनक कर ढीली। नारायण उठ मिल प्रीतमसों तजदे मानकी बान छबीली॥ २६९॥

राग रेखता।

इतनो न मान कीजे वृषभानुकी दुलारी। तेरे मनायबेमें मोहिं श्रम भयो है भारी॥ इतनो०॥ प्रीतमका आज तो बिन पल छिन न

चैन आवै। नहिं जी लगै भवनमें नहिं बन की छबि सुहावै॥ हँस बोलिबो कहाँको नहिं खान पान भावै। हाथनमें चित्र तेरो पुनि पुनि हिये लगावै॥ अति विकल ह्वै रह्यो है वह साँवरो बिहारी॥ इतनो० ॥ प्यारेके आगे अपने गुणकी मैं कर बड़ाई। तेरे मनायबे को बीरा उठाके आई॥ बल बुद्धि मोमें जितनी तितनी मैं सब लगाई। पै नेकहू न मेरी चतुराई काम आई॥ सब विधिसों राजनीति मैं कहके तोसों हारी॥ इतनो०॥ तेरी तो नित बड़ाई सब सखी जन बखाने। प्यारी हियेकी कोमल सपनेहूँ रिस न जाने॥ यह आज का भयो है बैठी हो भ्रुकुटी ताने। उन सखीजनको कहबो अब कौन साँच माने॥ सब झूँठही बड़ाई भामिन करैं तिहारी॥ इतनो०॥ लालनके साथ मिलके वनशोभा निरख प्यारी। कहुँ सघन ललित छाया कहुँ फूली फुलवारी॥ जलसों भरे सरोवर झुकरहिं द्रुमन कि डारी। बोलत अनेक पक्षी वर्णत हैं छबि तिहारी॥ चल बेग ही सिधारो यह लालसा हमारी॥ इतनो०॥ एरी सुघर सयानी मो विनती मान लीजे। तजके ये मानमुद्रा प्यारे सों हेत कीजे॥ नितही अधर सुधारस हँस हँसके दोऊ पीजे। फिर कर न उनसों रूठो वरदान यही दीजे॥ नारायण याही कारण निज गोद मैं पसारी॥ इतनो०॥ २७०॥

राग कान्हरा।

देख री आज नवनागरी वेषधर ललीके छलन हित ललन कैसे सजै॥ पहिर भूषण वसन दृगन कजरा दियो निरखि शृंगार सुरवधू मनमें लजै॥ मंद मुसक्यान मग चलत गति ठुमकके मधुर धुनि किंकिणी चरण नूपुर बजै॥ रूप अभिराम नारायण लख श्यामको कौनसी माननी मान जो ना तजै॥ २७१॥

राग कमोद ।

जयति नव नागरी सकल गुण सागरी कृष्ण गुण आगरी दिनन भोरी ॥ जयति हरिभामिनी कृष्णघन दामिनी मत्तगज-गामिनी नव किशोरी ॥ जयति सौभागमणि कृष्ण अनुरागमणि सकल त्रिय मुकुटमणि सुयश लीजे ॥ दीजिये दान यह व्यासकी स्वामिनी कृष्णसों बहुरि नहिं मान कीजे ॥ २७२ ॥

राग विहाग ।

क्यों न मानत मेरो । मदनमोहन नव कुञ्जद्वार ठाढ़े पन्थ निहारत तेरो ॥ झगरो करत सब रैनि गँवाई छिन छिन पल पल झेरो । साज शृंगार हार अपने लै प्राणदान दे तेरो । अ-जहूँ समझ शोच री आली और नहीं कुछ केरो ॥ गोविंद प्रभुके हृदयकी कौन मेटे तो विन विरह अंधेरो ॥ २७३ ॥

राग कान्हरो ।

रह री मानिनी मान न कीजे । यह जोवन अंजलिको जल है जो गोपाल मांगें तो दीजे ॥ छिन छिन घटत बढ़त ना रजनी ज्यों ज्यों कला चन्द्रकी छीजे । पूरब पुण्य सुकृत फल कीनो काहे न रूप नयन भर पीजे ॥ सौंह करत तेरे पायंनकी ऐसे जीवन दशोंदिन जीजे । सूर सुजीवन सफल जगतको वैरी बांध विवश कर लीजे ॥ २७४ ॥

राग विलावल ।

चलो री ऐसो मान न करिये मानिनी प्यारा आया तोरे घेरे । ..ो मान तूही दान तूही रोम रोम रम रही ऐसे नयन भये हेरे ॥ झूठी कहों मोहिं शपथ रामकी सांच कर वचन आली मान मेरे । छड़ां निठुगई अब मान मेरो कह्यो गुण अवगुण भये तेरे॥२७५॥

राग कान्हरा।

तू है सखी बड़भाग भरी नँदलाल तेरे घर आवत हैं। निज कर गूँथ सुमनके गजरे हर्षि तोहिं पहरावत हैं॥तू अपनो शृङ्गार करत जब दर्पण तोहिं दिखावत हैं। आनँदकन्द चन्दमुख तेरो निरख निरख सुख पावत हैं॥ जाके गुण सब जगत बखानत सो तेरे गुण गावत हैं। नारायण विन दाम आज कल तेरेहि हाथ बिकावत हैं॥ २७६॥

राग कान्हरा। (अंतर दोहा)

मनावत हार परी मेरीमाई॥ राधे तू बडभागनी,कौन तपस्या कीन। तीनलोकके नाथ हरि, सो तेरे आधीन॥ शिव विरंचि नारद निगम, जाकी लहत न डीठ॥ता हरिसों प्यारी राधिका,देदे बैठत पीठ॥अहो लडैते दृग किये, परे लाल बेहाल। कहुँ मुरली पीत पट, कहूँ मुकुट वनमाल॥बिछुरे होंय सो फिर मिलैं, लेहि मनाय। मिल्यो रहै औ ना मिलै,तासों कहा बसाय॥ तनक सुहागो डारके, जड कंचन पिघलाय। सदा सुहागिनि राधिका, क्यों न कृष्ण ललचाय॥मान कियो तैं भली करी,कैसो तेरो मान॥जैसो मोती ओसको, तैसो तेरो मान॥ तू चटते मट होत नहिं, राधे उन मोहिं लेन पठाई। राजकुमारी होय सो,जानै कै गुरु सीख सिखाई॥ नँदनंदनको जान महातम, अपनी राख बडाई। ठोडी हाथ दे चली दूतिका, तिरछी भौंह चढ़ाई॥ परमानंद प्रभु करूँगी दुलहैया, तो बाबाकी जाई॥ २७७॥

राग वसंत।

गूँजेंगे भ्रमरा विराग भरे वन बोलैंगे चातकवा पिक गायके॥ फुलेंगे केसू कुसुंभा जहांलौं मारेगो काम कमान चढायके॥बहेगी

सीरी सुगंध मारुत जबहिं लगैगी साखसो साख मिल आयकै॥मेरे कहे न चले बाबाकी सौंह ऋतु वसंत लेय जायँगे मनायकै ॥२७८॥

राग बिहाग ।

पहले तो देखो आय माननीकी शोभा लाल पीछे तो मनाय लीजै प्यारे गोविन्द ॥करपर धर कपोल रही है नयनन मूँद कमल बिछाय मानो सोयो है चंद ॥ रिस भरी भौंवां मानो भौंरा बैठे अरबरात इन्दु तरे अरविंद भरयो मकरंद ॥नंददास प्रभु प्यारो ऐसी न रुठैयें वलि जाको मुख देखे ते कटत दुख द्वन्द ॥ २७९ ॥

राग देश ।

कर नेह नयन लगायके फिर मान करना किन बंदा । तज रोष दोष लगायबो सज मोदमें मंगल मुदा ॥ अपराध बिन अपराध धरबो सीख तोहें किन दई । धर ध्यान गहि मुख मौन बैठी मनो कोइ जोगिन नई ॥ रस रीति प्रीति प्रतीति विसरी कठिन कुच-संगति किये । यह जान अब परसो नहीं लगजाय कहुँ मेरे हिये ॥ सुन बैन आतुर नयन फेरे रसिक भगवत यूं कही । हँस कंचुकी बँद खोल लिपटी मनो घन दामिनि गही ॥ २८० ॥

राग पीलू ।

तूतो मोहिं प्राणनहू ते प्यारी । भूले मान न कीजिये सुंदरि हौं तो शरण तिहारी ॥ नेक चितै हँस बोलिये सुन्दरि खोलिये घूँघट सारी । कृष्णदास हित प्रीति रीति वश भरलिये अंकन वारी ॥ २८१ ॥

राग भूपाली ।

मन मोहनी मन मोहना मन मोहिबो करो । मुख चन्दचख चकोरी सदा जोहिबो करो ॥ घनश्याम रसिक नागर तू है जो

दामिनी। तज मान अधर पान करो जात यामिनी॥ कछु दोष ना पियाको तू भूल क्यों गई। प्रतिबिंब देख आपनो तैं पीठ क्यों दई॥ समझाय कही भगवत जब लाग कानसों। सुखदान उठी आतुर भेटी सुजान सों॥ २८२॥

राग देश।

कुंजन पधारो राधे रंग भरी रैन॥ रंग भरी दुलहन रंगभरे पिया श्याम सुंदर सुखदैन॥रंगभरी सैनी बिछी सेजपर रंग भरचो उलहत मैन॥ रसिक बिहारी पिय प्यारी जी दोऊ मिल करो सेज सुखशैन॥ २८३॥

राग विहाग।

अब पौढ़नको समय भयो। इत ढुरगई द्रुमनकी छैयाँ उत ढुर चंद गयो॥ पौढ़ रहे दोउ सुखद सेजपर बाढ़त रंग नयो। रसिक-बिहारी बिहारिन दोऊ पौढे यह सुख दृगन लयो॥ २८४॥

द्वितीयमानलीला।

राग कान्हरा।

रैन मोहिं जागत बिहानी मोहनसों मैं मान कियो ताते भई तनु अधिक तपत॥ सेज सुगन्ध मलय विष लागत पावकहूँते दाह सखी री त्रिविध पवन उडपत॥ ऐसो अति व्याप्यो है मन्मथ मेरोई जीया जाने मोहि श्याम श्याम कह रैनि जपत॥बेग मिलावो सूरके प्रभुको भूल अभिमान करूँ कबहूँ नहिं मदन बाणते कँपत॥ २८५॥

राग जैजैवन्ती।

बनत बनाऊं कछु बन नहिं आवे साँवरे सजन बिन तलफत प्राण हमारे। शोच किये क्या होत री सजनी वे हरि कठिन हृदय

समझाऊं कैसे कारे ॥ तपोंगी ताप चहूँ ओर अगन दे तनुको जराऊँ तो मैं पाऊँ पिया प्राण प्यारे । सूर सकल विधि कठिन भई है बीतत रैनि गिनत गई दईके तारे ॥ २८६ ॥

राग काफी ।

सखी मोहिं मोहनलाल मिलावै । ज्यों चकोर चंदाका इकटक भृंगी ध्यान लगावै ॥ बिन देखे मोहिं कल न परे री यह कह सबन सुनावै । बिनकारण मैं मान कियो री अपनेहि मन दुख पावै ॥ हाहा करि करि पाँयन परि परि हरि हारि टेरि लगावै । सूर श्याम बिन कोटि करो जो और नहिं जिय भावै ॥ २८७ ॥

राग रामकली ।

धन मेरे भागकी शुभ घरी । श्याम सुंदर मदनमोहन भुजाले उर धरी ॥ जासु चरणसरोज गंगा शंभु ले शिरधरी । जासु चरणसरोज परसत शिला सुनियत तरी ॥ जाके वदन सरोज निरखत आश सगरी सरी । सूर प्रभुकी भेंट ते मेरी सकल आपदा टरी ॥ २८८ ॥

राग विभास ।

कित श्वास उसाँस भई सजनी,उत दौर गई इत दौरके आई॥ टीकी जो मिटी अलकें जो छुटीं, प्यारी मैं तेरे लालके पाँयन पर आई ॥ अरुणाई कहाँ गई होंठनकी प्यारी, मैं व्रजनाथने बहुत बकाई ॥ कहा पलटचो पट प्रीतम को, प्यारी मैं तेरी प्रतीतिको लाई ॥ २८९ ॥

राग विहाग ।

आय क्यों न देखो लाल अपनीप यारीको ख्याल चाँदनीमें पौढी जाते चंदाहु गयो लजाय ॥ मंडप पुहुप हार बहु विधि नीलो

पट नाशिकाको मोती देख उडुगण सकुचाय ॥ आये हैं निकट लाल देख रीझे ब्रजबाल बारबार मुखकी लेत बलाय ॥ नंददास प्रभु प्यारे अधरन बीरी धरी झझक उठी अकुलाय ॥ २९० ॥

नींद तोहिं बेचूंगी आली जो कोई गाहक होय । आये मोहन फिर गये अँगना में बैरिन रही सोय ॥ कहा करूं कछु बश ना मेरो आयो धन दियो खोय । लछीराम प्रभु अबके मिले तो राखोंगी नयनन समोय ॥ २९१ ॥

मेरे कर मेहँदी लगीहै लट उरझी सुरझाय जा । शिरकी सारी सरक गई है अपने हाथ उढाय जा ॥ भालकी बेंदी मोरि गिरी जो परीहै हाहा करत लगाय जा । नीलांबर प्रभु गुणना भूलूँ बीरी नेक खवाय जा ॥ २९२ ॥

परस्परमान लीला।



राग काल्याण।

श्याम तेरी बँसुरी नेक बजाऊँ । जो तुम तान कहो मुरलीमें सोइ सोइ गाय सुनाऊँ ॥ हमरे भूषण तुम सब पहरो हौं तुमरे सब पाऊँ । हमरी बिंदरी तुमही लगावो हों शिर मुकुट धराऊँ ॥ तुम दधि बेचन जाहु वृंदावन हौं मग रोकन आऊँ । तुम्हरे शिर माखनकी मटुकिया हौं मिल ग्वाल लुटाऊँ ॥ माननी होकर मान करो तुम हौं गहि चरण मनाऊँ । सूर श्याम प्रभु तुम जो राधिका हौं नंदलाल कहाऊँ ॥ २९३ ॥

राग देश।

युगल छबि आज अनूप बनी । गोरे श्याम साँवरी राधा नख-शिख द्युति कमनी ॥ खंजन नयन मैनमदगंजन अंजन रेख अनी ॥ ललित किशोरी लाल रसिकवर मृदु मुसुक्यान घनी ॥ २९४ ॥

राग पीलू ।

श्याम श्याम श्याम रटत प्यारी आपही श्याम भई । पूँछत फिर अपनी सखियनते प्यारी कहां गई॥ वृन्दावन बीथिन यमुना-तट श्रीराधे श्रीराधे । सखी संगकी यह छबि निरखत रहीं सकल मौन साधे ॥ गरुवी प्रीति कहा न करावै क्यों न होय गति ऐसी । कहै भगवान हित रामराय प्रभु लगन लगे जो जैसी ॥ २९५ ॥

राग बिलावल ।

नंदलाल निठुर होय बैठ रहे । प्यारी हाहा करत न मानत पुनि पुनि चरण गहे ॥ नहिं बोलत नहिं चितवत मुख तन धरणी नखन करोवत । आप हँसत पुनि पुनि उर लागत चकित होत मुख जोवत ॥ कहा करत यह बोलत नाहीं पिय यह खेल मिटावो । सूरश्याम मुख चंद्र कोटि छबि हँसकर मोहिं दिखावो २९६

राग विहाग ।

तनक हरि चितवो मेरी ओर । मेरे तो मोहन तुमहीं इक हो तुमको लाख करोर ॥ कबकी मैं ठाढी ठाढी अरज करतहों सुनिये नंदकिशोर । कृष्णप्रियाके प्राण जीवन धन करुणानिधि चितचोर ॥ २९७ ॥

राग परज ।

मृदु मुसुकान कीजे थोरी थोरी । हमसों कहा रूसनो हम तुम नेह कुजके चंद चकोरी ॥ तजिये मान तनैनी भ्रुकुटी ढीली करिये ललित किशोरी । निठुराई सब छाँड छबीली वचन सुधा दीजे श्रुति घोरी ॥ २९८ ॥

इत मत निकसे तू चौथके चंदा देखेते कलंक मोहिं लगजायगो रे । दूर ते गुलाल भरो छूओ जिन छैला मोहिं तेरो श्यामरंग

मोहिं लग जायगो रे ॥ हाहा खाऊँ पैयाँ परूँ नियरे न आओ छैला करन चवाव गाम लग जायगो रे। नागरिया लोभी फाग स्वार्थहीको मीत मो मन निगोरो भूल लग जायोगो रे ॥२९९॥

कान्हरे बांसुरिया वारे रे तू ऐसे जिन बतराय। यों न बोलिये एरे घर बसे मैं लाजन दबगई हाय ॥ मैं हारी तेरे खेलनहींते तू सहज चल्यो क्यों ना जाय। रसिकबिहारी जीमो नाम पायके क्यों एतो इतराय ॥ ३०० ॥

राग देश।

हमसे न बोलो साँवलिया तू मतवारो रे। हठ मोहन हटको नहिं मानैं नट खट जात अहीर कहावै जाय कहूँ यशुदा सों हटको बारो रे ॥ कुबिजा सौत भली मनभावै हमैं बघंबर योग पठावै। छोड़ दियो हम नाहक जियरा जारो रे ॥ ३०१ ॥

रग कालिंगड़ा।

अपनी डगर चल्यो जा रे ब्रजवासी। तू मेरे ढिग जिन ठाढो रह देखैंगे लोग करेंगे हाँसी॥तुम ब्रजवासी अपनी गरजके नयना मिलाय गले डारगयो फांसी। पुरुषोत्तम प्रभु नीठ मिलेहो तू मेरो ठाकुर मैं तेरी दासी ॥ ३०२ ॥

राग प्रभाती।

मैं तो थांपै वारी वारी हो बिहारी जी। मृदु मुसकनपर जावों बलिहारी जी। लोक लाज तज थारे लडलागी थैं काईं उर धारी गिरिधारी जी ॥ औरत रांजिन जानोहो बिहारी जी लाखां भांति करो म्हांसे प्यारी जी ॥ ब्रजनिधि अरजी सुनो जी हमारी अनमोली अनतोली करो म्हांसे यारी जी ॥ ३०३ ॥

दानलीला ।



दोहा—कछु माखनको बल बढ्यो, कछु गोपन करी सहाय ।
श्रीराधाजूकी कृपा सों, गोवर्द्धन लियो उठाय ॥

राग बिहावल ।

श्री वृन्दाविपिन सुहावनो जहँ बंसीबटकी छांह हो । श्रीराधे दधिलै निकसी कन्हैया रोकत राह हो॥वृषभानु लडैती दान दे नंदराय लला घर जानदे॥लाला सबही सयाने साथके अरु तुमहूं सयाने लालहो।लाला लिख्या दिखावो सांवरे कब दान लियो पशुपालहो॥नँदराय लला घर जानदे । प्यारी लियाहै सो लेहिंगे नई रीति न करते आज हो ॥ वृषभानु० ॥ लाला क्या लादे हम जातहो श्याम काह भरे हम बैलहो । लाला तुम टेढे ठाढे भये मोरी रोक महीकी गैल हो ॥ नंदराय० ॥ प्यारी अँग अंग बसन सुहावने मानो भरे हैं रतन भूपाल हो।राधे नीकेरूप लडैती ये कोइ जोबन लादे जायहो ॥ वृषभानु० ॥ लाला याहीते कारे भये कोइ लैलै ऐसे दानहो।लाला कब छूटोगे भारसों सबरे तीरथ गंग नहायहो ॥ नंदराय० । प्यारी गोरज गंगा न्हातहीं और जपत गौंअनके नामहो । प्यारी पावन पवित्र सदा रहों ऐसे दान ते ना सकुचात हों ॥वृषभानु०॥ लाला देश हमारे बापको जाकी बाहँ बसे नंदराय हो । लाला घास जो राख्यो साँवरे यात सुख सों चरावो गाय हो ॥ नंदराय० ॥ प्यारी देश तुम्हारे बापको सो मैं ही दियाहै बसाय हो । प्यारी सब संकल्प्यो वा दिना जब पियरेरे कीने हाथहो ॥ वृषभानु० ॥ लाला दानले दानले दानले मन फूल्यो अति सुखपायहो । लाला लैरै मोहन दानलै कछु गाय बजाय रिझायहो ॥ नंदराय० ॥ प्यारी नट ज्यों नाचे सांवरो कोइ

पढत कवित जैसे भाट हो । श्रीवृंदावन लीला रची यश गावत अलि भगवान हो ॥ ३०४ ॥

हमरे गोरस दान न होय मोहन लाडिले हो । हमारे मगमग फिरत ग्वाल ग्वालिन दानदे हो ॥ कबके तुम दानी भये लाल कब हम दीनो दान । गाइ चरावो बाबा नंदकी तुम सुनो अनोखे कान्ह ॥ हम दानी तिहुं लोकके तुम चारों युगकी ग्वार । दान न छाडों आपनो तेरो राखों गहनो हार ॥ रत्न जटितकी ईंडुरी मेरी हीरा जडी हो हार । सो तुम राखन कहतहो कामरके ओढनहार ॥ ब्रह्मा तानो पूरियो हो बुनी हो बैठ महेश । सो हम ओढी कामरी जाको पार न पायो शेष ॥ भौंहैं नचावत चातुरी ढोटा बोलत बडबड बोल । मेरो हार किरोरको तेरी सब गायनको मोल ॥ यह गाय तिहूं लोक तारनी चारों युग परमान । दूध दहीके कारणे तेरो हार लेहों रसदान ॥ काहेको बाद बदतहो ढोटा काहे करत अतिसोर । जैसी बाजे तेरी बाँसुरी मेरे नूपुर की घनघोर ॥ या बंसीकी फूँक पै मैंने गिरवर लियो है उठाय । ढीठ बहुत यह ग्वालिनी इनकी मटुकी लेहो छिड़ाय ॥ हम हैं सुता वृषभानुकी तुम नन्द महरके कान्ह । प्रेमप्रीति रुचि मानकै ढोटा अब जिन करो गुमान ॥ वृन्दावन क्रीड़ाकरी हो कीनो रास बिलास । सुर नर मुनि जय जय करत गुण गावें माधुरी दास ॥ ३०५ ॥

राग भैरवी ।

दे जा गुजरिये दधि माखन ॥ गूजरी ये गुजरे टरीये मेरे इतेक मारग आउ री ॥ मैं हूँ नंदमहरको ढोटा भरला मटुकी मैं मारूं सोटा तेरे बिच बिच धूम मचाऊँ । मैं वृषभानु गोपकी बेटी मत जानो कोइ और सहेटी कँस राजाकी फोजां लाऊं तेरे नंद समेत बँधाऊं ॥ ३०६ ॥

मोहन मैं गूजर बरसाने की मोते नाहक मांडी रार ॥ पांच टकाकी कामर ओढे तापर करत गुमान॥गाय चरावत नंदकी मोपै मांगत दधिको दान ॥ रत्न जडित मेरी ईडुरी हीरा लगे करोर ॥ एक हीरा गिरजाय गो तेरी सब गायनको मोल ॥ कृष्णजीवन लछीरामके प्रभु प्यारे मोते नाहक मांडी रार ॥ नेक चितै बलि जाऊं सांवरे मेरो विमल विमल दधि खाय ॥ ३०७ ॥

राग बिलावल ।

ग्वालिन दान हमारो दे । हम दानी या माल के॥ देहो लेहो तुम जात कहां हो लेहो चुकाय नित हाल कोरे ॥ सघन कुंज-वन वीथिन गहवर सांकरी खोर कुआँ ताल कोरे ॥ पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत बार बार ब्रजबाल कोरे ॥ ३०८ ॥

याही मेरा प्यारा रे दान मांगे अरेहो हाथ लकुटिया कांधे कमरिया अरे हो गौअन ग्ववारा ॥ मोर मुकुट माथे तिलक विराजे अरे हो नयनों रतनारा ॥ कृष्ण जीवन लछीरामके प्रभु प्यारे जीवन प्राण हमारा ॥ ३०९ ॥

राग दादरा ।

हमरो दान देहु ब्रजनारी। मदमाती गजगामिनि डोलै तू दधि बेचनहारी ॥ रूप तोहिं विधनाने दीयो ज्यों चन्दा उजियारी। मटुकी शीश कटील नयना मोतिन मांग सँवारी ॥ हार हमेल गलमें राजैं अलकैं घूंघरवारी । या ब्रजमें जेती सुन्दर हैं सब,हम देखी भारी॥नारायण तेरी या छबिपर नंदनंदन बलिहारी ३१०॥

राग बरवा पीलूकाजिला ।

पहले मेरो दान चुका री पीछे बतरायो प्यारी ॥ तो समान तूही देन दिखाई नव जोबन नव सुंदरताई और कहां लौं करौं बड़ाई मोहनको मन मोहन हारी ॥ अति बांके हैं नयन तिहारे

सान धरे पैने अनियारे जिन हमसे घायल कर डारे इन समान नहिं बान कटारी । नारायण जिन भीर लगावो देहु दान अपने घर जावो क्यों मटुकी चौपट गिरवावो देख हँसेंगे पुर नर-नारी ॥ ३११ ॥

राग मल्हार ।

जोबनकी मदमाती डोले री गुजरिया । अंग अंग जोबनकी उठत तरंग नई नयना कजरारे बांके तिरछी नजरिया ॥ हाथन-में चूरी नकबेसर करनफूल मुँदरी ललित छबि देत अँगुरिया । अबलों तोसी नहीं देखि नारायण दधिकी बेचनहारी नन्दकी नगरिया ॥ ३१२ ॥

राग सोरठ ।

ठाढी रहरी गुजरी तू देजा मेरो दान । ढिग नहीं आवत वगद-जात तुम फोरूं तेरी मटुकी लकुटिया तान ॥ कैसो दान मांगे लाला चतुर सुजान । या मारग हम नित प्रति आवत कबहूं न दीनो दधिका दान ॥ दानके काजहि हम व्रज आये छांड दियो वैकुंठ सो धाम । या गहवरमें हमहीं बसत हैं ह्यां धौं कहां ति-हारो काम ॥ क्या तुम ग्वालिन आंख दिखावो दावानलको कर गयो पान । सूरश्याम प्रभु तुम्हरे मिलनको मनमोहन को गरुयो मान ॥ ३१३ ॥

राग भैरव ।

देखतकी मुखऊजरी गूजरी शीश बिराजत बामन कोरो ॥ दान बिना कहो कैसेकै जान द्यों तू इत भोरी कि मैं इत भोरो ॥ गोरसकी सौंह सो रस छांड देऊँ तनक चखाय घनो है कि थोरो ॥ जैसे तुम लाई हो याहि निहोरे कर तैसे इक मान लेहु मेरो निहोरो ॥ ३१४ ॥

अटपटी पाय सूधे बाबा कैसे रहो कान्ह कौने दान लायो जो दानको कहायो है ॥ किधौं शनी मंगल किधौं राहु केतु चौथ आये किधौं संक्रांति किधौं ग्रहणहूँ लजायो है ॥ अँचरा न गहो कहो कैसो दान मांगत हौ कहा जगजीवन तू ऊधम मचायो है ॥ देखो सखी कैसे नयन खंजनसे नाचत हैं जाने तो. यशोदा मैया कहा खाय जायो है ॥ ३१५ ॥

राग जंगला ।

द्वार पौरियाको रूप राधेको बनाय लाई गोपी मथुराते वृन्दावनकी लतान में । कह्यो टेर कान्ह सों बुलायो तोहि कंसजीने कौनके कहेते दधि लूटत हो दानमें॥संगके सखा सब डगर भुलाय गये कृष्ण सों सयाने गये पकर भुजा पान में। छूट गयो छल तो छबीली अवलोकनमें ढीली भई भौंह वा लजीली मुसकानमें ३१६॥

राग विलावल ।

एरी यह को है री याहे दान देत गोवर्द्धन केरी ग्वैंड़ ॥ हारन खेतन गाम मडैया कान्हर ठाढो ऐंड़े॥बाप भरे कर कंस रजाको पूत जगाती पेंडे। या ब्रजकी अब रीति नई है औ लातीको नीर बरेंडे ॥ पराये बगर जिन देहु अडीठन कान्हर छेंडीछेंडे । कृष्णदास बरजो नहिं मानत तोरत लाजकी मेंडे ॥ ३१७ ॥

राग सोरठ।

कांकडली ना घालो म्हारी फूटे गागड़ली। तू तो ठानों घरमें ठाकड़ होभी ठाकड़ली ॥ आकड़ आकड़ बोलो कान्हा मैंभी आकड़ली। मोढे थानो कारी कामर हाथमें लाकड़ ली॥ नौलख धेनु नंद घर दुहिया एकन वाखड़ली । माखन माखन आपने खायो रहगई छाछड़ली ॥ जाय पुकारूं कंसके आगे मारे थाप-

।' वृन्दावनमें रास रच्योहै मोरकी पांखड़ली ॥ नरसीके स्वामी सामलिया दूधमें माकड़ली ॥ ३१८ ॥

राग परज।

तुम टेढे म्हारी टेढी गगरिया। टेढी टेढी चाल चलो त्रिभंगी काहेकी दिखावे लाल टेढी पगरिया ॥ टेढी अलकमें क्या बाँधूंगी कछु न सुहावे मोहि थारी सगरिया। टेढो श्रीवृन्दावन गोकुल टेढो वाहूमे टेढी वृषभानु नगरिया ॥ टेढो श्रीनंद बाबा मात यशोदा और टेढी वृषभानु दुलरिया। सूरदास टेढीकी संगत टेढे होकर पार उतरिया ॥ ३१९ ॥

राग गुर्जरी।

गिरिवर धरचो आपने करको। ताहीके बल दान लेतहो रोक रहतहो हमको ॥ अपनेही मुख बडे कहावत हमहूँ जानत तुमको। यह जानत पुनि गाय चरावत नितप्रति जात हो बनको ॥ मोर-मुकुट मुरली पीतांबर देखे आभूषनको। सूर कांध कमरी हूँ जानत हाथ लकुटिया करको ॥ ३२० ॥

राग बिलावल।

यह कमरी कमरी कर जानत। जाके जितनी बुद्धि हृदयमें सो तितनी अनुमानत ॥ या कमरीके एक रोमपर वारों कोटिन अंबर। सो कमरी तुम निन्दत गोपी तीनलोक आडम्बर ॥ कमरीके बल असुर सँहारे कमरी ते सब भोग। जात पाँत कमरी है मेरी सूर सबहि यह योग ॥ ३२१ ॥

अब तुम सांची बात कही। एते पर युवतिनको रोकत माँगत दान दही ॥ जो हम तुमहिं कह्यो चाहतही सो श्रीमुख प्रकटायो। नीके जाति उधारी अपनी युवतिन भले हँसायो। तुम कमरीके

ओढनहारे पीतांबर नहिं छाजत। सूर श्याम कारे तनु ऊपर कारी कामरि आजत ॥ ३२२ ॥

मोसों बात सुनो ब्रजनारी। एक उपख्यान चलत त्रिभुवनमें सो तुम आज उघारी ॥ कबहूँ बालक मोहन दीजे मोहन दीजे नारी ॥ जो मन आवे सोइ कर डारे मूंड चढतहै भारी ॥ बात कहत अठिलात जात सब हँसत देत कर तारी ॥ सूर कहा ये हमको जाने छाँछकी बेचनहारी ॥ ३२३ ॥

यह जानत तुम नंदमहर सुत। धेनु दुहत तुमको हम देखत जबहि जात खरकहिं उत ॥ चोरी करत यही पुनि जानत घर घर ढूंढत भांडे। मारग रोक भये अब दानी वे ढंग कबते छाँडे ॥ और सुनो यशुमति जब बाँधे तब हम करी सहाय। सूरदास प्रभु यह जानत हम तुम ब्रज रहत कन्हाय ॥ ३२४ ॥

राग आसावरी।

को माता को पिता हमारे। कब जनमत हमको तुम देख्यो हँसी लगत सुनि बात तुम्हारे॥ कब माखन चोरी कर खायो कब बाँधे महतारी। दुहत कौन गैयाको चारत बातकही तुम भारी ॥ तुम जानत मोहिं नंदढटोना नंद कहांते आये। मैं पूरण अविगत अविनाशी माया सबन भुलाये ॥ यह सुनि ग्वालि सभी मुसुकानी ऐसेही गुण जानत। सूर श्याम जो निदरचो सबही मात पिता नहिं मानत ॥ ३२५ ॥

राग सोरठा।

तुम का जाने री गूजर दधिकी बेचनहार। कौन पिता को मात हमारे जन्म अजन्म रूप रंग धार ॥ भुवके भार उतारन कारन लीन मनुज अवतार। मेरी माया जगत भुलानो मेरो कह्यो सत्यकर मानो गावत वेद पुराण भागवत यश गावत श्रुति चार ॥

जो मेरो निज दास कहावे रसिक प्रीतम निज भक्ति पावे ब्रह्मादिक सनकादिक नारद शेष न पावत पार ॥ ३२६ ॥

राग आसावरी।

भक्त हेत अवतार धरों मैं ॥ कर्म धर्मके वश मैं नाहीं योग यज्ञ मनमें न करों मैं ॥ दीन गुहार सुनो श्रवणन भर गर्व वचन सुन हृदय जरों मैं ॥ भावाधीन रहों सबहीके और न काहू ते नेक डरों मैं ॥ ब्रह्मा आदि कीटलों व्यापक सबको सुख दे दुखहि हरों मैं ॥ सूर श्याम तब कह्यो प्रगट ही जहां भाव तहँते न टरों मैं ॥ ३२७ ॥

राग लावनी।

मैंही तो हूं नंदको लाला मात यशुदाको कन्हैया मैंहीं तो हूं। धरधरके अवतार भूमिको भार हरैया मैंही तो हूं। मथुरामें लियो जन्म ब्रजमंडलको बसैया मैंही तो हूं। प्रथम पूतना तृणावर्त शकटाको हनैया मैंही तो हूं॥ कागाको मारके चोंचको फार डरैया मैंही तो हूं। ब्रजवासिनको प्रेम देखि माखनको खवैया मैंही तो हूं॥ यमलाअर्जुन हेत ऊखल सों हाथ बँधैया मैंही तो हूं। मोहे गोपी ग्वाल बाल गौवनको चरैया मैंही तो हूं॥ वत्सासुरको पटक अघाके प्राण कढैया मैंही तो हूं। नौलख धेनु खिरक मेरेमें तिनको दुहैया मैंही तो हूं॥ दावानलको कियो पान कालीको नथैया मैंही तो हूं। चीर चोर चढ गयो कदम युवतिनको रिझैया मैंही तो हूं॥ गोवर्द्धन नख धरचो इंद्रको गर्व हरैया मैंही तो हूं। बंसीबटके तट अधरन धर बंसीको बजैया मैंही तो हूं॥ श्यामके संग रासमें नीको तो नचैया मैंही तो हूं। पकरूं कंसके केश देख ऐसो तो लरैया मैंही तो हूं॥ उग्रसेनको राज्य मथुराको दिवैया मैंही तो हूं। सब खेलनको खेल खेलनको खिलैया मैंही तो हूं॥ भक्तन हितकारी बलदेवको भैया मैंही तो हूं। मंझधारके

बीच टेर गजकी सुनवैया मैंही तो हूँ ॥ कुंदन विप्र यों कहत नाम राधाको रटैया मैंही तो हूँ ॥ ३२८ ॥

कवित्त ।

अंत ते न आयो याही गांवरेको जायो माई बाप री जिवायो प्याय दूध दधि बारे को ॥ सो तो रसखान तज बैठो पहिचान जान लोचन नचावत नचैया द्वारद्वारे को ॥ भैयाकी सौं सोच कछु मटुकी उतारे को न गोरसके ढारेको न चीर चीरडारे को ॥ याही दुख भारी गहे डगर हमारी देखो नगर हमारे ग्वार बगर हमारे को ॥ ३२९ ॥

राग झिंझोटी ।

चल परे हटरे काहेको इतरावे। भूषण वसन दधि माखन चुरैया अब कैसी कैसी बात बनावे ॥ जिनके बसाये तुम उनहीं सों झगरत निलज न नेक लजावे ॥ नितप्रति धेनुको चरैया नारायण आज तू भूप कहावे ॥ ३३० ॥

राग कल्याण ।

रजधानी तुम्हरे चित नीकी । मेरे दास दास दासनके तिनको लागत है अति फीकी ॥ ऐसी काहे मोहिं सुनावत तुमको यही अगाध । कंस मारि शिर छत्र फिराऊं कहा तुच्छ यह साध ॥ तबही लग यह संग तिहारो जबलों जीवत कंस । सूर श्यामके मुख यह सुन तब मनमें कीनो संस ॥ ३३१ ॥

राग रामकली ।

राधासों माखन हरि माँगत । औरनकी मटुकिनको चारव्ये तुम्हरो कैसो लागत ॥ लेआई वृषभानुनंदनी सदलौनी है मेरो । लै दीनो अपने कर हरि मुख खात अलप हँस हेरो ॥ सबहिनते

मीठो दधि है यह मधुरे कह्यो कन्हाई । सूरदासप्रभु सुख उप-जाये ब्रजललना मन भाई ॥ ३३२ ॥

राग कालिंगडा ।

अच्छा लेहु ब्रजबासी कन्हैया अच्छा लेहु रे॥ बरसानेसे चली रे गुजरिया आगे मिले महाराज रे ॥ कोरीकोरी मटुकीमें दही रे जमाया चाख लेहु महाराज रे ॥ दधि मेरो खायो मटुकिया रे फोरी इंडुरी कहां डारी लाल रे ॥ हार शृङ्गार सभी मेरो तोरयो दुलरी कहां डारी लाल रे॥ जाय पुकारूंगी कंसके आगे न्याव करो महाराज रे॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल बलिहार रे ३३३॥

हिंडोराझूलन लीला ।

राग मलार ।

ब्रज पर नीकी आज घटा। नान्ही नान्ही बून्द सुहावनी लागत चमकत बिज्जु छटा ॥ गर्जत गगन मृदंग बजावत नाचत मोर नटा। गावत सुरहि देत चातक पिक प्रकट्यो मदन भटा ॥ सब मिल भेंट देत नंदलालहिं बैठे ऊंची अटा। चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनलाल शिर कसूमी पीत पटा ॥ ३३४ ॥

आज कछु कुंजनमें बरसासी । बादरगणमें देख सखी री चमकत है चपलासी॥ नान्ही नान्ही बून्दन कछु धुरयासी पवन बहुत सुखरासी । मंद मंद गर्जनसी सुनियत नाचत मोर सभा सी ॥ इन्द्र:धनुषमें बग मिल डोलत बोलत हैं कोकिलासी । इन्द्रवधू छबि छाय रहीहै गिरिपर श्याम घटासी ॥ उमग महीरुहसे महि कंपत फूली मृगमालासी । रटत व्यास चातककी रसना रसपीवत हौं प्यासी ॥ ३३५ ॥

आई बदरिया बरसनहारी । गरज २ दामिनि दमकावे ज्यों चूंदरमें झलक किनारी ॥ मधुर मधुर कोयल वन बोले भवन भवन गावत ब्रजनारी । चलत पवन शीतल नारायण परत फुहार लगत अति प्यारी ॥ ३३६ ॥

देख युगुल छबि मावन लाजे । उत घन इत घनश्याम लाड़लो उत दामिनि इत प्रिय सँग राजै ॥ उत वर्षत बून्दनकी लरिया इत गल मोतियन हार विराजै । उत दादुर इत बजत बांसुरी उत गर्जत इत नूपुर बाजै ॥ उत रंगके बादर इत बागे उतै धनुष वनमाल इत साजै । उत घन घुमड इतै दृग घूमत नारायण वर्षा सुख आजै ॥ ३३७ ॥

श्याम सुन नियरे ही आयो मेहु । भीजैगी मेरी सुरँग चुनरिया ओढि पितांबर लेहु ॥ दामिनी मों डरपतहौं मोहन निकट आपने लेहु । कुम्भनदास लाल गिरिधर मों बाढ्यो अधिक सनेहु ३३८॥

राग रेखता ।

आयो है मास सावन इक मान कह्यो प्यारी । चल झूलिये हिंडोरे वृषभानुकी दुलारी ॥ यमुनाके तीर बंसीवट कैसी छबि छाई । शीतल सुगंध मंद पवन चलत अति सुहाई ॥ करती है शोर यमुना उठते तरंग भारी । प्रति कुञ्ज कुञ्ज छाय रह्योहै परागरी॥ लागत परम सुहाई अवलोकि नागरी । फूली लता द्रुमनकी धरणी झुकीहै डारी॥जापै मलिंद घूमे मकरन्द हेत छाये । नाचतहै मोर वनमें लागत परम सुहाये ॥ मातीं कोयल पुकारे बैठी कदमकी डारी । कालिन्दियाके तटपै झूलत हैं सब सहेली ॥ नवसत शृङ्गार साजे इक एकतें नवेली । तुमहूं प्रिया सिधारो कीजे न अब अवारी ॥ झूलें निकुंज अपनी अबही चलो पियारे । कीजे बिहार हमसों तुम नन्दके दुलारे ॥ तब संग ले पिया-

को सुनि कुञ्जमें सिधारी।बैठो कुँवर हिंडोरे अब मैं तुम्हैं झुलाऊँ। गाऊँ तुम्है रिझाऊँ छबि देख दृग सिराऊँ॥ बैठो सुरङ्ग पटली डोरीगहो सँभारी॥ बाढ़े न रमक मोहन टुक मन्दही झुलावो। डरपे हियो हमारो पिया पैंग ना बढाओ॥ यह बात सुन प्रियाकी उरसों लई लगारी। भीजैगी लाल सारी कारीघटा जो आई॥ लीजे उढाय मोको कामर कुँवर कन्हाई। तब हँस रसिक बिहारी कामर उढाइ कारी। चल०॥ ३३९॥

राग देश

आज बन्यो रसरङ्ग हिंडोरो कदम तरें। सघन लता झुक सुमन सुगन्धन अलिगण गुंज करें॥वर्ण वर्ण तनु भूषण चुँदरी श्यामा जू पहरें। लाल लड़ाय चाय हित चित सों रूप समुद्र भरें॥३४०॥

झूलो प्यारी आज निकुंज हिंडोरना।बोलत चातक मोर पवन झकझोरना॥ सवन लता निधि बनकी आज सुहाई हैं। श्याम-घटन सों परत बूंद सुखदाई हैं॥ तैसीही दामिनी चमक चमक छबि छाई हैं। मनो डरत तुव तेज लाज दरसाई हैं॥ हरित भूमि तुलसी तुव आगम जानके। मनो बिछौना कियो मदन मद भानके॥ ३४१॥

चल झूलिये हिंडोरे श्री वृषभानुकी लली। तिहारे काज आज इक मैंने विरची कुंज भली॥ रत्न जडितको बन्यो हिंडोरो कैसी झला झली। ब्रजबनिता झूलत अनेक तहँ एक एक नवली॥ शब्द करत जहँ कीर कोकिला गुंजत मोर बली। रसिकबिहारी-की सुन वाणी तुरतही कुँवरी चली॥ ३४२॥

चलो इकेले झूले वनमें प्यारी मेरे प्रान। तुम नई नागर रूप उजागर सुखसागर छविखान॥ वर्ण वर्णके बादर छाये मानो गगन बितान। वर्षत बूंद सोई मोतिनकी झालर शोभावान॥

बोलत खग मृग डोलत इत उत सो नहिं जात बखान । रंग रंगके फूल खिले हैं भ्रमर करत रसपान ॥ ऐसे समय विपिन सुख विलसे एरी परम सुजान । नारायण उठ वेगि पधारो कुलदीपक वृषभान ॥ ३४३ ॥

राग खेमटा ।

झूलन चलो हिंडोरने वृषभानु नन्दनी । सावनकी तीज आई नभ घोर घटा छाई मेघन झरी लगाई परें बूँद मन्दनी ॥ सुन्दर कदमकी डारी झूला परचोहै प्यारी देखो कुमर हहारी सब दुख निकन्दनी । पहरो सुरंग सारी मानो विनय हमारी मुख चन्द्रकी उजारी मृदु हास फन्दनी ॥ मम मानि सीख लीजे सुन्दर न देर कीजे हम तो विलोकि जीजे तू है गति गयन्दनी ॥ शोभा लखो विपिनकी फूली लता द्रुमनकी सुन अरज रसिक जनकी करों चरण बन्दनी ॥ ३४४ ॥

राग सोरठ ।

झूलो मेरी राधा प्यारी रंगीलो हिंडोरना । डाँडी चार सुदेश बनाई हीराखम्भन झुलमकलाई जगमग जगमग होंय रवि शशि डोरना ॥ उमड़ी घटा घुमड़ घिर आई रिमझिम रिमझिम बूंद सुहाई दमक दमक दामिनियां बोलें मोरना । गावत राग मलार अघाई शीतल मन्द सुगन्ध सुहाई तान तरंगन ललित भान तृण तोरना ॥ ३४५ ॥

धवल महल चढ़ रत्न बंगला झूलों सुरंग हिंडोर । नवकिशोर सुकुमार छबीली नेह नवल भुज जोर॥सुरंग कसूमी सारी प्यारी हरन झँगाली कोर । हित अलि रूप लाल रुचि औरै पिया उठन हिलोर ॥ ३४६ ॥

राग मलार।

तेरी झमक झूलन कटि लचक जात प्यारी रमक रंगीली अति सोहै। तू गुण रूप यौवन गंग रसभरी तेरी उपमा को कोहै॥ हाथन चूरी महाउर मेहँदी चटक चौगुनी सोहै। रसिक गोविंद अभिराम श्याम घन तू दामिनि मन मोहै॥ ३४७॥

राग पीलू।

चलो पिया वाहीं कदम तेरे झूलैं। झुक रहीं लता अति सघन प्रफुल्लित कालिन्दीके कूलैं॥ बोलत मोर चकोर कोकिला अलि-गण गुंजत भूलैं। ललित किशोरि मग बतरावें कहकह बतियां फूलैं॥ ३४८॥

राग मलार।

हर्ष झुलाइये मनभावन। उधर पर्यो हित हेत गह गह्यो झूटा दियो चित चावन॥ यह जो कल्पतरु यह रविजातट वह वन घन झुक आवन। वृन्दावन हितरूप बलि गई वह हरियाली सावन॥ ३४९॥

राग खेमटा।

हिंडोरे आज झूलत रंग रयो। अचल सुहाग सुभग श्यामाको दिन प्रति होत नयो॥ हरित भूमि बंसीवट यमुना सो सुख दृगन लयो। रसिक प्रीतम मिल गावत भावत व्रज सब रीझरह्यो॥३५०॥

राग रेखता।

झूलन युगल किशोरकी दिलमें मेरे बसी। बैठेहैं रंग हिंडो-रना करते हैं रसमसी॥ फहरात पीत पटुका दुपटा जो छोरदार। शिरपै सुरंग सारी प्यारीके क्या लसी॥ बेसर बुलाक बेनी बेंदी जो भालपै। हीरोंका हार उर पै कटि काछनी कसी॥ जोबनके जोर शोरसों रमके बढावती। ललिता किशोरी श्यामकी छबि देखके हँसी॥ ३५१॥

राग मलार ।

झूलत तेरे नयन हिंडोरै । श्रवण खंभ भुहैं भईं मयीरी दृष्टि किरण डांडी चहुँ औरै ॥ पटली अधर कपोल सिंहासन बैठे युगल रूप रति जोरै ॥ बरुनी चमर दुरत चहुं दिशितें लर लटकत फुंदना चित चोरै ॥ दुर देखत अलकावलि अलि कुल लेत है पवन सुगंध झकोरै ॥ कच घन आड दामिनी दमकत इंद्र मांग वन करत निहारै ॥ थकित भये मंडल युवतिनके युग तांटक लाज मुख मोरै ॥ रसिक प्रीतम रसभाव झुलावत विविध कटाक्ष तान तृण तोरै ॥ ३८२ ॥

राग खेमटा ।

युगल बर झूलत दे गलबाहीं । बादर बरसें चपला चमकें सघन कदमकी छाहीं ॥ इत उत पैंग बढावत सुन्दर मदन उमंगन माहीं । ललित किशोरी हिंडोरा झूलें बढ यमुना लौं जाहीं ॥ ३८३ ॥

राग देश ।

झूलत श्याम श्यामा संग । अतिरंग शोभाके मानों लहत यमुना गंग ॥ झलक भूषण चित्त चोरन श्यामा गोरे अंग । ललित किशोरी हिंडोरने पै आज बरसत रंग ॥ ३८४ ॥

बलि बलि जाँदियां झूलन पर । प्यारी पहरे कुसुमल सारी प्यारेके मन भाँदियां । चहूँ ओर सब सखी झुलावें झुक झुक झूट ग्वाँदियां । पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत तन मन नयन सराँदियां ॥ ३८५ ॥

राग मलार ।

आज हिंडोरें झूलें झूलन नवल कुँवर नव दुलहन दूलें । धादा किटना धादा किटता बजत मृदंग सखि सुघर तान गावें झननन

नन नाचत मोर सघन बन प्रफुलित श्री यमुनाजीके कूलें कूलें ॥ नवल किशोरी वृषभानुकी कुँवर भोरी भोरी संग जोरी रस राचो उरझी माल लटक नकबेसर अंग अंग भुज फूलें फूलें ॥ ३५६ ॥

राग देश ।

मनभावन हर्षावन आवन सावन तीज सुहाई ॥ चावन गावन रीझ रिझावन दंपति रति दरशाई ॥ चढे हिंडोरे नयनन जोरे चितचोरे सुखदाई । युगल चन्द रसकन्द कोरनी नख रूपलाल बलिजाई ॥ ३५७ ॥

राग रेखता ।

प्यारी पीतमके संग झूलें रंग हिंडोरना । दो खंभ हैं जड़ाउ जडे चितके चोरना॥डाँडी मरुवं लगन लगी बेलन अमोलना ॥ पटली संदलकी साफ देखो खूबहै बनी। लागेहैं उस्के बीचमें हीरा चुनी मनी ॥ चुंदरी घूंघटकी ओटमें नयना विशाल है। खंजन भुलामनेके वेरनको जाल है॥ मुझको रसिक गोविंदकी छबिहीमें झूलना । प्यारी अनूप रूपको दिलमे न भूलना ॥ ३५८ ॥

राग खेमटा ।

युगल बर झलत डार गलबाहीं । रत्न जडितको बन्यो है हिंडोरा सघन कुञ्जके माहीं ॥ रेशम डोर पवन पुरवैया लखि रति काम लजाहीं । सखी सखा दोउ ओर झुलावत मधुर मधुर सुर गाहीं ॥ मध्य श्यामा श्याम दोउ हिल मिल पुनि पुनि हिय हर्षाहीं॥ऊंची डार तोर कलियन दोउ निज निज कलिन सराहीं ॥ या छबि निरख प्रियाकी प्रीतम मोहन मन न अघाहीं॥३५९॥

आज दोउ झूलत रंगभरे ।झूटा खर लेत कबहुँक सखि कबहूँ हरे हरे॥कर्णफूल कुंडल मिल भेटत मनु शशि मीन लरे । चद्रमाल

झलकत उर राधे हरि वनमाल गरे ॥ विहँसत दमक उठत दशनावलि अव[illegible]न झरे । ललित किशोरी टरत न लखि छबि दृग शिशु अ[illegible]र ॥ ३६० ॥

राग देश ।

कहत श्याम श्यामाजू मोको दर्शन देत रहो जू। अंचल अलक पलक सुनिरंतर इक संकोच सहो जू ॥ यह विनती मानिये जो श्रवण सुन नाहिन वचन कहो जू । विहारन दास कहत रुख लीये यह सुख सहज लहो जू ॥ ३६१ ॥

सुहावन सबान गधा सुख तिहारे बाट पर्‌यो। यह जो शतगुणों रूप अंग संग झूलनमें उघरयो॥यह जो जो चौगुनो चाव कौन विधि भागनते जो बढयो । वृन्दावन हित रूप रसिक प्रीतमको लहनो सुकृत करयो ॥ ३६२ ॥

राग मलार ।

एहो लाल झूलिये तनक धीरेधीरे।काहेको इतनी रमक बढावत द्रुम उरझत चीरेचीरे ॥ जो तुम झुक झुक झूटनके मिस आवत हो नीरे नीरे। नागर कान्ह डरात न काहू लेत भुजन भीरे भीरे ॥ ३६३ ॥

राग यमन ।

झोका दीजो सम्हारके मेरी सारी न लटके। सघन कुंज द्रुमडार कँटीली काहू छोर जिन अटके॥ उन बातन अब भेंट नहीं कछु और धोखे जिन भटके। ललित किशोरी लाल जाओ घर काहेको चटके मटके ॥ ३६४ ॥

राग मलार ।

कैसे झूलों हिंडोरे बतियां माने नाहिं हरी। बरजो न मानत यह काहूको लोककी लाज टरी॥ हाहा खात यह तो पैयां परतहैं

प्रेमके फंद परी । रसिक गोविंद अभिराम श्यामने भुज भर अंक भरी ॥ ३६५ ॥

राग बड़हंस मलार ।

हिंडोलनामें काई छै झूला राज ॥ म्हारा झूलत हिया लरजे ॥ रत्न जड़ितके खंभ जडाये अगर चंदनके पटा । रेशम डोर पवन पुरवैया जुरआई सावनकी घटा ॥ श्यामा झूलें श्याम झुलावें कालिंदीके तटा । उड उड अँचरा परत भुजन पर निरखत नागर नटा ॥३६६॥

राग सारंग ।

फूलनके बँगलेमें राजें पिया प्यारी हो । फूलनके भूषण विचित्र सोहें अंगअंग फूलनके वसन वदन छबि न्यारी हो ॥ फूलसे मुखारविंद वचन फूलन सम फूली सखी तनमन शोभा लखि भारी हो ॥ जैसो ही समाज साज आज नारायण मानो कुंज भवनमें फूली फुलवारी हो ॥ ३६७ ॥

कवित्त ।

फूलनके खंभा पाट पटरी सुफूलनकी फूलनके फुँदने फंदेहैं लाल डोरे में । कहै पदमाकर वितान तने फूलनके फूलनकी झालरें सुझूलत झकोरे में ॥ फूलरही फूलन सुफूल फुलवारी तहां फूलके ही फरस फबे हैं कुंज कोरे में ॥ फूलझारी फूलभरी फूल जरी फूलनमें फूल ही सी फूल रही फूलके हिंडोरेमें ॥ ३६८ ॥

राग कान्हरा ध्रुपद ।

फूलनकी चन्द्रकला शीश फूल फूलनको फूलनके झुमका श्रवण सुकुमारीके । फूलनकी बन्दनी विशाल नथ फूलनकी फूलनको

बेंदा भाल राजत दुलारीके॥फूलनकी चम्पाकली हारगले फूलनके फूलनके गजरा ललित कर प्यारीके। फूलनकी पगमें पायल नारायण फूले फूले भाग सदा लाडिली हमारीके ॥ ३६९ ॥

कवित्त ।

फूलन चन्दोआ तने फूलन फरस बिछे फूलनकी सेज औ फूलन छबि छेरही॥ फूलनकी गरे माल फूलन करनफूल फूलनको टीको मांग फूलन भरे रही ॥ फूलनके वस्त्र औ शृंगार सब फूलनके विक्रम मृगेश मन उपमा बनै रही ॥ फूली फुलवारी जामें बैठी प्राणप्यारी आज देखत बसन्त या बसन्त ऋतु ह्वै रही ॥ ३७० ॥

राग पीलो ।

मो तू राखले री झूटा तरल भये । इत नव कुंज कदम लौं परसत उत यमुना लौं गये ॥ आवत जात लता निरखारत कुसुम बितान छये । कल्याणके प्रभु रीझ विवम भये झूलत नये नये ॥ ३७१ ॥

मेरो छांडदे अँचरवा मैं तो न्यारी झूलोंगी । झूटनमिस मोहन लँगरैंया अजहूँ टहोकन ना भूलोंगी ॥ ललता संग रंगीले झूल झूल झूल मनहीं मन फूलोंगी । ललित किशोरी तरल पैंग कर लालन तो सँग सम तूलोंगी ॥ ३७२ ॥

राग दादरा ।

सुन सखी आज झूलन नहिं जैहों॥श्यामसुँदर पिया रस लंपट है अतिही ढीठचो देत। झूटा तरल करे पाछेते धाय भुजनभर लेत ॥ चितवन चपल चुरावत अनतै हमैं जनावत नेह। रसिक गोविंद अभिराम श्याम सँग क्यों न जाय रस लेह ॥ ३७३ ॥

राग सोरठ।

कौन समय रूठनको प्यारी झूलो ललित हिंडोरे। रंग बिरंग घटा नभ छाई बिच बिच चपला चमक सुहाई परत परम सुखदाई चलत समीर झकोरे॥ विविधभाँति पक्षी वन बोलें मृगिन सहित मृग विहरत डोलें जीवजंतु मिल करत कलोलें यही अचरज मन मोरे। कुसुमचीर पहरे ब्रजनारी साज समाज आज है भारी नारायण बलिजाउँ तिहारी प्रीतम करत निहोरे॥ ३७४॥

राग मलार।

या ऋतु,रूस रहनकी नाहीं। बरसत मेघ मेदिनीके हित प्रीतम हरष बढाहीं॥ जे बेली ग्रीषम ऋतु जरहीं ते तरुवर लपटाहीं। उमडी नदी प्रेम रस माती सिंधु मिलनको जाहीं॥ यह संपदा दिवस चारककी शोच समझ मनमाहीं। सूर सुनत उठ चली राधिका दै दूती गलबाहीं॥ ३७५॥

राग गौरी।

झूलनहार नई कौन है॥ श्यामाके सँग रंग भरी सोहत सखी नवेल। अति सुन्दर तनु सामरी मानो नील मणिनकी बेल॥ श्वेद कम्प रोमांच हो जान परत कछु और। झुक झुक झूटनमें मिले हँस कुँवरि लजोई होन॥ निरखो झूलन नेहकी सखी चतुर शिरमौर। हम जानी जानी सभी सखि यह झूलन कछु और॥ सभी छकाई नागरी दृगन सुधारस प्याय। कपट रूप धर मोहनी प्रगट भई ब्रज आय॥ ३७६॥

राग यमन।

झूलत को श्यामाके सँग,सखी सामरी प्यारी है। कजरे नयन सैनसों बतियाँ अँखियन कोर कटारी है॥ जोबन जोर मरोर

भौंहकी ललित किशोरी वारी है । ललिता करि परिहास कही यह नागर नंददुलारी है ॥ ३७७ ॥

राग झँझोटी ।

श्यामाजी झूलें पीरी पोखार । पार गावत है ऊंचेस्वर कोकिल रही मौन मुख धार ॥ रमकनकी दमकन नग भूषण शोभा विपिन निहार । चौकाकी चमकन पर डारूं श्वेत दामिनी वार ॥ थरकतहै अतर अतगट शिर पर सूही सार । खुमक बनी उर पीतकंचुकी मुख पर श्रमकण बार ॥ सजनी री इक साँवरि आई झूलनको रिझवार । ताके सँग झूलत हैं प्यारी करत अधिक मनुहार ॥ कौन गाम क्या नाम तिहारा करिये कृपा विचार । तरुणिनमें अतिसुंदर प्यारी चतुरनमें वर नार ॥ ललिता कहै बोल री सामर नानर देहुँ उतार । राजसुता सँग झूलन आई दियो ढीठ डर डार ॥ डोरी गह लीनी ललिता ने दोऊ दिये उतार । हँस पुनि चपल बलैयाँ लेवें कोउ पीवत जल वार ॥ मैननमें समझावत मुखसे वचन न सके उचार । नंदगामकी ओर बतावे ऊंचे हाथ पसार ॥ अँचराकी सरकनमें कौस्तुभमणिकी परी चिन्हार । हर हर हँसत सकल व्रज सुंदरी यह वोही खिलवार ॥ नई पाहुनी आई झूलन बैठी घूँघट मार । वृन्दावन हित रूप बलिगई छदम न सकत उघार ॥ ३७८ ॥

बाँकी छबि झूलत प्यारी । बाँकी आप बिहारी बाँके बाँकी सँग सुकुमारी ॥ बांकी घटा घिरी इत चमकन चपलाहूको न्यारी । ललित किशोरी बांकी मुसकन बंक पैंग पर वारी ॥ ३७९ ॥

राग पीलू खेमटेकी राहमें ।

कौन चढे पहले सुरंग हिंडोरे । सोई करत मनुहार हिये हित रमकदेत जोमजोरे । गावत राग तान मधुरे स्वर कोटि काम चित चोरे । रसिक प्रीतम यह होड़ पियापरी रीझ देत तृण तोरे ॥ ३८० ॥

राग सोरठ।

गाय चरायके गिरि धारचो तुम्हैं झूलन समझ कहा है। अति-सुकुमार प्रिया गौरांगी ता सँग झूलोहि चाहे ॥ हम जो सिखावैं तैसेहि सीखो कहा फिरत हो भरे उमाहै। वृंदावन हित रूप बलिगई ह्यां पायोके वाँ है ॥ ३८१ ॥

राग बरवा सारंगा।

तेरी झूलन अति रस सानी सुखदानी श्रीराधा वल्लभ लाडले। गावत बजावत रिझावत प्रियाको तान तरंगन सब मिल आव रे ॥ सब शृङ्गार हार फूलनके प्यारीको पहरावत मनमें चाव रे। राधे-वर कृष्ण याही कृपा करविपिन बसावो अनत न जाव रे॥३८२॥

राग मलार।

झूलो तो सुरंग हिंडोरे झुलाऊँ। मरुव बयार करूं हित चित दे तन मन खंभ बनाऊं ॥ सुध पटली बुध डांडी बेलन नेह बिछौना बिछाऊं। अति अवसेर धरूं टुक कलसा प्रीति ध्वजा फहराऊं ॥ गरजन कुहक किलक मिलबेकी नेह नीर बरसाऊं। श्रीविट्ठल गिरिधरन लालको जो इकले कर पाऊं ॥ ३८३ ॥

भीगत कब देखूँ इन नयना। राधाजूकी सुरंग चूनरी मोहनको उपरैना ॥ श्यामा श्याम कुञ्ज तन चितयो यत्न कियो कछु मैं ना। श्रीभटके प्रभु नयनन निरखत जुर आई जल सैना ॥ ३८४ ॥

भीगत कुञ्जनमें दोऊ आवत। ज्यों ज्यों बूँद परत चुनरी पर त्यों त्यों हरि उर लावत॥ अधिक झकोर होत मेघनकी द्रुम तरछिन बिलमावत। वे हँस ओट करत पीतांबर वे चुनरी जु ओढावत ॥ तैसेहि मोर कोकिला बोलत पवन बीच घन धावत। ले मुरली कर मन्द घोर स्वर राग मलार बजावत॥ भीजे राग रागिनी दोऊ भीजे तनु छबि पावत। सूरदास हरि मिलत परस्पर प्रीति अधिक उपजावत ॥ ३८५ ॥

होरी लीला ।

राग जङ्गला ।

प्यारी पिया दोऊ खेलत होरी । नन्दनँदन ब्रजराज साँवरो श्रीवृषभानुकिशोरी ॥ परमानन्द प्रेम रस भीने लिये अबीर भर झोरी । करत मनमें चित चोरी ॥ भुजभर अंक सकुच तज गुरुजन बिचरत हैं मिल जोरी। छूटी अलकाँ उरझीं कुण्डलसों बेसर प्रीत फँस्योरी ॥ चलो सुझावो गोरी ॥ कर कङ्कण कञ्चन पिचकारी केसर भर लै दौरी । छिरकत फिरत हुलस लिये हर्षत निरखत हँस मुख मोरी ॥ चलो क्यों होइयो बौरी ॥ धनि गोकुल धनि धनि श्रीवृन्दावन जहँ यह फाग रच्योरी। श्रीरसरंग रीझरहे ब्रजपर वारों वैकुण्ठ करोरी ॥ मुक्ति काशी जहँ थोरी ॥ ३८६ ॥

राग होरीसारंग ।

श्यामा श्याम सों होरी खेलत आज नई । नंदनँदनको राधे कीनो माधव आप भई ॥ सखा सखी भईं सखी सखा भये यशुमति भवन गई । बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ नाचत थेइ थेई ॥ गोरे श्याम साँवरी राधे या मूरति चितई । पलट्यो रूप देख यशुमतिकी सुध बुधि बिसर गई ॥ सूर श्यामको वदन बिलोकत उघरगई कलई ॥ ३८७ ॥

राग जङ्गला ।

या ब्रजमें कैसी धूम मचाई ॥ इत ते आई कुवँरि राधिका उतते कुवँर कन्हाई । खेलत फाग परस्पर हिल मिल या छबि बरणि न जाई॥ घरै घर बजत बधाई॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ मंजीरा सहनाई।उडत गुलाल लाल भये बादर केसर कीच मचाई॥ मनो मघवा झर लाई॥राधे सैन दई सब सखियन यूथ यूथ मिल धाई।

पकरोरी पकरो श्याम सुंदरको गृह अब जान न पाई॥करो अपने मन भाई॥छीन लियो मुख मुरली पितांबर शिरपर चुनारे उढाई। बेंदी भाल नयनमें काजर नकबेसर पहराई॥ मनो नई नारि बनाई॥ कहाँ गये तेरे पिता नंदजी कहाँ यशोमति माई। कहां गये तेरे सखा संगके कहां गये बल भाई॥ तुझे अब लेत छुडाई॥ फगुवा लिये बिन जान न दूँगी करियो कोटि उपाई। लेहों चुकाय कसर सब दिनकी तुम हो चोर चुराई॥ छीन दधि माखन खाई॥ धनि गोकुल धनि धनि श्रीवृन्दावन धनि यमुना यदुराई। राधा कृष्ण युगुल जोरी पर नंददास बलिजाई॥ प्रीति उर रही न समाई॥ ३८८॥

राग सारंग।

रसियाको नारि बनावो री। कटि लहँगा गल माहिं कंचुकी चुँदरी शीशउढ़ावो री॥गाल गुलाल दृगनमें अंजन बेंदीभालल गावो री।नारायण तारी बजायके यशुमतिनिकट नचावो री॥३८९॥

राग जंगलासिंध।

श्याम मोसे न खेलो होरी पालागों कर जोरी॥ गैयां चरावन मैं निकसी हूं सास ननँदकी चोरी। सगरी चुँदरिया रंग न भिजोवो इतनी सुनो बात मोरी॥ छीन झपट मोरे हाथसे गागर जोरसे बहियां मरोरी। दिल धडकत मेरो सांस चढ़त है देह कंपत गोरी गोरी॥ अबिर गुलाल लिपट गयो मुखसे सारी रंगमें बोरी। सास हजारन गारी देवै अरु बालम जीती न छोरी॥ फाग खेलके तैने रे मोहन क्या कीनी गति मोरी। सूरदास आनंद भयो उर लाज रही कछु थोरी॥ ३९०॥

राग जंगला।

थारे करूंगी कपोलन लाल जी म्हारी अँगिया न छूओ॥यह अँगिया नहिं धनुष जनकको छुअत टुटो तत काल। नहिं अँगिया

गौतमकी नारी छुअत उडी नँदलाल ॥ कहा विलोकत भ्रुकुटी कुटिल कर नहीं पूतना खाल । यह अँगिया काली मत समझो जानाथ्यो पाताल॥गिरिवर उठाय भयो गिरिधारी लाला नहीं जानो ब्रजबाल । जाओजी खावो सुदामाके तंडुल गौवनके रखवाल ॥ इतनी सुन मुसकाय साँवरे लीनो अबिर गुलाल । सूरश्याम प्रभु निरख छिरक अंग सखियन कियो निहाल ॥ ३९१ ॥

राग भूपाली जंगला ।

डगर मोरी छांडो श्याम बिंध जावोगे नयननमें।भूल जाओगे सब चतुराई लाला मारूंगी सैननमें ॥ जो तोरो मनमें होरी खेलनकी तो लेचल कुंजनमें ॥ चोआ चंदन और अर्गजा छिरकूंगी फागनमें॥चंद्रसखी भजबालकृष्णछबि लागीहै तनमनमें॥३९२॥

राग जंगला ।

जनि जाओ री आज कोऊ पनिया भरन ॥ ठाढो मगमें मोहन इक इकको मारत पिचकारी तकतक॥जिनको चाहत तिनका रंगमें भिगोय डारे गारियां देन लागो न्यारो बक बक ॥ उनको देखके उलटी दौर आई मुख अपनो इक वारी ढक ढक ॥ शीश कूँपन लागो पाँय थकन लागे छतियाँ करन लगी न्यारी धक धक ॥ आई वसंत विरहोंकी मौजमों सब रंग रह्यो वनवारी छक छक ॥ मौज हरी तिहारो यही रंग रहेगो संग चलनको मैं रही तक तक ॥ ३९३ ॥

राग गजल ।

मची है आज बंशीबट पे होली । खडा नट गेलमें भर रंग कमोली ॥ गई थी मैंअभी दधि बेचबे को,झपट मोहन मली मुख मेरे रोली॥पटक मट्ठुकी झपट अंचल झटक कर, लपट दरकाई चूनर और चोली ॥ अजब नट खटहै नँदका हँस मटक कर, लगा बातोंमें मेरी नीवी खोली ॥ ये लखि मैं ढीठता उस नंदके की,

कहा मैं क्यों जी यह क्या है ठठोली ॥ अटकते हो जो हरदम हमसे मगमें चलो अब माफ कीजे होली होली। नहीं हूँ दासी मैं कछु कृष्ण तेरी बस, अब हमसे न बोलो टेढी बोली ॥ ३९४ ॥

राग बरवा होरी।

मोको रंगमें बोर डारी रे इस नंदके छैल विहारी। ले बूका मेरे सन्मुख आवे भर पिचकारी मेरे मुख पर डारे ले करवा ऊपर ढरकावे ऐसो ढीठ विहारी॥ कहा करूँ कहां जाऊँ मोरी आली या बनमें अब भई कुचाली। चितवन हँसन फांस गल डारे ऐंचत है मोरी सारी। जेकर पाऊँ पकरूं वाको हौं भी कसर कछू ना राखों ब्रह्मदास हियमें अभिलाषों मुख मीडों गिरिधारी ॥ ३९५ ॥

राग होरी।

छैल रंग डार गयो मोरी बीर। भीगगयो अति अतलस रोटा हरित कंचुकी चीर॥ घालत कुंकुम नाक कुचन पर ऐसो निपट बेपीर। ललित किशोरी कर बरजोरी मुखसों मलत अबीर॥ ३९६॥

रंगन भीग गई हो मोहन सारी सुरख नई। बरजत ननदी पहिरत निकसी अबही मोल लई ॥ नेक अनोखी गारी गावे या मति किन हूँ दई ॥ दैया सखी या गोकुल बसके ऐसी कभू न भई ॥ ३९७ ॥

राग परज।

होरी रे मोहन होरी रंग होरी। काल्ह हमारे आंगन गारी दे आयो सो कोरी॥ आय अचानक भुज भर पकरी गहि बैयां जो मरोरी। दैया सखी यह निठुर नन्दको कीनी मोसों जोरा जोरी ॥ ३९८ ॥

रंग होरी में प्रीतम पाया मेरा दांव लगा। सुन री सखी तोहिं सांची कहत हों तैं मेरा लाल बताया ॥ बहुत दिनन पाछे मोरी

सजनी सुहाग भाग में पाया । दैया सखी या गोकुल बसके किया अपना मनभाया ॥ ३९९ ॥

राग जंगला ।

या मोहना मोहिं आन ठग्योगी । सखीको रूप धरचो नँदनंदन आयो हमारी पौरी ॥ मैं जान्यों कोई परम सुन्दरी आई हमारी ओरी । धायके मैं चरण गह्यो री ॥ चरण पखार मन्दिर लै आई हँस हँस कंठ लग्यो री।सुन्दर वर्ण मधुर स्वर सजनी तब मेरा जिया वश भयो री ॥प्रेम तन होरही बोरी ॥ मोहिं लिवाय गई कुञ्जनमें कर छल बल बहुतेरी । निपट इकेली मोहिं जान मेरो तन मन गह्यो री ॥ ढीठ छलिया नन्दको री ॥ ऐसो री यह कुञ्जबिहारी याते कोउ न बच्यो री । सूरदास ब्रजकी सखियनमें पारब्रह्म प्रगटचो री ॥ जानें सबको री ॥ ४०० ॥

अनुरागलीला ।

राग खंमाच ।

दर्शन देना प्राण प्यारे।नंदलला मेरे नैनोंके तारे ॥ दीनानाथ दयाल सकल गुण नवकिशोर सुन्दर सुखवारे । हम मोहन मन रुकत न रोक्यो दर्शनकी चित चाह हमारे ॥ रसिक खुशाल मिलनकी आशा निशि दिन सुमिरन ध्यान लगा रे ॥ ४०१ ॥

राग सोरठा ।

तोहिं डगर चलत का भयो री बीर । कहूँ पगकी पायल कहूँ शिरको चीर॥भई बावरी न कछु सुध बुधि शरीर । तेरे मतवारन सम झूमत नयन । मुख भाषत है तू अति विरहके बैन ॥ मानो घायल काहूने करी दृगनतीर ॥ मोसों नारायन जिन रख दुराव

जो तू कहेगी सोई मैं तेरो करूं उपाय ॥ जासों रोग हू घटे हटे सकल पीर ॥ ४०२ ॥

राग पीलू ।

आली री तू क्यों रही मुरझाय । पनिघट गई जमुनाजल भरने आई है रोग लगाय ॥ केशो कारो चंद्र उजारो टोना डार गयो । करो उपाय सखी अब मेरो ब्रजनिधि बैद मंगाय॥४०३॥

राग रामकली ।

मैं श्याम दिवानी मेरा दरद न जाने कोय । शूली ऊपर सेज पियाकी किसविधि मिलना होय ॥घायल घायलकी गति जानै जिस तनु लागी होय । मीराके प्रभु गिरिधर नागर बैद समलिया होय ॥ ४०४ ॥

राग देश ।

नारी हू न जाने बैदा निपट अनारी रे । बूटी सब झूठी परी औषधि नकारी रे ॥ जाउ बैद घर अपनेको मोरे पीर भारी रे । यमुना किनारे ठाढी ओढ़ कसूमी सारी रे ॥ नंदजूके ढोटा मोहिं नयना भर मारी रे । गोकुलमें बैद बसै साँवरो विहारी रे । वाहीको बुलायके दिखाओ मेरी नारी रे ॥ पुरुषोत्तम प्रभु बैद हमारे वाही छबीले ते लगी है मेरी यारी रे ॥ ४०५ ॥

सवैया ।

काहेको बैद बुलावत हो मोहिं रोग लगाय न नारी गहो रे ॥ वो मधुआ मधुरी मुसकान निहारे बिना कहो कैसे जियो रे ॥ चन्दन लाय कपूर मिलाय गुलाब छिपाय दुराय धरो रे ॥ और इलाज कछू न बने ब्रजराज मिलें सो इलाज करो रे ॥ ४०६ ॥

कवित्त ।

कोउ कहो कुलटा कुलीन अकुलीन कोऊ, कोऊ कहो रंकन कलंकन कुनारी हूँ ॥ कैसो देवलोक परलोक तिरलोक में तो, लीनो हौं अलोक लोक लीकन ते न्यारी हूँ ॥ तन जाओ धन जाओ देव गुरुजन जाओ, जीव क्यों न जाओ नेक टरत न टारी हूँ ॥ बृन्दावन वारी गिरिधारीके मुकुट वारी, पीन पट वारी बाँकी मूरति पै वारी हूँ ॥ ४०७ ॥

घर तजों बन तजों नागर नगर तजों, बंशीवट तट तजों काहू पै न लजहों॥देह तजों गेह तजों नेह कहो कैसो तजों,आज काज राज बीच ऐसे साज सजहों ॥ बावरो भयोहै लोक बावरी कहत मोको, बावरी कहेते मैं काहू ना बरजहों॥कहैया सुनैया तजों बाप और भैया तजों,दैया तजों मैया पै कन्हैया नाहिं तजहों॥४०८॥

तौंक पहिरावो पांव बेरी ले भरावो, गाढे बंधन बँधावो औ खिंचावो काची खाल सों॥बिष ले पिलावो तापै मूठ भी चलाओ मांझी, धारमें बहाओ बांध पत्थर कमालसों॥ बिच्छू लै बिछावो तापै मोहिं लै सुतावो फेर, आग भी लगावो बांध कापर दुसालसों ॥ गिरिसे गिरावो कालीनागसे डसावो, हाहा प्रीति नाछुड़ावो गिरिधारी नंदलालसों ॥ ४०९ ॥

सवैया ।

मोरपखा मुरली वनमाल लगी हियमें हियरा उमँग्यो री॥ता दिनते निज वैरनको मैं तो बोल कुबोल सभी जो सह्यो री॥अब तो रसखानसों नेह लग्यो कोउ एक कहो कोऊ लाख कहो री ॥ और ते रंग रहो न रहो इक रंगरंगीलेते रंग रहो री ॥ ४१० ॥

कवित्त ।

जिन जानो वेद तेतो वादकी विदित होय, जिन जानो लोक लोक लीकन पै लर्मरो ॥ जिन जानो तप तीनों तापन सों तप तप, पंच अग्नि संगले समाधि धर्धमरो ॥ जिन जानो जोग तेतो जोगी जुग जुग जियं, जिन जानो जोत सोऊ जोत लै जर मरो॥ हौं तो देव नन्दके कुमार तेरी चेरी भई, मेरो उपहास कोऊ कोटिन कर्कर मरो ॥ ४११ ॥

सवैया ।

सुन्दर मूरति दृष्टि परी तबते जिय चंचल होय रहा है ॥ शोच सँकोच सभी जो मिटैं अरु बोल कुबोल सभी जो सहा है ॥ रैनि दिना मोहिं चैन न आवत नैनन ते जल जात बहा है ॥ तापै कहे सखी लाज करो अब लाग गई तब लाज कहाँ है ॥४१२॥

राग भैरवी ।

लाग गई तब लाज कहाँ री । जे दृग लागे नन्दनँदनसों औरनसों फिर काज कहा री ॥ भर भर पियें प्रेमरस प्याले ओछे अमलको स्वाद कहा री । ब्रजनिधि ब्रज रस चाख्यो चाहै या सुख आगे राज कहा री ॥ ४१३ ॥

राग पीलू ।

लागी रे लगनियां मोहना सों ॥ सुन्दर श्याम कमल दल लोचन नन्दजूको छैल चिकनियां । कछु टोना सा डार गयो री कैसे भरन जाऊं पनियां ॥ कृष्णदासकी प्यास मिटे जब निरखो गिरिके धरनियां ॥ ४१४ ॥

राग गिरिनारी सोरठ ।

मैंने देखी री आज मोहनकी हँसन । अधरनपै अद्भुत अरुणाई मोतियनकी लर पांति दशन ॥ वा शोभाके दृग रहे प्यासे पीने

लगे भर भरके पसन । नारायण तबसों मोहिं सजनी सुधि न रही निज वदन वसन ॥ ४१५ ॥

राग कान्हरो ।

आज ब्रजराजकी देख शोभा नई गई तनु भूल सुध भई हौं बावरी ॥ अधर रँग पान मुसक्यान जादू भारी ताहू पै चित हरन दृगनके भाव री । कुंडलनकी हलन छलन मन मदनकी चलत गज चाल वश करनके चाव री ॥ निरखके रूप नारायण हरष्यो हियो कौनसे भाग्यसों लग्यो है दाँव री ॥ ४१६ ॥

राग खट ।

आज नन्दलालमुख चन्द अयनन निरख परम मङ्गल भयो भवन मेरे ॥ कोटि कंदर्प लावण्य एकत्र कर वारों तबहीं जबहिं नेक हेरे ॥ सकल सुखसदन हर्षन वदन गोपवर प्रबलदल मदन जनो संग घेरे । कहो कोउ कैस हूं नाहिं सुध बुध रहे गदाधर मिश्र गिरिधरन टेरे ॥ ४१७ ॥

मुकुट माथे धरे खोर चन्दन करे माल मुक्ता गरे कृष्ण हेरे ॥ पीतपट कटि कसे कर्ण कुण्डल लसे निशिदिना उर बसे प्राण मेरे ॥ मुरलिका मोहनी कर कमल मोहनी ले कनक दोहनी खिरक नेरे ॥ लाल लोचन बने ललित रसमें सने सैनसे अनगिने ग्वाल टेरे ॥ किंकिनी काछनी देत शोभा घनी देख कौस्तुभ मनी सुर छकेरे ॥ प्रभु छबीलो रंगीलो रसीलो आली लग्रसे मग्र मनमें बसेरे ॥ ४१८ ॥

रागबिलावल ।

माई री आज और काल्ह और दिन प्रति और और देखिये रसिक गिरिराज धरन ॥ दिन प्रति नई छबि बरणे सो कौन कवि

नितही श्रृङ्गार बागे वरन वरन ॥शोभासिंधु श्याम अंग छबिके उठत तरंग लाजत कोटिक अनंग विश्वको मनहरन ॥ चतुर्भुज प्रभु श्रीगिरिधारीको स्वरूप सुधा पान कीजिये जीजिये रहिये सदाही शरन ॥ ४१९ ॥

माई री आजको श्रृङ्गार सुभग सांवरे गोपालजीको कहत न बने कछु देखे ही बन आवे ॥ भूषण बसन भांति भांति अंग अङ्ग अद्भुत कांति लटपटी सुदेश पाग चित्तको चुरावे ॥ मकर कुण्डल तिलक भाल कस्तूरी अति रसाल चितवन लोचन विशाल कोटि काम लजावे ॥ कंठ श्रीवनमाल फेंटा कटि छोरन छबि हरष निरख त्रियनके धीरज मन न आवे ॥ मेरे संग चल निहार ठाढे हरि कुञ्ज द्वार हित चितकी बात कहत जो तेरे जिया भावे ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधारीको स्वरूप सुधा पीवत नयननपुट तृप्त हूं न आवे ॥ ४२० ॥

राग भैरवी।

छबि आछी बनी बनवारी की। मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल अलकां घूँघरवारी की ॥ मृदु मुसुकान आन नयननकी को बरणे गिरिधारी की। कृष्णदास युगल जोगी पर तन मन धन सब वारी की ॥ ४२१ ॥

राग कान्हरा।

री हौं तो या मग निकसी आय अचानक कृष्ण कुँवर ठाढे री अपनी पौर। दृष्टि हूँ से दृष्टि मिली रोम रोम शीतल भई मनमें दीखत कछु काम रौर। लाल पाग लिपटी भाल परी री भुजन पर पान खात मुसकरात और किये चन्दन खौर। सूरदास मदनमोहन बाँकेबिहारी लाल मनमें आवत कब मिलूँगी दौर ॥ ४२२ ॥

राग सिंदूरा ।

एरी मैं तो सहज स्वभाव गई नन्दजूके तहां देख्यो सुख और । इकले श्याम नईकी धज सों ठाढे भवनकी पौर ॥ रतन शृङ्गार बहार हँसनकी माथे केसर खौर । नारायण सो छबि दृग छाई रही न काजर ठौर ॥ ४२३ ॥

राग कालिंगड़ा ।

भवन ते निकसे नन्दकुमार । पँचरंगी चीरा शिर सोहै चितवन पै बलिहारी ॥ कानोंमें मुतियनको चौकडा गल फूलनको हार । नारायण जे आपहि सुन्दर तिनको कहा शृङ्गार ॥ ४२४ ॥

राग बिहाग ।

सुपनेमें दरश दिखाय मोहन मन हरलीनो प्यारे । रैनि दिना मोहिं कल न परत है तलफत जिय अकुलाय ॥ ललित त्रिभंगी माधुरी मूरत नयननमें रही छाय । कृष्ण प्रिया छबि देख मनोहर बिन दामन गई हौं बिकाय ॥ ४२५ ॥

राग देश ।

हँसके मारी मेरो मन लेगयो बडी बडी आँखन वारो कारो ॥ भौंह कमान बान जाके लोचन मेरे हियरे मारे कसके । रजा रजा भयो री कलेजा मेरा भीतर देखो धसके ॥ यत्न करो यन्तर लिख ल्याओ औषध ल्यावो घसके । रोम रोम विष छायरह्यो है कारे खाइयाँ डसके ॥ जो कोइ मोहन मोहिं आन मिलावे मोहन गल मिलूंगी हँसके । चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि क्या री करूँ घर बसके ॥ ४२६ ॥

राग खम्माच ।

सुन्दर सुख सुख सदन श्यामको निरख नयन मन थाक्यो । बारिक होय बिथिनसों निकस्यो उचक झरोखे झाक्यो ॥ लालने

इक चतुराई कीन्हीं गेंद उछाल गगन मिस ताक्यो । बहुरो लाज बैरन भई मोको मैं ग्वाँरन मुख ढाक्यो॥कछू करगये प्रेम चितवन सों ताते रहत प्राण मद छाक्यो।सूरदास प्रभु सर्वस लेगये हँसत हँसत रथ हाँक्यो ॥ ४२७ ॥

राग देश ।

अपने गृहसे निकसी अबलासी दूजको चांद चढ्यो । कोऊ कहै काहूकी सुन्दर कोऊ कहै काहूकी दासी॥आगे मिले नन्दजूके नन्दन मारत गेंद मचावत हांसी । घूँघटको पट छूट गयो री दूजकी होगई पूरणमासी ॥ ४२८ ॥

राग प्रभाती ।

मोर मुकुट बंसीवारेने मन मेरा हरलीना । हौं जो गई यमुना जल भरने आगे मिले रसभीना ॥ मुझको देख मुसकात सांवरा चितवनमें कछु टोना । विवश भई जल भरन बिसर गयो घडा धरणि धर दीना॥लोकलाज कुलकान बिसर गई तन मन अर्पण कीना । कृपा सखी भई रूप दिवानी अधर सुधारस पीना ॥ श्रीगोपाल धार उर अपने जन्म सफल करलीना ॥ ४२९ ॥

राग अडाना ।

हौं गई यमुना जल लेन माई हौं सांवरेसे मोही।सुरंग केशरी खौर कुसुमकी दाम अभिराम कण्ठ कनककी दुलरी ढुलकत पीताम्बरकी खोही ॥ नान्हीं नान्हीं बून्दनमें ठाढो री बँसुरिया बजावे गावे मालाकरी मीठी ताननेतोलाकी छबि नेकहू न जोही । सूरश्याम मुरखुसक्यान छबि री अँखियनमें रही तब न जानौं हौं कोही४३०॥

रागं रेखता ।

मन हरलियो है मेरो वा नन्दके दुलारे । मुसकायके अदासों नयनोंके कर इशारे॥इक दृष्टिमेंही वाने जाने कहा कियो है ।

नहिं चैन रैन दिनमें वाके बिना निहारे॥चीरके पेच बांके शिर मुकुट झुक रह्योहै ।कटि किंकिणी रतनकी नूपुर बजत हैं प्यारे । बेसर बुलाक सोहैं गले मोतियोंकी माला । कंकन जडाऊ करमें नख चंद्रसों उजारे ॥ छबि देत आरसीमें सुन्दर कपोल दोऊ । बरछी समान लोचन नई सान पै सँवारे ॥ फूलोंके हाथ गजरे मुख पानकी ललाई।कानोंमें मोतीबाले कुडलहू झलकें न्यारे ॥ लखि श्यामकी निकाई सुधबुध सकल गँवाई । बौरी बनाय मोको कित गये बंसीवारे ॥ जंतर अनेक मंतर गंडा तबीज टोना।स्याने तबीब पंडित कर कोटि यत्न हारे ॥ नारायण इन दृगनने जब सब रूप देखा ।तबसों भये हैं ध्यानी उघरत नहीं उघारे ॥४३१॥

दिल ले गयो हमारो नँदलाल हँसते हँसते । वृन्दाविपिनकी कुंजों जातीथी रस्ते रस्ते॥वह आगयो अचानक जूरेको कस्ते कस्ते। चित छुटपड़ा बदनपर बालोंमें फँस्ते फँस्ते॥मुशकलसे बची नागिन अलकोंसे डस्ते डस्ते। प्यारीके सँग खडा था वह सांवरा बिहारी । दृग कोर मोर मेरे सेंनों जडी कटारी ॥ सुध बुध रही न तनकी सब भूलगई हमारी। यमुनाके तीर सुन्दर जहँ फूली फुलवारी ॥ कछनी कमरसे काछे सुंदर सलोना ढोटा । कस पीत वसन आछे कटि बांधे वह कछोटा॥ गैयान केहू पाछे दृग देखनेमें छोटा। चितवनके बाण मारे सब भांतिसे है खोटा॥गोकुलकी गैल मुझसे हँस पूछे आ बिहारी। थी संग उसके सुन्दर वृषभानुकी दुलारी॥ क्या हंसकीसी जोडी आंखों लगी पियारी । मैं होगई दिवानी जबसे वह छबि निहारी ॥ वृन्दाबिपिन कि गलियों दो चांदसे खडेथे॥मुसकाके करत बातें नयनोंसे हम लडे थे ॥ मद रूप छबि छकेसे टलते नहीं अडे थे। सखियोंके यूथ केते बेहोश पडेथे ॥ आई ललित किशोरी ब्रजबाल हँस्ते हँस्ते ॥ कुंजोंमें लेगया छल

गोपाल हँस्ते हँस्ते ॥ कछु जादूकी सी पुडिया पढ़ डाल हँस्ते हँस्ते ॥ हँस्ते वह करगयो बेदरदी बेहाल हँस्ते हँस्ते ॥ ४३२ ॥

सुन्दर अनूप जोडी अति मनकी भावती। देखी में आज मगमें कुंजनसों आवती॥ अँग अंग देत शोभा भूषण जड़ाऊ आली। नयननमें सोहै कजरा अधरनपै पान लाली॥ प्रीतमके कांधे कर धर प्यारी अनंद सों। हँसहँसके करत बातें मुख ललित चंदसों॥ पग धरत हौरे हौरे गति देख हंस लाजै। नूपुर परम मनोहर अति मधुर मधुर बाजै॥ यह भांतिसों मगन ह्वै क्रीडा करत दोऊ। नारायण रसिकजन बिन यह रस न जानै कोऊ॥४३३॥

राग देश सोरठ।

राधा नंदकिशोर री सजनी जो मिले कुंजनमें दोऊ री॥शीतल सुगंध तीर यमुनाके बोलत शुक पिक मोर। ज्यों तमालसे मिली है माधुरी ज्यों सावन घनघोर॥ रसिकबिहारी बिहारन दोऊ मिल नीर क्षीर इकठौर॥ ४३४ ॥

राग भैरवी।

सला रे रँगीले छैला तैं जादू मोपै डारा। रसभरी तान सुनाय मुरलीमें मोह लियो प्राण हमारा॥ तांडी आन मेरो जीयामें बसगई जानत है जग सारा। विठ्ठल विपिन विनोद विहारन इक पल होत न न्यारा॥ ४३५ ॥

राग गजल।

तैनें बंसीमें जो गाया मेरा जी जानता है॥ सैकडां बंसी सुनीं और हजारों तानें वह मजा फिर नहीं पाया ॥ मेरा जी० ॥नाथने कूदके नाथ लिया कालीको।श्यामला श्याम कहाया॥मेराजी०॥ ऐसे भारको कौन उठावे मोहन। डूबते ब्रजको बचाया॥मेराजी०

जब द्रौपदीका चीर खींचा दुश्शासनने अंबरको ढेर लगाया॥मेरा जी० ॥ कहांतक सिफत करूं करुणाकर तेरी । कृष्णदासके मन भाया ॥ मेरा जी० ॥ ४३६ ॥

याद आता है वही बंसीका बजाना तेरा । छागया दिलपर मेरे तानका लगाना तेरा॥जिस दिनसे दिलमें समाया क्यों नजर आता नहीं। मैं पता कैसे लगाऊं चोरका ठिकाना तेरा ॥ खुश-नुमा आवाज शीरीं सुनके मायल दिल हुआ । अब कहूं लगता नहीं फिरता हूँ दीवाना तेरा॥ कानोंमें कुण्डल शिर मुकुट जुलफें तेरी क्या खूब हैं । यह अदा जीसे न भूले झलकें दिखाना तेरा ॥ दाँवमें ऐसे फँसे ग्वाल और गोपी सभी । यह बयां किससे करूं गउओंका चराना तेरा ॥ नाग नाथन केशी मथन इंद्रका तोडा गरूर । सात बरसके सिनमें गोवर्द्धनका उठाना तेरा॥हौं गुनहा-गार रोशन मुद्दतसे दरपै पडा । यह सिफत जाहिर जहांमें पार लगाना तेरा ॥ ४३७ ॥

राग भैरवी ।

श्रीकृष्णजीको ध्यान मेरे निशिदिना री माई । माधुरी मूरत मोहनी सूरत चित्त लियोहै चुराई॥लाल पाग लटक भाल चिबुक बेसर कंठमाल कर्णफूल मन्दहास लोचन सुखदाई।मोरपंख शीश धरे मोतिनको हार गरे बाजूबंद पहुँची कर मुद्रिका सुहाई ॥क्षुद्र-घण्टिका जेहर नूपुर बिछिया सुदेश अङ्ग अङ्ग देखत उर आनंद न समाई । मुरलीधर अधर श्याम ठाढे ब्रज युवती माहिं सप्त सुरन तान गान गोवर्द्धन राई ॥ निरख रूप अति अनूप छाके सुर नर विमान वल्लभ पद किंकर दामोदर बलिजाई ॥ ४३८ ॥

साँवरे सों ध्यान मेरो निशिदिना री माई । मनके महल प्रीति कुंज तामें यादवराई ॥कोमल चरण श्याम वरण नख-शिख चख चोंहदी होत पाँयन पर पैजनी सो बिधना ने बनाई।

दाहने पद पदम ताते टेढो कर धरत आली ऐसे चरण दुखके हरण हैं सदा सुखदाई ॥ लालसी इजार तामें कञ्चनको तार सखी काछिनी पचरंगी तापै किंकिणि छबि छाई । गुंजमाल मुक्तमाल कंठ बनी कौस्तुभमणि पीतांबरकी चटक तामें दामिनि द्युति पाई॥ बाजूबन्द पहुँची मुँदरी नगनको अति चमत्कार अरुण अधर मुरली मधुर मधुर सुर बजाई । कमलनयन कुण्डल कांति गण्डन प्रतिबिम्ब होत आनँदसों मुख सम्हार रह्यो री मुसकाई॥ मोर मुकुट अति चटकन घूँघरवारी अलकें झलक केसरको खौर उमँग चली सुंदरताई । कहैं भगवान हित रामराय प्रभुको निहार श्रीगुपाल श्रीगुपाल रसना लवलाई ॥ ४३९ ॥

राग जंगला ।

बट तर सांवरो ठाढो । पीत दुकूल गले बिच सेली चंद्र चीर बाढो ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहै फेटा कस गाढो । पुरुषोत्तम प्रभु तुम्हरे मिलनको मो हित अति बाढो ॥ ४४० ॥

राग टोडी ।

जबते मोहिं नन्दनँदन दृष्टि परो माई । कहा कहूँ वाकी छबि वरणी नहिं जाई ॥ मोरनकी चंद्रकला शीश मुकुट सोहै । केसरको तिलक भाल तीन लोक मोहै ॥ कुंडलकी झलक कपोलन पर छाई । मनो मीन सरवर तजि मकर मिलन आई ॥ ललित भ्रुकुटि तिलक भाल चितवनमें टोना । खंजन औ मधुप मीन भूले मृग छौना ॥ सुंदर अति नासिका सुग्रीव तीन रेखा । नटवर प्रभु वेष धरे रूप अतिविशेषा ॥ हँसन दशन दाडिम द्युति मंद मंद हासी । दमक दमक दामिनि द्युति चमकी चपलासी ॥ क्षुद्रघंटिका अनूप वरणी नहिं जाई । गिरिधर प्रभुचरणकमल मीरा बलिजाई ॥ ४४१ ॥

राग लावनी ।

सखि कैसे करूं मैं हाय न कछु वश मेरो । बिन देखे सांवरो चन्द्र दृगनमें अँधेरो ॥ सखि ऐसो सुन्दर नाहिं कहूँ मैं सब जग हेरो । वाकी जो लिखै तसवीर सो कौन चितेरो ॥ सखि कठिन छैलको बिरह आन मोहिं घेरो । सगरी निशि तारे गिनतहि होत सबेरो ॥ सखि जो तू मिलावे आंज वो रूप उजेरो । जबलौं जीवोंगी गुण न भूलोंगी तेरो ॥ सखि नारायण जो नाहिं मिलैगो वह मनको लुटेरो । तौ नन्दद्वारपै जाय करूंगी मैं डेरो ॥४४२॥

राग काफी ।

बेदरदी तोहिं दरद न आवे । चितवनमें चित वशकर मेरो अब काहेको आंख चुरावे ॥ कबसों परी तेरे द्वारेपै बिन देखे जियरा घबरावै । नारायण महबूब साँवरे घायल कर फिर गैल बतावे ॥ ४४३ ॥

नयनों रे चितचोर बतावो । तुमहीं रहत भवन रखवारे बांके बीर कहावो॥तिहारे बीच गयो मन मेरो चाहे जिती सौंह खावो । अब क्यों रोवनहो दइमारे कहूँ तो थांग लगावो ॥ घरके भेदी बैठ द्वारपै दिनमें घर लुटवावो ॥ नारयण मोहिं वस्तु न चहिये लेने हार दिखावो ॥ ४४४ ॥

बिन देखे मन मान न मेरो । श्याम वरन चित हरन लाडिलो रूप सुधानिधि जगत उजेरो ॥ चाल मराल मनोहर बोलन चपल नयन मोतन हँसि हेरो । नारायण त्रिभुवनको स्वामी श्रीवृषभानुकुँवरिको चेरो ॥ ४४५ ॥

राग मलार ।

नहीं बिसरत सखी श्यामकी सुरतियां । हँसन दशन द्युति दामिनी सी दमकन चंदसे बदनसों अतिमृदु बतियां ॥ कुंडल

झलक लखि लगे ना पलक नकवेसरकी हलन चलन गज-गतियां। नारायण जब निरखूं लालको सफल नयन शीतल हैं छतियां॥ ४४६॥

राग देवगंधार।

प्यारे तेरे बैन अमीरस बोरे। ब्रज बनितन काननमें लग लग छिनमें मानहिं छोरे॥ सुनत बनत है कहत बनत नहिं प्रेम प्रीतिके डोरे। श्रीरघुराज सुनावो निशिदिन माँगों यह करजोरे॥४४७॥

कमलसी अँखिया लाल तिहारी। तिनसों तक तक तीर चलावत बेधन छतियां हमारी॥ इन्हें कहा कोउ दोष लगावत यह अजहूँ न सम्हारी। श्रीविठ्ठल गिरिधरन कृपानिधि सूरत ही सुखकारी॥ ४४८॥

राग बिलावल।

लाल तेरे चपल नयन अनियारे। नन्दकुमार सुरत रस भीने प्रेम रंग रतनारे॥ कछु अस रीझे चकित चहूँ दिशि नव वर जोबनवारे। मानो शरद कमल पर खंजन मधुर अलक घुँघरारे॥ ए जो मीन घनश्याम सिंधुमें बिलसत लेत झुलारे। गोवर्द्धनधर जान मुकुट मणि कृष्णदास प्रभु प्यारे॥ ४४९॥

राग खम्माच।

तेरे जी नयना कारे अनियारे मतवारे प्यारे। रतनारे कज-रारे मीन मृग छौना वारे अंजना सँवारे खंजन वारे डारे॥ नन्दके दुलारे मोह लीनो बंसीवारे प्यारे ऐसे जी अनोखे नयना काहेसे सँवारे। कृष्णदास बलिहारे तन मन धन वारे विधना सँवारे टरत हूँ न टारे॥ ४५०॥

राग विभास।

जादूगर रे थारे नैन । भवां कमान बान कर तैंने तिरछी मारी सैन ॥ लगत कलेजेमें बरछी सी घायल कीनी ऐन ॥ देखी अजब गजब तेरी चितवन मों नेक न नाहिं रुकै न ॥ युगल बिहारीके बिन देखे रंचक परत न चैन ॥ ४५१ ॥

राग भैरवी।

जादूगर नयन नयन बडे विशाला । मोर मुकुट मकराकृत कुंडल गल बैजंती माला ॥ पीतांबर कटि कछनी काछे नन्दयशोमति लाला । नाम लिये जाके पाप कटतहैं मेटत कालको ताला॥ सूर बसत उर मोहनी मूरत टेढी विरहों बाला ॥ ४५२ ॥

कवित्त।

टेढी कला चंद्रकी सकल जग वन्दित है टेढी तान मोहत है मन्मथके जालकी ॥ टेढी है कमान बान लागत ही बेध जात श्रीपति न चूके चोट टेढी करवालकी ॥ टेढ़ी लकडीको कोउ वनमें न काटि सकै टेढी काशीपुरी जामें शंका नहीं कालकी ॥ टेढी जरकसभाल टेढी उर वनमाल मेरे मन बसी टेढी मूरति गोपालकी ॥ ४५३ ॥

टेढे हू सुन्दर नैन टेढे मुख कहे बैन टेढो हूँ मुकुट बात टेढी कछु कहगयो ॥ टेढे घुँघरारे बाल टेढी गल फूलमाल टेढो हू बुलाक मेरे चित्तमें बसै गयो ॥ टेढे पग ऊपर नूपुर झनकार करें बाँसुरी वजाय मेरे चित्तको चुरै गयो ॥ ऐसी तेरी टेढीन को ध्यान धरै मयाराम लटपटी पागसे लपेट मन लैगयो ॥ ४५४ ॥

राग भैरव ।

देखो री यह नंदका छोरा बरछी मारे जाता है । बर.... तिरछी चितवनकी सैनो छुरी चलाता है ॥ हमको घायल देख बेदरदी मन्द मन्द मुसकाता है । ललित किशोरी जखम जिगर-पर नोन पुरी बुरकाता है ॥ ४५५ ॥

राग कालिंगडा ।

अँखियां लागीं सामलिया प्यारे सों। जब बरज्यो बरजी नहिं मानी अब क्या होत पुकारे सों ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल लगरही सांझ सवारे सों । मधुर अली दरशन बिन तरसत नेह लगा वंशीवारे सों ॥ ४५६ ॥

राग रामकली ।

लोचन भये श्यामके चेरे । एते पर सुख पावत कोटिक मो-तन फेर न हेरे ॥ हाहा करत परत हरि चरणन ऐसे वश भये उ-नहीं । उनको वदन विलोकत निशदिन मेरो कह्यो न सुनहीं ॥ ललित त्रिभंगी छबिपर अटके फटके मोसों तोरी । सूरदास यह मेरी कीनी आपन हरिसों जोरी ॥ ४५७ ॥

नयना मान अपमान सह्यो । अति अकुलाय मिले री वर्जत यद्यपि कोटि कह्यो ॥ जाकी बान परी सखि जैसी तेही टेक रह्यो । ज्यों मर्कट मूठी नहिं छांडत नलिनि सुबास गह्यो । जैसी नीर प्रवाह समुद्रहिं मांझ बह्यो सो बह्यो । सूरदास इन तैसेइ कीनी फिर मोतन न चह्यो ॥ ४५८ ॥

राग बिहाग ।

ललित छबि निर्ख अघात न नयन । रोम रोम प्रति जो चख होते तऊ न पावत चैन ॥ हाहा रूप दिखाय रसिकवर करुणा-

निधि सुखऐन । कृष्ण प्रिया छिन बिलम न कीजे कल न परै दिन रैन ॥ ४५९ ॥

राग विभास ।

अँखियन यह टेंव परी । कहा कहूँ बारिज मुख ऊपर लागत ज्यों भ्रमरी ॥ चितवत रहत चकोर चन्द्र लौं नहिं बिसरत मोहिं एक घरी । यद्यपि हटक हटक हौं राखत त्यों त्यों होत खरी ॥ चुकजो रही वा रूप जलधिमें प्रेम पियूष भरी । सूरदास गिरिधर तनु परसत लूटत निशि सगरी ॥ ४६० ॥

राग भैरव ।

आंखनमें दुगाय प्यारी काहू देखन न दीजियें । हिये लगाय सुख पाय सब गुणनिधि पूर्ण जोई जोई मन इच्छा होय सोई सोई क्यों न कीजियें॥मधुर मधुर वचन कहत श्रवणन मुख दीजियें । निर्मल प्रभु नन्दनन्दन निरख निरख जीजिये ॥ ४६१॥

राग बिहाग ।

श्यामा मोरी आंखन बीच बसो लोक जानत कजरो । दुरत नहीं घूँघटपट उरझ्यो प्रेम प्रीतिको झगरो ॥ जित देखूँ तित माधुरी मूरत पीत वसन वनमाल गरे । बलि बलि जाऊँ छबीले छबिपर मदन गोपाल ललाके । बरज रही बरज्यो नहिं मानत दिन दिनको अगरो । सूर सुधा सम रूप श्यामको याहि परचो धगरो ॥ ४६२ ॥

राग रेखता ।

चकोरी चख हमारे हैं तिहारे चांदसे मुख पर । छुटे बिखरेसे बालोंको सँभालोगे तो क्या होगा ॥ नहीं कछु हमको है शिकवा अगर तुम प्रीति बिसराई।जरा टुक नयन ऊंचे कर निहारोगे तो क्या

होगा ॥ तुम्हारे होचुके बारी हमारे हो न हो प्यारे । भला मुख-पानका बीरा जो धारोगे तो क्या होगा । ललित किशोरी कर-जोरी हहा यह है बिनय मोरी । तड़फते मुझ विचारेको पुकारोगे तो क्या होगा ॥ ४६३ ॥

राग बरवा ।

सुन्दर सांवरे सलोने ढोटा । तेरी सानूं डाढी लगनलागी हाथ लकुटी कांधे कमरी काछिनी बांधे कछोटा ॥ निशि दिनही लागो रहत गोपिनके पाछे भर भर पीवत छाछा महरीके ढोटा । पुरुषोत्तम प्रभुके निरखनको फिर फिर खावत प्रेमकी चोटा ४६४

तेरी हँसन बोलन लाल मेरे मन बसियां।चलते मृगराज चाल कांधे सोहे रुमाल केसरके तिलक ऊपर फरकत मोर पखियां ॥ मुरली अधरान धरे गुञ्जमाल सोहे गरे हरी हरी कुञ्जनमें संग लिये सखियां । अरजी जुगरामदास सुनिये महाराज श्याम निरख निरख नयननकी कोर मांझ रखियां ॥ ४६५ ॥

राग देश ।

सांवरे दी भालन माये सानूं प्रेम दी कटारियां । सखी पूछें दोऊ चारे व्याकुल क्यों भैयां नारे रंगके रंगीले मोस दृग भर मारियां ॥ व्याकुल बेहाल भैयां सुध बुध भूल गैयां अजहूँ न आये श्याम कुञ्ज बिहारियां । यमुनाकी घाटी बाटी असां तेरी चाल पछानी बँसिया बजावीं कान्हा भैयां मतवारियां ॥ मीराबाई प्रेम पाया गिरिधरलाल ध्याया तू तो मेरो प्रभुजी प्यारा दासी हौं तिहा-रियां ॥ ४६६ ॥

ठुमरी ।

इस साँवलियाकी लटक चाल जियमें मोरे बसगई रे॥ मुकुट पितांबर अधिक सुहावे ले मुरली पढ फूंक बजावे लट कारी नागि-नीसी लपटे तन मन डसगई रे ॥ बिन देखे नहिं परत चैन सब

विरहन कैसे कटत रैन कहा करूं मेरी गोइयां बिन दरश तरश गई रे ॥ लिखी ललाट मिटत नहिं मोहन भयो उचाट जिया किहि कारण अब आन फँसी मधुवन कुञ्जन परवश होय फँसगई रे ॥ मधुसूदन पिया प्यारा आवे तिरछी बांकी छबि दिखलावे डार गले बैयां सजनी सब कसक निकस गई रे ॥ ४६७ ॥

राग जंगला ।

कभी गली हमारी आव रे मोरे जियाकी तपन बुझाव रे नन्दजूके मोहन प्यारे लाला । तेरे सांवरे बदनपै कई कोटि कामवारे॥ तोरियां जुलफा दिलदियां कुलफां जी दोऊ नैन हैं सतारे । तेरी खूबीके दरशपै लाल नयन तरसते हमारे॥ पिया पिया करे पपीहरा रे निशिदिनसो याद तेरी । मेरे सांवरे सलोने मोहन आशा दर्शन केरी ॥ घायल फिरूं दरशकी पीर जाने नहीं कोई । मोहिं लागी चोट प्रेमकी जिन लाई जाने सोई॥जैसे जलके सोख हुए मीन क्या जीवें विचारे । कृपा कीजो दरशन दीजो मीरा माधो नन्ददुलारे ॥ ४६८ ॥

राग रेखता ।

दिलदार यार प्यारे गलियोंमें मेरी आजा । आंखें तरस रहीहैं सूरत इन्हें दिखाजा ॥ चेरी हूँ तेरी प्यारे इतना तू मत सता रे । लाखों ही दुख सहारे टुक अबतो रहम खाजा॥तेरे ही हेत मोहन छानी है खाक बन बन । दुख झेले शिर पै अनगिन अबतो गले लगाजा॥मनको रहूँ मैं मारे कबतक बतादे प्यारे । सूखे विरहमें तारे पानी इन्हें पिलाजा ॥सब लोक लाज खोई दिन रैन बैठ रोई जिसका कहीं न कोई तिसका तू जी बचाजा॥मुझको न यूं भुलाओ कछु शरम जीमें लाओ । अपनोंको मत सतावो ऐ प्राणप्यारे राजा॥हरिचंद नाम प्यारी दासी है जो तुम्हारी । मरती है वह विचारी आकर उसे जिलाजा ॥ ४६९ ॥

राग जंगला झिंझोटी ।

गली वे हमारी क्यों नहीं आमदा बिहारी प्यारे। दर्श दिखाय निहाल करोगे सुन्दर रूप उजारे प्यारे ॥ तेरी याद मेरे मन पर रहिंदी श्याम स्वरूप आँखनके तारे। पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत तन मन धन सब वारे ॥ ४७० ॥

राग काफी ।

मिलना वे महबूब बिहारी। भोरभये वृन्दावन कुञ्जों जाना होकर गली हमारी ॥ मृदु मुसकन सानूं दिलबिच भांदी झमक चलन नूपर धुन प्यारी। ललित किशोरी साँवरी सूरत घुंघरी अलकों पर बलिहारी ॥ ४७१ ॥

मिलना वे दिलदार साँवरे। हुसन तुसाडे चूर हुआ दिल लीता तैं न कबका दांव रे। बाँकी अदा चशमों बसदी दीठापरे न दूजा ठांव रे ॥ ललित किशोरी नूं लख समझावो एक नहीं मेरे मन भावरे ॥ ४७२ ॥

राग देश ।

मेरे नयनोंका तारा है मेरा गोविंद प्यारा है ॥ व सूरत उसकी भोली सी व शिर पगिया मठोली सी। व बोलीमें ठठोलीसी हग बाण मारा है ॥ व घूघरवारियां अलकें व झोके वारियां पलकें। मेरे दिल बीचमें हलकें छुटा घरबार सारा है ॥ दरस सुख रैन दिन लूटे न छिनभर तार यह टूटे। लगी अब तो नहीं छूटे प्रान हरिचंद्र वारा है ॥ ४७३ ॥

राग रामकली ।

एक गामको बास धीरज कैसेकै धरों। लोचन मधुप अटक नहिं मानत यद्यपि यत्न करों ॥ वे या मग नितप्रति आवत हैं हौं दधि लै निकरों। पुलकत रोम रोम गद गद स्वर आनँद उमँग

भरों ॥ पल अन्तर चलजात कल्पभर विरहा अनल जरों । सूर सकुच कुलकान कहाँ लग आरज पन्थ डरों ॥ ४७४ ॥

राग गौरी ।

अब तो प्रगट भई जग जानी । वा मोहनसों प्रीति निरन्तर क्यों न रहेगी छानी ॥ कहा करों सुन्दर मूरत इन नयनन मांझ समानी । निकसत नहीं बहुत पचहारी रोम रोम उरझानी ॥ अब कैसे निर्वार जात है मिले दूध ज्यों पानी । सूरदास प्रभु अन्तर्यामी ग्वालिन मनकी जानी ॥ ४७५ ॥

राग काफी ।

या साँवरेसों मैं प्रीति लगाई । कुल कलंकते नाहिं डरोंगी अबतो करों अपने मन भाई ॥ बीच बजार पुकार कहूँ मैं चाहे करो तुम कोटि बुराई । लाज मरजाद मिली औरनको मृदु मुसकान मेरे बट आई ॥ बिन देखे मनमोहनको मुख मोहिं लागत त्रिभुवन दुखदाई । नारायण तिनको सब फीको जिन चाखी यह रूप मिठाई ॥ ४७६ ॥

राग रामकली ।

मेरे जिया ऐसी आन बनी । बिना गुपाल और नहिं जानूं सुन मोसो सजनी ॥ कहा काँच संग्रहके कीने हीरा एक कनी । मन वच क्रम मोहिं और न भावे अब मेरे श्याम धनी ॥ सूरदास स्वामीके कारण तजी जात अपनी ॥ ४७७ ॥

राग सोरठा ।

मेरे गिरिधर गुपाल दूसरो न कोई । जाके शिर मोरमुकुट मेरो पति सोई ॥ शंख चक्र गदा पद्म कंठ माल सोही । तात मात भ्रात बन्धु आपनो न कोई ॥ छाँड दई कुलकी कान क्या करेगा

कोई । सन्तन सङ्ग बैठ बैठ लोकलाज खोई ॥ अबतो बात फैल-गई जानै सबकोई । अँसुअन जल सींच सींच प्रेम बेलि बोई ॥ मीरा प्रभु लगन लगी होनीहो सो होई ॥ ४७८ ॥

राग बरवा ।

मैं गिरिधर सङ्ग राती ग्वैयाँ ॥ पँचरँग चोला रँगादे सखी मैं झुरमट खेलन जाती । ओही झुरमट मेंगे साईं मिलेगा खोल तनी गलगाती ॥ चन्दा जायगा सूरज जायगा जायगी धरन अ-काशी । पवन पानी दोनों ही जायँगे अटल रहे अबिनाशी॥सुरत निरतका दीउडा सँजोले मनसाकी करले बाती । प्रेमहटीका तेल मङ्गाले जग रह्या दिनते राती ॥ जिनके पिया परदेश बसत हैं लिख लिख भेजें पाती । मेरे पिया मेरे माहिं बसत हैं न कहूं आती न जाती ॥ पीहरे बसूं न बसूंगी सास घर सद्गुरु शब्द सुनासी । ना घर तेरा ना घर मेरा कहगई मीरा दासी ॥ ४७९ ॥

राग सोरठ ।

रानीजी तैं जहर दीनी मैं जानी । जबलग कञ्चन कसिये ना-हिं होत न बारा बानी ॥ लोक लाज कुल कान जगतकी बहाय दीनी जैसे पानी ॥ अपने घरको परदा करले मैं अबला बौरानी । तरकश तीर लग्यो मेरे हियरे गरकगयो सनकानी ॥ मीरा प्रभुजीके आगे नांची चरण कमल लपटानी ॥ ४८० ॥

राग जंगला ।

मैनूं बरज न भोलडी माँ पीया नाल मैं रत्ती याँ । ना तकिया आसरा माए न कोई राह गली । मैं शौहर ढूंडा अपना माए कर बाहिं खली ॥ साईं फूल गुलाबदा मेरी झोलड़ी टूट ।बेसर भोले सुँघया मेरे रोम रोम रच गया ॥ शाह सरफा

महिंदी रंगुली माए लाई कुल्ल जहान। इकनाँ नूँरंग चढगया इक रह गए अमना मान ॥ ४८१ ॥

राग बिहाग।

मन अटक्या बेपरवाहे नाल॥ नयन फँसे दिल मिलया लोडे मूरख लोक असानूँ मोडे मेरा हरदम जाँदा आहे नाल ॥ मुल्लाँ काजी नमाज पढावन हुकम शरादा भय दिखलावन साडे इशक नूँ की इस राहे नाल ॥ नदियों पार सजन दा ठाना कीते कौल जरूरी जाना कुछ करलै सलाह मलाहे नाल ॥ आशिक सोई जेहडा इश्क कमावे जितबल प्यारा उते बल जावे बुल्लेसाह जामिल तू अलाहे नाल ॥ ४८२ ॥

राग पहाड।

मैंनूँ हरदम गहिंदा चा सज्जन दे शोक नजारे दा ॥ जब तैं कीता असाँबल फेरा हार शृङ्गार पया भट मेरा सीने रडके साँग कुहाडा इश्क प्यारे दा ॥ रल मिल सैयाँ मारन बोली ओह मेरा साहिब में ओहदी गोली रखदीहां जान पछान जामिन इशर दिहाडे दा ॥ ना आदम ना हव्वा आई ताते जाता अपना माही आया साहब आप बनके रूप सतारे दा ॥ मीरांशाह विभूति रमावां साँवरे दे दर अलख जगावां ओही है शिरताज आजज नीच न कारे दा ॥ ४८३ ॥

राग देवगंधार।

बसे मेरे नयननमें नँदलाल। साँवरी सूरत माधुरी मूरत राजिव-नयन विशाल ॥ मोरमुकुट मकराकृत कुण्डल अरुण तिलक दिये भाल। अधरन बंसी करमें लकुटी कौस्तुभमणि वनमाल ॥ बाजूबन्द आभूषण सुन्दर नूपुर शब्द रसाल। दास गोपल मदनमोहन पिय भक्तनके प्रतिपाल ॥ ४८४ ॥

बसे मेरे नयननमें दोउ चन्द। गौर वर्ण वृषभानु नन्दनी श्याम वरण नँदनन्द॥ गोलक रहे लुभाय रूपमें निरखत आनँद-कन्द। जय श्रीभट्ट युगल रस वन्दो क्यों छूटे दृढ़ फन्द॥४८५॥

राग परज।

या ब्रजमें कछु देख्यो री टोना। ले मटुकी शिर चली गुजरिया आगे मिले बाबा नन्दके छोना॥ दधिका नाम बिसर गयो प्यारी ले लेहु री कोउ श्याम सलोना। वृन्दावनकी कुंजगलीमें आंख लगाय गयो मनमोहना॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर सुन्दरश्याम सुघर रस लोना॥ ४८६॥

राग मलार।

कोऊ माई लैहै री गोपालहिं। दधिको नाम श्यामसुन्दर घन मुख चढ्यो ब्रजबालहिं॥ मटुकी शीश फिरत ब्रज बीथिन बोलत वचन रसालहिं। उफनत तक्र चहूँ दिशि चितवत चित लाग्यो नँदलालहिं॥ हँसत रिसात बुलावत बरजत देखो उलटी चालहिं। सूर श्याम बिन और न भावत या विरहिन बेहालहिं॥४८७॥

राग भैरव।

नयननकी कोरें कोऊ लेहै। है कोइ ऐसी रसिक रंगीली प्राण निछावर देहै॥ नूतन मधु मैं मोल ले आई छुवत खुमारी ऐहै। ललित किशोरी ततछिन जियरा टूक टूक ह्वै जैहै॥ ४८८॥

राग बरवा।

हमींको प्यारे दरश दिखायदे॥ लपट झपट कर मटुकी फोरी कर मोर मुकुटकी छैयां॥ मोहन प्यारे नन्ददुलारे तुम लीजो कांधे धर उनको॥ सुन यशुमति इक न्याउ सुन्यो प्रीतिहिं इन मोहनकी॥ हमींको०॥ हौं वृन्दावन जात हती शिर धारि मटुकी

सखियां

घरको सरकी ॥ हमींको० ॥ यह मटुकी अनबेध मोतिनकी मोल जो लागे नन्द यशोदा दोऊ बिकैंगे । सूरदास कहा ब्रजको बसबो नित उठि मांगत दान ॥ हमींको० ॥ ४८९ ॥

राग बिहाग।

तुम्हैं कोउ टेरतहै रे कान्ह । गोरी सी भोरी थोरे दिननकी वारी सी वैस उठान ॥ छूटी अलक नील पट ओढे नागरि परम सुजान । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिन धीर धरत नहिं प्रान ॥ ४९० ॥

राग गौरी ।

ग्वालिन क्यों ठाढी नंद पौरी । बेर बेर इतउत फिर आवत बिजया खाय भई बौरी ॥ सुन्दर श्याम सलोनेसे ढोटा उन दधि लेन कह्यो री । हमको कह गयो नेक खडी रह आपुन बैठ रह्यो री ॥ नौ लख धेनु नन्द बाबा घर तेरोही लेन कह्यो री । जोबन माती फिरत ग्वालिनी तैं मेरे लाल ठग्यो री ॥ इतनी सुनत निकस आये मोहन दधिको मोल कहो री । परमानंद स्वामी रूप लुभाने यह दधि भलो बिक्यो री ॥ ४९१ ॥

राग जिला।

श्रीवृन्दावन रज दरशावे सोई हितू हमारा है । राधा मोहन छवी छकावे सोई प्रीतम प्यारा है ॥ कालिंदी जलपान करावे सो उपकारी भारा है । ललित किशोरी युगल मिलावे सो अँखियोंका तारा है ॥ ४९२ ॥

राग देश ।

नीको लगे राधावर प्यारो । मोर मुकुट पियरो पटुका है लकुटी कर मतवारो ॥ रोकन गैल छैल अलबेलो नटवर वेष सँवारो । ललित किशोरी मोहन रसिया जीवन प्राण हमारो ॥ ४९३ ॥

राग खेमटा।

सखी राधावर कैसा सजीला। देखो री गोइयां नजर नहीं लागे कैसा खिला शिर चीर छबीला ॥ बार फेर जल पियो मेरी सजनी मत देखो भर नयन रँगीला। हरीचंद मिल लेहों बलैयां अँगुरिन कर चट काय चुटीला ॥ ४९४ ॥

राग देश।

दम्पति दर्पण हाथ लिये। निरखत मुख अरविंद कपोलन मेल मुदित गलबाहिं दिये ॥ ललित किशोरी मदन तरंगें पर्श अङ्ग सरसात हिये। छिनहूँ यह छबि जिन न विलोकी कहा कोटिशत कल्प जिये ॥ ४९५ ॥

राग देवगंधार।

निरखत सखि चार चंद्र इक ठौर। बैठे निरखत पिया तिया दोउ सूर सुताकी ओर ॥ द्वै विधु नील श्याम वन जैसे द्वै विधुकी गति गौर। ताके मध्य चार शुक राजत द्वै फल आठ चकोर ॥ शशि शशि सङ्ग प्रबाल कुन्द अलि तहँ उरझ्यो मन मोर। सूरदास प्रभु उभय रूपनिधि बलि बलि युगल किशोर ॥ ४९६ ॥

राग खेमटा।

तू मेरा मन मोहा सामालिया। भौंह कमान तान काननलौं नयन बान हँस मारे छलबलिया। ठुमक चलन बोलन मुख पंकज मधुरहँसन कर डारे बंकलिया। जन रघुनाथ इतेपर मोहन अब न बजा प्यारे लाल मुरलिया ॥ ४९७ ॥

राग रेखता।

लगा है इश्क तुमसेती निबाहोगे तो क्या होगा। मुझे है चाह मिलनेकी मिलाओगे तो क्या होगा ॥ हुस्न चश्मोंके प्याले भर

पिलाओगे तो क्या होगा । चमन बिच आनकर मुखडा दिखाओगे तो क्या होगा ॥ भरमधर्ता है कुलआलम हँसाओगे तो क्या होगा । सजन तुम बिन तड़फता जी जिवाओगे तो क्या होगा ॥ मेरे इस दिल दिवानेको सताओगे तो क्या होगा । अजब दीदार रोशन है छिपाओगे तो क्या होगा ॥ चुराकर दिल परायेको दिलाओगे तो क्या होगा । जिगरके दर्दकी दारू बताओगे तो क्या होगा । रसिक गोविन्द सीनेसे लगाओगे तो क्या होगा ॥ ४९८ ॥

लावनी।

हम तेरे इश्कमें श्याम बहुत दिन भटके । अब मिला हमें तू सनम खुले पट घटके ॥ किये रंजो अलम मंजूर जरा नहिं भटके । सब दहशत दिलकी निकल गई छटछटके ॥ कर लाख बजाके सनम दिया तूने झटके । पर गिरे न हरगिज कदम पकड़ हट हटके ॥ कइ बार गया शिर तेगे इश्कमें कटके । फिर पाया हमने नाम तुम्हारा रटके ॥ जब नाम बनाकर फाँद जानकर लटके । तब मिला हमें तू सनम खुले पट घटके ॥ ४९९ ॥

गजल।

किया बिस्मिल मुझे उसकी अदाके हाथ क्या आया । तड-पता छोड़कर तेगे कजाके हाथ क्या आया ॥ दिखाकर टुक जमाल अपना मुझे तो कर दिया शैदा । भला पूछे कोई उस महल-काके हाथ क्या आया । मेरे इस गुंचये दिलको कभी उसने न आ खोला । गई बोलाई बाला उस सबाके हाथ क्या आया ॥ लगाना खूब दिल चाहथा मैंने उसके पाउँसे । बल इस पेश कद-मीसे हिनाके हाथ क्या आया । फिर शहरो बियाबां तालबे दीदार नारायण । बिठाया उसको परदेमें हयाके हाथ क्या आया ॥५००॥

जहाँ ब्रजराज कल पाये चलो सखि आज, वा वनमें । बिना वा रूपके देखे विरहकी दौ लगी तनमें ॥ न कल पडती है बेकलको न जी लगता है बिन जानी । भई फिरती हूँ योगिनसी सरे बाजार गलियनमें ॥ करूँ कुर्बान जी उसपर जनम भर गुण न भूलूँगी । मेरा महबूब जो लाकर बिठादे तेरे आँगनमें॥ नहीं कुछ गर्ज दुनियाँसे न मतलब लाजसे मेरा ॥ जो चाहो सो कहो कोई बसा अब तो वही मनमें ॥ तेरी यह बात सांची है नहीं शक इसमें नारायन । जो सूरतका है मस्ताना वह परचे कैसे बातनमें ॥ ५०१ ॥

राग नट ।

कान्हर कारो नन्ददुलारो मोनयननको तारो री। प्राणपियारो जग उजियारो मोहन मीत हमारो री॥दृगमें राजत हियमें छाजत एक छिना नहिं न्यारो री । मुरली टेर सुनावत निशिदिन रूप अनूपम वारो री ॥ चरण कमल मकरन्द लुब्ध है मन मधुकर गुञ्जारो री । रस रङ्ग केलि छबीले प्रभु सङ्ग हितसों सदा बिहारो री ॥ ५०२ ॥

राग भैरव ।

प्यारा नयना लगाय छिप जामदा । यादतांरहिंदी हरदम तेरी मुखडा क्यों नहीं दिखलामदा मेरा जिया तर्सामदा॥ जबते लग्न लगीहै मनमें गृह अङ्गना न सुहामदा । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको मन बिच क्यों ना मन जामदा ॥ ५०३ ॥

राग देश ।

मन मोह लिया श्यामने बंसीको बजाके। बेखुद किया दिलदारने जुलफोंको दिखाके ॥ पटपीत मुकुट मोर लकुट लटपटी पगिया । चलते हैं लटक चालसे भ्रुकुटीको नचाके ॥ अलमस्त

किया दममें ब्रजनारिको मोहन । मुरलीके साथ किंकिणी नूपुरको बजाके ॥ कुर्बान सनम् तुझपे दिलो दीन हमारा । राखो ललितकिशोरीको गरेसे लगाके ॥ ५०४ ॥

ठुमरी ।

कोई दिलवरकी डगर बतायदे रे । लोचन कञ्ज कुटिल भ्रुकुटी कर कानन कथा सुनायदे रे ॥ जाके रंग रँग्यो सब तन मन ताकी झलक दिखायदे रे । ललितकिशोरी मेरी वाकी चितकी सांट मिलादे रे ॥ ५०५ ॥

राग कान्हरा ।

श्याम भुजाकी सुन्दरताई । चन्दन खौर अनूपम राजत सो छबि कही नजाई ॥ अति विशाल जानूंलौं परसत इक उपमा मन आई । मनो भुअङ्ग गगनसों उतरचो अधमुख रह्यो झुलाई ॥ रत्न-जडित पहुँची कर राजत अँगुरीसुन्दर भारी । सूर मनो शिर मणि सोहत फण फणकी छबि न्यारी ॥ ५०६ ॥

राग सारंग ।

जाको मन लागो गोपालसों ताहि और नहिं भावे । लेकर मीन दूधमें राख्यो जल बिन सचु नहिं पावे ॥ जैसे शूरमा घायल घूमत पीर न काहु जनावे । ज्यों गूँगो गुड खाय रहत है स्वाद न काहु बतावे ॥ जैसे सरिता मिली सिंधुमें उलट प्रवाह न आवे । तैसे सूर कमलमुख निरखत चित इत उत न चलावे ॥ ५०७ ॥

राग देश ।

गौर श्याम वदनारविंद पर जिसको वीर मचलते देखा । नयन बान मुसक्यान सङ्ग फस फिर नहिं नेक सँभलते देखा ॥ ललित-किशोरी युगल इश्कमें बहुतोंका घर घलते देखा । डूबा प्रेम-सिंधुका कोई हमने नहीं उछलते देखा ॥ ५०८ ॥

साँवरेकी जिन निरखी मुसक्यान । सो तो भई घायल ताही छिन बिन बरछी बिन बान ॥ कल नहिं लेत धरत नहिं धीरज तलफत मीन समान । नारायण भूली सुध तनुकी बिसर गयो सब ज्ञान ॥ ५०९ ॥

राग काफी ।

राधारमण मनोहर सुन्दर तिनके सङ्ग नित रहते हैं । छके रहत छबि ललित माधुरी और नहीं कछु चहते हैं ॥ चितवन हँसन चोट दशननकी निशिदिन हियपर सहते हैं । ललितकिशोरी करै न ओटैं फरी नहीं कर गहते हैं ॥ ५१० ॥

राग धनाश्री ।

सबसे ऊँची प्रेम सगाई । दुर्योधनकी मेवा त्याग्यो साग विदुर घर पाई ॥ जूंठे फल शबरीके खाये बहु विधि प्रेम लगाई । प्रेमके वश नृपसेवा कीनी आप बने हरि नाई ॥ राजसूयज्ञ युधिष्ठिर कीनो तामें जूंठ उठाई । प्रेमके वश अर्जुन रथ हांक्यो भूल गये ठकुराई ॥ ऐसी प्रीति बढी वृन्दावन गोपिन नाच नचाई । सूर कूर इस लायक नाहीं कहँलग करौं बडाई ॥ ५११ ॥

राग कवित्त ।

चढे गजराज चतुरंगिनी समाज सह, जीति क्षितिपाल सुरपालसों सजत हैं ॥ विद्याहू अपार पढ तीरथ अनेक कर, यज्ञ और दान बहु भाँतिसों करत हैं ॥ तीनकालमें नहाय इंद्रियोंको वश लाय, ... सन्यास ... वासना तजत हैं ॥ जोग और जप तपको अनेक करैं, बिना भगवन्तभक्ति भव ना तरत हैं ॥ ५१२ ॥

चाहे जोग कर तू भ्रुकुटी मध्य ध्यान धर चाहे नाम रूप मिथ्या डार ले ॥ निर्गुण निर्भय निराकार ज्योति व्याप

रह्यो ऐसो तत्त्व ज्ञान निज मनमें तू धार ले ॥ नारायण अपनेको आपही बखान कर मोते वह भिन्न नहीं या विधि पुकार ले ॥ जौलों तोहिं नन्दको कुमार नहीं दृष्टि परे तौलों तू भलेही बैठ ब्रह्मको विचार ले ॥ ५१३ ॥

सवैया ।

चारहु वेद पुराण अठारहों चौंसठ तन्त्रके मन्त्र विचारे ।
तीन सौ साठ महाव्रत संयम मङ्गल यज्ञपुरी पुर सारे ॥
योग वियोग प्रयोग उपासन मैं हरिदत्त सभी निरधारे ।
तीनोंही लोकनके सगरे फल मैं हरि नामके ऊपर वारे ॥ ५१४ ॥

राग भैरव ।

कृष्ण नाम रसना रटत सोई धन्य कलिमें । ताके पदपंकज-की रेणुकी बलि में ॥ सोई सुकृत सोइ पुनीत सोई कुलवन्ता । जाको निशिवासर रहै कृष्ण नाम चिन्ता ॥ योग यज्ञ तीरथ व्रत कृष्ण नाम माहीं । विना कृष्ण नाम कलि उद्धार और नाहीं ॥ सब सुखको सार कृष्ण कबहूं न बिसारिये । कृष्ण नाम लेले भव-सागरको तरिये ॥ श्रीगोवर्द्धन धरन प्रभु परम मङ्गलकारी । उधरे जन सूरदास ताकी बलिहारी ॥ ५१५ ॥

राग माँझ ।

हर हर जिनके मुखसों निकसे वारे तिन्हांदे जाइयेजी । धूड तिन्हांदे चरणांदी ले मस्तक अपने लाइयेजी ॥ दुर्मति दूर करे निह केवल शिव घर वासा पाइयेजी । दुनीदास हर साधु सङ्गति मिल निर्मल महल समाइयेजी ॥ ५१६ ॥

राग आस ।

हर हर हर हर हर हर हरे ॥ हर सुमिरत जन बहु निस्तरे ॥ हरिके नाम कबीर उजागर । जन्म जन्मके काटे कागर ॥ जन

रमदास राम सँग राता। गुरूप्रसाद नरक नहिं जाता ॥ गोविंद गोविंद संग नामदेव मन लीना। आठ दामको छीपरो होयो लाखीना ॥ बुनना तनना त्यागके प्रीति चरण कबीरा । नीच कुला जोलाहरा भयो गुणी गहीरा ॥ सैन नाई बुतकारिया ओह घर घर सुनिया। हिरदे बस्या पारब्रह्म भक्तनमें गिनिया।रामदास अधमते वाल्मीकि तिन त्यागी माया। परबट होय साध संग हरी दर्शन पाया ॥ यह विधि सुनके जाटरो उठ भक्ती लागा। मिले प्रतक्ष गुसाइयां धन्ना बडभाग ॥ ५१७ ॥

राग मलार ।

प्रभुके ऊंच नीच नहिं कोई। प्रेम भक्तिकर जो जन ध्यावे उत्तम कहिये सोई ॥ कुलवन्ता राजा दुर्योधन तिस गृह पग ना धारयो। जाय विदुरके भाजी अरपी जाति न जन्म विचारयो॥ ब्राह्मण एक करत नित पूजा ताको भोग न लीना। धन्ने जाटके शोच न काई होय प्रगट दुध पीना॥ ऊचे जन्म कर्मके तपसी ना किसे मन्दिर धावे। महा कुचील भील दे कर ते ले जूँठे फल खावे ॥ जाय पडे सब आगे बैठें ना किसे दंत दिखाई। नामदेवको देहरा फेरयो लीनो कण्ठ लगाई॥ पारब्रह्म पूरण अविनाशी सब घटकी मति जाने । दुनीदास प्रभु भक्तवछल है कपट हेतु नहिं माने ॥ ५१८ ॥

राग कान्हरा।

माधव केवल प्रेम पियारा। गुण अवगुण कछु मानत नाहीं जान लेहु जो जाननहारा ॥ व्याधाचरण अवस्था ध्रुवकी गजने शास्त्र कौन विचारा। भक्त विदुर दासीसुत कहिये उग्रसेन कछु बल नहिं धारा ॥ सुन्दर रूप नहीं कुब्जाको निर्धन मीत सुदा-

महुँ तारा । कहँलौं वरणि सकौं सबहिनको मोपै पायो जात न पारा ॥ सुन प्रभु सुयश शरण हौं आयो मोसे दीनको काहे बिसारा । भक्तराम पर बेग द्रवो क्यों ना कहिये दासन दास हमारा ॥ ५१९ ॥

राग जंगला काफी।

मन मानेकी बात नहीं कछु जातिको कारन ॥ कुब्जा कर्मा और भीलनी पूतना और निषाद । गति पाई जिन यशुमति जैसी भये भुवन विख्यात ॥ वाल्मीकि रयदास विदुर औ केशव कबीर किरात । सैन भक्त अरु सदन कसाई कहु इनकी क्या जात ॥ जप तप योग दान व्रत संयम नहिं इनसों हर्षात । रसिक नाथ प्रभु इक रस सांचो भाव भक्ति पतियात ॥ ५२० ॥

राग जिला झिंझोटी ।

गोपी प्रेमकी धुजा । जिनने गुपाल किये वश अपने उरधर श्याम भुजा ॥ शुक्र मुनि व्यास प्रशंसा कीनी उद्धव सन्त सराहीं । भूरि भाग्य गोकुलकी वनिता अति पुनीत जगमाहीं ॥ कहा भयो जो विप्र कुल जन्म्यो सेवा सुमिरण नाहीं । श्वपचपुनीत दास परमानँद जो हरि सम्मुख जाहीं ॥ ५२१ ॥

राग विहाग ।

प्यारो पैये केवल प्रेम में । नहीं ज्ञानमें नहीं ध्यानमें नहीं करम कुल नेममें ॥ नहीं भारतमें नहीं रामायण नहीं मनुमें नहिं वेदमें ॥ नहीं झगरेमें नहीं युक्तिमें नहीं मतनके भेदमें ॥ नहिं मन्दिरमें नहिं पूजामें नहिं घंटाकी घोरमें ॥ हरीचंद वह बांध्यो डोलै एक प्रेमकी डोरमें ॥ ५२२ ॥

मुँदरियालीला।



ठुमरी।

माथेपै मुकुट श्रुति कुंडल विशाल लाल अलक कुटिलसों अलिन मद गञ्जनी ॥ काछनी कलित कटि किंकिणी विचित्र चित्र पीत पट अंग सो विराजै द्युति बैंजनी ॥ दिये गलबाहीं प्रिया प्रीतम बिहार करैं अति अनुराग भर आई नई ढ्रैजनी ॥ कहै जैदयाल प्रभु मेरो मन मोहि लियो मन्दमन्द बाजत गोविंद पायँ पैंजनी ॥ ५२३ ॥

राग कान्हरा।

कहाँ करते मुँदरिया डरी। मैं बलि जाऊँ बताय किशोरी तैं कबते न निहारी ॥ आवतहैं भुज अंसन दीने एहो छैलबिहारी। जो देखी तो कहिये मोते मुदित होत कह भारी ॥ चोरी चपल लगावत मोको न्याव करो तुम प्यारी। वृंदावन हित रूप दरश पडी लाल फेंट जब झारी ॥ ५२४ ॥

राग प्रभाती।

गहनो तो चुरायो तैंने केशो यादोरायको। हाथकी अँमूठी लीनी तोरा लीनो पाँयको ॥ माथेको शिरपेंच लीनो रतन जराय-को। गाम तो बरसानो कहिये श्रीसुखधामको ॥ लालजीको सासरो श्रीराधे जूको मायको। लेके तो भाग आई फेर नहिं पायगो। सूर श्याम मदन मोहन नयो गढवायगो ॥ ५२५ ॥

राग आसावरी।

मोहनि रूप बनायो हरि बाना। बाहिं बरा बाजूबँद सोहैं छला छाप दस्ताना ॥ मुखभर पान सींक भर सुरमा लै दर्पण

कान्हा मन मुसकाना । माय यशोदा यों उठ बोली तू क्यों भयो जनाना । मोहिं छलिगई वृषभानु किशोरी ताहि छलबेको बरसाने मोहिं जाना ॥ बरसानेकी कुञ्जगलिनमें कान्हा फिरे दिवाना । भानुरायकी पौर बूझके काहू गूजरियासों जाय बतराना ॥ ५२६ ॥

राग दादरा ।

तुम या ग्राम कहाँ रहो आली । हम कबहूं देखी न सुनीहै यह शोभा छबि रूप निराली ॥ नख शिख लौं शृङ्गार मनोहर अधर रची पाननकी लाली । नारायण कहो प्रगट खोलके बात न राखो बीच बिचाली ॥ ५२७ ॥

सवैया ।

मनमोहन लाल बडो छलिया सखि बारूकी भीत उठावतहै ॥
कर तोरत है नभकी तरियां चट चन्दमें फन्द लगावत है ॥
जहां पौन न जायमके मुरली धुनकी तहां दूती पठावत है ॥
कहुं चोर कहूं दधिदानी बने कहूं शाह लली बनिआवतहै॥५२८॥

कवित्त ।

कौन रूप कौन रंग कौन शोभा कौन अङ्ग, कौन काज महाराज त्रिया वेष कीयो है ॥ नाकहूमें नत्थ हत्थ चूरिन भरे हैं लाल, काननमें कर्णफूल बेंदी भाल दीयो है ॥ चन्द्रहार उर राजे चम्पकली कण्ठसाजे, मुकुट उतार ओढ चूनरीको लीयोहै ॥ नारायण स्वामी देख चीन्ह गई प्यारी भेख, खिल खिल हँसि राधे पट मुख दीयो है ॥ ५२९ ॥

छ्न्म

मालिनलीला।

राग कालिंगडा।

प्यारी यक मालिन पौंर तिहारी॥टेक॥रंग साँवरो वा मालिन-को नील मणिन अनुहारी। ठाढी है वृषभानु पौंरिपै पूछत नाम दुलारी॥बेंदी भाल नयन बिच काजर बेसरकी छबि न्यारी। चलत चाल चपला ज्यों चमकत झूमत झूम घटा री॥ यह सुनके वृष-भानु नन्दनी बोली तब मुसकाई। ले आओ तुम वा मालिनको कैसी है वह आई। लै आज्ञा प्यारीकी तबहीं सखी बेग उठधाई। चल री मालिन याद करी तू दासि चरण बलिजाई॥ ८३०॥

मालिन मधुभरे नयन रसीले॥टेक॥कहो कौन हैं तात तुम्हारो कौन तुम्हारी माई। क्या है सुन्दरि नाम तिहारो कौन गामते आई॥ अचल प्रेम है तात हमारो भक्ति हमारी माई। श्याम-सखी है नाम हमारो धुर गोकुल ते आई॥ तुम्हरो रूप देखि मन उमँग्यो सुन मालिनकी जाई। हम लेंगी सब वस्तु तिहारी क्या क्या सौदा लाई॥ चम्पाकली हमेल चमेली फूलन हार बनाई। सेवती गुलाब सुमनके झुमका तिहारे कारण लाई॥ कित म-थुरा कित गोकुल नगरी कित बरसाने आई। कौन बताओ नाम हमारो किन यह ठौर बताई॥ तीन भुवनमें सुयश प्रकट है अरु तुम्हरी ठकुराई। राधे नाम रूपकी आगरि श्रीवृषभानुकी जाई॥ चंचल चतुर सुघर तू मालिन हम जानी चतुराई। फूलनहार बने अति सुन्दर और कहो क्या लाई॥ सुन्दर तेल फुलेल उबटनो अतर सुगन्ध मिलाई। जो रुचि होय सो लै मेरी प्यारी बेर भई मोहिं आई॥ बेर बेर तू जनि कर मालिन

माल अघाई। हीरे लाल रत्न मणि माणिक भूषण वसन मँगाई ॥ बडे घरनकी मालिन हूँ मैं धनकी रुचि कछु नाहीं। मैं सौदागर प्रेमरतनकी और न कछू सुहाई ॥ फूल फुलेल कि बेचनहारी कहा अधिक इतराई। लेहु लेहु फूल करत कुञ्जनमें हमपै करत बडाई ॥ सुकृत जन्मके फलते भामिन यह मेरे फूल सुहाई। पच पच हार रहे सुर नर मुनि ऐसे फूल न पाई ॥ जिन फूलनको खोजि थकित भये सुर नरपति मुनिराई। ऐसे फूल कहो मृगनयनी कौन बागसों लाई ॥ त्रिभुवनपति जगदीश दयानिधि नन्दकुँवर यदुराई। वा मोहनके बागसों प्यारी नवल फूल चुनलाई। यह सुनके वृषभानु नन्दनी तन मन सुख अधिकाई। आज कि रैन रहो घर हमरे भोर भये उठ जाई ॥ सांची प्रीति देख प्यारेकी रैनकी रैन ठहराई। यह छवि निरखि मगन भये सुर नर दास चरण बलिजाई ॥ ५२१ ॥

मनिहारीलीला।

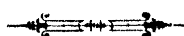
राग गौरी।

मिठ बोलनी नवल मनिहारी। भौंहैं गोल गरूर हैं याके नयन चुटीले भारी ॥ टेक ॥ चूरी लखि मुखते कहै घूँघटमें मुसकात। शशि मनु बदरी ओटते दुर दर्शन यहि भांत॥चूरी बडे जो मोलको नगर न गाहक कोय। मो फेरी खाली परी आई घर घर सब जुट टोय॥चुरी नील मणि पहरबे नाहिन लायक और। भगवान कोइ ले चलो मोहिं दीमन है इक ठौर॥जिहि नगरी रिझवार नहिं सौदागर क्यों जाय।वस्तु बनेरी गांठमें बिन गाहक सो पछिताय॥ रंग सांवरी गुण भरी धन मुन्यार कुल ओप ॥ मुदित होत सब देखके री यह पुर गोपि गोप॥काहूपै न ठगायहै तेरी बुद्धि विशाल।

लाभ अधिक कर जायगी भट्ट बेंच बडे घर माल ॥ मेरे मालहिं लेहिं सो जो मुहँ माँग्यो देय । ऐसी है कोउ भामिनी ताको नाम प्रगट किन लेय॥बेचनहारी काँचकी कहा अधिक इतराय । पौंरि भूप वृषभानुकी लाखनकी वस्तु बिकाय॥ पुर बजार देखे नहीं है गर्वीली नारि।प्यारीपागिन अबहीं बनी कछु बात न कहत विचार॥ तोहिं लैचलिहों नृप घरै क्यों जिय होत उदास । लेहिं लाडिली राधिका जो सौदा तेरे पास ॥ यह सुनके ठाढी रही सुखित भई अँग अग । भलो जो तेरो मानिहों लैचल अपने संग॥लैगइ पौंरी भानुकी बात कही समझाय । गुणन प्रगट कर सांवरी तोहिं लेहैं बेग बुलाय ॥ हौं जो मुन्यारी दूरकी आई राजद्वार । बेचों चूरी चूरला कोउ बोल लेहु रिझवार ॥ सुन आई चित्रा चतुर तू चल रावर माँझ । प्रात चूरी पहराइये अब बसरह परगइ साँझ ॥ अलभ लाभमों पायके हिय जिय पायो चैन । रूखेसे मुख सों कहै रौं रंजित रच २ बैन॥पर घर बसत जु चलिगई रिझै सकल परिवार । बडे भोर ही आयहों में यह मन कियो विचार ॥ एक बार भीतर जु चल प्यारी मों बतराय । भली लगे सो कीजियो लग लाड़लीके पाय॥चली जो झूमत झुकतमी बेनी रुरकत पीठ। घूँट अमीको सो भर्यो जब मिली दीठ सों दीठ॥ बहुत हँसी नवनागरी देखी परम अनूप। कै बेचन चूरी सखी तू कै बेंचन है रूप॥ मोहिं खिलौना जिन करो राजकुँवरि बलि जाऊँ । तन थाक्यो बासर गयो मोहिं फिरत फिरत सब गाऊं॥मुख दीखत तेरो डहडह्यो लगत चीकनो गात ।थाकी कौन बनावही कछु ऊपरकीसी बात॥ हौं तो सूधे जीयकी घट बढ़ समझत नाहिं।तुम्हें कछू दरश्यो कहा प्यारी कपट मेरे हिय माहिं ॥ रंग पहराऊँ चूरला चोखो बणिज कमाऊँ । चोखो प्रीति जु आदरों नहिं कपटी जन पतियाऊँ ॥ मेरे जिय यह टेक है कहे देनहौं सांच । हौं भूखी सम्मानकी नहीं

सहों झूठकी आंच॥आउ आउ री निकट तू देखों वदन निहार । एक बातहीमें चिढ़ी तू गुस्सा हियते टार॥शीतल हो व्यापाग्निनी तेरो ऐसो काम । तमक नई यह वैसकी तज तोहिं फिरनो सब धाम ॥ हौं आई तकि राज घर करन प्रथम पहचान।मणि लीन्हीं बिन करी यह हांसी होय हितकी हान॥ कासों हैं तैं हित कियो अबलग परी न दृष्टि। बात कहत उरझें सखी तू रची कौन विधि सृष्टि॥अब अपनी कर हित कहो भूषण युवति समाज । सब विधि पूरण होय तो प्यारी मोमन वांछित काज ॥ मणि चौकी बैठी कुँवरि दीनी भुजा पसार । काढ़ चुरी अति मोहनी पहराई सुवर सुन्यार॥भुजा कढ़त सुन्यारि दृग फूल्यो मनो वसन्त । मन छुटि चल्यो जु हाथते धीरज बांधत गुणवंत॥ जबही करसों कर गह्यो शिव आरि कियो प्रताप । तनु गति वेपथु जानके कछु मधुरे कियो अलाप॥तुम लायक चूरी कुँवरि भूल जु आई गेह । निरख निरख प्यारी कह्यो तेरी क्यों कांपति है देह ॥ सरस्यो प्रेम हिये बली उत्तर देह जु कौन । रूप अमल तापै चढ़यो लाल क्यों न गहै मुख मौन॥ललिता कह यह प्रेमहै कोऊ परस्यो रोग । यत्न करो तनु पेखके सखी कौन दई संयोग॥परम गुणीलो नंदसुत मैं देख्यो टकटोय।अहो प्रिया प्रीतम बिना बल ऐसो प्रेम न होय ॥ सींचे नीर गुलाब दृग प्रिया चिबुक कर लाय । प्रेम गहरते काढके सखी पुनि पुनि लेत बलाय॥यश दीयो सबही कुलन बनिता रूप बनाय । कौन बड़ाई कीजिये यश वर्द्धन गोकुलराय॥ कौतुक-रूपी खेलमें रजनी बाढी शोभ । रसिकन हिये बढ़ावनी यह नवल प्रेमकी गोभ ॥ युगल प्रीति गाढी निरख भयो हियो अहलाद । वरणी लीला मोहनी यह श्रीहरिवंश प्रसाद ॥ बल-हित रूप चरित्र यह जो विचार है नित्त। वृन्दावन हित भीज है दम्पति रस ताको चित्त ॥ ५३२ ॥

विसातिनलीला।

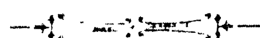


राग परज।

गली गलीमें कहत फिरत कोई लालहिं लेहु मुल्याई। यों कहत बिसातन आई॥ टेक॥ जबहिं गई वृषभानु पौर तब ऊंची टेर सुनाई। श्याम पोत अरु श्याम नगीना या घर लायक लाई॥ द्वारे उझक उझक फिर आवे आगे जात सकाई। तनु ढांपे पुनि घूँघट मारे लाज जु भीजत जाई॥ भीतर खबर भई तब प्यारी बोल निकट बैठाई। कौन अपूरब वस्तु पास तोहिं कहु मोसों समुझाई॥ कौन नगर तू बसत बिसातिन अबहीं दई दिखाई। तोसी भटू बडे घर चहिये धनि विधि जिन जु बनाई॥ सबही भांति ऊजरी तनुकी किहि मुख करों बडाई। तोहिं बसाऊं राजद्वार जो मनमें होत सचाई॥ कैसी चुन्नी कैसे मोती कीमत देहु बताई। है लघु बैस कौनपै सीखी परखनकी चतुराई॥ कांख माहिं ते गांठ काढ़कर श्याम जु लगे गहाई। बडे मोलके नग यह मेरे तुम रिझवार महाई॥ जो जो रुचे वस्तु सो राखो बड गोपकी जाई। औरो बात कहत सकुचत हों प्रीति जु देख बिकाई॥ ना विधिकी डबिया छल्ला आरसी मणिन जडाई। श्रीराधाके आगे धरके बोली मैं भेंट चढाई॥ तुम नृप अति लडी हों जु बिसातिन देखत कृपा अघाई। हौं भूखी याहीको चाहौं द्रव्य न बहुत कमाई॥ श्याम पोतको गुंजा सुन्दर सो वर धरयो दुराई। मोसों प्रीति करै जो भामिनि ताहि देहुँ पहराई॥ हौं हित करों वचन मन क्रम कर रहु मो पास सदाई। प्राणनहूँते प्यारी मोको भाग्य बडेते पाई॥ बटुवा खोल दिखाई बेंदी नागरिके मन भाई। सुघर बिसातिन अपने करलों माथे कुँवारि लगाई॥ पुनि झोरीते दर्पण काढ्यो

मुख शोभा दरशाई । उदित भालपर मनु सुहाग मणि लखि श्यामा मुसक्याई ॥ हर्ष अंकभर ताही बैठी मन खोल जबै बतराई । परशत अङ्ग दशा बदली तब प्यारी मनमें धरी भुराई ॥ बूझत अरी डरी कै तोकों छाया आय दबाई । तबलग परगई सांझ कहूँ मोहिं वासो देहु बनाई ॥ बिसर न सकत प्रीति अतिबढगई ब्यारू संग कराई । रजनी गुण उघरे जब शय्या अपने ढिग पौढाई ॥ जबहिं स्वरूप प्रकाश्यो अपनो जान परी लँगराई । वृन्दावन हित रूप छद्म तज सुखकी लब्धि मनाई ॥ ८३३ ॥

योगिनलाला



राग देश ।

देखियत गुणन गरूर तेरे अति चटकीलो रूप । छकन और-हीसी लगत काहू सुता बडेकी भूप ॥ टेक ॥ चल री चल घर लै-चलों तूं कहदे मनकी लाग । योग लियो किहि कारणे हग दरशत है अनुराग ॥ श्रीराधा नृप लाडिली मन आवत भाषत सोय । अन्त लेस तपसीनको नहिं योग खिलौना होय ॥ तन साधैं मन वश करें हम बन फल करें अहार । क्यों ग्रहिनके घर बसैं जिन नर्क तज्यो संसार ॥ भोजन भूँखी हौं नहीं कछु मन न वासना और । प्रीति सहित आदर जहां हम बिलमैं ताही ठौर ॥ आदर देहों अधिक तोहिं गुराहिं करों परकाम । गिरि गह्वर वन सेइये बरसा-नो निकट निवास ॥ गाम निकट ग्रेही बसैं योगी रमैं वनखंड । जिनके जप तपसे थमैं सात द्वीप नौ खंड ॥ हम जो सुनी यह शेष शिर बू कहत अनंती बात । सत्य बोल नहिं जानही विधि रचे जो सांवल गात ॥ प्रीति प्रतीति न वचनकी करो बैस सुता पुनि राज । दूर बैठो घर जायके तुम्है योगिनसे कह काज ॥

गोपनके गोधन परख तुम तिन गुण करो बखान । योगिनके घर दूर हैं अतिदुर्लभ पद निर्वान॥राजसुता तुम करतिहो योगिन संग विवाद । सेवा कीने फल मिलै चर्चा उपजै विषाद ॥ हम सेवा बहुविधि करैं जो तुम मन थिरता होय। यह पुर वसै बड़भागिनी ब्रज सम लोक न कोय ॥ क्यों न बड़ाई कीजिये लायक कुल वृषभानु । अब हौं निश्चय चाल हौं पायों मन वांछित सन्मान ॥ बाँह पकरके लेचली बैठारी जाय निकेत । अब छिन पास न छाँडिहौं समझ्यो उर अंतरको भेद ॥ पलँग देह मोहिं बैठनो मन मिलनी सजनी पास । यहि विधि मोहिं बिलमाइये मैं कबहूँ न होउँ उदास॥भूमि शयन योगी करें तू कहत वचन विपरीत । भूलि न आदर पाइये तप मारगकी रीत ॥ तुम मन मृदु कोमति लली यह सजनीको हियो कठोर । तपस्विनको शिक्षा करै कछु आयो कलिको जोर ॥भुज भरलीनी कुँवारिने तू जिय जिन पावै खेद। वृन्दावन हितरूप छद्मको समझ परयोहै भेद ॥ ५३४ ॥

वीणावारीकी लीला।

राग गौरी।

छबि आगरी कोविद राग । वीणा अंक लिय जहां बैठी बाबाके बाग ॥ टेक॥ ऊंचो जामें बंगला कमरनी सरवर नीर । जाके अंग-सुवासते जहां ह्वैरही भँवरन भीर॥पक्षीहू कौतुक ठगे ऐसी शोभा अंग ॥ आभा नीलमणी मनो अस तनुको दरशत रंग ॥ जे देखत तरुणी गईं तेजो बिलोई प्रेम । बीध गईं रस नादमें सब भूलीनित-कृतनेम॥तुम चलि लावो नगरमें मिलै अधिक सुख होय । भूँखी वह जो सनेहकी प्यारी मैं देखी टकटोय ॥ गुणी न ऐसी देश यह रीझोगी सुन गान । औरनको जो छकावही वह आप छकै लैतान॥

कोमल परम स्वभाव हो जानत प्रीति बिकाय । जो अब आदर देहु-
गी तो फिर आवैंगी धाय ॥ सरिता जल थिर ह्वै रहै जाको सुनत
अलाप । शिव समाधि टारे बली विधिको टारत है जाप ॥ ब्रज
मंडल ऐसी नहीं नहीं भरतके खंड । अति गुणवंती भामिनी यह
आई परचंड ॥ यह सुन अति अकुलायके चली सखी लै संग ।
रूपसिंधु उमँग्यो मनो तासें नानाउठत तरंग ॥ उठ सन्मानत साँवरी
फूली सरवस पाय । दृगमों दृग मनसों जो लखि उरझे सहज
सुभाय ॥ अहो कुशल मति नागरी तुम गुण भये प्रशंस । राग
अलापि सुनाइये सखी बीणा धरके अंग ॥ चपल करज नख द्युति
बडी गोरी गाई बाल । रीझी अति लली भूपकी दई ताहि आप
हिय माल ॥ मान बडी तानन बडी बडी रूप लहि लाह । प्रगट
करो सब चातुरी जाके मनमें विपुल उमाह ॥ विद्या निपुण उजा-
गरी धन तुम शिखवन हार । कोउ दिन बसीने बसो अब चलो
हमारे लार ॥ सुनत कछू मोरयो बदन चुप ह्वै रही सुजान । बीणा
धर दियो कन्धते रूखी ह्वै गई निदान । ललिता बूझत समझके
का कारण बलिजाउँ । तुम उदास अतिही भई सुन धाम हमारे
नाउँ ॥ मेरे छक है गुणनकी सुनो खोलके कान । पर घर गये जो
को सहै सखी जो न होय अपमान ॥ तुम्हें प्राण सम राखि हैं
लाड़ नयो नित होय । अहो गुणीली भामिनी यह संशय मनते
खोय ॥ गुणगाहक विरचे नहीं दूर करो सन्देह । जे गुणको समझैं
नहीं परहरिये तिनके गेह ॥ यह सुन भई जो डहडही सखी साँवरी
गात । चम्पक बरणी धन्य तू कही निपट समझकी बात ॥ अब
हौं निश्चय चलोंगी जान तुम्हारो हेत । तो मन थाह मिली भटू
नृपसुता न उत्तर देत । कहा न्याव सो करत हो कहत अतिलडी बोन ।
सुख पावो तो विरमियो नहीं कर जैयो गौन ॥ ससक उठी कर

बीण लै लगी कुँवरिके साथ। निपट मन्द गमनी भई गहि प्यारी-जूको हाथ॥ गोपनके मंदिर जिते सबको बूझत नाम। तनु श्रम अधिक जनावहीं कहै कितक दूर तुम धाम॥ हम जो चढैं रथ पालकी अतिही आदर योग। गुणी रीझ जानै कहा ये ब्रजके भोरे लोग॥ कहो मँगाऊँ अश्वरथ कहौ पालकी रंग। आज्ञा पहले करी नहिं योंहिं उठ लागी संग॥ हम जान्यों नियरे भवन यह तो निकस्यो दूर। याते खबर परी नहीं तुम नेह रह्यो उर पूर॥ और सुनो मों बीणको नीके धरियो साज। मेरो जीवन प्राण है मेरो याही सों रंग समाज॥ तुम मानतहो खेल मो सुन मो मुख रसरीत। नारदशारदके सदा अति या बाजे मों प्रीत॥ हौं सीखी उनकी कृपा मों हियकी गाढी लाग। ता प्रतापते करतहो सखी तुम मोंसों अनुराग॥ लाई न्यारे भवनमें बहुत करत सम्मान। अब एकान्त सुनाइये सखी सुघर साँवारी गान॥ वीणा-के सुर साधके अंक लाय मुसकाय। गायो चितकी चोपसों जिन लीनो सभन रिझाय॥ जैसिहि रजनी ऊजरी तैसोइ हिय हुलास। चपल करज तैसे चलैं भयो तैसोई परकाश॥ अहो सहेली साँवारी कर इहि नगर निवास। असन बसन करहो सखी चल रहु नित मेरे पास॥ मोहिं अंशा यह नगर घर यामें शंक न कोय। आवत जात रहौ सदा जो रावर हित होय॥ सखिन और बाजे लिये प्यारी लई कर बीन। ग्रीव ढुराई साँवरी अस गायो कुँवरि प्रवीन। जब उघरी संगीत गति प्यारी दे करताल। छदम बिसर गई साँवरी लगी निरतन गति नँदलाल॥ ह्वै त्रिभङ्ग ठाढी भई कर मुरलीको भाव॥ फूँक चले अँगुरी चलैं गई भूल कपटको दाव॥ राधा राधा रटलगी अधरनहींके माहिं। समझ समझ ललता कही प्यारी यह तो भामिन नाहिं॥ भुजा अंसपर धरनको झुकी प्रियाकी ओर। सावधान होय साँवरी कह कौतुक रचत जु जोर॥

राज भवनमें आयके भूल न आदर पाय । स्यानी है कै बावरी तू अपनो रूप बताय॥यामों प्रीति न तोरिये हौं लाई जु बुलाय। भेद हियेको बूझके देहु मादर वेग पठाय ॥ प्रीतमको देख्यो कहूं इन लीनी गति चोर । परम चातुरी मीव यह गुण आछे लेत टटोर ॥ कान लाग चित्रा कह्यो है यह नन्दकिशोर । में लक्षण नीके लखे दृग चालत गोंहीं कोर ॥ भट्ट बहुरि नीके परख बात न भोंडो फोर। लायकमों ममझे बिना अति गरुवो नेह न तोर ॥ भरी कटोरी अतरकी लाई मखी सुजान । मबकी चोली लगायके तिहिं चोली परसे पान ॥ वह अधरनहीमें हँमी यह जो हँसी मुख खोल । है यह दूत शिरोमणि कह्यो मब सखियनसों बोल ॥ मेरीही भूलन मखी तब तुम लियो विलोक । प्रेमसिन्धु उमँगन जहां कह छद्म जो तिनको रोक॥कबहुँ दूर कबहूँ प्रगट आवत भान निकेत। मधुप अनत विरमें नहीं दृढ कियो कमल मों हेत॥वरण्यो कौतुक प्रेमको नेम नहीं मरयाद । लखी जु रसिकनकी गली श्रीहरिवंश प्रसाद ॥ यह रस रसिक जो विलमहैं जामें अति ही चोज । वृन्दावन हित बलिरुचे दंपति केलि मनोज ॥ ८२५ ॥

राग भैरव ।

यह रसरीति प्रिया प्रीतमकी दिव्यदृष्टि जल जैसे री ॥ विषयी ज्ञानी भक्त उपासक प्राप्त मबनको तैसे री॥ कदली खंभ पपीहा सीपी स्वाति बूंद जल जैसे री । भगवत कछु विषमता नाहीं भूमि भाग फल तैसे री ॥ ८२६ ॥

दोहा—जय जय जय ब्रजचन्दकी, जय जय जय सुखराश ।
निज चरणनमें राखिये, एक तुम्हारी आश ॥

इति श्रीरागरत्नाकर प्रथमभाग समाप्त १.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालय-बम्बई.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ रागरत्नाकर।

द्वितीय भाग २.



मथुरागमनलीला।

राग बिहाग।

अब नँद गैयां लेहु सँभार। हौं जो तिहारे आन प्रगट्यो गैयां चराईं दिन चार ॥ दूध दही तेरे बहुतही खायो बहुतहि कीनी रार। मातु पितु मेरे चरित उरसों डारिहो न बिसार ॥ कोकिला सुत काग पाले अंत होत पगार। तिहारे यशुमति आन बिलसें दृग मत आंसू डार ॥ को पिता को पुत्र काको देखु मनहिं विचार। सूरके प्रभु चले ब्रज तजि कपट कागज फार ॥ १ ॥

राग सोरठ।

यशुमति बार बार यह भाखै। है कोऊ ब्रज हितू हमारो चलत गोपालहिं राखै ॥ कहा काज मेरे छगनमगनको नृप मधुपुरी बुलाये। सुफलक सुत मेरे प्राण हरणको कालरूप हो आये ॥ बरु यह गोधन कंस लेय सब मोहि बन्दी लै मेलै। इतनो मांगत कमलनयन मेरे आँखन आगे खेलै ॥ को कर कमल मथानी गहिहै को दधि माखन खैहै। बहुरो इन्द्र बरसि है ब्रजपर को गिरि नख पर लैहै ॥ बासर रैनि बिलोकत जीयां संग लागि दुलराऊं। हरि बिछुरत जो रहों कर्मवश तो किहि कण्ठ लगाऊं ॥

टेर टेर घर परत यशोदा अधर वदन बिलखानी । सूर सो दशा कहां लग वरणौं दुखित नंदकी रानी ॥ २ ॥

राग विहाग ।

उठ चले ग्वाँढों यार । रब्बा हुनकी करीये उठ चल्ले हुन रहिंदे नाहीं होया साथ त्याग॥चारों तरफ चलन दी चरचा केही पडी पुकार । डाढ कलेज बल बल उठती बिन देखे दीदार । बुल्ला- शाह प्यारे बाझो ना रहमां घर बार ॥ ३ ॥

राग सोरठ ।

उलट पग कैसे दीनो नन्द । छांडे कहां उभय सुत मोहन धृग जीवन मतिमन्द ॥ कै तुम धन जोबन मदमाते कै तुम छूटे बंद । सुफलक सुत वैरी भयो मोको लै गयो आनँदकन्द ॥ राम कृष्ण बिन कैसे जीवों कठिन प्रीतिको फन्द । सूरदास अब भई अभागिन तुम बिन गोकुलचन्द ॥ ४ ॥

राग बडहंस ।

सांझ परी घर आये न कन्हैया । गोपी पूछे ग्वालनसों कहां गये मोरे व्रजके बसैया ॥ घर रहे बछरू बन रहीं गैयां यमुना किनारे ठाढी यशुमति मैया । जाय पताल कालीनाग नाथ्यो फण ऊपर प्रभु निरत करैया ॥लालदास प्रभु कह करजोरे चरण कमल पर चितको धरैया ॥ ५ ॥

राग धनाश्री ।

ऊधो मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं । हंससुताकी सुन्दर कलरव अरु कुञ्जनकी छाहीं ॥ वे सुरभी वे बच्छ दोहनी खारिक दुहा- वन जाहीं । ग्वाल बाल सब करत कुलाहल नाचत गहि गहि बाहीं ॥ यह मथुरा कंचनकी नगरी मणि मुक्ता जिहि माहीं ।

जबहिं सुरत आवत वा सुखकी जिय उमँगत सुधि नाहीं ॥ अनगिन भाँति करी बहु लीला यशुदानन्द निबाहीं। सूरदास प्रभु रहे मौन गह यह कह कह पछताहीं ॥ ६ ॥

राग बिहाग।

ऊधो ब्रजको गमन करो। मेरे बिना विरहिनी गोपिका तिनके दुःख हरो ॥ योग ज्ञान परबोधि सबनको ज्यों सुख पावें नारि। पूरणब्रह्म अलख परचो कारि डारें मोहिं बिसारि ॥ सखा प्रवीन हमारे हो तुम याते थापि महंत। सूर श्याम कारण यहि पठवत है आवेगो संत ॥ ७ ॥

कवित्त।

कामरी लकुट मोहिं भूलत न एक पल, घुंघुची ना बिसरों जाकी माल उर धारे हैं ॥ जा दिन ते छाकें छूट गईं ग्वालनकी प्रभु, तादिन ते भोजन न पावत सकारे हैं ॥ भने यदुवंश जो पै नेह नन्दवंशहू सों, वंसी ना बिसारों जो पै वंशहू बिसारे हैं॥ऊधो ब्रज जैयो मेरी लैयो चौगान गेंद, मैयाते कहियो हम ऋणियां तिहारे हैं ॥ ८ ॥

कौन विधि पावें कर्म बलवान उदयभो, छाछ छछियाकी ब्रज भामिनको भावतें ॥ मुक्तिहू पदारथ सो देचुके बकी को अब, देहैं जननीको कहा याते पछतात हैं ॥ विधि जो बनाई आहि कौन विधि मेटे ताहि, ऐसे करशोचत रहत दिन रात हैं ॥ ऊधो ब्रज जैयो मेरी कहो समुझाय मैया जापे ऋण बाढे सो विदेश उठि जात हैं ॥ ९ ॥

परम पवित्र तुम मित्रहो हमारे ऊधो, अन्तर बिथाकी कथा मेरी सुन लीजिये ॥ ब्रजकी वे बाला जपैं मेरी जप माला बाढी, विरहकी ज्वाला तामें तन मन छीजिये॥मेरे बिसवास मेरीआस रस रास मेरी मिलबेकी प्यास जास सावधान कीजिये ॥ प्रीति-

सों प्रतीति सों लिखी है रस रीति सों सो, पत्रिका हमारी प्राण प्यारिनको दीजिये ॥ १० ॥

जसे तुम दीनो तन मन धन प्राण मोहिं, तैसेही समाधि साध ध्यान धरवावोगी ॥ अलख अनाथ घट घटको निवास मोहिं, जान अविनाशी जोग जुगत जगावोगी ॥ आसन कै प्राणायाम साधि ध्यान धारणा तें, ब्रह्मको प्रकाश रस रास दरशावोगी ॥ ऐसे चित लावोगी तो सुखमें समावोगी, औ मुक्ति पद पावोगी हमारे पास आवोगी ॥ ११ ॥

भेजो तुम योग हम लीयो धारि शीश पर बडोहै परेखो चेरी कौनकी कहावेंगी ॥ अँसुवन माला लेके जपें नित राम नाम लोचनके खप्पर लेके भिक्षाकोहू धावेंगी ॥ पहरेंगी कन्था गलमें डारेंगी सेली माल मर्घट पै बैठके मशानहू जगावेंगी ॥ ऊधोजी सो एती बात हरिजीसों कहो जाय एती व्रजबाला मृगछाला कहां पावेंगी ॥ १२ ॥

राग देश ।

श्यामका सँदेशा ऊधो पाती लेके आयो रे । पाती तो उठाय लीनी छाती सो लगाय लीनी घूँघटकी ओट देके उद्धव समुझायो रे ॥ वसती उजाड़ दीनी उजडी बसाय लीनी कुब्जा पटरानी कीनी मोहि न सुहायो रे । सूर श्यामजूके आगे ऐसे जाय कहियो ऊधो जीवत खसम किन भसम रमायो रे ॥ १३ ॥

राग टोडी ।

पाती सखि मधुवनसे आई । ऊधो हाथ श्याम लिख पठई तुम सुनोहो मोरी माई ॥ अपने अपने गृहसे दौरीं ले पाती उर लाई । नयनन नीर निरखं नहिं खण्डित प्रेम विथा बुझाई ॥

कहा करूं सूनो यह गोकुल हरि बिन कछु न सुहाई। सूरदास प्रभु कौन चूक ते श्याम सुरति बिसराई ॥ १४ ॥

राग जङ्गला होरी।

साँवरे सों कहियो मोरी ॥ शीश नवाय चरण गह लीजो करि विनती कर जोरी। ऐसी चूक कहा परी मोसों प्रीति पाछली तोरी ॥ सुरति ना लीनी बहोरी ॥ भूषण बसन सभी तज दीने खान पान बिसरो री। विभूति रमाय योगिन होय बैठी तेरेही ध्यान धर्‍यो री ॥ अब मैं कैसे करों री॥ निशि दिन व्याकुल फिरत राधिका विरह व्यथा तनु घेरी। बार कलेजा जार दियो है अब मैं कैसे करों री ॥ बेग चल आवो किशोरी॥ रोम रोम विष छाय रहो है मधु मेरे बैर पर्‍यो री। श्याम तुम्हें ढूँढ़त कुंजनमें शीशलटा गहि झोरी ॥ कहो हरि हा हरि होरी ॥ जा दिन गमन कियो मथुरामें गोपिन सुख बिसर्‍यो री। हमको योग भोग कुब्जाको कहा तकसीर है मोरी ॥ कहा कछु कीनी चोरी ॥ सूरदास प्रभु सों जाय कहियो आय अवधि रही थोरी। प्राणदान दीजो नँदनंदन गावत कीरति तोरी ॥ प्रीति अब कीजे बहोरी ॥ १५ ॥

सवैया।

जो मथुरा हरि जाय बसे हमरे जिय प्रीति बनी रही सोऊ ॥ ऊधो! बडो सुख यह हमें अरु नीके रहैं वह मूरति दोऊ ॥ हमारेहु नामकी छाप परी अरु अन्तर बीच अहै नहि कोऊ॥ राधाकृष्ण सभी तो कहैं पर कूबरिकृष्ण कहै नहिं कोऊ ॥ १६ ॥

कवित्त।

जाकी कोख जायो ताको कैद करवाय आयो, धाय कर मारी नारी निठुर मुरारिहैं ॥ जेती ब्रजनारी तेती मिल मिल मारी

अन-मिल हूँ तो मारी जो मिलिहैं ताहि मारि हैं ॥ सुनरी ए चेरी तेरी सौंह मैं कहत वे तो,हरि सरस नयन आँसुहू न ढारिहैं ॥ बडे हैं शिकारी पर इन्हें न सँभारी नारी, मारबेको नवल कन्हैया तलवारि हैं ॥ १७ ॥

याही कुञ्ज तर वह गुंजत भँवर भीर, याही कुंज तर अब शिर न धुनत हैं॥याही रसनाते करीं रसकी रसीली बातें,याही रसना ते अब गुण न गनत हैं ॥ आलम बिहारी बिन हृदय अचेत भये, एहो दई हित कहु कैसेंके बनत हैं ॥ जेही कान्ह नयनके तारे हुते निशि दिन,तेही कान्ह कानन कहानीसी सुनत हैं ॥ १८ ॥

आयो आयो भयो ऊधो अब ब्रज मण्डलमें, रागमें कुराय योग रीतको सुनायो है ॥ झोली झन्डा गूदडी औ भस्म मुद्रा काननमें,हाथनमें खप्पर ये स्वाँगलै दिखायो है ॥ संयम नियम ध्यान धारणा दृढ़ासन हो,ब्रह्मको प्रकाश रस राम दरशायो है॥ कूबरीपै पढ़ आयो वेदको भुलाय आयो, रथ चढ़ आयो अनरथ गढ़ लायो है ॥ १९ ॥

जोगी तजे जग हम जग जोग दोऊ तजे,जोगी लावें छार हम छारहूके मटिहैं॥जोगी बेधें कान हम हीये अरु प्रान बेधें, जोगी कहैं नाथ हम नाथ नाथ रटि हैं ॥ जोगी कान मुद्रा हम भूषण बनाय राखे, म्हारे शिर केश बहु जोगी शिर जटि हैं ॥ जानके अजान आज ये कहा भये ऊधोजी, जोगीकी जुगत सों वियोगी कहा घटि हैं ॥ २० ॥

श्याम तन श्याम मन श्यामही हमारो धन, आठों याम ऊधो हमैं श्यामही सों काम है ॥ श्याम हीये श्याम जीये श्याम बिन नाहिं तीये, आंधे कीसी लाकरी अधार श्याम नाम है ॥ श्याम गति श्याम मति श्यामही हैं प्राणपति, श्याम सुखदाई सो

भलाई शोभाधाम है॥ ऊधो तुम भये बौरे पाती लैकै आये दौरे, योग कहाँ राखें यहाँ रोम रोम श्याम है॥ २१॥

राग मलार।

जित देखों तित श्याम मई है। श्याम कुंज बन यमुना श्यामा श्याम गगन वन घटा छई है॥ सब रंगनमें श्याम भरो है लोग कहत यह बात नई है। मैं बौरनके लोगनहीकी श्याम पुतरिया बदल गई है॥ चन्द्रसार रवि सार श्याम है मृगमद श्याम काम विजई है॥ नील कण्ठको कण्ठ श्याम है मनो श्यामता भेलि बई है॥ श्रुतिको अक्षर श्याम देखियत दीप शिखा पर श्याम तई है। नर देवनकी मोहर श्यामा अलख ब्रह्म छबि श्याम भई है॥ २२॥

राग देश।

कुब्जाने जादू डारा जिन मोह्यो श्याम हमारा री। निशिदिन चलत रहत नहिं राखे इन नयनन जलधारा री॥ अब यह प्राण कैसे हम राखें बिछुरे प्राण अधारा री॥ ऊधो तबते कल न परत है जबते श्याम सिधारा री॥ अबतो मधुवन जाय ले आवो सुन्दर नन्ददुलारा री। सूरदास प्रभु आन मिलावो तन मन धन सब वारा री॥ २३॥

राग नट।

ऊधो धनि तुमरो व्यवहार। धनि वे ठाकुर धनि तुम सेवक धनि धनि परसन हार॥ आमको काटि बबूर लगावत चन्दन झोकत भार। शाहको पकर चोरको छोरत चुगलनको अधिकार॥ हमको योग भोग कुब्जाको ऐसी समझ तिहार। हंस मयूर शुकापिक त्यागत कागनको इतबार॥ तुम हारि पढ चातुरी

विद्या निपट कपट चटसार । सूर श्याम कैसे निबहैगी अन्ध-धुन्ध सरकार ॥ २४ ॥

राग रामकली ।

ऊधो कर्मनकी गति न्यारी । सब नदिया जल भर भर रहियां सागर किस विधि खारी ॥ उज्ज्वल पंख दिये बकुला को कोयल किन गुणकारी । सुन्दर नैन मृगाको दीने वन वन फिरत उजारी ॥ मूरख मूरख राज कीने पंडित फिरत भिखारी ॥ सूर श्याम मिलबेकी आशा छिन २ बीतत भारी ॥ २५ ॥

राग आसा ।

ऊधो सो मूरति हम देखी । शिव सनकादि सकल मुनि दुर्लभ ब्रह्म इन्द्र नहिं पेखी ॥ खोजत फिरत युगों युग योगी योग युगते न्यारी । सिद्ध समाधि स्वप्न नहिं दरशी मोहनी मूरत प्यारी ॥ निगम अगम बिमला यश गावें रहत सदा दरबारी । तिल भर पारवार नहिं पायो कहि कहि नेति पुकारी ॥ नाथ यती अरु योगी जंगम ढूँढ रहे वन माहीं । वेश धरे धरनी भ्रमि हारे तिनहूँ दरशी नाहीं ॥ सो हम गृह गृह नाच नचाई तनक तनक दधि देके । रामदास हम रँगी श्याम रँग जाहु योग घर लेके ॥२६॥

राग सारंग ।

बिलग जिन मानो ऊधो प्यारे । यह मथुरा काजरकी कोठी जे आवें ते कारे ॥ कारे भँवर सुफलक सुत कारे कारे रत्न पवारे । यहां ज्ञानकी कौन चलावे सूर श्याम गुण न्यारे ॥ २७ ॥

राग देश ।

ऊधो कारे सबै बुरे । कारे की परतीत न करिये कारे विषके भरे ॥ कारो अंजन देत दृगनमें तीखी सान धरे । नाग नाथ हरि बाहर आये फण फण निरत करे ॥ कोयलके सुत कागा पाले अपनोहि

ज्ञान धरे । पंख लगे जब उडने लागे जाय कुटम्ब रले ॥ सूर-श्याम कारो मतवारो कारेमे काल डरे ॥ २८ ॥

उरमें माखनचोर गडे । अब कैसे निकसत हैं ऊधो तिरछे हो जो अडे ॥ यदपि अहीर यशोदा नन्दन तदपि न जात छडे । वहां कहत यदुवंश महाकुल हमहिं न लगत बडे ॥ को वसुदेव देवकी है को जो माने सो बूझे । सूरश्याम सुन्दर बिन देखे और न कोऊ सूझे ॥ २९ ॥

राग बडहंस ।

होगये श्याम दूजके चन्दा । मधुवन जाय भये मधुबनियां हमपर डारो प्रेमको फन्दा ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर अब तो नेह परचो कछु मन्दा ॥ ३० ॥

राग जिला ।

चले गये दिलके दामनगीर । जब सुधि आई प्यारे तेरे दरश की उठत कलेजे पीर ॥ नटवर भेष नयन रतनारे सुन्दर श्याम शरीर । आपन जाय द्वारका छाये खारी नदके तीर ॥ ब्रजगोपिनको प्रेम विसारयो ऐसे भये बेपीर । वृन्दावन वंशीवट त्यागयो निर्मल यमुना नीर ॥ सूरश्याम ललना तब बोली आखिर जात अहीर ॥ ३१ ॥

राग वसंत ।

ऊधो माधोसों कहियो जाय । जाकी चपल बुधि तासों क्या बसाय ॥ उडियो रे भ्रमरा जइयो वा देश मेरे पियासे कहियो सुख सँदेश सखी फागुनके दिन वीते जात मेरी आँगिया तडक गई योवन भार । इक तो मातव मोहिं ऋतु वसन्त दूसर सतावें मोहिं बाला कन्त तीजी कोयल बोले अम्बकी डार चौथा पपीहा पिया पिया करे पुकार ॥ इक बन फूल सकल बन फूले जैसे चन्द्र

चकोरन हूलेतीया तरन तेज मोपै सह्यो न जाय जब मैं तजूंगी प्राण फिर क्या करोगे आय ॥ ३२ ॥

राग धनाश्री।

हरिके संग मैं क्यों ना गई। हरिसंग जाती कंचन बन आती अब माटीके मोल भई ॥ बरजो न कोई इन दूतिनको जाती बेर मोहिं रोक लई। हारि बिछुरन इक मरन हमारा नई दासी संग प्रीति भई ॥ छल गयो काल बहुरि नहिं आवें अपने हाथसे मैं बिदा दई। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको पिछली प्रीति अब नई भई ॥ ३३ ॥

राग वसंत।

जा जा रे भँवरा दूर दूर। तेरे सो अंग रंग है उनको जिन मेरो चित कियो चूर चूर ॥ जबलग तरुन फूल महकत है तबलग रहत हजूर जूर। सूरश्याम हरि मतलब मधुकर लेत कलीरस घूर घूर ॥ ३४ ॥

राग विहाग।

मधुकर श्याम हमारे चोर। मन हर लियो माधुरी मूरत निरखि नयनकी कोर ॥ पकरे हुते आन उर अन्तर प्रेम प्रीतिके जोर। गये छुडाय तोर सब बन्धन देगये हँसन अकोर ॥ उचक परों जागत निशि बीते तारे गिनत भई भोर। सूरदास प्रभु हरि मन मेरो सरबस लै गयो नन्दकिशोर ॥ ३५ ॥

राग केदार।

नाहिं न रह्यो मनमें ठौर। नन्दनन्दन अछत कैसे आनिये उर और ॥ चलत चितवत दिवस जागत स्वप्न सोवत रात। हृद-यते वह श्याम मूरति छिन न इत उत जात ॥ श्यामगात सरोज

आनन ललित गति मृदु हास सूर ऐसे रूप कारण मरत लोचन प्यास ॥ ३६ ॥

राग सारंग।

बिन गोपाल वैरन भईं कुंजें। तब वे लता लगत अति शीतल अब भईं विषम ज्वालकी पुंजें ॥वृथा बहत यमुना खग बोलत वृथा कमल फूलत अलिगुंजें। सूरदास प्रभुको मग जोवत अँखियां भईं अरुण ज्यों गुंजें ॥ ३७ ॥

राग मल्लार।

निशिदिन बरसत नयन हमारे। सदा रहत पावसऋतु हमपर जबसों श्याम सिधारे ॥ अंजन थिर न रहत अँखियनमें कर कपोल भये कारे। कंचुकि पट सूखत नहिं कबहूँ उर बिच बहत पनारे ॥ आंसू सलिल भये पग थाके बहे जात सित तारे। सूरदास अब डूबत है ब्रज काहे न लेत उबारे ॥ ३८ ॥

हरि परदेश बहुत दिन लाये। कारीघटा देख बादरकी नयन नीर भर आये ॥ पालागों तुम बीर बटाऊ कौन देशते धाये। इतनी पतियाँ मोरी दीजो जहां श्याम घन छाये ॥ दादुर मोर पपीहा बोलैं सोवत मदन जगाये। सूरदास स्वामीके बिछुरे प्रीतम भये पराये ॥ ३९ ॥

राग देश।

नाथ अनाथनकी सुधि लीजे। तुम बिन दीन दुखित हैं गोपी वेगहि दर्शन दीजे ॥ नयनन जल भर आये हरि बिन ऊधो को पतियाँ लिख दीजे। सूरदास प्रभु आस मिलनकी अबकी बेर हरि आवन कीजे ॥ ४० ॥

राग बिहाग ।

पिया बिन नागिन कालडी रात । कबहूं यामिन होत जुन्हैया डस उलटी है जात ॥ यन्त्र न फुरत मन्त्र नहिं लागत आयु सिरानी जात । सूर श्याम बिन विकल विरहिनी मुर मुर लहरी खात ॥ ४१ ॥

राग भैरवी ।

अँखियाँ हरि दर्शनकी प्यासी । देख्यो चहत कमल नयनको निशिदिन रहत उदासी ॥ केसर तिलक मोतिनकी माला वृन्दावनके बासी । नेह लगाय त्यागगये तृण सम डार गये गलफाँसी ॥ काहूके मनकी को जानत लोगनके मन हाँसी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिन लेहा करवटकाँसी ॥ ४२ ॥

ठुमरी खम्माच ।

बतादे सखी कौन गली गये श्याम । रैनि दिवस मोहिं तलफत बीती बिसर गये धन धाम ॥ गोकुल ढूंढ वृन्दावन ढूंढ्यो मथुरामें होगई शाम ॥ ४३ ॥

राग आसावरी ।

कहीं देखे री घनश्यामा ॥ मोरमुकुट पीतांबर सोहै कुण्डल झलकैं काना । सांवरी सूरत पर तिलक विराजै तिससों लगे मोरे प्राना॥वरसानेसों चली गुजरिया नन्दगामको जाना । आगे केशो धेनु चरावें लगे प्रेमके बाना ॥ सागर सूख कमल मुरझाना हंसा कियो पयाना । भौंरा रहगये प्रीतिके धोके फेर मिलनको जाना ॥ वृन्दावनकी कुञ्जगलीमें नूपुर रुनझुन लाना । मीरा बाईको दरशन दीजो व्रज तज अनत न जाना ॥ ४४ ॥

कृपाकर दरशन दीजो हरी । नित प्रति ठाढ़ी अपनें द्वारे निरखों पंथ खरी ॥ छिन छिन अन्तर बाहर आवों शांत न होत घरी । विरहों अगिन रची प्रति रोमन हाहा दग्ध करी ॥ तेरी लगन लगी मोरे अन्तर नाहिन जात जरी । दुर्नादास प्रभु तुमरे दरश बिन लोटत धरणि परी ॥ ४५ ॥

ऐसी है कोई सखी हमारी मेरे हरिजीको आन मिलावे री । तन मन धन मैं तिसपर वारूं जो इक पल नजरी आवे री ॥ करश्रृङ्गार मैं सेज बिछावों सो मोहि कछु न सुहावे री । अहिनिशि या तनु संकट उपजे तलफत रैनि बिहावे री ॥ क्या करूं मन कहूं न लागत मैं फिरती हूँ प्रेमप्यासी री । दुर्नादास धीरज ना होवे बिन देखे अविनाशी री ॥ ४६ ॥

सुन्दर श्याम देखन दी आशा नयनन बान परी । चार याम मोहि तलफत बीते रहगइ एक घरी ॥ भूषण बसन भवन नहिं भावे बिरह वियोग भरी । दया सखी अब बेगि मिलो क्यों ना हों अकुलात खरी ॥ ४७ ॥

ठुमरी ।

छतियाँ लेहु लगाय सजन अब मत तरसावो रे । तुम बिन तलफत प्राण हमारे नयनन सों बहे जलकी धारे बाढ़ी है तनु बिरह पीर सूरत दिखलावो रे । हरीचन्द पिया गिरिवरधारी पैयां परूं जाऊं बलिहारी अब जिया नहिं धरत धीर जलदी उठि धावो रे ॥ ४८ ॥

राग खमाच ।

सजन मुखड़ा दिखलाजा रे । तेरे दरशनको तरसें हैं नयन बालपनकी लागी लगन छूटत नाहीं करो कोटि यतन दिखलाजा सूरत मोहन जरा बँसिया बजाजा रे ॥ ढूंढ फिरी सारा वन बन में

तऊ न पाये नन्दके नन्दन बिरमाय राखे काहू सौतन रसिया माहाराजा रे ॥ लेकर भसम रमाई बदन सब छाँड़ उतारे भूषण वसन तेरे कारण मैं भई योगिन कुलकी तजि लाजा रे॥जो कछु चूक परी हमपै अब माफ करो नँदके नन्दन श्रीधर पिया आजा जलदीसे मोहिं गरवा लगाजा रे ॥ ४९ ॥

राग विहाग ।

मिलजाना हो प्यारे नन्दकिशोर । देख नजर भर घायल कीनो बांके नयनादी कोर ॥तेरे दरश बिन फिरों दिवानी ढूँढती चहुँ ओर । जानकीदास तुमीं देख हर्षां जैसे चन्द चकोर ॥५०॥

राग परज ।

कबलग तरसाये रहिये पलक ॥ नंदनन्दन ब्रजराज साँवरो दरशन दीजे तनक तनक। बिन दरशन मोहिं नींद न आवे जबते सुनी मुरलीकी भनक ॥ श्यामसुन्दर बांकी माधुरी मूरत आउ मोरे अँगना छनक छनक । जानकीदास बसो जो दृगनमें करि राखों उर नयन पलक ॥ ५१ ॥

राग खेमटा ।

रे निरमोही छबि दरशाय जा । कान चातकी श्याम बिरह घन मुरली मधुर सुनाय जा ॥ ललित किशोरी नयन चकोरन द्युति मुख चंद दिखाय जा । भयो चहत यह प्राण बटोही रूसे पथिक मनाय जा ॥ ५२ ॥

राग बडहंस ।

बिरहोंने नोकां झोकां वे लाइयां कौन असांवल रोके ॥ सो गल मेरी झोली पैंदी जो मैं कहिंदी लोके ॥ अजानी गललावे असानूं तिखीयां नोक चभोके॥वंज वे राही वंज माही वल खडी

उडीकां वाटां ॥ मैं जातासी इशक सुखाला मुसकल इस दीयाँ घातां ॥ मुख देखन नू फिरॉ दिवानी दर दर दंनीहां होके ॥ आखीं माहीं गलबाहिं तुसाडे अरज करां मैं खलोके ॥ इशक तुसाडेने घायल कीती एह गल आँखीं रोके ॥ मूरत मोहनी दसके मेराली तोई मनमोहके ॥ आपे दुम्ब जगायाई मैंनूँ हँसके मुख दिखलाके ॥ जाँ मैं मोही ताँ तू छिप्या विरहांनूँ मोड़भुवाके ॥ इस विरहों में बल बल कुट्टी हमदाहैं पास खलोके । केदर कूकाँ कूक सुनावाँ लाया नेह मैं आपे ॥ जाँ मैं जग विन रोशन होइयाँ रहन न देंदे मापे ॥ दुःखाँ सूलाँदा हार मैं पहिदा हत्थीं आप परोके ॥ मैं दरमाँदी दरश नेरे दी मुख दिखला इक वारी ॥ तैं मुख डिठियाँ सब दुख जाँदे तू नबीब हैं भारी ॥ मुख देखन नू फिराँ दिवानी तेंडी सुहागन होके ॥ बखश खता वे मैं अवगुण हारी तूही बखश अल्लाही ॥ एकोनजर तुसाडी कार्फी दुःख न रहिंदा काई ॥ बरकन नाल साहिब दे बुल्लिया देई दीदार खलोके ॥ ८३ ॥

राग पीलू ।

सुरतिया रे लागरही हरि सों । आवन कह गये अजहूँ न आये बीत गैयाँ बरसों ॥ यह तो जोबन चार दिहाड़े आज कल्ह परसों । अँबुआ मौले कस फूले और फूली है सरसों ॥ ८४ ॥

कवित्त ।

योग देन गयो हो वियोग वारि वारिधिमें, बूड़त बच्यो हो नाथ नारी नैन यूँ बहे ॥ गङ्गा हू सहस्र धार अधिक सुधार जान, बरषा न होय जो रहोग गिरिहू गहे ॥ एतो जल भूमि न समाय कहूँ बारिधिमें, सुनी पै न अच्यो जान कान खोल हौं कहे ॥ कवि प्रहलाद जो मिलाप पाल बांधो नाहि, बटके बटूक पात साँवले भले रहे ॥ ८५ ॥

बहुत दिनानमें विदेश होय आये मेरे, प्यारे मनमोहन बधाये सब गावो री ॥ नाचो रस राचो नीकी नीकी गति लै लै कर, नीकी नीकी भाँतिन सों भावन बतावो री ॥ ताल कठताल औ तमूरा मुरचंगन सों, घुँघरू बजायके मृदंग सों मिलावो री ॥ नन्दके कुमार रिझावारको रिझावो आज, सकल समाज कर रंग सरसावो री ॥ ८६ ॥

विनयके पद ।

दोहा ।

कदम कुंज ह्वै हौं कबै, श्रीवृंदावन मांह । ललित किशोरी लाड़िले, विहरेंगे तिहिं छाँह ॥ कब हौं सेवा कुंजमें ह्वैहौं श्याम तमाल । लतिका कर गहि विरमि हैं, ललित लडैतीलाल ॥ सुमन वाटिका विपिनमें, ह्वै हौं कब मैं फूल । कोमल कर दोउ भावते, धरि हैं बीन दुकूल ॥ कालीदह कब कूलकी, ह्वै हौं त्रिविध समीर । युगुल अंग अँग लागि हौं, उड़ि हैं नूतन चीर ॥ मिलि है कब अँग छार ह्वै, श्रीवन वीथिन धूर । पारि हैं पदपंकज युगुल, मेरी जीवन मूर ॥ कब गहवरकी गलिनमें, फिरि हौं होय चकोर । युगुल चन्द मुख निरखि हौं, नागरि नवलकिशोर ॥ कब कालिन्दी कूलकी, ह्वै हौं तरुवर डार । ललितकिशोरी लाडिले, झूलैं झूला डार ॥ श्यामा पद दृढ गहि सखी, मिलि हैं निश्चय श्याम । ना माने हग देखले, श्यामा पद बिच श्याम ॥ ८७ ॥

कवित्त ।

दीनबन्धु दीनानाथ ब्रजनाथ रमानाथ, राधानाथ मो अनाथकी सहाय कीजिये । तात मात भ्रात कुलदेव गुरुदेव स्वामी, नातो तुमहीसों मो विनय सुन लीजिये ॥ रीझिये निहाल देर कीजिये न झीनी कहूँ, दीन जान दास मोहिं आपनाय लीजिये। की-

जिये कृपा कृपाल साँवरे विहारी लाल, मेटि दुख जाल बास वृन्दावन दीजिये ॥

गिरि कीजै गोधन मयूर नव कुंजनको, पशु कीजै महाराज नन्दके बगर को ॥ नग कीजे तौन जौन राधे राधे नाम रटै, तट कीजै वर कूल कालिंदी कगर को॥इतनेपै जोई कछु कीजिये कुँवर कान्ह, राखिये न आन फेर हठीके झगर को ॥ गोपी पद पंकज पराग कीजै महाराज, तृण कीजे रावरेई गोकुल नगर को॥५८॥

सवैया ।

मानुषहोहुँ वही रसखानि बसौं मिलि गोकुल गांवके ग्वारन । जो पशु होउँ कहा बस मेरो चरौं पुनि नन्दकि धेनु मंझारन ॥ पाहन होहुँ वही गिरिको जो कियो ब्रज छत्र पुरन्दर धारन । जो खग होउँ बसेरो करौं वहि कूल कालिंदी कदम्बकि डारन ॥५९॥

राग चैतीगौरी ।

यमुना पुलिन कुञ्ज गहवरकी कोकिल ह्वै द्रुम कूक मचाऊँ । पदपंकज प्रिय लाल मधुपह्वै मधुरे मधुरे गुंज सुनाऊं ॥ कूकर ह्वै बन बीथिन डोलों बचे सीथ रसिकनके पाऊं । ललित किशोरी आश यही मम ब्रज रज तज छिन अनत न जाऊं ॥ ६० ॥

राग देश ।

अब बिलंब जिन करो लडिलो कृपादृष्टि टुक हेरो । यमुना पुलिन गलिन गहवरकी विचरूं सांझ सवेरो ॥ निशिदिन निरखों युगल माधुरी रसिकनते भटभेरो । ललित किशोरी तन मन अकुलत श्रीवन चहत बसेरो ॥ ६१ ॥

राग यमन ।

प्यारी जी मोतनहूँ टुक हेरो । श्रीवन द्रुमन लतनके नीचे रसमय चहूँ गान गुन तेरो ॥ आन न जानों अन्य न मानों तूहीं कृपापद

साधन मेरो । ललित माधुरी आश पुरावो अब जिन करो इहा अबसेरो ॥ ६२ ॥

कवित्त ।

एक रज रेणुका पै चिंतामणि वारि डारों, वारि डारों विश्वसेवा कुञ्जके विहार पै ॥ लतनके पत्तन पै कोटि कल्प वारिडारों रंभाहूको वारि डारों गोपिनके द्वारपे ॥ ब्रजकी पनिहारन पै शची रची वारि डारों, बैकुण्ठहू वारि डारों कालिंदीकी धार पै । कहै अभैराम एक राधाजूको जानतहों देवनको वारि डारों नन्दके कुमार पै ॥ ६३ ॥

राग झिंझोटी ।

जो कोउ वृंदावन रस चाखे । भवन चतुर्दश तिहूँ लोक लौं सुपनेहुँ नहिं अभिलाखे ॥ ललित किशोरी पर कोनमें श्याम राधिका भाखै । युगल रूप बिन पलक न खोले लोभ दिखावो लाखे ॥ ६४ ॥

राग धनाश्री ।

हमारे श्रीवृन्दावन उर ओर । माया काल तहां नहिं व्यापै जहां रसिक शिरमोर ॥ छूट जात सत असत वासना मनकी दौरा दौर । भगवत रसिक बतायो श्रीगुरु अमल अलौकिक ठौर ॥ ६५ ॥

ऐसे बसिये ब्रजकी बीथन । साधुनके पनवारे चुन चुन उदर जो भरिये सीथन ॥ पैंडेके सब वृक्ष विराजत छाया परम पुनीतन । कुंज कुंज प्रति लोट लोट कर रज लागे रंगरीतन ॥ निशिदिन निरख यशोदा नन्दन अरु यमुना जल पीतन । परशत सूर होत तनु पावन दर्शन करत अतीतन ॥ ६६ ॥

राग बिलावल ।

कहा करूं बैकुण्ठहिं जाय । जहँ नहिं नन्द जहां न यशोदा जहाँ न गोपी ग्वाल न गाय ॥ जहां न जल यमुनाको निर्मल

और नहीं कदमन की छाय । परमानन्द प्रभु चतुर ग्वालिनी ब्रज रज तज मेरी जाय बलाय ॥ ६७ ॥

राग गौरी ।

ब्रजरज मोहनी हम जानी । मोहन कुंज मोहन श्रीवृन्दावन मोहन यमुना पानी ॥ मोहनी नारि सकल गोकुलकी बोलत अम्मृत वानी । श्रीभटके प्रभु मोहन नागर मोहनी राधा रानी ॥ ६८ ॥

राग शहानो ।

धनि धनि श्रीवृंदावन धाम । जाकी महिमा वेद बखानत सब-विधि पूरणकाम ॥ आश करत हैं जाकी रजकी ब्रह्मादिक सुर-ग्राम । लाडिली लाल जहां नित विहरत रति पति छबि अभि-राम॥रसिकन को जीवन धन कहियत मंगल आठो याम । नारायण विन कृपा युगल वर छिन न मिलै विश्राम ॥ ६९ ॥

राग दादरा ।

ऐसो कब करिहैं मन मेरो । कर करवा गुञ्जनके हरवा कुंजन माहिं वसेरो ॥ व्रजवासिनके टूक झूंठ अरु घर घर छाँछ महेरो । भूख लगे तब मांग खाय हों गिनों न सांझ सबेरो॥इतनी आश व्यासकी पुजियं मेरो गांव न खेरो ॥ ७० ॥

राग परज ।

भजो मन वृन्दावन सुखदाई । अवनी कनक सुहाई ॥ अवनी कनक सुरंग चित्र छबि कालिंदी मणि कूलें । रतन रहे भर पाय सखी यह कंचनके द्रुम मूलें ॥ जलज थलज रहे विकस जहां तहँ वरण वरण छबि छाई । सहज रैन सुखदैन विराजत वृन्दावन सुखदाई ॥भजो०॥ राजत नवल निकुंजहिं । लालन निरख होत

सुख पुंजहिं । निरख होत सुख पुंज कमल दल रचि है सुन्दर सैन । बहत समीर त्रिविध गुण लीने आकर्षत मन मैन ॥ डोलत केक कीर पिक बोलत जित तित मधुवन गुंजहिं । रत्न खचिर फूलन सों फूली राजत नवल निकुंजहिं ॥ भजो० ॥ करत निकुंज बिहार । सखियन प्राण अधार रसिक वर नवल किशोर किशोरी । हँस मुर चित चोरत प्यारेको सभ अंग नागर गोरी ॥ अति विलास नव नव रुचि उपजत वल किंकिणी झंकार । अति प्रवीन रति कोक कलनमें करत निकुंज विहार ॥ भजो० ॥ निरखे निरखे बल जाई । श्रम जल कण झलकाई ॥ श्रम जल कण रहे झलक बदन बिच कहुं कहुं पीक जु सोहे । हंस मुर चित चोरत प्यारेको ऐसी को जु न मोहे ॥ नितहि निह्व रजनीके सजनी नयननमें मुसकाई । जै श्रीहित ध्रुव सखी सरस रंग भीनी निरखे निरखे बल जाई ॥ भजो ॥ ७१ ॥

राग विहार ।

वृन्दावन विपिन सघन वंशीवट पुलिन रमन निधि वन कोकिला वन मोहन मन भावे । सेवा कुंज सुखको पुंज जहां राजत पिया प्यारी ललितादिक संग लिये उमँग उमँग गावे ॥ यमुना जल अति गंभीर कदमनकी जहां भीर ललित लता कुसुम भार अपने बरसावे । हंस मोर कोकिला पपीहा जहां शब्द करें पशु पक्षी दास कान्हर राधा कृष्ण राधा कृष्ण राधा कृष्ण गावे ॥ ७२ ॥

राग धनाश्री ।

नमो नमो वृन्दावनचंद । आदि अनन्त अनादि एक रस पिय-प्यारी विहरत स्वच्छन्द ॥ सत चित आनंद रूप घन खग मृग द्रुम वेली और वृन्द । भगवत रसिक निरन्तर सेवत मधुप भये पीवत मकरन्द ॥ ७३ ॥

कवित्त ।

नन्दके आनन्दहो मुकुन्द पर्मानंद हरि, काटो यमफन्द मोहिं भयसों बचाइये । नहीं जानो ज्ञान ध्यान योग यज्ञ नाहिं कियो, भरयो मान अहंकार कैसे तोहिं ध्याइये ॥ सुनो कृष्ण हरी जैसी करी सो करी दयालु, तैसे दीन जान मेरी पीरको मिटाइये । सुख- के निधान दान दीजे प्रेम भक्ति हू को, चरणन चित्त मयारामको लगाइये ॥ ७४ ॥

जानके पतित तारे आनके विरद धारे, काढो भुजा तानके कहाँसो देर डारी है ॥ तारयो है सुदामा यार उबारयो है प्रहलाद, द्रौपदीकी लाज रखी सभा देखै सारी है ॥ गज नेक ध्यायो प्रभु छोडि धायो गरुडहू, ब्रजको बचायो ताते नाम गिरिधारीहै॥दास तो पुकारे प्रभु काटि कष्ट कोटि भारे, अरजी हमारी आगे मरजी तिहारी है ॥ ७८ ॥

आप सब नेरे और दूरकी पछाननहो, छिपी नाहिं कुरकी रु साहिब शऊर की ॥ निकुता निवाजी कर राजी छिन ही में होत, कर इतराजी नाहिं सुनिके कसूरकी । तुमसो न दूसरो दयालु श्रीविहारी लाल, आहि लाज आवे निज जनके जरूर की॥गरजी विचारे को तो अरजी किये ही बने, माननी न माननी सो मरजी हुजूरकी ॥ ७८ ॥

दीनानाथ दयासिंधु आरत हरण भारी, द्रौपदी उबारी तैसे मोहूको उबार ल्यो । गणिका उबारी गज संकट निवारी,प्रहलाद हितकारी दुख दारुण निवार ल्यो ॥ गौतमकी तिय तारी चरणन रज धारी, गऊ हितकारी भवसागर उधार ल्यो । टेरे प्रभु नन्दलाल दीनबंधु भक्तपाल, करुणा कृपाल लाल विरद सम्हार ल्यो ॥ ७७ ॥

मैं तो हूँ पतित आप पावन पतित नाथ, पावन पतित हो तो पातक हरोइंगे॥मैं तो महादीन आप दीनबंधु दीनानाथ, दीनबंधु हो तो दया जीयमें धरोइंगे ॥ मैं तो हूँ गरीब आप तारक गरीब-नके,तारक गरीब हो तो विरद बरोइंगे ॥ मेरी करणीपै कछु मुकर न काज कान्ह, करुणा निधान हो तो करुणा करोइंगे ॥ ७८ ॥

श्याम घन तन पर बिज्जुसे दशन पर, माधुरी हँसन पर खिलत खरी रहे ॥ खौर बारे भाल पर लोचन विशाल पर, उर वनमाल पर जुगत जरी रहे ॥ जंघ युग जानु पर मंजु मुर-वान पर, श्रीपति सुजान मति प्रेम सों परी रहे॥ नूपुर नगन पर कञ्जसे पगन पर, आनन्द मगन मेरी लगन लगीरहे ॥ ७९ ॥

जौन हाथ वामन हो बलि द्वारे दान मांग्यो,जौन हाथ कूबरी मिलाई गहि गात सों॥ जौन हाथ प्रहलाद तातसों उबार लीनो, जौन हाथ कंस मारचो बलभद्र साथ सों ॥ जौन हाथ गोपिनको गिरिवर ओट कीनो,जौन हाथ कालीनाग नाथ्यो परजात सों॥ हौं तो कहूं बार बार सुनो नाथ एक बार, वही हाथ गहो मोको हाथीवाले हाथ सों ॥ ८० ॥

सवैया ।

दीनदयालु सुने जब ते तबते, मनमें कछु ऐसी बसी है ॥
तेरो कहायके जाऊँ कहां, तुमरे हितकी पट खैंचि कसी है ॥
तेरो ही आसरो एक मलूक, नहीं प्रभु सों कोउ दूजो यसी है ॥
एहो मुरारि पुकार कहों अब, मेरी हँसी नहिं तेरी हँसी है॥८१॥

कवित्त ।

मोरके मुकुट वारो धरे वेश नटवारो, छुटी लोल लट वारो जगत उज्यारो है॥सांवरे वरन वारो मुरली धरन वारो,संकट हरन वारो नन्दजूको प्यारो है॥दानव दलनवारो छविको छलन वारो,

मन्दसी चलन वारो पोखी उर धारे हैं ॥ कञ्जसे चखन वारे भृगुलता लख वारे, मोरपच्छ वारे मो हमारे रखवारेहैं ॥८२॥

देवहग तारे तोहिं गावें वेद चारे तारे, पतित अनेक जेते नभमें न तारे हैं॥ रतनारे नैननते नेकहू निहारे नाथ कोटि कोटि दीन-नके दारिद बिदारे हैं ॥ श्रीपति पुकारे कहे नीरद बरन वारे. राधाजूके प्राणप्यारे यशुदाके वारे हैं ॥ नन्दके दुलारे धराधरके धरन हारे, मोरपच्छवारे मो हमारे रखवारे हैं ॥ ८३ ॥

राग जंगला ।

श्याम सुन्दर मनमोहनी मूरत सुन्दर रूप उजारी रे । चरण-कमल पिंडुरी जंघन पर मोहन कटि लचकारी रे ॥ नाभि गँभीर हृदय अतिकोमल कृपासिंधु बनवारी रे । भुज आजानु कर न बिच बंसी लकुट लिये गिरिधारी रे ॥ ग्रीव चिबुक मृदु हँसन मनोहर हौं लखि छवि बलिहारी रे । नासा नयन भौंह अति बांकी जिन मोही ब्रजनारी रे ॥ श्रवण कपोलन पर छूटी वे नागिन लट बल-हारी रे। भाल विशाल पेच शिर जटा मुकुट झुलन सुखकारी रे ॥ युगल किशोर मोरपख धारी अब क्या सुरत विसारी रे ॥ ८४ ॥

राग भैरवी ।

मेरी तो बिहारी जी प्यारे तोहिं लाज । माया फन्द गलेमें डारयो जग भर्मायो व काज ॥ भवसागरके पार जानको पायो नाम जहाज । बलिहारीका बेडा पार उतारो अपनो जान ब्रजराज ॥ ८५ ॥

राग बिलावल ।

माधो जू जो जन ते बिगरै । सुन कृपालु करुणामय कबहूँ प्रभु नहिं चित्त धरै ॥ ज्यों शिशु जननि जठर अनरगन शत अपराध करै । तऊ तनय तनु तोष पोष चित बिहँसन अंक भरै ॥ यदपि

विटप जड हतन हेत कर कर कुठार पकरै । तदपि स्वभाव सुशील सुशीतल रिपु तनु ताप हरै ॥ कारण करन अनन्त अजित कह किहिविधि चरण परै । यह कलिकाल चलत नहिं मोपै सूर शरण उबरै ॥ ८६ ॥

राग भैरवी ।

जे जन शरण गये ते तारे । दीनदयालु प्रगट पुरुषोत्तम सुनिये नन्ददुलारे ॥ माला कण्ठ तिलक माथे दे शंख चक्र वपु धारे । जितने रवि छायाके कनका तितने दोष हमारे ॥ तुम्हरे दरश प्रताप तेज ते तत्क्षण ते सब टारे । मानिकचन्द प्रभुके गुण ऐसे महापतित निस्तारे ॥ ८७ ॥

राग बरवा ।

शरण गये प्रभु को न उबारे । जित जित भीर परी भक्तनको चक्र सुदर्शन तहाँ सम्हारे ॥ महाप्रसाद बैठ अम्बरीषहिं दुर्वासाको कोप निवारे । ग्राह ग्रसत गजको जल डूबत नाम लेत वाको दुःख टारे ॥ सूर श्याम बिन करे और को रंगभूमिमें कंस पछारे ॥८८॥

राग बिलावल ।

अबके माधो मोहिं उधार । मगन होत भवसिन्धुमें कृपासिन्धु मुरार ॥ नीर अति गंभीर माया मोह लहर तरंग । लिये जात अगाधको वर गहे ग्राह अनंग ॥ मीन इंद्रिय अतिहिं काटत पेट अघ शिर भार । भूमि पाइन जात जितकित उरझ मोह सिवार ॥ क्रोध दंभ भयानक तृष्णा पवन अति झकझोर । नाहिं चितवत देत सुत त्रिय नाम नौका ओर ॥ परचो बीच विहाल विह्वल सुनहु करुणामूल । श्याम भुज गहि काढि डारहु सूर जन ब्रजकूल ॥ ८९ ॥

राग धनाश्री।

कबहूँ नाहिंन गहर कियो। सदा स्वभाव सुलभ सुमिरण वश भक्तन अभय दियो॥ गाय गोप गोपी जन कारण गिरि कर-कमल लियो। अघ अरिष्ट केशी काली मथ दावा अनल पियो॥ कंसवंश वध जरासन्ध हति गुरुसुत आन दियो। कर्षत सभा द्रुपदतनयाको अंबर आन छियो॥ काकी शरण जाउँ यदुनन्दन नाहिंन और बियो। सूर श्याम सर्वज्ञ कृपानिधि करुणा मृदुल हियो॥ ९०॥

अब हौं नाच्यो बहुत गुपाल। काम क्रोध को पहर चोलना कण्ठ विषयकी माल॥ महा मोहके नूपुर बाजत निन्दा शब्द रसाल। तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधिकी ताल॥ मायाको कटि फेंटा बाँध्यो लोभ तिलक दियो भाल। कोटिक कला नाच दिखराई जल थल सुध नहिं काल॥ सूरदासकी सबी अविद्या दूर करो नंदलाल॥ ९१॥

राग कल्याण।

तुम्हारे आगे हौं बहुत नच्यो। सुनिये दीनदयालु देव मणि बहुबड़ रूप रच्यो॥ कियो स्वाँग जल हू थलहू में एकौ तौ न बच्यो। शोध सबै गुण गूढ़ दिखाये अन्तर हो जु सच्यो॥ रीझत नाहिं गोविंद गुसाईं कह कछु जाय जच्यो। इतनी तो कहो सूर पुरोदै काहे मरत पच्यो॥ ९२॥

राग टोडी।

दीनन दुख हरन देव सन्तन हितकारी। अजामील गीध व्याध इनमें कहो कौन साध पक्षीहू पद पढ़ात गणिका सी तारी॥ ध्रुवके शिर छत्र देत प्रहलादको उबार लेत भक्त हेत बाँध्यो सेत लङ्कपुरी जारी। तन्दुल देत रीझ जात साग पातसों अघात

गिनत नाहीं जूँठे फल खाटे मीठे खारी ॥ गजको जब ग्राह ग्रस्यो दुःशासन चीर खस्यो सभा बीच कृष्ण कृष्ण द्रौपदी पुकारी । इतनेमें हरि आयगये वचनन आरूढ भये सूरदास द्वारे ठाढो आँधरो भिखारी ॥ ९३ ॥

मोसम कौन कुटिल खल कामी । जिन तनु दियो ताहि बिसरायो ऐसो निमक हरामी ॥ भर भर उदर विषयको धावों जैसे शूकर ग्रामी । हरिजन छांड़ हरी विमुखनकी निशिदिन करत गुलामी ॥ पापी कौन बडो है मोते सब पतितनमें नामी । सूर पतितको ठौर कहाँ है सुनिये श्रीपति स्वामी ॥ ९४ ॥

राग झिझोटी ।

मोसम कौन अधम जग माहीं । भ्रमत रहत नित विषय वासना तज निधि वन द्रुम बेलिन छाहीं ॥ चिंतन करत न ललित किशोरी युगल लाल दीने गरबाहीं । निरखत नवल नागरी ललना लालन करत मुकुट परछाहीं ॥ ९५ ॥

राग धनाश्री ।

मेरी सुध लीजो श्रीनन्दकुमार । अधम उधारन नाम तिहारो मैं अधमन सरदार ॥ अजामील गज गणिका तारी दुर्जन और अपार । शोभन जनकी तारन बिरियां लाई एती बार ॥ ९६ ॥

मेरी सुध लीजो श्रीब्रजराज । और नहीं जगमें कोउ मेरो तुमहिं सुधारन काज ॥ गणिका गीध अजामिल तारे औ शबरी गजराज ॥ सूर पतित तुम पतित उधारन बांह गहेकी लाज ॥ ९७ ॥

राग बिलावल ।

तुम गुपाल मोसों बहुत करी । नरदेही सुमिरणको दीनी मो पापीसे कछु न सरी ॥ गर्भवास अतित्रास अधोमुख ताहि न मेरी सुधि बिसरी । पावक जठर जरन नहिं दीनों कंचन सी मेरी देह

करी ॥ जगमें जन्मि पाप बहु कीने आदि अंतलौं सब बिगरी । सूर पतित तुम पतित उधारन अपने विरद कि लाज धरी ॥ ९८ ॥

राग पीलू ।

टुक नजर मिहर दी देख अमांवल सांवरो गिरिधारी। चरण-सपरश अहल्या तारी द्रुपदसुताकी लज्जा राखी पाप करंती गणिका तारी शोच कहाँ मेरी बारी ॥ भक्त सुदामाके दारिद्र विदारे जलडूबत गजराज उबारे अजामीलसे पापी तारे हमरी कहा विचारी। सकल धरणिको भार उतारे लंकापति रावण तें मारे हरणाकुश नख उदर विदारे महादुष्ट बलकारी ॥ भीर समय प्रभु लेत बचाई वाहन तज पांयन उठ धाई निज भक्तनके सदा सहाई सुध लेहु वेग हमारी।नाम सुजानराय तेरो कहिये निशिदिन चरण शरण तेरी रहिये मनकी व्यथा सब तुमहिं सुनैये सूरदास बलिहारी ॥ ९९ ॥

राग देश सोरठ ।

हमारे प्रभु अवगुण चित न धरो ॥ समदरशी है नाम तिहारो चाहे तो पार करो ॥ इक नदिया इक नाल कहावत मैलो नीर भरो। जब मिल करके एक वर्ण भये सुरसरि नाम परो ॥ इक लोहा पूजामें राख्यो इक गृह बधिक परो । पारस गुण अवगुण नहिं चितवे कंचन करत खरो ॥ यह माया भ्रमजाल निवारो सूरदास सगरो। अबकी बेर मोहिं पार उतारो नहिं प्रण जात टरो ॥ १०० ॥

राग सोरठ ।

म्हाने पार उतारो जी थाने निज भक्तनकी आन। हमरे अवगुण नेक न चितवो अपनो ही कर जान ॥ काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह वश भूल्यो पद निर्वान। अब तो शरण गही चरणनकी मत दीजो मोहिं जान ॥ लाख चुरासी भरमत भरमत नेक न परी पछान। भवसागरमें बह्यो जात हौं राखिये श्यामसुजान ॥

हौं तो कुटिल अधम अपराधी नहिं सुमिरचो तेरो नाम । नरसीके प्रभु अधम उधारन गावत वेद पुरान ॥ १०१ ॥

राग बडहंस ।

कहोजी कैसे तारोगे मेरो औगुण भरचो शरीर ॥ रंका तारचो बंका तारचो तारचो मदन कसाई । सुआ पढ़ावत गणिका तारी तारी मीराबाई ॥ धन्ने भक्तका खेत जमाया नामे छान छवाई । सैन भक्तकी विपति निवारी आप भये प्रभु नाई ॥ वृन्दावनकी कुंजगलिनमें लगी श्यामसे डोर । अबकी बेर उबारो प्यारे लीनी कबीरने ओट ॥ १०२ ॥

राग देश सोरठ ।

सुन लीजे विनती मोरी । मैं शरण गही प्रभु तोरी ॥ तैं पतित अनेक उधारे । भवसागर पार उतारे ॥ मैं सबका नाम न जानूं । मैं कोई कोई भक्त बखानूं ॥ अम्बरीष सुदामा नामा । पहुँचाये हैं निज धामा ॥ ध्रुव पांच बरसका बाला । तैं दर्श दियो नँदलाला ॥ धन्नेका खेत जमाया । कबीर घर बैल लयाया ॥ शबरीके तैं फल खाये । सब काज किये मन भाये ॥ सदनाते सैना नाई । तैं बहुत करी अपनाई ॥ कर्माकी खिचडी खाई । तैं गणिका पार लगाई ॥ मीरा तुम्हरे रँगराती । यह जानत हौं सब भाँती ॥ चरणदास तेरो यश गावे । फिर जन्म मरण नहिं पावे ॥ १०३ ॥

राग कान्हरो ।

ऐसी कब करिहो गोपाल । मनसा नाथ मनोरथ दाता हो प्रभु दीनदयाल ॥ चित चरणन जु निरन्तर अनुरत रसना चरित रसाल । लोचन सजल प्रेम पुलकित तन कर कञ्चन दल माल ॥ ऐसी रहन लिखत छिन छिन यम अपनो भायो भाल । सूर सुयश रागी न डरत मन सुन यातना कराल ॥ १०४ ॥

राग झंझोटी ।

राधा रमण चरण जो पाऊँ । शुक समान दृढ कर गहि राखों नलिनी सम दुलराऊं ॥ सौरभ युत मकरन्द कमल वर शीतल हीय लगाऊं । बिरह जनित दृग तपन किशोरी सहजै निरखि नशाऊं ॥ १०५ ॥

राग सारंग ।

आनंदकन्द सुख निधान दीनानाथ भक्तपाल शोभासिंधु राखो मान अनेक विघन टारिये जी । जहां जहां परी भीर तहां तहां धरी धीर गरुड छोड़ नंगे धाये ऐसी कृपा धारिये जी ॥ द्रौपदीको दिये चीर काटन प्रभु जनकी पीर भक्त हेतु रूप धार अपनो जन तारिये जी । कहत है महीधर दास चाहत प्रभु पद निवास जन्म जन्म शरण तेरी भवसिंधुसे उबारिये जी ॥१०६॥

राग प्रभाती ।

नामकी पैज राखी धनी । संकट काट निवाज करे गिनत न जाय गिनी ॥ खंभाते प्रह्लाद छुडाये द्रौपदीके पुनि चीर बढ़ाये गजके फंदन काट निकाले सुननहि देर करी । नामदेवको राऊ जिवाई धन्नेके दूध पिया जाई सुदामाके मन्दिर ऊंचे साज सुरत-सों सुरत बनी ॥ कबीर गरब गयरसे लीने सूर भक्तको दर्शन दीने पीपा बीच सभा कर सांचा दियो मिलाय जनी । जयदेवकी अष्टपदी विचारी मीराबाईको जहर निवारी रामदासको कनक जनेऊ दीना ऐसे दयालु धनी ॥ भीलनीते लै बनफल खाये त्रिलोचनके ब्रतिया हो धाये अंबरीष भक्तको वरन रखायो चक्रकी फेर अनी । कर्माबाईकी खिचडी लीनी सेनको जाय प्रतिज्ञा दीनी ध्रुव राख्यो अटल द्वारे लागी प्रीति घनी ॥ सुवा पढावत

गनिका तारी अहल्या चरणन लाय उधारी नानक बेदी कियो हजूरी राख्यो लाय तनी । दुनीदास प्रभु सन्तसहाई असुर सँहारत बेगहि आई ताको नाम हृदयमें राखो सुमिरो एक मनी ॥ १०७ ॥

राग भूपाली जंगला ।

गजकी बाणी सुनके सिंहासन तजि उठ धाये महाराज ॥
श्री श्री श्री चक्रन भई सुनके खगपति पार न पाये महाराज ॥
कटिको पीतांबर कहूं गिरोहै तनुकी सुध बिसराये महाराज ॥
ग्राह मार गजराज उबारयो सुरन सुमन झर लाये महाराज ॥
रत्न हरी शरण तिहारी नाम तिहारो नित गाये महाराज ॥ १०८ ॥

राग बिहाग ।

दीन भयो गजराज हीन भयो बलहूंते टूट गयो मान टेरयो हरी हरी करके ॥ पौढे प्रभु रमा संग पीत पट राते रंग सोये उठ धाये नाथ नयन आये भरके ॥ आधीरात धाये नाथ चक्र सुदर्शन लिये हाथ तोड दीन तंदुबाको जरी जरी करके ॥ तुलसीदास त्रिलोकी नाथ भक्तनके सदा साथ गरुड़ छोड़ धाये नाथ करी करी करके ॥ १०९ ॥

चौपाई छंद ।

द्रौपदि धारयो ध्यान जबहिं मन आतुर होई । तुम बिन श्रीनन्द लाल और मेरो नहिं कोई ॥ बूड़तहों दुखसिंधुमें, शरण द्वारकानाथ ॥ त्राहि त्राहि सुध लीजिये, अब मैं भई अनाथ ॥ हाय हाय यदुनाथ हाय गोवर्द्धन धारी । हाय हाय बलबीर हाय श्रीकुंजबिहारी ॥ हाय हाय राधारमण, हा श्रीकृष्ण मुरार । हाय हाय रक्षा करो, श्रीब्रजराज दुलार ॥ शरन शरन सुखधाम शरन दुख भंजन स्वामी । शरन शरन रक्षपाल शरन प्रभु अन्तरयामी ॥ शरनपरी

मैं हारके,शरणागत प्रतिपाल। लज्जा राखो दासकी, दीनानाथ दयाल॥भीर परी प्रह्लाद रूप नरसिंह बनायो। गजने करी पुकार पाँय प्यादे उठ धायो॥ दुर्वासा अम्बरीष हित, जिन जन करी सहाय। कौन अवज्ञा दासकी, विलम करी यदुराय॥ युग युग भक्त सहाय पैज तिनकी तुम राखी। सबही कहत पुराण वेद स्मृति मुनि साखी॥ मैं तो दासी चरणकी, जानत सब संसार। विरद आपनो जानके, लज्जा राख मुरार॥ अन्तर्यामी श्याम बेर इतनी क्यों लाई। कासे करूँ पुकार ताहि तुम देहु बताई॥तुम माता तुम पिता तुम, बांधव सुहृद सुवीर। तुम बिन मेरो कौन है, जाहि सुनाऊँ पीर॥ नगर द्वारका माहि मार खेलत गिरिधारी। जानी श्रीबलबीर दीन होय दासि पुकारी॥ नयन रहे जल परके, पासा डार अनन्त। पचहारी सेना सकल, चीर न आयो अन्त॥ नग्न न होई द्रौपदी, रक्षा करी मुरार। पुष्प देव वर्षा करी, जय जय शब्द उचार॥ ११०॥

राग धनाश्री।

लज्जा मोरी राखो श्याम हरी। कीनो कठिन दुशासन मोसे गहि केशों पकरी॥ आगे सभा दुष्ट दुर्योधन चाहत नग्न करी। पाँचों पाण्डव सब बल हारे तिनसों कछु न सरी॥ भीषम द्रोण विदुर भए विस्मय तिन सब मौन धरी। अब नहिं मात पिता सुत बांधव एक टेक तुम्हरी॥ बसन प्रवाह किये करुणानिधि सेना हार परी। सूर श्याम जब सिंह शरणाई स्यालोंको काहि डरी॥ १११॥

राग भैरवी।

पति राखो मोरी श्याम विहारी। बनवारी गिरिधारी श्रीकृष्ण मुरारी॥ शूर समूह भूप सब बैठे भीषम द्रोण कर्ण व्रतधारी।

कहि न सकै कोउ बात परस्पर इन पतितन मेरी अपत विचारी ॥ बल विहीन पांडव सुत डोलैं भीम गदा करसों महि डारी । रही न पैज प्रबल पारथकी जबमें धरणि धर्मसुत हारी ॥ लाक्षागृहते जरत उबारयो नाथ तुम्हं छोड़ कहिं हौं पुकारी । अबलग नाथ नाहिं कछु बिगरयो उघरत माथ अनाथ पुकारी ॥ छूटत लाज दास दामिनकी बहुरि आय का करिहो मुरारी । सूरके स्वामी वेगि दरश देव फिरि पछितैहौ देख उघारी ॥ ११२ ॥

भजन ।

जब पट गह्यो दुशासन करसों । इत उत चितै सकुच कमठी जिमि करत पुकार राधिका बरसों ॥ हो यदुनाथ अनाथ होतहौं कुल परिवार सभापति वरसों । बूड़त वेग बाँह गहि राखो दीनानाथ दुःखके सरसों ॥ हो भगवन्त अन्त पछितैहो बहुरि मिलोगे आय नर हरिसों । युगल करि मानो वसन पूतरी लई लपट शीश पद करसों ॥ ११३ ॥

कवित्त ।

दुर्जन दुशासन दुकूल गह्यो दीनबंधु, दीन ह्वैके द्रुपददुलारी यों पुकारी है ॥ आपनो सबल छाँड ठाढे पति पारथसे, भीम महा भीम ग्रीवा नीचे करडारी है ॥ अंबर लौं अंबर पहाड कीनो शेष कवि, भीषम करण द्रोण सभी यों विचारी है । सारी मध्य नारी है कि नारी मध्य सारी है कि, सारी है कि नारी है कि नारी है कि सारी है ॥ ११४ ॥

राग देश ।

मेरे माधोजी आयों हौं सरे । तेरा बार बार यश गाऊँ साँवरे आयों हौं सरे ॥ करुणा करे लिखे गुणवन्ती यह मनमें उच्चरे । लिख पतिया द्विज हाथ पठाऊँ द्वारका गमन करे ॥ लगन लि-

खाय चँदेरीको भेजा कागज मेल धरे। रुकमैया जब मानत नाहीं कूडे वचन करे ॥ दल जोडे शिशुपाल जो आये लश्कर घेर खडे। पदमके स्वामी वेग पधारो रुक्मिणि याद करे ॥ ११५ ॥

राग धनाश्री ।

म्हारी सुध लीजो हो त्रिभुवन धनी। छोंनी दल शिशुपाल ले आयो तुम अजहूँ न सुनी ॥ कुंडिनपुरको घेर लियो है गाढी विपति घनी। हौं हठ ठान रही अपने जिय खाय मरूंगी कनी ॥ ताके सङ्ग जीवत नहिं जैहौं यह निश्चय मति ठनी । थोरीसे बहुती कर जानो और कहांको धनी ॥ विष्णुदास पर कृपा कीजिये रख लीजे रुकमनी ॥ ११६ ॥

राग आसवरी ।

सन्तन प्रतिपाल राखो लाज हरि मेरी । पिता कहै मैं व्याहूं द्वारका भैया कहत चन्देरी ॥ लिख लिख पतियां रुक्मिणि भेजे दासी तडफ रही तेरी। इत दल जोड शिशुपाल आयो व्याहनको बरजोरी ॥ जब शिशुपाल वेदीपर बैठे जल बल हो जाऊं ढेरी। सिंहका शिकार स्यार लिये जात है यह गति भई अब मेरी। जो मेरेको बर ले जावे क्या पति रहजाय तेरी ॥ कुंडिनपुरमें अम्बिका देवी पूजन जात सबेरी। पदमके स्वामी अन्तर्यामी वेग खबर लीजे मेरी ॥ ११७ ॥

राग सोरठ ।

सुन अलकां वाले कृष्णजी मोरे मनमें आन बसो। जरद बाना पहरके शिर मुकुटको कसो ॥ चलतेहो टेढी चाल मत घायल मुझे करो। शिवगिरिकी अरज मानिये दीनानाथ हरे । महाराज तेरी कृपासे कई कोटि पतित तरे ॥ ११८ ॥

राग झपताल।

मो मन बसो श्यामा श्याम। श्याम तन मन श्याम कामर मालकी मणि श्याम ॥ श्याम अञ्जन श्याम भूषण वसनहैं अति-श्याम। श्यामा श्यामके प्रेम भीने गोविंद जन भये श्याम ११९

राग आसावरी।

संकट काट मुरारी हमरे संकट काट मुरारी। संकटमें एक संकट उपज्यो अरज करे मृग नारी ॥ इक ढिग बावर जाय गड-रिया इक ढिग श्वान विहारी॥ इक ढिग जा अग माडी इक ढिग जा बैठयो फन्द कारी॥ उलटी पवन बावरको लागी श्वान गयो ससकारी। बरनीसे भुवङ्ग जो निकस्यो तिन डस्यो फन्दकारी॥ नाचत कूदत हरनी निकसी भली करी गिरिधारी। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको चरण कमल बलिहारी॥ १२०॥

बन्धन काट मुरारी हमरे बंधन काट मुरारी। ग्राह गजराज लेंड जल भीतर ले गयो अंबु मँझारी॥ गजकी टेर सुनी यदुन-न्दन तजी गरुड़ असवारी॥ पांचली कारण प्रभु मोरे पग धार्यो गिरिधारी॥ पट शठ खैंचत निकसत नाहीं सकल सभा पचहारी। चरण सपर्श परमपद पायो गौतम ऋषिकी नारी॥ गणिका शबरी इन गति पाई बैठ विमान सिधारी॥ सुन सुन सुयश सदा भक्तन को सुखसों भज्यो इक बारी। विधीचन्द दर्शनको प्यासो लीजिये सुरत हमारी॥ १२१॥

राग कान्हरा।

दीजे दरश मोहिं चतुर भुजनकर। शङ्ख चक्र गदा पद्म धारिये पीतांबर ओढंबर साजे गल मोतियनकी माल मनोहर॥१२२॥

राग टोडी ।

तुम बिन श्रीकृष्ण देव और कौन मेरो । कई अनेक ऐरावत ऐसो बल मेरो॥मैं तो अभिमानी नाम जान्यो नहिं तेरो । भ्रमत भ्रमत प्यास लगी चाह्यो चित मेरो ॥ सभी कुटुम्ब छोड नाथ सागर पद गेरो । जलमें पग बोरत ही आन ग्राह घेरो ॥ मैं तो बलहीन नाथ वाहि बल घनेरो॥मात पिता भाई बन्धु कुटुम्ब तो घनेरो ॥ दशो दिशा हेर हेर शरण गह्यो तेरो । केते गज ग्राह फंद अतुलित बल श्रीमुकुन्द काटो भवफंद प्रभु जग नजर फेरो ॥ डूबत गजराज जान टेरत श्रीकृष्ण नाम दीनबन्धु दीनानाथ विरद जात तेरो । लड़त लड़त देर भई आयो अन्त मेरो ॥ जब लग मैं जीवों नाथ जपों नाम तेरो । गोपीनाथ मदन मोहन करुणा कर हेरो ॥ सूरदास गरुड छोड करदियो निवेरो ॥ १२३ ॥

राग कान्हरा ।

आये आये जी महाराज अपने भक्तके काज सारे । तज वैकुण्ठ तज्यो गरुडासन पवन वेग उठि धाये ॥ जबके दृष्टि परे नँदनँदन भक्तहेतु रूप धारे । मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल चितलाये ॥ १२४ ॥

राग देश ।

म्हारो कांई बिगरेगो थारोई विरद लजेगो । रुकमैया बन्धु जो वैरी कूडी साख भरेगो ॥ जरासन्ध शिशुपाल जो आये भूपन भूप अडेगो। पदमके स्वामी अन्तर्यामी करता कौन करैगो ॥ १२५॥

राग देश सोरठ ।

पाती मेरी द्वारका लेजाय । विप्र तुम वेग धायो जाय ॥ लिख लिख भेजूँ चिठियां जी में लिखां दुराय दुराय । है कोई हितकारी

हमरो सुनत ही उठ धाय ॥ कुंडिनपुरमें आश्चर्य देखो सिंह घेरी गाय । भाग रच्यो हंम कारण काग पहुँचे आय ॥ लग्न जोर बरात आई दिये खंभ गडाय । रुकमैया शिशुपाल आये जरासंध सहाय ॥ अम्बिका पूजन चलीहै रुक्मिणि संग सहेलियां लाय । जै अंबे बर देत हैं श्रीकृष्ण देहु मिलाय ॥ अंबिका पूजके आई है रुक्मिणि श्रीकृष्ण पहुँचे आय । अपने बिरदकी लाज राखी सूर बलि बलि जाय ॥ १२६ ॥

कवित्त दण्डक ।

कैसे तुम गणिकाके आगुण न गिने नाथ, कैसे तुम भीलनीके जूँठे बेर खाये हो ॥ कैसे तुम द्वारकामें द्रौपदीकी टेर सुनी, कैसे तुम गज काज नंगे पग धाये हो ॥ कैसे तुम सुदामाके छिनमें दरिद्र हरे, कैसे तुम उग्रसेन बंदीते छुडाये हो । मेरी बेर एती देर कान मून्द रहे नाथ, दीनबंधु दीनानाथ काहेको कहाये हो १२७॥

राग बिहाग ।

किन तेरो गोविंद नाम धरयो । लेन देनके तुम हितकारी मोते कछु न सरयो ॥ विप्र सुदामा कियो अयाची तंदुल भेट धरयो । द्रुपदसुताको तुम पति राखी अंबर दान करयो ॥ संदीपनके तुम सुत लाये विद्या पाठ पढयो । सूरकी बिरियां निठुर ह्वै बैठे कानन मूँद धरयो ॥ १२८ ॥

राग धनाश्री ।

पतित पावन हरी नाम तिहारो कौनेहूं धरयो । हौं तो दीन दुखित संसृत रत द्वारे रटत परयो ॥ गज गणिका नृग गीध व्याधते मैं घट कहा करयो । ना जानों यह सूर महाशठ कौन दोष बिसरयो ॥ १२९ ॥

राग देश सोरठ।

हरि हौं बड़ी बेर को ठाढो। जैसे और पतित तुम तारे तिनहीं-में लिख काढो॥ युग युग बिरद यही चल आयो टेर कहत हौं ताते। मरियत लाज पञ्च पतितनमें हौं घट कहो कहांते॥ कै अब हार मान कर बैठो कै कर बिरद सही। सूर पतित जो झूँठ कहत है देखो खोल बही॥ १२०॥

राग धनाश्री।

नाथ मोहिं अबकी बेर उबारो। तुम नाथनके नाथ स्वामी दाता नाम तिहारो॥ करम हीन जन्मको अंधो मोते कौन नकारो। तीन लोकके तुम प्रतिपालक मैं तो दास तिहारो। तारी जात कुजात प्रभूजी मोपर किरपा धारो॥ पतितनमें इक नायक कहिये नीचनमें सरदारो। कोटि पापी इक पा सँग मेरे अजामील कौन विचारो॥ नाठो धरम नाम सुन मेरो नरक कियो हठतारो। मोको ठौर नहीं अब कोऊ अपनो बिरद सम्हारो॥ क्षुद्रपतित तुम तारे रमापति अब न करो जिय गारो। सूरदास साँचो तब मानै जो होय मम निस्तारो॥ १२१॥

गजल।

जहां देखों वहीं मौजूद मेरा कृष्ण प्यारा है। उसीका सब है जलवा जो जहां में आशिकारा है॥ भला मखलूक खालिककी सिफत समझे कहाँ मुमकिन। उसीसे नेत नेत ऐ यार वेदोंने पुकाराहै॥ न कुछ चारा चला लाचारों हार कर बैठे। विचारे वेदने प्यारे बहुत तुझको विचारा है॥ जो कुछ कहते हैं हम यह भी तेरा परकाश है वरना। किसे ताकत जो मुँह खोले यहां हर शख्स हारा है॥ तेरा है तेज हर शै में काहसे कोहतक प्यारे।

उसी से कहके हर हर तुझको सब जगने उचारा है ॥ कोई तुझको पुकारे ब्रह्म कर्त्ता एक कहते हैं । कहैं निर्लेप इक ज्ञानी ध्यानी ध्यान धारा है ॥ करो किरपा रमाई दो भजन अपनेही चरणोंमें । भला है या बुराहै जैसा है आखिर तुम्हारा है ॥ बहुत दुस्तर है भवसागर न पारावार कुछ सूझे । कहे कर जोड़ राधानाथ इक तूही सहारा है ॥ १३२ ॥

वह नाथ अपनी दयालुता तुम्हें यादहो कि न याद हो । वो जो कौल भक्तोंसे किया था तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ सुनि गजकी ज्यूंही आपदा न विलम्ब छिनका सहा गया । वहीं दौड उठके पियादे पा तुम्हें० ॥ य जो चाहा दुष्टोंने द्रौपदीसे कि, शर्म उसकी सभामें लें । बढाया वस्त्रको आप जा तुम्हें० ॥ अजामील एक जो पापी था लिया नाम मरनेपे बेटे का।वह नरकसे जो बचा दिया तुम्हें० ॥ जो गीध था गणिका जो थी जो व्याध था मल्लाह था । उन्हें तुमने ऊंचोंका पद दिया तुम्हें० ॥ खाना भीलनीके व जूंठ फल कहीं साग दासके घर पे चल । यूहीं लाखों किस्से कहूँ मैं क्या तुम्हें० ॥ जिन वानरोंमे न रूप था न तो गुण ही था न तो जात थी । तिन्हें भाइयोंकासा मानना तुम्हें० ॥ वह जो गोपी गोप थे ब्रजके सब उन्हें इतना चाहा कि क्या कहूँ । रहे उलटे उनके ऋणी सदा तुम्हें० ॥ कहो गोपियोंसे कहा था क्या करो याद गीताकी जरा । वेदा वक उद्धार का तुम्हें० ॥ यह तुम्हारा ही हरीचंद है गो फसादमें जगके बंद है ॥ है दासजन्मसे आपका तुम्हें० ॥ १३३ ॥

अफसोस मेरी नाथ सुनो मेरी भी हालत । पापी हूं मुझे अरजसे आती है खिजालत ॥ कैदीकी तरह उमर कटी मोहके वशमें । पाबंद किया लोभने बेदाना कफस में ॥ हर एक घडी गुजरी

है दुनियां की हवस में। इक दिन भी नहीं काम का हर माह बरस में॥ इक वक्तका तोसा नहीं औ शिरपै सफरहै। पापोंका बहुत बोझ है शिकस्ता कमरहै॥ तू आपके चरणोंसे लगा जानलो इतना। कुछ और नहीं चाहता पर मानलो इतना॥ जिस दम मेरी उम्मेदसे बर आलोंको होयास। सब दूर हों सरकार ही सरकार हों इक पास॥ फैलीहुई शृङ्गारके फूलों की हो बूबास। मुरलीकी सदा कानमें आतीहो चपो रास॥ होजाऊँ फना पाऊँ जो इतना मैं सहारा। जब बंद हों आंख तो मुकुट का हो नजारा॥ दम लब पै हो सीने मे तसव्वुरहो तुम्हारा। मिटकर भी जुदाई न हो चरणोंकी गँवरा॥जो व्रजकी रज है वही खाके कफ़पा है। मिट्टी यहीं रह जाय तो वैकुण्ठमें क्या है॥ रोशन है कि यह सिजदह गहे अहले यकीं है। जो जर्रा है यां खातमें कुदरत का नगीं है॥ उठाहै यहीं आके निकाबे रुखे तौहीद। हर वक्त नजर आता है यां जलवएजा वीद॥ जो खाकमें यां मिल गये किस्मत है उन्हींकी। जो मिटगये यां आके हकीकत है उन्हींकी॥ गलियोंमें जो यां घिसटे हैं जिन्नत है उन्हींकी। जो भीखको यां खाते हैं दौलत है उन्हींकी॥ वह ताजशाहीपर भी कभी हाथ न मारें। दुनियाका मिले तख्त तो इक लात न मारें॥ कह सक्ताहूँ क्या व्रजकी खूबी व लताफत। वह आंख नहि जिसमें हो नजारेकी ताकत॥ मैं यह भी नहीं चाहता तकलीफ उठाओ। मैं यह भी नहीं चाहता बिगडी को बनाओ॥ पर कुछ तो मेरे वास्ते तदबीर बनाओ। इतना भी नहीं हूँ जिसे चरणोंसे लगाओ॥ तकशे कफे पाफुंक निकलनेको तो मिलजाय। दो हाथ जमीं व्रजमें जलनेको तो मिलजाय॥ देखो न खुदाईकी करामात बिगड जाय। ऐसा न हो शोलेकी कही बात बिगडजाय॥ १३४॥

राग परज ।

मैंनूँ तारी वे रब्बा बदी औगुण हारी । सभ सैयां गुन वालडि-यांवे मैं औगुण हारी ॥ जिस कारण शौह भेज्या लाल वे मैंनूं तारी वे रब्बा मोईयो गल्ल विसारी। पकड तुला में तर पैयां लाल वे मैंनूँ तारी वे रब्बा शिरपर गठरी है भारी ॥ इकनां दाज रंगां लिया लाल वे मैंनूं तारी वे रब्बा आईया साडडी वारी।हुकुम साईं दे पर्वत तरदे लाल वेरे मैंनूं तारी वे रब्बा बंदी कौन विचारी।इक-नां सेजां मानीयां लाल वे मैंनूँ तारी वे रब्बा बंदी रहीहै कुँआरी । कहैं शाह हुसैन सुनो सहेलीयो मेरीयो मैंनूं तारी वे रब्बा अमलां बाझ सुआरी ॥ १२८ ॥

राग बड़हंस ।

अपने संग रलाई वे मैंनूं अपने सङ्ग रलाई ॥ गह पवां तां धाडी बेढे बेले लख्वाँ बलाई॥ चीते वाघे कोडल हारे भखँर करन अदाई॥भार तेरे जागत्तर चढया बेडा पार लंघाई॥होल दिले दा थर हर कंबे झबदे पार लंघाईं॥पहलां नेह लगायासी ऐवें आपे चाई चाई ॥ मैं लायाके तुध लाया सी अपनी ओर निभाई ॥ जेकर आगे है लड लाया तीवें गले लगाई ॥ बुल्हाशाह शहाना मुखडा घूँघट खोल दिखाई ॥ १२६ ॥

राग सोरठ ।

मालक कुल आलमके हो तुम साँचे श्रीभगवान । स्थावर जङ्गम पानी पावक धरती बीच समान ॥सभमें जलवा तेरा देखा कुदरतके कुरबान । सुदामाकेदारिद्र खोये पाँडेकी पहँचान ॥ दो मूठी तंदुलकी चाबी बखशे दो जहान । भारतमें अर्जुनकी खातर आप भये रथवान ॥ उसने अपने कुलको देखा छुट गये तीर कमान । ना कोई मारे ना कोई मरता तेरी ही अज्ञान ॥ यह तो

चेतन अचल अमर है यह गीताको ज्ञान । मुझ आजज पर किरपा कीजै बंदा अपना जान ॥ मीर माधो मैं शरण तिहारी लागे चरणन ध्यान ॥ १३७ ॥

राग कालिंगडा ।

माधव गति तेरी ना जानी ॥ मारन कारन चली पूतना अस्तन विष लपटानी । ताको गति यशुमतिकी दीनी सो वैकुंठ सिधानी ॥ लख गउअनको दान करत है राजा नृगसों दानी । ताको मुख किरलेका दीना पाछे कूप पठानी ॥ वलिराजा स्वर्ग धामकी खातर रचे यज्ञ बहु दानी । सो राजा पाताल पठायो चौकी ताको मानी ॥ बडे बडे राज भूपनकी वर्दी तिनको याग हटानी। कुब्जा मालन कंसकी चेरी सो कीनी पटरानी ॥ पांचों पांडव अधिक सनेही सो हिमअचल गिरानी । दुर्योधन राजा बड़ा अभिमानी ताकी मुक्ति निशानी ॥ शेषनागको नेता कीनो पर्वत कियो मथानी।चौदा रत्न मथन कर काढे तब लक्ष्मी घर आनी ॥ जैसी जाकी मनोकामना तैसी कर दिखलानी । सूरदास आनन्द मगन भयो प्रेम भक्ति मनमानी ॥ १२८ ॥

राग कान्हरा ।

दे पूतना विष रे अमृत पायो । जो कछु देयत सो फल पैयत नाहक वेदन गायो ॥ शत यज्ञ राजा बलि कीनो बाँध पताल पठायो । लक्ष गऊ राजा नृग दीनी गिरगट रूप करायो ॥ रंक जन्मके मित्र सुदामा कञ्चन धाम बनायो । सूरदास तेरी अद्भुत लीला वेद नेति कहि गायो ॥ १२९ ॥

राग धनाश्री ।

अविगति गति जानी न परे । मन वच अगम अगाध अगोचर किहि विधि बुधि सँचरे ॥ अति प्रचंड पौरुष सों मातो केहरि

भूँख मरै । तज उद्यम अकाश कर बैठ्यो अजगर उदर भरै ॥ कबहुँक तृण बूडत पानीमें कबहुँक शिला तरै । बागरसे सागर कर राखे चहुँ दिशि नीर भरै ॥ पाहन बीच कमल बिकसाहीं जलमें अगिन जरै । राजा रंक रंकते राजा ले शिर छत्र धरै ॥ सूर पतित तरजाय छिनकमें जा प्रभु टेक करै ॥ १४० ॥

राग सोरठ ।

हरीकी गति नहि कोऊ जाने । योगी यती तपी पचहारे अरु बहु लोग सयाने ॥ छिनमें राव रंकको करहीं राव रंक कर डारे । रीते भरै भरे ढरकावे यह ताको व्यवहारे ॥ अपनी माया आप पसारे आपे देखन हारा । नाना रूप धरै बहुरंगी सबसे रहत नि-यारा ॥ अमित अपार अलक्ष निरंजन निज सब जग भरमाया । सकल भरम तज नानक प्राणी चरण ताहि चित लाया ॥१४१॥

राग कान्हरा ।

ज्यों भावे त्यों राख गुसाईं । हमरे संकट काटो जी साँवरे कृपा करो प्रहलादकी नाईं ॥ तोहिं त्याग और जो सुमिरे सो नरपैं दे नरकन माहीं । नन्ददासको दीजै अभय पद चरणकमल राख्यो मन माहीं ॥ १४२ ॥

राग सोरठ ।

दरसां दे ठाढ़े दरबार । तुझ बिन सुरत करे को मेरी दरशन दीजै खोल किवार ॥ तुम धन धनी उदार त्यागी श्रवणन सुनियत सुयश तुम्हार । माँगों कौन रंक सब देखों तुमहींते मेरो निस्तार ॥ जयदेव नामा विप्र सुदामा तिनपर कृपा भई है अपार । कहै कबीर तुम समरथ दाता चार पदारथ देत न बार ॥ १४३ ॥

राग झंझोटी ।

हरि अब बनिहै नाहिं बिसारे । दीनदयालु कृपानिधि हे प्रभु गिनिये न दोष हमारे ॥ गीध अजामिल गणिका आदिक जा पन पै तुम तारे । मोहनलाल आपनो पण सोइ बनि है नाथ सम्हारे ॥ १४४ ॥

राग अडाना ।

अपने विरदकी लाज विचारो । सब घटके तुम अंतर्यामी भवसागर ते पार उतारो ॥ गुण औगुण यह कछू न मानो ज्यों जानो त्यों पतित उधारो । जानकीदास प्रभु शरण तुम्हारी आवागमनका दोष निवारो ॥ १४५ ॥

राग परज ।

भरोसो कृष्णको भारी ॥ ग्राहने गजराज घेरचो बल कियो भारी । हारके जब टेर कीनी धाये गिरिधारी ॥ प्रहलाद गिरिसों डार दीनो कीनी रखवारी । अगिनहूंसों राख लीनो दूसरी वारी ॥ द्रौपदीकी लाज राखी कुबरी तारी । ध्रुवको दीनी अटल,पदवी कियो घरवारी ॥ वीभीषणको लंका दीनी रावण मारी । आगे पतित अनेक तारे सूरकी बारी ॥ १४६ ॥

राग विभास ।

और कोई समझो तो समझो हमको एती समझ भली है।ठाकुर नन्दकिशोर हमारे ठकुरायन वृषभानु लली है॥ सुबल आदि ले सखा श्यामके राधा सँग ललिता जो अली है । नितको लाड़ चाव सेवा सुख भागबेलि बढि सुफल फली है॥ वृन्दावन बीथिन यमुना तट विहरन ब्रज रज रङ्ग रली है । कहै भगवान हित रामराय प्रभु सबते इनकी कृपा बली है ॥ १४७ ॥

राग बिहाग ।

हमरी आंखिनके दोउ तारे । राधा मोहन मोहन राधा यह दोउ रूप उजारे ॥ गौर श्याम अभिराम मनोहर ब्रज वरसाने वारे । शुक शारद नारद बलिहारी महिमा वर्णत हारे ॥ १४८ ॥

कुण्डलिया ।

आचारज ललिता सखी रसिक हमारी छाप । नित्त किशोर उपासना, युगल मन्त्रको जाप ॥ युगलमन्त्रको जाप वेदरसिकनकी बानी । बृन्दावन निज धाम इष्ट श्यामा महरानी ॥ प्रेम देवता मिले बिना सिधि होय न कारज । भगवत सब सुखदेन प्रगट भये रसिकाचारज ॥ १४९ ॥

राग धनाश्री ।

हैं हम रसिक अनन्य प्रिया पिय कुञ्जमहलके वासी । नइ नइ केलि विलोकत छिन छिन रति विपरीत उपासी ॥ बीरी बसन सुगन्ध आरसी रुचि ले करत खवासी । देत प्रसाद प्रेम सों हँस हँस, कह कह भगवत दासी ॥ १५० ॥

राग कालिंगडा ।

हम नँदनन्दन मोल लिये । यमकी फाँस काट मुकराये अभय अजात किये ॥ सब कोउ कहत गुलाम श्यामके गुणत सिरात हिये । सूरदास प्रभुजूके चेरे जूठन खाय जिये ॥ १५१ ॥

राग जंगला ।

साँवरो जग तारन आयो । निशि दिन जाको वेद रटत हैं सुर नर पार न पायो ॥ मथुरामें हरि जनम लियो है गोकुल जाय बसायो । लाल यशुमतिको कहायो ॥ भानुसुतामें कूदि परे हैं विषधर जाय जगायो । फणिपति लै पाताल पठायो

तीन लोक यश गायो ॥ मनो मेघुला झुक आयो ॥ भारतमें प्रण भीषम राख्यो अर्जुन रथमें बहायो । गीता ज्ञान दया कर दीनों रूप विराट दिखायो ॥ भर्म मनको जो मिटायो॥वृन्दावनमें रास रचो है गोपी ग्वाल नचायो । सूरदास यह प्रेमको झगरो हरष निरख कर गायो ॥ बहुरि इतना सुख पायो ॥ १५२ ॥

दोहा ।

चार बीस अवतार धरि, जनकी करी सहाय । राम कृष्ण पूरण भये, महिमा कही न जाय ॥ चौपाई ॥ नेति नेति कह वेद पुकारै । सो अधरन पर मुरली धारै ॥ जाको ब्रह्मादिक मिल ध्यावहिं । ताहि पूत कहि नन्द बुलावहिं॥शिव सनकादिक अन्त न पावैं । सो सखियन सँग रास रचावैं ॥ सकल लोकमें आप पुजावैं । सो मोहन ब्रजराज कहावैं ॥ निराकार निर्भय निरबाना । कारण सन्त धरे तिन जाना ॥ निर्गुण सगुण भेद ना कोई । आदि अंत मधि एकै सोई ॥ दोहा—योगी पावै योग सों,ज्ञानी लहैं विचार ॥ नानक पावे भक्ति सों, जाको प्रेम अपार ॥ १५३ ॥

राग धनाश्री ।

हरि सन्तनकी पैज राखत आप निराकार भापत ॥ खंभसे प्रभु निकसे आय नरसिंह रूप होय रिसाय असुरनको उदर छेद प्रहलाद तिलक थापत ॥ गहरे गंभीर ग्रस्यो कालवश ले ब्याल धस्यो गजकी जब टेर सुनी फंदन काटत । बीच सभा आन खडी द्रौपदीको भीर पडी उचरत हरि शरण तेरी अनेक चीर बाढत ॥ दौड़के हरि आन खडे अपने जन काज करे बिलम न लायो नेक दुनीदास आखत ॥ १५४ ॥

राग सोरठ ।

जानत प्रीति रीति यदुराई । को अस जग मतिमंद मनुज जो भजत न सकल बिहाई ॥ कनक भवनमें रुक्मिणिके सँग राजत सब सुख छाई । रंक दीन लखि मीत सुदामहिं धाय लियो उर-लाई ॥ यदुकुल कौरव कुल पांडव कुल जहिं जहिं भई सगाई । तहिं तहिं ब्रज वासिनकी बातें वर्णत वदन सुखाई ॥ छप्पन विधि व्यंजन दुर्योधन राख्यो सदन बनाई ।सो तजि विदुर साग भोजन किये बहुत सराह मिठाई ॥ सुरदुर्लभ यदुकुल विलास वर प्रभुता प्रभु बिसराई। श्रीरघुराज भली भारतमें पारथ सारथि आई १५५॥

राग पूरवी ।

जय मनमोहन श्याम मुरारी । जय व्रजनाथ मुकुंद विहारी ॥ जय नखपर श्रीगिरिवर धारी । जय श्रीकृष्णचन्द्र बनवारी॥मोसे नाथ कछु लखी न जाई । बरणों कहँलग तोरि बड़ाई ॥ महिमा तुम्हारी अपार कन्हाई । थकित भये वर्णत श्रुति चारी ॥ है अपार अलख तव माया । ब्रह्मादिकने भेद न पाया ॥ कोटिन मुनिने ध्यान लगाया । पर कछु समझ परी न तिहारी ॥ कहांतलक गुण तुम्हरे गाऊं । कौन हृदयमें ध्यान लगाऊं ॥ कहा समझ प्रभु तोहि मनाऊं ।शोच भयो जन उर यह भारी ॥सुध लीजे अब तो प्रभु मेरी। निज जन समझ करो मत देरी ॥ दीनदयालु शरण हूँ तेरी । कृपा करो भक्तन सुखकारी ॥ १५६ ॥

राग जंगला ।

जय नारायण ब्रह्मपरायण श्रीपति कमलाकंतं । नाम अनंत कहां लग वरणों शेष न पावत अंतं ॥ नारद शारद शिव सनका-दिक ब्रह्मा ध्यान धरंतं । मच्छ कच्छ सूकर नरहरि प्रभु वामन रूप धरंतं ॥ परशुराम श्रीरामचंद्र जग लीला कोटि करंतं। जन्म लियो

वसुदेव देवि गृह नाम धरयो नँदनन्दं ॥ पैठ पताल कालीनाग नाथ्यो फण २ निरत करंतं । बलभद्र होकर असुर सँहारे कंसके केश गहंतं ॥ जगन्नाथ जगपति चिन्तामणि होय बैठे निश्चिन्तं । कलियुग अन्त अनन्तन होकर कालकीरूप धरंतं ॥ दश अवतार हरिजूके गाये सूर शरण भगवंतं ॥ १५७ ॥

लावनी ।

नाथ तुम दीनन हितकारी । पतितपावन कलिमलहारी ॥ प्रथम नरसिंह रूप धारयो । नखन सों हरनाकुश मारयो ॥ ब्रह्मादिक थरथर करें, लक्ष्मी ढिग नहिं जात । जन अपने प्रहलादके, धरयो शीश पर हाथ ॥ भक्तकी बिपति कटी सारी ॥ नाथ० ॥ जुडे दल दोउ ओर भारी । करी जब भारतकी त्यारी ॥ भरुही दीनहो पुकारी । खबर मेरी लीजो गिरिधारी ॥ ऐसोको या जगतमें मेरो रखनहार । इतनी सुनत तब तुरतहीं, गज घंटा दियो डार ॥ करी अंडनकी रखवारी ॥ नाथ० ॥ सभामें द्रुपदसुता नारी । करन जो लगी जबान भारी ॥ देखते सकल धर्मधारी । कर्ण भीष्म द्रोणाचारी ॥ कहा भयो बैरीप्रबल, जो सहाय बलबीर । दश हजार गज बल घटयो, घटयो न दश गज चीर ॥ दुःशासन बैठ गयो हारी ॥ नाथ० ॥ ग्राहने गजको गहलीनो । परस्पर युद्ध बहुत कीनों ॥ भयो गजराजको बल हीनों । याद तब गोविंदको कीनो ॥ सुनतहि टेर गजेंद्रकी, उठधाय ब्रजराज । सुध ना रही शरीर की, कियो भक्तको काज ॥ जनार्दन सन्तन दुखहारी । नाथ तुम दीनन हितकारी ॥ १५८ ॥

राग देश ।

हे अच्युत हे पारब्रह्म अविनाशी अघनाश । हे पूरण हे सर्वमें दुख भञ्जन गुण तास ॥ हे संगी हे निरंकार हे निर्गुण सब टेक ।

हे गोविन्द हे गुणनिधान जाके सदा विवेक ॥ हे अपरंपार हर हरे हैं भी होवन हार । हे सन्तनके सदा संग निराधार आधार हे ठाकुर हौं दासरो मैं निर्गुण गुण नहिं कोय । नानक दीजै नाम दान राखौं हिये परोय ॥ १५९ ॥

छंद ।

श्रीकृष्णजीके कमल नेत्र कटि पीतांबर अधर मुरली गिरिधरं- मुकुट कुण्डल कर लकुटिया सांवरं राधेवरं ॥ कूल यमुना धेनु आगे सकल गोपिन मन हरं । पीत वस्त्र गरुड़ वाहन चरण नित सुखसागरं ॥ करत केलि कलोल निशि दिन कुंज भवन उजागरं॥ अजर अमर अडोल निश्चल पुरुषोत्तम अपरापरं ॥ गोपीनाथ गुपाल गिरिधर कंस हरनाकुश हरं । गल फूल माल विशाल लोचन अधिक सुन्दर केशवं ॥ वंशीधर वसुदेव छैया बलि छल्यो हरि वामनं। जल डूबते गज राख लीनो लक छेद्यो रावनं ॥ सप्त द्वीप नौखंड चौदा भुवन कीने इक पल । द्रौपदीकी लाज राखी कहां लौं उपमा करं ॥ दीनानाथ दयालु पूरण करुणामय करुणाकरं । कवि दत्तदास विलास निशिदिन नाम जप नित नागरं ॥ १६० ॥

प्रथम गुरुके चरण बंदो जासों ज्ञानप्रकाशतं । आदि विष्णु युगादि ब्रह्मा सेवते शिव शंकरं ॥ श्रीकृष्ण केशवकृष्ण केशवकृष्ण केशव केशवं । श्रीराम रघुवर राम रघुवर राम रघुवर राघवं ॥ राम कृष्ण गोविन्द माधव वासुदेव श्रीवामनं । मच्छ कच्छ वाराह नरसिंह पाहि रघुपति पावनं ॥ मथुरामें केशोराय विराजे गोकुल बा.. मुकुन्दजी। श्रीवृंदावनमें मदनमोहन गोपीनाथ गोविन्दजी ॥ धन्य मथुरा धन्य गोकुल जहां श्रीपति अवतरे । धन्य यमुनानीर निर्मल ग्वाल बाल सखा बने ॥ ग्वाल बाल संग सखा बिराजे संग

राधा भामिनी। वशीबट तट निकट यमुना मुरलीकी टेर सुहामिनी ॥ कृष्ण कलिमल हरन सबके जो भजें हरि चरनको। भक्ति अपनी देहु माधो भवसागरके तरनको ॥ जगन्नाथ जगदीश स्वामी बदरीनाथ विश्वंभरं। द्वारकाके नाथ श्रीपति केशवं करुणाकरं। कृष्ण अष्टपदीकी धुन सुन कृष्णलोक सगच्छतं। गुरु रामानन्द नीमानन्द स्वामी छबि दत्तदास समापतं ॥ १६१ ॥

राग भैरव।

मङ्गल आरती गोपालकी नित उठ मङ्गल होत निरखे मुख चितवन नयन विशालकी ॥ मङ्गल रूप श्यामसुन्दरको मङ्गल छबि भ्रुकुटी भालकी। चतुर्भुज दास सदा मंगलनिधि बानिक गिरिधर लालकी ॥ १६२ ॥

राग रामकली।

आरति कीजै श्याम सुन्दरकी। नन्दकुमार राधिका वरकी भक्ति कर दीप प्रेम कर बाती। साधु संगति कर अनुदिनराती॥ आरति ब्रज युवती मनभावै ॥ श्याम लीला नित हरिवंश गावै ॥ १६३ ॥

आरती कीजै सुन्दर वरकी। नन्दकिशोर यशोदयनन्दन नागर नवल ताप तम हरकी ॥ वन विलास मृदुहास मनोहर श्रवण सुधा सुख मोहन करकी। विहारीदास लोचन चकोर नित अंश प्रिया भुजधरकी ॥ १६४ ॥

राग कालिंगड़ा।

आरती लीजो श्रीनन्दके लाला मदनगुपाला। टेरत हैं सबके जन ठाढे होउ बेग दयाला ॥ कोटिन शशि तेरे नखकी शोभा कहाँ लौं दीपक बाला ॥ धुनि मिरदंग अनाहद बाजे क्या

रंका मेरी ताला ॥ नाचत लक्ष्मी सदा तेरे आगे नाना विधि बहु बाला । खण्ड ब्रह्मण्ड त्रैलोक नाचे हौं क्या कीट कंगाला ॥ आछी तेरी आरती आछी तेरी शोभा आछी तेरी भक्ति रसाला। भगवानदास पर किरपा कीजै मेटिये जी यमजाला ॥ १६५ ॥

राग श्यामकल्याण ।

आरती युगलकिशोर कि कीजे। तन मन प्राण निछावर कीजै॥ गौर श्यामसुख निरखन कीजे । हरिको स्वरूप नयन भर पीजे ॥ रवि शशि कोटि बदन जाकी शोभा । ताहि देख मेरो मन लोभा ॥ फूलनकी सेज फूलन गल माला । रत्न सिंहासन बैठे नँदलाला ॥ मोर मुकुट कर मुरली सोहै। नटवर वेष निरखि मन मोहै ॥ ओढ़े नील पीत पट सारी । कुञ्जन ललना लाल विहारी ॥ श्रीपुरुपोत्तम गिरिवर धारी। आरति करत सकल ब्रजनारी ॥ नँदनन्दन वृपभानु किशोरी। परमानँद स्वामी अविचल जोरी ॥ १६६ ॥

राग बरवा ।

कञ्चन सिंहासन रत्न जडित प्रकाश रवि सम सोहई । तापर विराजत श्यामसुन्दर रूप मुनि जन मोहई ॥ मुख कमल पर अलिमाल सम अलकाँ कुँडल छबि पावई। हरि नासिका गर रुचिर मोती भाल तिलक सुहावई ॥ शिर मुकुट हीरा जडित कानन स्वर्ण कुण्डल छाजई । पट पीत गजमणिमाल भूषण अंग धाम विराजई ॥ शुभ कण्ठ कण्ठी मणिमयी उर माल बैजंती लसै । भृगु रेख कौस्तुभ मणि जनेऊ देव मुनि जन मन बसै ॥ कङ्कण जडाऊ सहित पहुँची श्रीकृष्ण

हाथनमें बने। प्रति अँगुरी मुँदरी विराजत रत्न नग लागे घने ॥ हरि बाम अँग सुवरण वरण अनूप अति राजत रमा। जग करन पालक हरन सेवत चरण नित शारद उमा ॥ प्रभु चार करमें शंख चक्र गदा पद्म अतिराजई। कटि पीत धोती किंकिणी दोउ चरण नूपुर बाजई ॥ श्रीमहित विष्णु स्वरूप ऐसो प्रेमसे जो ध्यावई। तत्काल पावन होतहै चारों पदारथ पावई ॥ १६७ ॥

राग गुर्जरी।

श्रितकमलाकुच मंडल धृतकुण्डल ए ॥ कलित ललित बनमाल जय जय देव हरे ॥ दिनमणि मंडल मंडन भवखण्डन ए ॥ मुनिजन मानहंस जय० ॥ कालिय विषधरगंजन जनरंजन ए ॥ यदुकुल नलिन दिनेश जय जय० ॥ मधु मुर नरक विनाशन गरूडासन ए ॥ सुर कुल केलि निधान जय जय० ॥ अमल कमल दल लोचन भवमोचन ए ॥ त्रिभुवन भवन निधान जय जय० ॥ जनकसुताकृत भूषण जित दूषण ए ॥ समर शमित दशकंठ जय जय० ॥ अभिनव जलधर सुन्दर धृतमन्दर ए ॥ श्रीमुखचन्द्र चकोर जय जय० ॥ तव चरणे प्रणता वयमिति भावय ए ॥ कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय० ॥ श्रीजयदेव कवेरिदं कुरुते मुदं मंगलमुज्ज्वलगीतं जय जय० ॥ १६८ ॥

राग धनाश्री।

परम पुनीत प्रीति नंदनन्दन यही विचार विचार। कहो शुक श्रीभागवत विचार ॥ हरिजीकी भक्ति करो निशिवासर अल्प जीवन दिन चार। चिंता तजो परीक्षित राजा सुन शिख शीख हमार ॥ कमलनयनकी लीला गावो मिटगये कोटि विकार। भजन करो विश्वास तजो नृप चिंता शोकनिवार ॥ खट्वांग दिलीप

मुहूरत उधरे तुमरे हैं सतवार । तुम तो राजा परमभक्त हो मानो वचन हमार॥हरिजीकी भक्ति युगोंयुग वरणों आन धर्म दिनचार। एक समय दुर्वासा पठये आये समय विचार ॥ कै राजा मोहिं भोजन दीजे कै जावो व्रत हार । राजा कहै मोहिंका संकट दीजो नाहिन और उपाय।द्रुपदसुता कहै कृष्ण सुमिर लेहु तुमरे सदा सहाय ॥ तब पांडव सुन सुमिरण कीनां प्रगटे कृष्ण मुरार।चक्र सुदर्शनकी सुधि आई ऋषी चले व्रत हार ॥ अष्टादश षट तीन चार मिल करत यही विचार । एकै ब्रह्म सकल घट पूरण केवल नाम अधार ॥ सतयुग सत त्रेता तप संयम द्वापर पूजा चार । सूर भजन कलि केवल कीर्त्तन लज्जा कान निवार ॥ १६९ ॥

राग सोरठा ।

टेर सुनो व्रजराज दुलारे । दीन मलीन हीन शुभ गुणसों आय पर्यो हूँ द्वार तिहारे ॥ काम क्रोध अति कपट लोभ मद सोइ माने निज प्रीतम प्यारे । भ्रमत रह्यो इन सँग विषयनमें तो पद कमलनमें उर धारे ॥ कौन कुकर्म कियो नहिं मैंने जो गये भूल सो लिये उधारे । यहां लों खेप भरी रच पचके चकित रहे लखिके बनजारे ॥ अबतो एक बार कहो हँसके आजहि सों तुम भये हमारे।याही कृपाते नारायणकी वेगि लगेगी नाव किनारे॥ १७०॥

राग मलार ।

हम भक्तनके भक्त हमारे । सुन अर्जुन परतिज्ञा मोरी यह व्रत-टरत न टारे॥भक्तन काज लाज हिय धरके पांय पियादे धाये । जहँ जहँ भीर परी भक्तनको तहँ तहँ होत सहाये ॥ जो भक्तन सों वैर करत है सो निज वैरी मेरो । देख विचार भक्त हित कारण हांकत हों रथ तेरो॥जीतो जीत भक्त अपनेकी हारे हार बिचारो। सूरश्याम जो भक्त विरोधी चक्र सुदर्शन मारो ॥ १७१ ॥

राग सारङ्ग ।

दास अनन्य मेरो निज रूप । दर्शन निमिष तापत्रयमोचन पर्सत मुकत करत गृहकूप ॥ मेरी बांधी भक्त छुड़ावै बांधै भक्त न छूटै मोहि । एक बेर मोको गहि बांधै तो पुनि मोपै जुवाब न होहि ॥ मैं गुण बन्ध सकलको जीवन मेरो जीवन मेरे दास। नामदेव जाके जिय जैसी तैसो ताको प्रेम प्रकाश ॥ १७२ ॥

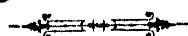
राग विभास ।

ऊधो हौं दासनको दास । जो जन मेरो नाम जपतहैं मैं तिनहीके घट परकाश ॥ धन्नेकी मैं गऊ चराई नामेको देहरा फेरिया । त्रिलोचनके मैं भयो ब्रतीया सुदामेंको दरिद्र हरिया ॥ कबीरके मैं रह्यो बनिजारा सैनेकी विरती भाया । गजके जाय चरण गहे मैं काढ जलो थल ल्याया ॥ जो जन कहत करौं मैं सोई सन्त मेरी रह रास । हित चित प्राण भक्त हैं मेरे गावतहै दुनीदास ॥ १७३ ॥

राग काफी ।

जो जन ऊधो मोहि न विसारै ताहि ना विसारों छिन एक घरी । जो मोहि भजै भजूं मैं वाको कल न परत मोहिं एक घरी ॥ काटूं जन्म जन्म मैं फंदन राखों सुख आनन्द करी। चतुर सुजान सभामें बैठे दुःशासन अनरीत करी ॥ सुमिरण कियो द्रौपदी तबहीं खैंचत चीर उबार धरी । ध्रुव प्रहलाद रैनि दिन ध्यावैं प्रगट भये वैकुंठ पुरी ॥ भारतमें भरुहीके अंडा तापर गजको घंट ढुरी । अंबरीष गृह आये दुर्वासा चक्र सुदर्शन छांहि करी ॥ सूरके स्वामी गजराज उबारे कृपा करी जगदीश हरी ॥ १७४ ॥

फुटकर पद ।



राग रामकली ।

जयतिश्रीराधिके सकलसुख साधिके तरुणि मणि नित्त नवतनु किशोरी । कृष्णतनुलीन मन रूपकी चातकी कृष्ण मुख हिमकिरनकी चकोरी॥ कृष्ण दृग भृंग विश्राम हित पद्मिनी कृष्ण दृग मृगज बन्धन सुडोरी । कृष्ण अनुराग मकरन्दकी मधुकरी कृष्ण गुणगान रससिंधु बोरी ॥ और आश्चर्य कहुँ मैं न देख्यों सुन्यो चतुर चौंसठ कला तदपि भोरी । विमुख पर चित्त ते चित्त जाको सदा करत निज नाहकी चित्तचोरी ॥ प्रकृति यह गदाधर कहत कैसे बनैं अमित महिमा इतै बुद्धि थोरी ॥ १७५ ॥

धनि यह राधिकाके चरण । सुभग शीतल अति सुकोमल कमल कैसे वरण ॥ रसिकलाल मन मोदकारी विरह सागर तरण । विवश परमानन्द छिन छिन श्यामजीके शरण ॥ १७६ ॥

मेरी मति राधिका चरण रजमें रहो। यही निश्चय कर्चोअपने मनमें धर्चो भूलके कोऊ कछू औरहू फल कहो ॥ करम कोऊ करौ ज्ञान अभ्यास हूँ मुक्तिके यत्न कर वृथा देहो दहो । रसिक वल्लभ चरण कमल युग शरण पर आश धर यह महा पुष्ट पथ फल लहो ॥ १७७ ॥

राग मलार ।

हमारे माई श्यामजीको राज । जाके अधीन सदाही साँवरो या ब्रजको शिरताज ॥ यह जोरी अविचल श्री वृन्दावन नहीं औरसे काज । विट्ठल विपुल विनोद विहारन ज्यौं जलधर सों गाज ॥ १७८ ॥

राग परज ।

हम श्री श्यामजूके बल अभिमानी । टेढे रहैं मोहन रसिया सो बोलें अटपटी बानी ॥ पडे रहैं अलमस्त झकोए शिरपर राधा रानी । किशोरी अलीके प्राण जीवन धन वृन्दावन रज-धानी ॥ १७९ ॥

सवैया ।

ब्रह्म मैं ढूँढ्यो पुराणन बेदन भेद सुन्यो चित चौगुने चायन ॥
देख्यो सुन्यो न कहूँ कबहू वह कैसो स्वरूप औ कैसे सुभायन ॥
ढूँढत ढूँढत ढूँढि फिर्यौ रसखानि बतायो न लोग लुगायन ॥
देख्यो कहां वह कुञ्जकुटीरमें बैठे पलोटत राधिका पायन ॥ १८० ॥

राग कल्याण ।

राधाजी सुहागन राधे रानी । श्याम सुन्दर ब्रजराज लाडिली ताके वश अभिमानी ॥ शोभाको शिर छत्र विराजे वृन्दावन रजधानी । जीत लियो ब्रजराज परिहरा आनँद घन रसदानी ॥ १८१ ॥

राग विहाग ।

राजत निकुंज धाम ठकुरानी । कुसुम सेज पर पौढी प्यारी रागसुनत मृदु बानी ॥ बैठी ललिता चरण पलोटत लाल दृष्टि लल-चानी । पांय परत सजनीके मोहन हितसों हाहा खानी ॥ भई कृपालु लाल पर ललिता दै आज्ञा मुसुकानी । आवो मोहन चरण पलोटो जैसे कुँवरि न जानी ॥ आज्ञा दई सखीको प्यारी मुख ऊपर पट तानी । बीण बजाय गाय कछु तानन ज्यों उपजे सुख सानी ॥ गावनलगे रसिक मनमोहन तब जानी महरानी । उठ बैठी व्यासकी स्वामिनी श्रीवृन्दावन रानी ॥ १८२ ॥

राग रामकली ।

नव कुँवर चक्र चूडा नृपति सांवरो राधिके तरुणि मणि पट्टरानी ॥ शेष गृह आदि वैकुण्ठ पर्यंत लौं लोक थानैंत ब्रज राजधानी ॥ मेघ छप्पन कोटि बाग सींचत जहां मुक्ति चारों जहां भरत पानी । सूर शशि पहरुआ पवन जल इन्द्रहू वरुण दासी भाट निगम बानी ॥ धर्म कुनवाल शुक सूत नारद जहां करत चरचादि सनकादि ज्ञानी । मन्त्र गुण पौरिया काल बँधुवा जहां डांडी पति काम रति सुख निमानी ॥ कनक मरकत धरनि कुञ्ज कुसमित महल मध्य कमनीय मैनीय ठानी । पल न बिछुरत दोऊ तहँ न पहुँचत कोऊ व्याम महलन लिये पीकदानी ॥ १८३ ॥

राग गौरी ।

वृंदावनके राजाहैं दोउ श्याम राधिका रानी । चार पदारथ करत मजूरी मुक्ति भरे जहँ पानी ॥ कर्म धर्म दोउ बटत जेवरी घर छाये ब्रह्मज्ञानी । योगी यती तपी संन्यासी तिनहूँ नेक न जानी ॥ पचिहारे वेद पुराण लगनिया गावत सगुणिया बानी । घर घर प्रेम भक्तिकी महिमा महचरि व्यास बखानी ॥ १८४ ॥

राग देवगंधार ।

ब्रज नव तरुणि कदंब मुकुट मणि श्यामा आज बनी । नख शिख लौं अङ्ग अंग माधुरी मोहे श्याम धनी ॥ यों राजत कबरी गूंथत कच कनक कञ्ज बदनी । चिकुर चंद्रिकन बीच अरध विधु मानो ग्रसत फनी ॥ सौभग रस शिर श्रवत पनारी पिय सीमंत ठनी । भ्रुकुटी काम कोदंड नयन शर कज्जलरेख अनी ॥ तरल तिलक ताटंक गंड पर नासा जलज मनी । दशन कुन्द सरसाधर पल्लव प्रीतम मन शमनी ॥ चिबुक मध्य अति चारु सहज सखि श्यामल

बिन्दु कनी। प्रीतम प्राण रतन संपुट कुच कंचुकि कसव तनी ॥ भुजमृणाल बल हरत बलै युत परस सरस श्रवनी । श्याम शीश तरु मनो मिंडवारी रची रुचिर रमनी ॥ नाभि गँभीर मीन मोहन मन खेलनको ह्रदनी। कृश कटि पृथु नितंब किंकिणभृत कदलि-खंभ जघनी ॥ पद अंबुज जावक युत भूषण प्रीतम उर अवनी । नव नव भाव विलोक भाम इव विहरन वर करनी ॥ हित हरि-वंश प्रशंसत श्यामा कीरति विशद घनी । गावत श्रवणन सुनत सुखाकर विश्व दुरित दमनी ॥ १८५ ॥

राग कान्हरा ।

आज नीकी बनी श्रीराधिका नागरी । ब्रज युवति यूथमें रूप औ चतुरई शील शृङ्गार गुण सबनमें आगरी ॥ कमल दक्षिण भुजा वाम भुज अंश सखि गावती सरस मिल मधुरसुर रागरी । सकल विद्या विदित रहस हरिवंश हित मिलन नव कुञ्जमें श्याम बड़ भाग री ॥ १८६ ॥

राग परज ।

आज उज्यारी भई लो रात । आप उज्यारी भईं तेरी सेज उज्यारी चमक सुन्दर पिया प्यारी ॥ कान्हके शिर मुकुट विराजे राधा शिर जरद किनारी ॥ १८७ ॥

राग देवगन्धार ।

आज वन राजत युगुल किशोर । नँदनन्दन वृषभानु नन्दिनी उठे उनींदे भोर ॥ डगमगात पग परत शिथिल गति परसत नख शशि छोर । दशन वसन खंडित मुख मंडित गंड तिलक कछु थोर ॥ हित हरिवंश सम्हारन तन मन सुरत समुद्र झकोर ॥ १८८ ॥

आज अति राजत दंपति भोर । सुरत रंगके रसमें भीनें नागरि नंदकिशोर ॥ अंसन पर भुज दिये विलोकत इंदु वदन बिंब ओर । करत पान रस मत्त परस्पर लोचन तृषित चकोर ॥ छूटी लटन लाल मन करष्यो ये बांके चितचोर ॥ परिरंभन चुंबन आलिंगन सुर मन्दिर कल घोर ॥ पग डगमगत चलत वन बिहरत नव निकुंज वनघोर । हित हरिवंश लाल ललना मिलि हियो सिरावत मोर ॥ १८९ ॥

राग बिलावल ।

आज इन दोउअन पै बलि जैये । रोम रोम सों छबि बरसत है निरखत नयन सिरैये ॥ रूप राम मृदुहास ललित मुख उपमा देत लजैये । नारायण या गौर श्यामको हिये निकुंज बसैये १९०॥

राग रामकली ।

उरझ्यो नीलांबर पीताम्बर महियां । कुंडलसों लर लटबेसरसों पीतपट हारनसों बनमाल बहियांसों बहियां । हंस गति अति छबि अंग अंग रही फबि उपमा विलोकिबेको पटतर नहियां । कामके कलोल छूटे मेजहूंके सुख लूटे सूर प्रभु विलसत कदमकी छहियां ॥ १९१ ॥

राग प्रभाती ।

छांडो कृष्ण युगल बैयां भोर भई अँगना । दीपककी ज्योति फीकी चंद्रहूँको चांदना ॥ मुखको तंबोल फीको नयनहूंको आँजना ॥ पनिघट पनिहारी जात हौंभी जाउँ यमुना । गैयां सब वनको जात पक्षी जात चुगना ॥ घर घर दधि मथन होत छनकत हैं कँगना । ग्वाल बाल द्वारे ठाढे उठो नन्दनँदना ॥ सूर श्याम मदनमोहन ऐसो नयनठगना । श्रीराधाजूके कुण्डल कृष्णजूके बैंगना ॥ १९२ ॥

राग कालिंगडा।

प्रीतम नूपुर मति न उतारो। इनकी धुनि सुनि पार परोसिन कहा करेगी हमारो॥ भले करो जग चर्चा मेरी तुम निज प्रण नहिं टारो। नारायण जे शरण चरणकी तिन्हें न कीजे न्यारो॥१९३॥

राग भैरव।

भोर भयो जागो मनमोहन टेरत राधे प्राणपियारी। बोलत तमचर मुखर सुहावन निशि नभ विगत भई उजियारी॥ दधि मथि माखन तुमपे ल्याई मिश्रित मिश्री मधुर सुधारी। ललितादिक सखियां सब ठाढीं मेवा पान लिये जल झारी॥ सुन प्रियवानी सुखरस सानी नयन कमल खोले गिरिधारी। दरश परश नयनन फल पायो वारि अपनपो भई सुखारी॥ आदि सनातन राधे मोहन विलसत हुलसत संग सुकुमारी। दंपति लीला सुखद सुशीला गावत दीन मगन बलिहारी॥ १९४॥

राग रामकली।

लटकत आवत कुंज भवनते। डुर डुर परत राधिका ऊपर जाग्रत शिथिल गवनते॥ चौंक परत कबहुं मारग बिच चलत सुगंध पवनते। भर उसांस राधा वियोग भय सकुचे दिवस रवनते॥ आलस मिस न्यारे न होत हैं नेकहू प्यारी तनते। रसिक टरो जिन दशा श्यामकी कबहू मेरे मनते॥ १९५॥

राग कान्हरा।

प्रीतिकि रीति रँगीलोइ जाने। यद्यपि सकल लोक चूडामणि दीन अपनपो माने॥ यमुना पुलिन निकुंज भवनमें मान मानिनी ठानै। निकट नवीन कोटि कामिनि कुल धीरज मनहि न आनै॥ नश्वर नेह चपल मधुकर ज्यों आन आनसे बाने॥ जय श्री हित हरिवंश चतुर सोइ लालहिं छांड मेंड पहिचाने१९६॥

राग रेखता ।

हर इक तरफ चमनमें कैसी बहारछाई। चल देखिये छबीली गुलशन कि खुशनुमाई॥ गेंदा गुलाब तुर्रा क्या मालती निवारी। फूलोंके भार सेती क्या झुकरही हैं डारी॥ सखियोंके सङ्ग जाके देखी विपिनकी शोभा। नागर नवल छबीली छबि देखके मन लोभा॥ फूलनकी गूंथ बेनी सखियन भली बनाई। हँस हँसके ललित किशोरी उर कंठसों लगाई॥ १९७॥

टुक बंगलामें बैठो बागकी बहार है। घरको न जावो प्यारा यां भइ अवार है॥ जाही जुही चमेली क्या मालती सुहाई। क्या सर्व सुहागिन सेवती क्या गुल डोरी लगाई॥ चारों तरफ लगी हैं क्या गुलाबकी क्यारी॥ क्या सर्व सफेद कनेर हैं क्या गुलाबास न्यारी॥ हँस करके ललित किशोरी उर कंठसों लगाई। गुलशन सिधारो प्यारी क्या भई चमन सवाई॥ १९८॥

कीजै गवन भवनमें वृषभानुकी दुलारी। देखो बहार कैसी बड़ गोपकी कुमारी॥ फूले गुलाब चंपा केसर कि फूली क्यारी। सुन्दर खिली चमेली गेंदा खिले हजारी॥ चहुँओर मोर बोलैं कोयल कि कूक प्यारी। पहरो सम्हार भूषण ओढो सुरंग सारी॥ जलदी चलो किशोरी अरजी यही हमारी। माखनको चोर ठाढो बिनती करै तिहारी॥ १९९॥

दादरा ।

महलन चलो नवल अलबेली। रंग महलमें सेज बिछीहै चुन२ कुसुम चमेली॥ चम्पा मरुवा और केवडा बिच बिच फूल रवेली। चित्रकारी मेरे देखोजी मन्दिरमें सुन्दर गर्व गहेली॥ पुरुषोत्तम प्रभु रसिक शिरोमणि थारे चरणकी मैं चेली॥ २००॥

लावनी ।

चल वृषभानु कुमारी बाग अवलोक बनी शोभा भारी । भाँति भाँतिके खिले हैं फूल झुकी धरणी डारी ॥ सुन प्रिय वचन चली हँस सुन्दर पहुँची नजर बागकी ओर । वचन अमीसे कह-तहैं नागरिसे पिय नन्दकिशोर ॥ देखो बाग मनोहरता क्यारिनमें कैसी बनी मरोर । अति सुहाग है रोम सुरखी पट्टीकी हरी किनोर ॥ फूले चीन गुलाब चारु गुल नर्गकनकि है न्यारी । भाँति भाँति० ॥ गेंदा गुलाबास गुलतुर्रा गुलमक्खु गुलगोटी । गुलइलायची लगीहै गुलमेहँदी रँगकी मोटी ॥ फली मुळचाँदनी भली यह गुलबहार झुकमें लोटी । कुन्द केवड़ा भली कचनारनकी सुन्दर जोटी ॥ गयबेल चम्पा बेला मोतिया जुही फूली प्यारी । भाँति भाँतिके० ॥ गुलखेरा गुलदाउद नीकी आवत महक चमेलीकी । मौलसिरी है ललित केवरा माधुरी बेलीकी ॥ सरो सरस कनेर फुहारनमें बहार जलरेली की । हौज बीचमें भली शोभा बाढी जल केलीकी ॥ फूले कंज तड़ागनमें तिनपे अलि पाती झुकन्यारी । भाँति भाँति-के० ॥ करो विहार आज या उपवन सुनो कुँवर जिय भावतहै । कुञ्ज छबीली छबीली ऋतु बसंत सरसावत है ॥ बोलत मोर चकोर हंस कोयल मधुरे सुर गावत हैं । पवन सुहावन विविध विधि चलत अनन्द बढ़ावत है ॥ कुञ्जभवन मिलि बैठे दोऊ निरखि रसिक जन बलिहारी । भाँति भाँतिके० ॥ २०१ ॥

राग दादरा ।

प्यारी तेरे अंगमें फूलनकी बहार है । फूलनके बाजूबंद फूल-नके गजरे फूलनके सोहैं गलहार ॥ चम्पा मरुवा राय चमेली सब फूलनमें गुलाब । चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि सब गोपि-नमें गुपाल ॥ २०२ ॥

राग वसन्त ।

नई बहार आई मन भाई । ब्रजकी नारि सब बन बन मिल मिल फुलवा बीननको धाई ॥ डारी डारी रस लेत भवँरवा कोयलिया बोल रही । अँबुआ मौल रहे सब शीतल मन्द सुगन्ध मारुत बहे ललित लता द्रुम छाई ॥ बोलत सारस मोर कोकिला नाना पक्षी शब्द सुनाई । चलो न बेग कुँवारि कुञ्जनमें फूल रही फुलवारी प्यारी ॥ तोहि श्याम बुलावत लेहु प्रेम रस कृष्णदास मन भाई ॥ २०३ ॥

ललित लवंग लता परिशीलन कोमल मलय समीरे । मधुकर निकर करंबित कोकिल कूजित कुंज कुटीरे ॥ विहरति हरिरिह सरस वसन्ते ॥ नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहि जनस्य दुरंते ॥ उन्मद मदन मनोरथ पथिक वधू जन जनित विलापे ॥ अलिकुल संकुल कुसुम समूह निराकुल बकुल कलापे ॥ मृगमद सौरभ रभस वशंवद नव दल माल तमाले ॥ युवजन हृदय विदारण मनसिज नख रुचि किंशुक जाले ॥ मदन महीपति कनक दंड रुचि केशर कुसुम विकासे ॥ मिलित शिलीमुख पाटलि पटल कृतस्मर तूण विलासे ॥ विगलित लज्जित जगदवलोकन तरुण करुण कृतहासे ॥ विरहिनि कृंतन कुन्त मुखाकृति केतकि दंतुरिताशे ॥ माधविका परिमल ललिते नव मालति जाति सुगन्धौ ॥ मुनि मनसामपि मोहन कारिणि तरुणा कारण बन्धौ । स्फुरदतिमुक्तलता परिरंभण मुकुलित पुलकित चूते ॥ वृन्दावन विपिने परि सर परि गत यमुना जल पूते ॥ श्रीजयदेव भणितमिद मुदयतु हरिचरण स्मृति सारं ॥ सरस वसन्त समय वन वर्णन मनुगत मदन विकारं ॥ २०४ ॥

देखो सखि आज बन्यो श्रीवृन्दाविपिन समाज । आनंदित सब लोक ओक सुख सदा श्यामको राज ॥ राधारमण वसंत मचायो पञ्चम धुनि सुनि कान । धरणि गिरत सुर किन्नर कन्या विथकित गगन विमान॥ किलकत कोकिल कूँजन ऊपर गुंजत मधुकर पुञ्ज। बजत महारव वेणु झांझ डफ ताल पखावज रुञ्ज ॥ केशर भर भर ले पिचकारी छिरकत श्यामहि भाई ॥ छिरक कुँवर बूका भर चोवा लिये कण्ठ लिपटाई ॥ वर्षत सुमन विबुध कुल ऊपर पावन परम पराग । तन मन धन न्योछावर कीनो निरखि व्याम बड-भाग ॥ २०५ ॥

कोयलिया बोलन लागी रे । फूल रही फुलवारी पिय प्यारी ऋतु वसंत आई मदन जागे टसू फूले अंबुआ मौले भ्रमर करत गुंजार ॥ पिया बिन मेरो मन भयो विरागी ॥ अवधि बीती अजहूँ नहिं आये कुब्जा सौति विरमाये ॥ रैनि दिवस रसना रटत उनहीं संग लागी ॥ प्रीत रीत श्याम जाने दर्शन देहु सुख-निधान ॥ कृष्णदास मिटे प्यास आनंद उर बाढे ॥ २०६ ॥

राग विभास ।

प्यारी तुम कौन हो री फुलवा बीनन हारी॥ नेह लगनको बन्यो बगीचा फूल रही फुलवारी । नन्दलाल वनमाली मों तुम बोलो क्यों नहिं प्यारी ॥ हँस ललिता तब कही श्यामसों यह वृषभानु दुलारी । तिहारे कहा लागे या वनमें रोके गैल हमारी ॥ राधेजू फल फूल लिये हैं विविध सुगंध सँवारी । सूर श्याम राधे तन चितवन इकटक रहे निहारी ॥ २०७ ॥

राग कालिंगडा ।

कोई फुलवा लेहुरी फुलवा । नील श्वेत पीरे पचरंगी वरण वरण

के हरवा ॥ चुन चुन कली चमेली चटकी टटकी दोना मरुवा । ललित किशोरी विवश होय चट पहराये पिया गरवा ॥ २०८ ॥

राग जंगला दादरा ।

प्यारी मैं तो तिहारी मालिनियां । मेरी फुलबगियामें चलोगे कै ना विविध रंग फूली फुलवारी अलबेली मन भामिनियां ॥ बहुत दिनाकी आशा लागी सींचसींच कर कामिनियां । सफल करो पद तल अंकित कर ललित किशोरी दामिनियां ॥ २०९ ॥

राग गौरी ।

द्वारे मेरे बंसी कौन बजावे । नई नई तान लेत बंसीमें ठाढो गौरी गावे ॥ चलो सखी वाको मुख देखें नन्दकि धेनु चरावे । सांवरो सखी सोई बड़ भागन जो हँस कंठ लगावे ॥ २१० ॥

राग गौरी ।

मुरलीकी टेर सुनावे री माईको । मोरे आँगनमें ऐडोई डोले मोर मुकुट छबि भावे ॥ श्रवण सुनत रस मीठी बीतियां रहस रहस कर गरे लगावे । सूर घूंघट वाहन सुत देखत लज रिपु छूटत जावे ॥ २११ ॥

राग देश ।

अकेली मत जइयो राधे यमुना तीर । बंसीवटमें ठग लागत हैं सुन्दर श्याम शरीर ॥ बिन फाँसी बिन भुज बल मारत बिन गांसी बिन तीर । वाके रूप जालमें फँसिके को बचिहै ऐसो बीर ॥ घर बैठो भर देउँ गगरिया मनके मनमें राखो धीर । बीरन पान करन हम त्यागयो कालिन्दीको नीर ॥ धन सुत धाम गये नहिं चिंता प्राण गये नहिं पीर । सूरदास कुलकान गई ते धृग धृग जन्म शरीर ॥ २१२ ॥

राग बिहाग ।

मेरे गिरिधारीजीसों कवन लरी । गिरिधारी जीके चरण कमल पर वार डारों सगरी ॥ चल री यशोदा मैया तोहिं बतऊं जो हमसे झगरी । गोरे वदन पर नीला पट ओढे चंचल चपल खरी ॥ तू तरुणी मेरो गिरिधर बालक कैसे भुज पकरी । गिरिधर मेरो आंसू भर रोवे तू मुसकात खरी ॥ तूने यशोदा मेरो न्याव न कीनो सुतकी ओर करी । सूरदास वनमें जब पाऊँ तो बातें हमरी ॥ २१३ ॥

राग रामकली ।

श्रीयमुना तिहारो दरश मोहिं भावे । श्रीगोकुलके निकट बहति है लहरनकी छबि आवे । सुखकरनी दुखहरनी यमुना जो जन प्रात नहावे । मदनमोहनको अतिही प्यारी पटरानी जो कहावे ॥ वृन्दावनमें रास रच्यो है मोहन मुरली बजावे । सूरदास प्रभु तुमरे मिलनको वेद विमल यश गावे ॥ २१४ ॥

राग कालिंगड़ा ।

सखी स्वप्नेमें घबरानी तुझ पर जादू किन डारा रे । स्वप्नेमें देख्यो वाहीको मिलाऊं तनु तेरेका तपन मिटाऊँ तीन लोक सूरत लिख ल्याऊं चित्ररेखा तब नाम धराऊं पहिले लिखों स्वर्गकी रचना तामें ना कोऊ न्यारा रे ॥ दूजे लिखौ पतालके बसैया तामें ना कोउ स्वप्न दिखैया बार बार मोहिं लेत बलैया आन मिलाओ मेरे चितको चुरैया क्या करों कछु वश ना मेरे होत न वदमें न्यारा रे । तीजे लिखों मध्यके वासी श्रीवृन्दावन लिख लइ काशी द्वारवतीके हो तुम बासी श्रीकृष्ण ठाकुर अविनाशी तब सकुचाय रही कछु मनमें घूंघट बहुरि सँवारा रे ॥ प्रद्युम्नको सूरत लिखल्याई तब वाको कछु हाँसी आई अनिरुद्धको जब दियो दिखाई प्रेम

महित अँखियां भर आई पिया पिया कर रोवन लागी स्वप्रेमें मोहिं मारा रे ॥ तभी द्वारका पहुँची जाई पलँग सहित वाको लै आई ऊपाको जब दियो मिलाई तब वाने कछु दछिना पाई विष्णुदास मथुराको वासी जीवन प्राण हमारा रे ॥ २१५ ॥

पद ।

भजन भावना हीय न परसी प्रेम नहीं उर कपटी । कुआँ परयो आकाश उडत खग ताको करत जो झपटी ॥ रसिक कहावें वेई जिनके युगल मिलनकी चटपटी । वृन्दावन हित रूप कहां लग वरणों सृष्टि अटपटी ॥ २१६ ॥

कुण्डलिया ।

साँचेश्रीराधा रमण, झूँठो सब संसार । बाजीगरको पेखनो, मिटत न लगत अबार ॥ मिटत न लगत अबार भूतकी संपति जैसे । महरी नारी पूत धुआंके बादर तैसे ॥ भगवत ते नर अधम लोभवश घर घर नाचैं । झूँठ गढ़े सुनार वैनके बोले साँचे ॥ २१७ ॥

छंद ।

देखा देखी रसिक न होइ है रस मारगहै बंका । काहू सिंहकी सरवर करिहै गीदर फिरै जो रंका ॥ असहन निंदा करत पराई कभूँ न मानी शंका । वृन्दावन हित रूप रसिक जिन दियो अनन्यपथ डंका ॥ २१८ ॥

सबसों न्यारे सबके प्यारे ऐसी रहनी रहिये । स्तुति अरु निंदा छोड पराई युगल जीभ यश गहिये ॥ दुख सुख हानि लाभ सम वर्तन आनि परे सो सहिये । भगवत चरण शरण गहि गोविंद मन वांछित सुख लहिये ॥ २१९ ॥

कवित्त ।

कामिनी निहारयो काम सन्तन विचारयो राम, योगी योग ध्यान सिद्ध सिद्धन विशेषिये । दुर्जनको शारदूल मल्लनको वज्र-तूल, शत्रुनको सूर प्रजा प्रजापति पेखिये ॥ घन घटा मोरनको चन्द्रमा चकोरनको, भ्रमरको कंज मंजु मकरन्द लेखिये । कंस जाने काल ग्वाल बाल सब जाने सखा,एक नन्दलाल हीं अनेक रूप देखिये ॥ २२० ॥

राग विहाग ।

ऊधो चलो विदुर घर जैये । दुर्योधनके कहा काज जहँ आ-दर भाव न पैये ॥ गुरुमुख नहीं बडो अभिमानी तापर सेवक रहिये । टूटी छत्त मेघ जल बरसे टूटो पलँग बिछैये ॥ चरण धोय चरणोदक लीनो त्रिया कहे प्रभु ऐये । सकुचत बदन फिरत छिपाये भोजन काह मँगैये ॥ तुमतो तीन लोकके ठाकुर तुमसे कहा दुरैये । हमतो प्रेम प्रीतिके गाहक भाजी साग चखैये ॥ सूरदास प्रभु भक्तनके वश भक्तन प्रेम बढैये ॥ २२१ ॥

राग जंगला ।

जो मैं हरी न शस्त्र गहाऊँ । तो लाजों गंगा जननीको संतनु सुत न कहाऊं ॥ शर धनु तोड महारथ मारूँ कपिध्वज सहित गिराऊ । पांडव सेन ससेन मारथी शोणित सिन्धु बहाऊं ॥ जीवों तो यश लेउँ जगतमें जीत निशान फिराऊँ । मरों तो मण्डल भेदि भानुको सुरपुर जाय बसाऊँ ॥ इतनी शपथ करो प्रभू तुम्हरी क्षत्रिय गति ना पाऊं । सूर श्याम रण विजय सखाको जियत न पीठ दिखाऊँ ॥ २२२ ॥

जो मैं पारथ नाम कहाऊँ । हठ कर इंद्र चाप शोणित शर म-ज्जन वेग कराऊँ॥गीध कबंध कन्ध बैठाऊं काग करल उडाऊँ ।

दे भगदत्त द्रोण दुश्शासन इक इक बाण लगाऊं ॥ प्रलय करूँ कौरव दल ऊपर जंबुक कुलहिं अघाऊं । भीष्म कर्ण राजा दुर्योधन शरकी सेज सुलाऊं ॥ इतनी न करों शपथ मोहिं कृष्णकी क्षत्रिय गति ना पाऊं । सूरदास पारथ परतिज्ञा इक छत राज कराऊं ॥ २२३ ॥

राग सोरठ।

वा पट पीतकी फहरानि । कर गह चक्र चरणकी धावन नहिं बिसरत वह बानि ॥ रथ सों उतर वेगि पग धावन कच रजकी लपटानि । मानों सिंह शैलमें उतर्‌यो महामत्त गज जानि ॥ जन गोपाल मेरो प्रण राख्यो मेट वेदकी आन । सोई सूर सहायक हमरे गावत वेद पुरान ॥ २२४ ॥

कवित्त ।

आगे प्रहलाद बाबा तेरो नृप ऐसो रह्यो, जाके हित राम नरसिंह रूप धार्‌यो है । जाको जश परम पुनीत व्यास भागौतमें, गायो सो भयो है भक्त प्रभुजीको प्यारो है ॥ तैसोई सपूत भयो वैरोचन ताके आप, छायो यश जग कुल ऐसो सो तिहारो है । पूजो मनकाम मेरी सुनिये हो राजा बलि, याते आशीर्वाद दानी तुमको हमारो है ॥ २२५ ॥

राग श्यामकल्याण ।

सुन लेहु बात हमारी नगर सब । पढने जाओ प्रहलाद संग सब राम नाम उर धारी ॥ हरनाकुशके नाश करनको होंगे नरसिंह अवतारी।माखन चोर दास यों भाषे यह कह भवन सिधारी २२६॥

सुन लेहु राजकुमार । अरज मेरी याके पुत्र चढे अगनीमें राम बचावन हार ॥ राम नाम है सत्य कुँवर जी झूठो सब संसार । माखनचोर दास यों भाषे जाके हरि आधार ॥ २२७ ॥

छन्द ।

मत ले तू रामको नाम । झूठ मत बोले वृथा कुमारी । मेरे जो सुन पावेगो पिता खाल कढ़ लेगा भुस भरवारी ॥ अरी यह तो अगिन चढे बच नहीं इनको अपराध हमारी । यह तो बिल्ली करत विलाप दोष भयो भारी ॥ २२८ ॥

राग श्यामकल्याण ।

मत ले रामको नाम मौत जिन वेरे कुम्हारी । काल जो तेरे शिरपर आयो आगई दशा तिहारी ॥ राम नामको वाद न कीजे लीजै शोच विचारी । माखनचोर दास यूं भाखे मेरो पिता बलधारी ॥ २२९ ॥

छन्द ।

कुम्हरी मनमें अति शोच चली प्रह्लाद बुलावन आई । डेउढी पर ठाढी भई अरज दासीने जाय सुनाई । तुम सुनहो राजकुमार मेरो आँवा उतर्यो आज तुम चलो वेग महाराज बेर भई भारी ॥ २३० ॥

माताजी दूँगा द्रव्य अपाय कहूं में सत्य कि बानी । गुण भूलोंगो नाहिं पढाई तैंने राम कहानी ॥ माताजी भले दिये उपदेश मैंने हिरदेमें जानी । विष प्याला छुड़वाय प्याय दियो अम्मृत पानी ॥ २३१ ॥

छन्द ।

पाँच बरसके भये कुंवर जी राजा निकट बुलाये जी । ले प्रहलाद गोद बैठाये मनमें मोद बढाये जी ॥ षंडामर्का ब्राह्मण दोनो राजा निकट बुलाये जी । लेजावो चटसार कुँवरको अस कछु रीति पढ़ाओजी ॥ यह है कुलकी रीति हमारे कठिन कठोर कुचाली जी । धर्मको खंडन पापको मंडन हत्या हृदय बसाओ जी ॥ २३२ ॥

लावनी ।

विद्या पढ़ने गये गुरूकी चटशाला । तिन भर भर पट्टी राम नाम लिख डाला ॥ प्रहलाद काज भगवान भक्त हितकारी । भये संतनके हित काज आप गिरिधारी ॥ निरखी प्रभुकी प्रहलाद प्रथम प्रभुताई । बिल्लीने बच्चे धरे अँवामें लाई ॥ बिन जाने आँच कुम्हारि जो दई है लगाई । कीनी प्रभु आय सहाय बचे सुख पाई ॥ जिन जाना राम स्वभाव परम शुभकारी ॥ भये सन्तनके० ॥ इतनेमें पाँडे आय निहारी पाटी । पढ़ रह्यो रामका नाम चलाई माटी ॥ क्या तुझे राममें काम कह्यो ललकारी ॥ भये संतनके० ॥ भूपति बोला ललकार कहाँ हरि तेरो । तू है मूरख नादान मौतने घेरो ॥ अब छोड़ूँगो नाहिं गयो मैं हारी ॥ भये सन्तनके ॥२३३॥

राग श्यामकल्याण ।

पाँड जी मोहिं राम नाम लिख देह । गंगाजल तजि पियत कूप जल अम्मृत छाँड विष देह ॥ और पढ़नसे कहा काज है वृथा त्रास क्यों देह । युगलदास प्रभुके चरणनमें बार बार शिर देह ॥२३४॥

कडा ।

प्यारे जी गिनती कई हजार पढे हम बिकट पहारे । पट्टी लिखी अनेक लगे हरि नाम पियारे प्यारे ॥ जी राम नामके हरफ मैंने हिरदे में धारे । औ सब झूँठा ख्याल जगतमें धुंध पसारे ॥ २३५ ॥

पाँडेजी मैं नहिं रखता प्यार कुँवरकी शामत आई । पूत नहीं यमदूत करैं मेरी लोग हँसाई ॥ पाँडेजी जाको ले यह नाम सोई मेरो दुखदाई । मार उड़ाऊं खाल करेगा कौन सहाई ॥ २३६॥

प्यारेजी फूलोंकीसी सेज कुँवर हरिके गुण गावै । धन मेरो महराज पार जिनका नहिं पावै ॥ प्यारे जी निश्चय करके रटै विपतिके फन्द छुडावे । दर्शन ते गति होय मुक्तके धाम बसावे॥२३७॥

राग देश ।

जननी विष मोहिं दे पिलाय । अब और कछू तो नाहिं उपाय ॥ मेरो आप हरी कर ले सहाय । इकबाहँ पकरके खैंच लाय ॥ मोहिं गिरि पर्वतमें दियो गिराय । तहां आप हरीने मोहिं लियो उठाय ॥ इक जलती अगिनमें दियो बिठाय । तहं कुन्द परे हरि आप धाय ॥ मोहिं अमृत हृदयमें लियो लगाय । हरिकी गति मोपै लखी न जाय ॥ मोरे रोम रोममें रह्यो समाय । कहै युगल चरणमें चित लगाय ॥ २३८ ॥

राग वसन्त ।

नहिं छोडूँ रे बाबा रामनाम । मेरो और पढ़नसों नहीं काम ॥ प्रह्लाद पठाये पढन शाल । संग सखा बहु लिये बाल ॥ मोको कहा पढ़ावत आल जाल । मेरी पटिया पे लिखदेउ श्रीगोपाल ॥ यह षंडमर्का कह्यो जाय । प्रहलाद बुलाये वेग धाय ॥ तू राम कहनकी छोड बान । तुझे तुरत छुडाऊं कह्यो मान ॥ मोको काह सतावो बार बार । प्रभु जल थल नभ कीने पहार ॥ इक राम न छोड गुरुहिं गार । मोहिं घाल जार चाहै मार डार ॥ काढ खड्ग कोप्यो रिसाय । तुझे राखन हारो मोहिं बताय ॥ प्रभु खंभमें निकसे हो विस्तार । हरनाकुश छेद्यो नख विदार ॥ श्रीपरमपुरुष देवादिदेव । भक्त हेतु नरसिंह भेव ॥ कह कबीर कोउ लखै न पार । प्रहलाद उधारे अमित बार ॥ २३९ ॥

राग भैरव ।

मंगल रूप यशोदा नन्द । मंगल मुकुट कान मणि कुंडल मंगल तिलक विराजत चन्द ॥ मंगल भूषण सब अंग सोहत मंगल मूरत आनँद कन्द । मंगल लकुट कांखमें चापे मंगल मुरली बजावत मन्द ॥ मंगल चाल मनोहर मंगल दर्शन होत

मिट्यो दुख द्वंद । मंगल व्रजपति मंगल मधुवन मंगल यश गावत श्रुति छंद ॥ २४० ॥

राग भूपाली कल्याण ।

मुकुट पर वारी जाऊँ नागर नन्दा । सब देवनमें कृष्ण बडे हैं ज्यों तारेमें चन्दा ॥ सब सखियनमें राधे बडी हैं ज्यों नदियोंमें गंगा । चन्द्र सखी भज बालकृष्ण छबि काटो यमके फन्दा ॥ २४१ ॥

राग देश ।

आदि मणि ब्रह्म अवतार मणि कृष्ण युग मणि सतयुग दिशन पूर्व सब घट रमण रमैया । दिवस मणि भास्कर निशा मणि चन्द्रमा उडुगण मणि ध्रुव द्वीपन मणि जंबूद्वीप खण्डन मणि भरतखंड चतुर महैया ॥ स्वर्गमणि वैकुंठ राजन मणि इन्द्र गुरुन मणि बृहस्पति वेद मणि ब्रह्मा सब जग रचैया ॥ हस्तिन मणि ऐरावत बिहंगन मणि वैनतेय पुराण मणि श्रीभागवत परमहंस मणि शुकदेव कहैया ॥ ज्ञानिन मणि महादेव ध्यानिन मणि लोमश ऋषि आयुर्बल मणि मार्कण्डय गिरि मणि सुमेरु थिरैया । तरुन मणि कल्पवृक्ष वीरन मणि महावीर सागर मणि पयसमुद्र सरित मणि विष्णुपदी तीरथ मणि ब्रज स्थान हरि प्रगटैया ॥ भक्तन मणि प्रह्लाद यतियन मणि लक्ष्मण नारिन मणि उर्वशी तुरँगन मणि उच्चैःश्रवा इंद्रधाम रहैया । रागमणि भैरव ऋतुन मणि वसन्तऋतु शास्त्रमणि वेदांत रञ्जन मणि संगीत पार ना लहैया ॥ ताननमणि तानसेन गायन मणि नारद गंधर्व मणि हाहाहूहू वीणन मणि सरस्वती बीन प्रात ही नाम लैया । स्वरन मणि खरज स्वर सुरन मणि तैव्यारा मूर्छना मणि आनंदी तिथिन मणि एकादशी उत्तम मणि गोविंद नाम लै कृष्णनंद भवसागर पार पैया ॥ २४२ ॥

राग बिलावल ।

धर्ममणि मीन मर्याद मणि रामचन्द्र रसिक मणि कृष्ण और तेज मणि नरहरी। कंठन मणि कमठ बल विपुल मणि वाराह छलन मणि वामन देह विक्रम धरी ॥ गिरिन मणि कनकगिरि उदधिन मणि क्षीरनिधि सरन मणि मानसर नदिन मणि सुरसरी। खगन मणि गरुड द्रुमन मणि कल्पतरु कपिन मणि हनूमान पुरिन मणि अवधपुरी॥ सुभट मणि परशुधर कान्तमणि चक्र वर शक्ति मणि पार्वती जान शंकर वरी। भक्त मणि प्रह्लाद प्रेम मणि राधिके मणिनकी माल गुहि कंठ कान्हर धरी ॥ २४३ ॥

राग भैरव ।

मदन गुपाल हमारे राम। धनुष बाण धर विमल वेणु कर पीत वसन अरु तन घनश्याम ॥ अपनी भुज जिन जलनिधि बांध्यो रास नचाये कोटिन काम। दशशिर हति सब असुर सँहारे गोवर्द्धन धाऱ्यो कर वाम ॥ तव रघुवर अब यदुवर नागर लीला नित्त विमल बहु नाम। परमानन्द प्रभु भेद रहित हरि निज जन मिल गावत गुणग्राम ॥ २४४ ॥

राग सारंग ।

हरि हरि हरि सुमिरण करो। हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरिकी कथा होतहै जहां। गंगा हू चल आवै तहां ॥ यमुना सिंधु सरस्वति आवे। गोदावरी विलंब न लावे ॥ सर्व तीर्थको वासो तहां। सूर हरि कथा होत है जहां ॥ २४५ ॥

राग बिलावल ।

नन्दरायके नव निधि आई। माथे मुकुट श्रवण मणि कुण्डल पीत वसन भुज चारु सुहाई॥बाजत ताल मृदंग यन्त्र गति चरचि

अरगजा अंग चढाई । अक्षत दूब लिये शिर वन्दत घर घर वन्दनवार बँधाई ॥ छिरकत हरद दही हिय हर्षत गिरत अंक भर लेत उठाई । सूरदास सब मिलत परस्पर दान देत नहिं नन्द अघाई ॥ २४६ ॥

राग जैतश्री ।

नंदजू मेरे मन आनंद भयो हौं गोवर्द्धन ते आयो । तुमरे पुत्र भयो हौं सुनिके अति आतुर ह्वै धायो ॥ बंदीजन अरु भिक्षुक सुन सुन जहां तहां ते आये । इक पहले ही आशा लागी बहुत दिनन के छाये ॥ ते पहरे कञ्चन मणि भूषण नाना वसन अनूप । मोहिं मिले मारगमें मानो जात कहूंके भूप ॥ तुमतो परम उदार नंदजी जो मांग्यो सो दीनो । ऐसो और कौन त्रिभुवन में तुम सर साटो कीनो ॥ कोटि देहु तो परचो रहै गो बिन देखे नहिं जैहौं । नन्दराय सुन बिनती मोरी तबही बिदा भल ह्वै हौं ॥ दीजै वेग कृपा कर मोकों जो हौं आयों मांगन । यशुमति सुत अपने पांयन चल खेलत आवै आँगन ॥ मदन मोहन मैया कह टेरैं यह सुनके घर जाऊँ । हौं तो तुम्हरे घरको ढाढी सूरदास मोहिं नाऊं ॥ २४७ ॥

राग कान्हरा ।

अनोखा लाडिला खेलन मांगत चन्द । हँसन खेलनको गारि करत है मनमें भयोरी अनन्द ॥ २४८ ॥

राग जैतश्री ।

दूर खेलन जिन जाहु ललन मेरे हाऊ आये हैं । तब हँस बोले कान्हर मैया इनको किन्हो पठाये हैं ॥ यमुनाके तट धेनु चरावत जहां सघन वन झाऊ । पैठ पताल व्याल गह नाथ्यो तहां न देखे हाऊ ॥ अब डरपत सुन सुन यह बातें कहत हँसत बलदाऊ ।

सप्त रसातल शेषासन रहि तबकी सुरत भुलाऊँ ॥ चार वेद लै गयो शंखासुर जलमें रह्यो लुकाऊँ । मीन रूप धरके जब मार्‍यो तबहिं रहे कहँ हाऊ ॥ मथि समुद्र सुर असुरनके हित मन्दर जलहि खिमाऊँ ॥ कमठ रूप धरि धरणि पीठ पर सुख पायो सुरराऊँ ॥ जब हरिणाक्ष युद्ध अभिलाष्यो मनमें अति गरवाऊँ । धरि वाराह रूप रिपु मार्‍यो लै क्षिति दन्त अगाऊँ ॥ विकटरूप अवतार धर्‍यो जब जन प्रहलाद बचाऊँ । होय नरसिंह जब असुर बिदार्‍यो तहां न देख्यो हाऊँ ॥ वामन रूप धर्‍यो बलि छल कर तीन पैग बसुधाऊँ । श्रम जल ब्रह्म कमंडलु राख्यो दरश चरण परसाऊँ ॥ मार्‍यो मुनि बिनहीं अपराधहिं कामधेनु लै आऊँ । इकइस बेर करी निछत्र क्षिति तहां न देख्यो हाऊ ॥ राम रूप रावण जब मार्‍यो दश शिर बीस भुजाऊँ । लंक जराय छार जब कीनो तहां रहे कहँ हाऊँ ॥ माटीके मिस वदन विकास्यो जब जननी डरपाऊँ । मुख भीतर त्रैलोक दिखायो तबहु प्रतीति न आऊँ ॥ नृपति भीम सों युद्ध परस्पर तेहि कर भाव बताऊं । तृन चीरि द्वै टूक कियो धर ऐसे त्रिभुवन राऊं ॥ भक्त हेतु अवतार धर्‍यो सब असुरन मार बहाऊं । सूरदास प्रभुकी यह लीला निगम नेति नित गाऊं ॥२४९॥

राग रामकली ।

किहि मिस यशोमतिके जाऊं । सकल सुखनिधि मुख निरखके नयन तृषा बुझाऊं ॥ द्वारे आरज सभा जुर रही निकसने नहिं पाऊं । बिन गये पतिवर्त छूटै हमै गोकुलराऊँ । श्याम गात सरोज आनन ललित लेले नाऊँ । सूर लगन कठिन मनकी कहो काहि सुनाऊँ ॥ २५० ॥

राग दादरा ।

जगमें देखत हूँ सब चोर । जोर इंद्रिन वश महा लुब्ध मन मोर ॥ पांच चोर सबके उर भीतर चोरी करें करावें । चोरि चोरि

सब जगको खावें कोऊ पार न पावें ॥ हाकिम चोर चोर मुतसद्दी चोर शहर व्यापारी । तैसेई चोर जानिये सबको कहां पुरुष कहँ नारी ॥ ब्रह्मा चोर वदत वृन्दावन बालक वत्स चुरायक । साधु चोर हरि हृदय चुरायो जो त्रिभुवनके नायक ॥ पांच सात मिल चोरी कीनो जो जामों बन आई । सूरदास गुण कहँ लग बरणै माखन चोर कन्हाई ॥ २५१ ॥

दोहा ।

विश्वभरण पोषण करन, कल्पतरोवर नाम ।
सो प्रभु दधि चोरी करत, प्रेम विवश भगधाम ॥

राग धनाश्री ।

कबके बांधे ऊखल दाम । कमलनयन बाहर कर राखे तू बैठी सुखधाम ॥ हो निर्दयी दया कछु नाहीं लाग रही घर काम । देख क्षुधाते मुख कुम्हलानो अति कोमल तनु श्याम ॥ छोरो बेग बडी बिरिया भई बीत गये युग याम । तेरी त्रास निकट नहिं आवत बोल सकत नहिं राम ॥ जन कारण भुज आप बँधाई वचन कियो ऋषि काम । ता दिनते यह प्रगट सूर प्रभु दामोदर भो नाम ॥ २५२ ॥

राग सारंग ।

हलधरसों कह ग्वालि सुनायो । प्रातहि ते तुम्हरो लघु भैया यशुमति ऊखल बांधि लगायो ॥ काहूके लरिकहिं हरि मारयो भोरहिं आन रोवत गोहरायो । तबहीं ते बांधे हरि बैठे सो हम तुमको आन जनायो ॥ हम बरजी बरज्यो नहिं मानत सुनतहि बल आतुर है धायो । सूरश्याम बैठे ऊखल लग माता तनु अतिही त्रसायो ॥ २५३ ॥

निरखि श्याम हलधर मुसकाने । को बाँधे को छोरे इनको यह महिमा येही पै जाने ॥ उत्पति प्रलय करत हैं येई शेष सहस मुख सुयश बखाने । यमलार्जुन तरु उधरन कारण करत आप मन माने॥ असुर सँहारन भक्तहि तारन पावन पतित कहावत बाने । सूरदास प्रभु भावभक्तिके अति मति यशुमति हाथ बिकाने ॥ २८४ ॥

छन्द ।

अनुसार अस्तुति युगल प्रेमानन्द मन सन्मुख खरे ॥ जे जे भगत हित सगुण सुन्दर देह धर धावत हरे ॥ जो रूप निगम नेति गायो बुद्धि मन वाणी परे । सो धन्य गोकुल आय प्रगट धन्य यशुमति उर धरे ॥ धन्य व्रज धनि गोप गोपी गाय दधि माखन मही । धन्य गोविंद बाललीला करत माखन चोरही ॥ धन धन उरहनो देत नित उठि धन्य अनग्र नटावही । धनि सो जननी बाँधि राखत जाहि वेद न पावही ॥ धन्य सो तरु जासु ऊखल धनि सुजन गढ़ लाइयो । धन्य सो तृण जासकी रजु श्याम भुजन बँधाइयो ॥ धन्य ऋषि धनि श्राप दीनो अति अनुग्रह सो कियो । जासु शिव ब्रह्मादि दुर्लभ नाथ नृप दर्शन दियो ॥ अब कृपा कर देहु वर प्रभु चरण पंकज मति रहै । जहां जन्मदि कर्म वश तहं एक तुमरी गति रहै ॥ दीनबंधु कृपालु सुन्दर श्याम श्रीव्रजनाथ जू । राखिये निज शरण अब प्रभु करिये हमहि सनाथ जू ॥ २८५ ॥

पारब्रह्म परमेश्वर अविगत भुवन चतुर्दश नाथ हरी । जब जब भीर परी सन्तन पै प्रकट होय प्रतिपाल करी ॥ आदि अन्त सबके तुम स्वामी ब्रह्मादिक हैं अनुगामी । कृष्ण नमामि नमामि नमामी दयासिंधु अंतर्यामी ॥ जाको ध्यान धरत योगी जन शेष जपत नित नाम नये । सो भव तारण दुष्ट निवारण संतन कारण प्रगट भये ॥ जाको नाम सुनत यम डरपत हरहर कांपत काल

हिये । ताको पकर नन्दकी रानी ऊखल सों लै बांध दिये ॥ जै दुखमोचन पंकजलोचन उपमा जाय न कहत बनी । जै सुखसागर सब गुण आगर शोभा अङ्ग अनङ्ग घनी ॥ नारदको हम अति गुण माने शाप नहीं वरदान दियो । जा कारणते प्रभु आपने दर्शन दियो सनाथ कियो ॥ जो हरहूके ध्यान न आवत अपर अमर हैं किहि लेखे । सो हरि प्रगट नंदके आँगन ऊखल सङ्ग बँधे देखे ॥ जिनकी पदरजको सुर तरसें अगम अगोचर दनुजारी । त्राहि त्राहि प्रणतारत भंजन जन मन रंजन सुखकारी ॥ तुमारी माया जीव भुलानो किहि विधि नाथ तुम्हें जाने । तुमहीं कृपा करो जब स्वामी तबहीं तुमको पहँचाने ॥ हे मुकुंद मधुसूदन श्रीपति कृपानिवास कृपा कीजे । इन चरणनमें सदा रहै मन यह वरदान हमें दीजे ॥ जै केशव जै अधम उधार दयासिंधु हरि नित्य मगन । जै सुंदर ब्रजराज शशीमुख सदा बसो मम हृदय गगन ॥ रसना नित तुमरे गुण गावे श्रवण कथा सुन मोद भरे । कर नित करें तुम्हारी सेवा नयन संत जन दरश करें ॥ नेम धर्म व्रत जप तप संयम योग यज्ञ आचार करें । नारायण बिन भक्ति न रीझो वेद सन्त सब साख भरें ॥ २९६ ॥

राग सुघराई ।

बजावे मुरलीकी तान सुनावे यहि विधि कान्ह रिझावे । नटवर वेष बनाय चटकसों ठाढो रहै यमुनाके तीर नित वन मृग निकट बुलावे ॥ ऐसो को जो जाय यमुनाते जल भर घरहि लै आवे । मोर मुकुट कुण्डल वनमाला पीतांबर फहरावे ॥ एक अङ्ग शोभा अवलोकन लोचन जल भर आवे । सूर श्यामके अङ्ग अङ्ग प्रति कोटि काम छबि छावे ॥ २९७ ॥

राग बसन्त ।

बरज यशोदे तू अपनो बाल । रसिया गोपाल नित उठ हमसे करत रार ॥ स्नान करन गई यमुना तीर, लहि भूषण वस्त्र धरे हैं तीर ॥ जल प्रवाह मोरी लागी दीठ । तेरा कृष्ण कुँवर मोरी मलत पीठ ॥ रहु री ग्वालन मत झूंठ बोल । मेरा कृष्ण कुँवर झूले पलना ओर ॥ ना खावे अन्न ना पीवे नीर । वह कौन समय गयो यमुना तीर ॥ घर आवे जब बाल मार । आंगन धाये जब ढोटा मार । देखो सूर प्रभुके यह ख्याल । उठ चली है ग्वार मुखो भई है लाल ॥ २५८ ॥

राग बरवा ।

माई नित उठ कुंजन रोकत ब्रज बनवारी । कल न परत मोरी मटुकी फोरी और भींजी पचरंग सारी ॥ जाय कहू जी में नन्दजूके आगे करके छैल बिहारी । हम रंग प्यारो देख मुसकत है और देत रस गारी ॥ २५९ ॥

पीलो ।

हे प्यारी नाहिं फोरी गगरिया देरी छबि हार नई पनिहार । तू तो री मोरी चकियाँ की डोरी ताप देनी है गार ॥ तू जोबन अलमस्त ग्वारन चलत न आप संभार । झूम झूम पग धरत भूमिपर में तोहिं दीन संभार ॥ २६० ॥

राग गौरी ।

छबीले बंसी नेक बजावो । बलि बलि जात सखा यह कह कह अधर सुधा रस प्यावो ॥ दुर्लभ जन्म दुर्लभ बृन्दावन दुर्लभ प्रेम तरङ्ग । ना जानिये बहुरि कब ह्वै हैं श्याम तुम्हारे संग ॥ विनती करत सुबल श्रीदामा सुनो श्याम दै कान । या यशको सनकादि शुकादिक करत अमर मुनि ध्यान ॥ कब पुनि गोप वेष ब्रज धरिहो

फिरिहो सुरभिन साथ । कब तुम छाक छीनके खैहौ श्रीगोकुलके नाथ ॥ अपनी अपनी कांध कमरिया ग्वालन दई डसाई । सोंह दिवाय नन्द बाबाकी रहे सकल गहि पाई ॥ सुन सुन दीन गिरा मुरलीधर चितये मुख मुसकाई । गुण गंभीर गोपाल मुरलिका लीनी कंठ लगाई ॥ धर कर वेणु अधर मनमोहन कियो मधुर धुन गान । मोहे सकल जीव जल थलके सुन वारें तन प्रान ॥ चपल नयन भृकुटी नाशा पुट सुन सुन्दर मुख बैन । मानो निरतत भाव दिखलावत गति लिय नायक सैन ॥ चमकत मोर चंद्रिका माथे कुंचित अलक सुभाल । मानो कोमल कमल कोश-रस चाखन उड़ आये अलिमाल ॥ कुंडल लोल कपोलन झलकत ऐसी शोभा देत । मानो सुधासिंधुमें क्रीड़त मकर पानके हेत ॥ उपजावत गावत गति सुन्दर अनाघातके ताल । रस सभ दियो मदनमोहनको प्रेम हर्ष सब ग्वाल ॥ लोलित बैजन्ती चरणन पर श्वासा पवन झकोर । मानो सुधा पियन उहि आयो ब्रह्म कमण्डलु फोर ॥ डोलत लता मन्द मारुत गति सुन सुन्दर मुख बैन । खग मृग मीन अधीन भये सब कियो यमुन जल सैन ॥ झलमलात भृकुटी पद रेखा सुभग सांवरे गात । मनु पटवारु एक रथ बैठी उदय कियो अधरात ॥ बाँके चरण कमल भुज बांके अवलोकन जो अनूप । मानो कल्प तरोवर बिरवा आन रच्यो सुर भूप ॥ अति सुख दियो गोपाल सबनको सुखदायक जिय जान । सूरदास चरणन रज माँगत निरखत रूप निधान ॥ २६१ ॥

राग पूरवी ।

धरें टेढी पाग टेढी चंद्रिका टेढी त्रिभंगीचाल । कुंडलोंकी छवि देख कोटि रवि उदय होत और सोहे वनमाल ॥ सांवरे बदन पर पीत पट ओढन मुख मुरली बाजे मधुर रसाल । श्रीमत वल्लभ वनते आये संग लिये ब्रजबाल ॥ २६२ ॥

राग वसन्त ।

घर घरते वनिता जो बन निकसीं आज कंचन थार भर निछावर करन मोहनलालकी । मत्त सुर गावत कंठ शब्द कोकिला गत उपजत अति रसालकी ॥ साज समाज गोपाल झुंडन मिल चलत चाल अति मरालकी । तानसेनके प्रभु रस वश कर लीनी टेढी मूरत चितवन गोपालकी ॥ २६३ ॥

राग कल्याण ।

अपने लालको जिमावत मैया । कर कर कौर मुखारविंदमें मधु मेवा पकवान मिठैया ॥ व्यंजन खाटे मीठे खारी अतिही खारी स्वाद बन्यो अधिकैया । चतुरभुज प्रभु गिरिधरन लालको ब्याहू करावत लेत बलैया ॥ २६४ ॥

मोहन जानी तिहारी बात । ब्याहू पर बर कर आवत यहां कछू नहीं खात ॥ यही स्वभाव तिहारो जसुमको चोरी बिन न अघात । नन्ददास कहत नन्दरानी प्रेम लपेटी बात ॥ २६५ ॥

राग नट ।

हरिकी लीला कहत न आवै । कोटि ब्रह्मांड छिनहिमें नाशे छिनहीमें उपजावै ॥ बालक बच्छ ब्रह्म हर लेगयो ताको गर्व नशावै । ऐसो पुरुषारथ सुन यशुमति खीजत पुनि समझावै ॥ शिव सनकादिक अन्त न पावें भक्तवछल कहवावै । सूरदास प्रभु गोकुलमें सो घर घर गाय चरावै ॥ २६६ ॥

राग सोरठ ।

हमरी फेंट छोड श्रीदामा । काहेको तुम रारि बढावत तनक बातके कामा ॥ मेरी गेंद लेहु ता बदले बांह गहतहौ धाइ । छोटो बडो न जानत काहू करत बराबर आइ ॥ हम काहेको तुमहि बराबर बडे नन्दके पूत । सूरश्याम दीनेही बनिहै बहुत कहावत धूत ॥ २६७ ॥

राग कल्याण ।

तोसों कहा धुताई करिहौं । जहां करी तहँ देखी नाहीं कहू तोसों में लरिहौं ॥ मुँह सम्हार तू बोलत नाहीं कहत बराबर बात । पावोगे फल अपनो कीयो रिसन कँपावत गात ॥ सुनो श्याम तुमहूं सर नाहीं ऐसे गये बिलाई । हमसों सतर होत सूरज प्रभु कमल देहु अब जाई ॥ २६८ ॥

राग देवगंधार ।

कालीके नथन काज कालीनाथ आये हैं । ऐसो रूप धार खडे मानो कोटि शशि चढे चांदना बेहद भयो तिमिर मिटाये हैं ॥ ब्रह्मा बिचार करी बलिको ना सुध रही भूल गयो सब कछु वेग उठधाये हैं । चरणनमें आय परे हो अधीन आगे खडे धन्य धन्य भये भाग दरश दिखाये हैं ॥ और केती नर नार हर्ष वही प्रेम-धार नख शिख रोम रोम आनँद बढाये हैं । कोई ऐसो कौतुक कियो अहिसुत बांध लियो नाक छेद विष हर कमल लदायेहैं । यमुनाके मध्य काढे फणहूंके ऊपर ठाढे राग रंग निरत करत अधिक सुहाये हैं ॥ कहत यों दुर्गादास वृन्दावन भयो विलास इच्छा पूरी नंदकी यशोदा कण्ठ लगाये हैं ॥ २६९॥

राग वसन्त ।

श्रीराधे देडारो ना बांसुरी मोरी । जिस बंसीमें मोरे प्राण बसतहैं सो बंसी गई चोरी ॥ सोनेकी नाहीं कान्हा रूपेकी नाहीं हरे हरे बांसकी पोरी । काहेसे गाऊं राधे काहेसे बजाऊं काहेसे लाऊँ गउआं घेरी ॥ मुखसे गाओ प्यारे तालसे बजाओ लकुटी से लाओ गैयां घेरी । चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि हरि चरणनकी चेरी ॥ २७० ॥

राग टोडी ।

खोलोजी किवांर को है एती बार हरी नाम है हमार बसो कंदरा पहारमें । हौं तो आली माधव कोकीलाके साथ भाग मोहन हों प्यारी फिरें मंत्रके विचारमें ॥गर्गी हों र्गर्गाली जावों क्यों न दाता पास भोगी हों छबीली जाय बसोजी पतारमें ॥नायक हों नागरी तो टांडो क्यों न लादों जाय हौं तो घनश्याम प्यारी बरसो जी बहारमें ॥ २७१ ॥

श्रीरघुनाथलीला ।

दोहा ।

मुरली मुकुट दुरायके, नाथ भये रघुनाथ ॥
तुलसी रुचि लखि दास की, धनुषबाण लियो हाथ॥१॥
तुलसी कोशलराज भज,मन चितवे कहु ओर ॥
सीता राम मयंक मुख, तू कर नयन चकोर ॥ २ ॥
राम वाम दिशि जानकी, लषण दाहनी ओर ॥
ध्यान सकल कल्याणमय,तुलसी सुरतरु तोर ॥ ३ ॥
सीतापति रघुनाथजू, तुम लग मेरी दौर ॥
जैसे काग जहाजको, सूझत और न ठौर ॥ ४ ॥
नहिं विद्या नहिं बाहुबल, नहीं गांठमें दाम ॥
तुलसी ऐसे पतितको, तुम पति राखो राम ॥ ५ ॥
कामिहिं नारि पियारि जिमि, लोभिहि प्रिय जिमि दाम ॥
ऐसे हो कब लागिहो, तुलसीके मन राम ॥ ६ ॥
बार बार बर मांगहों, हर्षि देहु श्रीरंग ॥
पदसरोज अनपायनी, भक्ति सदा सतसंग ॥ ७ ॥

दीजै दीनदयालु मोहिं, बडो दीन जन जान ॥
चरण कमलको आसरो, सत्संगतिकी बान ॥ ८ ॥

राग भूपाली ।

गाइये गणपति जगवन्दन । शंकर सुवन भवानी नन्दन ॥
सिद्धिसदन गजवदन विनायक । कृपासिन्धु सुन्दर सबलायक ॥
मोदक प्रिय मुद मंगल दाता । विद्या वारिधि बुद्धि विधाता ॥
मांगत तुलसिदास कर जोरे । बसैं राम सिय मानस मोरे ॥२७२॥

राग विभास ।

जै भगीरथ नन्दनी मुनि चित चकोर चन्दनी नर नाग विबुध वंदनी जै जह्नु बालिका । विष्णु पद सरोज जासि ईश शीश पर विभासि त्रिपथगासि पुण्यराशि पाप छालिका ॥ विमल विपुल वहसि वारि शीतल त्रयताप हारि भँवर वर विभंग तर तरंग मालिका । पुर जन पूजोपहार शोभित शशि धौल धार भञ्जन भवभार भक्त कल्प थालिका ॥ निज तट वासी विहंग जल थल चर पशु पतंग कीट जटिल तापस सब सरिस पालिका । तुलसी तव तीर तीर सुमिरत रघुवंशवीर विचरत मति देह मोह महिष कालिका ॥ २७३ ॥

राग काफी ।

धनि धनि धनि मात गंग चाहत मुनि जन प्रसंग प्रगटी रघुनाथ चरन करन सुख विहारी । दीनी विधि बूँद डार आरि अनंग शीश धार आई मृत मध्य लोक सन्तनको प्यारी ॥ पर्वत द्रुम लता तोर स्वर्ग औ पताल फोर भगीरथ करनधार सगर तनय तारी । अमित वारि अति उतंग चाहत अति रूप गंग दरश परश मज्जन कर पापपुंज हारी ॥ माता मैं याँचों तोहिं राम भक्ति देहु मोहिं शरण गही तुलसिदास दीन हो पुकारी ॥ २७४ ॥

आनँद वन गिरिजापति नगरी मन क्यों ना वास लगावत। काशी समान नहीं त्रिनिया पुर ब्रह्मादिक गुण गावत॥ वेद पुराण बखानत महिमा शारद पार न पावत। निकट प्रवाह बहत जहँ गंगा सुर नर मुनि हर्षावत॥ जाके दरश परश अरु मज्जन कोटिक पाप नशावत। कीट पतंग जीव नाना विधि सबको मुक्ति करावत॥ अन्तकाल सदा शिवशंकर तारक मन्त्र सुनावत। अगम अपार अनूपम उपमा शेष सहस्र मुख गावत॥ राम सिया-पद हेत प्रेम प्रभु तुलसिदास गुण गावत॥ २७८॥

राग आसावरी।

आज सुदिन शुभघरी सुहाई। रूप शील गुण धाम राम नृप भवन प्रगट भये आई॥ अति पुनीत मधु मास लगन ग्रह वार योग समुदाई। हर्षवंत चर अचर भूमिसुर तनुरुह पुलक जनाई॥ वर्षहिं विबुध निकर कुसुमावलि नभ दुन्दुभी बजाई। कौशल्यादि मात सब हर्षत यह सुख वरणि न जाई॥ सुन दशरथ सुत जन्म लिये सब गुरुजन विप्र बुलाई। वेद विहित कर क्रिया परम शुचि आनँद उर न समाई॥ सदन वेद धुनि करत मधुर मुनि बहु विधि बाज बधाई। पुरवासिन प्रिय नाथ हेत निज निज सम्पदा लुटाई॥ मणि तोरन बहु केतु पताकन पुरी रुचिर कर छाई। मागध सूत द्वार बन्दीजन जहँ तहँ करत बड़ाई॥ सहज शृंगार किये वनिता चलि मंगल विपुल बनाई। गावहिं देहिं अशीश मुदित चिरजियो तनय सुखदाई॥ वीथिन कुमकुम कीच अर-गजा अगर अबीर उड़ाई। नाचहिं पुर नर नारि प्रेम भरि देह-दशा बिसराई॥ अमित धेनु गज तुरग वसन मणि जातरूप अधिकाई। देत भूप अनुरूप जाहि जोइ सकल सिद्धि गृह आई। सुखी भये सुर संत भूमिसुर खल गण मन मलिनाई। सबहिं सुमन विकसत रवि निकसत विपिन कुमुद बिलखाई॥ जो सुख

सिंधु सुकृत सीकरते शिव विरंचि प्रभुताई । सो सुख उमँगि अवध रह्यो दश दिशि कवन जतन कहों गाई ॥ जे रघुवीर चरण चिंतक तिनकी गति प्रगट दिखाई । अविरल अमल अनूप भक्ति दृढ तुलसिदास तब पाई ॥ २७६ ॥

राग भैरव ।

सूरजवंशी नमो गुरु इष्ट हमारे दशरथ सुत राजा राम । जानकीके नायक नाथ त्रिभुवनके धनुषधारी सुंदर श्याम ॥ लक्ष्मण हनूमान भरत शत्रुहन तिनके सँवारे कोटि काम । धीरज प्रवीन रघुकुल तिलक विदित प्रगटे अयोध्या धाम ॥ २७७ ॥

राग तिलंग ।

ढाढिन चल दशरथ घर जाइये । ढाढी कहै सुनो मेरी प्यारी जहाँ सकल सिधि पाइये ॥ कंचन वसन रतन भूषण धन अनगिन अशन अघाइये । रतन हरी प्रभु राम जनमकी विमल बधाई गाइये ॥ २७८ ॥

हौं तो रघुवंशिनको ढाढी ॥ सुन दशरथ सुत जन्म दूरते आयो आशा बाढी ॥ तुमरोइ यश गाऊं जहँ जाऊं पूछो दुनिया ढाढी। रतन हरी मेरो नाम रामकी लेहुँ बलैया गाढी ॥ २७९ ॥

राग तिलंग ।

कौशल्या मैया चिरजीवो तेरो छौना । राज समाज सकल सुख संपति अधिक२नित होना ॥ मुनि जन ध्यान धरत निशिवासर अधिक जन्म धर मौना । रत्न हरी प्रभु त्रिभुवन नायक तैं कर लियो खिलौना ॥ २८० ॥

सवैया ।

दन्तकि पंगति कुन्द कली अधराधर पल्लव खोलनकी ॥ चपला चमकै घन बिज्जु जगे छबि मोतिन माल अमोलनकी ॥ घुंघु-

वारी लटें लटकें मुख ऊपर कुण्डल लोल कपोलन की॥ निवछावर प्राण करै तुलसी बलि जाउं लला इन बोलन की ॥२८१ ॥

राग कान्हरो ।

ठुमुकि चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनियां। किलकत उठि चलत धाय परत भूमि लटपटाय धाय मोद गोद लेत दशरथकी रनियां ॥ अंचल रज अंग झारि विविध भांतिसों दुलारि तन मन धन वारिदेत कहत मृदु वचनियां। मोदक मेवा रसाल मनभावत लेउ लाल और लेउ रुचिर पान कञ्चन रुनझुनियां॥ आनन्द रज कंबु कण्ठ ग्रीवा अति रुचिर रेख कच कुटिल वदन मन्दसो हँसनियां। विद्रुमसों अधर ललित बोलत प्रिय मधुर वचन नाशा अति सुभग बीच लटकत लटकनियां॥ अद्भुत छवि अति अपार को कवि नहि वरणे पार कहत न सके शेष जिहि सहस्र सो रसनियां। तुलसिदास रूप रंग परत नको दिये कहा रघुवरकी छवि समान रघुवरछवि बनियां ॥ २८२ ॥

राग विभास।

भोर भयो जागो रघुनंदन। गत व्यलीक भक्तन उर चंदन॥ शशि कर हीन छीन द्युति तारे। तमचर मुखर सुनो मेरे प्यारे॥ विकसत कञ्ज कुमुद बिलखाने। ले पराग रस मधुप उड़ाने॥ अनुज सखा सब बोलन आये। बन्दिन अति पुनीत गुण गाये॥ मन भावतो कलेऊ कीजे। तुलसिदासको जूठन दीजे॥ २८३ ॥

राग प्रभाती।

प्रात समय रघुबीर जगावें कौसिल्या महतारी। उठो लालजी भोर भयो है सुर नर मुनि हितकारी॥ ब्रह्मादिक इंद्रादिक नारद सनकादिक ऋषि चारी। बाणी वेद विमल यश गावें रघुकुल यश

विस्तारी ॥ बंदीजन गंधर्व गुण गावें नाचत दे दे तारी । उमा सहित शिव द्वारे ठाढे होत कुलाहल भारी ॥ कर अस्नान दान प्रभु दीनो गो गज कञ्चन झारी । जय जयकार करत जन माधो तन मन धन बलिहारी ॥ २८४ ॥

प्रभाती ।

जागिये कृपानिधान जानराय रामचंद्र जननी कहै बार बार भोर भयो प्यारे । राजिवलोचन विशाल पीत वापिका मराल ललित कमल वदन ऊपर मदन कोटि वारे ॥ अरुण उदित विगत शर्वरी शशांक किरन हीन दीन दीप ज्योति मलिन द्युति समूह तारे । मनो ज्ञान घन प्रकाश बीते सब भव विलास आश त्रास तिमिर तोष तरनि तेज जारे ॥ बोलत खग निकर मुखर मधुर कर प्रतीत सुनो श्रवण प्राण जीवन धन मेरे तुम बारे । मनो वेद बन्दी मुनि वृन्द सूत मागधादि बिरद वदत जय जय जय जयति कैटभारे ॥ विकसत कमलावली चले प्रपुंज चञ्चरीक गुंजत कल कोमल धुनि त्याग कंज न्यारे । मनो विराग पाय सकल शोक कूप गृह विहाय भृत्य प्रेम मत्त फिरत गुणत गुण तिहारे । सुनत बचन प्रिय रसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल विपुल दुख कदम्ब टारे । तुलसिदास अति अनंद देखके मुखारविंद छूटे भ्रमफंद परम मंद द्वंद भारे ॥ २८५ ॥

राग बिलावल ।

आज तो निहार रामचंद्र का मुखारविंद चन्दहूसे अधिक छबि लागत सुहाई री । केसरको तिलकभाल गरे सोहै मुक्तमाल घूंघर-वारी अलकन पर कुण्डल छबि छाई री ॥ अनियारे अरुण नयन बोलत अति ललित बैन माधुरी मुसकान पर मदन हूं लजाई री ।

ऐसे आनन्दकन्द निरखत मिट जात द्वंद छबिपर वनमाल कान्हर गई हों बिकाइ री ॥ २८६ ॥

राग विभास।

बोलत अवनिप कुमार ठाढे नृप भवन द्वार रूप शील गुण उदार जागो मेरे प्यारे। बिलखत कुमदिन चकोर चक्रवाक हर्ष मोर करत शोर तमचर खग गुंजत अलि न्यारे ॥ रुचिर मधुर भोजन कर भूषण सज सकल अंग संग अनुज बालक सब विविध विधि सँवारे। करतल गह ललित चाप भंजन रिपु निकर दाप कटि तट पटपीत तूण सायक अनियारे ॥ उपवन मृगया विहार कारन गवने कृपाल जननी मुख निरख पुण्यपुंज निज विचारे। तुलसिदास संग लीजे जान दीन अभय कीजे दीजे मति विमल गावे चरित वर तिहारे ॥ २८७ ॥

राग ललित।

छोटीसी धनुहियाँ पन्हैया पगन छोटी छोटीसी कछोटी कटि छोटी सी तरकसी ॥ लसत झंगुली झीनी दामिनीकी छबि छीनी सुन्दर वदन शिर पगिया जरकसी ॥ वय अनुहरत विभूषण विचित्र अंग जोहे जिया आवत सनेहकी सरकसी ॥ मूरतकी सूरत कही न परे तुलसी पे जाने सोई जाके उर करके करकसी॥२८८॥

राग खमाची जंगला।

पगिया शिर लाल हरी कलँगी उर चन्दन केशर खौरदिये। मनमोहन राम कुमार सखी अनुहार नहीं जब जन्म लिये ॥ पग नूपुर पीत कसे कछनी वर मालतीकी वनमाल हिये। विहरे सरयू तट कुंजनमें तहां रामसखे चित चोरलिये ॥ २८९ ॥

राग आसावरी ।

सखी री मुनि सँग बालक काके । रतनारे नयना जाके ॥ रवि शशि कोटि वदनकी शोभा श्याम गौर तनु जाके । राम लषण कौशल्या जाये दशरथ नाम पिताके ॥ ऋषिको यज्ञ संपूर्ण करके अब आये राजाके । आपदा सबकी हरी गमने कारज करन सियाके ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल धनुष बाण कर जाके । गौतम ऋषिकी नारि अहल्या तारी चरण छुवाके ॥ सब सखियां मिल सियाके स्वयंवर पूजा करत उमाके । तुलसिदास सेवक रघुनन्दन लेखे लिख विधनाके ॥ २९० ॥

राग कान्हरा ।

ठुमक ठुमक चलत चाल जनकनन्दनी । मधुर वचन तोतरे त्रयताप मोचनी ॥ सोहत नव नील बसन मन्द हास रुचिर दशन झलकत उरमाल सकल देववंदनी । नूपुर पग बजत मानो साम वेद करत गान क्षुद्र घण्ट रुचिर नाद उर आनंदनी ॥ जगत मात सखिन सङ्ग विहरत बहु करत रंग अग्रदास निरखत छवि भवनिकंदनी ॥ २९१ ॥

राग मलार ।

विहरत बागबामें देखे कुल भानवा । क्रीट मुकुट कंचनको झलके मकर मनोहर कुण्डल अलके भाल तिलक केशरको राजे गल बैजंती माल विराजे मधुर वचन करलीने धनुप बानवा ॥ पीतांबर कटि पर कस काछे मन मुसुकात फिरत वन आछे काकपक्ष शिर सुन्दर सोहे देखत राम लषण मन मोहे विधि शंकर इनहीको धरें ध्यानवा । कही सखी जब ऐसी बानी अखिल लोक पति जीवन जानी शोभा सकल लोककी जगमें तारी शिला चरणकी रजने दरशन

लीजो तजो गृह मानवा ॥ कुसुम समेत वामकर दोना छोटा कुँवर सखी अति लोना या देखत सब भईं सुखारी तुलसी मुदित विदेह कुमारी बहुरि चलीं गिरिजाके भँवनवा ॥ २९२ ॥

राग देश।

मैया मोको बैरन धनुष भयो री। जन्म जन्मको परा शरासन सड घुन क्यों न गयो री॥ देश देशके भूपति आये तिल भर कछु न टरयो री। कहा कहौं मैं माइ बापको होतेहीं विष क्यों न दियो री ॥ उठे राम गुरु आज्ञा पाई सुमन समान लियो री। तुलसि-दास प्रभुके कर परशे खंडो खंड भयो री ॥ २९३ ॥

राग परज।

सखी रंग भीने दोउ राजकुमार। निरख सखी नयनन भर नीके शोभा अमित अपार ॥ भुजदंडन चन्दन मंडन पर चमक चांदनी चार। ललित कंठ रेखा विचित्र सखि उर कम-लनके हार ॥ रंगभूमि मणि जटित मञ्च पर बैठे सभा मँझार। मानो रवि उदयाचल गिरिते निकस्यो तिमिर विदार ॥ खंड खंड ब्रह्मंड खंडके भूपति जुरे अपार। कैसे धनुष उठायो तोरयो किनहु न पायो पार ॥ कटि निषङ्ग कर धनुष बाण लिये हरन चले महिभार। लाला रामचन्द्र छवि ऊपर दास कान्हर बलिहार ॥ २९४ ॥

राग केदारो।

लेहु री लोचनको लाहु। कुँवर सुन्दर साँवरो सखि सुमुखि सुन्दर चाहु ॥ खण्डि हरको दंड ठाढ़े जानु लंबित बाहु। रुचिर उर जयमाल राजत देत सुख सबकाहु ॥ चितै चित हित सहित नख शिख अंग अंग निबाहु। सुकृत निज सियराम रूप विरंचि

मतिहिं सराहु ॥ मुदित मन वर वदन शोभा उदित अधिक उछाहु । मनो दूर कलंक कर शशि समर सूध्यो राहु ॥ तनय सुखमा अयन हाथ सरोज सुन्दरताहु । बसत तुलसीदास उर पुर जानकीको नाहु ॥ २९५ ॥

राग केदार ।

मनमें मंजु मनोरथ होरी । सो हर गौर प्रसाद एकते कौशिक कृपा चौगुनी भोरी ॥ प्रण परिताप चाप चिंता निशि शोच सकोच तिमिर नहिं थोरी । रविकुल रवि अवलोकि सभा सर हित चित वारिज वन विकस्यो री ॥ कुँवर कुँवरि सब मंगल मूरति हैं दोउ धरम धुरन्धर धोरी । राज समाज भूरि भागी जिन लोचन लाहु लह्यो इक ठोरी ॥ ब्याह उछाह राम सीताको सुकृत सकेल विरंचि रच्यो री । तुलसिदास जाने सो यह सुख जा उर बसत मनोहर जोरी ॥ २९६ ॥

राग भूपाली ।

बन्यो सिय प्यारीको बनरा । कि सखवश मोहलेन मनरा ॥ मौर शिर सोनेको धारी । विविध मणि चित्र चमतकारी ॥ करन छबि मेंहँदी की भारी । महावर पगन चित्रकारी ॥ कङ्कन की कमनी-यता, कही कवन पै जाय । अलक झलक लखि खलक ललक आली, पलक न परत सुहाय ॥ गले गज मोतियनको गजरा । चलन चितवन गति चित चोरी ॥ वचनकी रचन लाज तोरी । गरब तज विवस भई गोरी ॥ धामके काम दाम छोरी । हंसन असी मुख म्यान ते, सुधामुखी सित धार ॥ काढ कामिनी कतल करी, इन दशरथ राजकुमार । रँगीली अँखियनमें कजरा ॥ २९७ ॥

राग परज।

बन्यो सखि दूलह अजब रँगीलो। दशरथ कुँवर साँवरो अद्भुत सोहत परम छबीलो॥ अनब्याही ब्याही सब ब्याही देखत रूप ठगीलो॥ रामसखे अब लगत प्राण सम पियरो अवध नवीलो॥ २९८॥

राग दादरा।

आली सियावर कैसा सलोना। चितवनमें चित आन फँस्यो है देख सखी चल गज ढटोना॥ जनकशहरमें कहर मच्यो है भूल्यो खान पान सब सोना। श्रीरघुराज सौरवारे पर अबतो मोहि फकीरिन होना॥ २९९॥

राग भूपाली कल्याण।

देख सखी शिर पाग रामके कैसी सोही है। मर्कत गिरिपै चन्द्र चारु तारका जनु सोही है॥ बाहु गहि भुजा विशाल विभूषण लखि तृण तोरी है। सुन्दर नयन विशाल वदन पर हांसी थोरी है॥ उर मोतियनकी माल कान कल कुण्डल जोरी है। नाभि गँभीर उदर त्रिवली लखि शारद भोरी है॥ पीतांबरकी कछनी काछे पीत पिछौरी है। रामगुलाम अनूप रूप लखि मति मेरी भोरी है॥ ३००॥

राग कान्हरा।

देखो री छबि राम वदनकी। कोटि काटि दामिन दर्पण द्युति निंदत कांति कपोल रदनकी॥ नासा मृदु मुसकान माधुरी मन्द करी अति घुमड़ मदनकी। फब रह्यो कीट मुकुट अलकन पर मनो फाँस दृग मीन फँसनकी॥ चोरत चित भृकुटी दृग शोभा कुण्डल झलक खौर चन्दनकी। रामसखे छबि कहि न जात जब सुधि न रहत लखि वदन वसनकी॥ ३०१॥

राग खम्माच ।

चंचल दृग रतनारे तेरे चोट लगे सोई जाने । सुन दशरथके कुँवर लाडिले कामों कहूं को माने । चितवतही घायल कर डारत राखत ना तनु प्राने । रामलला यह प्रीति अलौकिक रामसखे पहिंचाने ॥ ३०२ ॥

राग परज ।

तेरे रतनारे नयन लगे कोशलराज किशोर ॥ मिथिलापुरमें आय सबनके बरबस प्राण ठगे । कछुक श्यामता लिये सिताई सुधा शृंगार पगे ॥ रामसखे लखि जनु रतिपतिके शायकसे उर डगे ॥ ३०३ ॥

राग कालिंगड़ा ।

पिया तोरी नजरिया जादू भरी । जिहिं चितवत तिहिं वश कर राखत सुन्दर श्याम राम धनुधारिया ॥ जुलफन युत मुखचन्द प्रकाशे नासा मणि लटकत मन हारिया । युगल प्रिया मिथिलापुर बासिन फँसी जाल मनो रूप मछरिया ॥ ३०४ ॥

तेरी नजरों कि सैफली धार । सुनिये हो अवध छैल दशरथके घायल किये तैं हजार ॥ तेरी चितवनमें मन आन फँस्यो है मिथिलापुरके बजार । मधुर अली पिया साँची कहदेउ कब आओगे दिलदार ॥ ३०५ ॥

राग भैरवी ।

जालम नयन मेरे नहिं रहिंदे । लालच लगे रूप रघुवरके कर आराम नहिं बहिंदे ॥ बरज बरज रही अरज न मनदे हरज मरज सब सहिंदे ॥ कर कर यत्न रत्न हरि हारे जाय जोरावरी ॥ ३०६ ॥

राग श्यामकल्याण ।

कुँवर दशरथके रंग भरे । कोटि काम सुन्दर सुख मन्दर अंदर आन अरे ॥ रँगीली पगिया पेच भरे । रत्न जडित शिर पेच पेच मोरे मनके बीच परे॥श्रवण शुभ कुण्डल सुवरधरे । अलकां झलक कपोल लोल मन मोह लिये हमरे ॥ बनी मोतियनकी माल गरे कमल नयन सुखदैन रैन दिन मनते नाहिं टरे ॥ करन कंकन रत्न जरे । श्याम वरण मन हरन रत्न हरी चरण शरण उबरे ॥३०७॥

राग बिलावल ।

क्रीट मुकुट शीश धरे मोतियनकी माल गरे कानन कुंडल कर धनुष बाण सोहें री । अरुण नयन अनियारे अतिही लगत प्यारे दशरथ दुलारे सबहीको मन मोहेंरी ॥ सुन्दर नासा कपोल अलक झलक मधुर बोल भाल तिलक राजत बाँकी भौंहें री । लंबित भुज अतिविशाल भूषण जडित जाल अंग अंग छबि तरंग कोटि मदन मोहें री ॥ पीताम्बर सोहे गात मन्द मन्द मुसकरात जनक भँवन चले जात गति गयन्द को हें री । कान्हर करुणा-निधान मेरे सखि जिवन प्राण जानकी झरोखे बैठी रामको मुख जोहें री ॥ ३०८ ॥

राग खमाच ।

रामकुमार लाल दशरथके या गलियन अबहीं जो गयो री॥ पहरे तनु भूषण फूलनके अंग अंग अद्भुत रूप छयो री ॥ ठाढी देख अटापर मोकों खेलन मिस छिन एक ठयो री ॥ गेंद उछाल तक्यो हरि मोतन घूँघट पट तब खोल दियो री॥तब अपनाय लई मैं वा पिया हियमें प्रेम अँकुर भयो री॥ राममखे भूली सुध बुध सब अँखियनमें अब राम रयो री ॥ ३०९ ॥

राग दादरा ।

सखि! लखन चलो नृप कुँवर भलो मिथिलापति सदन सिया बनरो । शिर क्रीट मुकुट कटिमें पियरो हँसि हेरि हरत हमरो हियरो ॥ गल साजतहै मोतियन गजरो अनियारी अँखियन सोहत कजरो । चित चाहत है उठ आय मिलूं रघुराज छाँड सगरो झगरो ॥ ३१० ॥

राग देश ।

हँम पूछें जनकपुरकी नारी नाथ कैसे गजके फन्द छुडाये । तिहारे यही अचरज मन भाये ॥ गज और ग्राह लरें जल भीतर दारुण द्वन्द्व मचाये । गजकी टेर सुनी रघुनन्दन गरुड छोड उठ धाये ॥ भिलनीके बेर सुदामाके तण्डुल रुचि रुचि भोग लगाये । दुर्योधनकी मेवा त्यागी साग विदुर घर पाये ॥ इंद्रने कोप कियो ब्रज ऊपर छिनमें बारि बहाये । गोवर्द्धन स्वामी नख पर लीनो इंद्रको मान घटाये ॥ अर्जुनके स्वारथ रथ हाँक्यो महभारतमें गाये । भारतमें भरुहीके अंडा घण्टा तोर बचाये ॥ ले प्रहलाद खंभसे बांध्यो राजन त्रास दिखाये । जन अपनेकी प्रतिज्ञा राखी नरसिंह रूप बनाये ॥ छोरे न छुटे सियाजीको कँगना कैसे चाप चढाये । कोमल गात अंग अति नीके देखत मनहिं लुभाये ॥ जहँ जहँ भीर परी सन्तन पर तहँ तहँ होत सहाये । तुलसिदास सेवक रघुनंदन आनन्द मङ्गल गाये ॥ ३११ ॥

राग जंगला ।

लैल्योरी लोचन भर लाहू ॥ पुष्पन वर्षत मुनि जन हर्षत सियारामको अजब विवाहू । मिथिलापुरकी सखी सयानी समझ समझ शिख देव सब काहू ॥ फिर कब राम जनकपुर ऐहैं हम नहिं नगर अयोध्या जाहू । तुलसीदास परस्पर दोउ मिले नृप दशरथ मिथिलापुरनाहू ॥ ३१२ ॥

राग जंगला ।

देखो री यह नयनन भर भर होत बरात बिदा दशरथकी ॥ गलिन गलिन गृह महल अटा पर अरुण भाल कामिनि गावें री । या बिधि सियाजीको व्याहन आये कब रघुनाथ बहुरि आवें री ॥ धन्य अयोध्या धनि मिथिलापुर धन्य सिया जिन राम बर्यो री । धन्य धन्य बालक दोउ बाँके धनि रानी दशरथ पतनी री ॥ खान पान बिसराय सभी मिलि बार बार सिय रामहिं देखें । इत लक्ष्मण उत भरत शत्रुहन भाग भले राजा दशरथके ॥ मणि बिन सर्प चकोर चन्द्र बिन जल बिन मीन कहु कैसे जियें री । तुलसिदास छबि बरण कहतहै यह मूरति मेरे मनमें बसी री ॥ ३१३ ॥

राग कान्हरो ।

भुजन पर जननी वार फेर डारी । क्यों तोर्यो कोमल कर कमलन शम्भुशरासन भारी ॥ क्यों मारीच सुबाहु महा बल प्रबल ताड़का मारी । मुनि प्रसाद मेरे राम लषणकी विधि सब करवर टारी ॥ चरण रेणु लै नयनन लावत क्यों मुनिबधू उधारी । कहो धों तात क्यों जीत सकल नृप बरी विदेहकुमारी ॥ दुसह रोष मूरति भृगुपति अति नृपति निकर छै कारी । क्यों सौंप्यो सारंगहार हिय करत बहुत मनुहारी ॥ उमँग उमँग आनंद विलोकत बधुन सहित सुतचारी । तुलसिदास आरती उतारत प्रेम मगन महतारी ॥ ३१४ ॥

राग कालिंगडा ।

निरखत रूप सिया रघुबरको छबि नहिं जात बखानी । आरति करत कौशल्या रानी कनक थार रज माणिक मुक्ता भर्यो वेद विधानी ॥ मार्यो मान सकल भूपनको महिमा वेद बखानी । तोरन

धनुष जनक प्रण पूरण तीनलोक मैं जानी ॥ जनकरायकी लज्जा राखी परशुराम हित मानी । सुरपुर नारि अवध पुरवासी करत विमल यश गानी ॥ नचत नवल अपसरा मुदित मन वरष सुमन हर्षानी । रत्न मंदिरमें रत्न सिंहासन बैठे सारँगपानी ॥ मात कौशल्या करत आरती हर्ष निरखे मुसकानी । दशरथ सहित अवधपुर बासी उचरत जैजै बानी ॥ तुलसिदास यह अविचल जोरी भक्त अभय पद दानी ॥ ३१५ ॥

राग ललित ।

रघुबर आज रहो मेरे प्यारे । जो तुमको वनवास दियो है कारियो गमन सकारे ॥ रघुबर कहैं सुनो मेरि जननी यह व्रत नेम हमारे । अव न रहूं घर मात कौशला दशरथ बाचा हारे ॥ सीता सहित सुमित्रानंदन भये कुटुंबते न्यारे । तुलसिदास प्रभु दूर गमन कियो चलत नयन जल डारे ॥ ३१६ ॥

राग पीलू ।

मेरी सुध आनि लियो रघुराया । चौदा बरस मोहिं कब लग बीतें मोहि पल इक न रहाया ॥ भरत शत्रुहन अवधके वासी रो रो हाल बताया । राम लषण सिया वनको सिधारे भरत फिरे बौराया ॥ तुलसिदास जिन हरि नहिं सुमिरे विरथा जन्म गँवाया ॥ ३१७ ॥

राग देश ।

बिना रघुनाथके देखे नहीं दिलको करारी है । हमारी मातकी करनी सकल दुनियासों न्यारी है ॥ विमुख जिन रामसों कीना ऐसी जननी हमारीहै। लगी रघुवंशमें अगनी अवध सगरी उजारी है ॥ भरत शिर लोट धरणीपै यही करता पुकारी है। सुना जब तातका मरना मनो बरछी सी मारी है ॥ परा व्याकुल हुआ

बेसुध दृगनसे नीर जारी है। धरूं मैं ध्यान मूरतका मुझे तृष्णा जो भारी है॥ परूं रघुनाथके पाऊँ यही तुलसी विचारीहै ॥३१८॥

राग विहाग।

मिल जाना राम प्यारे नयना तरसें तेरे देखनको॥ वन प्रमोद में खडी पुकारूं सुनियो रूप उजारे। सुन्दर श्याम कमलदल-लोचन मो नयननके तारे ॥ राम सखे ज्यों जल बिन मछली तड़फत प्राण हमारे ॥ ३१९ ॥

राग कालिंगडा।

मैं कौन वन ढूंढो री माई मेरे दोनों बालकवा ॥ आगे आगे राम चलतहैं पाछे लक्ष्मण भाई। बीच जानकी अधिक बिराजे राजा जनककी जाई॥ अन्तर रोवे मात कौशल्या बाहर भारत भाई। राजा दशरथने प्राण तजेहैं कैकयी मनमें पछताई॥ इन्द्र गरजे भादों बरसे पवन चले पुरवाई। कौन वृक्ष तले भीगत होंगे सिया लषण रघुराई ॥ रावण मार राम घर आये घर घर बजत बधाई। मात कौशल्या करत आरती तुलसिदास बलि जाई॥ ३२० ॥

राग विलावल।

नृपति कुँवर राजत मग जात । सुन्दर वदन सरोरुह लोचन मर्कत कनक वर्ण मृदु गात॥ अंशन चाप तूण कटि मुनि पट जटा मुकुट विच नूतन पात। फेरत पाणि सरोजन सायक चोरत चितहि सहज मुसकात॥ संग नारि सुकुमारि सुभग शुठि राजत बिनु भूषण नव सात। सुखमा निरख ग्राम वनितनके नलिन नयन विकसत मनु प्रात ॥ अंग अंग अगणित अनंग छबि उपमा कहत सुकवि सकुचात। सिय समेत नित तुलसिदास चित बसत किशोर पथिक दोउ भ्रात॥ ३२१ ॥

राग कल्याण ।

पूछत ग्राम वधू मृदु वानी । गौर श्याम अभिराम सुभग तनु यह तुम्हरे को लगत सयानी॥शील स्वभाव लषण लघु देवर कर शर धनुष समञ्चल पानी । पिय तन चितै दृष्टि नीचे करि सखिन बिलोकि सिया मुसकानी ॥ को तुम कौन देशते आये जिहि पुर बसो सुमंगल खानी । चलत पियादे पाँय त्रान विन राज- कुँवरि किमि करो बखानी ॥ यह दोउ कुँवर अवधपतिके सुत मैं विदेह तनया जग जानी । ठान कुमति उर बसी सवति पन राज समय वन दीनो रानी ॥ सियके वचन सुनि सखी दुखितभईं पल छिन मानो विरह गलानी । एक कहै भल भूप न कीनो वन नहिं दीनो कीनो हानी ॥ राम लषण सिय पंथ कथा सुनि जाके हृदय बसी छिन आनी । सो भवसिंधु तरै गोपद जिमि जन तुलसी यह करत बखानी ॥ ३२२ ॥

राग बिलावल ।

फिर फिर राम सिया तन हेरत । तृषित जान जल लेन लषण गये भुज उठाय ऊँचे चढ़ टेरत ॥ अवनि कुरंग विहँग द्रुम डारन रूप निहारत पलक न प्रेरत । मगन न डरत निरख कर कम- लन सुभग शरासन सायक फेरत ॥ अवलोकत मग लोक चहूँ दिशि मनो चकोर चन्द्र महि घेरत । ते जन भूरि भाग्य भूतल पर तुलसि राम पथिक पद जेरत ॥ ३२३ ॥

राग पीलू ।

मेरी सुध आनि लियो सिय पियारी। मात कैकयी वनवास दि- योहै प्राणोंसों अधिक प्यारी ॥ कपटी मृगके पाछे धायो लछम- न कियो रखवारी । मैं तोहिं सिया बहुत समुझायो तैं एक न मा-

नी हमारी ॥ रामचंद्र जब गिरे धरणि पर लछमन रोय पुकारी। तुलसिदास प्रभु वन वन ढूँढत विधनाकी गति न्यारी ॥ ३२४ ॥

राग गौरी।

कुटुम्ब तज शरण राम तेरी आयो। तज गढ लंक महल औ मन्दिर नाम सुनत उठ धायो ॥ भरी सभामें रावण बैठ्यो चरण-प्रहार चलायो। मूरख अंध कह्यो नहिं मानै बार बार समुझायो ॥ आवत ही लंकापति कीनो हरि हँस कंठ लगायो। जन्म जन्मके मिटे पराभव राम दरश जब पायो ॥ हे रघुनाथ अनाथके बंधु दीन जान अपनायो। तुलसिदास रघुवरकी शरणा भक्ति अभयपद पायो ॥ ३२५ ॥

राग केदार।

दीन हित विरद पुराणन गायो। आरत बंधु कृपालु मृदुल चित जान शरण हौं आयो ॥ तुम्हरे रिपुको अनुज विभीषण वंश निशाचर जायो। सुन गुण शील स्वभाव नाथको मैं चरणन चित लायो ॥ जानत प्रभु दुख सुख दासनके ताते कहि न सुनायो। कर करुणा भर नयन विलोको तब जानों अपनायो ॥ वचन विनीत सुनत रघुनायक हँसकर निकट बुलायो। भेंट्यो हरि भर अंक भरत जिमि लंकापति मन भायो ॥ कर पंकज शिर परश अभय कियो जन पर हेतु दिखायो। तुलसिदास रघुवीर भजन कर को न अभयपद पायो ॥ ३२६ ॥

राग धनाश्री।

सत्य कहों मेरो सहज स्वभाउ। सुनो सखा कपिपति लंकापति तुमसों कहा दुराउ ॥ सब विधि दीन हीन अति जड़ मति जाको कतहुँ न ठाउं। आये शरन भजों न तजों तिहि यह जानत ऋषि-

गाउ ॥ जिनको हौं हित सब प्रकार चित नाहिंन और उपाउ । तिन हित लगि धर देह करों सब डरों न सुयश नशाउ ॥ पुनि पुनि भुजा उठाय कहतहों सकल सभा पतियाउ । नाहिन कोउ प्रिय मोहिं दास सम कपट प्रीति बहजाउ ॥ सुनि रघुपतिके वचन विभीषण प्रेम मगन मन चाउ । तुलसिदास तज आस त्रास सब ऐसे प्रभुको गाउ ॥ ३२७ ॥

राग काफी जंगला ।

नात कि शोच न मात कि शोच रु शोच नहीं मोहिं औध तजे की । शोच नहीं वनवास लियेहु कि शोच नहीं मोहिं सीय हरे की ॥ बालि हते किहु शोच नहीं अरु शोच नहीं मोहिं दुःख परे की । लक्ष्मण भूमि परेकिहु शोच न शोच नहीं मोहिं लंक जरे की । तुलसी शोच भयो इक मोको भक्त विभीषण बांह गहेकी ॥ ३२८ ॥

राग विहाग ।

शरण गहु शरण गहु शरण गहु रावणा सेतु जल बन्ध रघुवीर आये । अष्टदश पदम योधा जुरे अति बली उडत पग धूर रवि गगन छाये ॥ कोटि योधा जुरे जनकके नगरमें धनुष ना सक्यो उठाय कोई । तोरचो धनुष गज नाल तोरत जैसे जान लीजो राजा राम सोई ॥ बालिसो शूरमा योधा अतुलित बली ताहि सामर्थ्य ना जगत माहीं । लग्यो जब बाण रघुनाथके हाथको गिरि परचो धरणि फिर उठचो नाहीं ॥ लै मिलो जानकी बात आसान की बेग धावो नहीं विलम कीजे । सूर स्वामी संग लाल लय लाय लै आयो है काल बचाय लीजे ॥ ३२९ ॥

राग गौरी ।

अब देखो रामध्वजा फहरानी । हलकत ढाल फरकत नेजा गरद उठी असमानी ॥ लक्ष्मण वीर बालि सुत अंगद हनूमान अग-

वानी। कहत मन्दोदरि सुन पिय रावण कौन कुमति सिय आनी ॥ जिस सागरका मान करत है तापर शिला तरानी ॥ तिरिया जाति बुद्धिकी ओछी उनकी करत बड़ाई । ध्रुव मण्डलसे पकर मँगाऊं वह तपसी दोउ भाई ॥ हनूमान मम पायक उनके लक्ष्मण जैसे भाई । जरत अग्निमें कूद परेंगे शोच कभू नहिं पाई ॥ मेघनादसे पुत्र हमारे कुंभकर्णसे भाई । एक बेर सन्मुख होय लड़ैंगे युग युग होत बड़ाई ॥ इक लख पूत सवा लख नाती मौत आपनी आई । अग्रके स्वामी गढ लंका घेरी अजहुँ समुझ अभिमानी२३०॥

राग कालिंगडा ।

जय जय जय रघुवंश दुलारे । सुखसागर रविवंश उजागर लीला ललित मनोहर प्यारे ॥ यज्ञ सुधारन असुर संहारन गौतम नारि उधारन हारे । जनक स्वयम्बर पावन कीनो भृगुपति गर्व निवारन हारे ॥ पिता वचन सुन राज काज तज अनुज सहित वनको पग धारे । वालि वधन वैदेही शोधन लंकापति भुज भंजन हारे ॥ जगनायक प्रभु सन्त सहायक गावत वेद पुराण पुकारे । राम सखे रघुनाथ रूप लख युग युग यही विरद निहारे ॥ २३१ ॥

राग श्यामकल्याण ।

सखी वह देखो रघुराई । गगन मगन पुष्पक विमान पर हैं बैठे सुखदाई ॥ संगमें फबी जनक जाई । ज्यों सावन घन माहिं दामिनी दमकत छबि छाई ॥ कपिनकी भीर सग भारी । हनूमान सुग्रीव विभीषण अंगद युवराई ॥ मात कौशल्या हरपाई । कञ्चन थार सुधार आरती करें सुमन भाई ॥ देवगण फूलन झरिलाई । अटल राज सम्पति रघुवरकी सुर नर मुनि गाई ॥ याचकन मन-माँगी पाई । देत अशीश अघाय रतनहारि बलि बलि बलि जाई ॥ २३२ ॥

राग गौरी ।

अवध आनन्द भये घर आये हैं लक्ष्मण राम ॥ पहले मिले भरतजी भैया पाछे कैकयी माय । घर घर मिले अयोध्या बासी पाछे कौशल्या हरिकी माय ॥ जबहीं राम सिंहासन बैठे कहो लंकको बात ॥ मातु कौशल्या पूछन लागीं कैसे तोड गढलंक । बाट वाट लक्ष्मणने रोंक्यो अवघट रोंक्यो राम । दरवाजा अंगदने रोंक्यो कूद पडे हनुमान ॥ रावण मार अहिरावण मार्यो दियो विभीषण राज ॥ गाय बजाय जानकी ल्याये गावत तुलसीदास ॥ २३३ ॥

राग पीलू ।

भरत कपिसे उऋण हम नाहीं । सौ योजन मर्याद सिंधुकी कूद गयो छिन माहीं ॥ लंकाजार सिया सुध लाये गरब नहीं मन-माहीं । शक्ती बाण लग्यो लक्ष्मणके शोर भयो दल माहीं ॥ द्रोणागिरि पर्वत ले आये भोर होन नहिं पाई । अहिरावणकी भुजा उखारी बैठ रह्यो मठ माहीं ॥ जो पै भरत हनुमत नहिं होते को लावे जग माहीं । आज्ञा भंग कभूं नहिं कीनी जहिं पठायो तहिं जाई ॥ तुलसिदास मारुतसुत महिमा प्रभु अपने मुख गाई ॥ २३४ ॥

राग प्रभाती ।

प्रात समय उठ जनकनन्दनी त्रिभुवन नाथ जगावे । उठो नाथ मम नाथ प्राणपति भूपति भवन बुलावे ॥ उरझी माल गल मोतियनकी कर कङ्कन सुरझावे । घूँघर वारी अलकें झलकें पागके पेच सँवारे ॥ कमलनयन मुख निरख रामको आनन्द उर न समावे । कान्हर दास आश रघुवरकी हरष निरख गुणगावे ॥ २३५ ॥

राग कल्याण ।

देख सखि आज रघुनाथ शोभा बनी । नील नीरद वरण वपुष भुवनाभरन पीत अम्बर धरन हरन द्युति दामनी ॥ सरयू

मज्जन किये सङ्ग सज्जन लिये हेतु जन पर हिये कृपा कोमल घर्नी। सजनी आवत भवन मत्त गज बर गवन लंक मृगपति ठवन कुँवर कौशल धनी॥ सघन चिक्कन कुटिल चिकुर विलुलित मृदुल करन विवरत चतुर सरस सुखमा जनी। ललित अहि शिशु निकर मनो शशि सन समर लरत धरहर करत रुचिर जनु युग फनी॥ भाल भ्राजत तिलक जलज लोचन पलक चारु भ्रू नासिका सुभग शुक आननी। चिबुक सुन्दर अधर अरुण द्विज द्युति सुघर वचन गंभीर मृदु हास भव भाननी॥ श्रवण कुण्डल विमल गंड मंडल चपल कलित कल कांति अति भांति कछु तिन तर्नी। युगल कंचन मकर मनो विधु कर मधुर पियत पहँचान कर सिंधु कीरति भनी॥ उरसि राजत पदिक ज्योति रचना अधिक माल सु विशाल चहु पास बनी राजमनी। श्याम नव जलद पर निरख दिनकर कला कौतुकी मनो रही घेर उड़गन अनी॥ मन्दरन पर खरी नारि आनन्द भरी निरख बरषहिं विपुल कुसुम कुंकुम कर्नी। दास तुलसी राम परम करुणाधाम काम शत कोटि मद हरन छवि आपनी॥ ३२६॥

राग पहाड।

छवि रघुबीरकी चित चोरन॥ जरकसी पाग तिलक मृगमदको तापर कलङ्गी हीर। उर मणिमाल पीतपट राजत चलत मत्त गज धीर॥ कृपा निवासीके प्राण जीवन धन सुखहु न भूपण चीर॥ ३३७॥

हगन बसी रघुबीरकी छवि हो॥ शोभा सरस रही मोरी आली विहरत सरयूके तीर॥ शीतल मन्द सुगंध झकोरा वहती हैं त्रिविध समीर॥ जानकीदास छवि देख मगन भये शोभा श्याम शरीर॥ ३३८॥

अँखिया लगीं थारे रूप रँगीले रामा ॥ क्या री करूं कछु वश ना मेरो बूड गैयां रस कूप । चेटक लाय लुभाय लियो मन चतुराई में अनूप ॥ कृपा निवासी लगन ना छूटे सुनियो अवधके भूप ॥ ३३९ ॥

राग सोरठ ।

अँखिया राम रूप अनुरागी । श्याम वरन मन हरन माधुरी मूरति अति प्रिय लागी ॥ सुन्दर बदन मदन शतशोभा निरख निरख रस पागी । रत्न हरी पल टरत न टारी मरम प्रेम रङ्ग रागी ॥ ३४० ॥

अँखिया राम रूप रस भीनी । कोटि काम अभिराम श्याम घन निरख भई लय लीनी ॥ लोकलाज कुलकान न मानत नूतन नेह रंगीनी । रत्नहरी कैसे अब निकसे होगई ज्यों जल मीनी ॥ ३४१ ॥

राग खट ।

मेरो दृग लाग्यो जाय सुन रामा रूप तिहारो । वन प्रमोदकी कुंज गलीमें चोरयो चित्त हमारो ॥ मृदु मुसक्यान विलोचन से कछु टोना मो पै डारो । राम सखे अब बिन पिया देखे सब सुख लागत खारो ॥ ३४२ ॥

राग कालिंगडा ।

बाँको हमारो यार सँवलिया । बाँकी लटपटी पीत लपेटे बाँकी बाँधे तलवार सँवलिया ॥ बाँके शीश जरतकी पगिया बाँके घोड़े असवार सँवलिया ॥ रामसखेको मन हारि लीनो दशरथ सुत सरदार सँवलिया ॥ ३४३ ॥

राग जंगला ।

काहेको बाँधे तीर कमनियां । भौंहैं कमान बनी जो तिहारी नयन पलक दोउ शरकी अनियां ॥ सन्त हृदय वन मन मृग ढूंढत

चुन चुन मारत शब्द रसनियां। रामसखेको घायल कीनो बन आवे लै जाउ घर कनियां॥ ३४४॥

क्या बुलाक अधरन पर हलकें। जबते दृष्टि परी है मेरी तबते छिन पल परत न पलकें॥ किधों असममर शर संधाने क्या सुखमा पर सरवर झलकें॥ सिय राम पिय मुख मयंक पर मनो अमीकी मूरत झलकें॥ ३४५॥

यह दोउ चन्द्र बसें उर मेरे। दशरथ सुत औ जनकनंदिनी अरुण कमल करकमलन फेरे॥चन्द्रवती शिर चमर ढुरावत आस पास ललना गण घेरे। बैठे सघन कुञ्ज सरयू तट चन्द्रकला तन हँस हँस हेरे। ललित भुजा दिये अंस परस्पर झुक रहे केश कपोलन नेरे। रामसखे छवि कहि न परत जब पान पीक मुख झुक झुक गेरे॥ ३४६॥

जय श्रीजानकीवल्लभ लालहि। मणि मंदिर श्रीकनक महल-में विपुल रंगीली बालहिं॥ कोउ गावत कोउ वेणु बजावत कोउ मृदंग डफ तालहिं। युगुल विहारी भावत दोउ लालन लखि छवि भई निहालहिं॥ ३४७॥

राग बडहंस मल्लार।

तुम झूलो मेरे प्यारे दशरथ राजदुलारे। नवल दुलहैया अति सुकुमारी तुम जोबन मतवारे॥झूले देत डरत अति सुन्दर चोरत चित्त हमारे। सुन सखि वचन मधुर मुसकाने प्रिया रूप मतवारे॥ मधुर प्रियाके गरे लाग अब मिलो जानकी प्यारे॥ ३४८॥

राग पीलू।

झूलत सीताराम अवधपुर रंगमहिलमें। मणि कञ्चनको रच्यो है हिंडोरा झूलत पिया प्यारी परम सहिलमें॥विमलादिक सखी

रसिक झुलावें अतर लगावें परमचहिलमें। सरयू सखी दंपति अनुरागे पान लिये ठाढी परम टहिलमें ॥ ३४९ ॥

राग देश मलार।

सावन घन गरजे घूम घूम। बरसत शीतल जल झूम झूम ॥ कोयल कीर कोकिला बोलें हँस चकोर चहूं दिस डोलें नाचत वन अति करत कलोलें मोर मोरनी चूम चूम। कंचनको हिंडोला झलके रेशम पाट मढे मखमलके चुन चुन कली बिछौना हलके कली कली दल तूम तूम ॥ चलत समीर त्रिविध पुरवाई मन्द सुगंध महा छबि छाई झूलें जनकसुता रघुराई हु बाल झुलावें ऊम ऊम। गावें राग रागनी भामिन दमक रही मानो छबि दामिन झूटा देत नारि गज गामिन पायल बाजे छम छूम छूम ॥ जय जय करत सुमन सुर वर्षत इंद्र निशान बजावन हर्षत दास गणेश युगल छबि निर्खत छाय रह्यो सुख झूम झूम ॥ ३५० ॥

राग वसंत।

गायो वसंत वसंत पंचमी मङ्गल दिन रघुराज कुँवरको। आवो सब मिल गंधर्व गुणी जन तान तरंग उमंग रंग भरको ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ प्रेम रंगी सारंगी करको। गाय गाय रघु-नायक गुण गण रतनहरी हिय रामही हरषो ॥ ४५१ ॥

नवल रघुनाथ नव नवल श्रीजानकी नवल ऋतु कन्त वसंत आई। नवल कुसुमावली फूल चहुँ दिशि रही नवल मारुत नवल सुगध छाई ॥ नवल भूषण वसन पहन दोउ रंगमगे नवल पिया सखी निरखे सुहाई। नवलगुण रूप जोबन जड़त नित नयो रतन हरि देत आशिष बधाई ॥ ३५२ ॥

खेलत वसंत राजाधिराज। देखत नभ कौतुक सुरसमाज ॥ सोहैं अनुज सखा रघुनाथ साथ झोरिन अबीर पिच-

कारी हाथ ॥ बाजैं मृदंग डफ ताल वेणु। छिरके सुगंध भरे मलै रेनु ॥ वरषत प्रसून वर विबुध वृन्द। जै जै दिनकर कुल कुमुद-चन्द ॥ ब्रह्मादि प्रशंसत अवध बास। गावत कल कीरति तुल-सिदास ॥ ३९३ ॥

राग टोडी।

अवध नगर सुन्दर समाज लिये खेलत राम लषण होरी। बाजत ताल मृदंग झांझ डफ केशर रंग करी घनघोरी ॥ इतते भरत शत्रुहन आये उडत गुलाल लाल भई खोरी। रतन हरी श्रीअवध विहारी चिरजीवो सुन्दर दोउ जोरी ॥ ३९४ ॥

राग होरी दादरा।

खेलत रघुराज आज रंग भरी होरी। राम लषण भरत शत्रुहन सुन्दर वर जोरी ॥ कंचन पिचकारी करन केशर रंग बोरी। गह गह भर रंग भरत कह कह हो होरी ॥ उड़त रंग वर गुलाल भर भर भर झोरी। गारी दे दे अबीर डारत बरजोरी ॥ रंगमों मृदंग बाजत डफकी घनघोरी। गाय गाय धाय धाय मीडत मुख गोरी ॥ अवध नगर रंग बढ्यो सजनी निरखोरी। रतन हरी रामराज युग युग न टरोरी ॥ ३९५ ॥

राग होरी।

दशरथ राज छबीलो छैल होरी खेलन आवै री। राजकुमार हजार संग लिये रंग मचावै री ॥ कंचनकी पिचकारी करन लिये अति छबि पावै री ॥ उडत गुलाल लाल रंग भीने मन मो भावै री ॥ डफ मृदंगकी धुन मिल अद्भुत राग सुहावै री। रतन हरी श्रीअवध विहारी पै बलि बलि जावै री ॥ ३९६ ॥

राग परज ।

लाल गुलाल जिन डारो । बरजोरी न करो रघुनन्दन छोडो जी हाथ हमारो ॥ झकझोरो न मुरक जाय बैयां छूट जाय कचवारो । रामसखे थारे पैयां परत मेरो घूंघट पट न उघारो ॥ ३५७ ॥

राग होरी ।

तेरी होरीकी झलक दशरथके लाल मेरे मनमें बसी निकसे न पलक । गाल गुलाल लाल रँग भीनी तेरी प्रेम भरी अँखिय-नकी पलक ॥ नयन विशाल ललित मतवारे तेरी अजब फँसी कुंडलमें अलक । रतनहरी जो सुनों तो कहूं इक अचरज हमारी है तुम्हारे तलक ॥ ३५८ ॥

राग देश ।

रघुवर तुमको मेरी लाज । सदा सदा में शरण तिहारी तुम बडे गरीबनिवाज ॥ पतितउधारन विरुद तिहारो श्रवणन सुनी अवाज । हौं तो पतित पुरातन कहिये पार उतारो जहाज ॥ अघ खंडन दुखभंजन जनके यही तिहारो काज । तुलसिदास पर किरपा करिये भक्तिदान देहु आज ॥ ३५९ ॥

राग वसन्त ।

वंदौं रघुपति करुणानिधान । जाते छूटे भव भेद ज्ञान ॥ रघु-वंश कुमुद सुखप्रद निशेश । सेवत पद पंकज अज महेश ॥ निज भक्त हृदय पाथोज भृंग । लावण्य वपुष अगणित अनंग ॥ अति प्रबल मोह तम मारतंड । अज्ञान गहन पावक प्रचंड ॥ अभिमान सिंधु कुंभज उदार । सुररंजन भंजन भूमिभार ॥ रागादि सर्प गण पन्नगारि । कन्दर्प नाग मृगपति मुरारि ॥ भव जलधि पोत चरणा-रविंद । जानकीरमण आनन्दकन्द ॥ हनुमंत प्रेम वापी मराल ।

निष्काम कामधुक गो दयाल ॥ त्रैलोकतिलक गुण गहन राम। कह तुलसिदास विश्राम धाम ॥ ३६० ॥

राग नट।

हौं हरि पतित पावन सुने। हौं पतित तुम पतितपावन दोउ बानक बने ॥ व्याध गणिका गज अजामिल साख निगमन भने। और पतित अनेक तारे जात कापै गने ॥ जान नाम अजान लीने जान यमपुर मने। दास तुलसी शरण आयो राखिये अपने॥ ३६१॥

राग जंगला।

चितहि राम दीन ओर कोरकी कटाक्षहिं। चितहि दीन ओर कोर बार बार करि निहोर जान दीन विपति छीन साहिबी विचार लीन लाय लीन पाछहिं ॥ गुला गेटि महीन मोटि खरा खोटि बड़ा छोटि तुमसे नहिं कछू ओट हाथ है तिहारे। ना तिहाई रोजगार पेटहीसे ऐहै काज सुनिये गरीबनिवाज राम रतन उदर भरन मेरे राम राखो शरण यथा धेनु बाछहिं ॥ दासी दास खाय पाय श्वान औ मंजार जाय बारिउ कहार जहां आसन करै डासहिं। बचे जूठनको प्रसाद तारा कुँवर सरा कुरा तो फिर सुधि लीजो मोरी इनके सब पाछहिं ॥ कौलते बेकौल हो तो सुनिये रघुवंश केतु तो निकेत ते निकार तुमको नहिं खोरराम खेद देव आछहिं। मांगो बलि चरण सेई बार बार हेई हेई नाहिं कछु लेहों देहों राखिये किनारे। ताते कर चरण जोर मोको नहिं और ठौर तुम तज और जाऊं कहां अवधके दुलारे ॥ दास तुलसी टुकर खोर लाग रहो तुम्हरी ओर चौकट नहीं छूटे नाथ जो कोई झिझकोरे। शीश झगर नाक रगर कल न परै तुम्हरे बिगर छूटे नहीं नाम नगर डगर श्याम प्यारे ॥ ३६२ ॥

राग देश ।

करुणानिधान सुनियोजी कछु मेरो काजहै भारी । प्रहलादके हितकारी खंभ फोर देह धारी नरसिंह नाम पाये सब सन्तनके मन भाये ॥ द्रौपदी जो भक्त तेरी जो आन सभामें वेरी चीरोंकी लाई ढेरी अब आई बार मेरी ॥ तुमहो विपतिके साथी जल डूबत राख्यो हाथी अब मेरी बेर माधो कहिं सोये हो तो जागो ॥ गजकी जो अरज मानी यह विदित वेद बानी अब मेरी ओर देखो मोहिं अपनो कर लेखो ॥ भक्तनके फंद काटे अघ कोट कोट नाटे जी में बारबार टेरूं टुक बाट तेरी हेरूं ॥ कई कोटि पतित तारे जी में गिनत गिनत हारे महाराज अवधविहारी भज रामसखे बलिहारी ॥ ३६३ ॥

राग भैरव ।

जाऊं कहां तजि चरण तिहारे । काको नाम पतित पावन जग किहिं अति दीन पियारे ॥ कौन देव बराय विरदहित हठिहठि अधम उधारे । खग मृग व्याध पषाण बिटप जड यमन कवन सुर तारे ॥ देव दनुज मुनि नाग मनुज सब मायाविवश विचारे । तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपो हारे ॥ ३६४ ॥

राग टोडी ।

दीनको दयालु दानि दूसरो न कोई । जाहि दीनता कहों हौं दीन देखों सोई ॥ मुनि सुर नर नाग असुर साहिब तो घनेरे । पै तौलौं जौलौं रावरे न नेक नयन फेरे ॥ त्रिभुवन तिहुँ काल विदित वदत वेद चारी । आदि अन्त मध्य राम साहिबी तिहारी ॥ तोहिं माँग माँगनो न माँगनो कहायो । सुन स्वभाव शील सुयश याचक जन आयो ॥ पाहन पशु

विटप विहँग अपने कर लीने। महाराज दशरथके रंक राव कीने॥ तू गरीबको निवाज मैं गरीब तेरो। बारक कहिये कृपालु तुलसिदास मेरो॥ ३६५॥

राग टोडी।

तू दयालु दीन हौं तू दानि हौं भिखारी॥ हौं प्रसिद्ध पातकी तू पापपुञ्ज हारी॥ नाथ तू अनाथको अनाथ कौन मोसों। मो समान आरत नहिं आरतहर तोसों॥ ब्रह्म तू हौं जीवहौं तू ठाकुर हौं चेरो। तात मात गुरु सखा तू सब विधि हित मेरो॥ तोहिं हिं नातो अनेक मानिये जो भावै। त्यों त्यों तुलसी कृपालु चरण शरण पावै॥ ३६६॥

राग झिंझोटी।

मैं किहि कहौं विपति अति भारी। श्रीरघुबीर दीन हितकारी॥ मम हृदय भवन प्रभु तोरा। तहँ बसे आय बहु चोरा॥ अति कठिन करैं बरजोरा। मानैं नहिं विनय निहोरा॥ तम मोह लोभ हंकारा। मद क्रोध बोध रिपु मारा॥ अति करैं उपद्रव नाथा। मरदैं मोहिं जानि अनाथा॥ मैं एक अमित बटपारा। कोउ सुनै न मोर पुकारा॥ भागहू नाहिं उबारा। रघुनायक करो सँभारा॥ कह तुलसिदास सुन रामा। लूटैं तस्कर तव धामा॥ चिन्ता यह मोहिं अपारा। अपयश ना होय तिहारा॥ ३६७॥

राग आसावरी।

लाज न लागत दास कहावत। मो आचरण बिसार शोच तज जो हरि तुमको भावत॥ सकल सङ्ग तज भजत जाहि मुनि जप तप याग बनावत। मो सम मन्द महा खल पामर कौन जतन तिहिं पावत॥ हरि निर्मल मन ग्रसन हृदय असमंजस मोहिं जनावत।

जिहिं सर काक कंक बक शूकर क्यों मराल तहँ आवत ॥ जाकी शरण जाय कोविद दारुण त्रयताप बुझावत । तिहूँ गये मद मोह लोभ अति स्वर्गहिं मिटत नशावत ॥ भवसरिताको नाव सन्त यह कह औरन समुझावत । हौं तिनसों हरि परम वैर कर तुमसों भलो मनावत ॥ नाहिंन और ठौर मोको ताते हठ नातो लावत । राख शरण उदार चूडामणि तुलसिदास गुणगावत ॥ ३६८ ॥

राग कालिंगड़ा ।

हम रघुनाथ गुणनके गवैया । ताना गीरी ताना गीरी तानुम तन नाना नाना नहिं जाने ताता थैया ॥ भैरूं ध्रुपद कवित्त तलानो नाहिन ख्याल खिलैया । गीत संगीत प्रबंध त्रिवत अति इनके नाहिं गढैया ॥ डूम अथाई कालकलाउंत नाहिन भांड भवैया । रतनहरी रघुनाथ भजन विन काहूसों राम रमैया ॥ ३६९ ॥

मैं तो पतित उधारो श्रीरामा । मेरे दुःख निवारो श्रीरामा ॥ मैं तो बाबलदे घर नंढडी । गलहार हमेल सोहे कंढडी ॥ प्यारे बाझों नहीं जीया मैं ठंढडी । मैं तो बावलदे घरभोलडी ॥ आगे जंज पिछे मेरी डोलडी ॥ बाझों नहिं मैं सोहदर्डी । हत्थी छल्ले छापांबाहीं हो चूडीयां । प्यारे बाझों सभी गल्लां हो कूडीयां ॥ लालन मिले तां सभी गल्लां पूरीयां । शाहुसैन फिरे जी उतावला । पहली चोट न थींदे चित्त हो चावला ॥ कोई ढंग मिलें साईं हो रावला ॥ ३७० ॥

राग आसावरी ।

कौन जतन बिनती करिये । निज आचरण विचार हार हिय मान जान डरिये ॥ जिहिं साधन हरि द्रवो जान जन सो हठ परिहरिये । जाते विपति जाल निशिदिन दुख तिहिं पथ अनुसरिये ॥ जानत हूं मन कर्म वचन परहित कीने तरिये ।

सो विपरीत देख परसुख बिन कारण ही जरिये ॥ श्रुति पुराण सबको मत एही सतसंग सुदृढ धरिये। निज अभिमान मोह ईर्षा वश तिसे न आदरिये ॥ सन्तत सो प्रिय मोहिं सदा जाते भवनिधि परिये। कहो अब नाथ कौन बलते संसार शोक हरिये ॥ जब कब निज करुणा स्वभावते द्रवो तो निस्तरिये। तुलसिदास विश्वास आन नहिं कत पच पच मरिये ॥ ३७१ ॥

सवैया।

आगम वेद पुराण बखानत कोटिक मारग जायँ न जाने। जे मुनि ते पुनि आपुही आपको ईश कहावत सिद्ध सयाने ॥ धर्म सभी कलिकाल ग्रसे जप योग विराग लै जीव पराने। को करि शोच मरै तुलसी हम जानकीनाथके हाथ बिकाने ॥ ३७२ ॥

कवित्त।

जाहि हाथ धनुष चढ़ायो तोहि सीतापति, जाही हाथ रावण सँहारी लंक जारी है। जाही हाथ तार्‌यो औ उबार्‌यो हाथ हाथी गहि, जाहि हाथ सिंधु मथि लक्ष्मी निकारी है॥जाही हाथ गिरिको उठाय गिरिधारी भयो, जाही हाथ नन्दकाज नाथ्यो नागकारी है। हौं तो हूं अनाथ हाथ जोर कहों दीनानाथ, वाही हाथ मेरो हाथ गहबेकी बारी है ॥ ३७३ ॥

राग भैरवी।

कब ढुरिहो रघुनाथ हमारे। जैसे ढुरे भक्त प्रहलादहिं खंभ फारि हिरणाक्ष सँहारे ॥ जैसे ढुरहे राजा बलिके देत दरश नित नितप्रति द्वारे। जैसे ढुरहे भक्त विभीषण लंका जार सो रावण मारे॥जैसे ढुरहे द्रुपदसुता पै खैंचत चीर दुशासन हारे। ऐसे ढुरहो दासतुलसी पर हमसे पतित अनेकन तारे ॥ ३७४ ॥

राग धनाश्री ।

हरिजू मेरो मन हठ न तजै। निशिदिन नाथ देउँ शिख बहुविधि करत स्वभाव निजै ॥ ज्यों युवती अनुभवत प्रसव अति दारुण दुख उपजै। होय अनुकूल बिसार शूल सब पुनि खल पतिहिं भजै ॥ लोलुप भ्रमत श्रमित निशिबासर शिर पदत्रान बजै । तदपि अधम बिचरत तिहिं मारग अजहुँ न मूढ लजै ॥ हौं हारचो बहु यत्न विविध कर अतिशय प्रबल अजै । तुलसिदास वश होत तबै जब प्रेरक प्रभु बरजै ॥ ३७५ ॥

राग सोरठ ।

ऐसी मूढता या मन की । परिहरि राम भक्ति सुरसरिता आश करत ओसकन की ॥ धूम समूह निरख चातक ज्यों तृषित जान मति घनकी । नहिं तहँ शीतलता न वारि पुनि हानि होत लोचन की ॥ ज्यों गज कांच विलोकि शेर जड़ छांह आपने तनकी। टूटत अति आतुर अहार वश क्षति बिसार आननकी ॥ कहँलग कहौं कुचाल कृपानिधि जानतहो गति जनकी। तुलसिदास प्रभु हरो दुसह दुख लाज करो निज पनकी ॥ ३७६ ॥

राग टोडी ।

और कौन मांगिये को मांगबो निवारिहै । तुम विना दातार कौन दुख दरिद्र टारिहै ॥ धर्मधाम राम काम कोटि रूप रूरो । साहब सब विधि सुजान दान खड्गसूरो ॥ सुसमय द्वै दिन निशान सबके द्वार बाजे । कुसमय दशरथके दानि तू गरीबनिवाजे ॥ सेवा बिन गुण विहीन दीनता सुनाये । जेजे तैं निहाल किये फूले फिरत पाये ॥ तुलसीदास याचकरुचि जान दान दीजिये । रामचन्द्र चन्द्र तू चकोर मोहिं कीजिये ॥ ३७७ ॥

राग जैजैवन्ती।

प्रीतकी रीति रघुनाथ जाने। जाति कुल वरणको नाहिं माने॥ प्रीत प्रहलादकी जान करुणानिधी खंभसों प्रगट नख उदर भाने। दौड़ गजराजके फन्दको काटने गरुडको छोड़ आये उलाने॥ अधम कुल भीलनी बेर दिये रामको पाय मन मगन अतिही भराने। गीध पक्षी महा अधम आमिष भखी ताहि तनु परश सुरपुर पठाने॥ जानकी कारणे जोरि कपि भालु दल कोटिसी लंकगढ़को ढहाने। वैरको भाव उत्साह हारि मिलनको अन्तकी बेर अङ्गमें समाने॥ भक्त भगवन्त अन्तर निरन्तर नहीं यही तो निगम आगम बखाने। दास कान्हर यही रीति रघुनाथकी आपसे भक्तको सरस माने॥ ३७८॥

राग सोरठ।

जानत प्रीति रीति रघुराई। नाते सब हाते कर राखत राम सनेह सगाई॥ नेह निबाह देह तज दशरथ कीरति अचल चलाई। ऐसेहु पितुते अधिक गीध पर ममता गुण गरुवाई॥ तियविरही सुग्रीव सखा लखि प्राणपिया बिसराई। रण पर्यो बन्धु विभीषण ही को शोच हृदय अधिकाई॥ घर गुरु गृह प्रिय सदन सासुरे भई जब जहँ पहुनाई। तब तहँ कही शबरीके फलनकी रुचि माधुरी न पाई॥ सहज स्वरूप कथा मुनि वर्णत रहत सकुच शिरनाई। केवट मीत कहत सुख मानत वानर बन्धु बड़ाई॥ प्रेम कनौडो रामसों प्रभु त्रिभुवन तिहुँ काल न भाई। तेरो ऋणी हौं कह्यो कपिसों ऐसी मानिहै को सेवकाई॥ तुलसी राम सनेह शील लखि जो न भक्ति उर आई। तौ तोहिं जन्म जाय जननी जड तनु तरुणता गँवाई॥ ३७९॥

राग धनाश्री ।

हरिजू मेरो मन हठ न तजै। निशिदिन नाथ देउँ शिख बहु-बिधि करत स्वभाव निजै ॥ ज्यों युवती अनुभवत प्रसव अति दारुण दुख उपजै। होय अनुकूल बिसारि शूल सब पुनि खल पतिहिं भजै ॥ लोलुप भ्रमत श्रमित निशिबासर शिर पदत्रान बजै। तदपि अधम बिचरत तिहिं मारग अजहुँ न मूढ लजै ॥ हौं हारचो बहु यत्न विविध कर अतिशय प्रबल अजै। तुलसिदास बश होत तबै जब प्रेरक प्रभु बरजै ॥ ३७५ ॥

राग सोरठ ।

ऐसी मूढता या मन की। परिहरि राम भक्ति सुरसरिता आश करत ओसकन की ॥ धूम समूह निरखि चातक ज्यों तृषित जान मति घनकी। नहिं तहँ शीतलता न बारि पुनि हानि होत लोचन की ॥ ज्यों गज कांच बिलोकि सेन जड़ छांह आपने तन-की। टूटत अति आतुर अहार बश क्षति बिसारि आननकी ॥ कहँ-लग कहौं कुचाल कृपानिधि जानतहौ गति जनकी। तुलसिदास प्रभु हरो दुसह दुख लाज करो निज पनकी ॥ ३७६ ॥

राग टोडी ।

और कौन मांगिये को मांगबो निवारिहै। तुम बिना दातार कौन दुख दरिद्र टारिहै ॥ धर्मधाम राम काम कोटि रूप रूरो। साहब सब विधि सुजान दान खड्गसूरो ॥ सुसमय द्वै दिन निशान सबके द्वार बाजै। कुसमय दशरथके दानि तू गरीबनिवाजै ॥ से-वा बिन गुण विहीन दीनता सुनाये। जेजे तैं निहाल किये फूले फिरत पाये ॥ तुलसीदास याचकरुचि जानि दान दीजिये। रामचन्द्र चन्द्र तू चकोर मोहिं कीजिये ॥ ३७७ ॥

राग जैजैवन्ती।

प्रीतकी रीति रघुनाथ जाने। जाति कुल वरणको नाहिं माने॥ प्रीत प्रहलादकी जान करुणानिधी खंभसों प्रगट नख उदर भाने। दौड़ गजराजके फन्दको काटने गरुडको छोड़ आये उलाने॥ अधम कुल भीलनी बेर दिये रामको पाय मन मगन अतिही सगने। गीध पक्षी महा अधम आमिष भखी ताहि तनु परश सुर-पुर पठाने॥ जानकी कारणे जोरि कपि भालु दल कोटिसी लंक-गढ़को ढहाने। बैरको भाव उत्साह हरि मिलनको अन्तकी बेर अङ्गमें समाने॥ भक्त भगवन्त अन्तर निरन्तर नहीं यही तो निगम आगम बखाने। दास कान्हर यही रीति रघुनाथकी आपसे भक्तको सरस माने॥ ३७८॥

राग सोरठ।

जानत प्रीति रीति रघुराई। नाते सब हाते कर राखत राम सनेह सगाई॥ नेह निबाह देह तज दशरथ कीरति अचल चलाई। ऐसेहु पितुते अधिक गीध पर ममता गुण गरुवाई॥ तियविरही सुग्रीव सखा लखि प्राणप्रिया बिसराई। रण पर्यो बन्धु विभी-षण ही को शोच हृदय अधिकाई॥ घर गुरु गृह प्रिय सदन सासुरे भई जब जहँ पहुनाई। तब तहँ कही शबरीके फलनकी रुचि माधुरी न पाई॥ सहज स्वरूप कथा मुनि वर्णत रहत सकुच शिरनाई। केवट मीत कहत सुख मानत वानर बन्धु बड़ाई॥ प्रेम कनौडो रामसों प्रभु त्रिभुवन तिहुँ काल न भाई। तेरो ऋणी हौं कह्यो कपिसों ऐसी मानिहै को सेवकाई॥ तुलसी राम सनेह शील लखि जो न भक्ति उर आई। तौ तोहिं जन्म जाय जननी जड तनु तरुणता गँवाई॥ ३७९॥

राग जैतश्री ।

श्री रघुवीरकी यह बानि । नीच हूँ सों करत नेह सों प्रीति मन अनुमानि ॥ परम अधम निषाद पामर कौन ताकी कानि । लियो सो उर लाय सुत ज्यों प्रेमको पहचानि ॥ गीध कौन दयालु जो विधि रच्यो हिंसा मानि । जनक ज्यों रघुनाथ ताको दियो जल निज पानि ॥ प्रकृति मलिन कुजाति शबरी सकल अवगुण खानि । खात ताके दिये फल अति रुचि बखान बखानि ॥ रजनि-चर अरु रिपु विभीषण शरण आयो जानि । भरत ज्यों उठ ताहि भेंटत देह दशा भुलानि ॥ कौन सौम्य सुशील बानर जिनहिं सुमिरत हानि । किये ते सब सखा पूजे भवन अपने आनि ॥ राम सहज कृपालु कोमल दीन हित दिन दानि । भजहिं ऐसे प्रभुहिं तुलसी कुटिल कपट न ठानि ॥ ३८० ॥

राग प्रभाती ।

साँचे मनके मीता रघुवर साँचे मनके मीता । कब शबरी काशीको धाई कब पढि आई गीता ॥ जूँठे फल ताके प्रभु खाये नेक लाज नहिं कीता । लङ्कापतिको गर्व हरयो है राज्य विभीषण दीता ॥ सुग्रीवहि सखा कियो रघुनंदन बानर किये पुनीता । सफल यज्ञ मुनि जनके कीने सब भूपन बल जीता ॥ भसम रमाई कहाँ अहल्या गणिका योग न लीता । तुलसिदास प्रभु शुद्ध-चित्त लखि सबहिं मोक्ष पद दीता ॥ ३८१ ॥

राग सोरठ ।

ऐसे राम दीन हितकारी । अति कोमल करुणानिधान बिन कारण पर उपकारी । साधनहीन दीन निज अघ वश शिला भई मुनि नारी । गृहते गवन परश पद पावन घोर शाप-

ते तारी ॥ हिंसारत निषाद तामस वपु पशु समान वनचारी। भेंट्यो हृदय लगाय प्रेम वश नहिं कुलजाति विचारी ॥ यदपि द्रोह कियो सुरपति सुत कहि न जाय अति भारी। सकल लोक अवलोकि शोक हत शरण गये भय टारी ॥ विहँग योनि आमिष अहार पर गीध कवन व्रतधारी। जनक समान क्रिया ताकी निज कर सब बात सँवारी ॥ अधम जाति शबरी योषित शठ लोक वेदते न्यारी। जान प्रीति दे दरश कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी ॥ कपि सुग्रीव बन्धु भय व्याकुल आयो शरण पुकारी। सहि न सके दारुण दुख जनके हत्यो बालि सह गारी ॥ रिपुको बन्धु विभीषण निशिचर कौन भजन अधिकारी। शरण गये आगे होय लीनो भेंट्यो भुजा पसारी ॥ अशुभ होय जिनके सुमिरणते वानर रीछ विकारी। वेद विदित पावन किय ते सब महिमा नाथ तुम्हारी ॥ कहँ लग कहौं दीन अगणित जिनकी तुम विपति निवारी। कलिमल ग्रसित दास तुलसी पर काहे कृपा बिसारी ॥ ३८२ ॥

राग भैरव।

ऐसी हरी करत दास पर प्रीति। निज प्रभुता बिसार जनके वश होत सदा यह रीति ॥ जिन बांधे सुर असुर नाग नर प्रबल कर्मकी डोरी। सो परब्रह्म यशोमति बांध्यो सकत नहीं तनु छोरी ॥ जाकी माया वश विरंचि शिव नाचत पार न पायो। करतल ताल बजाय ग्वाल युवतिनसों नाच नचायो ॥ विश्वंभर श्रीपति त्रिभुवनपति वेदविदित यह लीख। बलिसों कछु न चली प्रभुता वर हो द्विज माँगी भीख ॥ जाके नाम लिये छूटत भव जन्म मरण दुख भार। अंबरीष हित लागि कृपानिधि सो जनम्यो दश बार ॥ योग विराग ध्यान जप तप कर जिहिं खोजत मुनि ज्ञानी। वानर भालु चपल पशु पामर नाथ तहां गति मानी ॥ लोकपाल यम

काल पवन रवि शशि सब आज्ञाकारी। तुलसिदास प्रभु उग्रसेन-के द्वार बेंत करधारी ॥ ३८३ ॥

राग जैतश्री ।

ऐसी कौन प्रभुकी रीति। बिरदहेतु पुनीत परिहर पामरनपर प्रीति ॥ गई मारन पूतना कुच कालकूट लगाय। मातकी गति दियो नाहि कृपालु यादवराय ॥ काम मोहिता गोपिकन पर कृपा अतुलित कीन। जगत पिता विरंचि जिनके चरणकी रज लीन ॥ नेमते शिशुपाल दिनप्रति देत गिन गिन गार। कियो लीन सो आपमें हरि राजसभा मँझार ॥ व्याध चरणहिं बाण मार्‍यो मूढ़ मति मृग जानि। सो सदेह स्वलोक पठयो प्रगट कर निज बानि ॥ कौन तिनकी कहै जिनके सुकृत औ अघ दोय। प्रगट पातक रूप तुलसी शरण राखे सोय ॥ ३८४ ॥

राग सोरठ ।

ऐसो को उदार जग माहीं। बिन सेवा जो द्रवै दीनपर राम सरिस कोउ नाहीं ॥ जो गति योग विराग जतन कर नहिं पावत मुनि ज्ञानी। सो गति देत गीध शबरीको प्रभु न बहुत जिय जानी ॥ जो संपति दशशीश अर्प कर रावण शिव पै लीनी। सो सम्पदा विभीषणको अति सकुच सहित हरि दीनी ॥ तुलसिदास सब भाँति सकल सुख जो चाहत मन मेरो। तो भज राम काम सब पूरण करैं कृपानिधि तेरो ॥ ३८५ ॥

राग जंगला ।

ऐसो श्रीरघुवीर भरोसो। वारि न बोर सको प्रह्लादहिं पावक नाहिं जरोसो ॥ ऐसो० ॥ हरणाकुश बहु भाँति सतायो हठकर बैर करोसो। मार्‍यो चहै दास नरहरिको आपै दुष्ट मरोसो ॥ ऐसो० ॥ मीराके मारनके कारण पठयो जहर खरोसो। राम

नाम अमृत भयो ताको हँस हँस पान करोसो ॥ ऐसो० ॥ द्रुपदसुताको चीर दुशासन मध्यसभा पकरोसो । ऐंचत ऐंचत भुजबलहारे नेक न अँग उघरोसो ॥ ऐसो० ॥ भारतमें भरुहीके अण्डा कोटिनदल बिखरोसो । राम नाम जब पक्षिन टेर्यो घंटा टूट परोसो ॥ ऐसो० ॥ जार्यो लंक अंजनी नन्दन देखत पुर सगरोसो । ताके मध्य बिभीषणको गृह राम कृपा उबरोसो ॥ ऐसो० ॥ रावण सभा कठिन प्रण अंगद हठ कर हरि सुमिरोसो । मेघनाद सम कोटिन योधा टारे पग न टरोसो ॥ ऐसो० ॥ तुलसिदास विश्वास रामको का कर नारि नरोसो । और प्रभाव कहां लग वरणों ज्यहि यमराज डरोसो ॥ ऐसो० ॥ २८६ ॥

रे मन राम भरोसो भारी । पानी पर जिन पाहन तारे और अहल्या तारी ॥ यमके बांधे पतित छुडाये ऐसे परउपकारी । सबकी खबर लेत दुख सुखकी अर्जुनके हितकारी ॥ तू दयालु प्रभु टेर पुकारे महिमा सुनी तिहारी । सिहरदास प्रभु शरण गहेकी राखो लाज हमारी ॥ २८७ ॥

राग काफी ।

जानकी नाथ सहाय करें जब कौन बिगार करै नर तेरो । सूरज मङ्गल सोम भृगू सुत बुध अरु गुरु वरदायक तेरो ॥ राहु केतुकी नहीं गम्यता शनीचर होत उचेरो । दुष्ट दुशासन निबल द्रौपदी चीर उतार कुमन्तर प्रेरो ॥ जाकी सहाय करी करुणानिधि बढ़गये चीरके भार घनेरो । गर्भमें राख्यो परीक्षितराजा अश्वत्थामा जब अस्त्र प्रेरो ॥ भारतमें भरुहीके अंडा तापर गजको घंटा गेरो । जाकी सहायकरी करुणानिधि ताके जगतमें भाग बडेरो ॥ रघुवंशी सन्तन सुख दाई तुलसिदास चरणनको चेरो ॥ २८८ ॥

राग वड़हंस ।

जगके रूमे ते क्या भयो जाके राम हैं रखवार हो । अब देख प्यारे खम्भमें नरसिंह होकर अवतरे ॥ हिरण्याक्षको मारके प्रहलाद रक्षा करे हो । अब देख प्यारे सभामें जहँ कपटके पांसे परे ॥ द्रौपदीको चीर बढ़ायके खैंचत दुशासन हरेहो । अब देख प्यारे समरमें तैयार दोऊदल खरे ॥ चिगना बचे भर दूलके गज घंट वापर परे हो । अब देख प्यारे लंकामें संकट विभीषणको परे ॥ तुलसी सराहत रामको जिनको अवध मङ्गल भरे हो ॥ ३८९ ॥

राग झंझोटी ।

अस कछु समुझि परे रघुराया । विन तव कृपा दयालु दास हित मोह न छूटे माया ॥ वाक्य ज्ञान अत्यन्त निपुण भव पार न पावे कोई । निशि गृह मध्य दीपकी बातिन तम निविरत नहिं होई ॥ जैसे कोउ इक दीन दुखित अति अशन हीन दुख पावै । चित्र कल्पतरु कामधेनु गृह लिखे न विपति नशावे ॥ पट रस बहु प्रकार भोजन कोउ दिन अरु रैनि बखानै । विन बोले संतोष जनित सुख खाय सोई पै जानै ॥ जब लग नहिं निज हृदय प्रकाश अरु विषय आश मन माहीं । तुलसिदास तबलग जग भरमत सुपनेहु सुख नाहीं ॥ ३९० ॥

हे हरि कस न हरो भ्रम भारी । यद्यपि मृषा सत्य भासे जब लग नहिं कृपा तुम्हारी ॥ अरथ अविद्यमान जानिये संसृत नाहिं जाय गुसाईं । बिन बांधे निज हठ शठ परवश पर्‌यो कीरकी नाईं ॥ सुपने व्याध विविध बाधा जनु मृत्यु उपस्थित आई । वैद्य अनेक उपाय करैं जागे विन पीर न जाई ॥ श्रुति गुरु साधु स्मृतिसम्मत यह दृश्य सदा दुखकारी । तिहि बिन तजे भजे बिन रघुपति

विपति सकै को टारी ॥ बहु उपाय संसार तरनको विमल गिरा श्रुति गावै। तुलसिदास मैं मोर गए बिन जिय सुख कभूं न पावै॥ ३९१॥

राग बिलावल।

केशव कहि न जाय क्या कहिये। देखत तव रचना विचित्र हरि समझ मनहिं मन रहिये ॥ शून्य भीत पर चित्र रंग नहिं बिन तनु लिखा चितेरे। धोये मिटै न मरिय भीत दुख पाइय यह तनु हेरे॥ रवि करनीर बसे अति दारुण मकर रूप तिहि माहीं। वदन हीन सों ग्रसै चराचर पान करन जे जाहीं॥ कोउ कह सत्य झूंठ कह कोऊ युगल प्रबल कर मानै। तुलसिदास परिहरै तीन-भ्रम सो आपन पहँचानै ॥ ३९२ ॥

राग भैरव।

राम जप राम जप राम जप बावरे। घोर भव नीरनिधि नाम निज नाव रे ॥ एकही साधन सब ऋद्धि सिद्धि साध रे। ग्रसे कलि रोग योग संयम समाध रे ॥ भलो जो है पोच जो है दाहिनो जो वाम रे। रामनामहीसे अंत सबहीको काम रे ॥ जग नभ वाटिका रही है फैल फूल रे। धूआंकेसे धौलहैं तू देख मतभूल रे॥ रामनाम छांड जो भरोसो करै और रे। तुलसी परोसो त्याग मांगै कूर कौर रे॥ ३९३॥

राम नाम जप जिय सदा सानुराग रे। कलि न विराग योग याग तप त्याग रे॥ राम नाम सुमिरण सब विधिहीको राज रे। रामको बिसारबो निषेध शिरताज रे ॥ राम नाम महामणि फणि जगजाल रे। मणि लिये फणिजिये व्याकुल विहाल रे॥ राम नाम काम तरु देत फल चार रे। कहत पुराण वेद पंडित पुकार रे ॥ राम नाम प्रेम परमारथको सार रे। राम नाम तुलसीको जीवन अधार रे ॥ ३९४ ॥

राग जैजैवंती ।

राम सुमिर राम सुमिर यही तेरो काज है । मायाको संग त्याग हरिजूकी शरण लाग जगत सुख मान मिथ्या झूठो सब साजहै ॥ सुपने ज्यों धन पछान काहेपर करत मान बारूकी भीत तैसे वसुधाको राजहै । नानक जन कहत बात विनश जैहै तेरो गात छिन छिन कर गयो काल तैसे जात आजहै ॥ ३९५ ॥

राग भैरव ।

सुमिर सनेहसों तू नाम रामरायको । संबरनिसंबरको सखा असहायको ॥ भागहै अभागेहूँको गुण गुणहीनको । गाहक गरीबको दयालु दानि दीनको ॥ कुल अकुलीनको सुन्यो जो वेद साखहै ॥ पांगुरेको हाथ पांव आंधरेको आंखहै ॥ माई बाप भूँखेको अधार निराधारको । सेतु भवसागरको हेतु सुखसारको ॥ पतितपावन रामनामसों न दूसरो । सुमिरि सुभूमि भयो तुलसीसों ऊसरो ३९६॥

राग पहाड ।

सब मतको मत यह उपदेशू । मूल मंत्र यह उचित शिखावन भज मन सुत अवधेशू ॥ अहिपुर नरपुर देवलोक पुर रंक फकीर नरेशू । जो जापक सियराम नामको सो भवसिंधु तरेसू ॥ जप तप संयम दान नेम मख तीरथ अमित करेसू । तुलहिं न सीता-राम नाम सम वेद पुराण कहेसू ॥ गावत शंभु आदि नारद मुनि व्यास विरंचि गणेशू । यह सब गावत नाम महातम काग भुशुंडि खगेसू ॥ नाम प्रतीत राख हिरदेमें उमा सों कह्यो महेसू । तुलसि-दास यह नाम कि महिमा कलिमल सकल हरेसू ॥ ३९७ ॥

राग कालिंगडा ।

राम सुमिरले सुमिरन करले को जाने कलकी । खबर ना या जगमें पलकी ॥ रैनि अंधेरी निर्मल चंदा ज्योति जगे झलकी ।

धीरे धीरे पाप कटत हैं होत मुक्ति तनकी ॥ कौडी कौडी माया जोडी कर बातां छलकी। शिरपर गठरी धरी पापकी कौन करै हलकी ॥ भवसागरके त्राम कठिन हैं थाह नहीं जलकी। धर्मी धर्मी पार उतर गये डूबे अधम जनकी ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो काया मंडलकी। भज भगवान आन नहिं कोई आशा रघुबरकी ॥ ३९८ ॥

राग धनाश्री।

राम सुमर राम सुमर राम सुमर भाई। राम नाम सुमरन विन बूड़त अधिकाई ॥ वनिता सुत देह गेह संपति सुखदाई। इनमें कछु नाहिं तेरे काल अवधि आई ॥ अजामील गणिका गज पतित कर्म कीने। तेऊ उतर पार परे राम नाम लीने ॥ सूकर कूकर योनि भ्रम्यो तऊ लाज न आई। राम नाम छाँड़ अमृत काहे विष खाई। तज भर्म कर्म विधि निषेध राम नाम लेही। गुरु प्रसाद जन कबीर राम कर सनेही ॥ ३९९ ॥

राग भैरव।

रामचरण अभिराम कामप्रद तीरथराज विराजे। शंकर हृदय भक्ति भूतल पर प्रेम अक्षैवट छाजे ॥ श्यामचरण पद पीठ अरुण तल लसत विशद नख श्रेनी। जनु रविसुता शारदा सुरसरि मिल चलि ललित त्रिवेनी ॥ अंकुश कुलिश कमल धुज सुंदर भँवर तरंग विलासा। मज्जहिं सुर सज्जन मुनि जन मन मुदित मनोहर बासा॥ विन विराग जप योग योग व्रत विन तीरथ तनु त्यागे ॥ सब सुख सुलभ सद्य तुलसी प्रभुपद प्रयाग अनुरागे ॥ ४०० ॥

राग विभास।

भज मन रामचरण सुखदाई। जिहि चरणनसे निकसी सुरसरी शंकर जटा समाई॥जटाशंकरी नाम परयोहै त्रिभुवन तारन आई।

जिहिं चरणनकी चरण पादुका भरत रह्यो लवलाई ॥ सोई चरण केवट धोय लीने तब हरि नाव चलाई । सोई चरण संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई ॥ सोई चरण गौतम ऋषि नारी परश परमपद पाई । दंडकवन प्रभु पावन कीनो ऋषियन त्रास मिटाई ॥ सोई प्रभु त्रिलोकके स्वामी कनक मृगा सँग धाई । कपि सुग्रीव बंधु भय ब्याकुल तिन जय छत्र फिराई ॥ रिपुको अनुज बिभीषण निशिचर परशत लंका पाई । शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहसमुख गाई ॥ तुलसिदास मारुतसुतकी प्रभु निज मुख करत बड़ाई ॥ ४०१ ॥

राग परज ।

भज मन रामचरण दिनराती । काहेको भ्रमत फिरत हो निशिदिन भजन करत अलसाती ॥ बिरथा जन्म गँवायो मूरख सोवत रह्यो दिनराती । राम सियाको नाम अमीरस सो काहे नहिं खाती ॥ संवत सोलहसौ इकतीसा जेठ मास छठि स्वाती । तुलसिदास यह विनय करत हैं प्रथम अरजकी पाती ॥४०२ ॥

रे मन क्यों न भजो रघुवीर । जाहि भजत ब्रह्मादिक सुर नर ध्यान धरत मुनि धीर ॥ श्याम वरण मृदु गात मनोहर भंजन जनकी पीर । लछिमन सहित सखा सँग लीने विचरत सरयूतीर ॥ ठुमक ठुमक पग धरत धरणि पर चंचल चित हो बीर । मंद मंद मुसकात सखन सों बोलत वचन गँभीर ॥ पीतवसन दामिनि दुँति निंदत कर कमलन धनु तीर । रामदास रघुनाथ भजनबिन धृग धृग जन्म शरीर ॥ ४०३ ॥

राग सोरठ ।

रे मन राम सों कर प्रीत । श्रवण गोविंद गुण सुनो अरु गाउ रसना गीत ॥ कर साधु संगति सुमिर माधो होय पतित पुनीत ।

काल व्याल ज्यों परचो डोलै मुख पसारे मीत ॥ आज कल पुनि तोहिं ग्रसिहै समझ राखो चीत। कहै नानक राम भजले जात औसर बीत ॥ ४०४ ॥

राग धनाश्री।

सुन मन मूढ़ शिखावन मेरो। हरिपद विमुख काहू न लह्यो सुख शठ यह समझ सबेरो ॥ बिछुरे शशि रवि मन नयननते पावत दुख बहुतेरो। भ्रमत श्रमत निशिदिवस गगनमें तहँ रिपु राहु बडेरो ॥ यद्यपि अति पुनीत सुरसरिता तिहुँपुर सुयश घनेरो। तजे चरण अजहूँ न मिटत नित बहबो ताहू केरो ॥ छूटै न विपति भजे बिन रघुपति श्रुति संदेह निबेरो। तुलसिदास सब आश छांड कर होउ रामको चेरो ॥ ४०५ ॥

राग ललित।

गा ले रे गोविंद गुणा रे। ऐसो समय बहुरि नहिं पावे फिर पछतावेगा मूढ मना रे ॥ पानीकी बूँदमे पिंड प्रगट कियो नयन नासिका मुख रसना रे। ताको रचत मास दश लागे ताहि न सुमिरचो एक छिना ॥ बाल अवस्था खेल गँवाई भर ज्वानी बहुरूप बना रे। वृद्ध भयो तब आलस उपज्यो माया मोहके फंद बना रे ॥ अधम तरे अपराधी तारे जो जो आये हरि शरना रे। ना माने तो साख बताऊँ अजामील गणिका सधना रे ॥ धन यौवन अंजलिको जल ज्यों घटत जात है छिना छिना रे। जो सुख चहै भजै रघुनंदन नामदेव आयो हरि शरणा रे ॥ ४०६ ॥

राग भैरव।

जाग जाग जीव जड जोहै जग यामिनी। देह गेह नेह जान जैसे घन दामिनी ॥ सोवत सुपने सहे संसृत संताप रे। बूडचो मृग वारि खायो जेवरिके सांप रे ॥ कहै वेद बुध तू तो बूझ

मन माहिं रे । दोष दुख सुपनेके जागे ही पै जाहि रे ॥ तुलसी जागे ते जाय ताप तिहूँ ताप रे । राम नाम शुचि रुच सहज स्वभाव रे ॥ ४०७ ॥

राग प्रभाती ।

क्यों सोया गफलतका माता जाग रे नर जाग रे ॥ या जागे कोई योगी भोगी या जागे कोई चोर रे । या जागे कोई संत पियारा लगी रामसों डोर रे ॥ ऐसी जागन जाग पिया रे जैसी ध्रुव प्रहलाद रे । ध्रुवको दीनी अटल पदवी दिया प्रहलादको राज रे ॥ हरि सुमिरे सोई हंस कहावे कामी क्रोधी काग रे । तनुका चोला भया पुराना लगा दाग पर दाग रे ॥ मन है मुसाफिर तनुकी सरां बिच तू कीता अनुराग रे । रैनि बसेरा करले डेरा उठ चलना परभात रे । साधु संगत सतगुरुकी सेवा पावे अचल सुहाग रे । निदानंद भज राम गुमानी जागत पूरण भाग रे ॥ ४०८ ॥

राग देश ।

राम ज्यों राखे त्यों रहिये ॥ जो प्रभु करे भलो कर मानो मुखते बुरो न कहिये । हारे होनी अन होनी करदे सो सब शिरपर सहिये ॥ करे कृपा हरि नाम जापावे सो अंतर ले गहिये । मिहरदास हरि हुकुम मानिये यह सेवकको चहिये ४०९ ॥

राग पूरवी ।

अपनी ओर निवाहिये वाकी वाहू जाने । भली बुरी कछु जानत नाहीं कर्म लिख्यो सो पाइयो ॥ ४१० ॥

राग सोरठ ।

जाको प्रिय न राम वैदेही । सो छाँडिये कोटि बैरी सम यद्यपि परमसनेही ॥ तज्यो पिता प्रह्लाद विभीषण बंधु भरत मह-

तारी । बलि गुरु ब्रजवनितन पति त्यागे भइ जग मंगलकारी ॥ नाते नेह रामके मनियत सुहृद सुसेव्य जहां लौ । आंजन कहा आंख जिहि फूटै बहुतो कहों कहां लौ ॥ तुलसी सो सब भांति परम हित पूज्य प्राण ते प्यारो । जासों होय सनेह रामपद सोइ है हितू हमारो ॥ ४११ ॥

राग मलार ।

जाको लगन रामकी नाहीं । सो नर खर कूकर शूकर सम वृथा जियत जग माहीं ॥ काम क्रोध मद लोभ नींद भय भूख प्यास सबहींके । मनुज देह सुर साधु सराहत सो सनेह सिय पीके ॥ सूर सुजान सुपूत सुलक्षण गनियत गुण गरुवाई । विन हरि-भजन इंद्रायनके फल तजत नहीं करुवाई ॥ कीरति कुल करतूति भूति भलि शील स्वरूप सलोने । तुलसी प्रभु अनुराग रहत जिमि सालन साग अलोने ॥ ४१२ ॥

राग केदारो ।

ऐसे जन्म समूह सिराने । प्राणनाथ रघुनाथसे प्रभु तज सेवत चरण बिराने ॥ जे जड़ जीव कुटिल कायर खल केवल कलिमल साने । सूखत वदन प्रशंसत तिनको हरिसे अधिक कर माने ॥ सुख हित कोटि उपाय निरन्तर करत न पाँय पिराने । सदा मलीन पंथके जल ज्यों कभूं न हृदय थिराने ॥ यह दीनता दूर करवेको अमित जतन उर आने । तुलसी चित चिन्ता न मिटै विन चिंतामणि पहिंचाने ॥ ४१३ ॥

राग भैरव ।

मोह जनित मल लाग विविध विधि कोटों जतन न जाई । जन्म जन्म अभ्यास निरत चित अधिक अधिक लपटाई ॥

नयन मलिन परनारि निरखि मन मलिन विषय सँग लागे हृदय मलिन वासना मान मद जीव सहज सुख त्यागे ॥ परनिन्दा सुन श्रवण मलिन भये वचन दोष पर गाये। सब प्रकार मलभार लाग निज नाथ चरण बिसराये ॥ तुलसिदास व्रत दान ज्ञान तप बुद्धिहेतु श्रुति गावै । रामचरण अनुराग नीर विन मल अति नाश न पावै ॥ ४१४ ॥

राग धनाश्री ।

मेरी प्रीति गोविंदसों ना घटे । मैं तो मोल महँगे लीया जी सटे ॥ चित्त सुमरण करूं नयन अवलोकनो श्रवण वाणी सुयश पूर राखूं । मन सुमधुकर करूं चरण हिरदे धरूं रसन अमृत रामनाम भाखूं । साधु संगति विना भाव नहिं ऊपजे भाव विन भक्ति नहिं होय तेरी । कहत रामदास इक बिनती प्रभु सों पैज राखो राजा राम मेरी ॥ ४१५ ॥

राग पीलो ।

सिया राम बिना बीतें जात दिना । धन जोबन और सुख सम्पदा रैनिका सुपना ॥ भाई बंधु कुटुंब घनेरे कोउ नहीं अपना । कहत कबीर सुनों भाई माधो झूंठ मित्र वना ॥ ४१६ ॥

राग भैरव ।

राम कृष्ण उठि कहिये भोर । यह अवधेश वही ब्रज जीवन यह धनुष धरन वह माखन चोर ॥ इनके चमर छत्र शिर सोहैं उनके लकुट मुकुट कर जोर । इन सँग भरत शत्रुहन लछिमन बलदाऊ सँग नन्दकिशोर ॥ इन सँग जनकलली अति सोहै उत राधा-सँग करत कलोर । इन सागरमें शिला तरायो उन गोवर्द्धन नखकी कोर ॥ इन मार्यो लंकापति रावण उन मार्यो कंसा बरजोर । तुलसीके यह दोऊ जीवन दशरथ सुत अरु नन्दकिशोर ॥ ४१७ ॥

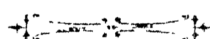
राग गौरी ।

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरन भवभय दारुणं । नवकंज लोचन कञ्ज मुख करकञ्ज पदकञ्जारुणं ॥ कन्दर्प अगणित अमित छबि नव नील नीरज सुन्दरं । पटपीत मानो तडित रुचि शुचि नौमि जनकसुतावरं ॥ भज दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्यवंश निकन्दनं । रघुनन्द आनँद कन्द कौशलचंद दशरथनंदनं ॥ शिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अङ्ग विभूषणं । आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खर दूषणं ॥ इमि वदत तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रञ्जनं । मम हृदय कञ्ज निवास कर कामादि खल दल गञ्जनं ॥ ४१८ ॥

छंद—नमामि भक्त वत्सलं कृपालु शील कोमलं ।
भजामि ते पदांबुजं अकामिनां स्वधामदं ॥
निकाम श्याम सुंदरं भवांबु नाथ मंदरं ।
प्रफुल्ल कञ्जलोचनं मदादि दोष मोचनं ॥
प्रलंब बाहु विक्रमं प्रभो प्रमेय वैभवं ।
निषंग चाप सायकं धरं त्रिलोकनायकं ॥
दिनेश वंश मण्डनं महेश चाप खंडनं ।
मुनींद्र सन्त रंजनं सुरारि वृन्द भंजनं ॥
मनोज वैरि वन्दितं अजादि देव सेवितं ।
विशुद्ध बोध वियहं समस्त दूषणापहं ॥
नमामि इंदिरापतिं सुखाकरं सतांगतिं ।
भजे सशक्ति सानुजं शचीपति प्रियानुजं ॥
त्वदंघ्रि मूल ये नरा भजंति हीन मत्सरा ।
पतंति नो भवार्णवे वितर्क वीचि संकुले ॥
विविक्त वासिनो यदा भजंति मुक्तिदं मुदा ।

निरस्य इंद्रियादिकं प्रयांति ते गतिं स्वकं ॥
त्वमेक मद्भुतं प्रभुं निरीह मीश्वरं विभुं ।
जगद्गुरुं च शाश्वतं तुरीयमेव केवलं ॥
भजामि भाववल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभं ।
स्वभक्त कल्प पादपं समस्त सेव्य मन्वहं ॥
अनूप रूप भूपतिं नतोहं मुर्विजा पतिं ।
प्रसीद मे नमामि ते पदाब्जभक्ति देहि मे ॥
पठंति ये स्तवं इदं नगदरेण ते पदम् ।
व्रजंति नात्र संशयः त्वदीय भक्तिसंयुताः ॥ ४१९ ॥

अथ चेतावनी सामयिक ।



सवैया ।

पूरण ब्रह्म बताय दियो जिन एक अखंड है व्यापक सारे ॥
राग रु द्वेष करें अब कौन सो जोई है मूल सोई सब डारे ॥
संशय शोक मिट्यो मनको सब तत्व विचार कहो निरधारे ॥
सुन्दर शुद्ध किये मल धोयके वा गुरुको उर ध्यान हमारे ॥४२०॥

कवित्त ।

काहू सों न रोप तोप काहू सों न राग द्वेष काहू सों न वैर-भाव काहू की न घात है॥काहू सों न बकवाद काहू सों नहीं विषाद काहू सों न सङ्ग नातो कोऊ पक्षपात है॥ काहू सों न दुष्ट बैन काहू सों न लैन दैन ब्रह्मको विचार कछु और न सुहात है ॥ सुन्दर कहत सोई ईशनको महाईश सोई गुरुदेव जाके दूसरी न बातहै ॥ ४२१ ॥

लोह कूं ज्यों पारस पषाण हूं पलट लेत कञ्चन छुवत होय जगमें प्रमानिये॥ द्रुमको ज्यों चंदन हू पलटै लगाय बास आपके समान ताको शीतलता आनिये॥ कीटको ज्यों भृंगहू पलटके करत भृंग सोऊ उड़जाय ताको अचर्ज न मानिये॥ सुन्दर कहत यह सगरे प्रसिद्ध बात शुद्ध शीख पलटै सो सतगुरु जानिये॥४२२॥

गुरु बिन ज्ञान नाहिं गुरु बिन ध्यान नाहिं गुरु बिन अंतमें विचार न लहत है। गुरु बिन प्रेमनाहिं गुरु बिन प्रीति नाहिं गुरु बिन शीलहू संतोष न गहत है॥ गुरु बिन वास नाहिं बुद्धिको प्रकाश नाहिं भ्रमहूँ को नाश नाहिं संशय रहत है। गुरु बिन बाट नाहिं कौडी बिन हाट नाहिं सुन्दर प्रगट लोक वेद यों कहत है॥ ४२३॥

कोऊ देत पुत्र धन कोऊ देत बल धन कोऊ देत गज साज देव ऋषि मुन्योहैं। कोऊ देत यश मान कोऊ देत रम आन कोऊ देत विद्याज्ञान जगतमें गुन्यो है। कोऊ देत ऋद्धि सिद्धि कोऊ देत नव निद्धि कोऊ देत और कछु ताते शीश धुन्यो है। सुन्दर कहत एक दियो जिन रामनाम गुरुसों उदार कोऊ देख्यो है न सुन्यो है॥ ४२४॥

भूमिहूको रेणुकी तो संख्या कोऊ कहतहैं भार हू अठारह द्रुमनके जो पात हैं। मेघनकी संख्या सोऊ ऋषिन विचार कही बूँदनकी संख्या तेऊ आयके बिलात हैं॥ तारनकी संख्या कोऊ कही है पुराण माहिं रोमनकी संख्या पुनि जितनेक गात हैं॥ सुन्दर जहां लौं जन्तु सबहीको आवे अन्त गुरुके अनन्त गुण कापै कहे जात हैं॥ ४२५॥

गोविंदके किये जीव जात हैं रसातलको गुरु उपदेश सों तो छूटैं यमफंद ते॥ गोविंदके किये जीव वश परें कमनके गुरुके

निवाज सूं तो फिरत स्वच्छंद ते ॥ गोविंदके किये जीव बढ़ैं भवसागरमें सुन्दर कहत गुरु काढे दुख द्वंद ते ॥ औरहू कहांलौं कछु मुखते कहूँ बनाय गुरुकी तो महिमाहै अधिक गोविंद ते ॥४२६॥

जोई कछु देखिये सो सकल बिनाशवंत बुद्धिमें विचार कर बहु अभिलापिये ॥ चिन्तामणि पारस हू कलपतरु कामधेनु औरहू अनेक निधि वारि वारि नाखिये । ताते मन वच कर्म करि करजोर कहूँ सुंदर चरण शीश मेल दीन भाषिये ॥ बहुत प्रकार तीनो लोक सब शोधे हम ऐसी कौन भेंट गुरुदेव आगे राखिये ॥४२७॥

कानके गयेते कहा कान ऐसे होत मूढ़ नैनके गयेते कहा नैन ऐसे पाइये ॥ नासिका गयेते कहा नासिका सुगंध लेत मुखके गयेते ऐसे मुख कहाँ गाइये ॥ हाथके गयेते कहा हाथ ऐसो काम होत पांवके गयेते ऐसे पांव कित धाइये ॥ याहीते विचार देख सुन्दर कहत तोहिं देहके गयेते ऐसी देह कित पाइये ॥ ४२८ ॥

बार बार कह्यो तोहिं सावधान क्यों न होय ममताकी पोट शिर काहेको धरत है । मेरो धन मेरो धाम मेरे सुत मेरी वाम मेरे पशु मेरे ग्राम भूल्यो यों फिरत है ॥ तू तो भयो बावरो बिकाय गइ बुद्धि तेरी ऐसो अंधकूप गृह तामें तू परत है ॥ सुन्दर कहत तोहिं नेकहू न आवे लाज काजकूं बिगारके अकाज क्यों करत है ॥ ४२९ ॥

वैरी घर माहिं तेरे जानत सनेही मेरे दारा सुत वित्त तेरो खोस खोस खायँगे । औरहू कुटुंब लोग लूटें चहूँ ओरहीसे मीठी मीठी बात कर तोसों लपटायँगे ॥ संकट परैगो जब कोऊ नहीं तेरो तब अंतही कठिन वाकीबेर उठि जायँगे ॥ सुंदर कहत ताते झूठोही प्रपंच सब सुपनेकी नाईं सब देखत बिलायंगे ॥ ४३० ॥

श्रवण लै जाय कर नादकी ले डारें फाँस नयन ले जाय कर रूप वश करचो है ॥ नासिका लै जाय कर बहुत सुँघावै गंध रसन लैजाय कर स्वाद मन हरचो है ॥ चरम लैजाय कर नारीसों सपर्श करें सुन्दर कोऊक साध ठगन सो डस्यो है ॥ काम ठग क्रोध ठग लोभ ठग मोह ठम ठगनकी नगरीमें जीव आय परचोहै ॥ ॥ ४३१ ॥

घरी घरी घटत छीजत जात छिन छिन भीगत ही गल जात माटी कोसो डेलहै ॥ मुक्तिके दुआरे आय सावधान क्यों न होय बार बार चढत न त्रिया कोसो तेलहै ॥ करले सुकृत हरिभजन अखंड नर याहीमें अंतर परे यामें ब्रह्म मेल है ॥ मनुष जनम यह जीत भावे हार अब सुन्दर कहत यामें जूवा कोसो खेल है ॥ ४३२ ॥

सवैया।

इंद्रिनको सुख मानत हैं शठ याहिते तू बहुतें दुख पावे ॥ ज्यों जलमें झख मांस है लीलत स्वाद बँध्यो जल बाहिर आवै॥ज्यों कपि मूठ न छांडत है रसनावश बंध परचो बिललावे ॥ सुन्दर क्यों पहिले न सम्हारत जो गुरु खाय सो कान छिदावे ॥४३३॥

देखतके नर दीखत हैं पर लक्षण तो पशुके सबही हैं ॥ बोलत चालत पीवत खात सु वे घर वे बन जात सही हैं ॥ प्रात गये रजनी फिर आवत सुन्दर यों नित भारबही हैं ॥ और तो लक्षण आय मिले सब एक कमी शिर शृंग नहीं हैं ॥ ४३४ ॥

पेटते बाहर होतहि बालक आयके मात पयोधर पीनों ॥ मोहबध्यो दिनहीं दिन ऐसे औ तरुण भयो त्रियके रस भीनें ॥ पुत्र प्रपौत्र बंध्यो परिवारसों ऐसेही भाँति गये पन तीनों ॥ सुन्दर रामको नाम बिसारके आपहि आपको बंधन कीन्हो ४३५॥

दुनियाँको दौरताहै औरतको लोरताहै औजूदको मोरताहै बटोइ सरायका ॥ मुरगीको मोसताहै बकरीको रोसताहै गरीब-को खोंसताहै बेमहर गायका ॥ जुलमको करताहै मालिक सों न डरताहै दोजखको भरताहै खजाना बलायका ॥ होयगा हिसाब तब आवेगा न ज्वाब कछू सुन्दर कहत गुनहगार है सुखदायका ॥ ४३६ ॥

सवैया ।

ये मेरे देश विलायतहैं गज ये मेरे मंदिर ये मेरे थाती ॥ ये मेरे मात पिता पुनि बांधव ये मेरे पूत सो ये मेरे नाती ॥ ये मेरे कामिनी केलि करै नित ये मेरे सेवक हैं दिन राती ॥ सुंदर वैसेहि छांडि गयो सब तेल जर्‌यो सो बुझी जब बाती ॥ ४३७ ॥

कै यह देह जरायके छार किया कि किया कि किया कि किया है ॥ कै यह देह जमीनमें खोद दिया कि दिया कि दिया कि दिया है ॥ कै यह देह रहै दिन चार जिया कि जिया कि जिया कि जिया है ॥ सुन्दर काल अचानक आय लिया कि लिया कि लिया कि लिया है ॥ ४३८ ॥

तू कछु और विचारतहै नर तेरो विचार धर्‌यो ही रहैगो ॥ कोटि उपाय करै धनके हित भाग लिख्यो तितनोहि लहैगो ॥ भोर कि सांझ घरी पल मांझ सो काल अचानक आय गहैगो ॥ राम भज्यो न कियो कछु सुकृत सुंदर यों पछिताय रहैगो ४३९॥

बीत गये पिछले सबही दिन आवत है अगलो दिन नेरे॥काल महाबलवंत बडो रिपु साधि रह्यो शर ऊपर तेरे ॥ एक घरीमहँ मारि गिरावत लागत नाहि कछू नहिं बेरे ॥ सुंदर संत पुकार कहैं सब हौं पुनि तोहि कहों अब टेरे ॥ ४४० ॥ सोय रह्यो कहा

गाफिल ह्वैकर तो शिर ऊपर काल दहारै ॥ धामसे घूनस लाग रह्यो शठ आय अचानक तोहीं पछारै ॥ ज्यों वनमें मृग कूदत फांदत चित्र गले नख सों उर फारै ॥ सुंदर काल डरै जिहिके डर ता प्रभुको कहि क्यों न सम्हारै ॥ ४४१ ॥ मात पिता युवती सुत बांधव आय मिल्यो इनसे सनबंधा ॥ स्वारथके अपने अपने सब सो यह जानत नाहिन अंधा ॥ कर्म अकर्म करै तिनके हित भार धरे नित आपने कंधा ॥ अंत विछोह भयो सबसों पुनि याहीते सुन्दर है जगधंधा ॥ ४४२ ॥

कवित्त ।

मेरो देह मेरो गेह मेरो परिवार सब मेरो धन माल मैं तो बहुविध भारो हूं ॥ मेरे सब सेवक हुकम कोऊ मेटै नाहिं मेरी युवतीकूं मैं तो अधिक पियारो हूं ॥ मेरो वंश ऊंचो मेरे बाप दादा ऐसे भये करत बडाई मैं तो सबते उजारो हूं ॥ सुन्दर कहत मेरो मेरो कर जाने शठ ऐसे नहीं जाने मैं तो कालहीको चारो हूं ॥४४३॥

देह तो सुरूप तौलौं जौलौं है अरूप माहिं सब कोऊ आदर करत सनमान है ॥ टेढीपाग बांध बार बार ही मरोरै मूंछ बाहूं उसकारै अति धरत गुमान है ॥ देश देशहीके लोग आयके हजूर होय बैठ कर तखत कहावे सुलतान है ॥ सुंदर कहत जब चेतना शकति गई वही देह ताकी कोऊ मानत न आन है ॥ ४४४ ॥

सवैया ।

नैननकी पलही पलमें छिन आध घरी घटिका जु गईहै ॥ याम गयो युग याम गयो पुनि सांझ गई तब रात भईहै ॥ आज गई अरु काल गई परसों तरसों कछु और ठई है ॥ सुन्दर ऐसेही आयु गई तृष्णा दिनही दिन होत नई है ॥ ४४५ ॥ जो दश बीस पचास भये शत होयँ हजारन लाख मँगै गी ॥ कोटि अरब्ब खरब्ब

असंख्य पृथीपति होन कि चाह जगै गी ॥ स्वर्ग पतालको राज्य करा तृषणा अधिकी अति आय लगै गी ॥ सुन्दर एक सँतोष बिना शठ तेरी तो भूँख कभी न भगै गी ॥ ४४६ ॥

काहेको दौरतहै दशहूँ दिशि तू नर देख कियो हरिजूको ॥ बैठ रहै दुरके मुख मूंद उवारके दंत खवायहै टूको ॥ गर्भ थके प्रति-पाल करी जिन होय रह्यो तब तू जड मूको ॥ सुन्दर क्यों बिललात फिरै अब राख हृदै बिसवास प्रभू को ॥ ४४७ ॥

भाजन आप गढ्यो जिनने भरि है भरि है भरि है भरि है जू ॥ गावतहै जिनके गुणको ढरि है ढरि है ढरि है ढरि है जू ॥ आदिहूं अंतहू मध्य सदा हरि है हरि है हरि है हरि है जू ॥ सुन्दर दास सहाय सही करि है करि है करि है करि है जू ॥ ४४८ ॥

कवित्त ।

या शरीर माहिं तू अनेक सुख मान रह्यो ताहि तू बिचार यामें कौन बात भली है ॥ मेद मज्जा मांस रग रगनमें रक्त भरयो पेट हूँ पिटारीसीमें ठौर ठौर मली है ॥ हाड़नसों मुख भरयो हाडनके नैन नाक हाथ पांव सोऊ सब हाडकी नली है ॥ सुन्दर कहत याहि देख जिन भूलै कोय भीतर भँगार भरी ऊपर ते कली है ॥ ४४ ॥

कामिनीको अंग अति मलिन महा अशुद्ध रोम रोम मलिन मलिन सब द्वार हैं ॥ हाड मांस मज्जा मेद चाम सों लपेट राखे ठौर ठौर रकतके भरेही भँडारहैं ॥ मूत्रहू पुरीष आँत एकमेक मिल रही औरहू उदर माहिं विविध विकार हैं ॥ सुन्दर कहत नारी नख-शिख निंदारूप ताहि जो सराहैं सो तो बडेही गँवार हैं ॥ ४५० ॥

सवैया ।

सर्प डसे सु नहीं कछु तालुक बीछू लगे सु भलो कर मानो ॥
सिंह हुँ खाय तो नाहिं कछू डर जो गज मारत तो नहिं हानो ॥
आग जरो जल बूड़ मरो गिरि जाय गिरो कछु भय मत आनो ॥
सुन्दर और भले सबही दुख दुर्जन संग भलो जनि जानो ॥४९१॥

कवित्त ।

अपने न दोष देखै परके औगुण पेखै, दुष्टको सुभाव उठि निंदाही करत है ॥ जैसे कोऊ महल सँवार राख्यो नीके कर, कीरी तहां जाय छिद्र ढूँढत फिरत है ॥ भोरहीते सांझ लग सांझहीते भोर लग, सुन्दर कहत दिन ऐसेही भरत है ॥ पांवके तरेकी नहीं सूझै आग मूरखको, और सों कहत शिर ऊपर बरत है ॥ ४९२ ॥

देखबेको दौरे तो अटक जाय वाही ओर, सुनबेको दौरे तो रसिक शिरताज है ॥ सूंघबे को दौरे तो अघाय न सुगन्ध कर, खायबेको दौरे तो न धापै महाराज है ॥ भोगहीको दौरे तो नृपति हू न क्यों ही होय, सुन्दर कहत याहि नेकहू न लाज है ॥ काहूको न कह्यो करै आपनीही टेक धरै, मन सो न कोऊ हम देख्यो दगाबाज है ॥ ४९३ ॥

सवैया ।

जो मन नारीकी ओर निहारत तो मन होत है ताहीको रूपा ॥
जो मन काहु सों क्रोध करै तब क्रोध मयी होयजाय तद्रूपा ॥
जो मन मायाही माया रटै नित तो मन बूड़त मायाके कूपा ॥
सुन्दर जो मन ब्रह्म विचारत तो मन होतहै ब्रह्मस्वरूपा ॥४९४॥

कवित्त ।

मनहीके भ्रमते जगत यह देखियत, मनहीको भ्रम गयो जगत बिलात है ॥ मनहीके भ्रम जेवरीमें उपजत सांप, करके विचारे

सांप जेवरी समात है ॥ मनहीके भ्रमते मरीचिका को जल कहै, मनहीके भ्रम सीप रूपा सा दिखात है ॥ सुन्दर सकल यह दीखै भ्रम मन हीको, मनहीके भ्रम गये ब्रह्म होय जात है ॥ ४५५ ॥

काक अरु रासभ उलूक जब बोलत हैं, तिनके तो वचन सुहात कहु कौन को ॥ कोकिला सारिका पुनि सूवा जब बोलत हैं, सब कोऊ कान दै सुनत रव तौन को ॥ ताहि तैसो वचन विवेक कर बोलियत, योहीं आक बाक बकि तोरिये न पौन को ॥ सुन्दर समझकर वचन उचार करो, नहीं तौ समझ कर बैठो गहि मौनको ४५६॥

सवैया ।

कोउक निंदत कोउक वन्दत कोउक देत है आयके भक्षण ॥ कोउक आय लगावत चन्दन कोउक डारत धूरि ततक्षण ॥ कोउ कहै यह मूरख दीखत कोउ कहै यह आय विचक्षण ॥ सुन्दर काहू सों राग न द्वेष सो ये सब जानहु साधुके लक्षण ४५७॥

तात मिलै पुनि मात मिलै सुत भ्रात मिलै युवती सुखदाई ॥ राज मिलै गज बाज मिलै सब साज मिलै मन वांछित पाई ॥ लोक मिलै सुरलोक मिलै विधि लोक मिलै रु बैकुण्ठ हू जाई ॥ सुन्दर और मिलै सबही सुख सन्तसमागम दुर्लभ भाई ॥ ४५८ ॥

कवित्त ।

देव हू भयेते कहा इंद्र हू भयेते कहा, विधिहूके लोकते बहुरि आइयत है ॥ मानुष भयेते कहा भूपति भयेते कहा, द्विजहू भयेते कहा पार जाइयत है ॥ पशुहू भयेते कहा पक्षीहू भयेते कहा, पन्नग भयेते कहा क्यों अघाइयत है ॥ छूटिबेको सुन्दर उपाय एक साधुसंग, जिनकी कृपाते अतिसुख पाइयत है ॥ ४५९ ॥

इंद्राणी शृङ्गार करि चन्दन लगायो अंग, ताहि देख इंद्र अति कामवश भयो है ॥ सूकरी हू कर्दमके चहितमें लोटकर, आगे जाय

सूकरको मन हरलियो है॥ तैसो सुख सूकरको जैसो सुख मघवाको तैसो सुख नर पशु पक्षीहू को दियो है॥ सुंदर कहत जाके भयो ब्रह्मानंद सुख, सोई साधु जगतमें जीत कर गयो है॥ ४६०॥

सवैया।

सूयेते मोक्ष कहैं सब पंडित सूयेते मोक्ष कहैं पुनि जैना॥ सूयेते मोक्ष कहैं ऋषि तापस सूयेत मोक्ष कहैं शिवसैना॥ सूयेते मोक्ष मलेच्छ कहैं तेहू धोखेहि धोखे बखानत बैना॥ सुंदर आतमको अनुभौ सोइ जीवत मोक्ष सदा सुख चैना॥ ४६१॥

कवित्त।

सोम नाम विप्रवर गिरिजाके वरकर, लीनो सुधाफल कर दीनो नरनाहके॥ भूपति स्वपतनीको रानी निज मीत हीको, ताने दीनों गीतकीको नीको फल चाहके॥ आगे गणिका सगरे धरापति आगे धरा, धरनाथ साथ धुना सुना धुना ताहिके॥ हाहा कामिनीके हित हते काम नीके अब, नाहि तजों नाहि भजों शीश शशी जाहिके॥ ४६२॥

सवैया।

जिनको नित मैं चितमें चितसों तिनकी रति सो तन माहिं रती ना॥ वह आन पुमानके संग रती पुनि ता मनमें गणिका गृह कीना॥ धृग है अबला धृग कंदर्पही अरु सोहिं धिकार जो मार अधीना॥ इन गति समुझकी प्रीति तजी नृप होय योगीश्वर ईश्वर चीना॥ ४६३॥

कवित्त।

अंधन के ज्ञाते माते मत्सरकी कीचबीच, धरनाथ मद साथ भरे दरशात हैं॥ दूषण चमोर सोर भूषणसे भाषणको, पंडित भूपाल सो न सुनें मोरी बात हैं॥ पुनि आन जंतु जेते दुखी दीन

मूढ़ तेते, मोते सकुचात हम ओते सकुचात हैं ॥ पात्र विना भाष राखे भवनको राखे तैसे, जीरण मो गात में सुबात होतजात हैं ४६४

सवैया ।

शांत निजांतर क्यों न गहै कत डोलै वृथा भवमों सबना ॥ होय यथा सु तथा निज ह्वै तुमते अनथा वह होवत ना ॥ प्रीति न साथ विनीत भली कछु हाथ विली ना यथा स्वपना ॥ मौन गहो अब मौन गहो तुम मोर गिरा जिन मोर मना ॥ ४६५ ॥

भावीके भाव अभाव यथा न रमो तिनमो नभके सुमना ॥ मध्यके भोगके मध्य रमो गत राग भ्रमो अन उत्तर ना ॥ ब्रह्म नपुंसक यो मन तू विन ता तव दंपति मों सुख ना ॥ टरत में प्रति फेर तुमें तुम मो मतिको मत फेर मना ॥ ४६६ ॥

कवित्त ।

इंद्रियोंके भोग सारे भारे रोग देन वारे, ताको कीजे हेय मत श्रेयपथ तज रे ॥ पाप अद्रि नाशनको वज्र पाकशासनको, दाहे दोष घासनको मोक्ष शिखी भज रे ॥ दूजो शांत भव बीच प्रापत कदापि नीच, आपनी कलोल लोल गत ते न लज रे ॥ क्षणभंग भवराग ताको मन करो त्याग मोक्षको वैराग सहकारी तासु भजरे ॥ ४६७ ॥ प्रवार सनेहको निवार देह मन बीच बीची बुदबुदे रेखा दामिनी समानिये ॥ पुन दीप्त अगिनमें नागनमें नदी वेग माहि जैसे सुख नाहिं तैसे ताहि जानिये ॥ देवनदी तीरकी पवित्र धारापर बैठि, नीलकण्ठ माहिं नील उतकंठा ठानिये ॥ अब ऐसी रीति करो भोरानकी प्रीति हरो, वेद वाक्य धरो तीन ताप हानिये ॥ ४६८ ॥

भूमि सेज मूल फल मेघ नव बलकल करने न परें देव आगे रचधरेहे ॥ करो इन्हें साथ रति प्यारी प्रेम वारी मति उठो उठो

तामें अब जामें बिब ठरे हैं ॥ तुच्छ अविवेकी शठ मूढ मन बोल कटु जाके चित चिंता आग कर सदा जरे हैं ॥ ऐसे धनवाननके नाम मात्र काननमें जाहिं महाकाननमें कबों नाहिं परे हैं ॥ ४६९॥

दीपमें पतंग परे जरे न प्रताप जाने मीन सु अज्ञाने भखे कुंडी मिले मासको ॥ गज गजी हेत परे ख्वात ख्वात अंकुशको रागमें कुरंग राग करे निज नाशको ॥ पंकजकी गंध बीच नीच भृंग मीच गहे इत्यादि अज्ञानी नाश करें निज मांसको ॥ अहो हा सचन महामोहको प्रताप लहा शुभाशुभ जानों पै न हानो भोग आसको ॥ ४७० ॥

सवैया।

यह श्रुति ज्ञान सुजाननके अभिमान मदादि विकार निवारे ॥
केचित मोसम नीचनके चित मां बहु मान मदादिक वारे ॥
शून्य यथा मठ साधनको अति भूपको साधन दोष प्रहारे ॥
सो हममें मदनानुरको अति कामको कारण वाम ससारे ॥ ४७१॥

कवित्त।

पुण्यनके वश ते सुभोग चिर वशते न मित्रनसे नशते मर्याद आदि दिनमें ॥ कौन मद भोगनके मदसे न तजे जन एकको बियोग तो अवश्य होत तिनमें ॥ स्वते जब जावें तब मनको तपावें भारी मोष तिनें आप ताप मोषे तिन्हें छिनमें ॥ ऐसे मोष प्रतिबन्धी विष लख में सम्बन्धीको कुभागी बिना में जो रागी होत इनमें ॥ ४७२ ॥

जाहि मात पिताते मैं भयो उतपति, ते तो काल वशभये चिर काल बीत गयो है ॥ सम वैस वारे द्वारे सुमरन सिधारे सारे, रहे हम शेष देह वृद्ध वेष लयो है ॥ नदी रेत तीर पर तरु यों शरीर

भयो, प्रति दिन मृत तीर तीर अब आयोहै ॥ गिले काल व्याल सम मेंढक के अजे हम, भजे भोग मच्छरको मोसों मूढ जायोहै॥४७३॥

जाके बामे दाहिने सुमंत चक्र होते अग्र, राजनकी सभा थी मयंक मुखी नारियां ॥भूपनके पुत्र थे विचित्र बीर अहंकारी, वृंद बंदीजन होते वंशके उचारियां ॥ अहो भाई भारे कष्ट भारी भूप भये नष्ट, स्मृति पद प्रविष्ट सु जाकी कथा भारियां ॥ हंसक प्रपंच सब रचको अमंग पुना, ताहि काल बीरको जुहार बार बारियां ॥ ४७४ ॥

गङ्गतीरपर हिमगिरि शिलापर हम बांधे, पदमासनको मन इंद्रि जीतके ॥ ब्रह्मज्ञके ध्यानको अभ्यास विधि मो निवास, योग निद्रा माहि करो हरो ताप चीतके ॥ जठर कुरंग करे शृंगो सङ्ग कंडू मोहिं, सुख मों अभीत मोको जाने मम भीतके ॥ पारवती-नाथ में अनाथके अभीत वार, उत्तम दिलारे कब आवें ऐसी गीतके ॥ ४७५ ॥

काशी गंगाके किनारे भवंत किनारे होय, कदा बसों वसन कौपीन एक धारके ॥ दोऊ हाथ जोरे कर नाय माथ नमों करों, मृदुबाणी साथ रटों नाम समरारके ॥ भो प्रभो भवानी वर शंकर त्रिनेत्र हर, त्रिपुरारी चन्द्रधर भव भवहारके॥ क्षण सम दिन सब मोरे बीत जावें जब, ऐसे अह आवैं कब कहो कृपाधारके॥४७६ ॥

रुचत सुमेर मो न आवे कहूं काम जो, न निज गौरता में सोना सदा गलतान है ॥ जीव जे सन्तोष कर त्रिपत सदैव तर, ताको शेष आनन्द रह्यो कछू न आन है ॥ पुना जेई आन जन धन लोभ कर मन, व्याकुल हैं जाके ताकी तृषणा महान है ॥ कौनके निमित्त ऐसी सम्पदा अमित रची, इत विधि करके न विधि बुधिमान है ॥ ४७७ ॥

हिंसा नाहिं करें परद्रव्य को न हरें, सत्य वचन उचारें पुण्य समै पुण्य कर हैं ॥ कथा बितकथा पर नारीकी न सुनें भन, ताते गुंग बोला बने भोला समचर हैं ॥ तृष्णाको प्रवाह भङ्ग गुरो विषे नम्र अङ्ग, मित्रभाव सब सङ्ग करें हर हर हैं ॥ गायो सर्व ग्रन्थनमें सन्त ऐसे पन्थनमें, राग दोष मोष चरें जैसे दिनकर हैं ॥ ४७८ ॥

कभी भूमि आसन सिंहासनपै वास कभी, कभी भिक्षाग्राम कभी व्यञ्जन अहार है ॥ कभी शत खण्डवती गोदरीको ओढ़ें यती, कम्बरको कबहूं दिगम्बरको धार हैं ॥ कभी भानुकर तपे कभी शीश छत्र दीपे, कहूं सतकार होत कहूं त्रिसकार है ॥ तदपि न सन्त जन सुखी दुखी होत मन, आतमा असंग लखि देहको विहार है ॥ ४७९ ॥

देव एक महादेव नदी देवनदी सेव, गिरि गुहा धाम एव चीर दिशा चार हैं ॥ एव काल मौन नीको व्रत निरदीनताको, सङ्ग बुध युवतीको प्रिय बटु डार है ॥ सुता निरवैरता कुँमार ब्रह्मको विचार, और कहा भनों जाको नन्यो या अचार है ॥ ऐसे सदाचार परवार करि जोऊ नर, सदा पारवारों सदा ताहिको जुहार है ॥ ४८० ॥

शुचि वनके निवासी मृगों सङ्ग हासी, खेल मेल दासदासीको न सेधफल आसी है ॥ कभी व्रत नदी तट कभी सममाने मठ, कबहूं पषाण वट तरु तरे बासी है ॥ केवल प्रशांत मन तुल्य आयतन वन, तदपि एकांत घन बासी सुखराशी है ॥ ईशके उपासीकी प्रकाशी या विभूति ताहि, गावै सुनै ध्यावै नाहिं पावै यमफांसी है ॥ ४८१ ॥

तजै दुराराध्य स्वामी कृपण कुमगगामी, बजावत चल चित भूपनके भामिये ॥ ताते मैं सथूल चाह पूरी होत नाहिं ताते, लियो मन ताहि माहिं पद जो महानिये ॥ जरा हरे काय हरे काल

समुदाय प्राण, ताते तप करो सखे विदुषो बखानिये ॥ तप बिन आन मग श्रेयको न मध्य जग, तप नाम चित्तकी एकाग्रताको जानिये ॥ ४८२ ॥

सवैया ।

शुचि गंग तरंगकी बूँद कनीकर शीतल चारु हिमंचलकी सिल ॥ जिहिं फूल फलान उपान धरे शिवको नित सेवत देववधू मिल ॥ पर भोजनमें निज जो जनदे दिल ता गिरको कत काल लयो गिल ॥ अपमानसही अपमानसही विद धीर सही नृपधाम अही बिल ॥ प्रति कानन विर्छन तेमन बांछत लाभ सुखेन फलादि अपारा ॥ सरिताके सुथान सुथान विषे शुचि शीतल मिष्ट मिले बहु वारा ॥ जल पत्रवती मृदु सापर शीतल पादके होवत भूपन द्वारा ॥ सटके मतिमान महा भटके मतिमान तहां कत होत खुवारा ॥ ४८३ ॥ ४८४ ॥

कवित्त ।

कन्दरा ते कन्द मूल कहा निरमूल भये, वार बार नग किधों देत हैं न वन को ॥ मीठे फलों वारी डारी तरों की न फल देत, कैधों द्रुम देत हैं न वल्कल जन को ॥ दुखमों मनाक धन साधके मदांध भय, मद व्यार साथ जो भ्रमावें भूल तनको ॥ खलोंके कुमुखोंको सबल सुपुरुष पखे, अहो कैसे तजे ऐसे चिंतामन वनको ॥ ४८५ ॥

तुंग भोग इन्द्रलोक सत्त लोक लग जेते, तेतेही तरंग सम भंग पहिचानो रे ॥ जीवनके जीवनेकी रास एक सांस सोऊ दामिनी समान क्षण माहिं हानि जाने रे ॥ जोवनको सुख थोरे दिनमें विमुख होरे, मीतनकी प्रीति पुनि नीत न पछाने रे ॥ सकल संसारकोवि-चारके असार तजो, बोध हेत बुद्धिमानो मेरी बुद्धि मानोरे ॥ ४८६ ॥

मांसग्रन्थि कुचनको कञ्चनके कुम्भ कहे, मोम सम मुख कफधामको उचारे हैं ॥ चम्पाकलीके समान दाडिमके दाने माने, हाडनकी दांत पांतको दिवाने सारे हैं ॥ मूतभिगी जंघनकी संघनी बड़ाई भने, निंदत गजिंदकर केलाको निवारे हैं ॥ अहो निन्द योग्य रूप अंगनाको ताकी ऊप, धुनि मनवारे शीश धुने मतिवारे हैं ॥ ४८७ ॥

जग कर श्वेत बार नरोंके निहार नार, करे ताहि त्रिसकार भागे फेर नारको ॥ हाड घटी रज्जु नार मन्दर महेर डार, विप्र नार वृद्ध रूप कूप चमिआरको ॥ दाहे तीन ताप भान नैन ज्ञान कान तजे, तजे ताहि मान आदि यों उदार को ॥ अहो कष्ट जीव दुष्ट तजे न अनिष्ट अजे, नारी तजे तन भजे मन अजे नारको ॥ ४८८ ॥

आननकी छबि वली गणां कर टली गली, काननकी गली बल अकों में न भाम है ॥ लोइनाके माहिं कछु लोइ नाहि परे स्वच्छ, रसना सो रसनासो नाम कला नाम है॥केश भये उजर न रह्यो कछु उजर, जबानी गई उजर न मांसको विमाम है ॥ तृष्णा तो अनन्त अन्त भयो है संवात्समभ, शान्त भई शान्ति नाहि शांत भोग आसहै॥४८९॥

तनु वृद्ध भयेते न वृद्ध भई भोग आश, मन में तो भोगनकी कोटि मन रत है ॥ सैने सैने उच्चस्थान लोचनकी द्युतिहान,मानवको बहु मान हान भयो अत है॥सग्व समवैस वारे प्राणों वत जेई प्यारे, कबके पधारे नाक देख ऐसी गत है॥अहो अजे नीच निज मीच बीच हासी भजे, जीव ना चहत मृत जीवना चहत है ॥ ४९० ॥

शुभ शत संवत नरानकी प्रमान आयु, तासु आधभाग नास होय रैन सोय है ॥ बाल वृद्ध माहिं ताहि आधो भाग बाधो जाहि, जाड़ता अशक्य ताकी खाण वैस दोय है ॥ शेषकी अवधि जोऊ आधि व्याधि संग सोऊ, भ्रमनो विदेश होऊं सेवकादि खोय है॥ जीवनकी आयुमाहिं सुखको तो नाउँ नाहिं, तोयके तरंगके समान भंग होय है ॥ ४९१ ॥

विविध प्रकार वेद अर्थके संवेद वारी, चेतना मों चञ्चलाई सों निकाई हत है ॥ नानाविध वाक्यनके कौतुकमें रस जोऊ, सो विरस भयो जाहि माहि विलसत है ॥ भाँति भाँति सकल विकलपै प्रशांत जामें, रजो तमो रहत सु सतोके सहत है॥ईश्वरकी सेव हित ऐसो चित्त चाहियत, ऐसे चितहीमों सत चित विकसत है॥४९२॥

हरि में सनेह तर जनम मरन डर, उर माहिं कीनो वर बंधु मैं न राग है॥मनोभव जो विकार मंद संसकार डार संग,दोष दुख टार वसे कांत वाग है ॥ या वैराग्य भये कहा होर त्याग योग रहा, हती सब चाह जो वैराग ते वैराग है ॥ हेतु परमारथको उत्तम वैराग ऐसो, भाग बडे भागको अभाग ताते भाग है ॥ ४९३ ॥

भोगनमें रोग भय सुखो विषै क्षय भय, धन मध्य भय भूप चोर-को रहत है ॥ दाम माहिं स्वामि भय जय माहिं रिपु भय, भय कुल बीच नीच नारीको महत है ॥ मान में महान भय गुणी मैं खलान भय, काय में कृतांत भय सर्वगत है ॥ निर्भय वैराग एक धरो नरो सविवेक, गायो में अनेक बार थाकी मोरी मत है ॥ ४९४ ॥

सवैया ।

तीर्थन माहि सनान समान करै बहुदान महान मनीके ॥
समसान मठान तरून तरे असथान करै उत तीर नदीके ॥

मुख मौन धरे तज भौन चरे अरु वेद ररे सु पढावत नीके ॥ गुण ये तत वृंद बगत जना बर एक वैराग विना सब फीके ॥ ४९५ ॥

कवित्त।

अंत तो मलीन दीन हीन पुरुषारथ मों, कर्मन विहीन पीन पापको कहा कहों ॥ विषया अधीन और कहा लौं कहें प्रवीन, काम क्रोध लोभ मोह मदके धका सहों ॥ रावरे समर्थ है मो मोसे खल तारबेको, अधम उधारन हो और ते नदा चहों ॥ सरल सुजान मंन प्यारेकी निहोर मोहि, दीजे शरणागत संत-संग मों परो रहों ॥ ४९६ ॥

सवैया।

आपनो रूप पिछान सी लाभ न भूल सी हान बड़ी नहिं जीको ॥ नाहिं बडो सुख भक्ति ते दूसरो दुःख न जानिबो राधिका पीको ॥ चारिहु नीक न जान परे विन साधुके संग कहो करे नीको ॥ वेद कहें अरु लोक लखे सतसंगत सेव्य सही सबहीको ॥ ४९७ ॥

झूलना।

समता गहे सबको जाने दुःख सुक्ख सम आड़ा है ॥ मेटे मान मोह मगरूरी काम क्रोध सो खाड़ा है ॥ छोड़ कुसंग संग सम साधै सुरत शब्द मन गाड़ा है ॥ यों शिरके पद चले संग ढिग क्या तनु हलुवा माडा है ॥ ४९८ ॥

इंद्रिय जीत करे वश अपने तजे जगतकी आसा है। जोडै प्रेम नेम साईं सों रहे दरस रस प्यासा है ॥ आपा मेट गर्द कर डारे शिर दे लखे तमासा है ॥ यहि विधि गहै संत तब होवै यों क्या दूध बतासा है ॥ ४९९ ॥

कवित्त ।

मूठी एक माटीको घरौंदा सो शरीर मन, ताको कहै मेरो वपु अति अभिराम है ॥ आगे पाछे भाव नाहिं मध्य दुःख भोग यामें, जानै जाको खेह विट कृमि परिनाम है ॥ विषयको भोग जैसे दाद को खुजाये सुख, अंत दुःखराशि तामें मानत विश्राम है ॥ इंद्रिन के संग लाग्यो आपनो स्वरूप त्याग्यो, कुसंग अनुराग्यो यामें याको कहा काम है ॥ ९०० ॥

कुण्डलिया ।

भेडिनमें जिमि सिंहको शावक रह्यो भुलाय ॥ तिनके सँग भेभें करै निज पौरुष बिसराय ॥ निज पौरुष बिसराय तिनहिके धारे लच्छन ॥ यों नहिं समुझै नेक सकल ये मेरे भच्छन ॥ तैसे गो गण संग फिरत मन परा भ्रम बेडी। आप अपनपौ खोय भयो भेड़िनमें भेडी ॥ ९०१ ॥

कवित्त ।

रविको प्रकाश जैसे देखिये मुकुर मध्य, मुकुर प्रकाश जैसे जलको अभास है ॥ जलके प्रकाश हू ते होत जो प्रकाश, ताते देख्यो परे मंदिरके भीतर उजास है ॥ तैसे परमातमा ते आतमा विचार लीजे, आतमाते मन ताते जगत विलास है ॥ साक्षी परमातमा अखंडित सभीके माहिं, सबही ते न्यारो सदा आनंदकी रास है ॥ ९०२ ॥

स्वपनेमें सती यती मुनि राव रंक सब, स्वपनेमें चार दश लोकन फिरत है ॥ स्वपनेमें मेरो तात मात भ्रात नारी सुत,मेरो यह धाम ग्राम नाम यों कहत है ॥ स्वपनेमें भवके समुद्र माँझ बह्यो फिरे,पैरत थकत पुनि बूडत तरतहै ॥ जागे विन जाने नाहिं आपही सकल भयो,आपहीतो निरखत आपही गिरत है ॥९०३॥

सवैया।

चाह जितो चित चाहै अनेकन होत तितो दुःख ही जु विचारै॥
है इन इंद्रिनको सुख हेर सुतेरो न हेत जो नीके निहारै॥
पेट लफायें फिरै जु कहा अतिदीन दुवारन दांत निकारै॥
लै हरिकी किन भक्ति सदा जु चहै सुखसों अपनी निमतारै॥५०४॥
दैने दई फल फूल अनेक औ मूल जिते तित तोहि अहारै॥
डासनको कुश लै परी भूमि चहै जितही नित पायँ पसारै॥
ताल तरंगिनि ताप हरै अरु सूरज पावक शीत निवारै॥
याके लिये हठके शठ तू कह पांवर पौरिन हाथ पसारै॥ ५०५॥

कवित्त।

जाको जाको चाहै सो तो जात है चला है सब कौनसी निबाहैं नेह देहहू तो छीजिये॥ रवि शशि तारागण सुरासुर सातों सिंधु, भूमिहू आकाशको विनाशिही पतीजिये॥ ब्रह्मा अरु कीट लों विनाशवन्त दीसै सब,आपा मान रह्यो सो तो आपहू न जीजिये॥ कासों मानों नातो कासों करत हिताहित सो देख जो परत शोच काको काको कीजिये॥ ५०६॥

अंगी अरधंगी हितबन्ध सनबन्धी ताके, हेत मति बंधी मन पाछे पछताय है॥ अंग ही लौं अंग छिनभंगी जब होय गयो, नाश भे अनंगी तब अंगी कहा पाय है॥ घर ही लौं कोई कोई आंगन डगरही लौं, चिताके समीप कोऊ जाय है तो जाय है॥ जेतो है हुतंगी दिना चारहीके रंगी सब, अंतके समैको तेरो संगी रामराय है॥ ५०७॥

सवैया।

आये कहांते कहो तुम आप ह्वै आये कहांते तुम्हारे ये नात है॥
जात भये कितको सिगरे अरु तू मरके कितको कहँ जात है॥

नाचत पूतरी पेखनो लो जग डोर नचावन हारके हाथ है ॥
तेरो कहा जो तू मेरो कहै हठ हेरो विचार कहा विललातहै ॥५०८॥

कवित्त ।

मान लियो तात भ्रात मान लियो पिता मात, मान लियो अरि मित्र जाति अरु पांति है ॥ मान लियो आपा पर मान लियो नारि नर, मान लियो दुःख सुख दिन अरु रात है ॥ मान लियो नर्क स्वर्ग पाप पुण्य मान लियो, मान लियो हानि लाभ भाँति हूँ विभांतहै ॥ जग सब झूठ है मरीचिकाकी ज्योति जैसे, जान लियो सांच मान लियो एक बात है ॥ ५०९ ॥

राग विहाग ।

ओमे वह वह झाकी दाहुण पडदा किसतों रखीदा। जिसतन इश्क का जोर हुआ वह वेखुद है वेहोश हुआ वह क्योंकर रहे खमोश हुआ जिन प्याला पीना साफीदा ॥ तुसीं आप असां-वल आएहो किस कोलों भेद छिपाएहो किते अदम पीर बन आएहो विच पडदा रखिया ख्वाकीदा। तुसीं आपे कहंदे सारे हो तुसीं आपे कहंदे न्यारेहो तुसीं आपे लयो न जारे हो किते लाला नयन इमाकीदा ॥ तूँ ना कर इतना झेडा है तुध बाझों दूज केहडा है असां देख्यो बडा अंधेर है अपने आप नूं दूजा आखीदा। किते रूमी हो किते शामी हो तुसीं आपने आप नमामी हो किते साहिब किते मलामीहो केन्हों खोटा खरा सुलाकीदा ॥ मनसूर नूँ सूली चाढ्या ईशाह शम्मस पोश उतारयाई हुण मिसकीनां बल आया हैं कुछ लेखा रहिंदा बाकीदा। बुल्या इस तन दी तूँ भाठी कर बाल हड्डा नूँ काठी कर ज्ञान अगन सों ताती कर फिर तिस-पर मधुवा चाखीदा ॥ ५१० ॥

राग जंगला ।

कोई मोडो दिलांदियां बागां नूँ ॥ मन समझाया समझ नाहीं रात दिने उठ पैंदा राहीं ढूंढन जाय स्वादां नूँ ॥ यह मन मेरा कौआ कहिये विना हंस क्यों मोती लहिये मिल हंसा तज कागां नूँ ॥ और किसीको दोष न दीजै जो कछु बीजिया सो लुन लीजै दोष है अपन्यां भागां नूँ ॥ कहै हुसैन सुनो भाई साधो मन मजबूत पकड़ जब बांधौ फेरकी करों किताबां नूँ ॥ ५११ ॥

तेरा राम बसता है तेरेही मनमें मूरख काहेको भटकत बनमें ॥ दूध दहीकी मटिया जमाई तामें माखन वस्तु लभाई मथन विना कुछ हाथ न आवे जैसे चंदा छिप जात घन में ॥ पथरीमें आग जाने सब कोई चकमक झाडके धूनी रमाई गुरू अपनेसे आज्ञा पाई जैसे मुख देखत दर्पनमें ॥ महिंदीके पातमें लाली रहत है बिन घोटे रंग चढे न हाथ पै ऐसी खोजना करो मन अपने निश्चय कर चितला साधनमें ॥ गजके कुंभ सों निकस्यो मोती अँधरेसे क्या कीमत होती हेमदास कोई बिरला जाने ज्ञानी समझत हैं सैननमें ॥ ५१२ ॥

सतगुरु पूरा पाया भला मैं साहब पूरा पाया है ॥ गढ कञ्चनके महला त्यागे त्यागी सगरी माया है ॥ दारा सुत दोनों मैं त्यागे गोविंद हिरदे में समाया है ॥ जन्म २ कासा मैं दुखिया छिनमें दुःख गँवाया है ॥ खुदी गई आनँद सँग राता गोविंदका गुन गाया है ॥ मन महलों में सेज बिछाया सुखमें जाय समाया है ॥ जाग्रत स्वपना दोनों त्यागे तुरिया माहिं जमाया है ॥ पवन दा घोड़ा सुरत लगामां भयदा चाबुक लाया है ॥ प्यादेकू असवार बनाया बिन पंखा जु उडाया है ॥ शौह अपने दी रंगी रंगसां

गूढारंग रँगाया है ॥ कहत विचारा दिलसुख प्यारा प्याला प्रेम पिलाया है ॥ ५१३ ॥

केती हजारां अलिम हैं तांतूं केहडी कुडे तांतूं केहडी कुडेनी ॥ तेरे जेहीयां लखँ हजारां बाह बाह पट्टियां फिरन बजरां इस फिरने सिर लाख पजारां तांतूं आपई इछत महेडी कुडे ॥ सुरमापा मटकेनी है तांतृं मबदी वछ तकेनी वैं मिरगां वाग टपेनी हैं तेरे मगरे ई फिरदा लैं हेडी कुडे ॥ जद तूं ओथों आई मी तेरी मूरत सकल अलाही सी तेरी चुनडी नूं दाग न स्याहीमी हुण तैं आपेई चिक्कड लबेडी कुडे ॥ उमर गँवालई मार पंज गिटडा एह जग तैंनूं लगदा मिठडा एथे रहन किसीदा न दिसदा आचढ हुसैनां दी वेडी कुडे ॥ ५१४ ॥

कवित्त ।

दाताऊ महीप मानधाताऊ दिलीप जैसे, यश अजहूं लौं द्वीप द्वीप छाये हैं । बलि एसो बलवान को भयो जहान बीच, रावण समान को प्रतापी जग जाय हैं ॥ बानकी कलानमें सुजान द्रोण पारथसे, जाके गुण दीनद्याल भारतमें गायेहैं ॥ कैसे कैसे सूर रचे चातुरी विरंचि जूने, फेर चकचूर कर धूरमें मिलाये हैं ॥ ५१५ ॥

चलेगये छांड हिरण्याक्ष हिर्ण्यकशिपू से, बलि जैसे बांधे सो पातालमें चलेगये ॥ चलेगये रावण रु कुम्भकर्ण महाजोधा, केते तो नरेश मारे घरमें चलेगये ॥ चलेगये जरासन्ध कंस शिशुपाल जैसे दुर्योधन आदि बीच गर्वके चलेगये ॥ चलेगये केते यते असुर महान दुष्ट, आयके जमीनपर हो होके चलेगये ॥ ५१६ ॥

श्वासके भरोसे गढ मासमें निवास लियो, आशा मन माहिं राखी मान न शरीरकी ॥ बडे बडे शूरवीर देख छोडगये मूर्ख, रही नाहीं निशानी शाहां अरु वजीरा की ॥ भज निर-

जन दुखभंजन रे आलमकी नित्य रोज, खब्र लेत पाहनमें कीराकी ॥ कहै कवि थारामल स्मरनेको यही पल, एक एक घडी जात लाख लाख हीराकी ॥ ५१७ ॥

सवैया।

परिपूरण पापके कारणते भगवन्त कथा न रुचै जिनको ॥ तिन एक कुनारि बुलाय लई नचवावत हैं दिनको रिनको ॥ मिरदंग कहै धिगहै धिगहै रु मँजीर कहैं किनको किनको ॥ तब हाथ उठायके नारि कहै इनको इनको इनको ॥ ५१८ ॥

कवित्त।

सन्तनकी गहो रीत त्यागो जगकी प्रतीत, औसर है यही मीत विमल चुकाइये ॥ निशिदिन सन्त संग जग प्रीति करो भंग, रामजू सों लाय रंग आन नहिं जाइये ॥ आन गयां सुख नाहिं बूझ देख हृदै माहिं भलो दाव बन्यो आय बाद ना गँवाइये॥प्रभुध्यान हिये धार सर्व आशको बिसार संत मिल गहो सार बेग मुक्ति पाइये ॥ ५१९ ॥

सवैया।

ए मन भूल रह्योहै कहा विषयारसमें निशि द्यौस बहै ॥ है जग झूँठ धुवांको सो धाम मृगाजल सोहत प्यास चहै ॥ धावत धावत धाय मरो श्रमही इक केवल हाथ रहै ॥ चेत अजों ममता तजके समता सुख आनँद सिंधु लहै ॥५२०॥

मात पिता हित बंधु सगे सुत नारि सबै अरु चाकर चेरे ॥ तू हित मान रह्यो इनसों निशि द्यौस भ्रमें जिमि भौंरके बेरे ॥ इनके दुखते दुख पावतहै सो तो है सब ये हित स्वारथ केरे ॥ जीवत जारतहैं तोहि तात मुये पुनि जारनहार हैं तेरे ॥ ५२१ ॥

छोड़के आश सभी जगकी हियमें सुख शांतिको वास करो ॥
यह जीवनहू की तजो शरधा जग जीवत ही बिन मीच मरो ॥
अबलों जु भई सु भई अबहूँ चित चेत विवेक की ओर ढरो ॥
तुम काके हो को हो कहां हो कछू अपनी सुधि आपन आप धरो ॥
काल निहारत काल सदा सब लोग विचारत ही पच हारें ॥
कोऊ बच्यो न कहूँ कितहूँ जलहूँ थल व्योम पताल विचारें ॥
है छिन एक को पेखनोसो तू तहां कह कौनकी आश निहारैं ॥
यामें कहा तोहिं अर्थ मिलै यों विनर्थहिं मानुष जन्म निवारैं ॥
तू ममता मद माहिं पर्यो रचके पचके बहु धाम सँवारे ॥
लोभ अधीन जो पापको मूल रह्यो चित भूल न आप सँभारे ॥
काल रह्यो ढिग श्वास गिनै छिन मांझ लवा जिमि बाज पछारै ॥
नंदके नंदहि क्यों न भजै जो सदा अपने जनको प्रतिपारै ॥ ५२४ ॥
संत सदा उपदेश बतावत केश सभी शिर श्वेत भये हैं ॥
तू ममता अजहूँ नहिं छांडत मौतने आय सँदेश दये हैं ॥
आज कै कालिह चलै उठ मूरख तेरेही देखत केते गये हैं ॥
सुंदर क्यों नहिं राम सम्हारत या जगमें थिर कौन रहे हैं ॥५२५॥

राग प्रभाती ।

तु खुश भर नींद क्यों सोया । नगारा कूचका होया ॥ नगारा मौत का बाजे । ज्यों सावन मेघुला गाजे ॥ जिन्हा सँग नेह सी तेरा । तिन्ह किया खाकमें डेरा ॥ न आये फेर कर फेरा । कहां गये मुल्क के वाली । जो चलते हंसकी चाली ॥ गये दरबार कर खाली॥कहँ गये खान मद माते । जो सूरज चंद्र लौं जाते ॥ न देखे वह किसी जाते ॥ कहां गये मीर और काजी । जो चढ़ते तुरकियां ताजी ॥ गये वैरान कर वाजी ॥ जो टूटी अंबकी डाली । जो सोता बाग का माली ॥ बडेही शौकसे पाली । जिन्हां सिर केश थे काले ॥ मलाइयां दूधसे पाले ।

कि आखर अगिनमें जाले ॥ जिन्होंके लाख थे पल्ले। वो खाली हाथ कर चल्ले ॥ उन्होंने जंगले मल्ले ॥ जिन्हा शिरमोहँदे चीरे। चबावैं पानके बीरे ॥ तिन्हांको खा गये कीरे ॥ जिन्हां घर रेशमी बसते। तिन्हां पर बैठ कर हँसते ॥ सो देखे खाकमें धसते ॥ जिन्हां घर पालकी घोडे। सोहैं तन मखमली जोडे ॥ सोई मुख मौतने तोडे ॥ जिन्हां घर झूलते हाथी। हजारों लोग थे साथी ॥ तिन्हां-को खागई माटी ॥ जो तन धन गर्व नहिं करना। कि आखर खाक में रलना ॥ बली कहे फिर नहिं मिलना ॥ ५२६ ॥

राग जंगला।

इस दुनिया पर रोज मुसाफिर नित उठ बाग बहार नहीं ॥ काची कंध बालुका गारा तिस पर महक उसार नहीं ॥ भाई बंधु कुटुंब घनेरा भीर परी कोइ यार नहीं ॥ बारू भीत बनाई रच पच सो रहती दिन चार नहीं ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो आवन दूजी बार नहीं ॥ ५२७ ॥

राग भैरवी।

याद करेगा इस जीवननूँ भला मुसाफिर बंदे ॥ आयासी कछु लाहे कारन रुँझगिया केहडे धंधे ॥ भवसागर तैनू तरना पौसी पाप पुण्य धर कंधे ॥ भाई बंधु कुटुंब घनेरा जन्म जन्मके अंधे ॥ कहत कबीर सोई पार उतर गये हरि हर नाम जपंदे ॥ ५२८ ॥

राग परज।

बात चलन दी करहो जग रहना नाहीं ॥ खाय खुराकां,पहिपुसकां जमदा बकरा पल हो ॥ गंगा जावे गोदावरी न्हावे अजे न समझे खलहो ॥ उमर तेरी ऐवें पई जांदी घड़ी घडी पल पल हो ॥ कहै हुसन फकीर साईंदा भय साहिब दा कर हो ॥ ५२९ ॥

राग प्रभाती ।

अबतो जाग मुसाफिर प्यारे रैनि घटी लटके सब तारे॥ आवागौन सराईं डेरे साथ तयार मुसाफिर तेरे अजे न सुनदा कूचनगारे॥ करले आज करनदी बेला बहुरि न होसी आवन तेरा साथ तेरा चल चल्ल पुकारे ॥ आपो आपने लाहे दौडी क्या सरधन क्या निरधन बौरी लाहा नाम तू लेहु सँभारे। बुल्ला शोहदी पैरी पारिवै गफलत छोड़ हीला कछु करिये मिर्ग जतन विन खेत उजारे५३०॥

किहीं गहीं जानगे मुसाफिर कल्ले॥ इन्हां मुसाफरांदे दूर ठिकाने खरच न बन्हदे पल्ले ॥ इन्हां मुसाफिरांदी की आशनाइ आज आये कल्ह चल्ले ॥ ५३१ ॥

बैठ रे मन सबरके हुजरें । जैसी जैसी आवे तैसी तैसी गुजरे ॥ शांत बहारी हत्थ गहलीजे धूर खुदी दी दूर करीजे तब अँधरेको सब कछु सुझरे ॥ वृथा जन्म गँवायो रे प्राणी कभू न सुमिरचो अंतर्यामी उमर तेरी ऐवें पैया उजरे ॥ शिर पर मन्न लई सब रजाईं हरदम आखी साई सबही मुशक्कतां पावेगा मुजरे ॥ जे मन जांदा मोड ल्यावें तांरजादाशाह कहावे अपना मरम तू आपही बुझ रे ॥ ५३२ ॥

राग बड़हंस ।

अरी अरी एरी माई डरदी तेरीयांनकी बांदके लों रब्बा आल्ह छिपके में खलोनीहां ॥ मैली टोपी साबुन थोडा मल मल धोदिय पीया तेरा जोड़ा दागां दा कोई ओडक नाहीं नालों धोदीयां नाले में रौनीहां ॥ दुःखांसूला ने कीता एका नाकोई साहरा नाकोई पैका दर तेरे ते पई तड़फदी सुनले हाल नमानीदा शाहहुसैन खडा तिन गाजे काल नगारा तेरे शिरपर बाजे चार दिहाडे गोरीं बासा आखर कूच व पारीदा ॥ ५३३ ॥

राग प्रभाती।

रहुवे बीबी रहुवे अड़या बोलनदी नहीं जावे अडया ॥ जे शिर कट्ट लवे धड नालों पाछे कदम न देवीं हालों तदभी कुछभी न कहुबे अडया ॥ जे तैं हक दा राह पछाता दमना मारीं रहीं चुपाता गरदन केद्दु ना बहु वे अडया ॥ गोर न मानी दियां छमकां केहीयां हूं हवा बिच रह गैयां मैयां कहिंदा शाहहुसैन वे अडया ॥ ९३४ ॥

राग जंगला।

हँसके गुजार दम साईं नाल लावीं नेह देवीं तेहँढावीं खावीं कित कारण संचना ॥ जोडे सीवथेरे दम आये भी न किसे कम लखांते हजारां बालेनंगी पैरी चल्लना ॥ सीधे मारग पाउँराख चुभे नहीं कंटाकारव विरेमारग पाँउ न धरिये होवे अंग भंगना ॥ शाहबादशाह झूरे किसेदेन न कम पूरे दुल्हैदी बलाय झूरे आखिर मर बंजना ॥ ९३५ ॥

लाज मूल न आइया नाम धरायो फकीर ॥ रातीं रातीं बदियां करें दादिन नूँसदावें पीर ॥ अपना भार चाय न सकदा लोकां बंधावें धीर ॥ कुड़म कुटंब दी फाही फस्या गल बिच्च पालाइया लीर ॥ दर गह लखा मंगीये हुसैना रोवेंगा नीरोनीर ॥ ९३६॥

राग धनाश्री।

मेरी आंख दिया हो लाज मूलन आइया यार ॥ मेरी मेरी रावण कर गये शाह सिकंदर दारा ॥ बाजीगर दी बाजी वागूँ रच्या कूड पसारा ॥ मेरी मेरी कौरो कर गये दुर्योधनके भाइ ॥ सोलां योजन छत्र झुलत सी देही गिर्झन खाई ॥ मेरे पुत्र मेरी यां धीयां मेरा कुटुम्ब मेरे भाई ॥ जिन्हां दी खातर पाप कमावें तिन्हा ठौर न काई ॥ यह दुनिया है चार दिहाडे नाकर मन दा भाणा ॥ कहे हुसैन फकीर सांई दा नंगी पैरी जाणा ॥ ९३७ ॥

राग भैरवी ।

माटी खुदी करेंदी यार ॥ माटी जोडा माटी घोडा माटी दा असवार ॥ माटी माटी नूं मारन लागी माटी दे हथियार ॥ जिस माटी पर बहुती माटी तिम माटी हंकार ॥ माटी बाग बगीचा माटी माटी दी गुलजार ॥ माटी माटी नूँ देखन आई माटी दी बाहर ॥ हंस खेल फिर माटी होई पौंदी पांव पसार ॥ बुल्लाशाह बुझारत बुज्झी लाह सिरों भों मार ॥ ९३८ ॥

गजल ।

जिन प्रेम रम चाख्या नहीं अमृत पिया तो क्या हुआ । जिन इश्कमें शिर ना दिया युग युग जिया तो क्या हुआ ॥ मशहूर हुआ पंथमें साबित न कीया आपको । आलिम ओर फाजिल बना दाना हुआ तो क्या हुआ ॥ देखी गुलिस्तां बोस्तां मतलब न पाया शेखका । सारी किताबां याद कर हाफिज हुआ तो क्या हुआ ॥ जबलग प्याला प्रेमका पीकरके मतवाला नहीं । राग तार मंडल बाजते जाहिर सुना तो क्या हुआ ॥ जोगी व जंगम वेषकर कपडे रँगाकर पहिनते । वाकिफ नहीं उस हालके कपडे रँगे तो क्या हुआ ॥ दिलमें दरद नहिं दिया को बैठा मुशाइख होयके ॥ दिलका हरट फिरता नहीं तसबी फिरी तो क्या हुआ ॥ औरां नसीहत तू करे आप अमल करता नहीं । दिलका कुफर टूटा नहीं हाजी हुआ तो क्या हुआ ॥ जब इश्कके दरियावमें गर्काब तू होता नहीं । गंगा यमुन गोदावरी न्हाता फिरा तो क्या हुआ ॥ बलीराम पुकारते हैं यही पीपी जो करते जी दिया। मतलब हासिल ना हुआ रो रो मुआ तो क्या हुआ ॥ ९३९॥

राग जंगला ।

क्यों बे बीबा मान भरया रमता योगी गुल चमन दुनियाके पर इक लहिजे का मुकाम है । करता है मेरी मेरी

रे यां तेरा कौन है ॥ टुक दम का है बसेरा दुनिया आवागौन है ॥ भाई बंधु बिरादरी फरजंद यार मन। सब मुखके हैं समीपी रे तूं समझ यार मन ॥ रावण सरीखे होगये जिनके गाढे निशान। इक पलमें मार डारे तेग क्या चले अभिमान ॥ अब कहत है कबीर रे तूं समझ यार मन। इक राम नाम सांचा है और झूँठा सभ जतन ॥ ६४० ॥

राम रंग लागा हरी रंग लागा। मेरे मनका संसा भागा ॥ जब मैं होतीथी अहिल दिवानी तब पिया मुखों न बोले। जब बंदी भई खाक बराबर साहब अंतर खोले ॥ साहब बोले तो अंतर खोले सेजाडियां सुख दीजे। रोम रोम प्यारे रंग रत्तीयां प्रेम प्याला पीके। साँचे मनते साहब नेडे झूँठे मन ते भागा। हरि जन हरिजीको ऐसे मिलत जैसे कंचन संग सुहागा ॥ लोक लाज कुलकी मरयादा तोड दियो जैसे धागा। कहत कबीर सुनो भाइ साधो भाग हमारा जागा ॥ ६४१ ॥

राग काफी।

ना जानूं मेरा राम कैसा है। मुल्ला होके बाग जो देवे क्या तेरा साहिब बहरा है ॥ कीडीके पग नेवर बाजे सोभी साहिब सुनता है। माला पहरी तिलक लगाया लंबियां जटां बढाता है ॥ अंतर तेरे कुफुर कटारी यूं नहिं साहिब मिलता है। कौडी कौडी माया जोड़ी जोड़ जमीं पर धरता है ॥ चलनेकी जब त्यारी होई हाथ पसारे चलता है। हीरा होवे परख दिखायां कौडी परखन कैसा है। कहत कबीर सुनो भाइ साधो हरि जैसे को तैसा है ॥ ६४२ ॥

राग सोरठ।

उपजे निपजे निपज समाई। नयनन देख चल्यो जग जाई ॥ लाजन मरो कहो घर मेरा। अंतकी बार नहीं कछु तेरा ॥

अनेक जतन कर काया पाली । मरतीबेर अगिन सँग जाली ॥ चोआ चंदन मरदन अंगा । सो तनु जलै काठके संगा ॥ कहत कबीर सुनो रे गुनिया । विनशेगो रूप देखेगी दुनिया ॥ ५४३ ॥

राग होरी ।

तन मन रंग बनाय पिया सँग खेलिये होरी । तार बनाऊँ जियाकी तनका करूंजी तँबूरा ॥ खेलूं अपने श्याम सों सब कारज पूरा । शीशी भरी गुलाबकी हत्थ लेहों पिचकारी । छिरकूं अपने श्याम पै सब देखनहारी ॥ चोआ चंदन मेलके हत्थ लीयोजी अबीर।सब संतन मिल खेल्यो संग दास कबीरा ॥५४४॥

राग धनाश्री ।

प्रीतम जान लेहु मन माहीं । अपने सुखमें सब जग बाँध्यो कोउ काहूको नाहीं ॥ सुखमें आय सभी मिल बैठत रहत चहूँ दिशि घेरे । विपति परी सबही संग छाँडत कोउ न आवत नेरे ॥ घरकी नारि बहुत हित जासों सदा रहत सँग लागी । जबहीं हंस तजी यह काया प्रेत प्रेत कर भागी ॥ या विधिको ब्यौहार बन्योहै जासों नेह लगायो । अन्तकाल नानक विन हरिजी कोऊ काम न आयो ॥ ५४५ ॥

राग सोरठ ।

मन रे प्रभुकी शरण विचारो । जिहि सुमिरत गणिका सी उधरी ताको यश उर धारो ॥ अटल भयो ध्रुव जाके सुमिरन अरु निर्भय पद पाया ॥ दुख हरता या विधि को स्वामी तैं काहे बिसराया ॥ जबहीं शरण गही किरपानिधि गजहु ग्राह ते छूटा ॥ महिमा नाम कहां लग वरणों राम कहत बंधन तिहि टूटा ॥ अजामील पापी जग जाने निमिष माहिं निस्तारा ॥ नानक कहत चेत चिंतमणि तैं भी उतर सपारा ॥ ५४६ ॥

या जग मीत न देख्यो कोई ॥ सकल जगत अपने सुख लाग्यो दुखमें संग न होई । दारा मीत पूत संबंधी सगरे धन सों लागे॥जबहीं निरधन देख्यो नरको सङ्ग छांडि सब भागे ॥कहा कहूँ या मन बौरेको इनसों नेह लगाया॥दीनानाथ सकल भय भञ्जन यश ताको बिसरगया॥श्वान पूँछ ज्यों भयो न सूधो बहुत जतन में कीनो॥नानक लाज बिरदकी राखो नाम तिहारो लीनो॥५४७॥

राग बरवा ।

हरि नाम लाहा लेत रे तेरो जन्म बीत्यो जात ॥ जैसे वृक्ष पक्षी आन बैठे उठ चले परभात ॥गयो श्वाँस न बहुडियो तेरी पलक लखियो न जात॥जुएँ जुवाँरी धन हर्‌यो मन खेलने दे चाउ॥खेलकर पछतायगा रे तू हार घर क्यों जात ॥ बनजारेने बैल जैसे टांडा लदियो जाय ॥ लाभ कारन आयो प्रानी चल्यो मूल गँवाय ॥ आछे दिन पाछे गये तें हरि सों कियो न हेत ॥ अब पछतावा क्या करे जब चिडियां चुग गईं खेत॥काची काया काँच की रे समझ देखो लोय ॥ सगुरे को समझ परत है निगुरा जावे खोय ॥ जबलग तेल दीवेमें बाती सूझत है सब कोय ॥ जल गया तेल निकस गई बाती लेचल लेचल होय ॥ रल मिल सखी सागर चली शिर फूट गागर परी ॥ पछतायगी पनिहार जिउँ कर रीते घर क्यों जात॥फटी सुरनाही फूक निकसी जाय सुनी अब येहि॥कहे नानक दास प्रभुका तेरी अन्त हो जाऊ खेदि॥५४८॥

राग परज ।

मन पछितैहै औसर बीते ॥ दुर्लभ देह पाय हरि पद भज कर्म वचन मन हीते ॥ सहसबाहु दशवदन आदि नृप बचे न काल बलीते ॥हम हम:कर धन धाम सँवारे अंत चले उठि रीते॥ सुत बनितादि जान स्वारथरत ना कर नेह इन्हीं ते॥अन्तौ तोहिं तजेंगे पामर तू न तजै अबहीं ते ॥ अब नाथहिं अनुराग जाग

जड त्याग दुराशा जीते । बुझै न काम अगिनि तुलसी जिमि विषय भोग बहु घीते ॥ ५४९ ॥

राग भैरवी ।

बार बार समझाय रहो मैं मानले रे मन मेरी कहीको ॥ दुख सुख सो बीती सो बीती याद न कर बरबाद बहीको ॥ एक ब्रह्म पूरण सब जगमें छोड कपटकी गांठ गहीको ॥ जानकी दास सुमिरु श्रीरघुवर गई सो गई अब राख रहीको ॥ ५५० ॥

राग कालिंगडा ।

क्या देख दिवाना हुआ रे॥माया बनी सारकी मूली नारि नरकका कूआँरे ॥ हाड़ चाम नाड़ी को पिंजर तामें मनुआं सूआ रे । भाई बन्धु कुटुम्ब घनेरा तिनमें पच पच मूआ रे ॥ कहत कबीर सुनो भाइ साधो हार चल्यो जग जूआँ रे॥ ५५१ ॥

राग जंगला ।

पीले रे अवधू हो मतवारा प्याला प्रेम हरी रसका रे ॥ पाप पुण्य दोउ भुगतन आये कौन तेरा है तू किसका रे ॥ जो दम जीवे हरि के गुण गाले धन यौवन स्वपना निशिका रे ॥ बाल अवस्था खेल गँवाई तरुण भयो नारी वशका रे ॥वृद्ध भयो कफ वाईने घेरचो खाट पड़ा नहिं जाय मसका रे ॥ नाभिकमलमें है कस्तूरी कैसे भरम मिटै पशुका रे ॥ बिन सतगुरु ऐसे दुख पावे जैसे मृगा फिरै बनका रे ॥ लाख चुरासी उबरचो चाहे छोड कामिनीका चसका रे॥प्रेम मगन चरणदास कहत है नखशिख रूप भरचो विसका रे ॥ ५५२ ॥

राग कान्हरा ।

सुमिरन कर श्रीरामनाम दिन नीके बीते जातेहैं ॥ तज विषय-भोग सब और काम तेरे संग न चलसी एक दाम जो देते हैं सो

पातेहैं ॥ कौन तुम्हारा कुटुंब परिवारा किसके हो यां कौन तुम्हारा किसके बल हरिनाम बिसारा सब जीते जीके नातेहैं॥लाख चुरासी भ्रमके आया बडे भाग्य मानुष तनु पाया तापर भी नहिं करी कमाई फिर पीछे पछतातेहैं॥जो तू लागे विषय विलासा मूरख फँसे मौनकी फाँसा क्या देखे श्वाँसनकी आसा गये फर नहिं आतेहैं ॥९९३॥

राग तिलंग ।

यह जग दर्शन मेला है ॥ जे तू आया है ईहां पे कछु देख भाल मिल जुल चल फिर हंस बोल बतादे लेखा भी किस कारन ते सबको इक ठौर इकेला है ॥ दिल भरके देख सकुच मत रे जिस जागे जो जो माया है ईहां तेरी जिनस जमा है और कोई नहीं पराया है ॥ पर इतना कहना मान मेरा जो करना है सो जलदी कर ॥ टुक देर तोहिं कोइ दम की है और ज्यादा नहीं झमेलाहै ॥ इस मंदर बीच निरख तूँ क्या रंग बरंगी मूरतहै ॥ हिरदेमे तनक परख तू इस मूरतमें क्या सूरत है ॥ धनि उस कारीगरको कहिये जिन अपने हाथ बनाई है ॥ गुन ज्ञान जोबन छबिरूप रंगमें एकही एक नवेलाहै ॥ यह जो तू देखे आपसमें इहां एकसे एकका है नाता ॥ कोई बाप बना कोई बेटा कोई चाचा भतीजा कहलाता ॥ कोई मीयां आपको जाने है कोई दास आपको मानेहै॥ कोई पीर मुरीद कहाता है कोई गुरू कोई चेला है ॥ अबलों तब ईहां है सबको सैरे हैं बाग बहारें हैं ॥ मन आनंद और चैनें हैं करते हैं लहरे मारे हैं ॥ पर सुखके समें यह है सगरे यह देखन हारे हैं ॥ आजही के कल आप आप को चल जायगा एक इकेला है ॥ जिस दम यह अपना अपना है ईहां से रस्ता गह जावेंगे ॥ यह दोस्ती निस्बत नाते सब इहांके इहां रह जावेंगे ॥ यह बूँदें जिस दरिया की हैं सब मौजहीसे मिल जावेंगी ॥ फिर कछु टंटा है न बखेढा है झगडा है ना झमेला है ॥ ९९४ ॥

राग झिंझोटी ।

आरती सदाही होत संतन घट माहीं ॥ ब्रह्म जोत प्रगट भई विकसत दर्शाई ॥ वेदके बजंत्र बाजें ज्ञान धूप धुपन लागे समता चित छाय रही जिह्वा गुण गाई ॥ प्रेमकी जो बाती लागी सकल ब्रह्म जोत जागी अनुभवसों द्रुमन भाग इक संग मिल जाई ॥ सोहं धुन शंख पूरे भेद भर्म किये चूर इत उत सब चिद स्वरूप आत्म दर्शाई ॥ कहिहै कवि लोक दास आश्चर्य गुरु कियो प्रकाश अतिहुलास होत जहाँ जन्ममर्ण नाहीं ॥ ५५५ ॥

राग सोरठ ।

रेमन समझ ऐसी बात ॥ नदीके परबाह ज्यों सब जगत चल्यो जात ॥ सुत मात भ्रात अरु पिता वनिता बन्यो आय सँघात ॥ बसे संग सरायके परभात को उठ जात ॥ आकाश धरती पौन पानी चंद सूरज गात ॥ काल सबको खायगा मन लाय बैठो घात ॥ भजन कर गोविंदका सद्गुरु बताई बात ॥ नँदलाल प्रभुजी सुमिर रे मन उतर सौ जलजात ॥ ५५६ ॥

राग बिहाग ।

काहेको बिरागी रे जपाकर माला ॥ रामभजनको तुलसीकी माला ओढनको मृगछाला ॥ खानपानको बासी जो टुकरा रहनेको कुञ्ज तमाला ॥ धन जोबन मदमें मन भूले जम करि है बेहाला ॥ निशिदिन रट हरि नाम छिनहि छिन रहो प्रेम मतवाला ॥ कृष्णप्रिया बिन हितू न जगमें सब झूठा जंजाला ॥ ५५७ ॥

राग धनाश्री ।

केते दिन हरि सुमिरन बिन खोये ॥ परनिंदा रसनाके रससे अपने करम बिगोये ॥ तेल लगाय कियो तनु मर्दन वस्तर मल मल धोये ॥ तिलक लगाय चले बन स्वामी विषयनके सँग जोये ॥

काल बली ते सब जग कांप्यो ब्रह्मादिक मुनि रोये ॥ सूर अधमकी कौन गती है उदर भरे भर सोये ॥ ५५८ ॥

सब दिन गये विषयके हेत ॥ तीनों पन ऐसेही बीते केश भये शिर श्वेत ॥ रूंधी श्वांस मुख बैन न आवत चन्द्र ग्रस्यो जिमि केत ॥ तजि गङ्गोदक पियत कूप जल हरि तजि पूजत प्रेत ॥ कर प्रमाद गोविंद बिसार्‍यो बूड्यो कुटुँब समेत ॥ सूरदास कछु खरच न लागत राम नाम मुख लेत ॥ ५५९ ॥

राग सारंग ।

तजो मन हरि विमुखन को सङ्ग ॥ जिनके संग कुबुद्धि उपजे परत भजन में भङ्ग ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह में निशिदिन रहत उमंग ॥ कहा भयो पय पान कराये विष नहिं तजत भुवंग ॥ कागहिं कहा कपूर खवाये श्वान न्हवाये गंग ॥ खरको कहा अरगजा लेपन मर्कट भूषण अंग ॥ पाहन पतित बान नहिं भेदत रीतो करत निषंग ॥ सूरदास खल कारी कामर चढ़त न दूजो रंग ॥ ५६० ॥

राग देश ।

राधे कृष्णा क्यों नहिं बोलो पीछे पछताओगे ॥ जाने तोको जन्म दियो ताको नाम क्यों ना लियो यह तो मानुष देही बंदे फेर नहीं पाओगे ॥ त्रिया और कुटुम्बकी खातर पच पचके कमाओगे ॥ माया तेरे संग न चाले जगमें भरम गमाओगे ॥आवेंगे वे जमके दूत पकर पकर ले जावेंगे॥मजबूत तुमसे मांगेंगे हिसाब प्यारे क्या बतलाओगे । सूर प्रभुकी शरण आओ आवागमन मिटाओगे ॥श्रीठाकुरजीको ध्यान धरले पार लगजाओगे ॥ ५६१ ॥

राग विभास ।

गायो न गोपाल मन लायके निवारि लाज पायो न प्रसाद साधु मण्डलीमें जायके ॥ धायो न धमक वृन्दाविपिनकी कुञ्जन-

में रह्यो न शरण जाय विट्ठलेश रायके ॥ नाथ जू न देख छक्यो छिन हूँ छबीली छबि सिंहपौरि पर्यो नहिं शीशहूँ नवायके । कहै हरिदास तोहिं लाजहू न आवै नेक जनम गँवायो ना कमायो कछु आयके ॥ ५६२ ॥

राग जैजैवन्ती ।

रचिके सँवारे नाहिं अंग अंग श्यामा श्याम एरी धिक्कार और नाना कर्म कीने पै ॥ पाँयन को धोय निज करते न पान कियो आली अँगार परे शीतलपय पीने पै ॥ विचरे ना वृन्दावन कुंजन लतानतरे गाज गिरे अन्य फुलवारी सुख लीने पै॥ललितकिशोरी बीते बरष अनेक दृग देखे नाहिं प्राण प्यारे छार ऐसे जीने पै॥५६३॥

राग सिंधु काफी ।

रटत रटत राधा मनमोहन रसना ना फलका झलकाई ॥ लिखत लिखत लीला रस द्वन्द्वज अँगुरिन पोर जो ना घिस जाई॥ ललित किशोरी धिग यह देही ऐसो जीवन जन्म वृथाई ॥ युगल बिहारीको मग जोवत जो न भई नयनमें झाई ॥ ५६४ ॥

राग देश ।

ऐसी चतुरता पर छार ॥ करत वाद विवाद जित तित हित न नन्दकुमार ॥ रूप कुलगुण कृप मण्डित बढ्यो गर्व अपार॥ और हम सम नाहिं कोऊ दूसरो संसार ॥ मात पित सुत भ्रात मरगये औ सकल परिवार ॥ जानत हैं हमहूँ मरेंगे तउ न तजत विकार ॥ लेतनाहिं प्रमाद मादर करत लोकाचार ॥ नारि सुखपै जाय पीवत अधरलिपटी लार ॥ सन्तजनसों द्रोह मानत सुहृद साहू सार ॥ काम क्रोध और लोभ व्याप्यो मोह मदहंकार ॥ सूर विमुखन परि हरहु सतसंग वारंवार ॥ ५६५ ॥

राग कालिंगडा।

मूरख छांड़ वृथा अभिमान ॥ औसर बीत चल्यो है तेरो दो दिनको महिमान॥भूप अनेक भये पृथिवीपर रूप तेज बलवान॥ कौन बच्यो या काल व्याल ते मिट गये नाम निशान ॥ धवल धाम धन गज रथ सेना नारी चंद्रसमान ॥ अंत समय सबहीको तज कर जाय बसे शमशान ॥ तज सतसंग भ्रमत विषयनमें जाविधि मर्कट श्वान ॥ छिन भर बैठि न सुमिरन कीनो जासों होय कल्यान ॥ रे मन मूढ अंत जनि भटके मेरो कह्यो अब मान॥ नारायण ब्रजराज कुँवरसों बेगहिं कर पहिचान ॥ ५६६ ॥

राग कालिंगडा।

सब दिन होत न एक समान ॥ इक दिन राजा हरीचंद गृह संपति मेरु समान॥ इक दिन जाय श्वपच गृह सेवत अंबर हरत मशान ॥ इक दिन दूलह बनत बराती चहुँ दिशि गडत निशान॥ इक दिन डेरा होत जंगलमें कर सूधे पग तान॥ इक दिन सीता रुदन करत है महा विपिन उद्यान ॥ इक दिन रामचंद्र मिल दोऊ विचरत पुष्प विमान ॥ इक दिन राजा राज युधिष्ठिर अनुचर श्रीभगवान ॥ इक दिन द्रौपदी नग्न होत है चीर दुशासन तान ॥ प्रगटत है पूरबकी करनी तज मन शोच अजान॥सूरदास गुण कहँ लग वरणों विधिके अंक प्रमान ॥ ५६७ ॥

भज मन श्रीराधा गोपाल ॥ गोल कपोल अधर बिंबाफल लोचन परम विशाल ॥ शुक नासा भौं दूज चंद सम अति सुंदर है भाल ॥ मुकुट चंद्रिका शीश लसत है घुँघरारे बर बाल॥रतनजडित कुंडल कर कंकण गल मोतियनकी माल ॥ पग नूपुर मणिखचित बजत जब चलत हंस गति चाल ॥ गौर श्याम तनु

बसन अमोलक कर मेहँदी सों लाल ॥ मृदु मुसक्यान मनोहर चितवन बोलन अधिक रसाल ॥ कुंजभवनमें बैठ दोउ जन गावत अद्भुत ख्याल ॥ नारायण या छबिको निरखत पुनि पुनि होत निहाल ॥ ५६८ ॥

जै जै युगल किशोर बिहारी ॥ जै निकुंजमें अविचल जोरी जै मनमोहन प्रीतम प्यारी ॥ जै मुखचंद्र चकोर परस्पर जै छबि सिन्धुरूप मनुहारी ॥ जै ब्रज जीवन रसिक शिरोमणि महिमा अमित अपार तिहारी ॥ जै भक्तनवश रहत निरंतर नाना चरित करत सुखकारी ॥ भक्तराम निशिदिन यह याचत चरन कमल राखों उरधारी ॥ ५७९ ॥

यह रस रीत प्रिया प्रीतमकी दिव्यदृष्टि जल जैसे री ॥ विषयी ज्ञानी भक्त उपासक प्राप्त सबनको तैसे री ॥ कदली खंभ पपीहा सीपी स्वाति बूँद जल जैसे री ॥ भगवन् कछू विषमता नाहीं भूमि भाग फल तैसे री ॥ ५७० ॥

संतनको यह परम धन, सब ग्रंथन को सार ॥ भक्तन को सर्वस्व यह, रसिकन प्राण अधार ॥ सादर जो जन याहिको, पढैं नित्त कर नेम ॥ निश्चयते जन पावहीं, हरि चरणन दृढ प्रेम ॥ हरि चरणन दृढ प्रेम जिहि, धन्य धन्य ते धन्य ॥ भक्तराम को देहि वर, सकल होय परसन्य ॥ पढत सुनत याके भयो, जो मन अधिक हुलास ॥ मेरीहू सुध लीजियो, जान आपनो दास ॥ जै वृंदावनचंद्रकी, जैजैजै सुखरास ॥ निज चरणनमें राखिये, एक तुम्हारी आस ॥ ५७१ ॥

इति रागरत्नाकर दूसरा भाग समाप्त ।

॥ श्रीः ॥

अथ हियहुलासप्रारम्भः ।

दोहा ।

प्रथमहिं ताको सुमिरिये, जिन दीन्हों गुण ज्ञान ॥
ज्ञानी गुण गावैं सदा, ध्यानी धरैं जु ध्यान ॥ १ ॥
अंबर थाप्यो थंभ विन, धरणी अधर धराय ॥
मनुषरूप ह्वै अवतर्‍यो, देखत कलिको भाय ॥ २ ॥
वा बिन तीनों लोकमें, दूजा नाहीं कोय ॥
मनमें निज करि देखिये, होनी होय सु होय ॥ ३ ॥
पुनि कछु वरणों रीतिरस, रसहै जनको जीव ॥
रसना रसको यस कहै, सुनि सुख उपजै हीव ॥ ४ ॥
हिय हुलास या ग्रंथको, रच्यो वाम विचार ॥
यामें सगरे रागके, सबै रूप शृंगार ॥ ५ ॥
आदि नाद अनहद भयो, ताते उपज्यो वेद ॥
पुनि पायो वा वेदते, सकल सृष्टिको भेद ॥ ६ ॥
प्राण स्वरे षट्राग सुनि, तब उपज्यो वैराग ॥
बारे तरुने वृद्धको, ताते भावत राग ॥ ७ ॥
जगको धीरज राग है, राग संगकी खान ॥
मनमंजन इह राग है, राग प्रेमके प्रान ॥ ८ ॥
राग अभूषण रूपको, रूप रागको भोग ॥
याहीते सब कहत हैं, रागरंग संयोग ॥ ९ ॥
राग हरै सब रोगको, राग चहै रसभोग ॥
विरही बूझै रागको, उपजै विरह वियोग ॥ १० ॥

अथ षट्राग वर्णनम् ।

दोहा- राग प्रथम भैरों कह्यो, मालकोस पुनि जानि ॥
हिंडोलराग तीजो कहत, दीपकराग बखानि ॥ ११ ॥
श्रीराग कवि कहतहैं, मेघराग पुनि सार ॥
षट्रागनके नाम ये, कहैं भेद विस्तार ॥ १२ ॥

अथ रागनकी रागिनी वर्णन ।

दोहा–भैरोंकी धुनि भैरवी, बंगाली वैरारि ॥
मधु:माधव अरु सिंधवी, पांचौं विरहिनि नारि॥१३॥
टोडी गौरी गुनकली, खंमायत पहँचानि ॥
और कुँकविको कहत हैं, मालकोसकी जानि ॥ १४॥
रामकली पटमंजरी, और कहैं देवसाखि ॥
ए नारी हिंडोलकी, ललित बिलावल राखि ॥ १५ ॥
देशी नट अरु कान्हरो, केदारो कामोद ॥
दीपककी प्यारी सबै, महाप्रेम परमोद ॥ १६ ॥
धनाशरी आसावरी, मारू बहुरि वसंत ॥
श्रीरागकी रागिनी, मालसिरी हैं अन्त ॥ १७ ॥
भोपाली अरु गूजरी, देशकार मल्लार ॥
बंकवियोगनिकामिनी, मेघरागकी नार ॥ १८ ॥

अथ षट्रागनके गुण वर्णन ।

भैरोंसुर सुरता गहै, कोल्हू चलें जु धाय ॥
मालकोस जब जानिये, पाहन पिघलि बहाय॥१९॥
चलैं हिंडोलो आपते, सुनत राग हिंडोल ॥
बरसै जलघन धार अति, मेघरागके बोल ॥ २० ॥

श्रीरागके सुर सुने, सूखो वृक्ष हगाय ॥
दीपक दीयो बरि उठै, जो कोउ जानै गाय ॥ २१ ॥

अथ रागका समय वर्णन ।

दोहा–पिछले पहरे निशि ममैं, भैरों राग बखान ॥
मालकोस तब गाइये, जब सब निकमै भान ॥ २२ ॥
एक पहर जब दिन चढै, करै राग हिंडोल ॥
ठीक दुपहरीके समय, दीपकके सुरबोल ॥ २३ ॥
श्रीराग चौथे पहर, जौलौं दिन अथवाय ॥
मेघराग जबही भलो, तबै मेह बरसाय ॥ २४ ॥
फागुनमें ए राग सब, जागत आठौं याम ॥
वसंत ऋतुमें निशि ममै, एक याम विश्राम ॥ २५ ॥
भैरों शरद कुशक शिशिर, अरु हिंडोल बसन्त ॥
दीपक ग्रीषम हेम श्री, मेघ सुपावस अंत ॥ २६ ॥

अथ बाजनके भेद वर्णन ।

दोहा–जगमें सब सुरता कहैं, बाजे साढ़े तीन ॥
खाल तार अरु फूंक पुनि, अरधताल सुरहीन ॥ २७ ॥
खाल नगारे ढोल डफ, और पखावज जानि ॥
तार तँबूरा बीनहै, बहुरि रबाब बखानि ॥ २८ ॥
फूँक नफीरी बाँसुरी, सुरनाई करनाय ॥
ताल मँजीरा झाँझ सब, बाजे दिये बताय ॥ २९ ॥
आधो बाजो कहत हैं, कठतारी सुरहीन ॥
भेद कहे बाजेनके, गुणिजन जे परवीन ॥ ३० ॥

अथ आलापकरनेकी युक्ति ।

दोहा–बैठे आसन ऊटके, तो शुध होय अलाप ॥
चलते टेढ़े सुर भरे, जानो महाकलाप ॥ ३१ ॥

अथ स्वरनिमित्त सरस्वती चूर्ण ।

दोहा-शाखाहूली मुलहटी, ब्राह्मी वासा आनि ॥
हरड कूच बच बावर्ची, सेंधौ जीर जानि ॥ ३२ ॥
भंगरेह अजमोद पुनि, बहुरि शतावरि लेहु ॥
समकरि पीसि छानि करि, प्रात सु मुखमें देहु ॥ ३३ ॥
एक हथेलीभरि सदा, साधै दिन चालीस ॥
सुर[1] सुन्दर हो बुद्धि बहु, विधिविद्या जगदीश ॥ ३४ ॥

इति हियहुलास सम्पूर्ण ।

अथ रागमाला प्रारम्भः ।

भैरों रागको स्वरूप वर्णन ।

दोहा-भैरों शिव छबि शिर जटा, श्वेत वसन त्रय नैन ॥
मुण्डनकी माला गरे, सिंहरूप सुखदैन ॥ ३५ ॥

सवैया ।

शिवमूरति भैरों को भावबन्यो त्रयनैन समुण्ड कि माल गरे ॥ पटश्वेत सबै तनुमें पहिरे हिरदे भगवानको ध्यान धरे ॥ तिरसूल बिराजत है करमें सब भामिनिकी मति लेत हरे ॥ मुख छार लगी द्युति दूनी भई चित चाहनमें छबि जात छरे ॥ ३६ ॥

अथ भैरोंकी रागनी भैरवीको स्वरूप ।

दोहा-शिव पूजत कैलासपर, दोउ करनमें ताल ॥
श्वेत चीर अँगिया[2] अरुण, रूप भैरवी बाल ॥ ३७ ॥

अथ बंगाली रागिनीको स्वरूप ।

दोहा-भस्मपिटारी कर गहे, हाथ लिये तिरसूल ॥
बंगाली व्याकुल भई, गई सबै सुधिभूल ॥ ३८ ॥

---

१ सुर ॥ ७ ॥ २ सुर ॥ ७ ॥

अथ वैरारी रागिनी स्वरूप ।

दोहा—कदम पुष्प कानन धरे, करकंचन शृंगार ॥
शीशकेश मोहत छुटे, श्वेतवसन वैराग ॥ ३९ ॥

अथ मधुमाधवी स्वरूप ।

दोहा—कंचन तनु लोचन कमल, नागरि महा अनूप ॥
प्रिय पैंठही हँसत है, मधुमाधवी स्वरूप ॥ ४० ॥

अथ सिंधवी रागिनी स्वरूप ।

दोहा—कानफूलदुपहारिया, पहरे वस्तरलाल ॥
क्रोधवन्त तिरशूलकर, रूपसिंधवी बाल ॥ ४१ ॥

अथ मालकोस रागको स्वरूप ।

दोहा—मालकोस नीले वसन, श्वेत छरी लिये हाथ ॥
मुनियनकी माला गरे, सकल सखी हैं साथ ॥ ४२ ॥

सवैया ।

कौसकको उनमान भलो तनु गौर विराजत है पट नीले ॥
माल गरे कर श्वेत छरी रस प्रेम छक्यो छबि छैल छबीले ॥
कामिनिके मनमोहत है सबके मन भावत रूप रसीले ॥
भोर भये उठि बैठ्यो ही भावत नागर नायक रंग रंगीले ॥४३॥

अथ मालकोसकी रागिनी टोडीको स्वरूप ।

दोहा—टोडी करवंणी गहे, गावत पियके हेत ॥
चंचल छबि मृग मोहनी, पहरे बस्तर श्वेत ॥ ४४ ॥

गौरी रागिनीको स्वरूप ।

दोहा—गोरी छबि अति साँवरी, अध रूप धारि कान ॥
तृषावंत नित कामकी, गावत मीठी तान ॥ ४५ ॥

---

३ सुर ॥ ७ ॥ ४ सुर ॥ ७ ॥ ५ सुर ॥ ७ ॥ ६ सुर ॥ ५ ॥ ७ सुर ॥ ७ ॥

अथ गुनकली रागिनीको स्वरूप ।

दोहा—छुटे केश शिर गुनकली, बैठी पियके पास ॥
नीची ग्रीवा करि रही, अतिही चित्त उदास ॥ ४६ ॥

खंभायत रागिनीको स्वरूप ।

दोहा—खंभायत गोरे वदन, गावत कोकिल बैन ॥
अति आतुर चातुर खरी, कामवती दिनरैन ॥ ४७ ॥

अथ कँकुवि रागिनी स्वरूप ।

दोहा—कँकुवि नायिका निशिसमै, जागी पियके संग ॥
रति माने के चहन अति, अगअंग भे रंग ॥ ४८ ॥

अथ हिंडोल राग स्वरूप ।

दोहा—पीत वसन हिंडोलके, है जु हिंडोले माहिं ।
सखी झुलावें चावसों, गाय गाय मुसकाहिं ॥ ४९ ॥

सवैया ।

कीन्हे बनाव महाछवि सुंदर भावते बैठ्यो हिंडोलहिं डोलै ॥
झोल झुलावत औरगनहू सब गावत हैं सखियाँ मुख खोलै ॥
गोरे जो गात दिपात भरी द्युति दामिनिसी मानौं पीत पटोलै ॥
केलि करै अबला अलबेली अलोल सबै रस काम किलोलै ॥ ५० ॥

अथ हिंडोल रागकी रागिनी रामकलीको स्वरूप ।

दोहा—रामकली नीले वसन, कंचनसी सब देह ॥
प्रिय वाणी गावत उठी, पियके परम सनेह ॥ ५१ ॥

अथ पटमंजरी रागिनी स्वरूप ।

दोहा—विरहभरी पटमंजरी, मनमैली तनुछीन ॥
सखी सीख अति देतहै, भई प्रेम आधीन ॥ ५२ ॥

देवसाखि रागिनी स्वरूप ।

दोहा—पियके करपर कर धरे, अति व्याकुल मन काम ॥
तनु दुर्बल देवसाखि है, महाविरहनी नाम ॥ ५३ ॥

ललित रागिनी स्वरूप ।

दोहा—ललित गरे माला पुहुप, सुन्दर तरुणी जानि ॥
गोरी छबि बस्तर अरुण, वदन मदनकी खानि ॥ ५४ ॥

बिलावल रागिनीको स्वरूप ।

दोहा—कामदेवको ध्यान धरि, पटते पटसंगीत ॥
करत शृंगार बिलावली, नीले बस्तर प्रीत ॥ ५५ ॥

अथ दीपक रागका स्वरूप ।

दोहा—दीपक गजकी पीठपर, बैठ्यो बारंलाल ॥
मुक्तमाल पहरे गरे, चहुँओर रमबाल ॥ ५६ ॥

सवैया ।

दीपकको परताप बडो चढो बैठ्यो गयंदकी पीठि विराजै ॥ अंबर रातो शरीर सबै मुकतानकी माल गरे छबिछाजै ॥ संग सखी सब सोहत हैं तिनमाहिं जो आय गयंदसो गाजे ॥ साँवरो रूप अनूप महाद्युति देखत दुःख दिगंतर भाजे ॥ ५७ ॥

अथ दीपक रागकी रागनी देशीको स्वरूप ।

दोहा—देशीके बस्तर हरे, काम सताई नार ॥
पतिको टेर जगावती, मिस करि बारंबार ॥ ५८ ॥

नटरागिनीको स्वरूप ।

दोहा—अरुन वरन सगरे वसन, नटवासी नरनारि ॥
ग्रीवा पकरे करनसों, पिय तनु रही निहारि ॥ ५९ ॥

अथ रागिनी कान्हरो स्वरूप ।

दोहा—शीशपत्र गजदंतको, कर नँगी तरवारि ॥
मोर कंठके वरन है, रूप कान्हरो नारि ॥ ६० ॥

अथ रागिनी केदारो स्वरूप ।

दोहा—शीश जटा सब तनु लटा, गरे जनेऊ नाग ॥
केदारो इह रूप है, धरे ध्यान वैराग ॥ ६१ ॥

अथ कामोद रागिनीको स्वरूप ।

दोहा—कामवंत कामोदनी, पीत वसन वनदास ॥
चहूँओर पियको तकत, अतिही चित्त उदास ॥ ६२ ॥

अथ श्रीरागको स्वरूप ।

दोहा—श्रीय रागके कर कमल, पुहुप रूप पट लाल ॥
बरस अठारहुको तरुण, गावत कंठरमाल ॥ ६३ ॥

श्रीरागकी—सवैया ।

वर्ष अठारहको तरुनो मुख देखतहीं सेवक मन भावै ॥
बाम सबै वशकी अपने गुण गायकें भावते भेद बतावै ॥
रातो जो बागो विराजत है कर वारिज फूल लिये मुसकावै ॥
पुष्पके रूप स्वरूप बन्यो सबहीमें भलो श्रीराग कहावै ॥ ६४ ॥

अथ श्रीरागकी रागिनी धनाश्रीको स्वरूप ।

दोहा—धनासरी रोवत खरी, हिरदे विरह अपार ॥
सब तनु पीरो ह्वै रह्यो, निपट विरहनी नार ॥ ६५ ॥

आसावरी रागिनी स्वरूप ।

दोहा—चन्दन टीको भाल पर, गरे नागको हार ॥
छबि अति सुन्दर साँवरी, आसावरी कुँवारि ॥ ६६ ॥

अथ मारू रागिनीको स्वरूप ।

दोहा–मारूके माला गरे, पिये प्रेम मधुमान ॥
तरुणी सुंदर सांवरी, बैठी अति अरसात ॥ ६७ ॥

वसन्त रागिनीको स्वरूप ।

दोहा–मोरपंख शिर पर धरे, वसन जु पीत वसंत ॥
कानन मौर जु अंबके, चहुँदिशि भौंर भ्रमंत ॥ ६८ ॥

मालसरी रागिनीको स्वरूप ।

दोहा–मालसरी दुर्बल वदन, सखी हाथ पर हाथ ॥
अंबतरे बैठी रहत, बिछुरे पियको साथ ॥ ६९ ॥

अथ मेघरागको स्वरूप ।

दोहा–श्याम वसन है मेघको, गहे हाथ करवारि ॥
अति आतुर चातुर खरो, गावत सुरति बिचारि ॥ ७० ॥

मेघरागस्वरूप सवैया ।

मेघ मलार महाद्युति सुन्दर इंद्रसिकी छवि आप बनो ॥
पहरे पट श्याम गहे करवारि, जु ग्रंथनमें इह भांति भनो ॥
जैयो जहां चहिये सोइ अंग सु नमिय भांतिन ठीक ठनो ॥
कामको आतुर है अतिही तियके रतिको चित चाव घनो ॥

अथ मेघरागकी रागिनी भोपालीको स्वरूप ।

दोहा–भोपाली विरहनि बड़ी, कृशगि गेरे चीर ॥
भयो विरहकी ज्वालतें, पियरो सबै शरीर ॥ ७२ ॥

अथ गूजरी रागिनीको स्वरूप ।

दोहा–विरह सताई गूजरी, रोवत छूटे केश ॥
कामदेव कानन लग्यो, इहै दियो उपदेश ॥ ७३ ॥

देशकार रागिनीको स्वरूप ।

दोहा--देशकार कञ्चनवरण, खेलत पियके सङ्ग ॥
हिय हुलाश जो कामकी, चढ्यो चौगुनो रंग ॥७४॥

अथ मलार रागिनीको स्वरूप ।

दोहा--बीन गहे गावत बहुत, गेवत है जलधार ॥
तनु दुर्बल विरहा दही, विरहिनि नारि मलार ॥ ७५ ॥

टंक रागिनीको स्वरूप ।

दोहा--सेज बिछाई कमल दल, लेटि रही मनमारि ॥
ले उसास जु सीयसे, टंक वियोगिनि नारि ॥ ७६ ॥

इति षट्राग तीस रागिनीनके स्वरूपवर्णनम् ।

अथ आमेजीराग वर्णन ।

दोहा--राग रागिनी सब कहे, जैसी जाकी रीति ॥
अब आमेजी रागको, सुनो सकल करि प्रीति ॥ ७७ ॥

छप्पय ।

देशकारको पुत्र पास दरशान गजधन ॥ मंडित मुख तंबोल तेज बल,गहर गौर तन ॥ श्वेत सरस मिलि वसन कंठ मणिमाल मनोहर ॥ कंजअक्ष शिरछत्र विजन दहुँ विदित विजै वर॥बैठ्यो कल्याण सिंहासनहिं, रतनराग संचारियो॥पंडित प्रवीन परिजनसहित, दिवस अन्त उच्चारियो ॥ ७८ ॥

दोहा ।

तिलक गौड़ कामोद ये, मिले मिश्रता मान ॥
इनके किये अलापको, जानो सुध कल्याण ॥ ७९ ॥
तिलक पर्जकामोदयुत, आलापिनमें होत ॥
कामोदक पहले कह्यो, बहुरि गौड़को सेत ॥ ८० ॥

इतने मिलि आलापसों, श्लेष सकल सरसाय ॥
सुर उचार यों समुझियो, प्रगट रूप दरशाय ॥ ८१ ॥
शंकरभरन स्वरूपहै, गौर रक्त तनुवास ॥
कमलमाल शृंगार है, सखीरूप है तास ॥ ८२ ॥
प्रथम राग केदारमें, मिलै बिलावल आनि ॥
इनको मिले अलापसों, शंकरभरनि सुजानि ॥ ८३ ॥
केदारो ईमन मिले, मिलै शुद्ध कल्यान ॥
इनके मिले अलापसों, राग हमीरह जान ॥ ८४ ॥
केदारो कल्याण सम, तनक बिलावल भास ॥
इनके किये अलापसों, ईमन होत उजास ॥ ८५ ॥
सारंग मारूके मिले, केदारो सम आनि ॥
मिश्रित करि आलापिये, इहे विहंगम जानि ॥ ८६ ॥
तीनि राग तो ये मिलैं, फेरि मलार मिलाय ॥
इनकी समतासों नहीं, सो सावंत कहाय ॥ ८७ ॥
जैतसिरी शंकरभरन, नटनारायणतुल्य ॥
इनके मिले विभागसों, राग सरस्वतीतुल्य ॥ ८८ ॥
बहुला आसावरि मिले, अरु मलारसम भाग ॥
कछुक मेलि गंधारको, षडज जानियो राग ॥ ८९ ॥
प्रथम पूरबी नाटसुध, धनाश्री समभाय ॥
समलै भाग अलापिये, भीमपलासी आय ॥ ९० ॥
रामकली पुनि गूजरी, गुनकली जु गंधार ॥
पूरविरागनिमिश्रिता, शक्तिवल्लभासार ॥ ९१ ॥
भैरवसुधि आसावरी, अरु गौरीको मानि ॥
देवगिरी संभावले, यों गंधारहि जानि ॥ ९२ ॥
विलावली वागेश्वरी, नून विलावल शुद्ध ॥

वागेश्वर सुरपूर है, रागसुहा सुदबुद्ध ॥ ९३ ॥
मिलि धनासिरी कान्हरो, संभागिनि आलाप ॥
सुर उचारसों जानियो, वागेसुरी जु छाप ॥ ९४ ॥
मूल सदेवगिरी गिनौ, नटमलार है नून ॥
करि समान आलापिये, सारँगराग सितून ॥ ९५ ॥
समै जु सारंगकी सुनौ, दिन ग्रीषमऋतु पाय ॥
द्वितिय यामते पहर लग, गुनीरूप दरशाय ॥ ९६ ॥
आसावरी अहीरिमिलि, समभागिनि उच्चार ॥
तौलकरो आलापको, सिंधुराग गुनकार ॥ ९७ ॥
भैरव पंचम गूजरी, बंगाली गंधार ॥
संभागिनि उचारसों, सोरठ सबसों सार ॥ ९८ ॥
एक अहीरी रागिनी, करनाटी समजोर ॥
राग अडानो जानिये, तान सुमिलिना थोर ॥ ९९ ॥
श्रीतिनिकर नाटकी, मंगल अष्ट प्रधान ॥
करिसमान आलापिये, जानि पूरिया तान ॥ १०० ॥
देशकारि अरु गूजरी, स्वल्प रूप आरंभ ॥
तान मिलावै युक्तिसों, राग अहीरीयंभ ॥ १ ॥
फिरैदसूकर नाटयो, समता करै समस्त ॥
छायासावतअंडहै, भूपालीपरमस्त ॥ २ ॥
जैतशिरी अरु द्रावडी, समले करो उचार ॥
श्रुतिभंगन नहिं सोभिये, धौलसिरी विस्तार ॥ ३ ॥
जैतश्री करनाटकी, केदारो कल्यान ॥
समकरि तान मिलाइये, मंगल अष्ट प्रमान ॥ ४ ॥
प्रथम शुद्ध कल्यानमें, मिलै जैतश्री आनि ॥
उभयरूप गाया लखै, जैतकल्यानहि जानि ॥ ५ ॥

मारूटोडी रागिनी, आसा मिलै समान ॥
इनहीकी संभवना, पेमपरज पहिचान ॥ ६ ॥
प्रथमपूरवी सारँगहि, जैतोशिरीको जानि ॥
ए समभाग अलापिये, देवगिरी पहिचानि ॥ ७ ॥
कामोदकषड्जारायो, समकरि करै अलाप ॥
तिलक रागको जानिये, मिटत सकल संताप ॥ ८ ॥
सिंधू अरु बडहंसको, न्यून अधिक संभाव ॥
इनके दुहूँ प्रतापतें, शिवरी रागहि गाव ॥ ९ ॥
धनाशिरी शिवरीसिरा, सम अलापको कौन ॥
कहत कुमारी रागिनी, तानतरल परवीन ॥ ११० ॥
चतुर विहारीसम मिलै, धनाशरी समजानि ॥
चैतीमारूचारिये, बडहंसहि पहिचानि ॥ ११ ॥
चतुरबिहारी रागिनी, केदारहि समभाग ॥
इनके होत मिलापसों, लंकधैन इह राग ॥ १२ ॥
नटनारायण शुद्धनट, और मलार मिलाय ॥
इनके मिले अलापसों, राग माधवी गाय ॥ १३ ॥
मधुमाधवलकधैनलै, शुद्धबिलावल आनि ॥
चौथे शंकरभरनसों, नटनारायण जानि ॥ १४ ॥
ककुभविलावलपूरवी, केदारो समभाग ॥
इनके जुरे मिलापसों, इहेदक्षनटराग ॥ १५ ॥
धौलसिरीदेवास मिलि, फेरि बिलावलि मेलि ॥
करि उचार समभागसों, जैतशरीकी केलि ॥ १६ ॥
केदारो कल्यान है, और बिलावल वाम ॥
इनके समआलापते, तीछन रागसुनाम ॥ १७ ॥

रामकली अरु गूजरी, देशकरी बगाल ॥
पंचमसमभागनिमिलै, बहुलीराग विशाल ॥ १८ ॥
सोरठ और धनासिरी, बिलाबली समकीन ॥
इनके मिश्रित गानते, जजवंति प्रवीन ॥ १९ ॥
धनाशरीटोडीमिलै, समकरि तान बिलाव ॥
रागअनूपम नामहै, तानसुरनते गाव ॥ १२० ॥
नटसंभागकल्यानकरि, मिश्रितउभैबताय ॥
न्यूनअधिकसमजानिकै, इहै शुद्धनटगाय ॥ २१ ॥
नटजोमिलहमीरसों, उहहैनाटहमीर ॥
नटकेदारोसमकर, नटकेदारहमीर ॥ २२ ॥
सारँगमेंटोडीमिलैं, मिश्रितउभैप्रमान ॥
सम अलापसों गाइये, सारंगगौड़निधान ॥ २३ ॥
प्रथमधनाश्रीपूरवी, दाऊसुरसंयोग ॥
इहधनाशरी पूरवी, गुणिजनगावोलोग ॥ २४ ॥
गौरीसारँगसमकरो, स्वल्पललितकोभास ॥
सोचैती गौरीकही, समझो बुद्धिप्रकाश ॥ २५ ॥
सारँगके सुरमों मिलै, करो गौडको ज्ञान ॥
तामें पूरो पूरबी, रागबूरिया जान ॥ २६ ॥
आमेजी ये रागहैं, कहैं गरतिजन गाय ॥
भेदराग अरु रागिनी, एसब दिये बताय ॥ १२७ ॥

राग ६ रागिनी ३० रागरागिनी ३६ ये मिलिकै आमेजी रागरागिनी ९९९ मियां तानसेन गाई संवत् १८५५ चैत्रवदि २ शुक्रवार ॥

इति श्रीरागरत्नाकर द्वितीयभागाङ्ग हियहुलासादि समाप्त ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ रागरत्नाकर।



तृतीय भाग ३.

श्लोक-नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायंति तत्र तिष्ठामि नारद ॥
सोरठा-हरिपद प्रीति न होय, बिन हरि गुण गाये सुने ।
भव ते छुटत न कोय, बिना प्रीति हरिपद भये ॥
दोहा-अपनी ओर निहारि कै, क्षमा करो अपराध ।
जिहिंतिहिंविधिहरिगाइये, कहतसकलश्रुतिसाध ॥
संतनको यह परम धन, सब ग्रंथनको सार ॥
भक्तनको सर्वस्व यह, रसिकन प्रान अधार ॥
सादर जो जन याहिको, पढैं नित्त कर नेम ।
निश्चय ते जन पावहीं, हरि चरणन दृढ प्रेम ॥
हरि चरणन दृढ़ प्रेम जिहि, धन्य धन्य ते धन्य ।
भक्तराम पर द्रवहि सब, हृदय होय परमन्य ॥
पढ़त सुनत याके कछू, जो मन होय हुलास ।
मेरी हूँ सुध लीजियो, जान आपनो दास ॥
जय वृन्दावनचंद्रकी, जय जय जय सुख रास ।
निज चरणनमें राखिये, एक तुम्हारी आस ॥

कवित्त ।

गिरिको उठाय व्रज गोपको बचाय लियो, अग्निते उबारयोपुनि बालक मँजारीको॥ गजकी अरज सुन ग्राह ते छुटाय लीनो, राख्यो

व्रत नेम धर्म पांडवकी नारीको ॥ राख्यो गज घंट तरे बालक विहंगिनको, राख्यो प्रण भारतमें भीष्म ब्रह्मचारीको ॥ त्रिविध संताप हारी निज मंत सुखकारी, मोहिं तो भरोसो भारी ऐसे गिरिधारीको ॥ १ ॥

कमला निवास निज दासनकी पूरे आस, ताके बिसवास विष भख्यो मीराबाई है ॥ केशव कमलनैन सन्तन करन चैन, सैन-हित भये भूप मंजनको नाई है ॥ इन्द्र जू को हरयो मान सुदा-माको दियो दान, भक्त जान छानि नामदेव जीकी छाई है ॥ नन्दके कन्हाई निज संतनके सुखदाई, बलदेव भाई सो हमरोहू सहाई है ॥ २ ॥

काहूके अधार सेवा वणिज व्यौपारहूको, काहूके अधार थित वित्त खेत गामको ॥ काहूके अधार तन मार भ्रात बंधुनको, काहूके अधार प्रिय मार निज नामको ॥ काहूके अधार विद्या बुद्धि बलको है, अरु काहूके अधार हाथी घोडा धन धामको ॥ मैं तो निराधार मेरी हरिहि करेंगे पार, मेरे तो अधार एक जानो हरि नामको ॥ ३ ॥

केऊ कर्म वादी केऊ अनभौ प्रवादी भये, केतनकी मति भई न्याय सांख्य मतकी ॥ केते जग दानी यम नेमको प्रमाण करैं, केते परतीत गहैं तीरथ हू व्रतकी ॥ केऊ ब्रह्मचारी केऊ योगी जटाधारी भये, वानप्रस्थ केतनको दया साँच सतकी ॥ मैं तो हूँ पतित मेरी कौन ब्यौस ह्वैहै गति, पद्मापति राखो पति मोसेहू पतितकी ॥ ४ ॥

केऊ प्रेम लक्षण भगति में विचक्षण ह्वै, नीचे भाँति सेवा कर जाने निधि ज्ञानकी ॥ केऊ तत्त्वबोध सेती आतमको शोध करैं, साधैं नित्त योग गति जानैं रोध पानकी ॥ केऊ तनु सासना-

सवासना जतन सहैं, केऊक उपासना गणेश शिव भानकी ॥ हौं तो हूँ अजान ताकी काहूसे पछान नाहिं, कोऊ कछु जानै हौं तो जानूँ नाथ जानकी ॥ ५ ॥

जैसे खग बालकको राख लियो घंटा तरे, लाक्षा गृह बीच राख्यो पांडवन साथको ॥ राख लियो परीक्षितको माताके उदर माहिं, राख्यो ब्रज ग्वाल बाल गिरि धारयो हाथको ॥ पारथके स्वारथको सारथी भये हो तुम, सखा निज जानके जितायो है भारथको॥पावक प्रजारी तहां राख्योहै मंजारी सुत, वैसी भांति राखो नाथ मोसम अनाथको ॥ ६ ॥

केऊ ध्यान धारना समाधि विषे लीनभये, मिलावैं पर्मातमामें आतमा विचारीको ॥ केते निषकाम मन अजपाको जाप जपैं, केते भजैं शंकर धतूरके अहारीको ॥ केते हैं सकाम मन्त्र यन्त्र आठों याम जपैं, केते लोभ दामते गणेश सुखकारीको ॥ तेरो ध्यान ज्ञान तेरो आसरो तिहारो मोहिं, कोई कछु ध्यावो मैं तो ध्यावों गिरिधारीको ॥ ७ ॥

लीला तो अगाध ब्रजवासिनके हेत मेती, धनाजूके खेत विन बोये उपजाय हैं ॥ भीषमको प्रण अरु द्रौपदीकी लाज राखी, अशरण शर्ण कीर्ति वेद मध्य गाई है ॥ बृड़त बचायो ब्रज कर पर गिरि धारयो, साह बन नरसी की हुण्डी सकराई है ॥ कारिये न बार अब सुनिये पुकार मेरी, मोपै ब्रजराज गजराज कीनी सो ॥८॥

दीनबंधु दयासिंधु मेटा दुख द्वंदन के, धर्म तो अनेक विध ग्रंथन-में कही है ॥ गोप मेह ते उबारे राजा बन्दि ते निकारे, भारत में पार्थ हित एते शर सही है ॥ नामदे कबीर गीध गणिका रु कीर तारे, चीर बाढो द्रौपदीको जग जश लही है ॥ बेर बेर मांझ धार मेरो दुख वार देके, एहो नाथ कृपानिधि मेरो हाथ गही है ॥ ९॥

तब तो भक्तनके सहाय काज ब्रजराज, कंसको विदारचो मति धरी नाहिं मामाकी ॥ बाल्द भरल्याये सो जुलाहाके दयाल होय, गऊ हू जिवाई अरु छानि छाई नामा की ॥ सन्तनको प्रण ग्वालगण राख्यो व्याल सेती, बिपति हरी है सम्पति दैकै सुदामाकी ॥ अहो बलवीर तुम द्रौपदीको बाढचो चीर, हरो क्यों न पीर अब मोसे निपकामा की ॥ १० ॥

कबको पुकारत हों सुनो नहीं एको बात, एहो नंदलाल तुम कैसे प्रतिपाल हो ॥ कहें हैं दयाल सो तो दयाहू न देखियत, मेरी मति ऐसी आछे नीके पशुपाल हो ॥ धर्यो हो नृसिंह रूप तबहीं प्रह्लाद काज, अब तो न लाज कछु गोधन में ग्वाल हो ॥ डारचो तेल कान में कि बस्यो जाय काननमें, शेष सेज लेट कीधौं पौढे जा पताल हो ॥ ११ ॥

बेर बेर टेर टेर जीभहू शिथिल भई, हरत न मेरी पीर कैसे अभिमानी हो ॥ कृपण भये हो कीधौं, मानको गहेहो कान्ह, दयाहू न आवे अब कैसे उनमानी हो ॥ कैसेके उदार तुम होत हो मुरारि प्रभु, गोपिनके प्यारे छांछ दूधहूके दानी हो ॥ बकि बकि थकी बानी कछुहू न चित्त आनी, जानी हम जानिबूझ करो आनाकानी हो ॥ १२ ॥

वेद औ पुराणन में कीनोहै बखान ऐसो, सतयुग बीच ध्रुव प्रह्लादकों तूठ हो ॥ त्रेता बीच नीच कुलकी न करी कानि कछु, भीलनीके हाथ प्रभु भखे बेर जूण्ठे हो ॥ द्वापरके अन्त तुम द्रौपदीकी लाज राखी, पांडवके काज दल कौरवके रूठे हो ॥ अब कलि कालमें जो करो न सहाय मेरी, तोहि लोग हँसके कहैंगे हरि झूंठे हो ॥ १३ ॥

गौतमकी नारी ताकी कथा बहु विसतारी, यद्यपि उधारी तिन छिद्र उघरायके ॥ दुःशासन द्रोपदीके सभा बीच केश खैंचे, तब लाज राख लई लाजकुं गमायके ॥ भयो बल हीन तनु अतिही अधीर छिन्न, तब गजकाज हरि आये तुम धायके ॥दीनन दयालु प्रभु यामें तौ सँदेह नाहीं, करो हो सहाय आप नीको तनु-नायके ॥ १४ ॥

सवैया।

दाम सुदामाको संपति दै चुटकी भर चावल पहलेहि लीने ॥ सागके पात पंचालीके खाय तबै ऋषि भोजन दीन नवीने ॥ कंस की दासी पै चन्दन ले पटरानी करी कहां मान करीने ॥ कारज जो जगमें यदुराय अकोर लिये विन कौनके कीने ॥१५॥

कवित्त।

ब्रह्मा रु महेश शेष नारद गणेश कहैं, भक्तनके काज हरि आप देह धारी हैं ॥ मङ्गलकरण दुख द्वंद्वके हरण पुनि, पोषण भरण सो रटैं नर नारी हैं ॥ विरद भक्तवत्सल वेद हू पुराण कहैं, जानत हौं जाके अब ग्वोबेकी विचारी है ॥ द्वारकाके वासी भये जायके प्रवासी अब, मेरी होत हाँसी यामें हाँसी तो तिहारी है ॥ १६ ॥

करों अपराध और सांझ तरकोर निश अतिही कठोर मति औरको निकाम हों ॥ आतुर अधीर तातें धीरता धरत नाहीं, ऊंच नीच बोल गति बको आठों याम हों ॥ अरचा न जानूं कछू चरचा न बूझत हों, कछु भान हांसे न लेत हरि नाम हों ॥ सब तकसीर बलवीर मेरी माफ करो, कहे मायोदास प्रभु तिहारो गुलाम हों ॥ १७ ॥

छन्द।

जन्मे श्रीकृष्ण मुरारि भगत हित कारने ॥ मथुरा लियो अवतार गोकुल झूले पालने ॥ तिथि आठें बुधवार भाद्रपदकी

करी ॥ रोहिणी नक्षत्र आधीरातको जनमें हरी ॥ धनि धनि वसुदेव देवकी जहां प्रभु अवतरे ॥ धनि धनि गोपी ग्वालकी जिन प्रभु बस करे ॥ धन्य धन्य सुर नर मुनि सब जय जय करें ॥ दुंदुभी बजत आकाश सुमन वर्षा करें ॥ ब्रजवासी गोरस भर भर कर लावहीं ॥ दधिकांदो बाबा नन्द सु कीच मचावहीं ॥ बाजत ताल मृदंग बीण अरु बांसुरी ॥ निरखें गोपी ग्वाल चलीं चित चावरी ॥ यशुमति चीर पहराय नौरंग भई ग्वालनी ॥ सुंदर वदन निहार चकित भई भामिनी ॥ श्री बलभद्रजूके वीर असुर दल खंडना ॥ भगत बछल महाराज सु यदुकुल मंडना ॥ शंकर धरत हैं ध्यान सु गोद खिलावहीं ॥ सो मुख चूमत माय सु पलन झुलावहीं ॥ श्रीनंददास जु नेह चरण चित लावहीं ॥ हरिगुण मंगल गाय जन्मफल पावहीं ॥ १८ ॥

राग जंगला ।

जै जानकी नाथा जै श्री रघुनाथा ॥ दोउ कर जोड़े विनवो प्रभु मोरी सुनो बाता ॥ तुम रघुनाथ हमारे प्राण पिता माता ॥ तुमहीं सज्जन संगी भक्ति मुक्ति दाता ॥ जय० ॥ चौरासी प्रभु फंद छुडावो मेटो यम त्रासा ॥ निशि दिन प्रभु मोहिं राखो अपने संग साथा ॥ जय० ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन सँग चारों भैया ॥ जग मग ज्योति विराजे शोभा अति लहिया ॥ जय० ॥ हनुमत नाद बजावत नेवर ठिमकाना ॥ सुवर्ण थाल आरती करत कौशल्या माता ॥ जय० ॥ क्रीट मुकुट कर धनुष विराजे शोभा भारी भारी ॥ रसीराम दरशनको पल पल बलिहारी ॥ जय० ॥ १९ ॥

कवित्त ।

जलकी न घट भरैं, मगकी न पग धरैं, घरकी न कछु करैं, बैठी भरैं मांसु री ॥ एकै सुन लोट गईं एकै लोट पोट भई, एकनके दृगन निकस आये आंसु री ॥ कहै रसनायक सो ब्रज बनितन विध, वधिक कहाये हाय हुई कुलहांसु री ॥ करिये उपाय, बाँस डारिये कटाय, नहि उपजैगे बाँस, नाहिं बाजे फेरि बांसुरी॥२०॥

भिक्षुक तिहारो कहां बलि मखशाला जहां, सपन को संगी कहां है है क्षीर निधि में ॥ एरी बहुरंगी बेलवालो कहां, नाचत है कान्ह तिरभंगा कहां है है ग्वालगन में ॥ चाउर चबैया कहं होय है सुदामा पास, विषको अहारी कहां पूतनाके घरमें ॥ सिंधुसुता आन मिली नर्कसों तरक करी, गिरिजा मुसक्यात जान झारी लिये कर में ॥ २१ ॥

सवैया ।

शेष महेश गणेश दिनेश सुरेशहु जाहि निरंतर गावैं ॥
जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद अभेद सु वेद बतावैं ॥
नारद लै शुक व्यास रटे पचिहारे तऊ पुनि पार न पावैं ॥
ताहि अहीरकी छोहरियां छछियाभर छाँछपै नाच नचावैं ॥२२॥
गुंज गरे शिर मोरपखा अरु चाल गयंदकी मोमन भावै ॥
सांवरो नंदकुमार सबै ब्रजमंडल में ब्रजराज कहावै ॥
साजैं समाज सबै शिरताजकी लाजकी बात कही नहि आवै ॥
ताहि अहीरकी छोहरियां छछियाभर छाँछपै नाच नचावैं ॥ २३ ॥
आज गईहुति भोरहि हौं रसखानि रई कहँ नंदके भौनहिं ॥
वाको जियो जुग लाख करोर जशोमतिको सुख जात कह्यो नहिं ॥
तेल लगाय लगाय के अंजन भौंह बनाय बनाय डिठोनहिं ॥
डार हमेल निहारति आनन वारति ज्यों चुचकारति छौनहिं॥२४॥

धूर भरे अति शोभित श्याम जु तैसी बनी शिर सुन्दर चोटी ॥
खेलत खात फिरै अँगना पग पैंजनियां कटि पीरी कछोटी ॥
वा छबिको रसखानि विलोकत वारत काम कलानिधि कोटी ॥
कागके भाग कहा कहिये हरिहाथते लैगयो माखन रोटी ॥ २५॥
एकते एक अनेक रहे सब ढीठ सखा सँग लीन्हें कन्हाई ॥
आवतहीं हौं कहां लौं कोऊ कैसे सहै अतिकी अधिकाई ॥
खायो दही मटुकी पटकी नहिं छोड़त चीर दिवाये दुहाई ॥
रसखानि तिहारिये सौंह यशोमति भागि मरूंकर छूट न पाई॥२६॥
लोक कि लाज तजी तबहीं जब देख्यो सखी ब्रजचंद्र सलोनो ॥
खंजन मीन मृगंजनकी छबि गंजन नैन लला दिन होनो ॥
रसखानि निहार सकै जु सम्हारकै को तिय है वह रूप सु टोनो ॥
भौंह कमान सु जोहनको शर बेधत प्राणन नन्दको छौनो॥२७॥
मोहन हैं चँदवा शिर मोरके तैसि ये सुन्दर पाग कसी है ॥
तैसि ये गोरज भाल विराजत तैसी हिये बनमाल लसी है ॥
रसखानि विलोकत बौरी भई दृग मूँदके ग्वालि पुकार हँसी है ॥
खोल री घूँघट खोलों कहा वह मूरति नैनन माँझ बसी है ॥२८॥
भौंह भरी बरुनी सुथरी अतिकै अधरान रंग्यो रंग रातो ॥
कुंडल लोल कपोल महाछबि कुंजन ते निकस्यो मुसकातो ॥
रसखानि लखे मन खोयगयो सग भूलगई तनुकी सुधि सातो ॥
फूटिगयो दधिको शिरभाजन टूटिगो नैनन लाजको नातो॥२९॥
जादिन ते निरख्यो नँदनन्दन कान तजी घरबन्धन छूटचो ॥
चारु विलोकन की न सुमार सम्हार गई मन मारने लूटचो ॥
सागरको सरिता जिमिधावत रोक रह्यो कुल को पुल टूटचो ॥
मत्त भयो मन संग फिरै रसखानि स्वरूप सुधारस घूटचो॥३०॥
बांकी विलोकन रंग भरी रसखानि खरी मुसकान सुहाई ॥

बोलत बैन अमीरस दैन महारस ऐन सुने सुखदाई ॥
कुंजनमें पुरबीथिनमें पिय गोहन लागि फिरों मेरी माई ॥
बांसुरि टेर सुनाय अरी अपनाय लई ब्रजराज कन्हाई ॥ ३१ ॥
देखनको सखि नैन भये सुसने तनु आवत गाइन पाछैं ॥
कान भये इन बातनके सुनबेको अमीनिधि बोलत आछैं ॥
पै सजनी न सम्हार परै वह बांकी बिलोकन कोर कटाछैं ॥
भूमि भयो न हियो यह आली जहाँ पिय खेलत काछनि काछैं ३२॥
खंजन नैंन फँदे छबि पिंजर नाहिं रहैं थिर कैसेहु माई ॥
छूटगई कुलकानि सखी रसखानि लखी मुसकानि सुहाई ॥
चित्रलिखी सी भई सब देह न बैन कढैं मुख दीन्हें दुहाई ॥
कैसी करौं जित जावँ तितै सब बोल उठे यह बावरी आई ॥३३॥
बंक विलोकन हैं दुखमोचन दीरघ लोचन रंगभरे हैं ॥
घूमत बारुनि पान किये जिमि झूमत आनन रंग ढरे हैं ॥
गंडनपै झलकै छबि कुंडल नागरि नैन बिलोकि अरे हैं ॥
रसखानि हरै ब्रजबालनिके मन ईषदहांसिकी फांसी परे हैं ॥३४॥
अति लोककी लाज समूहमें घेरके राख थकी सब संकटसों ॥
पल मैं कुलकानकी मेड़ रवी नहिं रोकी रुकीं पलकें पटसों ॥
रसखानि सों केती उचाटि रही उचटीं न सकोचकी औचटसों ॥
अलि कोटि करी हटकी न रही अटकी अँखियां लटकी लटसों ३५
आज सखी नँदनन्दन री तकि ठाढोहै कुंजनकी परछाहीं ॥
नैंन विशालकी जोहनको शर बेध गयो हियरा जिय माहीं ॥
घायल घूम खुमार गिरी रसखानि सम्हार रह्यो तनु नाहीं ॥
तापर वा मुसकानकी डौंडी बजी ब्रजमें अबला कित जाहीं॥३६॥
जा दिनते मुसकान चुभी उर ता दिन ते जु भयो ब्रज वारी ॥
कुंडल लोल कपोल महाछवि कुंजनते निकस्यो सुखकारी ॥

हौं सखि आवत ही बगरें पग पैंड़ तजी रिझई बनवारी ॥
रसखानि परी मुसकानके पालिन कौन गनै कुलकानि विचारी ३७
कौनको लाल सलोनों सखी वह जाकी बडी अँखियां अनियारी ॥
जो हनि बंक विशाल कै बानन बेधत है हिय तीछन भारी ॥
रसखानि सम्हार परे नहिं चोट सु कोटि उपाय करो सुखकारी॥
भाल लिख्यो विधि नेहको बंधन खोलसकै ऐसोको हितकारी ॥
मैन मनोहर बेनु बजे सु सजे तनु सोहत पीत पटा है ॥
यों दमकै चमकै झमकै द्युति दामिनि की मनु श्याम घटा है ॥
रसखानि महामधुरी मुखकी मुसक्यान करे कुलकान कटा है ॥
ये सजनी ब्रजराज कुमार अटा चढि फेरत लाल वटा है ॥३९॥
नैंन लख्यो जब कुंजनते बनिकै निकस्यो मटक्यो मटक्यो री ॥
सोहत कैसो हरा टटको शिर तैसे किरीट लसे लटक्यो री ॥
को रसखान रहै अटक्यो हटक्यो ब्रज लोग फिरे भटक्यो री ॥
रूप अनूपम वा नटको हियरे अटक्यो अटक्यो अटक्यो री ४०॥
एक दिना मुरली धुनिमें रसखानि लियो उन नाम हमारो ॥
ता दिन ते यह बैरी बिसासिनि झांकन देति नहीं है दुआरो ॥
होत चवाव बचावनो क्यों कर क्यों अलि देखिये प्राणपियारो॥
दीठ परेही लग्यो चटको अटको हियरे पियरे पटवारो ॥ ४१ ॥
कानन दै अँगुरी रहिहौं जबही मुरली धुनि मन्द बजैं हैं ॥
मोहनि तानन सों रसखान अटा चढ़ि गोधन गैहैं तौ गैहैं ॥
टेर कहौं सिगरे ब्रजलोगन काल्हि कोऊ कितनो समुझै हैं ॥
माई री वा मुखकी मुसकान सम्हारन जैहैं न जैहैं न जैहैं ॥४२॥

कवित्त ।

गोरज बिराजे भाल लहलही बनमाल, आगे गैयां पाछे ग्वाल गावैं मृदु तान री ॥ तैसी धुनि बांसुरी की मधुर मधुर तैसी, बंक

चितवनि मन्द मन्द मुसकान री॥कदम विटपके निकट तटनीके तट,अंटा चढ देख पीत पट फहरान री ॥ रस बरसावे तन तपन बुझावै नैन, प्राणन रिझावे वह आवे रसखान री ॥ ४३ ॥

अबई गई खरिक गायके दुहायबे को, बावरी ह्वै आई डार दोहनी जो पान की॥ कोऊ कहे छरी कोऊ भौन परी डरी कोऊ, कहे मरी मरी गति हरी अँखियान की॥सास व्रत ठाने नन्द बोलत सयाने धाय,दौर दौर जाने माने खोर देवतान की । सखी सब हँसे मुरझान पहिचान कहूँ, देखी मुसकान वा अहीर रसखान की ॥ ४४ ॥

ब्याही अनब्याही ब्रजमाहीं सब चाहीं तासों, दूनी सकुचाहीं दीठ परे जू जुन्हैया की । नेक मुसकान रसखानकी विलोकतही, चेरी होत एक बार कुंजन फिरैया की ॥ मेरे कह्यो मान अन्त याको गुण मानहै री, हौं तौ हौं सकात खानजात मौंह भैया की॥माय-की अटक तौ लौं सासुकी हटक जौ लौं, देखी ना लटक मेरे दूलह कन्हैयाकी ॥ ४५ ॥

सवैया ।

नैनन बंक बिशालके बाणन झेलि सकै वह कौन नवेली ॥
बेधत है हिय तीखन कोर सो मार गिरी तिय केतिक हेली ॥
छोडें नहीं छिनहूं रसखानि सुलागी फिरै द्रुमसों जनु बेली ॥
रौर परी छबिकी ब्रजमण्डल कुण्डल गण्डन कुन्तल केली ॥४६॥

सुन्दर श्याम सजे तनु मोहन जोहन में चित चोरत है ॥
बांके बिलोचन की अवलोकन नोकन के दृग जोरत है ॥
रसखानि मनोहर रूप सलोनेको मारग ते मन मोरत है ॥
काजसमाज सबै कुललाज लला ब्रजराज को तोरत है ॥ ४७ ॥

मकराकृत कुण्डल गुञ्ज कि माल सु लाल लसे पग पांवरियां॥
बछरान चरावन के मिस भाव तो दै गयो भावती भांवरियां ॥

रसखानि विलोकत ही सिगरी भई बावरियां ब्रजडावरियां ॥
सजनी सब गोकुलमें विष सो बगरायो है नंदके सांवरियां॥४८॥
कानन कुण्डल मोरपखा शिर कंठमें माल विराजत है ॥
मुरली करमें अधरों मुसकान तरंग महाछबि छाजत है ॥
रसखानि लखे तनु पीत पटा शत दामिनिकी दुति लाजत है ॥
वह बांसुरिकी धुनि कानपरे कुलकान हियो तज भाजत है॥४९॥

कवित्त ।

दूध दुह्यो सीरो पर्‌यो तातो न जमायो बीर, जामन दयो सो धर्‌यो धर्‌योई खटायगो॥आन हाथ आन पायँ सबहीके तबहीं ते, जबहींते रसखान तानन सुनायगो॥ ज्योहीं नर त्योहीं नारी तैसेई तरुनि बारी, कहिये कहा री सब ब्रज बिललायगो ॥ जानिये न आली यह छोहरा यशोमतिको, बांसुरी बजायगो कि विष बरसायगो ॥ ५० ॥

सवैया ।

बजी है बजी रसखान बजी सुनिके अब गोपकुमारि न जी है॥
न जी है कदाचित कामिनि कोऊ जु कान परी वह तान अजी है॥
अजी है बचावको कौन उपाय तियान पै मैनने सैन सजी है ॥
सजी है तो मेरी कहा बश है जब बैरिन बांसुरि फेर बजी है॥५१॥
आज अली इक गोप लली भई बावरि नेक न अंग सम्हारै॥
मात अघान न देवनि पूजत सासु सयानी सयानी पुकारै ॥
यों रसखान घिर्‌यो सिगरो ब्रज आनको आन उपाव विचारै॥
कोउ न कान्हरके करते वह बैरिन बांसुरिया गहि डारै ॥ ५२ ॥
कौन ठगोरी करी हरी आज बजायके बांसुरिया रसभीनी ॥
कान परी जिनके जिनके तिनहीं तिन लाज बिदा करदीनी ॥

घूमें खरी खरी नंदके द्वार नवीन कहा कहौं बाल प्रवीनी ॥
या ब्रजमंडलमें रसखान सु कौन भटू जु लटू नहिं कीनी ॥५३॥
ऐ सजनी वह नंदको सांवरो या बन धेनु चराय गयोहै ॥
मोहनी तानन गोधन गाय कै बेनु बजाय रिझाय गयोहै ॥
ताहि घरी कछु टोनो सो कै रसखान हिये में समाय गयोहै ॥
कोउ न काहूकी कान करै सिगरो ब्रज बीर बिकाय गयोहै॥५४॥
मोहनकी मुरली सुनिकै वह बौरी ह्वै आय अटा चढ झांकी ॥
गोप बडेनकी दीठ बचाय कै दीठ सों दीठ जुरी दुहुँ धांकी ॥
देखत मोह भयो अँखियानमें को करै लाज औ कान कहां की ॥
कैसे छुटाई छुटै अटकी रसखान दुहूंकी विलोकन बांकी ॥ ५५ ॥
बेनु बजावत गोधन गावत ग्वालनके सँगमें इत आयो ॥
बांसुरी कै मधि मेरोई नाम लै साथिनके मिस टेर सुनायो ॥
ऐ सजनी सुन सासके त्रासन नंदन कै पास उसासन आयो ॥
कैसी करौं रसखान नहीं हित चैन नहीं चित चोर चुरायो॥५६॥
मेरो सुभाव चितैबेको माई री लाल निहार कै बंसी बजाई ॥
वा दिनते मोहिं लाग ठगोरि सी लोग कहैं लखि बावरि आई ॥
यों रसखान घिर्‌यो सगरो ब्रज जानत है जियकी जियराई ॥
जो कोउ चहै भलो अपनो तो सनेह न काहूसों कीजियो भाई॥५७॥
जब कान्ह भये बश बांसुरीके अब कौन सखी हमको चहि है ॥
यह रात दिना सँग लागी रहै यह सौतकि सांसत को सहि है ॥
जिन मोहलियो मन मोहनको रसखान सु क्यों न हमें दहि है ॥
मिल आयो सबै कहिं भाग चलैं अब तो ब्रज में बँसुरी रहिहै ॥५८॥
सुन री पिय मोहनकी बतियां अति ढीठ भयो नहिं कान करै ॥
निशि बासर औसर देत नहीं छिनही छिन द्वारहि आन अरै ॥
निकसो मत नागरी डौंडि बजी ब्रजमंडलमें यह कौन भरै ॥

अब रूपकी रौर परी रसखान रहै तिय कोउ न मांझ घरै ॥५९॥
आयोहुतो नियरे रसखान कहा कहो तू न गई वहि ठैयां ॥
या ब्रजकी वनिता जिहि देखके वारहिं प्राणन लेहिं बलैयां ॥
कोउ न काहु की कान करै कछु चेटक सो है कर्यो यदुरैयां ॥
गायगो तान जमायगो नेह रिझायगो प्राण चरायगो गैयां ॥ ६०॥
हेरत वारहिं वार उतै यह बावरी बाल कहा धौं करैगी ॥
जो कहुँ देख पर्यो रसखान तो क्यों हूं न धीर री धीर धरैगी ॥
मानि है काहूकी कान नहीं जब रूपठगी हरि रंग ढरैगी ॥
याते कहों शिख मान भटू यह हेरन तेरेइ पैंड परैगी ॥ ६१ ॥
रंग भरे मुसकात लला निकस्यो कल कुंजन ते सुखदाई ॥
मैं तबहीं निकरी घरते तक नैन विशाल की चोट चलाई ॥
रसखान सों प्रेम गिरी धरनी हरनी जिमि बान लगे गिरि भाई ॥
टूटि गयो घरको सब बंधन छूटिगो आरज लाज बडाई ॥६२॥
आज सखी इक गोपकुमारने रास रच्यो इक गोपके द्वारे ॥
सुंदर बानिक सो रसखान बन्यो वह छोहरा भाग हमारे ॥
ये बिधना जो हमें हँसती अब नेक कहूं उतको पग धारे ॥
ताहि बदौं फिरि आवै घरै बिनही तन औ मन जोबन वारे ॥६३॥
वह गोधन गावत गोधनमें जब ते यह मारग है निकस्यो ॥
तबते कुलकान कितोयि करो नहीं मानत पापी हियो हुलस्यो ॥
अब तो जु भई सुभई कह होत है लोग अजान हँस्यो सुहँस्यो ॥
कोउ पीर न जानत जानत सो जिसके हियमें रसखान बस्यो ६४॥
आज री नन्दलला निकसो तुलसीवनते बनके मुसकातो ॥
देखे बनै न बनै कहते कछु सो सुख जो मुखमें न समातो ॥
हौं रसखान विलोकबेको कुलकानको काज कियो हिय हातो ॥
आयगई अलबेली अचानक ऐ भटू लाजको काज कहा तो॥६५॥

समझी न कछू अजहूँ हरि सों ब्रज नैन नचाय नचाय हँसै ॥
नित सासकी सीरी उसासनसों दिनहीं दिन मायकी कांति नसै ॥
चहुँ ओर बबाकि सौं सोर सुने मन मेरेउ आवत रीस कसै ॥
पै मैं कहा कहुं वा रसखान विलोक हियो हुलसै हुलसै॥ ६६ ॥
बाँकी कटाक्ष चितैबो सिख्यो बहुधा बरज्यो हितकै हितकारी ॥
तू अपने ढिगकी रसखान सिखावन दै दिन हौं पचिहारी ॥
कौन सी सीख सिखी सजनी अजहूँ तजिदे बलि जाँव तिहारी ॥
नंदननन्दके फंद कहूँ परिजैहै अनोखी निहारनहारी ॥ ६७ ॥
पूरब पुण्यनते चितई जिन ये अँखियाँ मुसकान भरी री ॥
कोऊ रही पुतरी सी खरी कोऊ घाट डरी कोउ बाट परी री ॥
जे अपने घरहीं रसखान कहैं अरु हौंस न आज मरी री ॥
लाजहिं बाल बिहाल करी ते बिहाल करी न निहाल करी री६८॥
बैरिन तैं बरजी न रहै अबहीं घर बाहर बैर बढैगो ॥
टोना सों नंद ढुटोना पढै सजनी तिहि देख विशेष बढैगो ॥
सुनिहै सब गोकुल गांव अरी रसखान जबै सब लोक रढैगो ॥
बैस चढै घर ही रह बैठ अटान चढै बदनाम चढैगो ॥ ६९ ॥
तेरी गलीनमें जा दिन ते निकसै नँदनन्दन गोधन गावत ॥
ये ब्रजलोग सों कौनसी बात चलायके जो नहिं नैन चलावत ॥
वे रसखान जो रीझिहौं नेक तो रीझिके क्यों न बनाय रिझावत ॥
बावरी जोपै कलंक लग्यो तो निशंक ह्वै काहे न अंक [illegible] ॥
औचक दीठपरे कहूं कान्ह [illegible] नामें कहै ननदी [illegible] ॥
सो सुन सास रही मुख [illegible] बारी फिरि [illegible] ॥
नीके निहार कै देखे न आँखिन सों कबहू [illegible] ॥
है पछितैबो यही सजनी कि कलंक लग्यो पर [illegible] ॥
काल्हि परयो मुरली धुनि में रसखान जु कानन नाम हमारो ॥

ता छिनते नहिं धीर रह्यो जग जान महा मन कीनो पवाँरो ॥
गाँवन गाँवन में अबतो बदनाम भाई सबसों कै किनारो ॥
तौ सजनी फिर फेरि कहौं पिय मेरो यही जग ठोक नगारो॥७२॥
सो मन मोहनसों मिलिकै मधुरी मुसकान दिखाई दई ॥
मोहनी मूरत मैनमयी सबहीं चितई हमहूं चितई ॥
उनतो अपने अपने घरकी रसखान भलीविधि गैल लई ॥
मोहिं को पाप परयो पलमें पग पावक पौरि पहार भई ॥७३॥
प्रेमपगे जु रंगे रँग साँवरे मानै मनाये न लालची नैना ॥
धावत हैं उतही जित मोहन रोके रुकें नहिं घूँघट ऐना ॥
कानन लौं कल नाहिं परै सखि प्रीतिमें भीजे सगे मृदु बैना ॥
रसखान भई मधुकी मखियां अब नेहको बंधन क्योंहू छुटै ना ७४॥
नव रंग अनङ्ग भरी छवि सों वह मूरति आँखि गडी ही रहै ॥
बतियां मनकी मनहीमें रहैं घतियां उर बीच अडी ही रहै ॥
कबहू रसखान सुजान अली नलिनी जलबून्द पडी ही रहै ॥
जियकी नहिं जानत हौं सजनी रजनी अँसुवान लड़ी ही रहै७५॥
आवत हैं वनते मनमोहन गोहन संग लसें ब्रजग्वाला ॥
वेणु बजावत गावत गीत अभीत इतै करिगो कछु ख्याला ॥
हेरत टेर थकी चहुँओर ते झांकि झरोखन ते ब्रजबाला ॥
देख सु आननके रसखान तज्यो मन धामको ताप कशाला७६॥
बांसी बजावत आनकढ़योरी गली में छली कछु जादू सी डारै॥
नेक चितै तिरछी कर भौंहैं चलो गयो मोहन मूठ सी मारै ॥
याही घरीते परी वह सेज पै बोलै न डौलै है प्राण से वारै ॥
जागि है जीहै तो जीहैं सबै नहिं पीहैं सबै विष नंदके द्वारै॥७७॥
अंग ही अंग जराव जरी अरु शीश बनी पगिया जरतारी ॥
मोतिन माल हिये लटकै लटुआ लटकै सब घूंघरवारी ॥

पूरण पुण्यहुँ ते रसखान ये मोहनि मूरति आन निहारी ॥ चारों दिशाको महाअघ हांके जो झांके झरोखे में बांके बिहारी ॥७८॥

कवित्त।

मीन मृग खंजन खसान भरे नैन बान, अधिक गलान भरे कंज कल तालके ॥ गर्वे छबिलीके छैल छबि छाके छाक भरे छैल ताके छोरे भरे छबि माथ जाल के ॥ ग्वालकवि आन भरे मान भरे स्यान भरे, कछु अलसान भरे भरे मान मालके ॥ भरे लाज भरे लाग भरे लोभ भरे लाली, भरे लोचन ललोहे नंदलालके ॥ ७९ ॥

फूले फूले फूलनके फूल फूल लिये तोड, रंग रंग रंगीन की रगन निहारी है ॥ मून मूत सूत डोर रेशम रसान भरे, गहक गहक गूंथ गूंथना निहारी है॥ग्वालकवि सौरभ समुद्र ते निकाली मानो, ललित ललाई कोमलाई बकरारी है ॥बानक विशाल वारो मोतिन-की माल जापै,ऐसी वनमाल नंदलाल हिये धारी है ॥ ८० ॥

पीरे बन बाग अनुराग भरे भाग भरे, अंग अंग रंगकी उमंग मन पैठे हैं ॥ पीरे पीरे हिये पर पीरे ही वसन सने, पीरे ही रतन तन अतन अमैठे हैं ॥ ग्वालकवि पीरे गोल गेंदुवा पलंग पीरे, पीरे पान चबे पीरे हार हार ऐंठे हैं ॥ है नई वसंत ह्व वसंत रही राधिकाके, दोऊ या वसंत में वसंत बन बैठे हैं ॥ ८१ ॥

सुंदर पलास अरु सुन्दर अँध्यारे वन फूली फूली, बेल जाकी छवि लागे खासी है ॥ कोकिला की कूक तेरी बानी में पिछानी जात, भौंरन की मांग आछो श्यामता प्रकासी है ॥ बन उपवन में पर्यंक कीसी शोभा देत, चांदनी प्रत्यच्छ मानो नीकी छविरासी है ॥ रीस तेरी करबे को आई है वसंत ऋतु, तू तो है वसंत ये वसंत तेरी दासी है ॥ ८२ ॥

बसी रहै शशि छबि ज्यों मन चकोरनके, अति मति मालती सुमनमें बसी रहै ॥ बसी रहै गज मन रेवा कीच अरु रेणु, मोरनकी रुचि घनावन में बसी रहै ॥ बसी रहै श्रीपति सदन कमलाजू जैसे, लोभी मन रुचि चित्त धनमें बसी रहै ॥ बसी रहै त्योंही तेरे छबिकी लगन कृष्ण, मूरति तिहारी मेरे मन में बसी रहै ॥ ८३ ॥

सवैया ।

सोई है रासमें नेकसु नाचिकै नाच नचाये किते सबको जिन ॥
सोई है री रसखान इहै मनुहारहु सूधे चितौत नहीं छिन ॥
तो मैं धौं कोन मनोहर भाव विलोकि भयो वश हाहा करी तिन ॥
औसर ऐसो मिलै न मिलै फिर लंगर मोडो कनोडो करै किन८४॥
बारहिं गोरस बेंच री आज तू मायके मूड चढै कित मोडी ॥
आवत जात लौं होयगी साँझ भटू यमुना भरौंड लौं औंडी ॥
एतेमें भेटत ही रसखान ह्वैहैं आँखियां बिन काज कनौंडी ॥
ऐरी बलाय त्यों जायगी बाज अबै ब्रजराजसनेहकी डौंडी॥८५॥
मोरकी चंद्रिका मोर लसैं दिन दूलह है अलि नंदको नंदन ॥
श्रीवृषभानु सुता दुलही लही जोरी बनी विधिना सुखकंदन ॥
रसखान न आवत मोपै कह्यो कछु दोउ फँदे छबि प्रेम के फंदन ॥
जाहि विलोके सभी सुख पावत ये ब्रजजीवन दुःखनिकंदन८६॥
आज अचानक राधिका रूपनिधानसों भेंट भई वनमाहीं ॥
देखत दौरि जुरी रसखान मिले भरि अंक दिये गलबाहीं ॥
प्रेमपगी [illegible] दुहुंवांकी दुहूंको लगी अतिही चित चाही ॥
मोहनी मंत्र [illegible] यंत्र हाहा पियकी तियकी नहिं नाहीं ॥ ८७ ॥
लाडिली लाल [illegible] लखिये अलिपुंजन कुंजनमें छबि गाढी ॥
[illegible] सी जुरी चहुँ गूजरी केलिकला सम काढी ॥
त्यों रसखान न जान परे सुखमा तिहुँ लोकनकी अति बाढी ॥

लालन बाल लिये बिहरैं छहरैं शिर मोरपखी ठग ठाढी॥ ८८॥
दृग दूने खिंचे रहैं कानन लौं लट आनन पै लहराय रही॥
छक छैल छबीली छटा छहरायकै कौतुक कोटि देखाय रही॥
झुक झूम झमाकन चूम अमी चहि चांदनि चन्द दुराय रही॥
मन भाय रही रसखान महा लखि मोहनकी तरसाय रही॥८९॥
जात हुती जमुना जलको मनमोहन घेरलियो मग आयकै॥
मोद भरे लपटाय गयो पट घूँघट टार दियो चित चायकै॥
और कहा रसखान कहों मुख चूमत घातन बात बनायकै॥
कौन निभै कुलकान लिये हिये सांवरिमूरतिकी छबिछायकै॥९०॥
मोहनके मन भायगयो इकभाव सों ग्वालिन गोधन लायो॥
ताते लग्यो चट चौहन सों हरवाय दै गात सों गात छुवायो॥
रसखान लही यह चातुरता चुपचाप रही जबलौं घर आयो॥
नैन नचाय चितै मुसकाय सु ओट ह्वैजाय अँगूठ दिखायो॥९१॥

कवित्त।

एरी आज कालिह सब लोक लाज त्यागि, दोऊ सीखेहैं सबै विधि सनेह सरसायबो॥यह रसखान दिन द्वै में बात फैल जैहै, कहांलो सयानी चन्द हाथन छिपायबो॥ आज हौं निहारयो बीर निपट कलिंदी तीर, दोउन को दोउन सों मुख मुसकायबो॥ दोउ परैं पैयां दोउ लेत हैं बलैयां उन्हैं, भूल गई गैयां उन्हें गागर उठायबो॥ ९२॥

सवैया।

एक समै जमुनाजलमें सब मज्जन हेत धसीं ब्रज गोरी॥
त्यों रसखान गयो मनमोहन लेकर चीर कदम्बकी छोरी॥
न्हाय जबै निकसीं वनिता चहुँओर चितैं चित रोष करयो री॥
हार हियो भर भावन सों पट दीने लला वचनामृत बोरी॥९३॥

नागर छल ह्वै गोकुल में मग रोकत संग सखा लिये तै है ॥
जाहिन ताहि दिखावत आंख सु कौन गई अब तोसों करैहै ॥
हांसीमें हार हर्यो रसखान सु जो कहुं नेक तगा टुटि जैहै ॥
एकहि मोतीके मोल लला सिगरे ब्रज हाटही हाट बिकैहै ॥९४॥
क्षीर जु चाहत चीर गहै अजु लेहु न केतक क्षीर अँचैहो ॥
चाखन के हित माखन मांगत खाहु न माखन केतिक खैहो ॥
जानत हो जियकी रसखान सु काहेको एतिक बात बढैहो ॥
गोरसके मिस जो रस चाहत सो रस कान्हजू नेक न पैहो॥९५॥
दानी भये नये माँगत दान सुने जु पै कंस तो बांधे न जैहो ॥
रोकत हो मगमें रसखान पसारत हाथ कछू नहिं पैहो ॥
टूटै छरा बछरा अरु गोधन जो धन है सु सबै धर दैहो ॥
जैहै अभूषण काहू सखीको तो मोल छलाके लला न विकैहो ॥९६॥

भजन ।

राग बिहाग ।

कर मन नन्दनँदन को ध्यान । यह अवसर तोहिं फिरि न मिलैगो मेरो कह्यो अब मान॥ घूँघरवारी अलकें मुखपर कुंडल झलकत कान । नारायण अलसानें नयना झूमत रूपनिधान ॥९७॥

राग जंगला ।

आज महरि घर देत गी बधाई । शुभ लक्षण सुन्दर सुत जायो बड़ भागिन है यशुमति माई ॥ वृद्ध वधू सब जुर मिल आईं यथा योग कुल रीति कराई । दान मान विप्रनको दीनो मणि मुक्ता पट भूषण ताईं । मृगनयनी कल कोकिल बयनी कर शृङ्गार बैठीं अँगनाई ॥ लैलै नाम नन्द यशुमतिको गावत गारी परम सुहाई॥ध्वज पताक तोरण मणि जाला द्वारन बन्दनवार बँधाई । नारायण ब्रज आनँद छायो प्रगट भये बर कुँवर कन्हाई ॥ ९८ ॥

राग भैरव।

आज सखी प्रातकाल दृग मींडत जगे लाल रूपके विशाल सिंधु गुणनके जहाज। कुण्डलमों उरझी माल मुखपर अलकन को जाल भई मैं निहाल निरख शोभाकी समाज ॥ आलस वश झुकत ग्रीव कबहूँ अँगडाई लेत उपमा सम देत मोहिं आवत है लाज। नारायण यशुमति ढिग हौं तो गई बात कहन याहीमें भये री एक पंथ दोउ काज ॥ ९९ ॥

राग देश।

कैसे जाउँ री वीर घट भरबे नीर। ठाढो यमुना तीर साँवरो अहीर मारे दृगोंके तीर हरे सुधि शरीर ॥ नित यही चितमें चिंता समाज ब्रजराज मों कैसे बचैगी लाज जिया कांपे आज नहीं धरत धीर। वाको रूप है के कोउ जादू यंत्र कैधों नारायण वशीकरण मंत्र कैधों तंत्र के पल ही में करे फकीर ॥ १०० ॥

राग झंझोटी।

जनि मग रोको नंदकिशोर। तोहिं उरझनकी वान परीहै सांझ तकत नहिं भोर ॥ देर लगत मोहिं सास रिसावे तुम्हें छैल नित रार सुहावे इन कुचाल कछु हाथ न आवे गागरिया दई फोर। तुम अति चंचल छैल बिहारी कैसे कुरव रवे महतारी यह अचरज मोको है भारी घरघर तेरो शोर ॥ नारायण अब क्यों इतरावो भई सो भई न बात बढ़ावो ताहीको तुम आँख दिखावो जो होय तेरी बँदोर ॥ १०१ ॥

राग बरवा।

आप भले गुणवान बनो तुम औरन को अति खोट बतावो ॥ माखनचोर कहावत हो नित तौऊ नहीं मन माहिं लजावो ॥ रत्न

जडे आभूषण पहरे छाँछ लिये करको फैलावो ॥ नारायण सब लोग हँसैंगे प्रथम उतार इन्हें धारि आवो ॥ १०२ ॥

राग मलार ।

क्योंरे छैल मेरी मटुकिया पटकी । करके ढिठाई मग दधि बिखराई सब चूरी मुरकाई सुकुमार बैयां झटकी ॥ अबहीं यशोदाढिग पकर लै जाऊं तोहिं एक न सुनूंगी तेरी बात नटखट की ॥ बदलो लेउँगी न डरूंगी नारायण कौनसी गरज मेरी तोसों अब अटकी ॥ १०३ ॥

राग खंमाच ।

प्रीतम तुम मोहिं प्राण ते प्यारो । जो तोहिं देख हिये सुख पावत सो बड़ भागिन वारो ॥ तुम जीवन धन सरवस तुमहीं तुमहीं दृगनके तारो । जो तुमको पलभर न निहारूं दीखत जग अँधियारो ॥ मोद बढ़ावनके कारण हम माननी रूपको धारो । नारायण हम दोऊ एक हैं फूल सुगंधि न न्यारो ॥ १०४ ॥

राग देश ।

सखि जबसों नँदलाल निहारे । तबहीं सों बौरी भई डोलूं इत उत गली गिरारे ॥ शीश मुकुट शिरपेंच रतनको लसत बार घुँघरारे । खंजन नैन मैन मद गंजन अंजन रेख समारे ॥ कुण्डल लोल कपोल मनोहर कोटि भानु उजियारे । मानो रूपसिंधुमें खेलत मकरन के द्वै बारे ॥ मंद हँसन मुख श्याम बरन छबि शशि मनोज लख हारे । दशन पाँति ज्यों मुतियनकी लर अधर सोहें अरुणारे ॥ नाक बुलाक कुटिल बर भ्रुकुटी वचन रचन अति प्यारे । नारायण नख शिख शृंगार कर ठाढ़े भवनके द्वारे ॥ १०५ ॥

राग सोरठ ।

जाहि लगन लगै घनश्याम की धरत कहूं पग परत हैं कितहूं भूल जाय सुध धाम की ॥ छवि निहार नहिं रहत सार कछु घरी पल निशि दिन याम की । जित मुँह उठे तितैही धावे सुरति न छाया घामकी ॥ कोई करो निंदा कोई स्तुति मेड़ तजी कुलग्राम-की । नारायण बौरी भई डोले रहै न काहू काम की ॥ १०६ ॥

राग काफी ।

यह नैनां रिझवार नये री । एक बेर लखि रूप श्यामको तज घर बार फकीर भये री ॥ अब देखे बिन डारत आँसू युग समान पल बीत गये री । नारायण येहू अति चंचल फल पाये जो बीज बये री ॥ १०७ ॥

राग भैरवी ।

अब मैं कैसे करूंगी बीर । हौं तो बनो चाहूं न करूं सुध मन तो धरत न धीर ॥ जो घायल उन नयन बानके सो जानत यह पीर । नारायण करगयो बावरी सुन्दर श्याम शरीर ॥ १०८ ॥

राग परज ।

अब नन्द भवनमें चलोरी बीर । साँवरे कन्हाई बिन कल न परत घरी पल छिन मन न धरत है धीर ॥ दृग अति अकुलावें नहिं पलक लगावें पुनि उनहीं को धावें परी इनपै भीर । तनु सुरत बिसारी लगी चटपटी भारी नारायण हमारी को जानत पीर १०९॥

राग खट ।

एक सखी उठ बडे भोरही नन्दरायके भवन गई । ताही समय जगे मनमोहन आलसवश मुखकांति नई ॥ नेन उनींदे झूमत पलकें शिथिल वचन अति मोद मई । नारायण यह छवि लखि ग्वालिन मानो भीतिको चित्र भई ॥ ११० ॥

देख सखी नव छैल छबीलो प्रात समै इतसों को आवै । कमल समान बडे दृग जाके श्याम सलोने मृदु मुसक्यावै ॥ जाकी सुन्दरता जग वरणत मुख शोभा लख चन्द्र लजावै । नारायण यह किधों वही है जो यशुमतिको कुँवर कहावै ॥ १११ ॥

राग विभास ।

यही मोहन जिन मोही ब्रजबाला । गजगति चलत बजत पग नूपुर उर सोहै बनमाला ॥ कमल फिरावत मृदु मुसक्यावत बोलत वचन रसाला । श्याम बरन लखि लजत नीलमणि पंकज मेघ तमाला॥नैन सैन कर हरत मैन मन मुख द्युति चन्द विशाला। नारायण प्रगट्यो जादूगर नन्दरायको लाला ॥ ११२ ॥

राग भैरव ।

आज सखी प्रातकाल मेरे गृह आये लाल भई मैं निहाल वाके रूपको निहार री । पूरण शशि सम कपोल तिनपै कुंडल किलोल मधुर मधुर सुनके बोल रही ना सँभार री ॥ नाकमें बुलाक सोहै चितवन चितहीको मोहै अद्भुत शृंगार चरण नूपुर झनकार री । नारायण हौं तो उठी मिलन इतसों आई लाज मनकी मनहींमें रही कर न सकी प्यार री ॥ ११३ ॥

राग आसावरी

सखी मेरे मनकी को जाने ।कासों कहूँ सुनै जो चितदे हितकी बात बखाने ॥ ऐसो को है अन्तर्यामी तुरत पीर पहिचाने । नारायण जो बीत रही है कब कोई सच माने ॥ ११४ ॥

राग सोरठ ।

मनमोहन जाकी दृष्टि परत ताकी गति होतहै और और । न सुहात भवन तन अशन वसन वनहीको धावत दौर दौर ॥ नहीं

धरत धीर हिय विरह पीर व्याकुल भई भटकत ठौर ठौर ॥ कब अँसुवन भर नारायण मग झांकत डोलत पौंर पौंर ॥ ११५ ॥

राग झंझोटी ।

साँवरे क्यों मोसों रिस मानी । तेरे काज घर बार त्याग के गलियन फिरत दिवानी ॥ लोकलाज कुल रीति प्रीत जग इनहूं को दियो पानी । नारायण अब तो हँस चितवो एरे रूप गुमानी ॥ ११६ ॥

राग काफी ।

लाल तेरे जादू भरे दोउ नैन । चितवन में चित वश कर लेवें मोहनी मन्त्र है सैन ॥ अति बाँके सुन्दर मतवारे अनियारे छबि ऐन ॥ नारायण इनके बिन देखे पल छिन परत न चैन ॥ ११७ ॥

राग कालिंगडा ।

सखी तबसों चैन नहिं आवे । जबसों मैं निरख्यो नँदलाल गल मुतियन माल सुहावे ॥ घुँघरारी अलकें मुख राजत कोटि मदन दृग छबि लखि लाजें कुण्डल हलन चलन श्रवणनमें वंसी मधुर बजावे । सुध बुध हरन वचन हँस बोले चाल मराल इते उत डोले ॥ बजत चरन छम छननन नूपुर ताहू पर मुसक्यावे ॥ कर कंकन पहुँची मणि झलकें देख स्वरूप लगत नहिं पलकें नारायण बेसर को मोती लटकत हिये समावे ॥ ११८ ॥

सखि यह दृग वा रूप लुभाने । मचल रहे शशि मुख निरखन को जा विधि बाल अयाने॥ लोकलाज कुलधर्म खिलौना दिये तऊ हिं माने । नारायण सोऊ हन फोरे ऐसे निडर सयाने ॥ ११९ ॥

राग झिंझोटी ।

श्याम दृगनकी चोट बुरी री । ज्यों ज्यों नाम लेत तुम वाको मो घायल पै नोन पुरी री ॥ न जानूँ अब सुध बुध मेरी कौन विपिनमें जाय दूरी री । नारायण नहिं छूटत सजनी जाकी जासों प्रीति जुरी री ॥ १२० ॥

राग ईमन दादरा ।

लगन नहीं छूटे एरी बीर । ताने देहु भले नाम धरो चाहे कोटि करो तदबीर ॥ छिनमें करत चतुरको बौरा नृपको करत फकीर । नारायण अब कठिन है बचबो बिंधे हिये दृग तीर ॥ १२१ ॥

मोपै कैसी यह मोहनी डारी । चितचोर छैल गिरिधारी ॥ गृह कारज में जी न लगत है खान पान लगै खारी । निपट उदास रहत हूं जबसों सूरत देखि तिहारी ॥ संगकी सखी देत मोहिं धीरज वचन कहत हितकारी । एक न लगत कही काहूकी कहत कहत सब हारी ॥ रही न लाज सकुच गुरुजनकी तन मन सुरति बिसारी । नारायण मोहिं समझ बावरी हँसत सकल नरनारी॥ १२२॥

राग सोरठ ।

सखी री यह मेरो चित चोर । भ्रुकुटी कुटिल बंक अवलोकन सुन्दर नवल किशोर ॥ गैल चलतमें सहजहि निरखी या छलिया की ओर । नारायण जानै कहा कीयो इन लखि नैनन कोर॥ १२३॥

मोहन बस गये मेरे मनमें ॥ लोकलाज कुलकान छूटगई इनकी लगन लगनमें । जित देखूं तितही यहि दीखे घर बाहर आंगन में । अंगअंग प्रति रोम रोममें छाय रहे सब तन में ॥ कुण्डल झलक कपोलन सोहै बाजूबंद भुजनमें । कंकन कलित ललित मणिमाला नूपुर धुनि चरणन में॥ चपल नयन भ्रुकुटी बर बांकी

ठाढे सघन लतनमें। नारायण बिन मोल बिकी मैं इनकी नेक हँसन में ॥ १२४ ॥

राग झँझोटी।

ये दोऊ झूलें री मनके मोहन हार। सजनी री इक सांवरे रंग के सँग वृषभानु कुमार ॥ सावन मास सुहावन भावन फूल रही फुलवार। रेशम डोर जड़ाऊ पटली सघन कदमकी डार॥गरजत घन चमकत है चपला बूँदन परत फुहार। ठौर ठौर मिल मोर नचत हैं या सुखको नहिं पार ॥ भांति भाँतिके पक्षी बोलें शीतल चलत बयार। फूले कमल सरोवर माहीं भ्रमर करत गुंजार॥चहूँ ओर छाई हरियाली अद्भुत विपिन बहार। लिपट रहीं बर वेलि द्रुमनसों हरषत युगल निहार॥बरन बरनके लाल सोसनी सखियन किये शृङ्गार॥विविध प्रकार बजावत बाजे गावत राग मलार॥ चतुर सखी इक जान गई तब उरसों चीर उघार। हँस हँस परत लखावत औरन यह लंगर छलवार॥ललिता कहै इन नहिं व्यापै तनक लाज संसार। पल पल माहिं स्वांगधर आवत कभूँ पुरुष कभूँ नार॥नारायण बोली प्रीतमसों कीरति प्राण अधार।वनिता वेष उतार आपनो रूप लियो निज धार ॥ १२५ ॥

राग मलार।

सखी री यह सावन मनभावन। चातक मोर चकोर कोकिला बोलत वचन सुहावन ॥ गरजत घन घन घननन घननन कर लगे मेह बरसावन। नारायण भीजत मेरे गृह श्याम सुंदरको आवन ॥ १२६ ॥

राग जंगला।

आवो री यह शोभा निहारें। नन्दलाल वृषभानु नन्दनी झूल रहे गरबैयां डारें ॥ परत फुहार विपिन हरियाली वन पक्षी मृदु

वचन उचारें। अति निर्मल जल भरे सरोवर फूले कमल भ्रमर गुंजारें ॥ पवन झकोर उडत प्रिय को पट झट प्रीतम निज हाथ सँभारें ॥ नारायण इनकी या छबि पै आज सखी हम सरबस वारें ॥ १२७ ॥

राग कान्हरो ।

आज बंशीबट बरसत रंग । यमुना तीर समीर सुहावत बोलत विविध बिहंग ॥ कीरत कुँवरि लाल नन्दजीको झूल रहे इक संग। रूपसिंधुके अंग अंगते छबिकी उठत तरंग । बजत बीन ताऊस सरंगी बंशी झांझ मृदंग । नारायण गावत मिल सजनी हियमें बढत उमंग ॥ १२८ ॥

राग मलार ।

सघन बन झूलें दोउ सुकुमार । हिय हरषत छबि निरख परस्पर छिन छिन बाढत प्यार ॥ कबहुं मुदित मन तान लेत मिल होत सखी बलिहार । नारायण द्रुम बेलि सुहावन हरो कियो शृङ्गार ॥ १२९ ॥

राग काफी ।

गोरी कुञ्जनमें आज होरी मची तू कहा बैठी मांग सँवारै । मेरी कही जो सांच न मानैं सुनलै डफ धुधकारै ॥ उठ सजनी चल फाग खेल ले प्रीतम तोहिं पुकारै । नारायण तब बात है तेरी तू जीतै पिय हारै ॥ १३० ॥

पिय प्यारी आज होरी खेलत यमुना तीर । हँस हँस वदन अरगजा डारत मारत मूठ अबीर॥ चलत कुमकुमा रंग पिचकारी भीज रहे तनु चीर । जनु घन दामिनि रूप धरे हैं गोरे श्याम शरीर ॥ बजत अनेक भांति मृदु बाजे होय रही अति भीर । नारायण या सुख निरखे विन कौन धरै मनधीर ॥ १३१ ॥

देख सखी वृषभानु किशोरी। निज प्रीतमको रूप निहारत जा विध चंद चकोरी ॥ भलो फाग खेलन को निकमी बीच भई चित चोरी। नारायण अटके दृग छबिमें भूल गई सुधि होरी॥ १३२॥

राग झंझोटी।

आज श्याम मग धूम मचाई। धूम मचाई करत ढिठाई ॥ बिन रँग डारे देत नहिं निकमन में तेरीसों देखके आई। तू कहू भूलके मत उत जैयो जाने कहा वह करे लँगराई ॥ नारायण होरीके दिननमें अपने ही हाथ है अपनी बड़ाई ॥ १३३ ॥

राग काफी।

मति मारो पिचकारी श्याम अब देउँगी मैं गारी। भीजैगी लाल नई मेरी अँगिया चूंदर बिगरैगी न्यारी॥ देखेगी सास रिसायगी मोपै संगकी ऐसी हैं दारी ॥ हँसैगी दे दे तारी॥ घाट बाट सबसों अटकत हो लै लै गारि उधारी॥ कहांलों तेरी कुचाल कहूं मैं एक एक ब्रजनारी ॥ जानत करतूत तिहारी॥ मूठ अबीर न डारो दृगनमें दूखेगी आंख हमारी॥ नारायण न बहुत इतरावो छांडो डगर गिरिधारी॥ नये भये तुमहीं खिलारी ॥१३४॥

राग होरी काफी।

होरी हो ब्रजराज दुलारे। अब क्यों जाय छिपे जननी ढिग रे है बापन वारे॥ कै तो निकमके होरी खेलो कै मुखसों कहो हारे ॥ जोर करे आगे हमारे ॥ बहुत दिननमों तुम मनमोहन फागहिं फाग पुकारे ॥ आज देखियो मैंर फागकी पिचकारिनके फुहारे ॥ चलैं जब कुमकुमा न्यारे ॥ निपट अनीति उठाई तुमने रोकत गैल गिरारे ॥ नारायण सब खबर परैगी नेक तो आयके द्वारे ॥ सुरति अपनी तू दिखा रे ॥ १३५ ॥

राग कान्हरो ।

नंदनँदनके ऐसे नैन । अति छबि भरे नागके छौना तुरत डसें कर सैन ॥ इन मम सांवरि मंत्र न होई जादू यंत्र तंत्र नहिं कोई एक दृष्टिमें मन हर लेवें कर देवें बेचैन ॥ चितवनमें घायल कर डारें इनपै कोटि बाण लै वारें अति पैने तिरछे हिय कसकैं श्वास न देवें लैन ॥ चंचल चपल मनोहर कारे खंजन मीन लजावन हारे नारायण सुंदर मतवारे अनियारे दुख दैन ॥ १३६ ॥

राग मलार ।

मनमोहन सम सुन्दरको है । मैं अपने अनुमान कहूँ अब उनकी पटतर और न सोहै ॥ चितवन चपल रूप उजियारो जाको मुख नित चंद हू जोहै । नारायण जो एक दृष्टिमें सुर नर नाग सकल को मोहै ॥ १३७ ॥

राग जैजैवन्ती ।

आज सखी प्रीतम जो पाऊं, तो अपने बड़ाभाग मनाऊं । सांवरी मूरत नैन विशाला, चंद बदन गल मुतियन माला, रूप मनोहर चाल मराला, सुंदरता पर बलि बलि जाऊं ॥ जो प्यारो इन गलियन आवै, मो बिरहनको दरश दिखावै, बैठ निकट मृदु वचन सुनावै, मैं उनको हँस कंठ लगाऊं । नारायण जीवन गिरिधारी, कब लैंगे सुध आय हमारी, जब मोसों वो कहैंगे प्यारी, तब मैं फूली अँग न समाऊं ॥ १३८ ॥

राग नायकी कान्हरा ।

आज रचो रसरास बिहारी । जैसोइ वृंदा विपिन सुहावन तैसिही शरद रैन उजियारी ॥ यमुना तीर पुलिनकी शोभा फूल रही चहुँ दिशि फुलवारी । चलत पवन मन मोद बढावन शीतल मन्द

सुगंधित प्यारी ॥ निरतत लाल सहित ब्रजबाला चपल चतुर गति लै लै न्यारी । बजत अनेक भांति मृदु बाजे परम प्रवीन बजावत वारी ॥ कोऊ सखी स्वर दुगन अलापत करत बड़ाइ लाल गिरिधारी । नाचत सुमन झरत हैं शीशतें मुख श्रमबिंदु देत छबि न्यारी ॥ कबहूं श्याम बिलम ह्वै नाचत ताल देत मिल गोप कुमारी । नारायण नभतें सुर निरखत वर्षत फूल सहित निज नारी ॥ १३९ ॥

राग भैरव ।

बंशीवट जमुना तट निरतत बनवारी । अति सुगध मंद मंद पवन चलत प्यारी ॥ चन्दवदन श्याम रसिक मुकुट चन्द शीश लसत चन्द्रमुखी प्रिया शरद चाँदकी उजारी । बाजे बाजत बिशाल गति मति सुर अधिक ताल रागरंग विविध भांति नूपुर धुन न्यारी । नारायण शिव सुजान गोपिकाको वेप ठान निरख निरख नृत्य गान भये चित्रकारी ॥ १४० ॥

राग जोगिया ।

आज सखी सुपनों में देखो रैन । तबहीं मों जिय भई अति व्याकुल पल छिन परत न चैन ॥ श्याम वरण इक पुरुष मनोहर नव जोबन छबि ऐन । शीश मुकुट कुंडल गल माला सुन्दर बांके नैन ॥ मैं उनसों कछु कहन न पाई सुने न उनके बैन । नारायण तब आँख उघर गई न कछु लैन न दैन ॥ १४१ ॥

सवैया ।

मानकी औधि है आधी घरी अरु जो रसखानि डरै डरके डर ॥
तोरिये नेह न छोड़िये पां परों ऐसे कटाक्ष महा हियरो हर ॥

लाल गुपालको हाल विलोक री नेक छुवै किन दै करसों कर ॥
ना कहबे पर वारत प्राण कहा लखि वारिहै हां कहिये पर॥ १४२॥
वह साँवरो नन्दको छैल अली अब तो अतिही इतरान लगो ॥
नित घाटन बाटन कुंजनमें मोहिं देखतही नियरान लगो ॥
रसखान बखान कहा कहिये तक सैननसों मुसकान लगो ॥
तिरछी बरछी सम मारत है दृगबान कामन सु कान लगो ॥ १४३॥
आई सबै व्रज गोप लली ठिठकी ह्वै गली यमुना जल न्हानें ॥
औचक आय मिले रसखान बजावत वेणु सुनावत तानें ॥
हाहाकरी सिसकीं सिगरी मति मैन हरी हियरा हुलसानें ॥
घूमें दिमानें अमाने चकोरसे ओरसे दोऊ चले दृग बानें ॥ १४४॥
मोरपखा शिर ऊपर राखिके गुंजकी माल हिये पहरौंगी ॥
ओढ पिताम्बर लै लकुटी बन गावत गोधन संग फिरौंगी ॥
भाव तो मोहिं वही रसखान सों तेरे कहे सब स्वांग करौंगी ॥
ये मुरली मुरलीधरकी अधरान धरी अधरान धरौंगी ॥ १४५ ॥
को रिझवारिन सों रसखान कहै मुकतान सों मांग भरौंगी ॥
कोऊ कहै गहनों अँग अंग दुकूल सुगंध सन्यो पहिरौंगी ॥
तू न कहै यों कहै तो कहैं हूं कहूं न कहूं तेरे पाँय परौंगी ॥
देखहु याहि सुफूलकी माल यशोमतिलालनिहाल करौंगी॥ १४६॥
लीने अबीर भरे पिचका रसखान खरो बहु भाव भरो जू ॥
मारसे गोपकुमार कुमार वे देखत ध्यान टरो न टरो जू ॥
पूरब पुण्यन दांव परचो अब राज करो उठ काज करो जू ॥
अंक भरो निश्शंक उन्हें यहि पाख पतिव्रत ताख धरो जू॥ १४७॥

कवित्त ।

गोकुलको ग्वाल एक चौमुँहकी ग्वालिन सों, चांचरि रचाई धूअति महिं मचायगो। हियो हुलसाय रसखान तान गाय,

वाके सहज सुभाय सब गांव ललचायगो ॥ पिचका चलाय सब युवती भिजाय लोल, लोचन नचाय उरपुरमें समायगो ॥ सास हितचाय गोरी नंदहि नचाय गोरी, बैरिन मंचाय गोरी मोहिं सकुचायगो ॥ १४८ ॥

सवैया ।

एक समै इक सुंदरिको ब्रजजीवन खेलत दीठि परयो है ॥
बाल प्रवीन प्रवीनता कै सरकायकै कांधले चीर धरयो है ॥
यों रस ही रस ही रसखान सखी अपनो मन भायो करयो है ॥
नन्दके लाडिले ढांकदेशीश हहा मेरो गोरस हाथ भरयोहै ॥ १४९ ॥
दूर ते आय दुरे ही दिखाय अटा चढ जाय गह्यो तहँ बारो ॥
चित्त कहूँ चितवै कितहूँ हित और सों चाहि करे चखचारो ॥
रसखान कहै इहि बीच अचानक जाय सिढी चढ साम पुकारो ॥
मूख गईसुकुमारहियो हनि मैननसों कह्यो कान्ह सिधारो ॥ १५० ॥

कवित्त ।

आपनो सो ढोटा हम सबहीको जानतहैं, दोऊ प्राणी सबही के काज नित धावहीं ॥ तेतो रसखान सब दूर ते तमासो देखें, तरनि तनूजाके निकट हु न आवहीं ॥ आन दिन बात अनहित न की कहों कह, हितू जेउ आये तेऊ लोचन दुरावहीं ॥ कहा कहौं आली खाली देत सब ठाली हाय, मेरे बनमालीको न कालीते छुडावहीं ॥ १५१ ॥

सवैया ।

लोग कहैं ब्रजके रसखान अनंदित नन्द यशोमति जू पर ॥
छोहरा आज नयो जनम्यों तुम सों कोउ भाग भरयो नहीं भू पर ॥
बारक दाम सँवार करौ घनी पानी पियो सु उतार ललू पर ॥
नाचत रावरो लाल गुपालहो कालसे व्यालकपालके ऊपर ॥ १५२ ॥

कंसके कोपकी फैल गई जबहीं ब्रजमंडल बीच पुकार है ॥
आय गयो तबहीं कछनी कसिकै नटनागर नन्दकुमार है ॥
द्वैरदको रद खैंच लियो रसखान तबै मन आयो विचार है ॥
लागी कुठौर लई लखि ऐंच कलंक तमाल ते कीरति डारहै १५३॥
लाजके लेप चढायकै अंग पचीं सब सीखको मंत्र सुनायकै ॥
गारुड है ब्रज लोग थक्यो कर औषध बासुक सौंह दिवाय कै ॥
ऊधो सोंको रसखान कहै जनि चित्त धरो तुम एते उपाय कै ॥
कारेबिसारेकोचाहै उतारयोअरी विषबावरो राख लगायकै १५४॥
सारकी सारी सो भारी लगै धरि है कहां शीश बघंबर दैया ॥
दासी जु सीख दई सुदई पै लई गह क्यों रसखान कन्हैया ॥
योग गयो कुबजाकी कलान में री कब ऐहै यशोमति छैया ॥
हाहा न ऊधो कुढ़ाय हमैं अबहीं कह दे ब्रज बाजे बधैया ॥ १५५॥
जानत हों न कछू हम ह्यां उन ह्वां पढि मन्त्र कहा धौं दयोहै ॥
सांची कहैं जियमें निज जानकै जानती हों जस जैसो लयोहै ॥
रसखान यहै सुनकै गुनकै हियरा सत टूक ह्वै फाट गयो है ॥
लोग लुगाई सबै ब्रज माहिं कहैं हरि चेरीको चेरो भयोहै ॥ १५६॥
जानै कहां हम मूढ सबै समझी न तबै जबहीं बन आई ॥
शोच रहीं मनही मन में अब कीजे कहा बतियां कछु भाई ॥
नीचो भयो ब्रज लोकको शीश भली न भई रसखान दुहाई ॥
चेरीको चेटक देखहु री हरी चेरी कियोधौं कहापढ आई॥ १५७॥
काहूको माई कहा कहिये सहिये सु जोई रसखान सहावैं ॥
नेम कहां जब प्रेम कियो अब नाचिये सोई जु नाच नचावैं ॥
चाहत हैं हम और कहा सखि क्योंहूँ कहूँ पिय देखन पावैं ॥
चोरईही सों जु गुपाल रच्यो तौ चलो री सबै मिल चेरी कहावैं १५८॥

कवित्त ।

ग्वालनके संग जैबो ऐबो औ चरैबो गाय, हेरी तान गैबो शोचि नैन फरकत हैं॥ह्यांके गजमोतिमाल वारों गुंजमालनपै, कुंज सुधि आये हाय प्राण धरकत हैं ॥ गोबरको गारो सुतौ मोहिं लगै प्यारो नहिं, भावें ये महल जे जडित मरकत हैं॥मंदर ते उंचे कहा मंदिर हैं द्वारकाके,ब्रजके खरक मेरे हिय खरकत है ॥१५९॥

सवैया ।

मोहनजूके वियोगकी ताप मलीन महादुति देह तियाकी ॥
पंकज सो मुख गो मुरझाय लगें लपटैं बिरहागि हियाकी ॥
ऐसेमें आवत कान्ह सुने तुलसी सुतनीं तरकीं अँगियाकी ॥
यों जग ज्योति उठी तनुकी उसकाय दई मनौ बाती दियाकी१६०॥
इक ओर किरीट लसैं दुसरी दिशि नागनके गण गाजत री ॥
मुरली मधुरी धुनि ओंठन पै तुरही कलनाद सों बाजत री ॥
रसखान पितंबर एक कँधा पर एक बघंबर छाजत री ॥
अरी देखहु संगम लै बुड़की निकसे वर वेप विराजत री॥१६१॥
यह देख धतूरेके पात चबात सुगात में धूरि लगावत हैं ॥
चहुँओर जटा अटकीं लटकैं शुभ शीश फनी फहरावत हैं ॥
रसखान जोई चितवै चित दै तिहिके दुख द्वंद्व भजावत हैं ॥
गज खाल कपालकी माल धरे हर गाल बजावत आवत हैं॥१६२॥
वैदकी औषधि खात कछू न करै कछु संयम री सुन मोसे ॥
तेरोइ पानी पियैं रसखानि सजीवन जानि लहै सुख तोसे ॥
एरी सुधामयी भागीरथी सब पथ्य कुपथ्य बनै तोहिं पोसे ॥
आक धतूर चबात फिरैं विष खात फिरै शिव तेरे भरोसे ॥१६३॥
सुनिये सबकी कहिये न कछू रहिये इमि या भव बागर में ॥

कारिये व्रत नेम सचाई लिये जिनते तारिये भवसागरमें ॥
मिलिये सबसों दुरभाव बिना रहिये सतसंग उजागरमें ॥
रसखान गोविंदहि यों भजिये जिमि नागरिकोचित गागरमें १६४॥
प्राण वही जु रहैं रिझ वापर रूप वही जिहि वाहि रिझायो ॥
शीश वही जिहि वे परसे पद देह वही जिन वा परसायो ॥
दूध वही जु दुहायो री वाहीने सोई दही जु वही ढरकायो ॥
और कहांलौं कहूं रसखान सुभाव वही जु वही मनभायो॥१६५॥
कंचन मंदिर ऊंच बनायके माणिक लाय सदा झमकावे ॥
प्रातहि ते सगरी नगरी गजमोतिन ही की तुलानि तुलावे ॥
पाले प्रजानि प्रजापति सो धन संपति सों मघवाहि लजावे ॥
ऐसो भयो तो कहा रसखान जु सांवरे ग्वालसों नेह न लावे॥१६६॥
संपति सों सकुचावे कुबेरहि रूप, सों देत चुनौति अनंगहि ॥
भोग लखे ललचाय पुरंदर योगमें गंग लई धारि मंगहि ॥
ऐसो भयो तो कहा रसखान रसे रसना जिहिं मुक्त तरंगहि ॥
जो चित वाको न रंगरँग्यो जु रह्यो रँगि राधिकारानीके रंगहि १६७
द्रौपदी औ गणिका गज गीध अजामिल सों कियो सो न निहारो॥
गौतमगेहनी कैसी तरी प्रहलादको कैसो हरचो दुख भारो ॥
काहेको शोच करै रसखान कहा करि है यमराज विचारो ॥
कौनकि शंक परी है जु माखन चाखन हारो है राखन हारो॥१६८॥
देश विदेशके देखे नरेश न रीझको कोऊ न बूझ करैगो ॥
ताते तिन्हें तज जाऊँ गिरौं गुण को गुण औगुण गांठ परैगो ॥
बांसुरीवारो बड़ो रिझवार है, जो कहुँ नेकसु ढार ढरैगो ॥
सुन्दर सांवरो छैल अहीरको पीर हमारे हियेकी हरैगो ॥ १६९ ॥
शेष सुरेश दिनेश गणेश ब्रजेश धनेश महेश मनाओ ॥
कोउ भवानी भजो मनकी सब आश सबै विधि जाय पुराओ ॥

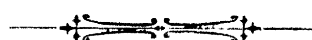
कोउ रमा भजि लेहु महाधन कोऊ कहूं मन वांछित पाओ ॥
है रसखान मेरे वही साधन और त्रिलोक रहौ कि नशाओ १७०॥
वा लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुरको तजि डारौं ॥
आठहू सिद्धि नवो निधिको सुख नंदकि गाय चराय बिसारौं ॥
रसखान कबै इन नैननसों व्रजके वन बाग तड़ाग निहारौं ॥
कोटिन हूं कलधौतके धाम करीलकी कुंजन ऊपर वारौं ॥१७१॥
जो रसना रस ना बिलसै तेहि देहु सदा निज नाम उचारन ॥
सो करनी कर नीकी करैं जु पै कुंज कुटीरन देहु बुहारन ॥
सिद्धि समृद्धि सबै रसखान लहौं व्रजरेणुका अंग सवाँरन ॥
खानिन बास मिलै तो सही वहि कालिंदिकूल कदंबकी डारन १७२

कवित्त ।

कहा रसखान सुख संपति सुमार मह, कहा महा योगी ह्वै लगाये अंग छारको ॥ कहा साधे पंचानल कहा सोये बीच जल, कहा जीत लीने राज सिंधु वार पारको॥ जप बार बार तप संयम अपार ब्रत, तीरथ हजार अरे बूझत लबार को ॥ सोई है गँवार जिहि कीनो नहीं प्यार नहीं, सेयो दरबार यार नंदके कुमारको॥ १७३॥

कंचनके मंदिरन दीठि ठहरात नाहिं, सदा दीपमाल लालरतन उजारे सों ॥ और प्रभुताई सब कहांलौं बखानौं, प्रतिहारिनकी भीर भूप टरत न द्वारे सों ॥ गंगाजूमें न्हाय मुकताहल लुटाय वेद, बीस बार गाय ध्यान कीजत सकारे सों ॥ ऐसेही भये तो कहा कीन्हों रसखान जु पै, चित्त दै न कीन्हीं प्रीति पीत पटवारे सों ॥ १७४ ॥

श्रीरामचंद्रजीके कवित्त।



सवैया।

अवधेशके द्वारे सकारे गई सुत गोदमें भूपति लै निकसे ॥
अवलोकि हौं शोचविमोचनको ठगि सी रही जो न ठगे धिकसे॥
तुलसी मनरंजन रंजित अंजन नैन सु खंजन जात कसे ॥
सजनी शशिमें समशील उभै नवनील सरोरुहसे विकसे ॥१७६॥
पग नूपुर औ पहुँची कर कंजन मंजु बनी मणिमाल हिये ॥
नव नील कलेवर पीत झँगा झलकैं पुलकैं नृप गोद लिये ॥
अरविंद सो आनन रूप मरंद अनंदित लोचन भृंग पिये ॥
मनमें न बस्यो ऐसो बालक जो तुलसी जगमें फलको न जिये ॥
तनुकी दुति श्याम सरोरुह लोचन कंज कि मंजुलताइ हरैं ॥
अति सुन्दर सोहत धूर भरे छबि भूरि अनंग कि दूर धरैं ॥
दमकैं दतियां दुतिदामिन ज्यों किलकैं कलबाल बिनोद करैं ॥
अवधेशके बालक चारि सदा तुलसी मन मंदिरमें विहरैं॥१७७॥
कबहूं शशि मानत आरि करैं कबहूं प्रतिबिंब निहारि डरैं ॥
कबहूं करताल बजाय कै नाचत मातु सबै मन मोद भरैं ॥
कबहूं रिस आइ कहैं हठिकै पुनि लेत सोई जिहिं लागि अरैं ॥
अवधेशके बालक चारि सदा तुलसी मन मंदिरमें बिहरैं॥१७८॥
पदकंजन मंजु बनीं पनहीं धनुहीं शर पंकजपाणि लिये ॥
लरिका सँग खेलत डोलत हैं सरयूतट चौहट हाट हिये ॥
तुलसी अस बालक सों नहिं नेह कहा जप योग समाधि किये ॥
नर वे खर शूकर श्वान समान कहौ जगमें फल कौन जिये १७९॥
सरयू बर तीरहिं तीर फिरैं रघुवीर सखा अरु वीर सबै ॥

धनुहीं कर तीर निषंग कसे कटि पीत दुकूल नवीन फबै ॥
तुलसी तेहि औसर लावणिता दश चार नौ तीन एकीस सबै ॥
मति भारति पंगु भई जो निहारि विचारि फिरी उपमा न फबै ॥ १८० ॥

कवित्त।

लोचनाभिराम घनश्याम रामरूप शिशु, सखी कहै सखिन-सों प्रेमपथ पालि री ॥ बालक नृपालजूके ख्याल ही पिनाक तोरचो, मंडलीक मंडली प्रताप दाप दालि री ॥ जनकको सिया-को हमारो तेरो तुलसीको, सबको भाव तो हैहै मैं जो कह्यो काल री ॥ कौशला की कोखि पर्तोषि तनु वारिये री, राय दशरत्थकी बलाय लीजै आलि री ॥ १८१ ॥

दूब दधि रोचना कनकथार भर भर, आरती सँवार वर नारि चलीं गावतीं ॥ लीने जयमाल करकंज सोहै जानकीके, पहिरावो राघोजीको सखियां सिखावतीं ॥ तुलसी मुदित मन जनक नगर जन, झांकतीं झरोखे लागी शोभा रानी पावतीं ॥ मनहुँ चकोरी चारु बैठीं निज निज नीड़, चंदकी किरन पीवें पलको न लावतीं ॥ १८२ ॥

भले भूप कहत भले संदेश भूपन सों, लोक लखि बोलिये पुनीत रीत मारखी ॥ जगदम्बा जानकी जगतपितु रामचन्द्र, जान जिय जोहो जो न लागै मुख कारखी ॥ देखेहै अनेक ब्याह सुने हैं पुराण वेद, बूझेहैं सुजान साधु नर नारि पारखी ॥ ऐसे सम समधी समाज न विराजमान, रामसे न वर दुलही न सीय सारखी ॥ १८३ ॥

सवैया।

दूलह श्रीरघुनाथ बने दुलही सिय सुन्दर मंदिर माहीं ॥
गावत गीत सबै मिल सुन्दरि वेद युवा जुरि विप्र पढाहीं ॥

रामको रूप निहारत जानकी कंकणके नगकी परछाहीं ॥
याते सबै सुधि भूल गई कर टेक रही पल टारत नाहीं ॥१८४॥
गर्भके अर्भक काटनको पटु धार कुठार कराल है जाको ॥
सोइ हौं बूझत राजसभा धनुके दलि हौं दलि हौं बल ताको ॥
लघु आनन उत्तर देत बडे लरि है मरि है करि है कछु साको ॥
गोरो गरूर गुमान भरचो कहोकौशिक छोटोसो ढोटोहै काको१८५

कवित्त ।

मख राखबेके काज राज मेरे संग, दये दले यतुधान जे जितैया विबुधेश के ॥ गौतमकी तीय तारी मेटे अघ भूरिभारी, लोचन अतिथि भये जनक जनेश के ॥ चंड बाहु दंड बल चंडीशकोदंड खंडचो, ब्याही जानकी नरेश जीते देश देश के ॥ साँवरे गोरे शरीर धीर महावीर दोऊ, नाम राम लषण कुमार कोशलेशके ॥ १८६ ॥

सवैया ।

काल कराल नृपालनके धनुभंग सुने फरशा लिये धाये ॥
लक्ष्मण राम विलोकि सप्रेम महा रिसहा फिरि आँखि दिखाये ॥
धीर शिरोमणि वीर बडे विनयी विजयी रघुनाथ सुहाये ॥
लायक हौ भृगुनायक सो धनु सायक सौंपि सुभाय सिधाये १८७
कीरके कागर ज्यों नृप चीर विभूषण उप्पम अंगनि पाई ॥
औध तजी मग वासके रूख ज्यों पंथ के साथ में लोग लुगाई ॥
संग सुबंधु पुनीत प्रिया मानो धर्म क्रिया धर देह सुहाई ॥
राजिवलोचन राम चले तजि बापको राज बटाऊकी नाई १८८॥
कागर कीर ज्यों भूषण चीर शरीर लस्यो तज नीर ज्यों काई ॥
मातु पिता प्रिय लोग सबै सनमान सुभाये सनेह सगाई ॥

संग सुभामिनि भाय भलो दिन है जनु अवधहु ते पहुनाई ॥
राजिव लोचन राम चले तजि बापको राज बटाऊकी नाई१८९॥

कवित्त ।

शिथिल सनेह कहैं कौशला सुमित्रा जू सों, मैं न लखी सौति सखी भगिनी ज्यों सेई है । कहैं मोहिं मैया मैं न मैया आलि भरत की, बलैयां लेहौं भैया तेरी मैया कैकेई है ॥ तुलसी सरल भाय रघुराय माय मानी, काय मन बानी हूं न जानके मतेई है । वास विधि मेरो सुख सिरिस सुमनसम, ताको छल छुरी कोह कुलिश लै टेई है ॥१९०॥ कीजे कहा जीजे जु सुमित्रा परि पांय कहे, तुलसी सहावै विधि सोई सहियत है । गवरो सुभाव राम जन्म हीते जानियत, भरत कि मात को कीबो सो चहियत है ॥ जाई राजघर ब्याही आई राजघर, महाराज पूत याहू पै न सुख लहियत है । देह सुधा गेह ताहि मृगने मलीन कियो, ताहू पर चाहु बिन राहु गहियत है ॥ १९१ ॥

सवैया ।

नाम अजामिलसे खल कोटि अपार नदीभव बूडत काढे ॥
जो सुमिरे गिरि मेरु शिलाकन होते अजा खुर वारिधि बाढे ॥
तुलसी जेहिके पदपंकज ते प्रगटी तटनी जो हरै अघ गाढे ॥
ते प्रभु या सरिता तरबे कहँ मांगत नाव किनारे है ठाढे ॥१९२॥
यहि घाट ते थोरिक दूर अहै कटिलों जल थाह दिखाइहौं जू ॥
परसे पग धूरि तरै तरनी घरनी घर क्यों समुझाइहौं जू ॥
तुलसी अवलंब न और कछू लरिका केहि भाँति जियाइहौं जू ॥
बरु मारिये मोहिं बिना पग धोये हौं नाथ न नाव चढाइहौं जू१९३
रावरे दोष न पाँयनको पगधूरिको भूरि प्रभाउ महा है ॥
पाहन ते बलवान न काठको कोमल ह्वै जल खाइ रहा है ॥

तुलसी सुन केवटके वर बैन हँसे प्रभु जानकि ओर हहा है ॥
पावन पाँय पखारिकै नाउ चढाय हौं आयसु होत कहाहै१९४॥

कबित्त ।

पात भरी सहरी सकल सुत बारे बारे, केवटकी जाति कछु वेद न पढायहौं । सब परिवार मेरो याही लगि राजा जी, हौं दीन वित्त हीन कैसे दूसरी गढायहौं ॥ गौतमकी वरनी ज्यों तरनी तरैगी मेरी, प्रभुसों निषाद ह्वैके बाद ना बढायहौं । तुलसीके ईश राम रावरे सों सांची कहौं, बिना पग धोये नाथ नाव न चढायहौं ॥ १९५ ॥

जिनको पुनीत वारि शिरसि बहै पुरारि, त्रिपथ गामिनी यश वेद कहैं गायकै । जिनको योगींद्र मुनि वृन्द देव देह दम, करत विविध योग जप मन लायकै ॥ तुलसि जिनकी धूरि परसि अहल्या तरी, गौतम सिधारे गृह गौनो सो लिवायकै । तेई पाँय पायके चढाय नाव धोये बिनु, ख्वैहौं न पठावनीकै ह्वैहों न हँसायकै ॥ १९६ ॥

प्रभु रुख पायकै बोलाय बाल वरनीको, वंदिकै चरण चहुँ दिशि बैठे घेर घेर ॥ छोटो सो कठौता भर आन पानी गंगाजूको, धोय पांय पियत पुनीत वारि फेर फेर ॥ तुलसी सरा हैं ताको भाग सानुराग सुर, बरषैं सुमन जय जय कहैं टेर टेर । विबुध सनेह सानी बानी असमानी सुन हँसे राघो जानकी लषण तन हेर हेर ॥ १९७ ॥

सवैया ।

जलको गये लक्ष्मणहैं लरिका परखौ पिय छांहिंघरीकहै ठाढे॥
पोंछि पसेउ बयारि करों अरु पांय पखारिहौं भूभुर डाढे ॥
तुलसी रघुबीर पिया श्रम जानिकै बैठि विलंब सों कंटक काढे ॥
जानकी नाहको नेह लख्यो पुलकी तनु वारि विलोचन बाढे१९८॥

ठाढ़े हैं नव द्रुम डार गहे धनु कांधे धरे कर सायक लै ॥
बिकटी भ्रुकुटी बड़री अँखियां अनमोल कपोलनकी छबिहै ॥
तुलसी ऐसी मूरति आनु हिये जड़ डारधौं प्राण निछावरिकै ॥
श्रम सीकर साँवरि देह लसै मानो रासि महातम तारकमैं॥१९९॥

कवित्त।

जलज नयन जलजानन जटा हैं शिर,यौवन उमंग अंगउदित उदार हैं। साँवरे गोरेके बीच भामिन सुदामिनी सी,मुनि पट धरे उर फूलनके हारहैं॥सरन सरासन शिलीमुख निषंग कटि,अतिही अनूप काहू भूपके कुमार हैं॥तुलसी बिलोकके तिलोकके तिलक तीन, रहे नर नारि ज्यों चितेरे चित्र सार हैं ॥ २०० ॥

आगे सोहै साँवरो कुँवर गोरो पाछे आछे, आछे मुनिवेष धरे लाजत अनंग है । बान बिशिखासन बसन बनहीं के कटि,कसेहैं बनाय नीके राजत निषंग है ॥ साथ निशिनाथमुखी पाथ नाथ नंदनी सी,तुलसी बिलोके चित लाइलेत संग है ॥ आनंद उमंग मन यौवन उमंग तनु, रूपकी उमंग उमगत अंग अंगहै॥२०१॥

सुन्दर बदन सरसीरुह सोहाये नैन, मंजुल प्रसून माथे मुकुट जटनके ॥ असन शरासन लसत शुचि शर कर, तूण कटि मुनि पट लूटक पटनके ॥ नारि सुकुमारि संग जाके अंग उबटके, विधि विरचैं बरूथ विद्युत छटनके । गोरेको बरन देख सोनो न सलोनो लागे, सांवरो बिलोके गर्व घटत घटनके ॥ २०२ ॥

वल्कल बसन धनु बान पाणि तूण कटि, रूपके निधान घन दामिनी बरन हैं ॥ तुलसी सुतीय सँग सहज सोहाये अंग, नवल कमलहू ते कोमल चरन हैं। औरै सो बसन्त और रति औरै रतिपति, मूरति बिलोके तन मनके हरन हैं ॥ तापस बनाये वेष पथिक पंथै सोहाये, चले लोकलोचनन सुफल करन हैं ॥२०३॥

सवैया ।

बनिता बनि श्यामल गोरके बीच विलोकहु री सखि मोंहिंसी ह्वै ॥ मग योग न कोमल क्यों चलिहैं सकुचात मही पदपंकज ह्वै ॥
तुलसी सुन ग्रामवधू विथकीं पुलकी तनु औ चले लोचन ह्वै ॥
सब भाँति मनोहर मोहनरूप अनूप हैं भूपके बालक द्वै ॥२०४॥
साँवरे गोरे सलोने सुभाय मनोहरता जित मैंन लियो है ॥
बान कमान निषंग कसे शिर सोहैं जटा मुनि वेष कियो है ॥
संग लिये विधु वैनी वधू रतिको जेहिं रंचक रूप दियो है ॥
पाँयन तो पनहीं न पयादेहिं क्यों चलिहै सकुचात हियो है२०५॥
रानी मैं जानी अयानी महा पवि पाहन हूँ ते कठोर हियो है ॥
राजहु काज अकाज न जान्यो कह्यो तियको जिहि कान कियोहै ॥
ऐसी मनोहर मूरति ये बिछुरे कैसे प्रीतम लोग जियो है ॥
आँखिनमें सखि राखबे योग इन्हें किमिके वनवास दियोहै२०६॥
शीश जटा उर बाहु विशाल विलोचन लाल तिरीछी सी भौंहैं ॥
तूण शरासन बाण धरे तुलसी वन मारगमें सुठि सोहैं ॥
सादर बारहिं बार सुभाय चितै तुम त्यों हमरो मन मोहैं ॥
पूँछत ग्रामवधू सिय सों कहो सांवरो सो सखि रावरो को हैं२०७
सुन सुन्दर वैन सुधारस साने सयानी हैं जानकी जान भली ॥
तिरछे कर नैन दे सैन तिन्हें समुझाय कछू मुसकाय चली ॥
तुलसी तेहि औसर सोहैं सबै अवलोकति लोचन लाहु अली ॥
अनुराग तड़ागमें भानु उदै विकसी मानौं मंजुल कंजकली २०८
धर धीर कहैं चल देखिय जाय जहाँ सजनी रजनी रहि हैं ॥
कहि है जग पोच न शोच कछू फल लोचन आपन तौ लहि हैं॥
सुख पाय हैं कान सुने बतियां कल आपुसमें कछु पै कहि हैं ॥
तुलसी अतिप्रेम लखी पुलकैं पुलकी लखि राम हिये महिहैं२०९॥

पद कोमल श्यामल गौर कलेवर राजत कोटि मनोज लजाये ॥
वर बाण शरासन शीश जटा सरसीरुह लोचन सोन सोहाये ॥
जिन देखे सखी सतभावहुते तुलसी तिन तौ मन फेरि न पाये ॥
यहिमारगआज किशोर वधूविधुबैनीसमेत सुभावसिधाये॥२१०॥
मुख पंकज कंज विलोचन मंजु मनोज शरासन सी बनी भौंहैं ॥
कमनीय कलेवर कोमल श्यामल गौर किशोर जटा शिर सोहैं ॥
तुलसी कटि तूण धरे धनु बाण अचानक दृष्टि परी तिरछे हैं ॥
केहिभाँतिकहौंसजनी तोहिसों मृदुमूरतिद्वैनि बसीमनमोहैं २११॥
शर चारिक चारु बनाय कसे कटि पाणि शरासन सायक लै ॥
वन खेलत राम फिरैं मृगया तुलसी छबि सो वरणै किमिकै ॥
अवलोक अलौकिक रूप मृगी मृग चौंक चकै चितवै चित दै ॥
न डगै न भगै जियजान शिलीमुख पंच धरे रतिनाह कहै २१२॥
पंचवटी वर पर्णकुटी तर बैठे हैं राम सुभाय सुहाये ॥
सोहै प्रिया प्रिय बन्धु लसै तुलसी सब अंग घने छबि छाये ॥
देख मृगा मृगनैनी कहे प्रिय बैन ते प्रीतमके मन भाये ॥
हेम कुरंग के संग शरासन सायक लै रघुनायक धाये ॥२१३॥

कवित्त।

देख ज्वालाजाल हाहाकार दशकन्ध सुनि, कह्यो धरो धरो धाये बीर बलवान हैं ॥ लिये शूल शैल पाश परिघ प्रचंड दंड, भाजन सनीर धीर धरे धनु बान हैं ॥ तुलसी समिध सौंज लंक यज्ञकुंड लखि, यातुधान पूंगीफल यव तिल धान हैं ॥ स्रुवा से लँगूर बल मूल प्रतिकूल हवि, स्वाहा महा हांक हांक हन हनुमान हैं ॥ २१४ ॥ बडो बिकराल वेष देख सुन सिंह नाद, उठ्यो मेघनाद सबिषाद कहे रावनो ॥ वेग जितो मारुत प्रताप मार-तण्ड कोटि, कालऊ करालता बडाई जितो बावनो ॥ तुलसी

सयाने यातुधाने पछिताने कहैं, जाको ऐसो दूत सो तो प्रभु अबै आवनो ॥ काहेकी कुशल रोषे राम वामदेव हूँ की, विषम बली सों वादि बैरको बढावनो ॥ २१५ ॥

हाट बाट कोट ओट अटन अगार पौंर, खोर खोर दौर दौर दीनी अति आगि हैं ॥ आरत पुकारत सँभारत न कोऊ काको, व्याकुल जहाँ सों तहाँ लोक चले भागि हैं ॥ बालधी फिरावै बार बार झहरावै झरैं बूँदिया सी लंक पविलाई पागि पागि हैं ॥ तुलसी विलोकि अकुलानी यातुधानी कहैं, चित्रहूके कपि सों निशाचर न लागि हैं ॥ २१६ ॥

आय हनुमान प्राण हेतु अंकमाल देत, लेत पग धूरि एक चूँबत लंगूर है । एक बूझे बार बार सीय समाचार कहौ, पवनकुमार भो विगत श्रम शूल है । एक भूँखे जान आगे आन कन्द मूल फल, एक पूजे बाहु बल मूल तोर फूल है ॥ एक कहै तुलसी सकल सिधि ताके जाके, कृपानाथ नाथ सीतानाथ सानुकूल है॥२१७॥

सवैया ।

विश्व जयी भृगुनायक से बिनु हाथ भये हनि हाथ हजारी ॥
बातुल मातुलकी न सुनी सिख का तुलसी कपि लंक न जारी ॥
अजहूँ तौ भलो रघुनाथ मिलें फिर बुझिहै को गज कौन गजारी ॥
कीर्ति बडो करतूति बडो जन बात बडो सो बडोई बजारी २१८॥

कवित्त ।

दूषण विराध खर त्रिशिरा कवन्ध वधे, तालहू विशाल बेधे कौतुक है कालिको ॥ एकही विशिष वश भयो वीर बांकुरो सो, तहूं है विदित जस महाबली बालि को ॥ तुलसी कहत हित मानत न नेक शंक, मेरो कहा जैहै फल पैहै तू कुचालि को ॥ वीरजाति

केसरी कुठारपाणि मानी हार, तेरी यहा चली बूडे तोसे गने घालिको ॥ २१९ ॥

सवैया।

तोसों कहों दशकंधर रे रघुनाथ विरोध न कीजिय बोरे ॥
वालि बली खर दूषण और अनेक गिरे जेते भीतिमें दौरे ॥
ऐसिय हाल भई तोहि कौन तो लै मिलु सीय चहै सुख जोरे ॥
रामके रोष न राखि सकै तुलसी विधि श्रीपति शंकर सोरे॥२२०॥
तू रजनीचरनाथ महा रघुनाथके सेवकको जन मैं हौं ॥
बलवानहै श्वान गली अपनी तोहि लाज न गाल बजावत सो हौं॥
बीस भुजा दश शीश हरौं न डरौं प्रभु आयसु भंग ते जो हौं ॥
खेतमें केहरी ज्यों गजराज दलौं दल बालिको बालक तो हौं२२१॥
कौशलराजके काज हौं आज त्रिकूट उपारि लै वारिधि बोरौं ॥
त्यों भुजदंड द्वै अंडकटाह चपेटके चोट चटाक दै फोरौं ॥
आयसु भंगते जो न डरौं सब मींजि सभासद शोणित घोरौं ॥
बालिको बालक तो तुलसी दशहू मुखके रणमें रद तोरौं॥२२२॥
अतिकोपसों रोप्यो है पाउँ सभा सबलंक सशंकित शोर मचा ॥
तमके घननाद से बीर प्रचारके हार निशाचर सैन पचा ॥
न टरे पग मेरुहु ते गरु भो सो मनौं महिसंग विरंचि रचा ॥
तुलसी सब शूर सराहत हैं जगमें बलशालि है वालि बचा॥२२३॥

झूलना।

कनकगिरि शृङ्ग चढि देख मर्कट कटक वदत मंदोदरी परम भीता॥सहजभुज मत्त गजराज रण केशरी परशुधर गर्व जेहि देख बीता॥दास तुलसी समर सबल कौशल धनी ख्याल ही बालि बलशालि जीता ॥ रे कन्त तृण दन्तगहि शरन श्रीराम कहि अजहुं यहि भांति लै सौंप सीता ॥ २२४ ॥

रे नीच मारीच बिचलाय हति ताडका भंजि शिवचाप सुख सबहि दीनो ॥ सहस दसचार खल सहित खर दूषणहि पठै यम धाम तैं तउ न चीनो॥मैं जो कहों कन्त सुन मन्त भगवन्त सों विमुख ह्वै बालि फल कौन लीनो ॥ बीस भुज शीश दश खीस गे तबहिं जब ईशके ईश सों बैर कीनो ॥ २२५ ॥

बालि दलि कालि जलयान पाषान किये कंत भगवंत तैं तब न चीने ॥ विपुल बिकराल भट भालु कपि कालसे संग तरु तुंग गिरि शृंग लीने॥आयगो कौशलाधीश तुलसीश जिहँ छत्र मिस मौलि दश दूर कीने॥ईश बकसीस जनि खीस करु ईश सुनु अजहुँ कुल कुशल वैदेहि दीने ॥ २२६ ॥

कबित्त ।

कह्यो मत मातुल विभीषण हुँ बार बार, अंचल अपार पिय पांय लैल ह्वौं परी ॥ विदित विदेहपुर नाथ भृगुनाथ गति, समय सयानी कीनी जैसी आइ गौं परी ॥ वायस विराध खर दूषण कबंध वाली, वैर रघुवीरके न पूरी काहूकी परी॥कंत बीस लोचन विलोकिये कुमंत फल, ख्याल लंका लाय कपि रांड कीसी झोंपरी ॥ २२७ ॥

रोषो रण रावण बोलाये बीर वान इत, जानत जे रीति सब संयुग समाज की ॥ चली चतुरंग चमू चपर हने निसान, सैना सरहान योग रातिचर राज की ॥ तुलसी विलोक कपि भालु किलकत ललकत लख ज्यो कगाल पातरी सुनाज की ॥ राम रुख निरख हरष्यो हिय हनुमान मानों, खेलवारे खोलो शीश ताज बाज की ॥ २२८ ॥

हाथिन सों हाथी मारे घोरों सों घोरे संहारे,रथन सों रथ विद-रानि बलवानकी ॥ चंचल चपेट चोट चरण चकोर चाहैं, दाबि

इहरानी फौजें भारी यतुधानकी ॥ बार बार सेवक सराहना करत राम, तुलसी सराहै रीति साहब सुजानकी ॥ लांबी लूम लसत लपेट पटकत भट, देखो देखो लषण लरनि हनुमानकी ॥२२९॥

सवैया।

कानन बास दशानन सो रिपु आननश्री शशि जीतलियोहै ॥
बालि महा बलशालि दल्यो कपिपाल विभीषण भूप कियो है ॥
तीय हरी अरु बंधु पर्यो पै भर्यो शरणागत शोच हियो है ॥
बांहपसार उदार कृपाल कहां रघुवीर सों बीर बियो है ॥ २३० ॥
शोकसमुद्र निमज्जन काढि कपीश कियो जग जानत जैसो ॥
नीच निशाचर बैरीको बंधु बिभीषण कीनो पुरंदर तैसो ॥
नाम लिये अपनाय लियो तुलसी सो कहो जग कौन अनैसो ॥
आरत आरतिभंजन राम गरीबनेवाज न दूसर ऐसो ॥ २३१ ॥
मीत पुनीत किये कपिभालुको पाल्यो नकाहू ज्यों बालतनूजो ॥
सज्जनसींव विभीषण भो अजहू बिलसै बर बंधु बधू जो ॥
कोशलपाल बिना तुलसी शरणागतपाल कृपालु न दूजो ॥
कूर कुजाति कुपूत अघी सबकी सुधरै जो करै नर पूजो ॥२३२॥
अपराध अगाध भये जन ते अपने उर आनत नाहिंन जू ॥
गणिका गज गीध अजामिल के गनि पातकपुंज सराहि न जू ॥
लिये बारक नाम सुधाम दियो जिहि धाम महामुनि जाहिं न जू॥
तुलसी भजु दीनदयालहि रे रघुनाथ अनाथहि दाहिनजू॥२३३॥
प्रभु सत्य करी प्रहलाद गिरा प्रगटे नर केहरि खंभ महां ॥
झषराज ग्रस्यो गजराज कृपा ततकाल बिलम्ब किये न तहां ॥
सुर साखी दै राखी है पांडुबधू पट लूटत कोटिक भूप जहां ॥
तुलसी भज शोचविमोचनको जनको प्रण राम न राख्यो कहां२३४
नर नारि उघारि सभामहँ होत दियो पट शोच हर्यो मनको ॥

प्रहलाद विषाद निवारन बारण तारण मीत अकारनको ॥
जो कहावत दीनदयालु सही जेहि भार सदा अपने पनको ॥
तुलसी तज आन भरोस भजै भगवान भलो करिहैं जनको २३५॥
ऋषिनारि उधारि कियो शठ केवट मीत पुनीत सुकीर्ति लही ॥
निजलोक दियो शबरी खगको कपि थाप्यो सो मालुमहै सबही ॥
दशशीश विरोध सभीत विभीषण भूप कियो जग लीक रही ॥
करुणानिधिको भजु रे तुलसी रघुनाथ अनाथके नाथ सही२३६॥
कौशिक विप्र वधू मिथिलाधिपके सब शोच दले पलमाहैं ॥
बालि दशानन बंधु कथा सुन शत्रु सुसाहिब शील सराहैं ॥
ऐसी अनूप कहैं तुलसी रघुनायककी अगुनी गुनगाहैं ॥
आरत दीन अनाथनको रघुनाथ करैं निज हाथन छाहैं ॥ २३७॥

कवित्त ।

यातुधान भालु कपि केवट विहंग जो जो पालो नाथ सद्य मो सो भयो कामकाजको ॥ आरत अनाथ दीन मलिन शरण आये राखे सनमान सों सुभाउ महाराजको ॥ नाम तुलसी पै भोंडे भाग सों कहायो दास किये अंगीकार ऐसे बडे दागाबाज को ॥ समर्थ दशरत्थके दयाल देव दूसरो न तोसों तुही आपनेकी लाज को ॥ २३८ ॥

महाबलि बालि दलि कायर सुकंठ कपि सखा किये महाराज हौं न काहू कामको॥भ्रातघात पातकी निशाचर शरन आये किये अंगीकार नाथ एते बडे वामको ॥ राय दशरत्थके समर्थ तेरे नाम लिये तुलसीसे कूर को कहत जग रामको ॥ अपने निवाजे की तो लाज महाराज को सुभाउ समुझत मन मुदित गुलामको ॥ २३९ ॥

रूप शील सिंधु गुण सिंधु बन्धु दीनको, दयानिधान जान मणि बीर बाहु बोलको॥श्राद्ध कियो गीधको सराहे फल शबरीके, शिला शाप सबन निबाह्यो नेह कोलको॥तुलसी उचाउ होत राम को सुभाउ सुनि, को न बलि जाय न बिकाय बिन मोल को॥ ऐसे हूँ सुसाहिब सों जाको अनुराग न, सो बड़ाई अभागो भाग जागो लोभ लोलको॥ २४०॥

शूर शिरताज महाराजनके महाराज, जाको नाम लेतही सुखेत होत ऊसरो॥ साहिब कहां जहान जानकीश सो सुजान, सुमिरे कृपालुके मराल होत खूसरो॥ केवट पषाण यातुधान कपि भालु तारे, अपनायो तुलसी सो धींग धम धूसरो॥ बोलेको अटल बांह को पगार दीनबंधु, दूबरोको दानी को दयानिधान दूसरो॥२४१॥

कीबे को विशोक लोक लोक पालहू ते सब, कहूं कोऊ भो न चरवाहो कपि भालु को। पविको पहार कियो ख्याल ही कृपालु राम, बापुरो विभीषण घरोंधा हुतो बालको॥ नाम ओट लेत ही निखोट होत खोटे खल, चोट बिन मोट पाय भयो न निहाल को। तुलसी की बार बलि ढील होत शीलसिंधु, बिगरी सुधारबे को दूसरो दयाल को॥ २४२॥

नाम लिये पूतको पुनीत कियो पातकीश, आरति निवारी प्रभु पाहि कहे फील की। छलिनकी छोडी सी निगोडी छोटी जाति पांति, कीनी लीन आपमें भामिनी भोंड भीलकी॥ तुलसी औतारबो बिसारबो न अन्त मोहुं, नीकी है प्रतीत रावरे सुभाव शीलकी॥ देव तो दयानिकेत देत दाद दीननकी, मेरी बार मेरेही अभाग नाथ ढीलकी॥ २४३॥

आगे परे पाहन कृपा किरात कोलन, कपीश निशिचर अपनाये नाये माथ जू। सांची सेवकाई हनुमानकी सुजान

राम रिनियां कहाये हो बिकाने ताके हाथ जू ॥ तुलसीसे खोटे खरे होत ओट नामहीकी, महंगी माटी मगहू की मृगमद साथ जू॥ बात चले बात कौन मानबो बिलग बलि, काकी सेवा रीझको निवाजो रघुनाथ जू ॥ २४४ ॥

शिला शाप पाप गुह गीध को मिलाप शेवरी के, पास आप चलिगये हौ सो सुनी मैं । सेवक सराह कपिनायक विभीषण को, भरत सभा सादर स्नेह सुरधुनी मैं ॥ आलसी अभागी अघी आरत अनाथ पाल, साहिब समर्थ कर नींके मन गुनी मैं ॥ दोष दुख दारिद दलैया दीनबन्धु राम, तुलसी न दूसरो दयानिधान दुनी मैं ॥ २४५ ॥

भूमिपाल व्यालपाल नाकपाल लोकपाल, नग्रत कृपालक मैं सबै के जी की थाह ली ॥ कादरको आदर काहूके नाहिं देखियत, सबन सोहात है सेवा सुजान टाहली ॥ तुलसी सुभाय कहै नहिं कछु पक्षपात, कौने ईश किये कीश भालु खास माहली ॥ रामहीके द्वारेपै बोलाय सनमानियत, मोसे दीन दूबर कपूत कूर काहली ॥ २४६ ॥

सवैया ।

जाके विलोकत लोकप होत विशोक लहै सुर्लोक सुठौरहिं ॥
सो कमला तजि चंचलता अरु कोटि कला रिझवै शिर मौरहिं ॥
ताको कहाय कहै तुलसी तुल जाहि न मांगत कूकर कौरहिं ॥
जानकी जीवनको जन है जरजाउ सो जीह जो जाचत औरहिं२४७

सुन कान दिये नित नेम लिये रघुनाथहिंके सुन गाथहिं रे ॥
सुख मन्दर सुन्दर रूप सदा उर आन धरे धनु भाथहिं रे ॥
रसना निशिबासर सादर सो तुलसी जर जानकी नाथहिं रे ॥
कर संग सुसंतनसों नितही तज कूर कुपंथ कुसाथहिं रे ॥२४८॥

सुत दार अगार सखा परिवार विलोक महा कुसमाजहिं रे ॥
सबकी ममता तजिकै समता सज संत सभान बिराजहिं रे ॥
नर देह कहा कर देख विचार बिगार गवाँर न काजहिं रे ॥
जनि डोलहि लोलुप कूकर ज्यों तुलसी भज कोशलराजहिं रे २४९
जनम्यो जेहि योनि अनेक क्रिया सुखलाग करी न परै बरनी ॥
जननी जनकादि हितू भये भूरि बहोरि भई उर की जरनी ॥
तुलसी अब रामको दास कहाय हिये धर चातककी धरनी ॥
कर हंसको वेश बडो सबसे तज दे बक वायसकी करनी ॥२५०॥
भल भारत भूमि भले कुल जन्म समाज शरीर भलो लहिकै ॥
ममता करखा तजिकै बरखा हिम मारुत घाम सदा सहिकै ॥
भजि है भगवान सयान सोई तुलसी हठ चातक ज्यों गहिकै ॥
नत और सबै विषबीज बुये हर हाटक कामधुका नहिकै ॥२५१॥
सो सुकृती शुचि संत सुमन्त सुजान सुशील शिरोमणि स्वै ॥
सुर तीरथ तासु मनावत आवत पावन होत हैं ता तन छ्वै ॥
गुनगेह सनेह को भाजन सो सबही सों उठाय कहों भुज द्वै ॥
सतभाव सदा छलछाँडि सबै तुलसी जो रहै रघुवीर को ह्वै ॥२५२॥
सो जननी सो पिता सोई भ्रात सो भामिनि सो सुत सो हित मेरो ॥
सोई सगा सो सखा सोई सेवक सो गुरु सो सुर साहिब चेरो ॥
सो तुलसी प्रिय प्रानसमान कहाँलौं बनाय कहों बहुतेरो ॥
जो तज देहको गेहको नेह सनेह सों रामको होय सचेरो॥२५३॥
राम है मातु पिता सुत बंधु औ संगी सखा गुरु स्वामि सनेही ॥
राम की सौंह भरोसो है राम को राम रँगी रुचि राचो नकेही ॥
जीवत राम मुये पुनि राम सदा रघुनाथहिं की गति जेही ॥
सोई जिये जगमें तुलसी नतु डोलत और मुये धर देही ॥ २५४ ॥
सिय राम स्वरूप अगाध अनूप विलोचन मीनन को जल है ॥

श्रुति रामकथा मुख रामको नाम हिये पुनि रामहिको थल है ॥
मति रामहिं सों गति रामहिं सों रति राम सों रामहिं को बल है ॥
सबकी न कहै तुलसीके मते इतनो जग जीवनको फलहै ॥२५५॥
झूठो है झूठो है झूठो सदा जग संत कहंत न अंत लहा है ॥
ताको सहै शठ संकट कोटिक काढ़त दंत करंत हहा है ॥
जान पने को गुमान बडो तुलसी के बिचार गवाँर महा है ॥
जानकीजीवन जान न जान्यो तो जान कहावत जान कहाहै२५६
तिनते खर सूकर श्वान भले जड़ता वश ते न कहैं कछु वै ॥
तुलसी जिहि राम सों नेह नहीं सो सही पशु पूछ विषाण न द्वै ॥
जननी कत भार मुई दसमास भई किन बांझ गई किन च्वै ॥
जरिजाउ सो जीवन जानकीनाथ जिये जगमें तुम्हरो बिन ह्वै २५७
गज वाजि घटा भले भूरि भटा बनिता सुत भौंह तकै सब कै ॥
धरनी धन धाम शरीर भला सुरलोकहू चाहि इहै सुख स्वै ॥
सब फोटुक सोटुक है तुलसी अपनो न कछू सपनो दिन द्वै ॥
जरिजाउ सो जीवन जानकीनाथ जिये जगमें तुम्हरो बिन ह्वै २५८
सुरराज सो राजसमाज समृद्ध विरिंचि धनाधिप सो धन भो ॥
पवमान सो पावन सो यम सोम सो पूषन सो भवभूषन भो ॥
कर योग समाधि समीरन साधिके धीर बडो वशहू मन भो ॥
सबजाय सुभाय कहै तुलसी जो न जानकीजीवनको जन भो २५९
व्याल कराल महाविष पावक मत्त गयंदन के रद तोरे ॥
सासत संग चली डरपै हुते किंकर ते करनी मुख मोरे ॥
नेक विषाद नहीं प्रहलादहिं कारन केहरि के बल हो रे ॥
कौनकी त्रास करै तुलसी जोपै राखिहै राम तौ मारिहै को रे २६०
कृपा जेहि की कछु काज नहीं न अकाज नहीं जेहिको मुख मोरे ॥
करै तिनकी परवाहि को जाहि विषाण न पूंछ फिरै दिन दोरे ॥

तुलसी जिहिके रघुवर से नाथ समर्थ सो सेवक रीझत थोरे ॥
कहा भव भीर परी तिहिं धौं विचरै धरनी तिनसों तृण तोरे २६१॥
कानन भूधर वारि बयारि महाविष व्याधि दवा अरि घेरे ॥
संकट कोटि जहां तुलसी सुत मात पिता हित बंधु न नेरे ॥
राखि है राम कृपाल तहां हनुमान से सेवक हैं जेहि केरे ॥
नाक रसातल भूतलमें रघुनायक एक सहायक मेरे ॥ २६२ ॥
जबै यमराज रजायसु ते मोहिं लै चलि हैं भट बांधि नटैया ॥
तात न मात न स्वामि सखा सुत बंधु विशाल विपत्ति बटैया ॥
सासत घोर पुकारत आरत कौन सुनै चहुँओर डटैया ॥
एक कृपाल तहां तुलसी दशरत्थको नंदन बंदि कटैया ॥२६३॥
जहां यम यातन घोर नदी भट कोटि जलचर दंत टवैया ॥
जहां धार भयंकर वार न पार न बोहित नाव न मीत खेवैया ॥
तुलसी जहां मात पिता न सखा नहीं कोऊ कहू अवलंब देवैया ॥
तहां बिनका रन रामकृपाल विशाल भुजा गहि काढि लेवैया २६४
जहां हित स्वामि न संग सखा वनिता सुत बंधु न बाप न मैया ॥
काय गिरा मनके जनके अपराध सबै छल छांडि छमैया ॥
तुलसी तेहिकाल कृपाल विना दूजो कौन है दारुन दुःख दमैया॥
जहां सब संकट दुर्घट सोच तहां मेरो साहिब राखै रमैया॥२६५॥
जप जोग विराग महामख साधन दान दया दम कोटि करै ॥
मुनि सिद्ध सुरेश गणेश महेश से सेवत जन्म अनेक मरै ॥
निगमागम ज्ञान पुरान पढै तपसानल में जुगपुंज जरै ॥
मन सो पन रोपि कहै तुलसी रघुनाथ विना दुख कौन हरै॥२६६॥
पाप हरै परिताप हरै तन पूजि भो हीतल शीतलताई ॥
हंस कियो बक ते बलि जाऊँ कहां लौं कहौं करुना अधिकाई ॥
काल विलोक कहै तुलसी मनमें प्रभुकी परतीति अघाई ॥

जन्म जहां तहँ रावरेसों निबहै भरि देह सनेह सगाई ॥ २६७ ॥
लोक कहै अस हौंहुँ कहौं जन खोटो खरो रघुनायक ही को ॥
रावरी राम बडी लघुता जश मेरो भयो सुखदायक ही को ॥
कै यह हानि सहो बलि जाउँ कि मोहू करो निजलायक ही को ॥
आन हिये हितमानकरो जो हौं, ध्यान धरौं धनुशायक ही को ॥२६८॥

कबित्त ।

छार ते सवार के पहार हू ते भारी कियो, गारो भयो पांचमें पुनीत पच्छ पाइ कै ॥ हौं तो जैसो तब तैसो अब अधमाइ कै कै, भरों पेट राम रावरोई गुन गाय कै ॥ आपने निवाज कीजे कीजे लाज महाराज, मेरी ओर हेर कै न बैठिये रिसाय कै ॥ पालके कृपाल ब्यालबाल को न मारिये, औ काटिये न नाथ विषहू को रूख लायकै ॥ २६९ ॥

वेदन पुरान गान जानो न विज्ञान ज्ञान, ध्यान धारना समाधि साधन प्रवीनता ॥ नाहिन विराग जोग जाग भाग तुलसीके, दया दान दूबरो हौं पापहीकी पीनता ॥ लोभ मोह काम कोह दोष कोष मो सो कौन, कलिहू जो सिखि लइ मेरी ये मलीनता ॥ एकही भरोसो राम रावरो कहावत हौं, रावरे दयाल दीनबंधु मेरी हीनता ॥ २७० ॥

रावरो कहावों गुन गावों राम रावरोई, रोटी द्वै हौं पावों राम रावरी ही कानि हौं ॥ जानत जहान मन मेरेहू गुमान बडो, मान्यो मैं न दूसरो न मानत न मानि हौं ॥ पांचकी प्रतीत न भरोसो मोहिं आपनोई, तुम अपना यहो तबहि पार जानिहौं ॥ गढगूढ छोल छाल कुंद कैसी भाई बातें, जैसी मुख कहौं तैसी जीय जब आनिहौं ॥ २७१ ॥

वचन विकार करतबहु खुआर मन, विगतविचार कलिमल-को निधान है ॥ रामको कहाय नाम बेंच बेंच खाय, साधसंगत न जाय पाछिलेको उपखान है ॥ तेहू तुलसीको लोग भलो कहै ताको पुनि, दूसरो न हेत एक नीके कै निदान है ॥ लोक-रीत विदित विलोकियत जहां तहां, स्वामिके सनेह श्वानहूको सनमान है ॥ २७२ ॥

स्वारथको साज न समाज परमारथको, मो सो दगाबाज दूसरो न जगजाल है ॥ कौन आयो करो न करैगो करतूति भली, लिखी न विरंचिहू भलाइ मोरे भाल है ॥ गवरी शपथ राम नाम हीकी गति मेरे, इहां झूँठो झूँठो सो तिलोक तिहूँकाल है ॥ तुलसी को भलो पै तुम्हारेही किये कृपाल, कीजै न विलंब बलि पानीभरी खाल है ॥ २७३ ॥

रागको न साज न विराग जोग जाग जिय, कायर न छांडि-देत ठाटिवो कुठाट को ॥ मनोराज करत अकाज भयो आज लग, चाहै चारु चीर पै लहै न टूक टाट को ॥ भयो करतार बडे कूरको कृपाल अति, पायो नाम पारस हौं लालची बराट को ॥ तुलसी बनी है राम रावरे बनाये न तो, धोबी कैसो कूकर न घरको न घाटको ॥ २७४ ॥

सब अँग हीन सब साधन विहीन मन, वचन मलीन हीन कुल करतूति हौं ॥ बुधि बल हीन भाव भगति विहीन दीन, गुन ज्ञान हीन हीन भाग हू विभूति हौं ॥ तुलसी गरीबकी गई बहोर राम-नाम, जाहि जप जीह राम हूँ को बैठो धूति हौं ॥ प्रीत रामनामसों प्रतीत रामनामको, प्रसाद रामनाम के पसारि पायँ सूति हौं २७५॥

जोग न विराग जप जाग तप त्याग व्रत, तीरथ न धर्म जानों वेदविधि किमि है ॥ तुलसी सों पोच न भयो है नहिं ह्वै है

कहूँ, सोच सब याके अघ कैसे प्रभु छमि है ॥ मेरे तौ न डर रघुवीर सुनो साँची कहौं, खल अनखैहैं तुम्हे सज्जन न गमि है ॥ भले सुकृतीके संग मोहि तुला तौलिये तौ, नामके प्रसाद भार मेरी ओर नमि है ॥ २७६ ॥

जातिके सुजातिके कुजातिके पेटागि वश, खाये टूकसबकेविदित बात दुनी सो ॥ मानस वचन काय किये पाप सतभाय, रामको कहाय दास दगाबाज पुनि सो ॥ रामनामको प्रभाउ पाउ महिमा प्रताप तुलसी, सो जग मानियत महामुनि सो ॥ अतिही अभागे अनुरागत न रामपद, मूढ एतो बडो अचरज देख सुनीसो॥२७७॥

वेदहू पुरान कही लोकहूँ विलोकियत, रामनाम ही से रीझे सकल भलाई है ॥ काशीहूँ मरत उपदेशत महेश सोई, मधन अनेक चितई न चित लाई है ॥ छांछको ललात जेते रामनामके प्रसाद, खात खुनसात सोंधे दूधकी मलाई है ॥ रामराज सुनियत राजनीतकी अवधि, नाम राम रावरो तो चामकी चलाई है ॥ २७८ ॥

जपकी न तप खप कियो न कमाई जोग, जाग न विराग त्याग तीरथ न तनको ॥ भाईको भरोसो न खरोसो वर रिपूहू सो, बल अपनो न हित जननी जनक को ॥ लोकको न डर परलोकको न सोच, देवसेवा न सुहाई गर्व धामको न धन को ॥ रामहीके नामते जो होई सोई नीकी लागे, ऐसी ही सुभाउ कछु तुलसीके मनको ॥ २७९ ॥

ईश न गनेश न धनेश न दिनेश न, सुरेश सुर गौरी गिरा पति नहिं जपने ॥ तुमरोई नामको भरोसो भवतरबेको, बैठे उठे जागत बागत सोये सपने ॥ तुलसी है बावरो सो बावरोई रावरो सो, रावरेहू जान जीव कीजिये जू अपने॥जानकी जीवन मेरे रावरे बदन फेरे, ठाउँ न समाउँ कहूँ सकल निरपने ॥ २८० ॥

स्वारथ सयानप प्रपंच परमारथ, कहायो राम रावरे हों जानत जहान है। नामके प्रताप बाप आज लौं निबह नीकी, आगेकी गोसाईं स्वामी सबल सुजान है॥ कलिकी कुचाल देख दिन दिन दूनी देव, पाहरोई चोर हेर हिय हहरान है॥ तुलसी की लिपि बार बार ही सम्हार कीबो, यद्यपि कृपानिधान सदा सावधान है२८१॥

जागिये न सोइये बिगोइये न जन्म जाय, दिन दुःख रोइये कलेश को है काम को॥ राजा रंक रागी औ विरागी भूरिभागी ये, अभागी जीव जरत प्रभाव कलि वामको॥ तुलसी कबन्ध कैसो धायबो जो अन्ध, धन्ध देखियत जग सोच परिनाम को॥ सोइबो जो रामके सनेहकी समाधिसुख, जागिबो जो जीह जपै नीके रामनाम को॥ २८२॥

बरन धरम गयो आमश्र निवास तज्यो, त्रासन चकृत सों परावनों परोसो है॥ करम उपासना कुवासना बिनास्यो ज्ञान, वचन विराग वेष जगत हरोसो है॥ गोरख जगायो जोगभगति भगायो लोग, निगम नियोगते सो कलिते छरो सो है॥ काय मन वचन सुभाव तुलसी है जाहि, रामनाम को भरोसो ताहि को भरोसो है॥ २८३॥

सवैया।

वेद पुरान बिहाय सुपन्थ कुमारग कोटि कुचाली चली है॥
काल कराल नृपाल कृपाल न राजसमाज बड़ोही छली है॥
वर्णबिभाग न आश्रमधर्म दुनी दुख दोष दरिद्र दली है॥
स्वारथको परमारथको कलि रामको नाम प्रताप बली है॥२८४॥
न मिटै भवसंकट दुर्घट है तप तीरथ जन्म अनेक अटो॥
कलिमें न बिराग न ज्ञान कहूँ सब लागत फोकट झूँठ जटो॥

नट ज्यों जिन पेट कुपेटके कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो ॥
तुलसी जो सदासुख चाहिये तो रसना निशिवासर राम रटो २८५॥
दम दुर्मद दान दया मख कर्म सुधर्म अधीन सबै धनको ॥
तप तीरथ साधन योग विराग सु होय नहीं दृढ़ता तनको ॥
कलिकाल करालमें राम कृपाल इहै अवलम्ब बड़ी मनको ॥
तुलसी सब संयम हीन सबै एक नाम अधार सबै जनको॥२८६॥
पाय सुदेह विमोह नदी तरनी न लही करनी न कछूकी ॥
रामकथा बरनी न बनाय सुनी न कथा प्रहलाद न ध्रुकी ॥
अब जोर जरा जर गात गये मन मान गलान कुबान न मूकी ॥
नीकेकै ठीक दई तुलसी अवलम्ब बडी उर आखर दूकी ॥२८७॥
राम विहाय मरा जपते बिगरी सुधरी कवि कोकिल हूकी ॥
नामहिं ते गजकी गनकाहू अजामिलकी चलिगै चल चूकी ॥
रामप्रताप बडे कुसमाज बचाय रही पति पांडुवधूकी ॥
ताको भलो अजहू तुलसी जेहि प्रीति प्रतीतिहै आखर दूकी २८८॥

कवित्त ।

बबुर बहरको बनाय बाग राखियत, रूंधबेको सोऊ सुरतरु काटियत हैं॥गारी देत नीच हरिचंदहू दधीचहूको, आपने चना चबाय हाथ चाटियत हैं ॥ आप महापातकी हँसत हरि हरहूको, आप है अभागी भूरिभागी डाटियत हैं ॥ कलिकी कलुष मन मलिन किये महत, मशककी पांसुरी पयोधि पाटियत है॥२८९॥

सवैया ।

कीबे कहा पढ़बेको कहा फल बूझ न वेदको भेद विचारचो ॥
स्वारथको परमारथका कलि कामद रामको नाम विसारचो ॥
वाद बिवाद विषाद बढायकै छाती पराई औ आपनि जारचो ॥
चारहुको छहुको नवको दस आठकोपाठ कुकाठ ज्यों फारचो २९०

कवित्त ।

नाहीं मेरे जाति पाँति नाहीं मेरे माय बाप, नाहीं मेरे कोऊ काम हौं न काहू कामको॥लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब, भारी है भरोसो तुलसीके एक नामको ॥ अति ही सयानो उपखानो नहिं बूझे लोग, साहिबके गोत गोत होत है गुलामको ॥ साधुके असाधुके भलीके पोच सोच कहा, का काहू के द्वार परचो जो हौं सो हौं रामको ॥ २९१ ॥

कोऊ कहै करत कुसाज दगाबाज बडो, कोऊ कहै रामको गुलाम खरो खूब है ॥ साधु जाने महा साधु खल जाने महाखल, बानी झूँठीसांची कोटि उठत हबूब है ॥ चहत न काहू सों कहत न काहूको, कछू सबकी सहत उर अन्तर न ऊब है ॥ तुलसीको भलो पोच हाथ रघुनाथ हीके, रामकी भगति भूमि मेरी मति दूब है ॥ २९२ ॥

जागे जोगी जंगम जती समाधि ध्यान धरें डरें उर भारी लोभ मोह कोह कामके ॥ जागे राजा राज काज सेवक समाज साज, सोचें सुन समाचार बडे बैरी बामके ॥ जागे बुध विद्या हित पंडित चकित चित, जागे लोभ लालच धरनि धन धामके ॥ जागे भोगी भोग ही वियोगी रोगी रोगवश सोवै सुख तुलसी भरोसे एक रामके ॥ २९३ ॥

छन्द षटपद ।

राम मात पितु बंधु सुजन गुरु पूज्य परम हित । साहब सखा सहाय नेह नातो पुनीत चित ॥ देश कोश कुल धर्म कर्म धन धाम धरनि गति । जाति पांति सबभांति लागि रामहि हमारि पति ॥ परमारथ स्वारथ सुयश सुलभ रामते सकल फल । कहै तुलसिदास अब जब कबहुँ एक रामते मोर भल ॥ २९४ ॥

महाराज बलजाउँ राम सेवक सुखदायक । महाराज बलजाउँ राम सुन्दर सब लायक॥महाराज बलजाउँ राम सब संकटमोचन महाराज बलजाउँ राम राजीवविलोचन ॥ बलजाउँ राम करुणा-यतन प्रणतपाल पातकहरन । बलजाउँ राम कलिमलविकळ तुलसिदास राखिय शरन ॥ २९५ ॥

जय ताड़का–सुबाहुमथन मारीचमानहर। मुनिमखरक्षण दक्ष शिला तारन करुनाकर ॥ नृपगन बल मद सहित शंभुकोदंड बिहंडन ॥ जय कुठारधर दर्पदलन दिनकर कुलमंडन॥जय जन-कनगर आनन्दप्रद सुख सागर सुखमा भवन ॥ कहै तुलसिदास सुरमुकुटमणि जय जय जय जानकिरमन ॥ २९६ ॥

जाय सो सुभट समर्थ पाय रन रारि न मंडै ॥ जाय सो यती कहाय विषैवासना न छंडै ॥ जाय धनिक विन दान जाय निर धन बिन धर्महि॥जाय सो पंडित पढ़ पुरान जो रत न सुकर्महि॥ सुत जाय मात पितु भगति विन तिय सो जाय जिहि पति न हित॥सब जाइ दास तुलसी कहै जो न रामपदनेह नित॥२९७॥

को न क्रोध निरदहेउ काम वश केहि नहिं कीनो ॥ को न लोभ दृढफंद बांध त्रासन करदीनो ॥ कवन हृदय नहिं लाग कठिन अति नारिनयन शर ॥ लोचनयुत नहिं अंध भयो श्रीपाय कवन नर॥सुर नाग लोक महिमंडलहु को जु मोह कीनो जय न॥ कहै तुलसीदास सो उबर जेहि राख राम राजिवनयन ॥२९८॥

सवैया ।

भौंह कमानसँधानसुठान जे नारि बिलोकन बान ते बाचे ॥
कोप कृशानु गुमान अवाँघट ज्यों जिनके मन आवत आंछे ॥
लोभ सबै नटके वश ह्वै कपि ज्यों जगमें बहु नाचन नाचे ॥
नीके हैं साधु सबै तुलसी पै तेई रघुवीरके सेवक सांचे॥ २९९ ॥

कवित्त।

भेष सुबनाय भले वचन कहै चुबाय, जाय तो न जरनि धरनि धन धामकी। कोटिक उपाय कर लाल पालियत देह, मुख कहियत गति रामहीके नाम की॥ प्रगटै उपासना दुरावै दुर्बासना हि, मानस निवासभूमि लोभ मोह काम की। राग रोष ईरषा कपट कुटिलाई भरे, तुलसीसे भगत भगति चहै रामकी॥३००॥

काल ही तरुन तन काल ही धरनि धन, काल ही जितौंगो रन कहत कुचालि है॥ काल ही साधोंगो काज काल ही राज समाज, मोसों कोऊ कहा भारो महि मेरु हालि है॥ तुलसी यही कुभांति घने घर घालि आये, घने घर घालत है घने घर घालि है॥ देखत कहत समुझत हूँ न सूझे सोई, कबहूँ कह्यो न कालहू-को काल कालि है॥ ३०१॥

भयो न तिकाल तिहू लोक तुलसी सो मन्द, निंदै सब साधु सुनि मानो न सँकोच हौं। जानको अयोगहिय हानि मानै जान-कीश, काहेको परेखो हौं प्रपंची पापी पोच हौं॥ पेट भरबेके काज महाराजको कहायो, महाराजहू कह्यो है प्रनतविमोच हौं॥ निज अघजाल कालिकालकी करालता, विलोकि होत व्याकुल करत सोई सोच हौं॥ ३०२॥

राग देवगंधार।

यह मन नेक न कह्यो करै। सीख सिखाय रह्यो अपनी सी दुरमति ते न टरै॥ मद माया के भयो बावरो हरि यश नहिं उचरै। कर परपंच जगत को डहकै अपनो उदर भरै॥ श्वान पूँछ ज्यों होय न सूधो कह्यो न कान धरै। कहु नानक भज राम नाम नित जाते काज सरै॥ ३०३॥

राग देवगंधार ।

सब कछु जीवतको व्यवहार । मात पिता भाई सुत बांधव अरु पुनि गृहकी नार ॥ तनते प्राण होत जब न्यारे टेरत प्रेत पुकार । आध घरी कोऊ नहीं राखै घरते देत निकार॥ मृगतृष्णा ज्यों जग रचना यह देखो हृदय विचार ॥ कहु नानक भजराम नाम नित जाते होत उधार ॥ ३०४ ॥

राग देवगंधार ।

जगतमें झूँठी देखी प्रीति । अपनेही सुखसों सब लागे क्या दारा क्या मीत॥ मेरो मेरो सभी कहत हैं हित सो बांध्यों चीत । अतकाल संगी नहिं कोऊ यह अचरज की रीत ॥ मन मूरख अजहूं नहिं समझत शिख देहारयो नीत । नानक भव जल पार परे जो गावै प्रभुके गीत ॥ ३०५ ॥

राग सोरठ ।

मनकी मनही माहिं रही । ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी काल गही ॥ दारा मीत पूत रथ संपति धन जन पूर्ण मही । और सकल मिथ्या यह जानो भजन राम को सही ॥ फिरत फिरत बहुते जुग हारयो मानस देह लही । नानक कहत मिलनकी बिरियां सुमिरत कहा नहीं ॥ ३०६ ॥

राग सोरठ ।

मन रे कौन कुमति तैं लीन्ही । पर दारा निंदा रस राच्यो राम भगति नहिं कीनी ॥ मुक्ति पंथ जान्यो तैं नाहिन धन जोरन को धायो । अन्त संग काहू नहिं दीनो बिरथा आप बँधायो॥ना हरि भजे न गुरुजन सेयो नहिं उपज्यो कछु ज्ञाना । घटही माहिं निरंजन तेरे तैं खोजत उद्याना ॥ बहुत जन्म भरमत तैं हारयो अस्थिर मति नहिं पायो । मानस देह पाय पद हरि भज नानक बात बतायो ॥ ३०७ ॥

कवित्त ।

धरमको सेतु जग मंगलको हेतु भूमि भार हरबेको अवतार लियो नर को । नीति औ प्रतीति प्रीति पाल चाल प्रभुनाम,लोक वेद राखबेको पण रघुवीरको ॥ वानर विभीषणकी ओरको कनावडो है सो, प्रसंग सुने अंग जरै अनुचर को । राखे रीति अपनी जो होय सोई कीजै बलि,तुलसी तिहारो घ जाइडोहै बरको२०८

नाम महाराजके निवाही नीकी कीजै उर, सबहि सोहात मैंन लोगन सोहातहौं । कीजै राम बार एक मेरी ओर चषकोर, ताहि लग रंक ज्यों सनेह को ललातहौं ॥ तुलसी विलोक कलिकाल-की करालता, कृपालको सुभाउ समुझन सकुचातहौं । लोक एक भांतिको त्रिलोक नाथ लोक बस, आपनो न सोच स्वामी सो-चही सुखातहौं ॥ ३०९ ॥

तौलौं लोभ लोलुप ललात लालची लबार, बार बार लालच धरनि धन धामको ॥ तबलौं वियोग रोग सोगभोग यातनाके, युग सम लागत जीवन जाम जाम को ॥ तौलौं दुख दारिद दहत अति नित तन, तुलसी है किंकर विमोह कोह कामको । सब दुख अपने निरापने सकल सुख, जौलौं जन भयो न बजाय राजा राम को ॥ ३१० ॥

तबलौं मलीन हीन दीन सुख सपने न, जहां तहां दुखी जन भाजन कलेस को । तबलौं उबेने पाये फिरत पेटौ खलाये, बाये मुह सहत पराभौ देस देस को ॥ तबलौं दयावनो दुसह दुख दारिद को, साथरी को सोइबो ओढबो झूने खेसको । जबलौं न भजै जीह जानकी जीवन राम, राजन को राजा सो तो साहिब महेशको ॥ ३११ ॥

ईसनके ईस महाराजन के महाराज, देवन के देव देव प्रानहूँके प्रान हौ । कालहूके काल महाभूतन के महाभूत, कर्महू के करम निदान के निदान हौ । निगम को अगम सुगम तुलसीहू से. कोऊ एते मान शील सिंधु करुना निधान हौ ॥ महिमा अपार काहू बोल को न वारपार, बडी साहिबी में नाथ बडे सावधान हौ ॥ ३१२ ॥

सवैया ।

आरतपाल कृपाल जो राम जहीं सुमिरे तिहको तहिं ठाढे ॥
नाम प्रताप महामहिमा अकरे किये खोटेउ छोटेउ बाढे ॥
सेवक एक ते एक अनेक भये तुलसी तिहु तापन डाढे ॥
प्रेम बधो प्रहलादहि को जिन पाहन ते परमेश्वर काढे ॥ ३१३ ॥
काढ कृपान कृपा न कहूं पितु काल कराल विलोकि गे भागे ॥
राम कहां सब ठांउहै खंभमें हां सुनि हांक नृकेहरी जागे ॥
वैरी विदार भये बिकराल कहे प्रहलदाहि के अनुरागे ॥
प्रीतिप्रतीत बढी तुलसी तबते सब पाहन पूजन लागे ॥ ३१४ ॥
अंतरयामिहु ते बढ बाहिर जामि हैं राम जे नाम लिये ते ॥
धावत धेनु पन्हाय लवाय ज्यों बालक बोलन कान कियेते ॥
आपन बूझ कहै तुलसी कहबे की न बावरि बात बिये ते ॥
पैज परे प्रहलादहु को प्रगटे प्रभु पाहन ते न हियेते ॥ ३१५ ॥
बालक बोल दियो बलि काल को कायर कोटि कुचाल चलाई ॥
पापी है बाप बडो परिताप तें आपनि ओर ते खोर न लाई ॥
भूरि दई विष मूरि भई प्रहलाद सुधाई सुधाकी मलाई ॥
रामकृपा तुलसी जनको जग होत भले को भलोई भलाई ३१६॥
कंस करी व्रजवासिन पै करतूति कुभांति चली न चलाई ॥
पांडु के पूत सपूत कपूत सुयोधन भो कलि छोटे छलाई ॥

कान्ह कृपाल बडे नतपाल गये खल खेचर खीस खलाई ॥
ठीक प्रतीत कहै तुलसी जग होय भलेको भलोई भलाई ॥३१७॥
अवनीस अनेक भये अवनी जिनके डरते सुर सोच सुखाहीं ॥
मानव दानव देव सतावन रावन घाट रच्यो जग माहीं ॥
ते मिलये धर धूर सुयोधन जे चलते बहु छत्रकी छाहीं ॥
वेद पुरान कहै जग जान गुमान गोविंदहिं भावत नाहीं ॥३१८॥
जब नैनन प्रीत गई ठग स्याम सों स्यानी सखी हठ हौं बरजी ॥
नहीं जानो वियोग सुरोगसो आगे झुकी तब हौं तेहिंसों तरजी ॥
अब देह भई पट नेह के छाले सो व्योंत करे बिरहा दरजी ॥
व्रजराज कुमार विना सुन भृंग अनंग भयो जियको गरजी॥३१९॥
योग कथा पठई व्रज को सब सो शठ चेरी को चाल चलाकी ॥
ऊधोजी कौन कहे कुबरी जो बरी नटनागर हेर हलाकी ॥
जाहि लगे पर जाने सोई तुलसी सो सुहागिनि नन्दललाकी ॥
जानिहै जान पनी हरिकी अब बांधियेगी कछु पोट कलाकी३२०॥

कवित्त।

पठयो है छपद छबील कान्ह केहू कहूं, खोजके खवास खासे कूबरीसी बालको। ज्ञानको गढैया बिन गिरिको पढैया वार, खालको कढैया सो बढैया उर सालको ॥ प्रीतिको बधिक रस रीति को अधिक नीति, निपुण विवेकहै निदेश देश कालको ॥ तुलसी कहे न बनै सहै ही बनेगो सब, योग भयो योगको वियोग नन्दलालको ॥ ३२१ ॥

हनुमान ह्वै कृपाल लाडिले लखनलाल, भावते भरत हैं सेवक सहाय जू॥ विनती करत दीन दूबरो दयावनो सो, बिगरे ते आप ही सुधारि लीजै भाय जू।मेरी साहिबनी सदा शीश पर बिलसत,

देवि क्यों न दासको देखाइयत पाय जू ॥ खीझहूमें रीझबेकी बानी राम रीझत है, रीझि हैं ई रामकी दोहाई रघुराय जू ॥३२२॥

सवैया ।

वेष विरागको राग भरो मनभाव कहों सत भाव हौं तोसों ॥ तेरेही नाथको नामलै बेचहों पातकी पांवर प्रानन पोसों ॥ एते बडे अपराध अघी कहूँ तू कहूँ अंब कि मेरे तु मोसों ॥ स्वाथरको परमारथको परिपूरन भौं फिर घाट न होसों ॥३२३॥

कवित्त ।

जहां वालमीक भये व्याधते मुनिंद साधु,मरा मरा जपै सिख सुन ऋषि सात की । सियको नेवास लव कुश को जनम थल, तुलसी छुवन छांह ताप गरे गात की ॥ विटप महीप सुर सरित समीप सोहे, सीतावट पेखत पुनीत होत पात की । वारि पुर दिग पुर बीच बिलसत भूमि, अंकित जो जानकी चरन जल-जातकी ॥ ३२४ ॥

मरकत वरन परन फल मानिकसे, लसे जटाजूट जनु रूख बेख हर है । सुखमाको ढेर कैधों सुकृत सुमेरु कैधों,संपदा सकल मुद-मंगलको घर है ॥ देत अभिमत जो समेत प्रीत सेइये, प्रतीत मान तुलसी बिचार काको थर है ॥ सुरसरि निकट सोहावनि अवनि सोहै, रामरवनीको बट कलि कामतर है ॥ ३२५ ॥

देवधुनि पास मुनिवास श्रीनिवास जहां, प्राकृत हू बट पुट बसत पुरारि है । जोगि जपैं जोग को विराग को पुनीत पीठ रागिन को सीठी डीठी बाहरो निवार है ॥ आहस अँदेस बाबू भलो भलो भाव सिध, तुलसी विचार जोगी कहत पुकार है । राम भगतनको तो कामतरु ते अधिक, सियबट सेये करतल फल चार है ॥ ३२६ ॥

जहाँ वन पावनो सुहावने विहंग मृग, देख अति लागत अनन्द खेत खूट सो ॥ सीता राम लक्ष्मण निवास वास मुनिनको, सिद्ध साध साधक सबै विवेक बूट सो ॥ झरना झरत झार शीतल पुनीत वारि, मन्दाकिनि मंजुल महेश जटाजूट सो। तुलसी जो राम सों सनेह साँचो चाहिये, तो सेइये सनेह सों विचित्र चित्रकूट सों ॥ ३२७ ॥

सवैया।

ब्रह्म जो व्यापक वेद कहें गम नाहिं गिरा गुन ज्ञान गुनीको ॥
जो करता भरता हरता सुरसाय सुसाहिब दीन दुनीको ॥
सोई भयो द्रवरूप सही जोहै नाथ विरंचि महेश मुनीको ॥
मान प्रतीत सदा तुलसी जल काहेन सेवत देव धुनीको ॥३२८॥
दानि जो चारि पदारथको त्रिपुरारि तिहूं पुरमें सिरटीको ॥
भोरो भलो भले भायको भूखो भलोई कियो सुमिरे तुलसीको ॥
ता बिन आसको दासभयो कबहूं न मिटयो लघु लालच जीको ॥
साधो कहा करि साधन ते जो पै राधो नहीं पति पारवती को॥३२९॥
जाते जरे सब लोक विलोकि त्रिलोचन सो विष लोक लियो है ॥
पान कियो विष भूषण भो करुणा वरुणालय साईं हियो है ॥
मेरोई फोरबे योग कपार किधों कछु काहू लखाय दियो है ॥
काहे न कान करो विनती तुलसी कलिकाल बिहाल कियो है३३०

राग बिलावल।

दीन दयाल दीवाकर देवा। कर मुनि मनुज सुरासुर सेवा ॥
हिम तम करि केहरि करमाली। दहन दोष दुख दुरित रुजाली॥
कोक कोकनद लोक प्रकासी। तेज प्रताप रूप रसरासी ॥
सारथि पंगु दिव्य रथ गामी। हरि शंकर विधि मूरति स्वामी ॥
वेद पुरान प्रगट यश जागै। तुलसी राम भगति वर मांगै॥३३१॥

को याचिये शंभु तज आन। दीन दयाल भगत आरति हर सब प्रकार समरथ भगवान॥ कालकूट ज्वर जरत सुरासुर निज पण लाग कियो विष पान। दारुण दनुज जगत दुखदायक मारयो त्रिपुर एक ही बान॥ जो गति अगम महामुनि दुरलभ कहत सन्त श्रुति सकल पुरान। सोई गति मरन काल अपने पुर देत सदाशिव सबहि समान। सेवत सुलभ उदार कलपतरु पारवती पति परम सुजान। देहु राम पद नेहू काम रिपु तुलसिदास कहँ कृपानिधान॥ ३३२॥

राग धनाश्री।

दानी कहुँ शंकर से नाहीं। दीन दयाल दिवो ही भावै याचक सदा सुहाहीं॥ मारिके मार थप्यो जगमें जाकी प्रथम रेख भट माहीं॥ ता ठाकुरको रीझ निवाजबो कह्यो क्यों परत मो पाहीं॥ योग कोटि करि जो गति हरिसों मुनि माँगत सकुचाहीं। वेद विदित तेहि पद पुरान पुर कीट पतंग समाहीं॥ ईश उदार उमापति परिहर अनत जे याचन जाहीं। तुलसिदास ते मूढ़ माँगने कबहुँ न पेट अघाहीं॥ ३३३॥

बावरो रावरो नाह भवानी। दानी बडो दिन देत दिये विन वेद बड़ाई भानी॥ निज घरकी वर बात विलोकहु हो तुम परम सयानी। शिवकी दई सम्पदा देखत श्रीशारदा सिहानी॥ जिनके भाल लिखी लिपि मेरी सुखकी नहीं निसानी। तिन रंकनको नाक सँवारत हौं आयो नकबानी॥ दुखी दीनता दुखियनके दुख याचकता अकुलानी। यह अधिकार सौंपिये औरहिं भीख भली मैं जानी॥ प्रेम प्रशंसा विनय व्यंग युत सुन विधिकी वर वानी। तुलसी मुदित महेश मनहिंमन जगत मातु मुसकानी॥ ३३४॥

भजन-राग रामकली।

मांगिये गिरिजापति कासी। जासु भवन अणिमादिक दासी॥ औढर दानि द्रवत पुनि थोरे। सकत न देखि दीन कर जोरे॥ सुख सम्पति मति सुगति सुहाई। सकल सुलभ शंकर सेवकाई॥ गये जे शरण आरतिके लीने। निरखि निहाल निमिप महँ कीने॥ तुलसिदास याचक यश गावै। विमल भक्ति रघुपतिकी पावै २२५॥

कस न दीन पर द्रवहु उमा वर। दारुण विपति हरण करुणाकर॥ वेद पुराण कहत उदार हर। हमरी बेर का भयो कृपिनतर॥ कवनि भक्ति कीनी गुणनिधि द्विज। ह्वै प्रसन्न दीन्यो शिव पद निज॥ जो गति अगम महामुनि गावहिं। तव पुर कीट पतंग हु पावहिं॥ देहु काम रिपु रामचरण रति। तुलसिदास प्रभु हरहु भेद मति॥ २२६॥

जय जय जग जननि देवि सुर नर मुनि असुर सेवि भक्त भूतिदायनि भयहरनि कालिका। मंगल मुद सिद्ध सदनि पर्व शर्वरीश वदनि ताप तिमिर तरुण तरण किरणि मालिका॥ वर्म चर्म कर कृपाण शूल शक्ति धनुप बाण धरणि दलनि दानव दल रण करालिका। पूतना पिशाच प्रेत डाकिनी शाकिनी समेत भूत ग्रह वेताल खग मृगालि जालिका॥ जय महेश भामिनी अनेक रूप नामिनी समस्त लोक स्वामिनी हिम शैल बालिका॥ रघुपति पद परम प्रेम तुलसी चहै अचल नेम देहु ह्वै प्रसन्न पाहि प्रणत पालिका॥ २२७॥

राग धनाश्री।

जयति जय सुरसरी जगदखिल पावनी। विष्णुपद कञ्ज मकरंद इव अंबु वर वहसि दुख दहसि अघ वृन्द विद्रावनी॥ मिलत जल पात्र अज युक्त हरि चरण रज विरज वर वारि:त्रिपुरारि शिर

धामिनी । जह्नु कन्या धन्य पुण्य कृत सगर सुत भूधर द्रोणि विदरणि बहु नामिनी ॥ यक्ष गंधर्व मुनि किन्नरोरग दनुज मनुज मज्जहिं सुकृत पुञ्ज युत कामिनी । स्वर्ग सोपान विज्ञान ज्ञानप्रदे मोह मद मदनपाथोज हिम यामिनी ॥ हरित गंभीर वानीर दुहुँ तीर वर मध्यधारा विशद विश्व अभिरामिनी । नील पर्यङ्क कृत शयन सर्पेश जनु सहस शीशावली स्रोत सुर स्वामिनी ॥ अमित महिमा अमित रूप भूपावली मुकुट मणि वंध त्रैलोक पथ गामिनी ॥ देहु रघुवीर पद प्रीति निर्भर मातु दास तुलसी त्राम हरणि भव भामिनी ॥ ३३८ ॥

सेइये सहित सनेह देह भर कामधेनु कलि कासी । शमन शोक सन्ताप पाप रुज सकल सुमंगलरासी ॥ मर्यादा चहुँ ओर चरण वर सेवत सुरपुरवासी । तीरथ सब शुभ अंग रोम शिवलिंग अमित अविनाशी ॥ अंतर अयन अयन भल थल फल वच्छ वेद विश्वासी । गल कंबल वरुणा विभाति जनु लूम लसत सरिता सी ॥ दण्डपाणि भैरव विषाण भल रुचि खल गण भयदासी । लोल दिनेश त्रिलोचन लोचन कर्ण घट घंटासी ॥ मणिकर्णिका वदन शशि सुन्दर सूर सरिस सुखमासी । स्वारथ परमारथ परिपूरण पंचकोश महिमा सी ॥ विश्वनाथ पालक कृपाल चित लालति नित गिरिजा सी । सिद्धि शची शारद पूजहिं मन जोगवत रहत रमा सी ॥ पंचाक्षरी प्राण मुद माधव गव्य सुपंच नदासी । ब्रह्म जीव सम राम नाम दोउ आखर विश्वविकासी ॥ चारितचारि कुकर्म कर्मकर मरत जीव गण घासी । लहत परमपद पय पावन जिहिं चहत प्रपंच उदासी ॥ कहत पुराण रची केशव निज कर करतूति कालासी । तुलसी बस हर पुरी राम जप जो भयो चहै सुपासी ॥ ३३९ ॥

राग बसन्त।

सब शोच विमोचन चित्रकूट। कलिहरन करन कल्याण बूट ॥ शुचि अवनि सुहावनि आलवाल। कानन विचित्र बारी विशाल॥ मंदाकिनि मालिनि सदा सींच। वर वारि विषम नर नारि नीच ॥ शाखा सुशृंग भूरुह सुपात। निर्झर मधु वर मृदु मलय वात॥ शुक पिक मधुकर मुनिवर विहार । साधन प्रसून फल चारु चार ॥ भव घोर घाम हर सुखद छाँह। थप्यो थिर प्रभाउ जानकी नाह ॥ साधक सुपथिक बडे भाग पाइ। पावत अनेक अभिमत अघाइ ॥ रस एक रहत गुण कर्म काल ॥ सिय राम लषण पालक कृपाल ॥ तुलसी जो रामपद चहिय प्रेम। सेइये गिरि कर निरुपाधि नेम ॥ ३४० ॥

अब चित चेत चित्रकूटहिं चल। कोपित कलि लोपित मंगल मग विलसत बढ़त मोह माया मल॥भूमि विलोक रामपद अंकित वन विलोकि रघुवर विहार थल। शैल शृङ्ग भव भंग हेतु खल दलन कपट पाखंड दंभ दल॥ जहँ जन्मे जग जनक जगतपति विधि हरि हर परिहर प्रपंच छल। सुकृत प्रवेश करत जिहिं आश्रम विगत विषाद भये पारथ नल ॥ न कर विलंब विचार चारु मति वर्ष पाछिले सम अगिलो पल। मंत्र सो जाय जपहिं जो जपत में अजर अमर हर अचय हलाहल ॥ रामनाम जप याग करत नित मज्जत पय पावन पीवत जल। करि है राम भावतो मनको सुखसाधन अनयास महाफल ॥ कामदमणि कामदा कल्पतरु सो युग युग जागत जगतीतल। तुलसी तोहिं विशेष बूझिये एक प्रतीति प्रीति एकै बल ॥ ३४१ ॥

राग सारंग।

जाके गति है हनुमान की। ताके पयज पूज आई यह रेखा

कुलिश पपानकी॥अघटित घटन सुघट विघटन ऐसी बिरुदावली नहिं आनकी। सुमिरत संकट शोच विमोचन मूरति मोद निधान की ॥ तापर सानुकूल गिरिजाहर लषण राम अरु जानकी। तुलसी कपिकी कृपा विलोकन खानि सकल कल्यान की ३४२

अति आरत अति स्वारथी अतिदीन दुखारी।इनको बिलग न मानिये बोलहिं न विचारी ॥ लोकरीति देखी सुनी व्याकुल नर-नारी। अति बरषे अन बरषे हूँ देहि देवहि गारी ॥ नाकहि आये नाथसों सासत भयभारी। कहआयो कीबी क्षमा निज ओर निहारी॥समय सांकरे सुमिरिये समरथ हितकारी। सो सब विधि ऊपर करै अपराध बिसारी ॥ बिगरी सेवककी सदा साहिबहिं सुधारी। तुलसी पर तेरी कृपा निरुपाधि निहारी ॥ ३४३ ॥

राग गौरी ।

मंगल मूरति मारुतनंदन। सकल अमंगल मूल निकंदन ॥ पवनतनय संतन हितकारी। हृदय विराजत अवधविहारी ॥ मात पिता गुरु गणपति शारद। शिवा समेत शंभु शुक नारद॥ चरण वंदि विनवों सब काहू। देहु रामपद नेह निबाहू॥ वंदौंराम लषण वैदेही। जो तुलसीके परम सनेही ३४४ ॥

राग केदार ।

अबहुँक अंब अवसर पाइ। मेरिये सुधि द्यायबी कछु करुण कथा चलाइ॥ दीन सब अंग हीन क्षीन मलीन अघी अघाय। नाम लै भरों उदर इक प्रभु दासी दास कहाय ॥ बूझिहैं सो हैं कौन कहबो नाम दशा जनाय। सुनत राम कृपालुके मेरी बिगरिऔ बनि जाय ॥ जानकी जग जननि जनकी किये वचन सहाय। तरे तुलसीदास भव तव नाथ गुण गण गाय ॥ ३४५ ॥

राग केदार ।

कबहुँ समय सुधि द्यायबी मेरी मातु जानकी ॥ जन कहाय नाम लेत हों पन चातक ज्यों प्यास सुप्रेम पानकी ॥ सरलप्रकृति आप जानिये करुणा निधानकी ॥ निज गुण आरिकृत अनहितो दास दोष सुरति चित रहत न दिये दानकी ॥ बानि विसरण शील है मानद अमानकी ॥ तुलसीदास न बिसारिये मन क्रम वचन जाके सपनेहुं गति नहिं आनकी ॥ ३४६ ॥

राग रामकली ।

ऐसी आरती राम रघुवीरकी करहि मन ॥ हरण दुख द्वंद्व गोविंद आनन्द घन ॥ अचर चर रूप हरि सर्वगत सर्वदा वसत इति बासना धूप दीजै ॥ दीप निज बोध गत क्रोध मद मोह तन प्रौढ़ अभिमान चित्तवृत्ति छीजै ॥ भाव अतिशय विशद प्रवर नैवेद्य शुभ श्रीरमण परम सन्तोषकारी ॥ प्रेम तांबूल गत शूल संशय सकल विपुल भव वासना बीजहारी ॥ अशुभ शुभ कर्म घृत पूर्ण दश वर्तिका त्याग पावक सतोगुण प्रकास ॥ भक्ति वैराग्य विज्ञान दीपावली अर्पि नीराजनं जग निवासं ॥ विमल हृदि भवन कृत शांति पर्यंक शुभ शयन विश्राम श्रीराम राया ॥ क्षमा करुणा प्रभु स्वतंत्र परिचारिका यत्र हरि तत्र नहिं भेद माया ॥ यह आरती निरत सनकादि श्रुति शेष शिव देव ऋषि अखिल मुनि तत्त्वदर्शी ॥ करै सोई तरै परिहरै कामादि मल वदत इति अमल मति दास तुलसी ॥ ३४७ ॥

राग रामकली ।

हरत सब आरति आरती राम की ॥ दहत दुख दोष निर्मूल नी- कामकी ॥ सुभग सौरभ धूप दीप वर मालिका ॥ उड़त अघ विहंग सुन ताल करतालिका ॥ भक्त हृदि भवन अज्ञान तम हारिणी ॥

विमल विज्ञान मय तेज विस्तारणी ॥ मोहमद कोह कलि कंज हिम यामिनी॥मुक्तिकी दूतिका देह द्युति दामिनी ॥ प्रणत जन कुमुद वन इंदु कर जालिका । तुलसि अभिमान महिषेश बहु कालिका ॥ ३४८ ॥

राग जैतश्री ।

मन इतनोई या तनुको परम फल। सब अँग सुभग बिंदु माधव छबि तज सुभाव अवलोक एक पल॥ तरुण अरुण अंभोज चरण मृदु नख द्युति हृदय तिमिर हारी । कुलिश केतु यव जलज रेख वर अंकुश मन गज वशकारी॥ कनक जटित मणि नूपुर मेखल कटि तट रटत मधुर बानी ॥ त्रिवली उदर गंभीर नाभिसर जहि उपजे विरिंचि ज्ञानी॥उरवनमाल पदिक अति शोभित विप्र चरण चित कहँ करषै । श्याम तामरस दाम वरण वपु पीतवसन शोभा वरषै ॥ कर कंकण केयूर मनोहर देत मोद मुद्रिक न्यारी ॥ गदा कंज दर चारु चक्र धर नाग शुंड सम भुज चारी। कंबुग्रीव छबि सीव चिबुक द्विज अधर अरुण उन्नत नासा ॥ नव राजीव नयन शशि आनन सेवक सुखद विशद हासा । रुचिर कपोल श्रवण कुण्डल शिर मुकुट सुतिलक भाल भ्राजै ॥ ललित भ्रुकुटी सुन्दर चितवन कच निरख मधुप अवली लाजै । रूप शील गुण खानि दक्षि दिशि सिंधुसुता रत पदसेवा॥जाकी कृपा कटाक्ष चहत शिव विधि मुनि मनुज दनुज देवा ॥ तुलसिदास भव त्रास मिटै तब जब मति यह स्वरूप अटकै । नाहिं तो दीन मलीन हीन सुख कोटि जनम भ्रमि भ्रमि भटकै ॥ ३४९ ॥

राग भैरव ।

राम राम रम राम राम रट राम राम जप जीहा ॥ राम नाम नव नेह मेहको मन हठ होहि पपीहा ॥ सब साधन फल

कूप सरित सर सागर सलिल निरासा ॥ रामनाम रति स्वाति सुधा शुभ सीकर प्रेम पियासा ॥ गरज तरज पाषान बरष पवि प्रीति परख जियजानै ॥ अधिक अधिक अनुराग उमँग उर पर परमित पहिचानै ॥ राम नाम गति राम नाम मति राम नाम अनुरागी ॥ ह्वैगये हैं जे होइँगे तेई गनियत त्रिभुवन बड़भागी ॥ एक अंग मग अगम गवन कर बिलँब न छिन छिन छाहैं ॥ तुलसी हित अपनो अपनी दिशि निरुपाधि नेम निबाहैं ॥ २५० ॥

भलो भली भाँति है जो मेरे कहे लागि है ॥ मन राम नाम सों सुभाव अनुरागि है ॥ राम नामको प्रभाव जान जूडी आगि है ॥ सहित सहाय कलिकाल भीरु भागि है ॥ राम राम नाम सों विराग योग जागि है ॥ वाम विधि भाल हू न कर्म दाग दागि है ॥ राम नाम मोदक सनेह सुधा पागि है ॥ पाइ परितोष तू न द्वार द्वार बागि है ॥ कामतरु राम नाम जोइ जोइ माँगि है ॥ तुलसिदास स्वारथ परमारथ न खाँगि है ॥ २५१ ॥

ऐसेउ साहब की सेवा सों होइ चोर रे ॥ आपनी न बूझ कहै को राड रोर रे ॥ मुनि मन अगम सुगम माय बापसों ॥ कृपा-सिन्धु सहज सनेही सखा आपसों ॥ लोक वेद विदित बडो न रघुनाथसों ॥ सबदिन सब देश सबहीके साथसों ॥ स्वामीसर्व-ज्ञसों चलै न चोरी चारकी ॥ प्रीति पहिचान यह रीति दरबार की ॥ काय न कलेश लेश लेत मान मनकी ॥ सुमिरे सकुचि रुचि जोगवत जनकी ॥ रीझे वश होत खीझे देत निज धाम रे ॥ फलत सकल फल कामतरु नाम रे ॥ बेचे खोटो दाम न मिलै न राखे काम रे ॥ सोऊ तुलसी निवाज्यो ऐसो राजा राम रे ॥२५२॥

मेरो भलो कियो राम आपनी भलाई ॥ हौं तो साईं द्रोही पै सेवक हित साईं ॥ रामसों बडो है कौन मोसों कौन छोटो ॥ रामसों खरो है कौन मोसों कौन खोटो ॥ लोक कहै रामको गुलाम हौं कहावों ॥ एतो बडो अपराध भौ न मन पावों ॥ पाथ माथे चढे तृण तुलसी जो नीचो ॥ बोरत न बारि ताहि जान आपनो सींचो ॥ ३५३ ॥

राग बिलावल।

आज महामङ्गल कोशलपुर सुनि नृपके सुत चारि भये। सदन सदन सोहिलो सुहावन नभ अरु नगर निशान हये ॥ सज मज यान अमर किन्नर मुनि जान समय सम गान ठये। नाचहिं नभ अप्सरा मुदित मन पुनि पुनि वर्षहिं सुमन चये ॥ अति सुख बेग बोल गुरु भूसुर भूपति भीतर भवन गये। जातकर्म कर नेक वसन मणि भूपित सुरभि समूह दये ॥ दल रोचन फल फूल दूब दधि युवतिन भर भर थार लये। गावत चलीं भीर भई बीथिन बन्दिन बांकुर बिरद बये ॥ कनक कलश चामर पताक ध्वज जहिं तहिं बन्दनवार नये। भरहिं अबीर अरगजा छिरकहिं सकल लोक इक रंग रये ॥ उमँग चल्यो आनन्द लोक तिहुँ देत सबन मन्दिर रितये। तुलसिदास पुनि भरेइ देखियत राम कृपा चितवन चितये ॥ ३५४ ॥

सुभग सेज सोहात कौशल्या रुचिर राम शिशु गोद लिये। बार बार विधु वदन विलोकत लोचन चारु चकोर किये ॥ कबहुँ पौढि पय पान करावत कबहुँ कि राखत लाय हिये ॥ बाल केलि गावत हलरावत पुलकित प्रेम पियूष पिये। विधि महेश मुनि सुर सिहात सब अम्बुद ओट दिये ॥ तुलसिदास ऐसो सुख रघुपति पै काहू तो पायो न बिये ॥ ३५५ ॥

राग सोरठ।

हैहो लाल कबहिं बडे बलि मैया। राम लषण भावत भरत रिपुदमन चारु चारयो भैया॥ बाल विभूषण वसन मनोहर अंगन विरचि बनैहौं॥ शोभा निरखि निछावर कर उर लाय वारने जैहौं॥ छगन मगन अँगना खेलिहो मिलि ठुमुक ठुमुक कब धैहो॥ कल बल बचन तोतरे मंजुल कह मा मोहिं बुलैहो। पुरजन सचिव राव रानी सब सेवक सखा सहेली॥ लेहैं लोचन लाहु सुफल लखि ललित मनोरथ वेली। जा सुखकी लालसा लटू शिव शुक सनकादि उदासी॥ तुलसी तिहि सुख सिंधु कौशला मगनपै प्रेम पियासी॥ ३५६॥

राग बिलावल।

पगन कब चलिहो चारों भैया। प्रेम पुलकि उर लाय सुवन सब कहत सुमित्रा मैया॥ सुन्दर तनु शिशु वसन विभूषण नख शिख निरख निकैया। दल तृण प्राण निछावर कर कर लैहै मात बलैया॥ किलकन नटन चलन चितवन भज मिलत मनोहर तै-या। मणि खंभन प्रतिबिंब झलत छबि छल कहिं भर अँगनैया॥ बाल विनोद मोद मंजुल विधु लीला ललित जुन्हैया। भूपति पुण्य पयोनिधि उमँगेउ घरघर बाजे आनंद बधैया॥ ह्वैहैं सकल सुकृत सुख भाजन लोचन लाहु लुटैया। अनायास पाइहैं जन्मफल तोतरे वचन सुनैया॥ भरत राम रिपुदमन लषण के चरित सरित अन्हवैया। तुलसी तब कैसे अजहूं जानबे रघुवर नगर बसैया॥ ३५७॥

राग केदार।

राम शिशु गोद महा मोद भरे दशरथ कौशिलहु ललक लषण लाल लिये हैं। भरत सुमित्रा लिये केकयी शत्रुशमन तन प्रेम

पुलक मगन भये हैं ॥ मेढी लटकन मणि कनक रचित बाल भूषण बनाय आछे अंग अंग ठये हैं । चाहि चुचुकार चूंबि लालन लावत उर तैसे फल पावत जैसे सुबीज बये हैं ॥ घन ओट विबुध विलोकि बरसत फूल अनुकूल वचन कहत नेह नये हैं ॥ ऐसे पितु मात पूत पुर परिजन विधि जानियत आयु भर एई निरमये हैं ॥ अजर अमर होहु करो हरि हर छोह जरठ जठेरिन आशिरवाद दियेहैं ॥ तुलसी सराहे भाग तिन जिनके हिये डिंभ रामरूप अनुराग रंग रये हैं ॥ ३५८ ॥

आज अनरसे हैं भोरके पय पियत न नीके ॥ रहत न बैठ ठाढे पालने झूलतहु रोवत राम मेरो सो सोच सबही के ॥ देव पितर ग्रह पूजिये तुला तौलिये घीके ॥ तदपि कबहुं कबहुंक सखी ऐसेही अरत जब परत दृष्टि दुष्ट ती के ॥ बेग बोल कुल गुरु छुवै माथे हाथ अमीके ॥ सुनत आय ऋषि कुश हरे नरसिंह मंत्र पढ़ जो सुमिरत भय भी के ॥ जासु नाम सर्वस्व सदाशिव पारवती के ॥ ताहि झरावत कौसिला यह रीत प्रीतकी हिय हुलसत तुलसीके ॥ ३५९ ॥

राग आसावरी

माथे हाथ जब दियो ऋषि राम किलकन लागे । महिमा समुझ लीला विलोक गुरु सजल नयन तन पुलक रोम रोम जागे ॥ लिये गोद धाये गोद ते मोद मुनि मन अनुरागे । निरखि मातु हरषीं हिये आली ओट कहत मृदु वचन प्रेम कैसे पागे ॥ तुम सुरतरु रघुवंशके देत अमित मांगे । मेरे विशेषत गति रावरी तुलसी प्रसाद जाके सकल अमंगल भागे ॥ ३६० ॥

अमिय विलोकन कृपा मुनिवर जब जोये । तबते राम अरु भरत लषण रिपुदमन सुमुखि राखि सकल सुवन सुख सोये ॥ ला-

य सुमित्रा लिये हिये फनि मनि ज्यों गोये। तुलसी निछावर करत मातु अति प्रेम मगन मन सजल सुलोचन कोये॥ ३६१ ॥

मातु सकल कुल गुरु वधू प्रिय सखी सुहाई। सादर सब मंगल किये महि मनि महेश पर सबन सुधेनु दुहाई॥ बोल भूप भूसुर लिये अति विनय बडाई। पूजि पांय सन्मानि दान दिये लहि अशीष सुन बरषें सुमन सुर साईं॥ घर घर पुर बाजन लगीं आनंद बधाई। सुख सनेह तिहिं समयको तुलसी जाने जाको चोरो है चित चहुँ भाई॥ ३६२ ॥

राग धनाश्री।

या शिशुके गुन नाम बडाई। को कहि सके सुनो नरपति श्रीपति समान प्रभुताई॥ यद्यपि बुधि वय रूप शील गुण समै चारु चारयो भाई। तदपि लोक लोचन चकोर शशि राम भगत सुखदाई॥ सुर नर मुनि कर अभय दनुज हति हरि हि धरनि गरु-आई। कीरति विमल विश्व अघमोचन रहहि सकल जग छाई॥ याके चरन सरोज कपट तजि जो भजिहैं मनलाई। सो कुल युगल सहित तरि हैं भव यह न कछू अधिकाई॥ सुनि गुरु वचन पुलकि तन दंपति हर्ष न हृदय समाई। तुलसिदास अवलोकि मातु मुख प्रभु मनमें मुसकाई॥ ३६३ ॥

राग विलावल।

अवध आज आगमी यक आयो। करतल निरखि कहत सब गुन गन बहुतन परचो पायो॥ बूढो बडो प्रमानिक ब्राह्मण शंकर नाम सुहायो। सँग शिशु शिष्य सुनत कौशिल्या भीतर भवन बुलायो॥ पाँय पखारि पूजि दियो आसन असन बसन पहिरायो। मेले चारु चरन चारौ सुत माथे हाथ दिवायो॥ नख शिख बाल विलोकि विप्र तनु पुलक नयन जल छायो॥ लैले गोद कमल

कर निरखत उर प्रमोद अनमायो ॥ जन्म प्रसंग कह्यो कौशिक मिस सीय स्वयंवर गायो । राम भरत रिपुदमन लषणको जय सुख सुयश सुनायो ॥ तुलसिदास रनवास रहस बस भयो सबको मन भायो । सनमान्यो महिदेव अशीसत सानँद सदन सिधायो ॥ ३६४ ॥

राग सारंग ।

प्रभु हौं सब पतितन को टीको ॥ और पतित सब दिवस चार के हौं तो जन्मत ही को । बधिक अजामिल गनिका तारी और पूतना ही को ॥ कोऊ न समरथ अव करबेको खैंचि कहत लीको । मरियत सूर लाज पतितन में हमते को है नीको ॥ ३६५ ॥

हौं तो पतित शिरोमणि माधो । अजामील बातनही तारयो हुतो जो मोते आधो ॥ कै प्रभु हार मान कर बैठो कै अबहीं निस्तारो । सूर पतितको और ठौर नहिं है हरि नाम सहारो ॥ ३६६ ॥

राग गौरी ।

प्रानी हरि यश मन नहिं आवै । अहनिशि मगन रहै माया में कहु कैसे गुन गावै ॥ पूत मीत माया ममता सों यहि बिधि आप बँधावै । मृगतृष्णा जिमि झूठो यह जग देखि तासु उठि धावै ॥ भुक्ति मुक्ति का कारन स्वामी मूढ़ ताहि बिसरावै । जन नानक कोटिन में कोऊ भजन राम को पावै ॥ ३६७ ॥

साधो यह मन गह्यो न जाई । चंचल तृष्णा संग बसतहै याते थिर न रहाई ॥ कठिन क्रोध घटही के भीतर जिहि सुधि सब बिसराई । रत्न ज्ञान सबको हर लीना तासों कछु न बसाई ॥ योगी यतन करत सब हारे गुनी रहे गुण गाई । जन नानक हरि भये दिआला तो सब विधि बनि आई ॥ ३६८ ॥

साधो गोविंदके गुन गावो। मानुस जन्म अमोलक पायो बिरथा काहे गँवावो॥ पतित पुनीत दीन बांधव हरि शरण ताहि तुम आवो॥ गजकी त्रास मिटी जिहि सुमिरत तुम काहे बिसरावो॥तजि अभिमान मोह माया पुनि भजन राम चित लावो। नानक कहत मुक्त पथ एही गुरुमुख होय तुम पावो॥ ३६९॥

कोऊ भाई भूल्यो मन समुझावै॥ वेद पुरान साधु मग सुनकर निमिष न हरिगुन गावै॥ दुर्लभ देह पाय मानुसकी बिरथा जन्म सिरावै॥ माया मोह महासंकट वनिता मों रुचि उपजावै॥ अंतर बाहर सदा संग प्रभु तासों नेह न लावै॥ नानक मुक्ति ताहि तुम मानो जिहिं घट राम समावै॥ ३७०॥

साधो राम शरण विश्रामा। वेद पुराण पढे को यह गुण सुमिरे हरि को नामा। लोभ मोह माया ममता पुनि औ विषयनकी सेवा॥ हर्ष शोक परसे जिहि नाहिन सो मूरति है देवा। स्वर्ग नरक अमृत विप यह सब त्यों कंचन अरु पैसा॥ अस्तुति निंदा यह सम जाके लोभ मोह पुनि तैसा। दुख सुख यह बांधे जिहि नाहिन तिहि तुम जानो ज्ञानी॥ नानक मुक्ति ताहि तुम मानो यहि विधि को जो प्रानी॥ ३७१॥

मन रे कहा भयो तैं बौरा। अहनिशि औधि घटै नहिं जानै भयो लोभ सँग हौरा॥जो तन तैं अपनो कर मान्यो अरु सुन्दर गृह नारी॥ इनमें कछु तेरो रे नाहिन देखो सोच विचारी। रतन जन्म अपनो तैं हारयो गोविंद गति नहिं जानी॥ निमिप न लीन भयो चरणनसों बिरथा औधि सिरानी। कहु नानक सोई नर सुखिया राम नाम गुण गावै॥ और सकल जग माया मोह्या निर्भय पद नहिं पावै॥ ३७२॥

राग बिहाग ।

हरि हौं सब पतितनको राऊ । को करि सकै बराबर मेरी सो तौ मोहिं बताऊ ॥ व्याध गीध गज गनिका पूतना तिनमें बडो जु और ॥ तिनमें बडो अजामिल पापी में उनको शिरमौर । जहँ तहँ सुनियत यही बडाई मो समान नहिं आन ॥ यह सब आज काल्हके राजा मैं तिनमें सुलतान । अबलौं तौ तुम बिरद बुलावत भई न मोसों भेंट ॥ तजो बिरदके मोहिं उधारो सूर गही कर फेंट ॥ ३७३ ॥

राग सारंग ।

हरि हौं सब पतितनको नायक ॥ को करिसकै बराबरि मेरी और नहीं कोइ लायक ॥ जैसे अजामील दीने सो पाटो लिख पाऊं॥तो विश्वास होय मन मेरे औरो पतित बुलाऊं। यह मारग चौगुनो चलाऊं तो पूरो ब्योपारी ॥ वचन मान ल चलो गांठ दै पाऊं सुख अतिभारी। अबके तो इतनै लै आयो बेर बहुर की और ॥ पतित उधारन नाम सुन्यों जब शरन गही तक दौर। होडा होडी मनहिं भावते पाप किये भर पेट॥सबै पतित पायँन,तर मेरे यहै तुम्हारी भेंट । बहुत भरोसो जान तुम्हारो अघ कीने भर भांडो॥लीजै वेगि निबेर तुरत ही सूर पतित को टांडो॥३७४॥

राग आसावरी ।

श्याम बलराम गुन सदा गाऊं ॥ श्याम बलराम बिन दूसरे देवको सुपनहूँ माहिं,नहिं हृदे ल्याऊ ॥ यहै जप यहै तप यहै यम नेम व्रत यहै मम प्रेम फल यहै पाऊं । यहै मम ज्ञान यह ध्यान सुमिरन यहै सूर प्रभु देहु मैं यहै पाऊं ॥ ३७५ ॥

राग सारंग।

कह्यो शुक श्रीभागवत विचार॥ जाति पांति कोउ पूछत नाहीं श्रीपतिके दरबार। श्रीभगवत सुमिरे जो हित कर तरे सो भौजल पार॥ सूर श्याम गुन रट निशिवासर राम नाम निज सार॥ ३७६॥

राग कान्हरा।

बडी है राम नामकी ओट। शरण गये प्रभु काटि देत हैं करत कृपाके कोट। बैठत सभी सभा हरिजूकी कौन बडो को छोट॥ सूरदास पारसके परसे मिटत लोहके खोट॥ ३७७॥

राग धनाश्री।

सोई बडो जो हरि गुन गावै। शौच पवित्र होत पद सेवा बिन गुपाल ऊंच जन्म न भावै॥ वाद विवाद यज्ञ व्रत साधन कितहू जाय जन्म डहकावै। होय अटक जगदीश भजनते सेवा तासु चार फल पावै॥ कहूं ठौर नहिं चरण कमल बिन भृंगी ज्यों दशहूं दिशि धावै। सूरदास प्रभु संत समागम आनंद अभय निशान बजावै॥ ३७८॥

मन माधवको नेक निहारहि। सुन शठ सदा रंकके धन ज्यों छिन छिन प्रभुहि सँभारहि॥ शोभा शील ज्ञान गुनमंदर सुन्दर परम उदारहिं। रंजन संत अखिल अघ गंजन भंजन विषय विकारहिं॥ जो बिन योग यज्ञ व्रत संयम गयो चहहि भव पारहि। तौ जनि तुलसिदास निशिवासर हरिपद कमल विसारहि॥ ३७९॥

नाचतही निशि दिवस मरचो। तबहीं ते न भयो हरि थिर जबते जीवनाम धरचो॥ बहु वासना विविध कंचुक भूषण लोभादि भरचो। चर अरु अचर गगन जल थलमें कौन स्वांग न

करचो ॥ देव दनुज मुनि नाग मनुज नहिं याँचत कोउ उबरचो । मेरो दुसह दरिद्र दोष दुख काहू तो न हरचो ॥ थके नयन पद पाणि सुमति बल संग सकल बिछुरचो । अब रघुनाथ शरण आयो जब भव भय विकल डरचो ॥ जिहिं गुण ते वश होहु रीझकर सो मोहिं सब बिसरचो । तुलसिदास निज भवन द्वार प्रभु दीजे रहन परचो ॥ ३८० ॥

माधो जू मो सम मन्द न कोऊ । यद्यपि मीन पतंग हीन मति मोहि न पूजे ओऊ ॥ रुचिर रूप आहार वश्य उन पावक लोह न जान्यो । देखत विपति विषय न तजत हौं ताते अधिक अयान्यो ॥ महा मोह सरिता अपार महि सन्तत फिरत बह्यो । श्रीहरिचरण कमल नौका तजि फिर फिर फेन गह्यो ॥ अस्थि पुरातन क्षुधित श्वान अति ज्यों भर मुख पकरचो । निज तालू गत रुधिर पानकर मन संतोष धरचो ॥ परम कठिन भव व्याल ग्रसित हो त्रसित भयो अति भारी । चाहत अभय भेक शरणागत खगपति नाथ बिसारी ॥ जलचर वृन्द जाल अन्तरगत होत सिमिटि इक पासा । एकहि एक खात लालच वश नहिं देखत निज नासा ॥ मेरे अघ शारद अनेक युग गनत पार नहिं पावे । तुलसीदास पतित पावन प्रभु यह भरोस जिय आवे ॥ ३८१ ॥

राग धनाश्री ।

कृपा सो कहाँ बिसारी राम ॥ जिहि करुणा सुन स्रवण दीन दुख धावत हो तजि धाम । नागराज निज बल विचार हिय हार चरण चित दीन ॥ आरत गिरा सुनत खगपति तजि चलत विलम्ब न कीन । दिति सुत त्रास त्रसित निशिदिन प्रह्लाद प्रतिज्ञा राखी ॥ अतुलित बल मृगराज मनुज तनु दनुज हत्यो श्रुति साखी । भूप सदसि सब नृप विलोकि प्रभु राखु कह्यो

नरनारी ॥ वसन पूरि अरि दर्प दूरि करि भूरि कृपा दनुजारी। एक एक रिपु ते त्रासित जन तुम राख्यो रघुवीर ॥ अब मोहिं देत दुसह दुख बहु रिपु कस न हरहु भव भीर । लोभ ग्राह दनुजेश क्रोध कुरुराज बंधु खल मार ॥ तुलसिदास प्रभु यह दारुण दुख भंजहु राम उदार ॥ ३८२ ॥

काहे ते हरि मोहिं विसारो । जानत निज महिमा मेरे अघ तदपि न नाथ सँभारो ॥ पतित पुनीत दीन हित अशरन शरन कहत श्रुति चारो । हौं नहिं अधम सभीत दीन किधौं वेदन वृथा पुकारो॥खग गनिका गज व्याध पाँति जहिं तहिं हौंहू बैठारो ॥ अब किहिं लाज कृपानिधान परसत पनवारो फारो । जो कलि काल प्रबल अति होतो तुव निदेशते न्यारो ॥ तौ हरि रोष भरोस दोष गुन तेहि भजते तजि गारो । मशक विरिंचि विरिंचि मशक सम करहु प्रभाव तुम्हारो ॥ यह सामर्थ्य अछत मोहिं त्यागहु नाथ तहां कछु चारो।नाहिन नर्क परत मोकहँ डर यद्यपि हौं अति हारो ॥ यह बड त्रास दास तुलसी प्रभु नामहु पाप न जारो॥३८३॥

राग आसा ।

आज बनी छवि भारी श्री रघवोर्जाकी । सहित जानकी रत्न सिंहासन राजत अवधविहारी ॥ रवि शशि कोटि देख छवि लाजै तिलक पटल द्युतिकरी । वदन मयंक तापत्रय मोचन मन्द हास अति प्यारी ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल अरु वनमाल सुधारी। बाहुबिशाल विभूषण सुन्दर कर गह शारँगधारी ॥ कटिपर पीत वसनकी शोभा मोहत मदन निहारी। मुनिजन चरण सरोरुह ध्यान धरत त्रिपुरारी ॥ चतुर सखी मिलि करत आरती सज कंचनकी थारी । रामसेवक जय जय धुनि उचरत गावत पुर नर नारी ॥ ३८४ ॥

राग भैरवी ।

जानकी जीवन की वलि जैहों । चित कहै राम सिया पद परि-हरि अब न कहूँ चलि जैहों ॥ उपजी उर प्रतीति सपने सुख हरिपद विमुख न ह्वैहों । मन समेत सब तनके वासिन यही सिखावन दैहों ॥ श्रवणन और कथा नहिं सुनिहों रसना और न गैहों । रोकिहों नयन विलोकत औरहि शीश ईश पद नैहों ॥ नातो नेह राम सों करि सब नातो नेह निबैहों । सेवक चरण शरण नित रहिहों मुँह मांगे यह पैहों ॥ ३८५ ॥

आज बनी छबि श्रीगघोजीकी भारी । क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल धनुष बान कर धारी ॥ सुन्दर भाल तिलककी शोभा अलकैं घूँघरवारी । नयन कमल बदनकी शोभा सयननमें रस न्यारी ॥ बायें अंग जानकी सोहैं हनुमत आज्ञाकारी । गौर श्याम सुन्दर तन सोहैं चन्द्रवदन उजियारी ॥ रतन जडित अभूपण सोहैं मोतियन की छबि न्यारी । मात कौशल्या करत आरती तुलसिदास बलिहारी ॥ ३८६ ॥

अथ सीहरफी ।

अलिफ आपणे आपनूं समझ पहिलेकी वस्तुहै तेरडा रूप प्यारे ॥ बाझ आपणे आपदे सही कीते रह्यो बिच्च बसूरे दे दुःख भारे ॥ होर लक्ख उपाय ना सुक्ख होवी पुच्छ वेख सिआनडे जग्ग सारे ॥ सुखरूप अखंड चैतन्य हैं तू बुल्लाशाह पुकारदे वेद चारे ॥ ३८७ ॥

बे बन्ह अक्खी अते कन्न दोवें गोसे बैठके बात विचारिये जी ॥ छड्डु ख्वाहिशां जान जहान कूडा कह्या आरफां दा हिये धारिये जी ॥ पैरी पांय जंजीर बख्वाहिशी दे इस नफसनूं कैद करडारिये जी ॥ जान जानदीनूं जान रूप तेरा बुल्लाशाह एउँ खुशी गुजारिये जी ॥३८८॥

ते तनक छिद्र नहिं विच्च तेरे जित्थे कक्ख ना इक्क समाँवँदा ही ॥ ढूँड़ देख जहानदी ठौर कित्थे अनहुंदड़ा नजरीं आउँदा ही ॥ जैसे ख्वाबदा ख्याल होय सुत्तिआँ नूं तरां तरां दे रूप दिखाउँदा ही ॥ बुल्लाशाह नां तुज्झ थी कुज्झ बाहर तेरा भरम तैनूं भरमाउँदा ही ॥ ३८९ ॥

से समझ हिसाब कर बैठ अंदर तूँही आसरा कुल्लजहानदा है ॥ तेरे डिट्ठां दिस्सदा सभकोई नहीं कोई ना किसे पछाणदा है ॥ तेरा ख्याल ही होय हरतरां दिस्से जिवें बाल बैताल कर जाणदा है ॥ बुल्लाशाह फाहे कौन डाबरेनूं फसे आप आपे फाही ताणदा है ॥ ३९० ॥

जीम जीवणा भला कर मन्निया नें डरें मरणथीं एही अज्ञान भारा। इक्क तूँहीं ताँ जिंद जहानकेरी घटाकाश जिउँ मिले सभ-माहिं न्यारा ॥ तेरा ख्याल ही होय हरतरां दिस्से आदि अंत बाझों लगे सदा प्यारा। बुल्लाशाह संभाल तूं आपताईं तूँनाँ अमर हैं सदा नहीं मरनहारा ॥ ३९१ ॥

हे हिरस हैरान कर सट्टचो नू तैनूँ आपणा आप भुलाय आसू। बादशाहीयों सुट्ट कंगाल कीता कर लक्ख थों कक्ख दखलाय आसू ॥ मदमतड शेरनूं तंद कच्ची पैरीं पायके बन्न बहाय आसू। बुल्लाशाह तमाशडा होर देखो लै समुद्र नूं कुज्जड़ी पायआसू३९२॥

खे खबर ना आपणी रक्खदा हैं लग ख्याल दे नाल तूं ख्याल होया। जग ख्यालनूं सुट्ट बेख्याल होसां जिसें होय अधजाग्या नाहिं सोया ॥ तदों देख खां अंद्रों कौन देखे नहीं घास में छप्प हाथी खलोया। बुल्लाशाह जिउँ गले दे विच्च गहिणा फिरे ढूँडदा तांहिते नांहि खोया ॥ ३९३ ॥

चे चानणा कुल्ल जहान दा तूं तेरे आसरे होय विवहार सारा। होय सभकी आँख सों देखदा हैं तुझे सूझदा चांनणा औ

अंधारा ॥ नित जागणा सोवणा ख्वाब तीनों देण तेरे आगे होए कई बारा । बुल्हाशाह प्रकाशस्वरूप तेरा घट्ट बद्ध ना होत है एकसारा ॥ ३९४ ॥

दाल दिलगीर ना होय मूले दीगर चीज नापैद तहकीक कीजै । अव्वल जाय करो सुहबत आरफां दी सुखन तिन्हा दे आबहयात पीजै । चशम जिगर दे मलन होरहे मूले नहीं सूझदा तिनोंको साफ कीजै ॥ बुल्हाशाह सँभाल तूं आपताईं तूं ताँ एक आनंदमय सदा जीजै ॥ ३९५ ॥

जाल जरा भी शक्क ना रक्ख मन ते हो बेशक्क तूं ही खुद खमस साईं । जिमें सिंह भुलाय बल आपणे नूं चरे घास मिल अजा मैं अजान्याईं ॥ पिच्छों समझ बल गरज्या अजा भागी भयो सिंह को सिंह कछु भेद नाहीं । तैसे तोहि तरां कछु कोर धारी बुल्हाशाह संभाल तूँ आपताईं ॥ ३९६ ॥

रे रंग जहान देखदा है सोहणे बास विचारयां दिस्मदे नी । जिवें होत हुब्बाब बहु रंग दे जी अंदर आब दे जरा बिच्च फिस्सदे नी ॥ आब खाक आतिश बाद भयं कट्ठे देख अज्जके कल्ह बिच्च खिस्सदे नी । बुल्हाशाह संभालके देख खां तूँ सुख दुःख सभी कहु किस्सदे नी ॥ ३९७ ॥

जे जावणा आवणा नहीं ओथे कोह वांग हमेश अडोल है जी । जिवें बद्दलां दे चले चंद चलदा लगे बालकाँ नू पड़ा भोल है जी ॥ मन्न इंद्री देह प्राण आदिक वोह देखणे दा अडोल है जी । बुल्हाशाह संभाल खुशहाल हूजे ऐन आरफाँदां एहो बोल है जी ॥ ३९८ ॥

सीन सितम करना जान आपनी ते भुल्ल आपथी होर कुछ होवणा जी । सईयो लिख्या शेर चितेरयां ने सच्च जानके बालकाँ

रोवणा जी ॥ जरा मैल नाहीं देख भुल्लना है लग्ग जिकडों जाण क्यों धोवणा जी। बुल्लाशाह जंजाल नहीं मूल कोई जाणबुज्झके बुज्झ खलोवणा जी ॥ ३९९ ॥

शीन शुबा नहीं कोई जरा इसमें सदा आपणा आप सरूप है जी। नहीं ज्ञान अज्ञान की ठौर उहां कहां सूर में छाउँ अरु धूप है जी ॥ पडा सेज ही माहिं में सही सोया कुडा सुपनका रंक अरु भूप है जी। बुल्लाशाह संभाल जब मूल देखा ठौर ठौर में आप अनूप है जी ॥ ४०० ॥

स्वाद सबर करना आयखणी उत्ते देख रंग ना चित्त डोलाइये जी। सदा तुखम दी तरफ निगाह करनी पात फूल फल ओर ना जाइये जी ॥ जोई आय अरु जाय टिक रहे नाहीं तासों कौन दानिश चित्त लाइये जी ॥ बुल्लाशाह संभाल खुद खण्ड चाखी जिसे विषे फल तिसे क्यों खाइये जी ॥ ४०१ ॥

ज्वाद जिकर अरु फिकर को छोड दीजे कीजे नहीं कछु यही पछानणा है। जासों उठयां नाहीं के बीच डारे हो अडोल देखो आप चानणा है ॥ सदा चीज नापैदही देखियेजी यही यही कर जीयमें आनणा है ॥ बुल्लाशाह संभाल तूं आपताई तूं तां सदा आनन्दमय जानणा है ॥ ४०२ ॥

तोय तोर महबूबदा जिन्हा डिट्ठा तिन्हां दूई तरफों मुख मो डयाई ॥ काईलटक प्यारदी लुट्टलीते हट नांहि ऐसा जीउ जोडि याई ॥ अट्ठो पहिर दिवान मस्तान फिरदे ओनां पेर आलूद ना बोडियाई ॥ बुल्लाशाह उह आप महबूब होये शौक यारदे कुफर सभ तोडियाई ॥ ४०३ ॥

जोय जुदा नहीं तेरा यार तैंथीं फिरें ढूंडदा किसनूं दस्स मैनूं॥ पहिले ढूंडणेहार नूं ढूंड खां जी परतक्ख घरे बिज रस्स तेनूं ॥

मत तूहीं होवे आप यार सभ दा फिरें ढूँडदा जंगला विच्च जेनूँ ॥ बुल्लाशाह तूँ आप महिबूबप्यारा भुलआपथीं ढूँडदा फिरे केनूँ४०४

ऐन ऐन ही है आप बिना नुकते सदा चैन महबूब दिलदार मेरा ॥ इक्क बार महबूब नूँ जिन्हाँ दिट्ठा उह ताँ देखणेहार है सब केरा ॥ उसतों लक्ख बिहिशत कुर्बान कीते पहुतामहिल बेगंम चुकाय झेरा ॥ बुल्लाशाह हरहाल बिच मस्त फिरदे हाथी मत्तडे तोड जंजीर जेरा ॥ ४०५ ॥

गैन गंमने मार हैरान कीती अट्ठे पहिर प्यारे नूँ लोडदी सां ॥ मैनूँ खावणा पीवणा भुल्ल गइया रब्बा मेल जानी हत्थ जोडदीसां॥ सैयां छड्ड गैयां मैं इकल्लडी नूँ अंग साक नालों नाता तोडदीसां॥ बुल्लाशाह जब आपनूँ सही कीता तां मैं सुत्तडी अंग नां मोड-दीसां ॥ ४०६ ॥

फे फिकर गिया सैयो मेरीयो नी मैं नां आपणे आपनूँ सही कीता । कूडी देह सों नेह चुकाइयाई खाक छाणके लाल नूँ टोल लीता ॥ देख धूएं दे धौलरे जग्ग सारा सुट्ट पाया है जीया तें हार जीता ॥ बुल्लाशाह अनन्त अखण्ड सत्ता लक्ख आपनूँ आबहयात पीता ॥ ४०७ ॥

काफ कौन जाणे जान जाणदी नूँ आप जानणेहार इह कुल्ल-दा है ॥ परतक्ख थीं आद परमाण जेते सिद्धकीते इसदे नहीं भुल्ल दा है ॥ नेत नेत कर वेद पुकारदे नी नहीं दूसरा एसदे तुल्ल-दा है ॥ बुल्लाशाह जब आप बेचार देखा सदा स्वयं प्रकाश एह झुल्लदा है ॥ ४०८ ॥

गाफ गुजर गुमान ते समझ बहिके अहंकार दा आसरा कोय नाहीं । बुद्धि आदि संघात जडि देखिये जी पडा कठा पखान जिउ भूमिमाहीं॥आप आत्माज्ञान सरूप सत्ता सदा नहीं फुरदा

खड़ा एक जाहीं ॥ बुल्लाशाह विवेक विचार सेती खुदी छोड खुद होयके लहे नाहीं ॥ ४०९ ॥

लाम लग्ग आंखें जाय कहांसोया जाणबुज्झके दुःख क्यों पावना है॥जरा आप नांहटें चुरि आइयां तो कद्द मम्सले लोक सुनावणा है ॥ कागविष्ठ ज्यों जानके तजे संता विष मूढ क्यों चित्त लुभावना है॥ बुल्लाशाह उह जानणेहार दिलदी करे चोरियां साध कहाउनां है ॥ ४१० ॥

मीम सदा मौजूद हरजाय मौला तिसे देख क्या भेशबनाइयासू ॥ जिवें एकही तुख्म बहु तरां दिस्से तिवें आपणा आप फैलाय आसू ॥ मांहि आपणे आपदे खेल करदा नरनार होय चित्तलुभाय आसू ॥ बुल्लाशाह नां मूलथीं कुज्झहोया सोई जाणदा जिसे जणाय आसू ॥ ४११ ॥

नून नाम अर रूप उठाय दीजे पीछे अस्ति अरु भाति प्रिय साच हैं जी ॥ जोई चित्त की चितवनी बीच आवे सोई जान तहकीक कर काच है जी ॥ तीन बुद्धि की वृत्ति का तूंही साक्षी तूंही जाण निजरूप तें राच हैं जी । बुल्लाशाह तूं भूप अचल्ल बैठा तेरे आगे प्रकृती का नाच है जी ॥ ४१२ ॥

वाव वख्त इह हत्थना आवणाई इक पल्कदे लक्ख करोड देवें ॥ जतन करें तां आप अचाह होवें तूं तां पहिर अट्टे विषय विष्प सेवें ॥ कूड बेपार कर कूड लय मेलदा चिंतामणि दे जड कच्च लेवें ॥ बुल्लाशाह संभाल तूं आप ताईं तूं अनन्त लघुदेहु मैं कहां मेवें ॥ ४१३ ॥

हे होय हरतरां दिलदार प्यारा रंगारंगदा रूप बनाय आई ॥ कहूं आपको भूल रंजूल होया ऊरध अरध भरम होय सन्ताय आई॥जदों आपणे आप में प्रगट होया निजानंदके माहिं समाय

आई ॥ बुल्लाशाह जो आदि था अन्त सोई भया नीर में नीर मिलाय आई ॥ ४१४ ॥

अलफ अज्ज बणया सभो चज्ज मेरा शादी गमी थीं पार ख-लोयआमें ॥ भया दूर भ्रम मर्म सभ पाइयाईभय कालदा जिय थीं खोयआ में॥ साधसंगकी दयाथीं भया निर्मल घट घट चैतन सुख सोयआ में ॥ बुल्लाशाह जब आपनूं सही कीता जो आदिथा अंत फिर होयआ में ॥ ४१५ ॥

ये यार पाया सैयो मेरीयो नी मैं तां आपणा आप गँवायके जी॥रही सुद्ध ना बुद्ध जहानकेरी थकी विगति आनन्द में जायके जी ॥ अट्ठों पहर विश्राम नां काम कोई दूई ज्ञान की भाय जलायके जी॥ बुल्लाशाह मुबारकां लक्ख देवो भई जान जानी गललायके जी ॥ ४१६ ॥

छन्द ।

दूधपियें सिध साध बालकबच्छियां । कास रखे सिध साध खोजे खम्सियां॥अस्नान करे सिध साध मेंडक मच्छियां ।नानक मन संभाल सब गल्ल अच्छियां ॥ ४१७ ॥

गजल ।

खाक आपको समझना अकसीर है तो यह है॥ इकलाक सब से रखना तसवीर है तो यह है ॥ सभकाम अपना करना तकदीर के हवाले । नजदीक आरफोंके तदबीर है तो यह है ॥ ४१८ ॥

अथ बारामासा ।

चैतर चित बिच समझ प्यारे दुनियाँ कूड़ा बानाई ॥ जिन्हा नाल तूं लाई दोस्ती उन्हांने भी चलजानाई ॥ सभदे शिर पर काल कूकदा क्या राजा क्या रानाई ॥ मोतीराम कदी समझ प्यारे जगबिच रहण नमानाई ॥ ४१९ ॥

विशाख बिसारयो नाम माईदा आकड आकड़ चलनाहै ॥ खाय खुराकां पहन पुशाकां जमदा बकरा पलना है ॥ चारदिना दे रहणे कारण महल माडियां मलना है ॥ मोतीराम तूं समझ प्यारे अंत खाकबिच रलना है ॥ ४२० ॥

जेठ मायादा मान न करिये माया काग बनेरे दा ॥ पलबिच आवे छिनबिच जावे सैर करे चौफेरे दा ॥ इक मन होके नाम न जप्या क्या नफा दम तेरे दा ॥ मोतीराम तूं समझ प्यारे अंत काल जम घेरे दा ॥ ४२१ ॥

हाढ होश कर दिलबिच प्यारे काल नगारा बजदाई ॥ यह दुनियां भाँडकी नाईं जो घडया सो भजदाई ॥ माया जोडी लाख करोडी अजे न मुरख रजदाई ॥ मोतीराम कदी समझ प्यारे माण ताण दिल तजदाई ॥ ४२२ ॥

सावण शौक मायादा कीना साई दा शौक न कीता तैं। जिस साहिब तैनूं पैदा कीता उसदा नाम न लीता तैं ॥ अपने हत्थी जाणबूझके जहरप्याला पीता तैं ॥ मोती राम कदी समझ प्यारे जन्म अकारथ कीना तैं ॥ ४२३ ॥

भादों भार पिया सिर तेरे किसबिध पार उतारेगा। डूंगी नदी कहरदियां लहरां कंढे बैठ पुकारेगा ॥ ओथे तेरा कोई न बोली रो रो धाहीं मारेगा। मोतीराम तू समझ प्यारे जितके बाजी हारेगा ॥ ४२४ ॥

अस्सू ओडक चलना प्यारे चलोचलीदा डेराई। सबका बासा जंगल होसी जो कोई भला भलेराइ ॥ साथ तेरे कोई ना जासी क्या मेरा क्या तेराई। मोतीराम कदी समझ प्यारे कोई दिनदा रैन बसेराई ॥ ४२५ ॥

कत्तक किसमत भली उन्हांदी जिन्हां नाम जप लीताई। सोई अमर जगत् बिच होए जिन्हां साधसंग कीताई ॥ रामनाम

दा प्रेम पियाला भर के कदी न पीताई । मोतीराम कदी समझ प्यारे जन्म अमोलक बीताई ॥ ४२६ ॥

मगहर मस्त होया बिच्च दिलदे आप खुदाय कहावें तूं । सभदे शिरपर कर तदवीरां सभपर हुकम चलावें तूं ॥ ओथे तेरा कोई ना बेली रो रो हाल गँवावें तूं । मोतीराम कदी समझ प्यारे राह अवल्लडे जावे तूं ॥ ४२७ ॥

पोह पियारा याद न कीना कीती गल्ल नकारी तैं । ऐसा नाम अमोलक प्रभु दा नां लीता इक्कबारी तैं ॥ बार बार समझा रहे तैनूं इक्क ना जरा बिचारी तैं।मोतीराम कदी समझ प्यारे जीतके बाजी हारी तैं ॥ ४२८ ॥

माघ मानना करिये बंदे नाल गरीबी रहणाई । जो कोई आखे गल्ह वधीकी ओह भी शिरते सहणाई ॥ ऊचे होके मूल न बहिये नींचे होके रहणाई । मोतीराम कदी समझ प्यारे बाजी नूँ जित लैणाई ॥ ४२९ ॥

फागुन पकडयो जदो जमां ने रती न जावे पेशपेरी । राम भुलाया क्या फल पाया पच्छोतावेंगा बहुबरी॥बार बार समझा रहे तैनूं साहिब दे दरहो ढेरी ॥ मोतीराम कदी समझ प्यारे अब लगाय नां कछु देरी ॥ ४३० ॥

राग आसा ।

है कोइ दम की बात जगत में हर को सुमिर दिन रात ॥ उस बिन नहिं तेरा पार उतारा क्यों नहिं हरिगुन गात ॥ चार पहर नींदर में बीते जाग होइ परभात ॥ यह दुनियां है रैन बसेरा जो आवत सों जात॥काम क्रोध तज लोभ प्रानी चारों वेद बखात॥ धन यौवनका मान न करिये चार दिननकी बात ॥ कोई जात नहिं संग तिहारे मात पिता क्या भ्रात ॥ माया लोभ नित ही

भरमत काल लगाई घात ॥ रामकृष्ण सुमिरों निशि वासर छोड़ छाड पछपात ॥ रोग दोष त्रैताप विनाशे गंगा जमुना न्हात ॥ रूपचंद हैं वे नर मूरख जिन्हें न हरि यश भात ॥ ४३१ ॥

भैरवी ।

प्रभु तेरी लीला अपरंपार अगम अपार । खण्ड ब्रह्मंड रचे सभ तेरे कोउ न पावत पार ॥ सुर नर मुनि जन खोजत हारे पढ़ पढ़ वेद विचार । प्रभु तेरी० ॥ अगम निगम सभ तोहिं पुकारें हे प्रभु सिरजनहार । चन्द्र सूरज दोउ दीपक कीने अगम जोत निरंकार ॥ प्रभु तेरी० ॥ अनहद शब्द बजत झंकारा संतन प्राण अधार ॥ नानारूप धरचो सभ अंतर निरगुण सगुण अकार ॥ प्रभु० ॥ दश अवतार धरे या जगमें हैं सभ मुक्त दुआर ॥ रूपचंद सुमिरो हितचितकर निशिदिन कृष्ण मुरार ॥ प्रभु० ॥ ४३२ ॥

प्रभु मेरी नाउ उतारो पार ॥ बलिहारी नन्द कुमार ॥ भवसागर संसार अगम हैं तिरछी जाकी धार ॥ पार उतरना कठिन भयो हैं सूझत वार न पार ॥ प्रभु० ॥ लोभ मोहके बादल उमडे भयाँ महा अँधकार ॥ काम क्रोध पवन सँग लीने बरसत हैं हंकार ॥ प्रभु० ॥ डोलत हैं यह नाव पुरानी भवसागर मँझधार ॥ बिजली चमकत बादल गरजत लरजत जिया हमार ॥ प्रभु० ॥ दीनदयाल भरोसे तेरे चढ़ाया सब परिवार ॥ इस बेडे को पार उतारो हे दयाल करतार ॥ प्रभु० ॥ महा मली में कपटी कामी तुम हो बखशनहार ॥ रूपचन्द निज ठौर नहीं कोउ नाम तेरा आधार ॥ प्रभु० ॥ ४३३ ॥

राग जंगला ।

इकदिन होगा कूच जरूर ॥ चलना होसी साहिब हजूर ॥ कूडा करे प्रदेसी माणा ॥ रैन गुजार भोर उठ जाणा ॥ दौलत

माया छोड गरूर ॥ क्यों सोया है जाग प्यारे ॥ रैन गई छिपे सब तारे ॥ मंजिल भारी चलना दूर ॥ कंकन चुन चुन महल उसारे । झूंठे हैं यह सभ बिसतारे ॥ इक दिन होसी चकना चूर ॥ मात पिता अरु घर की नारी॥कोई नहिं दुख बाँटन हारी॥ सुख के हाथी न हो मसरूर ॥ दौलत माया जोड खजाने ॥ इकट्ठे कीने जोग विगाने ॥ यह जग किशती का है पूर ॥ क्या ऊंच नीच अमीर फकीर ॥ सबपर चलती है तकदीर ॥ इक दिन यम मुँह देसी धूर ॥ यह दुनिया सुपनेकी नाई ॥ जो आया सोही चल जाई ॥ एक रहेगा प्रभु का नूर॥इस दम दा कुछ करले भाई ॥ हरि के बिन नहीं और सहाई ॥ घट घट आप रह्या भरपूर ॥ काम क्रोध सब तजदे प्रानी । झूठी मति क्यों दिलमें ठानी ॥ आखर होवेगा मजबूर ॥ जब यम आवे पकड लेजावे ॥ दौलत दुनिया पल में छुडावे ॥ नहीं चलेगा कुछ मकदूर ॥ कहत रूपचंद सुनहो प्रानी ॥ यह दुनिया है बिलकुल फानी॥कृष्ण चरणका हो मशकूर ४३४॥

हरि नाम कभी ना पुकारा ॥ गया बिरथा जनम है सारा ॥ मोह माया में उमर गुजारी ॥ नित धन के रहे व्योपारी ॥ और दुरलभ नाम बिसारा ॥ किया दिन को मेरा तेरा ॥ सुख नींदने रैन को घेरा ॥ हँस बोला काल नगारा ॥ गया बिर० ॥ थे बार बार क्या कहते ॥ जब गरभमें थे दुख सहते ॥ ना भूलूंगा कभी मुरारा ॥ गया० ॥ कीनी धरती जर से पोली ॥ झट मौत आ शिरपर बोली ॥ है जग से तेरा किनारा ॥ग०॥ किले महल मकान बनाये ॥ और बाग बगीचे लगाये ॥ संग गया न बुरज मुनारा ॥ किस बात पै है मन भूला ॥ किस करनी पै है फूला ॥ तज मोह कुटुंब संसारा ॥कुछ करले अब भी भाई॥ नहीं हरि बिन कोई सहाई ॥ नहीं साथी कोई प्यारा ॥ मानस देह

नहीं नित मिलती ॥ नहीं बाग बहार नित खिलती ॥ निकट आयाहै यमका द्वारा॥इस कालने है सब घेरे ॥ रुख गवन कंस के फेरे ॥ दुरयोधन भीमको मारा ॥ गये कौरव पांडव राजे ॥ जग डंका था जिन का बाजे ॥ इस कालने पकड़ा ॥ गर्व कारूं जैसे के तोडे ॥ जिन लाख खजाने थे जोडे ॥ औरंग को बडा हंकारा ॥ नौशेरवा हातमताई ॥ सखावत जिन थी बनाई ॥ कर जगमें गये चमकारा ॥ श्री विक्रम भोज करन थे ॥ जो नित ही धरम की शरन थे ॥ कर गये धर्म जयकारा ॥ हो ध्यान न जबतक सगुण का ॥ कभी ज्ञान नहीं होता निर्गुण का ॥ मन किया न सोच विचारा ॥ कर अबही हरिसेवा ॥ तो पावे ज्ञान हरि मेवा ॥ हो रूप तेरा निस्तारा ॥ ४३५ ॥

राग प्रभाती।

छोड बिस्तरा उठ रे गाफल अमृतवेला आया रे ॥ सगरी रैन नींद में काटी बिरथा समा बिताया रे ॥ जिस माया के मान ने मूरख सुख से तुम्हें सुलाया रे॥ अंध घोर में उस माया ने तुमको पकड गिराया रे ॥ आध भाग तेरी आयु का बालापनमें भाया रे ॥ दूजा भाग गयो मोह माया में कुटिल कुटुम्ब जो पाया रे ॥ चलता है अब भाग तीसरा वृद्ध हुई तेरी काया रे ॥ आया निकट द्वारा जम का नहीं मूरख समझाया रे ॥ यह दुनिया है पलक बसेरा जिसपर ठाट जमाया रे ॥ क्या भरवासा है सासों का दम आया ना आया रे ॥ माटी होगी पल छिन में सब जब यम तुझे बुलाया रे ॥ सभी ठाट ह्यां पडा रहेगा जिससे मन भटकाया रे ॥ नरक घोर में तडपेंगे वह जिन हरि को नहीं ध्याया रे ॥ स्त्री और सन्तान पियारी जिससे मोह बढ़ाया रे ॥ कह कह अपना उन्हें अज्ञानी नाहक जिया जलाया रे॥ अपना

तू मत समझ किसी को सभको समझ पराया रे ॥ एक वार भी मन चित दे जिन ईश्वर का गुन गाया रे ॥ लोक प्रलोक में अहकर उसने मानुसजन्म सुधाया रे ॥ ४३६ ॥

गजल।

तुम्हें धनवाद ऐ ईश्वर तेरे सब खेल न्यारे हैं ॥ तेरे वेअन्त सागर में कई पैराक हारे हैं ॥ महा अंध घोरसे जल पर पृथिवी का रचा मंडल ॥ कमल से ब्रह्मा पैदा करके चारों वेद उच्चारे हैं ॥ कहीं जल और कहीं खुश्की कहीं पहाडों को कर कायम ॥ जुदा हर द्वीप और चश्में जो धरती पर सिंगारे हैं ॥ सतूं बिन अरश कायम कर लगाया रंग कुदरत का ॥ जमाया चांद सूरज को सजाये क्या सतारे हैं ॥ बनाकर पेड फूलों किये तकसीम गुलशनमें। अयां कुदरतहै हरगुलसे अजब तेरे नजारेहैं ॥ हुई कायम य जब हस्ती फनाको भी दी तब शक्ती। किसी की बस नहीं चलती जो रावन जैसे मारे हैं ॥ किसे ताकत दुनीचंद उसकी लीला जो करे वर्णन । ऋषीश्वर औ मुनीश्वर और योगीश्वर सभ पुकारे हैं ॥ ४३७ ॥

जगत सभ गैर है लोकों। य कूडी सैर है लोको ॥ य जग पल छिनक मेला है। सफर पडना इकेला है॥गई रैन अब सवेला है। जपो राम अब भी वेला है ॥ तजो मोह माया तुम भाई। जनम बिरथा ही सभ जाई। चले नहीं सँग पिता माई॥ य जग सुपने की है नाई। तू क्यों मस्ते में घेरा है ॥ करे नित मेरा तेरा है ॥ जहां पर पडना फेरा है । कठिन रस्ता अँधेरा है ॥ जो प्रभुको मनसे ध्यातेहैं। उसीके गीत गाते हैं ॥ व वैकुंठोंमें जाते हैं। अटल पदवीको पाते हैं ॥ वही साकार सरगुण है। उसीका नाम निरगुणहै ॥ नहीं कोई भी उस बिन है। उसीकी

रात और दिनहै॥जहांपर उसको ध्यायाहै। वहीं मौजूद पाया है॥
शरण अहकर भी आया है। यही अब जीमें भाया है॥ ४३८॥

राग पीलो।

हरि से भी मन प्रीत लगाले। जिदगीका कछु नफा कमाले॥
यह जीना है चार दिहाडे। किस हस्ती पर पाउँ पसारे॥
इस दिहका नहिं कुछ भरवासा। काहे दर दर फिरत पियासा॥
जैसा मोह माया में कीना। अंत समय वैसा दुख दीना॥
मुनि जन कर कर गये पुकारा। ऐसाही जीवन संसारा॥
नये साल नित खुशी मनाई। खुशी नहीं यह उमर घटाई॥
जिस खातर जग ठाट बनावे। आखिर कुछ तेरे साथ न जावे॥
हाजिर होगा जब जम द्वारे॥ तुझे मिलेंगे संकट भारे॥
समझ सोचकर समां बिताओ। अन्त समै पूरा सुख पाओ॥
दुनीचंद हरि प्रीत सहारे। कर मंझधारसे नाव किनारे॥ ४३९॥

राग प्रभाती।

क्यों सोयाहै जाग मुसाफिर भोर हुआ पथ भारी है। बहुत मुसाफिर पार उतर गये और पूर की त्यारी है॥ किस कारण तुम बने बिदेशी क्यों गफलत बुध मारी है॥ नींद त्याग कर उत्तम सौदा सफर न बारंबारी है॥ नेक अमल हरि नाम नफा बिन सब बिरथा जग जारी है। मोह माया के जाल में पडना जिल्लत और खुवारी है॥ स्याही गई सफेदी आई अजल कि दस्तक जारी है। बिन खरीद हरी रस सौदाके जीती बाजी हारी है॥ मेरी मेरीमें मन मूरख आयू कट गई सारी है॥ बिन सत नाम यह सकल कमाई आखर सभ नाकारी है॥ सच्चे सफर का फिकर भी करले वहां न किसीसे यारी है। रूप बिना हरि नाम कमाई कोई नही उपकारी है॥ ४४०॥

गजल ।

जप जाप मन हरि नामका सब दिन गया अब शाम है ॥ जग जाल को तज अब भी मन आया अजल का प्यामहै । उमर भर लालच में पडकर मालोजर कट्ठा किया ॥ काल जम घेरेगा जब तब मालोजर किस काम है । सत करमको छोडकर नित झूठको करता है प्यार ॥ सोच कर ले अब भी प्यारे नरक का यह दाम है । खुशी हो क्यों अकडता है बांकपन और फूले तन ॥ दूध इसको समझ मत मन जहर का यह जाम है । मेरी मेरी करके दिन भर रैन मस्ती में कटी ॥ ऐसे ही आयु घटी लिया न पल भर नामहै । गांव चक जागीर पाकर मुलक के हाकम बने ॥ सत हुकम के खौफ बिन यह सभ हुकूमत खाम है । क्यों सोया है होके गाफल नर्म सुंदर सेजपर ॥ जंगलोंमें आग पर इक दिन तेरा विश्राम है । क्यों हुआ है मस्त जालिम क्या बनता है सकां ॥ बिन कमाई नाम बिरथा महल माडी बाम है ॥ काम क्रोध और लोभ तीनों नरक के रस्ते हैं। यह खास गीतामें श्रीमुख से कहा घनश्यामहै ॥ हिरस सखती और तकब्बर छोडदो बिल-कुल इन्हें ॥ कारूं और शदाद का नाम अबतलक बदनाम है॥ रहम हम दरदी सखावत है फरज इन्सानका ॥ हातम और नौशे-रवांका जगमें चर्चा आमहै ॥ शैदा होके हुस्न पर खालको बैठा है भुला । अजलका है ममयपंजा क्यापरी गुलफामहै ॥ अपनी अपनी गरज के हैं इस्तिरी फरजंद सभ ॥ काम आना अन्तके दिन एक प्यारा राम है ॥ कर गुनाह नित भागता है हाकमोंके खौफ से । मगर हाकम सचा सभ कुछ देखता सभ धाम है॥ हैं जो भूले नाम हक वह जिंदोंमें हरगिज नहीं ॥ नाम भक्तोंका है कायम जगका जब तक क्यामहै॥ दस्ता बस्ता हक से है अहकर की नित यह इलतिजा रहमसे कर कर्म मुझपर हर दफा परनामहै॥ ४४१॥

हमें इक दिन फिर आखर को उसी घर सभको जाना है। समझ लो दिल में यहाँ किसका ठिकाना है॥ करो मत वैर तुम हरगिज अगरचिह जोरो ताकद है। चलो सभ मिलके आपस में कि यह चंदे जमाना है॥ कोई दम का य मेला है य क्यों आपसके झगडे हैं। नाहक यह मुफ्त में हर इक को दुश्मन क्यों बनाना है॥ जपो निशिदिन हरिहरको कहे गिरिधर जो हित चाहो। नहीं तो आप पछताओ मुझे केवल चिताना है॥ ४४२॥

राग जंगला।

मेरे मन राम को नाम अधारा। शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक निशिदिन करत बिचारा॥ जाके जपत कटत दुख दारुन उतर जात भवपारा। शवरी गीध अजामिलसे खल तिनहूँ को प्रभु तारा॥ जिन जिन शरण लीन संकट में तिनको आप सुधारा नाम महातमको बरनै सभ पाप कटन को आरा॥ प्रेम लाय जो ध्यान लगावे सो पावै सुख सारा॥ आयो तव पद शरण नाथ मैं औगुण अमित अपारा। गिरिधर पार उतारा मोको लैहौं नाम तुम्हारा॥ ४४३॥

भ्रातृगण यह उपदेश हमारा। वेद शास्त्र पुराण निगमागम सब ग्रंथन को सारा॥ रघुवर चरण शरण होय उतरो भवसागरसे पारा। जाहि वेद कहे शुद्ध ब्रह्म सो दशरथ राज दुलारा॥ सर्व व्यापी सर्व अन्तर्यामी सर्व जगत आधारा॥छोडो सकल कुतर्क कपट मन जो होवे निस्तारा। सत्यनाम इक श्रीरघुवरका मिथ्या सब संसार॥ध्रुव प्रहलाद आदि भगतन हित होत अकार मकारा। दीन दयाल स्वामी सोई भये मनुज अवतारा॥ ४४४॥

राग पीलो।

राम बिना तेरा कोई ना सहाई। रात दिना तू सुमिरले भाई॥

यह जग है कोइ दिन का मेला क्यों झूठी है प्रीति लगाई । भाई बंधु कुटुम्ब छोड़ कर तनहा जावेगा तू भाई ॥ कछु भी तेरे सँग चलना नाहीं महल माडियां खूब बनाई ॥ इक पलभी हरि नाम न लीन्हा आयु आपनी वृथा गँवाई ॥ कोई है सुखमें दुखमें है कोई यह रचना है राम बनाई ॥ माधव रहु ईश्वरकी शरणी जो परलोक में हो सुखदाई ॥ ४४५ ॥

गजल ।

तू गोविंदहै और तू गोपालहै । तूही कृष्ण लाला तू नंदलाल है ॥ एक रूप तेरा जगतमें समाया । पछावां तेरा कहीं ढूँढे न पाया ॥ मैं ढूँढूँ किधर नाथ देखूं तुझे । कृपा करके अब दर्श दीजो मुझे ॥ मैं अनाथ हूं और तू नाथोंका है नाथ । नाम अपने की लाज पालो मेरे साथ ॥ तेरे चरणोंमें नित मेरी हो नमाम । गंगाविष्णुकी विनती है मुदाम ॥ ४४६ ॥

राग जंगला ।

नर अचेत पापसे डर रे ॥ दीनदयाल सकल भय भंजन शरण ताहि तू पड रे ॥ वेद पुराण जिसका गुण गावें ताको नाम हिये में धर रे ॥ पावन नाम जगतमें हरिको सुमिर सुमिर पापां मल हर रे ॥ मानस देह बहुरि नहिं पावे कछू उपाउ मुक्तिका कर रे ॥ नानक कहत गाय करुणामय भवसागर से पार उतररे ४४७

बिरथा कहों कौन सों मनकी ॥ लोभ ग्रस्यो दशहूं दिशि धावत आशा लागी धनकी ॥ सुखके हेत बहुत दुख पावत सेव करत जन जनकी ॥ द्वारे द्वारे श्वान ज्यों बोलत नहिं सुधि राम भजनकी ॥ मानस जन्म अकारथ खोयो लाज न लोग हँसनकी ॥ नानक हरि यश क्यों नहिं गावत कुमति विनाशे मनकी ॥ ४४८ ॥

राग सोरठ ।

भूल्यो मन माया उरझायो ॥ जो जो कर्म कियो लालच लगि तिहि तिहि आप बँधायो ॥ समझ न पडी विषयरस राच्यो यश हरि को बिसरायो ॥ मँग स्वामी सो जान्यो नाहीं बन खोजन को धायो ॥ रत्न राम घट ही के भीतर ताको ज्ञान न पायो ॥ नानक जन भगवंत भजन विन विरथा जन्म गँवायो ॥ ४४९ ॥

राग भैरवी ।

हरि यश रे मन गाय ले जो संगीहै तेरो । अवसर बीत्यो जातहै कहा मान ले मेरो ॥ संपति धन रथ गजमों अति नेहु लगायो । काल फांस जब गल पडी सब भयो पराये ॥ जान बूझके बावरे तें काज बिगाऱ्यो । पाप करत सकुच्यो नहिं नहिं गर्व निवाऱ्यो ॥ जिहि विधि गुरु उपदेशिया सो सुन रे भाई । नानक कहत पुकार के गहु प्रभु शरणाई ॥ ४५० ॥

हरि जू राख लेहु पति मेरी॥काल को त्रास भयो उर अंतर शरण गही प्रभु तेरी ॥ भय मरने की बिसरत नाहीं तिहि चिंता तन जारा ॥ किये उपाय मुक्तिके कारण दह दिशको उठधाया ॥ घट ही भीतर बसे निरंतर ताको मर्म न पाया ॥ नाहीं गुण नाहीं कछु जप तप कौन कर्म अब कीजे ॥ नानक हार पऱ्यो शरनागत अभयदान प्रभु दीजे ॥ ४५१ ॥

अब मैं कौन उपाय करूं । जिहि विधि मनको संशय चूके भव निधि पारपरूं ॥ जन्म पाय कुछ भलो न कीनो तातें अधिक डरूं ॥ गुरु मत सुन कछु ज्ञान ऊपज्यो पशुवत उदर भरूं । कहु नानक प्रभु विरद पछानों तब हों पतित तरूं ॥ ४५२ ॥

राग भैरव ।

मन राम सुमिर पछतायगा ॥ पापी जीउडा लोभ करत नित आज कल्ह उठ जायगा ॥ लालच लागे जन्म गँवायो माया भरम

भुलाय गा ॥ धन यौवन का गर्व न करिये कागज सा गलजाय-
गा ॥ सुमिरन भजन दया नहिं कीनी ता मुख चोटा खायगा।
धर्मराय जब लेखा मांगे क्या मुख लेकर जायगा ॥ कहत कबीर
सुनो भाई साधो साधु संग तर जायगा ॥ ४९३ ॥

राग भैरवी ।

हरिसे लाग रहो रे भाई । तेरी बिगडी बात बनजाई ॥ रंका
तारयो बंका तारयो तारयो सदन कसाई । सुआ पढावत गनिका
तारी तारी है मीरा बाई ॥ दौलत दुनियां माल खजाने बधिया
बैल चराई ॥ जबहीं काल का डंका बाजै खोज खबर पर नहिं
पाई ॥ ऐसी भक्ति करो घट भीतर छोड कपट चतुराई । सेवा
बन्दगी और अधीनता सहज मिलैं रघुराई॥कहत कबीरसुनो भाई
साधो सतगुरु बात बताई।यह दुनियां दिन चार दिना दिहाडे रहो
राम लवलाई ॥ ४९४ ॥

राग जंगला ।

कोउ हरि समान नहिं राजा ॥ यह भूपति सब दिवस चार
के झूंठे करत दिवाजा । जन तेरा सो कभू न डोले तीन भुवन
पर छाजा ॥ चेत अचेत मूढ मनमेरे करो हरीके काजा । हाथ
पसार सके नहिं कोई बोल न सके अंदाजा ॥ कहत कबीर संशय
भ्रम चूका ध्रुव प्रहलाद निवाजा ॥ ४९५ ॥

राग भैरवी ।

सब सुख राम नाम लव लाई । नाम विना सुख सकल
वृथाई ॥ ना सुख होवन मूंड मुडाई । ना सुख घर घर अलख
जगाई ॥ ना सुख है अपने घर माई । ना सुख भगवें भेष बनाई॥
ना सुख वनमें ना सुख धन में ना सुख चिता हरषाई । ना सुख
योग यज्ञ तप पूजा ना सुख झूंठ समाधि लगाई ॥ ना सुख राजे

ना सुख रानी ना सुख हास विलास कहानी। ना सुख मानी ना अपमानी ना सुख झूँठी कर चतुराई॥ ना सुख वेद किताब पुराना ना सुख कछू कथे मुख ज्ञाना। सगरे सुख कबीर सो पाई जो जन राम नाम लवलाई॥ ४५६॥

राग सोरठ।

जबलग मेरी मेरी करे। तबलग काज एक नहिं सरै॥ जो मेरी मेरी मिट जाय। तो प्रभु काज सँवारे आय॥ ऐसा ज्ञान विचार मना। हरी क्यों न सुमिरे दुख भंजना॥ जबलग सिंह रहे वन माहीं। तबलग वन फूले ही नाहीं॥ जबहीं स्याल सिंहको खाय। फूल रही सकली बनराय॥ जीतो बूडचो हारे तारचो। गुरुप्रसाद सोइ पार उतारचो॥ दास कबीर कहे समुझाय। केवल राम रहो लव लाय॥ ४५७॥

ऐसो है रे भाई हरि रस ऐसो है रे भाई जाके पिये अमरहो जाई॥ ध्रुव पीया प्रहलाद ने पीया पीया है मीराबाई॥ बलख बुखारेके मीयां पीया छोडी है बादशाही। हरिरस महगा मोल करि पीये विरला कोय॥ हरि रस महँगा सो पिये जाके धर पे शीश न होय। आगे आगे दो चले रे पीछे हरिया होय॥ कहत कबीर सुनो भाइ साधो हरि भज निर्मल होय॥ ४५८॥

राग देश।

चुनरी मेरी रंग डारी मेरे सतगुरु हैं रंगरेज। भात के कुंड नेह के जलमें प्रेम रंग दई बोर॥ चस की चास लगाय के खूब रँगी झक झोर। स्याही रंग छुडायके दिया मँजीठा रंग॥ बूंद पडी ठहरे नहीं दिन दिन होय सुरंग। सतगुरुने चुनरी रँगी है सतगुरु चतुर सुजान॥ सब कछु उनको वार दूं तन मन धन औ प्राण। कहे कबीर चुनरी रंगी गुरु मुझपर होय दियाल॥ शीतल चुनरी ओढ़ कर मगन भई हौं निहाल॥ ४५९॥

संतो ऐसा धुंध पसारा। इस घट अंतर बाग बगीचा इसीमें सिरजन हारा ॥ इस घट अंतर सात समुद्रा इसीमें वारा पारा। इस घट अंतर हीरा मोती इसीमें परखन हारा ॥ इस घट अंतर चांद सूरज हैं इसीमें बेहद तारा ॥ इस घट अंतर अनहद गरजे इसीमें उठत फुआरा ॥ कहें कबीर सुनो भाई साधो याही में गुरू हमारा ॥ ४६० ॥

राग भैरवी।

राम जपो जीया ऐसे ऐसे ॥ ध्रुव प्रहलाद जप्यो हरि जैसे ॥ दीनदयाल भरोसे तेरे ॥ सब परवार चढ़ायो बेडे ॥ जां तिस भावे तां हुकम मनावे ॥ इस बेडे को पार लँघावे ॥ गुरु प्रसाद ऐसी बुद्धि समानी ॥ चूकगई फिर आवन जानी ॥ कहत कबीर भज शारंगपानी ॥ वार पार सम एको जानी ॥ ४६१ ॥

जिहि मरने ते सब जग त्रासा ॥ सो मरना गुरु शब्द प्रकासा॥ अब कैसे मरो मरन मन मान्या ॥ मर मर जाते जिन राम न जान्या ॥ मरनो मरन कहे सब कोई ॥ सहजे मरे अमर होय सोई ॥ कह कबीर मन भया अनन्द ॥ गया भरम रहचा परमानंद ॥ ४६२ ॥

राग सोरठ।

यही घडी यह बेला साधो ॥ लाख खर्च फिर हाथ न आवे मानस जन्म सुहेला ॥ ना कोइ संगी ना कोइ साथी यह जाना भँवर इकेला ॥ क्यों सोया उठ जाग सबेरे काल मरेंदा सेला ॥ कहत कबीर गोविंद गुण गावो झूँठा है सब मेला ॥ ४६३ ॥

राग झँझोटी।

मेरे राना जी मैं गोविंद के गुन गाना ॥ राजा रूठे नगरी राखे अपनी मेहर रूठे कहां जाना ॥ राने भेजा जहर प्याला मैं

अमृत कर पीजाना ॥ डबिया में काला नाग जो भेजा मै सालगराम कर जाना ॥ मीराबाई प्रेम दिवानी में सांवरिया वर पाना ॥ ४६४ ॥

तुम मेरी राखो लाज हरी। तुम जानत सब अन्तरयामी करनी कछु न करी ॥ औगुण मोमे विसरत नाहीं पल छिन घरी घरी। सब प्रपंच की पोट बांध कर अपने शीश धरी ॥ दारा सुत धन मोह लिये हौं सुध बुध सब बिसरी। सूर पतित को बेग उधारो अब मेरी नाव भरी ॥ ४६५ ॥

राग खमाच।

काया हरि के काम न आई ॥ भक्ति भाव जहं हरि यश सुनियत तहां जात अलसाई ॥ काम मनोरथ लोभातुर है तहां सुनत उठ धाई ॥ जब लग प्रेम रंग नहिं परसत अंधे ज्यों भरमाई ॥ सूरदास भगवंत भजन बिन विषय परम विष खाई ४६६॥

भले बुरे तो तेरे ठाकुर ॥ हमरे कुल की लाज बडाई विनती सुनो प्रभु मोरे ॥ सब तज तुम शरणागत आयो दृढ कर चरण गहेरे ॥ तब प्रसाद हम बदत न काहू निडर भये घर घेरे ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरी कृपासे पाये सुक्ख घनेरे ॥ ४६७ ॥

राग सारंग।

जिहिं तन ना हरि भजन कियो ॥ सो तन सूकर श्वान मीन ज्यों यह सुख कहा जियो ॥ जो जगदीश ईश सबहिन को ताहि न चित्त दियो॥प्रगट जान यदुनाथ बिसारयो आशा मद्य पियो॥ चार पदारथ को प्रभु दाता तिन्हें न मिल्यो हियो ॥ सूरदास रसना वश अपने टेर न नाम लियो ॥ ४६८ ॥

मन मेरो गज जिहवाकाती ॥ सप सप काटो जमकी फांसी ॥ कहा करूं जाती कहा करू पांती ॥ रामका नाम जपों दिन राती ॥

रंगन रंगो सीवन सीवों ॥ राम नाम बिनु घडी न जीवों ॥ भक्ति करों हरि के गुन गाऊँ॥आठ पहर अपना खसम ध्याऊँ॥ सोनेकी सूई रूपेका धागा ॥ नामेका चित्त हरि संग लागा॥४६९॥

जस भूँखे प्रीति अनाज ॥ तृषावंत जल सेती काज ॥ जैसे मूढ कुटुम्ब परायण ॥ ऐसे नामे प्रीति नरायण ॥ नामे प्रीत नारायण लागी । सहज सुभाय भयो वैरागी ॥ जैसे पर पूरुष रत नारी ॥ लोभी नर धनका हितकारी ॥ कामी पुरुष कामिनी प्यारी । ऐसी नामे प्रीत मुरारी ॥ जैसे प्रीत बालक अरु माता । ऐसा हर सेती मन राता ॥ प्रणवे नामदेउ लागी प्रीत । गोविंदोंमे हमारो चीत ॥ ४७० ॥

राग भैरवी ।

रे प्रानी क्या मेरा क्या तेरा । जैसे तरुवर पंख बसेरा ॥ जल का भीत पवन का थंभा रक्तबिंदु का गारा । हाडमाँस नाडीका पिंजर पंखी बसे विचारा ॥ राखो कंध उसारो नीवां । साढे हाथ तेरी सीवां ॥ बाँके बाल पाग शिर टेढी । यह तन होगा भस्मकी ढेरी ॥ ऊंचे मंदिर सुन्दर नारी । राम नाम बिन बाज़ी हारी ॥ मेरी जात कमीनी बुद्धि कमीनी ओछा जन्म हमारा ॥ तुमरी शरणागत में प्रभुजी कहे रामदास चमारा ॥ ४७१ ॥

राग कान्हरा ।

साँची प्रीति हम तुमसँग जोडी । तुमसँग जोड अवर सँग तोडी ॥ जो तुम बादर तो हम मोरा । जो तुम चंद हम भये चकोरा ॥ जो तुम दीवा तो हम बाती । जो तुम तीरथ तो हम जात्री॥जहां जाऊँ तहँ तुम्हरी सेवा । तुमसा ठाकुर और न देवा॥ तुमरे भजन कटे भय फाँसा। भक्ति हेतु गावे रविदासा॥ ४७२॥

राग सोरठ।

मुकुंद मुकुंद जपो संसार। बिन मुकुंद तन होसी छार॥ सोई मुकुन्द मुक्तिका दाता। सोई मुकुन्द हमरा पितु माता॥ जिवत मुकुन्दे मरत मुकुन्दे। ताके सेवकको सदा अनंदे॥ मुकुन्द मुकुंद हमारे प्राण। मुकुन्द हमारे मस्तक निशान॥ उपज्यो ज्ञान हुआ प्रकास। कर किरपा लीने कीटदास॥ कहे रविदास अब तृष्णा चूकी। जप मुकुन्द सेवा ताहूकी॥ ४७३॥

राग देश।

ब्राह्मण वैश्य शूद्र अरु क्षत्री डोम चंडाल म्लेच्छ पुनि होई। होय पुनीत भगवंत भजनते आप तार तारे कुल दोई॥ धन्य सो गाउँ धन्य सो थाऊँ धन्य कुटुंब पुनीत सभ लोई॥ जिन पियासा रस तजे आन रस होय मगन डारे विष खोई। पंडित शूर छत्रपति राजा भगत बराबर और न कोई॥ ४७४॥

राग काफी।

तैं शौह मनमें किया रास रोस। मुझ औगुन शौह नाहीं दोस॥ तैं साहिबकी मैं सार न जानी॥ जोबन खोय पाछे पछतानी॥ काली कोयल तू कित गुण काली॥ अपने प्रीतम के हौं बिरहों जाली॥ पिय बिहूनी न किते सुख पाये॥ जां होय कृपाल तां प्रभु मिलाये॥ कर कृपा प्रभु साध संग मेली॥ जां फिर देखा मेरा साहिब बेली॥ बहुत दूर है शौहर मेरा॥ शेख फरीदा पंथ सम्हार सवेरा॥ ४७५॥

राग जंगला।

दिलों मुहब्बत जिन्हां सेई सच्यां॥ जिन मन होर मुख होर सेई काढे कच्यां॥ रत्तेइशक खुदा रंग दीदारके॥ विसरया

जिन्हा नाम ते भोये भार भे ॥ आप लये लड लाय दरवेशसे ॥ तिन धन्य जनेदी मां आये सफलसे ॥ परवरदिगार अपार अगमबेअंततूं ॥ जिन्हां पछाता सच्च चुम्मां पैर भूं॥तेरी पनाह खुदाय तू बखशिंदगी शेख फरीदे खैर दीजे बंदगी ॥ ४७६ ॥

अंतरमल निर्मल नहिं कीनी बाहर भेख उदासी ॥ हृदैकमलघट ब्रह्म न चीन्हा काहे भयो संन्यासी ॥ भरमें भूलै रे जैचंदा नहिं नहिं चीना परमानंदा ॥ घर घर खाया पिंड बधाया किंथा मुंदा माया॥भूमि मसानकि भस्म लगाई गुरु विन तत्त्व न पाया॥ काहे जपो रे काहे तपो रे काहे बलोवो पानी॥ यह सृष्टि है जिन ऊपाई सो सिमरो निमगो निरबानी ॥ कायक मंडल का पडिया रे अठसठ काहे फिराई । वदत त्रिलोचन सुनरे प्रानी हरी शरनी गत पाई ॥ ४७७ ॥

राग आसा ।

ऐसा नाम रत्न निरमोलक पुण्य पदारथ पाया ॥ अनेक यत्न कर हिरदे राख्या रत्न न छिपे छपाया । हरि गुण कहते कहते कहन न जाई ॥ जैसे गूँगे की मठयाई । रसना रमत सुनत सुख श्रवणा चित चेते सुख होई ॥ कह भीपण दोय नयन संतोषे जहिं देखा तहिं सोई ॥ ४७८ ॥

कवित्त ।

कोई एक पंडित हो विद्या गुण मंडित हो, डस्यो कालीनाग गयो गणिका निवास में ॥ कीनो मैथुन निवेश है विषय को प्रवेश, रैन बीती सारी सुख कामके हुलासमें ॥ केलि कर भयो भोर मुसकाय मुख मोर बोली, एहो प्राणप्यारे मिलोगे अब कासमें ॥ जो पै वेद औ पुराण स्मृति सब सांचे होय, मेरी तेरी भेंट होय कुंभी पाक वासमें ॥ ४७९ ॥

कुण्डलिया ।

मंडन है ऐश्वर्य को सज्जनता सन्मान । वाणी सज्जन शूरता मंडन धनको दान ॥ मंडन धन को दान ज्ञान मंडन इन्द्रीदम । तप मंडन अक्रोध नियम मंडन मोहत सम ॥ प्रभुता मंडन माफ धर्म मंडन छल छंडन । सबहिनमें सरदार शीलता सबका मंडन ॥ ४८० ॥

कवित्त ।

रहाहै न कोई यहां रहिहै न कोई यहां, जाने सब कोई पै न मानै मोहपरिगे ॥ हाथी अरु घोडे रथ छोडे सब ठौर ठौर, भौननमें गाडे भूरि भांडे ते बिसरिगे । कहै छबिनाथ रघुनाथके भजन बिन, ऐसेही बिचारे जन्म कोटिन निसरिगे ॥ जंगवाले जोरवाले जाहिर जरबवाले, जोशवाले जालिम चिता की आग जरिगे ॥ ४८१ ॥

सवैया ।

भोग में रोग वियोग सँयोगमें योगमें काया कलेश कमायो ॥ त्यों पदमाकर वेद पुराण पढ्यो पढके बहु वाद बढायो ॥ दौर्यो दुराशा में दास भयो पै कहूं विशराम को धाम न पायो । काया कमायो सो ऐसेहि जीवन हाय में रामको नाम न गायो ॥४८२॥

कवित्त ।

नारि के विकार सब ख्वार किये जीव जंतु, नारि के विकार ब्रह्मादिक भरमायेहैं ॥ नारि के विकार हार चले सब ऋषी मुनी, नारिके विकार शिव ध्यानसा छुडाये हैं ॥ नारिके विकार शशि सूर कला दूर भये, नारी के विकार राउ रंक सरवाये हैं । कहै एक साईं लोक नारि का विकार तज, ताते योगी जन संत तभी तो कहाये हैं ॥ ४८३ ॥

राग रामकली ।

देखो रे मति बौरानी सदा जीवन मन लोडे । शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक सोभी काल न छोडे ॥ मुनि विनसे देव दानव विनसे जिन त्रिलोकी छत्र झुलाया । सोभी कालने वश कर लीने छिन भी रहन न पाया ॥ वैद बुलाया वेगही आया पकड भुजा कुछ कह्यो ॥ एसी औषध किसी न दीनी यह देही थिर रह्यो । वेद पुराण कुराण किताबां अरु पंडित मुलवाणे ॥ राई वधे घटे ना मासा मैं पुछ पुछ रही स्याणे । सकले दीप में फिर फिर थाकी देश दिशांतर लोई ॥ कहत कबीर जो हरि गुण गावे हमरी औषधि सोई ॥ ४८४ ॥

राग जैजैवंती ।

जीवनसार विसरा क्यों मन । प्रभु पद सेवा त्याग मूढ तू फिरे अंध मतवारा ॥ विषय परायण होय जगतमें प्रभुसे कियो किनारा ॥ काम रु क्रोध लोभ वश होकर हित अपना न विचारा ॥ धन दारा सुत काम न आवें जिन पर किया सहारा ॥ जिस जगमें तू भूल रहाहैं दो दिनका है गुजारा ॥ पाप ताप सताप दोष सब जो तू चाहे निबारा ॥ गिरधर लाल शरण हरि ले तो जो जग प्राण अधारा ॥ ४८५ ॥

तुम बिन कौन हमारो प्रभुजी ॥ होय असत्य के हम अनुरागी हित कर सत्य विसारो ॥ दिव्य ज्ञान विन अंध भये हम सूझे न सार असारो॥कभूं न बैठ छिनक निरजन में जीवन तत्त्व विचारो॥ दीन हीन अति कृपा पात्र लख करुणा हस्त पसारो ॥ पाप विकार हरो गिरिधर अब ज्यों ज्यों जानो सो तारो ॥४८६॥

राग आसावरी ।

हौं कुरबाने जाउँ प्यारे हौं कुरबाने जाउँ। हौं कुरबाने जाउँ तिन्हा लैन जो तेरा नाउँ ॥ लैन जो तेरा नाउँ तिन्हाके सदगुरु बाते जाउँ । काया रंगन जे थिये प्यारे पाइये नाउँ मँजीठ॥रंगन वाला जे रंगे साहिब ऐसा रंग न डीठ ॥ जिनके चोलेढे रत्तडे प्यारे कंत तिन्हांके पास ॥ धूड तिन्हाकी जे मिले जी कहु नानक की अरदास ॥ ४८७ ॥

ऐसो नाम तुम्हारो ठाकुर ऐसो नाम तुम्हारो ॥ पतित पवित्र किये कर अपने सकल करत निमिसकारो ॥ जाति वरण कछु पूंछे नाहीं सबको पाप निवारो ॥ नामां जेदेव कबीर त्रिलोचन मुक्त भयो चम्मारो । साधु संगत नानक बुध पाई हरि कीर्तन उद्धारो ॥ ४८८ ॥

मैं मन तेरी टेक प्यारे मैं मन तेरी टेक ॥ और स्यानपा बिरथियां प्यारे राखन को तुम एक ॥ सतगुरु पूरा जे मिले प्यारे सो जन होत निहाला ॥ गुरुकी सेवा सो करे प्यारे जिसनूं होवे दयाला ॥ सफल मूरत गुरुदेव स्वामी सर्व कला भरपूरे ॥ नानक गुरु पारब्रह्म परमेश्वर सदा सदा हजूरे ॥ ४८९ ॥

राग आसावरी ।

सुन सुन जीवां सोहले तिन्हांके जिन अपना प्रभु जाता ॥ हरी नाम अराधने हरि नाम बखाने हरि नामें ही मन राता ॥ सेवक जनकी सेवा मांगे पूरे कर्म कमावां ॥ नानककी विनती है स्वामी तेरे जन देखन पावाँ ॥ ४९० ॥

राग भैरवी ।

अब हम गुम हुए अब हम गुम हुए प्रेम नगर के शहर ॥ अपने आप को शोध रहा हूँ शिर हत्थ नहीं पैर ॥ किते

पकड लै चलें घराथी कौन करे निरवैर ॥ खुदी खोई अपना पद चीन्हा तव हो कुल खैर ॥ बुल्लाशाह दोहीं जहानी कोई न दिसदा गैर ॥ ४९१ ॥

बस्स कर जी हुन बस्स कर जी ॥ काई बात असा नाल हस्स कर जी ॥ तूसी दिल मेरे बिच वसदेसी ॥ तदों सानूं दूर क्यों दस देसी ॥ तदों घत्त जादू दिल खसदेसी ॥ हुनकितवल जामू नस्स कर जी ॥ तुसीं मोयां नूं मार न मुकदे सी ॥ नित्त खुद्दों वांगूं कुटदेसी ॥ गल्ल करदे मे गल घुटदेसी ॥ हुन तीर लायो नन कस्सकर जी ॥ तुसीं छिपदे से असां पकडे हो ॥ तुसीं अजे छिपड नूँतकडे हो ॥ असां बिच जिगर दे जकडे हो ॥ हुन कहां जाओ दिल खस्स कर जी ॥ बुल्लाशाह असीं तेरे बरदे से ॥ तेरे मुख देखन नूं मरदे से ॥ तुध वांगूं मिन्नता करदे से हुन बैठे पिंजरे बिच बस्स कर जी ॥ ४९२ ॥

राग बिहाग ।

इश्क दीनवीं ओं नवी बहार ॥ जो मैं सबक इशक दा पढ़्या ॥ जीवडा मसजद कोलों डरया ॥ जां सद बाना शिरपर धरया ॥ घर बिच पाया महरम यार ॥ जो मैं रमज इशक दी पाई ॥ मैंनां तूती मार गँवाई ॥ अंदर बाहर होई सफाई ॥ जितवल देखां यारो यार ॥ वेद पुराण पढे पढ़ थक्के ॥ सिजदे कर दियां घस गये मत्थे ॥ नां रब तीरथ नारब मक्के ॥ जिन पाया तिन नूर जमाल ॥ इशक भुलाया मेरा तेरा हुन क्यों गेवें झेडा ॥ बुल्ला रहिंदा चुप चुपता दिल बिच खुल्ले सभ इसरार ॥ ४९३ ॥

गजल ।

प्यारे गम छोड दुनियाका साहबसे आशनाई कर ॥ सभी कुछ छोड जाना है साहिबसे ना जुदाई कर ॥ भिखारिन नाम है मेरा

करूंगी हरघडी फेरा ॥ बता देवो पिया का डेरा बिरहों ने जिसके है घेरा ॥ लागी है प्रेम की लोकी तुम्हारे दरश की भूँखी ॥ वली को ला मिलाओगे नहीं तो जान अब सूखी ॥ ४९४ ॥

गजल ।

काफरे इशकम मुसलमानी मरा दरकार नेस्त ॥ हर रगे मन् तरा गश्तह हाजते जुन्नार नेस्त ॥ अजसिरे बालीने मन् बरखेज अय नांदां तबीब ॥ दर्दशोरे बुलबुल कम न गर्दद गर खद गुल अज चमन् ॥ हुस्न बेबुनियाद बाशद इश्क बे बुनियाद नेस्त ॥ शाद बाश ऐ दिलकी फरदा अज सिरे बाजारे इश्क ॥ बादये कतलस्त बाशद दावए दीदार नेस्त ॥ मा गरीबां रा तमाशय चमन् दरकार नेस्त॥दागहाय सीना बर मन कमतर अज गुलजार नेस्त ॥ नाखुदा दर किश्तिये मन गर न बाशद गो मुबाश ॥ मा खुदा दारेम मारा न खुदा दरकार नेस्त ॥ मर्देइशक रा दारू बजुज दीदार नेस्त ॥ खल्क मेगोयद कि खिसरो बुतपरस्ती मेकुनद ॥ आरे आरे मेकुनम बा खुल्क आलम कार नेस्त ॥४९५॥

अय चिहरए जेबाय तो रश्के बुताने आजरी हरचंद वसूफत मेकुनम् लेकिन अजां वाला तरी ॥ आफाक रागरदी दह अम मिहरे बुतां वरजी दहअम ॥ बिस्यार खूबां दीदह अम अम्मा तो चीजें दीगरी ॥ मनतो सुदम तो मन शुदी मन् तन शुदम तो जाँ शुदी ॥ ता कस न गोयद बादजीं मन दीगरम तो दीगरी ॥ खिसरो गरीबस्तो गदा उफ़तादह दर सहरे शुमा ॥ बाशद कि अज बहरे खुदा सूये गरीबां बिगरी ॥ ४९६ ॥

राग परज ।

तू बात चलन दी कर रे एथे रहना नाहिं ॥ इस देही बिच पांच चोर हैं इन्हां दा कह्या न कर रे । इह संसार कंड्यां दी बाडी

तू सँभल सँभल पग धर रे ॥ साढे तीन हत्थ जिमीं वंद तू एडडे मुल्क न मल्लरे ॥ हुसेन फकीर रबाणा झूँठी दुनिया कूडा बाणा तू हरि चर्नन चित धर रे ॥ ४९७ ॥

गजल ।

तुझसे मैंने दिलको लगाया ॥ एक तुझको अपना पाया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ सब कीनो मकां दिल में तू ॥ कौन दिल है जिसमें नहीं तू हर एक दिल में तू ही समाया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ कैसा मुलायक कैसा इन्सां ॥ कैसा हिंदू कैसा मुसल्मां ॥ जैसा चाहा तूने बनाया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ काबे में क्या और देर में क्या ॥ तेरी परस्तिश है सब जा ॥ आगे तेरे सिर सबने झुकाया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ अरश से लेकर फरसे जिमी तक ॥ और जमीं से अरशे बरीं तक ॥ जहां मैं देखा तू ही नजर आया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ सोचा समझा देखा भाला ॥ तुझे छान कर ढूंढ निकाला ॥ अब यही समझमें जफर के आया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ ४९८ ॥

राग आसा ।

क्यों मन भूलाहै संसारा ॥ मन मत दे टुक कर ले गुजारा ॥ इस जगमें सुख नित नहिं भाई यह तो है जैसे पानी की धारा ॥ मात पिता अरु पेश कुन्टुब सब संग नहीं कोइ जावन हारा ॥ अंत समे सब देखन आवें छिन भर में सब होवें न्यारा ॥ जो कुछ अंगमें होगा तुम्हारा वह भी सब मिल लेयँ उतारा ॥ भाई नरकोंमें जब तुम पडोगे तब नहीं कोई बचावन हारा ॥ भाई मुक्तिका तुम भी करो खोज करुणामय प्रभु तारन हारा ॥४९९॥

गजल।

सुनो रे भाइयो तुमको यहाँसे कूच करना है ॥ रहो तुम याद हकमें जब तलक ह्यां आवो दानाहै ॥ क्यों इतना होके गाफिल भूले इस दुनियाँ के लालच में ॥ करो कुछ ख्याल भाई हकका अगर जिन्नत को पाना है ॥ पडे सोतेहो गफलत में जग टुक आंख को खोलो ॥ हुई है शाम उठ बैठो मुसाफिर घरको जाना है ॥ न दौलत काम आवेगी न इस दुनियांमे कुछ हासिल ॥ अगर तुम सोच कर देखो यह सब कुछ छोड जाना है ॥ हयात अबदी अगर चाहो तो छोड़ो तुम गुनाहों को ॥ कहे मुकती प्रभु सुमिरो वही सच्चा ठिकाना है ॥ ५०० ॥

बस अब मेरे दिल में बसा एक तू है ॥ मेरे दिलका अब दिल-रुबा एक तू है ॥ फकत तेरे कदमोंमे अय मेरे खालक ॥ लगा अब मेरा ध्यान शामो सुबू है ॥ मेरा दिल तो तुझमेही पाता है तसकीं ॥ बसी मगज में प्रेमकी तेरी बू है ॥ समझते हैं यूं मुझको अकसर दिवाना ॥ तेरा जिक्र विरदे जबां कू बकू है ॥ नहीं मुझ-को दुनियावी खुशबू से उल्फत ॥ तेरा प्रेम ही अब मेरा मुश्को बू है ॥ रंगूँ प्रेम में तेरे दिलका य चोला ॥ जिसे ज्ञान से अब किया कुछ रफू है॥न पाला पंद न फसे शैतांसे मुझको तेरे दाम की अब यही आरजू है ॥ ५०१ ॥

प्रभू प्रेम एक शरबते दिलकशा है ॥ गुनह के मरीजो कि नादर दवा है ॥ जो प्रेम एक बारी सिदक दिलसे पीयो ॥ गुनह के मरज से तो हुकमन सफाहै ॥ सिदक दिल से इक बार पीकर तो देखो खुदा के लिये यह मेरी इलतजा है ॥ फँसा जो गुनह में निकलता है मुश्किल ॥ य जालम बुरी रूह के हक

में वबा है ॥ जो निकला नफस की गुलामी से यारो ॥ उसे मरहबा मरहबा मरहबा है ॥ फिदा हूं हरंदाज पर उसके मैं भी ॥ खुदा को ही जिसने दिल अपना दिया है ॥ गनी होगया जब मिला जिस गदा को ॥ प्रभू प्रेम क्या नुस्खये कीमियाँ है फिदा तूभी विश्वासि हो अब खुदा पर ॥ न ला काम गफलत् को अब देर क्या है ॥ ५०२ ॥

अजब तेरा कानून देखा खुदाया ॥ जहां दिल दिया फिर वही तुझको पाया ॥ न यां देखा जाता है मंदिर व मसजिद ॥ फकत यह कि तालब सिदक दिल से आया ॥ जो तुझपै फिदा दिल हुआ एक बारी ॥ उसे प्रेम का तूने जलवा दिखाया ॥ तेरी पाक सीरत् क आशक हुआ जो ॥ वही रँग रंगा फिर जो तूने रंगाया ॥ है गुमराह जिस दिल में बाकी खुदी है ॥ मिला तुझसे जिसने खुदी को गँवाया ॥ हुआ तेरे विश्वासी को तेरा दरशन ॥ गदा को दुरे बेबहा हाथ आया ॥ ५०३ ॥

जलवए हक जहां जिस दिल में नमूदार हुआ ॥ खुद को सदकह किया रुसवा सिरे बाजार हुआ ॥ जिसने पाया नहीं मुमकिन कि वह खामोश रहे खुद बखुद जलवय हक बाइसे इजहार हुआ ॥ कशिश उलफते दुनिया है बहुत सदे राह ॥ जिसने दफा इसको किया वही खबरदार हुआ ॥ भक्ती और प्रेम के फूलों से सजा गुलशने दिल ॥ इक नये तरज क गुलदस्तए बेखार हुआ ॥ डूबा वह दिल जों फँसा उलफते दुनियावी में ॥ जिसने दिल हक को दिया वही बशर पार हुआ ॥ तूभी विश्वासी शरण ले उसी हकतालाकी ॥ जिसको लेकरही हर एक पापी का उद्धार हुआ ॥ ५०४ ॥

गजल।

समझ बूझ दिल खोज पियारे आशक होकर सोना क्या ॥ जिन नैनोंसे नींद गँवाई तकिया लेफ बिछौना क्या ॥ रूखा सूखा राम क टुकड़ा चिकना और सलोना क्या ॥ कहत कमाल प्रेमके मारग शीश दिया फिर रोना क्या ॥ ५०५ ॥

नाम जपन क्यों छोड दिया ॥ क्रोध न छोडा झूंठ न छोड़ा सत्य वचन क्यों छोड दिया ॥ झूँठे जगमें दिल ललचाकर असल वतन् क्यों छोड़ दिया ॥ कौडी को तू खूब सँभाला लाल रतन् क्यों छोड दिया ॥ जिहिं सुमिरन ते अति सुख पावै सो सुमिरन क्यों छोड दिया ॥ खालस इक भगवान भरोसे तन मन धन क्यों छोड़ दिया ॥ ५०६ ॥

राग आसा।

प्रभु को सुमिर सुमिर मन मेरे ॥ पाप कटें सब तेरे ॥ नाम दान असनान निरर्थ जब प्रीत नहीं मन तेरे ॥ जात पाँत की बात न पूछे पूछ काज भले रे ॥ जिन करतार अकाल पछाना सोई जात उचेरे ॥ दो दिनके सुख कारन मूरख पावत उमर बखेरे ॥ गंग यमुन काशी वन जंगल हरि घट मों हरि नेरे ॥ पर जो उस को ढूंढन जावत ऊजड़ फिरत अंधेरे ॥ सांच त्याग मिथ्या जिन पकडी अति उन दुःख सहेरे ॥ खालस जिन भगवान पछाता हम तिनके हैं चेरे ॥ ५०७ ॥

राग गौरी।

साधो मनका मान त्यागो ॥ काम क्रोध संगत दुर्जनकी ताते अह निश भागो ॥ सुख दुख दोनों सम कर जानै और मान अपमाना ॥ हर्ष शोक ते रहै अतीता तिन जग तत्त्व पछा-

ना ॥ अस्तुति निंदा दोऊ त्यागै खोजै पद निरवाना ॥ जन नानक खेल कठिन है किनहुं गुरमुख जाना ॥ ५०८ ॥

साधो रचना राम बनाई ॥ इक बिनशै इक अस्थिर मानै अचरज लख्यो न जाई ॥ काम क्रोध मोह वश प्राणी हरि मूरति बिसराई ॥ झूठा तन सांचा कर मान्यो ज्यों सुपना रैनाई ॥ जो दीसै सो सकल विनाशै ज्यों बादर की छाई ॥ जन नानक जग जानो मिथ्या रहो राम शरनाई ॥ ५०९ ॥

राग कान्हरा ।

तुही एक मेरा मददगार है ॥ तेरा आसरा मुझको दरकार है ॥ किये मैंने अपराध बख्शो सभी नहीं जिनका कुछभी तो शुम्मार है ॥ कई पतित तारे सुनाऊँ मैं क्या क्या बताने में ब्रह्मा भी लाचार है ॥ भगत राम भी दर तेरे पै पड़ा तू चाहे तो अबही बेड़ा पार है ॥ ५१० ॥

दोहा—कहा करै रसखान को, कोऊ कुटिल लबार ।
जो पै राखन हार है, माखन चाखन हार ॥

इति श्रीरागरत्नाकरे तृतीय भागः समाप्तः ।



ओं तत् सत् परमात्मने नमः ।

अथ रागरत्नाकर ।

चतुर्थभागप्रारम्भः ।

अथ ग्रंथसाहिबके शब्द ।

जे युग चारे आरजा होर दसूणी होय ॥ नवां खंडां विच जाणिये नाल चले सभ कोय ॥ चंगा नांउ रखायके यश कीरति जग लेय ॥ जे तिस नदर न आवई तां वात न पुच्छे केय ॥ कीटां अंदर कीट कर दोसीं दोस धरेय ॥ नानक निर्गुण गुण करे गुणवंत्यां गुण देय ॥ तेहा कोय न सूझई जे तिस गुण कोय करेय ॥ १ ॥

जत्त पहारा धीरज सुनिआर ॥ अहरण मत्त वेद हथियार ॥ भौ खल्लां अग्नि तपाउ ॥ भांडा भाउ अमृत तित ढाल ॥ घड़ीये शब्द सच्ची टकसाल ॥ जिनको नदर करम तिन कार ॥ नानक नदरीं नदर निहाल ॥ २ ॥

पवन गुरू पाणी पिता माता धरति महत्त॥ दिवस रात दोय दाई दाया खेल सकल जगत्त ॥ चंगि आइयां बुरी आइयां वाचे धर्म हजूर ॥ करमी आयो आपणी के नेडे के दूर ॥ जिन्हीं नाम ध्याइया गये मुशक्कत घाल ॥ नानक ते मुख उज्जले केती छुट्टी नाल ॥ ३ ॥

राग आसावरी ।

सो दर तेरा केहा सो घर केहा जित बहि सर्व समाले ॥वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी सिउ कहीअहिं केते तेरे गावणहारे ॥ गावण तुधनूं पवन पाणी

बैसंदर गावै राजा धर्म द्वारे ॥ गावन तुधनूं चित्रगुप्त लिख जानण लिख लिख धर्म बीचारे ॥ गावन तुधनूं ईश्वर ब्रह्मा देवी सोहन तेरे सदा सवारे ॥ गावन तुधनूं इंद्र इन्द्रासन बैठे देवतियाँ दर नाले ॥ गावन तुधनूं सिद्ध समाधी अंदर गावन तुधनूं साध विचारे ॥ गावन तुधनूं यती सती संतोष गावन तुधनूं वीर करारे॥ गावन तुधनूं पंडित पढ़न ऋषीश्वर युग युग वेदां नाले ॥ गावन तुधनूं मोहनियां मनमोहन सुरंगा मच्छ प्याले ॥ गावन तुधनूं रत्न उपाये तेरे अठसठ तीरथ नाले ॥ गावन तुधनूं जोध महाबल सूरा गावन तुधनूं खाणी चारे ॥ गावन तुधनूं खंड मंडल ब्रह्मांडा कर कर रखे तेरे धारे॥ सेई तुधनूं गावन जो तुध भावन रत्ते तेरे भगत रसाले ॥ होर केते तुधनूं गावन से मैं चित्त न आवन नानक क्या बीचारे ॥ सोई सोई सदा सच साहिब सांचा सांची नाई॥ है भी होसी जाय न जासी रचना जिन रचाई ॥ रंगी रंगी भांती कर कर जिनसीं माया जिन उपाई ॥ कर कर देखे कीता अपणा ज्यों तिसदी बडिआई ॥ जो तिस भावे सोई करसी फिर हुकम न करना जाई ॥ सो पातशाह शाहां पति साहिब नानक रहण रजाई ॥ ४ ॥

राग गुजरी ।

काहे रे मन चितवै उद्यम जां आहर हरिजी उपरिआ ॥ पत्थर में जंत उपाये तांका रिजक आगे कर धरिआ ॥ मेरे माधो जी सतसंगति मिलै सो तरचा ॥ गुरु प्रसाद परमपद पाया सूके काशट हरचा॥ जननी पिता लोक सुत वनिता कोय न किसकी धरचा ॥ सिर सिर रिजक सँबाहे ठाकुर काहे मन भौंकरचा ॥ ऊडे ऊड आवें सै कोसां तिस पाछे बछरे छरचा ॥ तिन कवन खिलावैं कवन चुगावैं मनमें सिमरन करचा ॥ सभ निधान दस

अष्ट सिधान ठाकुर कर तल धरचा ॥ जन नानक बल बल सद बल जाइये तेरा अंत न पारावरचा ॥ ५ ॥

राग आसावरी ।

घटघट अंतर सर्व निरंतर जी हर एको पुरुष समाणा ॥ इक दाते इक भेखारी जी सभ तेरे चोज विडाना ॥ तूँ आपे दाता आपे भुगता जी हौं तुध बिन अवर न जाणा ॥ तूँ पारब्रह्म बे अंत बे अंत जी तेरे क्या गुण आख बखाणा ॥ जो सेवाही जो सेवहिं तुधजी जन नानक तिन कुरबाणा ॥ ६ ॥

भई प्राप्त मानुष्य देहरिया ॥ गोविंद मिलनकी यह तेरी बारिया ॥ अवर काज तेरे किते न काम ॥ मिल साध संगत भज केवल नाम ॥ सरंजाम लाग भव जल तरन के ॥ जन्म वृथा जात रंग मायाके ॥ जप तप संयम धर्म न कमाया ॥ सेवा साध न जान्या हरिराया ॥ कह नानक हम नीच कर्म्मा ॥ शरण पडेकी राखो शर्मा ॥ ७ ॥

राग धनाश्री ।

गगन मय थाल रवि चंद्र दीपक बने तारिका मंडला जनक मोती॥धूप मलिआन लो पवन चवरो करे सकल बनराय फूलंत जोती ॥ कैसी आरती होय भव खंडना तेरी आरती अनहदा शब्द बाजंत भेरी ॥ सहस तव नयन नन नयन हैं तोहिको सहस मूरत नाना एक तोही ॥ सहस पद विमल नन एक पद गंध बिन सहस तव गंध इव चलत मोही ॥ सब में जोति जोति है सोय ॥ तिसदे चानण सबमें चानण होय ॥ गुर साखी जोत परगट होय ॥ जो तिस भावे सो आरती होय ॥ हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आहि प्यासा ॥ कृपा जल देहु नानक सारंग को होय जीते तेरे नाई वासा ॥ ८ ॥

राग गौरी पूरवी ।

करों बिनती सुनो मेरे मीता संत टहिल की बेला ॥ ईहां खाट चलो हरि लाहा आगे बसन सुहेला॥औध घटे दिन सुरैना रे ॥ मन गुरु मिल काय सवारे॥यह संसार विकार संशय महिं तम्यो ब्रह्मज्ञानी ॥ जिसहिं जगाय प्यावै यह रस अकथ कथा तिन जानी ॥ जाको आये सोई बिहाझहु हरि गुरु ते मनहि बसेरा ॥ निजघर महल पावो सुख सहजे बहुर न होयगो फेरा॥अंतरयामी पुरुष विधाते सरधा मनकी पूरे ॥ ननाक दास इहै सुख मांगे मोकों कर संतन की धूरे ॥ ९ ॥

राग श्री ।

मोती तां मंदर ऊसरहिं रतनी तां होहिं जडाउ ॥ कस्तूरि कुंगू अगर चंदन लीप आवै चाउ ॥ मत देख भूला वीसरै तेरा चित न आवे नाउ ॥ हरि बिन जीव जलबल जाउ ॥ मैं आपणा गुरु पूँछ देख्या अवसर नाहीं थाउ ॥ धरती तां हीरे लाल जडती पलँग लालजडाउ ॥ मोहणी मुख मणी सोहै करे रंग पसाउ ॥ मत देख भूला बीसरै तेरा चित्त न आवै नाउ ॥ सिद्ध होवां सिद्ध रिद्ध आखां आउ॥गुप्त परगट होय वैसा लोक राखै भाउ ॥ मत देख भूला बीसरे तेरा चित्त न आवे नाउ ॥ सुलतान होवां मेल लशकर तखत राखां पाउ ॥ हुकम हासम करी बैठा नैनका सब वाउ ॥ मत देख भूला बीसरै तेरा चित्त न आवै नांउ ॥ १० ॥

जाको मुशकल अति बणै ढोई कोयन देय ॥ लागू होय दुश-मना साक भी भज्ज खले ॥ सभो भज्ज आसरा चुक्कै सभ अस-राउ ॥ चित्त आवै उस पारब्रह्म लगै न तत्ती बाउ ॥ साहिब निताणिआं का ताण ॥ आय न जाई थिर सदा गुरु सबदीं सच

जाण ॥ जेको होवे दुर्बला नंग भूँख की पीर ॥ दमडा पल्ले ना पवे ना को देवै धीर ॥ स्वार्थ स्वाउ न को करे ना किछु होवे काज ॥ चित्त आवे उसपार ब्रह्मझना निश्चल होवे राज ॥ जाको चिंता बहुत बहुत देही व्यापे रोग ॥ गिरिस्तकुटुम्ब पलेट्या कदे हर्ष कदे सोग ॥ गोण करे कहु चहुँ कुंटका घडी न बैसन होय ॥ चित्त आवे उस पारब्रह्म तन तन मन शीतल होय॥ काम क्रोध मोह बस कीया किरपन लोभ प्यार ॥ चारे किलविप उन अघकिये होया असुर संहार ॥ पोथी गीत कवित्त कछु कदे न करन धरया ॥ चित्त आवे उस पारब्रह्म तां निमिष सिमरत तरया ॥ सास्तत सिमृत वेद चार मुखाकर विचरे ॥ तपी तपीसर योगी या तीर्थ गमन करे ॥ खट करमां ते दुगुने पूजा करता न्हाय ॥ रंगन लग्गी पारब्रह्म तां सरपर नरके जाय ॥ राज मिलक सिकदारीआ रस भोगन विस्तार ॥ बाग सुहावे मोहणे चल्ले हुकुम अफार ॥ रंग तमासे बहु विधि चाय लग रहिया ॥ चित्त न आयो पारब्रह्म तां सरपकी जून गया ॥ बहुत धनाढ्य अचारवंत शोभा निर्मल रीत ॥ मात पिता सुत भाइयां साजन संग प्रीत ॥ लशकर तरकस बंद बंद जीउ जीउ सगली कीत ॥ चित्त न आयो पारब्रह्म तां खड रसातल दीत ॥ कायां रोग न छिद्र कछु नां कछु काढा सोग ॥ मिरत न आवी चित्त तिस अह निस भोगे भोग ॥ सभ कछु कीतो न आपणा जीउ निशंक धरया ॥ चित्त न आयो पारब्रह्म जम किंकर वस परया ॥ कृपा करे जिस पारब्रह्म होवे साधू संग ॥ ज्यों ज्यों ओह वधाइये त्यों त्यों हरि सों रंग ॥ दोहां सिरां कारवसम आय अवर न दूजा थाउँ ॥ सतगुरु तुट्टे पाइया नानक सच्चा नाउँ ॥ ११ ॥

कीता लोडिये कम्म सो हरि पै आखिये ॥ कारज देय सवार सतगुरु सच साखिये ॥ संतांसंग निधान अमृत चाखिये ॥ भय भंजन मिहरबान दास की राखिये ॥ नानक हरिगुण गाय अलख प्रभु लाखिये ॥ १२ ॥

राग माँझ ।

पारब्रह्म अपरंपर देवा ॥ अगम अगोचर अलख अभेवा ॥ दीनदयाल गोपाल गोविंदा हरि ध्यावो गुरुमुख गाती जी ॥ गुरुमुख मधुसूदन निस्तरे ॥ गुरुमुख सगी कृष्ण मुरारे ॥ दयाल दामोदर गुरुमुख पाइये होर तू किते न भाती जी ॥ निरहारी केशव निरवैरा ॥ कोट जनां जाके पूज पैरा ॥ गुरुमुख जाके हिरदे हरहर सोई भगत इकाती जी ॥ अमोघ दर्शन बे अंत अपारा ॥ बड समरत्थ सदा दातारा ॥ गुरुमुख नाम जपियें तित तरियें गति नानक विरली जाती जी ॥ १३ ॥

राग गौरी ।

जाके वश खान सुलतान ॥ जाके वश है सकल जहान ॥ जाका किया सभ कछु होय ॥ तिससे. बाहर नाहीं कोय ॥ कहु बेनती अपने सतगुरु पाहि ॥ काज तुम्हारे देय निबाहि ॥ सभतें ऊँच जाका दरबार ॥ सकल भगत जाका नाम अधार ॥ सर्वव्यापत पूर्ण धनी ॥ जाकी शोभा घट घट बनी ॥ जिस सिमरत दुख डेरा ढहे ॥ जिस सिमरत जम कछू न कहे ॥ जिस सिमरत होत सूखे हरे ॥ जिस सिमरत डूबत पाहन तरे ॥ संत सभाको सदा जैकार ॥ हरि हर नाम जन प्राण अधार ॥ कह नानक मेरी सुनि अरदास ॥ संत प्रसाद मोको नाम निवास ॥ १४ ॥

बडे बडे जो दीसहिं लोग ॥ तिनको व्यापै चिंता रोग ॥ कौन बड़ा माया बडिआई ॥ सो बडा जिन राम लव लाई ॥ भूमिआ-भूमि ऊपर नित लूझे ॥ छोड चले तृष्णा नहीं बूझे ॥ कहु नानक इह तत्त्व विचारा ॥ बिन हरि भजन नहीं छुटकारा ॥ १५ ॥

राग सोरठ ।

अंतर की गति तुमहीं जानी तुझही पास निबेरो ॥ बखश लेहु साहिब प्रभु अपने लाख खते कर फेरो ॥ प्रभुजी तू मेरो ठाकुर नेरो ॥ हरि चरण शरण मोहिं चेरो ॥ बेशुमार बेअंत स्वामी ऊँचो गुनीगहेरो ॥ काट मिलक कीनो अपनो दासरो तौ नानक कहा निहोरो ॥ १६ ॥

जीय जंत सभ तिसके कीये सोई संत सहाई ॥ अपने सेवककी आपे राखे पूरन भई बड़ाई ॥ पारब्रह्म पूरा मेरे नाल ॥ गुरु पूरे पूरी सभ राखी होये सर्व दियाल ॥ अनुदिन नानक नाम ध्याये जीय प्राण का दाता ॥ अपने दास को कंठ लाय राखे ज्यों बालक पितु माता ॥ १७ ॥

राग धनाश्री ।

किते प्रकार न तूटी प्रीत ॥ दास तेरे की निर्मल रीत ॥ जीय प्राण मन धन ते प्यारा ॥ हौं मैं बंध हरि देवन हारा ॥ चरण कमल सों लागा नेह ॥ नानक की है बिनती एह ॥ १८ ॥

राग गौरी ।

थिर घर बैसो हरिजन प्यारे ॥ सतगुरु तुमरे काज सँवारे ॥ दुष्ट दूत परमेश्वर मारे ॥ जनकी पैज रखी करतारे ॥ बादशाह सब वश करदीने ॥ अमृत नाम महारस पीने ॥ निरभय हो-य भजो भगवान ॥ साधु संगत मिल कीनो दान ॥ शरण पडे प्रभु अंतरयामी । नानक ओट पकडी प्रभु स्वामी ॥ १९ ॥

उबरत राजा राम की शरणी । सर्व लोक माया के मंडल गिरि गिरि परते धरणी ॥ शास्त्र सिमृत वेद विचारे महा पुरुषन यूँ कह्या ॥ बिन हरि भजन नाहीं निस्तारा सुख न किनहू लह्या ॥ तीन भवन की लक्ष्मी जोरी बूझत नाहीं लहरे ॥ बिन हरि भगत कहा थित पावै फिरती पहरे पहरे ॥ अनक विलास करत मनमोहन पूरन होत न कामा ॥ जलतो जलतो कभू न बूझत सकल वृथे बिन नामा । हरि का नाम जपो मेरे मीता इहै सार सुख पूरा । साधु संगत जन्म मरण निवारे नानक जनकी धूरा ॥ २० ॥

माधो हरि हरि हरि मुख कहिये । हमते कछु न होवै स्वामी ज्यों राखो त्यों रहिये ॥ क्या कछु करे कि करनेहारा क्या इस हाथ बिचारे ॥ जित तुम लावो तितही लागा तितही पूरण खसम हमारे ॥ करहु कृपा सर्व के दाते एक रूप लवलाइहु ॥ नानक की विनती हरि पै अपना नाम जपावहु ॥ २१ ॥

ब्रह्म गर्व किया नहीं जान्या ॥ वेदकी बिपत पडी पछतान्या ॥ जहिं प्रभु सिमरें तही मन मान्या ॥ ऐसा गर्व बुरा संसारे ॥ जिस गुरु मिलै तिस गर्व निवारे ॥ बलि राजा माया अहंकारी ॥ जगत करे बहु भार अफारी ॥ बिन गुरु पूछे जाय पियारी ॥ हरीचंद दान करे यश लेवै ॥ बिन गुरु अंत न पाया भेवै ॥ आप भुलाय आपे मति देवै ॥ दुर्मत हरनाकुश दुराचारी प्रभु नारायण गर्व प्रहारी । प्रहलाद उधारे किरपा धारी ॥ भूलो रावण मुगध अचेत । लूटी लंका सीस समेत ॥ गर्व गिआ बिन सतगुरु हेत ॥ सहसबाहू मधु कीट महिपासा ॥ हरनाकुश ले नखहु बिधासा ॥ दैत सँहारे बिन भगति अभ्यासा ॥ जरासंध कालयवन संहारे ॥ रक्तबीज कालनेमि बिदारे ॥

देत सँहार संत निस्तारे ॥ आपे सतगुरु शब्द विचारे ॥ दूजे भाय देत संहारे ॥ गुरुमुख साँचि भगति निस्तारे ॥ बूडा दुरयोधन पति खोई ॥ राम न जान्या करता सोई ॥ जन को दूख पचै दुख होई ॥ जन्मेजय गुरु शब्द न जान्या ॥ क्यों सुख पावै भर्म भुलान्या ॥ इकतिल भूले बहुरि पछतान्या ॥ कंस केशी चाणूर न कोई ॥ राम न चीन्हा अपनी पति खोई ॥ बिन जगदीश न राखै कोई ॥ बिन गुरु गर्व न मेटचा जाय ॥ बिन गुरु मति धर्म धीरज हरि नाय ॥ नानक नाम मिलै गुण गाय॥२२॥

अब मोहिं जलत रामजल पाया ॥ राम उदक तन जलत बुझाया ॥ मन मारण कारण वन जाइये ॥ सो जल बिन भगवंत न पाइये ॥ जिहिं पावक सुर नर हैं जारे ॥ राम उदक जन जलत उबारे ॥ भव सागर सुखसागर माहीं ॥ पीव रहे जल निघटत नाहीं ॥ कह कबीर भजु शारंगपानी ॥ राम उदक मेरी तृषा बुझानी ॥ २३ ॥

माधो जल की प्यास न जाय ॥ जल महिं अग्नि उठी अधिकाय ॥ तू जलनिधि हौं जलकी मीन ॥ जल महिं रहौं जलहिं बिन खीन ॥ तूं पिंजर हौं सुअटा तोर ॥ जम मंजार कहा करै मोर ॥ तू तरुवर हौं पंखी आहिं ॥ मंदभागी तेरो दर्शन नाहिं ॥ तूं सतगुरु हौं नौतन चेला ॥ कह कबीर मिल अंत कि बेला२४॥

जब हम एको एक कर जान्या ॥ तब लोगहिं काहे दुख मान्या ॥ हम आपतहिं अपनी पति खोई ॥ हमरे खोज परो मत कोई ॥ हम मंदे मंदे मनमाहीं ॥ सांझपात काहू सों नाहीं ॥ पति अपति ताकी नहीं लाज ॥ तब जानहुँगे जब उघरैगो पाज॥ कह कबीर पति हरि परमान ॥ सर्व त्याग भज केवल राम ॥ २५ ॥

अंधकार सुख कभूं न सोइहै ॥ राजा रंक दोऊ मिलि रोइहै ॥ जोपै रसना राम न कहबो ॥ उपजत विनशत रोवत रहबो ॥

जस देखिये तरुवर की छाया ॥ प्राण गये कहु काकी माया ॥ जसजंती महिं जीउ समाना ॥ मुये मर्म को काकर जाना ॥ हंसा सरवर काल शरीर ॥ राम रसायन पिउ रे कबीर ॥ २६ ॥

जो जन परमित परम न जाना ॥ वा तनही वैकुंठ समाना ॥ ना जाना वैकुंठ कहाही ॥ जान जान सभ कहहिं तहाँहीं ॥ कहन कहावन नहीं पतियेहै ॥ तौ मनमानैं जांतें हौं मैं जैहै ॥ जबलग मन वैकुंठ की आस ॥ तब लग होय नहीं चरण निवास ॥ कहु कबीर इह कहिये काहि ॥ साधु संगत वैकुंठहि आहि ॥ २७ ॥

अवर मूये क्या सोग करीजे ॥ तो कीजे जो आपन जीजे ॥ मैं न मरों मरबो संसारा ॥ अब मोहिं मिल्यो जियावनहारा ॥ या देही मरमल महकंदा ॥ ता सुख बिसरे परमानन्दा ॥ कुअटा एक पंच पनिहारी ॥ टूटी लाज भरैं मतिहारी ॥ कह कबीर इक बुद्धि विचारी ॥ ना वह कुअटा ना पनिहारी ॥ २८ ॥

स्थावर जंगम कीट पंतगा ॥ जन्म अनेक किये बहुरंगा ॥ ऐसे घर हम बहुत बसाये ॥ जब हम राम गरभ है आये ॥ योगी यती तपी ब्रह्मचारी ॥ कबहू राजा छत्रपति कबहूँ भिखारी ॥ शाकत मरहिं सन्त सभ जीवहिं ॥ राम रसायन रसना पीवहिं ॥ कह कबीर प्रभु किरपा कीजे ॥ हार परे अब पूरा दीजे ॥ २९ ॥

चोआ चंदन मरदन अंगा ॥ सो तन जलै काठके संगा ॥ इस तन धनकी कवन बड़ाई ॥ धरनि परै उर बार न जाई ॥ रात जो सोवहिं दिस करे काम ॥ इक क्षण लेहिं न हरिको नाम ॥ हाथ तो डोर मुख खायो तंबोर ॥ मरती बार कस बांध्यो चोर ॥ गुरु मति रस रस हरि गुन गावै ॥ रामहिं राम रमत सुख पावै ॥ किरपा करके नाम दृढ़ाई ॥ हरि हरि बास सुगंध बसाई ॥ कहत कबीर चेत रे अन्धा ॥ सत्य राम झूँठा सब धंधा ॥ ३० ॥

यम ते उलट भये हैं राम ॥ दुख बिनसे सुख कियो विश्राम ॥ वैरी उलट भयेहैं मीता ॥ शाकत उलट सुजन भये चीता ॥ अब मोहिं सर्व कुशल कर मान्या ॥ शांत भई जब गोविंद जान्या ॥ तन में होती कोटि उपाधि ॥ उलट भई सुख सहज समाधि ॥ आप पछानै आपै आप ॥ रोग न व्यापैं तीनों ताप ॥ अब मन उलट सनातन हूआ ॥ तब जान्या जब जीवत मूआ ॥ कहु कबीर सुख सहज समावो ॥ आप न डरो न अवर डरावो ॥ ३१ ॥

कंचन सो पाइये नहिं तोल ॥ मनदे राम लियाहै मोल ॥ अब मोहिं राम अपना कर जान्या ॥ सहज सुभाय मेरा मन मान्या ॥ ब्रह्मा कथ कथ अंत न पाया ॥ राम भगति बैठे घर आया ॥ कह कबीर चंचल मति त्यागी ॥ केवल राम भगतिनिज भागी ३२

जिहिं मरने सम जगत त्रास्या ॥ सो मरना गुरु शब्द प्रकास्या ॥ अब कैसे मरों मरन मनमान्या ॥ मरमर जाते जिन राम न जान्या ॥ मरनो मरन कहै सब कोई ॥ सहजे मरे अमर होय सोई ॥ कह कबीर मन भया अनंदा ॥ गया भरम रह्या पर्मानंदा ॥३३॥

जाके हरिसा ठाकुर भाई ॥ मुक्ति अनन्त पुकारन जाई ॥ अब कहु राम भरोसा तोरा ॥ तब काहूका कवन निहोरा ॥ तीन लोक जाके हैं भार ॥ सो काहे न करे प्रतिपार ॥ कह कबीर इक बुद्धि विचारी ॥ क्या बश जो विपदे महतारी ॥ ३४ ॥

बिन सत सती होय कैसे नारि ॥ पंडित देखो हृदे विचारि ॥ प्रीति बिना कैसे बँधे सनेह ॥ जबलग रस तबलग नहिं नेह ॥ साहनिसत करे जीय अपने ॥ सो रमैये को मिलै न सुपने ॥ तन मन धन गृह सौंप शरीर ॥ सोई सुहागन कहै कबीर ॥ ३५ ॥

विषय व्याप्या सकल संसार ॥ विषया लै डूबी संसार ॥ रे नर नाव चौंड कत बोडी ॥ हरि सों तोड विषया सँग जोडी ॥

सुरनरदाधे लागी आग ॥ निकट नीरपशु पीवस न झाग ॥ चेतत चेतत निकस्यो नीर ॥ सो जल निर्मल कथत कबीर ॥ ३६ ॥

जिहिं कुल पूत न ज्ञान बिचारी ॥ विधवा कस न भई महतारी ॥ जिहिं नर राम भगति नहिं साधी ॥ जन्मत कस न मुयो अपराधी ॥ मुच मुच गरभ गये किन बच्या ॥ बुड भुज रूप जीवै जग मझ्या ॥ कह कबीर जैसे सुंदर सरूप ॥ नाम बिना जैसे कुब्ज कुरूप ॥ ३७ ॥

जो जन लेहिं खसमका नाउँ । तिनके सद बलिहारे जाउँ ॥ जो निर्मल निर्मल हरिगुण गावै ॥ सो भाई मेरे मन भावै ॥ जिहिं घट राम रह्यो भर पूर ॥ तिनकी पग पंकज हम धूर । जाति जुलाहा मति का धीर । सहज सहज गुण रमे कबीर ॥ ३८ ॥

जिहिं मुख पांचों अमृत खाये। तिहिं मुख देखत लूकट लाये। इक दुख रामराय काटहु मेरा । अगनि दहै अर गरभ बसेरा ॥ काया बिगूती बहु विध भाँती। को जारे को गडले माटी॥ कहु कबीर हरि चर्ण दिखावहु। पाछेते जम क्यों न पठावहु ॥ ३९ ॥

आपै पावक आपै पवना ॥ जारै खसम तो राखै कवना ॥ राम जपत तन जर क्यों न जाय ॥ राम नाम चित रह्या समाय ॥ काको जरै काहि दोय हान ॥ नटवर खेलै शारंगपान ॥ कह कबीर अक्षर दोय भाख ॥ होयगा खसम तो लेगा राख ॥ ४० ॥

ना मैं योग ध्यान चितलाया ॥ विनशैं राग न छूटै माया ॥ कैसे जीवन होय हमारा ॥ जब न होय राम नाम अधारा ॥ कहु कबीर खोजहुं असमान ॥ राम समान न देखो आन ॥ ४१ ॥

जिहिं सिर रच रच धांवत पाग॥ सो सिर चुंच सवाँरहिं काग॥ इस तन धन को क्या गरवैया ॥ राम नाम काहे न दृढैया ॥ कहत कबीर सुनहु मन मेरे ॥ यही हवाल होहिंगे तेरे ॥ ४२ ॥

अहनिशि एक नाम जो जागे ॥ केतक सिद्ध भये लव लागे ॥ साधक सिद्ध सकल मुनि हारे ॥ एक नाम कलिपतर तारे ॥ जो हरि हरे सो होहिं न आना ॥ कह कबीर राम नाम पछाना ॥४३॥

राग सोरठ।

रे जीव निलज लाज तोहिं नाहीं॥हरि तज कत काहूके जाहीं॥ जाको ठाकुर ऊँचा होई ॥ सो जन परघर जात न सोही ॥ सो साहिब रह्या भरपूर ॥ सदा संग नाहीं हरिदूर ॥ कमला चरण शरण है जाके ॥ कहु जन का नाहीं घर ताके ॥ सब कोऊ कहे जासु की बाता ॥ सो समर्थ निज पतिहै दाता॥कहै कबीर पूरन जग सोई ॥ जाके हिरदय अवर न होई ॥ ४४ ॥

कौन को पूत पिता को काको । कौन मरे को देय सतापो ॥ हरि ठग जग को ठगोरी लाई। हरिके वियोग कैसे जीवो मेरी माई॥ कौन को पुरुष कौन की नारी । या तत्त्व लेहु शरीर विचारी॥कह कबीर ठग सों मन मान्या । गई ठगोरी ठग पहँचान्या ॥४५॥

अब मोकों भये राजा राम सहाई॥जन्म मरण कट परमगति पाई ॥ साधु संगत दियो रलाय ॥ पंच दूत ते लियो छुडाय ॥ अमृत नाव जपोंजप रसना ॥ अमोल दास कर लीनो अपना ॥ सतगुरु कीनो परउपकार ॥ काढ लीन सागर संसार ॥ चरण-कमल सों लागी प्रीति ॥ गोविंद बसे निना नित चीत ॥ माया तन बुझा अंगार ॥ मन संतोष नाम आधार ॥ जल थल पूर रहे प्रभु स्वामी ॥ जत पेखो तत अन्तरयामी ॥ अपनी भगति आपही दृढाई ॥ पूरव लिखत मिल्यो मेरे भाई ॥ जिस कृपा करे तिस पुरनसाज ॥ कबीर को स्वामी गरीबनिवाज ॥ ४६ ॥

राग गौरी ।

हरी यश सुनहि न हरी गुन गावहिं ॥ बातनहीं असमान गिरावहिं ॥ ऐसे लोगन सों क्या कहिये ॥ जो प्रभु किये भगति ते बाहिज॥तिनते सदा डराने रहिये॥आप न देहि चुलू भर पानी ॥ तिहिं निन्दहिं जिहिं गंगा आनी॥बैठत उठत कुटिलाता चालहि ॥ आप गये औरन हूं घालहि ॥ छाँड कुचर्चा आन न जानहि ॥ ब्रह्माहूं को कह्यो न मानहि ॥ आप गये औरनहूं खोवहिं ॥ आग लगाय मंदिर में सोवहिं ॥ औरन हँसत आप हैं काने ॥ तिनको देख कबीर लजाने ॥ ४७ ॥

जेते यतन करत ते डूबे भवसागर नहिं तारचो रे ॥ कर्म धर्म करते बहु संयम अहं बुद्धि मन जारचो रे ॥ सास ग्रासको दानो ठाकुर सो क्यों मनो बिमारचो रे ॥ हीरालाल अमोल जन्म है कौडी बदले हारचो रे ॥ तृष्णातृषा भूँख भ्रम लागी हिरदय नाम विचारचोरे ॥ उनमत मान रह्यो मनमाहीं गुरुका शब्द न धारचो रे ॥ स्वाद लुब्ध इंद्रीरस प्रेरचो मन्द रस लेत विकारचोरे ॥ भर्म भाग संतन संगाने कासट लोह उधारचो रे ॥ धावत योनि जन्म भ्रम थाके अब दुख कर हम हारचो रे ॥ कह कबीर गुरु मिलत महारस प्रेम भक्ति निस्तारचो रे ॥ ४८ ॥

एक ज्योति एका मिली किंवा होय महोय ॥ जित घट नाम न उपजै फूट मरै जन सोय ॥ सांवल सुन्दर रामैया मेरा मन लागा तोहिं ॥ साथ मिले सिद्ध पाइये कि यह योग की भोग ॥ दुहुँ मिल कारज ऊपजै राम नाम सयोग ॥ लोग जाने यह गीतहै यह तो ब्रह्म विचार ॥ ज्यों काशी उपदेश होय मानस मरती बार ॥ कोई गावै को सुनै हरी नामा चित लाय ॥ कहु कबीर संशय नहीं अंत परमगति पाय ॥ ४९ ॥

कालबूतकी हस्तनी मन बौरारे चलित रच्यो जगदीश ॥ काम सुआय गज वश परे मन बौरारे अंकुश सह्यो शीश ॥ विषय वाच हरि राच समझ मन बौरारे ॥ निरभय होय न हरी भज्यो मन बौरारे ॥ गह्यो न राम जहाज मरकट मुष्टी अनाजकी मन बौरारे लीनी हाथ पसार ॥ छूटन को संसार परचा मन बौरारे नाच्यो घर घर बार ॥ ज्यों नलनी सुअटा गह्यो मन बौरारे माया यह व्योहार ॥ जैसा रंग कुसुंभ का मन बोरारे त्यों पसरचो पासार ॥ न्हावनको तीर्थ घने मन बौरारे पूजन को बहु देव ॥ कह कबीर छूटन नहीं मन बौरारे छूटन हरि की सेव ॥ ५० ॥

अगिन न दहें पवन नहि मगनै तस्कर नेर न आवैं ॥ राम नाम धन कर संचोनी सो धन कतहुँ न जावे ॥ । हमारा धन माधव गोविंद धरणीधर यही सार धन कहिये ॥ जो सुख प्रभु गोविंदकी सेवा सो सुख राज न लहिये ॥ इस धन कारण शिव सनकादिक खोजत भये उदासी ॥ मन मुकुंद जिह्वा नारायण परै न जमकी फाँसी ॥ निज धन ज्ञान भगति गुरु दीनी तासु सुमति मन लागा ॥ जलत अंभ थंभ मन धावत भ्रम बंधन भय भागा ॥ कहै कबीर मदन के माते हिरदय देख विचारी ॥ तुम घर लाख कोटि अश्व हस्ती हम घर एक मुरारी ॥ ५१ ॥

ज्यों कपि के कर मुष्टि चनन की लुब्ध न त्याग दियो ॥ जो जो कर्म कियो लालचसों ते फिर गरहि परचो ॥ भगति बिन बिरथे जन्म गयो ॥ साधु संगत भगवान भजन बिन कहीं न सचु रह्यो ॥ ज्यों उद्यान कुसुम प्रफुल्लित किनहुं न घ्राण लियो ॥ तैसे भ्रमत अनेक योनिमें फिर फिर काल हयो ॥ या धन यौवन अरु सुत दारा पेखन को जो दियो ॥ तिनहीं माहीं अटक जो उरझे इंद्री प्रेर लियो ॥ अवध अनल तन तृणको मंदिर

चहुँदिशि ठाट ठयो ॥ कह कबीर भवसागर तरण को पै सतगुरु ओट लियो ॥ ९२ ॥

राग गौरी पूरवी।

स्वर्ग वास नहिं बांछिये डरिये न नर्क निवास ॥ होनाहै सो होय है मनहिं न कीजे आस ॥ रमैया गुन गाइये जाते पाइये परम निधान ॥ क्या जप क्या तप संयमो क्या व्रत क्या अस्नान ॥ जबलग जुगति न जानिये भाव भगति भगवान ॥ संपति देख न हरषिये विपति देख न रोय ॥ ज्यों संपति त्यों विपति है विधि ने रच्या सो होय ॥ कह कबीर अब जान्या संतन हृदय मँझार ॥ सेवक सो सेवा भले जिहिं घट वसहिं मुरार ॥ ९३ ॥

राग गौरी।

आस पास घन तुलसीक विरवा मांझ बनारस गाउँ रे ॥ वाका सरूप देख मोहिं ग्वालनि मोको छोड न आउ न जाउँ रे ॥ तोहि शरण मन लागो ॥ सारंगधर सों मिलै जो बडभागो ॥ वृन्दावन मनहरन मनोहर कृष्ण चरावत गाउँ रे ॥ जाका ठाकुर तुहीं शारंगधर मोहिं कबीर गाउँ रे ॥ ९४ ॥

लख चौरासी जीव योनि में भ्रमत नन्द बहु थाको रे ॥ भगति हेत अवतार लियो है भाग बडो वपुरा को रे ॥ तुम जो कहत हो नन्द को नन्दन नन्द सो नन्दन काको ॥ धरणि अकाश दशोंदिशि नाहीं तब यह नंद कहां थो रे ॥ संकट नहीं परै योनि नहीं आवै नाम निरंजन जाको रे ॥ कबीर को स्वामी ऐसो ठाकुर जाके माई न बापो रे ॥ ९५ ॥

राग गौरी चेती।

देवा पाहन तारीयलें ॥ राम कहत जन कस न तरे ॥ तारी ले गानिका बिन रूप कुब्जा व्याध अजामिल तारीयले ॥ चरण बधक जन तेऊ मुक्त भये ॥ हौं बल बल जिन राम कहे ॥ दासी सुत जन विदुर सुदामा उग्रसेन को राज दिये ॥ जप हीन तप हीन कुल हीन कर्म हीन नामें के स्वामी तेऊ तरे ॥ ५६ ॥

सतयुग सत त्रेता यज्ञ द्वापर पूजा चार ॥ तीनों युग तीनों दृढे कलि केवल नाम अधार ॥ पार कैसे पायबो रे ॥ मोसों कोऊ न कहे समुझाय ॥ जाते आवागमन बिलाय ॥ बहुविध धर्म निरूपिये करता दीसै सब लोय ॥ कवन कर्म ते छूटिये जिहिं साध सब सिध होय ॥ कर्म अकर्म विचारिये शंका सुन वेद पुराण ॥ संसामद हिरदय बसे कौन हरे अभिमान ॥ बाहर उदक पखारिये घट भीतर विविध विकार ॥ शुद्ध कवन पर होयबो शुचि कुंजर विध व्योहार ॥ रवि प्रकाश रजनी यथा गति जानत सभ संसार ॥ पारस मानो तांबो छुये कनक होत नहिंवार ॥ परमपुरुष गुरु भेंटिये पूरब लिखत ललाट ॥ उनमन मन मनहीं मिले छुटकत बजर कपाट ॥ भगति जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काट विकार ॥ सोई बस रस मन मिले गुण निर्गुण एक विचार ॥ अनिक यतन निग्रह किये टारी न टरै भ्रम फाँस ॥ प्रेम भगति नहीं ऊपजै ताते रविदास उदास ॥ ५७ ॥

राग आसावरी।

पवन उपाय धरी सब धरती जल अगिन का बंध किया ॥ अंधले दहसिर मूड कटाया रावण मार क्या बडा भया ॥ क्या उपमा तेरी आँकी जाय तू सरबे ॥ पूर रह्या लव लाय ॥ जीय उपाय जुगति हथ कीनी काली नथ क्या बडा भया ॥ किस तूँ

पुरुष जोरू कौन कहिये सर्व गिरंतर रम रह्या ॥ नाल कुटुंब साथ वरदाना ब्रह्मा भालण सृष्टि गया॥ आगे अंत न पायो ताका कंस छेद क्या बडा भया॥ रत्नउपाय धरे क्षीर मथ्या होर भख-लाये जिअसी कीया ॥ कहै नानक छपै क्यों छप्या एही एकी बडा दिया ॥ ५८ ॥

राज मिलक जोबन गृह शोभा रूपवंत जो आनी ॥ बहुत द्रव्य हस्ती अरु घोडे लाल लाख बयआनी ॥ आगे दरगहिं काम न आवहिं छोड चलै अभिमानी ॥ काहे एक बिना चित लाइये ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत सदा सदा हरी ध्याइये ॥ महा विचित्र सुंदर आखाड़ रणमें जिते पवाडे ॥ हौं मागें हौं बंधों छोडों मुखते एव बबाडे ॥ आया हुकुम पारब्रह्मका छोड चल्या एक दिहाडे ॥ कर्म धर्म जुगति बहु करता करने हार न जानें॥ उपदेश करे आप न कमावे तत्त्व शब्द न पछानें ॥ नांगा आया नांगो जासी ज्यों हस्ती खाक छानें ॥ संत सुजन सुनहु सभ मीता झूंठा एक पसारा ॥ मेरी मेरी कर कर डूबे खप खप मुये गँवारा ॥ गुरु मिल नानक नाम ध्याया साँच नाम निस्तारा ॥ ५९ ॥

जिस नीच को कोई न जानै ॥ नाम जपत सो चहुँ कुंट मानै ॥ दर्शन मांगों देहु प्यारे ॥ तुमरी सेवा कौन कौन न तारे ॥ जाके निकट न आवे कोई ॥ सकल सृष्टि वाके चरण मल धोई ॥ जो प्राणी काहू न आवत काम ॥ संत प्रसाद ताको जापिये नाम ॥ साधु संग मन सोवत जागे ॥ तब प्रभु नानक मीठे लागे ॥ ६० ॥

उक्ति सयानप कछू न जानां ॥ दिन रैन तेरा नाम बखानां ॥ मैं निगुर्ण गुण नाहीं कोय । करन करावन हार प्रभु सोय ॥ मूरख मुगध अज्ञान अविचारी ॥ नाम तेरे की आश मन धारी ॥ जप

तप संयम कर्म न साधा ॥ नाम प्रभूका मनहिं अराधा ॥ कछु न जाना मति मेरी थोरी ॥ विनवत नानक ओट प्रभु तोरी ६१॥

चरण कमलकी आस प्यारे ॥ यम किंकर नस गये विचारे ॥ तूं चित आवहि तेरी मया ॥ सिमरत नाम सकल रोग गया ॥ अनिक दूख देवहि अवरां को ॥ पहुँच न साकहि जन तेरे को॥ दरश तेरे की प्यास मन लागी ॥ सहज आनंद वसै वैरागी ॥ नानककी अरदास सुनीजै ॥ केवल नाम हृदयमें दीजै ॥ ६२ ॥

आठ पहर निकट कर जानें ॥ प्रभुका कीया मीठा मानैं ॥ एक नाम संतन आधार ॥ होय रहैं सभकी पग छार ॥ संत रहत सुनो मेरे भाई ॥ वाकी महिमा कथन न जाई ॥ बरतन जाके केवल नाम ॥ आनन्द रूप कीर्तन विश्राम ॥ मित्र शत्रु जाके एक समानै ॥ प्रभु अपने बिन अवर न जानै ॥ कोटि कोटि अघ काटनहारा ॥ दुख दूर करन जीयके दातारा ॥ शूरबीर वचन के बली ॥ कमला बपुरी संतन छली॥ तांका संग बाछहिं सुरदेव॥ अमोघ दरश सफल जाकी सेव ॥ कर जोर नानक करे अरदास॥ मोहिं संतहि टहल दीजै गुण तास ॥ ६३ ॥

भगत वच्छल हरि बिरद आप बनाइया ॥ जहिं जहिं संत अराधहिं तहिं तहिं प्रगटाइया ॥ प्रभु आप लिये समाय सहज सुभाय भगत कारज सारिया॥ आनन्द हरि यश महामंगल सर्व दुःख बिसारिया ॥ चमत्कार प्रकार दह दिस एक तहिं दरशाइया॥ नानक पिअंपे चरण जंपै भगत वच्छल हरि बिरद आप बना- इया ॥ ६४ ॥

थिर संतन सुहाग मरै न जावहे ॥ जाके गृह हरि नाहु सों सदही रावहे॥अविनाशी अविगत सो प्रभु सदा न बतन निर्मला॥ नहिं दूर सदा हजूर ठाकुर दह दिस पूरन सद सदा ॥ प्राण पति

गति मतिजाते प्रिय प्रीति प्रीतम भावहे ॥ नानक बखाने गुरु वचन जाने स्थिर संतन सुहाग मरै न जावहे ॥ ६५ ॥

कूड़ राजा कूड परजा कूड सभ ससार ॥ कूड मंडप कूड़ माडी कूड बैसनहार ॥ कूड सोना कूड रूपा कूड पैनणहार ॥ कूड कायां कूड कप्पड कूड रूप अपार ॥ कूड मीयां कूड बीबी खप्प होये खार॥कडे कडे नेहु लग्गा बिसर्‍या करतार॥किसनाल कीजै दोस्ती सभ जगत चल्लणहार ॥ कूड मिट्ठा कूड माख्यो कूड डोबे पूर ॥ नानक बखाने बिनती तुध वाझ कूडो कूड ॥ ६६ ॥

जबलग तेल देवे मुख बाती तब सूझे सभ कोई ॥ तेल जले वाती ठहरानी सूना मंदिर होई॥रे बौरे तोहि घरी न राखे कोई ॥ तूं राम नाम जप सोई॥ काकी मात पिता कहु काको कवन पुर्ष की जोई ॥ घट फूटे कोउ बात न पूछे काढो काढो होई ॥ देहुरी बैठी माता रोवे खटिया लेगये भाई॥ लट छिटकाये तिरिया रोवे हंस इकेला जाई॥कहत कबीर सुनो रे संतहु भवसागर के सोई ॥ इस बंदे सिर जुलम होतहै जम नहीं हटे गुसाईं ॥ ६७ ॥

हज्ज हमारी गोमती तीर ॥ जहां बसहिं पीतंबर पीर ॥ वाह वाह क्या खूब गावताहै॥हरि का नाम मेरे मन भावताहै॥नारद शारद करहिं खवासी॥ पास बैठी बीबी कमला दासी॥कंठ माला जिहवा राम ॥ सहस नाम ले ले करूं सलाम ॥ कहत कबीर राम गुन गावों ॥ हिंदू तुरक दोऊ समझावों ॥ ६८ ॥

कहा श्वान को सिमृत सुनाये ॥ कहा शाकत पै हरि गुन गाये ॥ राम राम राम रमे रम रहिये ॥ शाकत सों भूल नहिं कहिये ॥ कौआ कहा कपूर चुगाये ॥ कांहिं बिसीयर को दूध पिआये ॥ सत संगत मिल विवेक बुद्ध होई ॥ पारस परस लोहा कंचन सोई ॥ शाकत श्वान सभ करे कराया ॥ जो धुर लिख्या

सो कर्म कमाया ॥ अमृत लै लै नीम सिंचाई ॥ कहत कबीर वाको सहज न जाई ॥ ६९ ॥

लंका सी कोट समुंद्र सी खाई ॥ तिहिं रावण घर खबर न पाई ॥ क्या मांगों कछु थिर न रहाई ॥ देखत नयन चल्यो जग जाई ॥ इक लख पूत सवालख नाती ॥ तिहिं रावन घर दिया न बाती ॥ चंद सूरज जाके तपत रसोई ॥ बैसन्दर जाके कपड़े धोई ॥ गुरु मति रामहिं नाम बसाई ॥ अस्थिर रहे न कतहूँ जाई ॥ कहत कबीर सुनोरे लोई ॥ राम नाम बिन मुक्ति न होई ॥ ७० ॥

कियो शृंगार मिलनके ताईं ॥ हरि न मिले जग जीवनगुसाईं ॥ हरि मेरो पीर हौं हरि की बहुरिया ॥ राम बडे मैं तनक लहुरिया ॥ धनि पुर एकै संग बसेरा ॥ सेज एक पै मिलन दुहेरा ॥ धन्य सुहागन जो पिय भावे ॥ कह कबीर फिर जन्म न आवे ॥ ७१ ॥

अंतर मैल जो तीरथ न्हावे तिस बैकुंठ न जाना ॥ लोक पतीने कछू न होवे नाहीं राम अयाना ॥ पूजो राम एकही देवा ॥ साँचा न्हावन गुरुकी सेवा ॥ जलके मज्जन जे गति होवे नित नित मेंडक न्हावाहिं ॥ जैसे मेंडक तैसे ओह नर फिर फिर योनी आवहिं ॥ मनो कठौर मरै बनारस नरक न वाच्या जाई ॥ हरिका संत मरे हाढंबहिं सकली सेन तराई ॥ दिन सुरैन वेद नाहीं शास्त्र तहाँ बसै निरंकारा ॥ कह कबीर नर तिसहि ध्यावो बावरिया संसारा ॥ ७२ ॥

एक अनेक व्यापक पूरक जत देखों तत सोई ॥ माया चित्र विचित्र विमोहत विरला बूझे कोई ॥ सब गोविंदहै सब गोविंद है गोविंद बिन नाहिं कोई ॥ सूत एक मणि शत सहस जैसे ओत प्रोत प्रभु सोई॥ चलतरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिन्न न होई।

यह प्रपंच पारब्रह्म की लीला विचरत आन न होई ॥ मिथ्या भ्रम अरु स्वपन मनोरथ सत्य पदारथ जान्या ॥ सुकृत मनसा गुरू उपदेशी जागतही मन मान्या ॥ कहत नामेदेउ हरिकी रचना देखो हृदय विचारी ॥ घट घट अंतर सर्व निरंतर केवल एक मुरारी ॥ ७३ ॥

राग गूजरी।

मुस मुस रोवै कबीर की माई ॥ यह बारिक कैसे जीवहि रघुराई ॥ तनना बुनना सब तज्यो है कबीर ॥ हरि का नाम लिख लियो शरीर ॥ जबलग तागा बाहों बेहों बेहीं ॥ तबलग बिसरै राम सनेही ॥ ओछी मति मेरी जाति जुलाहा ॥ हरि का नाम लह्यो मैं लाहा ॥ कहत कबीर सुनहु मेरी माई ॥ हमरा इनका दाता एक रघुराई ॥ ७४ ॥

जो राज देहि तो कवन बडाई ॥ जो भीख मंगावहिं तो क्या घट जाई ॥ तूं हरि भज मन मेरे पद निरबान ॥ बहुरि न होय तेरा आवन जान ॥ सब तैं उपाई भर्म भुलाई ॥ जिस तूं देवहि तिसहि [illegible]

न आइ ॥ एक पाथर [illegible]
देवता वह भी देवा ॥ कहै नामदेव हम हरिकी सेवा ॥ ७५ ॥

दूध तो बछरै थनों बिटार्यो ॥ फूल भमर जल मीन बिगार्यो ॥ माई गोविंद पूजा कहा ले चढावों ॥ अवर न फूल अनूपम पावों ॥ मलियागिर बेठे हैं भुजंगा ॥ विष अमृत बसहि इक संगा ॥ धूपदीप नैवेदहि बासा ॥ कैसे पूज करै तेरी दासा ॥ तन मन अरपों पूज चढावों ॥ गुरु प्रसाद निरंजन पावों ॥ पूजा अरचा आहि न तोरी ॥ कह रामदास कवन गति मोरी ॥ ७६ ॥

अंतर मल निर्मल नहिं कीना बाहर भेष उदासी ॥ हृदय कमल घट ब्रह्म न चीन्हा काहे भया संन्यासी ॥ भरमें भूली रे जैचंदा ॥ नहीं नहीं चीन्हा परमानंदा ॥ घर घर खाया पिंड बधाया खिंथा मुंदा माया ॥ भूमि मसान की भसम लगाई गुरु बिन तत्त्व न पाया ॥ काय जपो रे काय तपो रे काय बिलोको पानी ॥ लख चौरासी जिन उपजाई सो सुमिरो निरवानी ॥ काय कमडल कापडिया रे अठसठ काहि फिराही ॥ वदत त्रिलोचन सुनरे प्राणी कण विन गाहुकि पाही ॥ ७७ ॥

अंतकाल जो लक्ष्मी सुमिरे ॥ ऐसी चिंता में जो मरे ॥ सरप योनि बल बल औतरे ॥ अरी बाई गोविंद नाम मत बिसरे ॥ अंतकाल जो स्त्री सुमिरे ॥ ऐसी चितामें जे मरे ॥ बेसवा योनि बल बल औतरे ॥ अंतकाल जो लडके सुमिरे ॥ ऐसी चितामें जे मरे ॥ शूकर योनि बल बल औतरे ॥ अंतकाल जो मंदिर सुमिरे ॥ ऐसी चितामें जे मरे ॥ प्रेत योनि बल बल औतरे ॥ अंतकाल नारायण सुमिरे ॥ ऐसी चिंता में जे मरे ॥ वदत त्रिलोचन ते नर मुक्ता पीतांबर वाके हृदय बसे ॥ ७८ ॥

राग देवगंधार ।

अब हम चली ठाकुर पहि हार ॥ जब हम शरण प्रभूकी आई राख प्रभु भावे मार ॥ लोकन की चतुराई उपमा ते बैसंदर जार ॥ कोई भला कहो भावे बुरा कहो हम तन दियोहै ढार ॥ जो आवत शर्ण ठाकुर प्रभु तुमरी तिस राखो किरपा धार ॥ जन नानक शर्ण तुम्हारी हरजी राखो लाज मुरार ॥ ७९ ॥

हरी राम नाम जप लाहा । गतिपावहि सुख सहज अनंदा काटे जमके फाहा । खोजत खोजत खोज सुविचारयो हरी संत जनां पहि आहा । तिन्हा प्राप्त यह निधाना जिनके कर्म लिखा

हा ॥ से बड भागी से पतिवंते सेई पूरे शाहा । सुन्दर सुघड सुरूप ते नानक जिन हरि नाम बिसाहा ॥ ८० ॥

प्रभु एही मनोरथ मेरा । कृपानिधान दयाल मोहिं दीजै कर संतनका चेरा । प्रातहि काल लागो जन चरनी निशिबासर दर्शन पावों ॥ तन मन अर्प करों जन सेवा रसना हरी गुन गावों । साँस साँस सुमिरो प्रभु अपना संत संग नित रहिये । एक अधार नाम धन मोरा आनंद नानक यह लहिये ॥ ८१ ॥

राग सोरठ ।

आपे सेवा लांयदा प्यारा आपे भगति उमाहा॥आपे गुणगावां यदा प्यारा आपे शब्द समाहा॥आपे लेखण आपलिखारी आपे लेख लिखाहा ॥ मेरे मनजप रामनाम उमाहा॥अनुदिन अनंद होवै बडभागी लैगुर पूरे हरि लाहा ॥ आपे गोपी कान्ह है प्यारा बन आपे गऊ चराहा ॥ आपे साँवल सुन्दर प्यारा आपे वंशीब-जाहा ॥ कुबलयापीड आप मरांयदा प्यारा कर बालक रूप-पचाहा ॥ आप अखाडा पायँदा प्यारा कर देखे आप जो चाहा ॥ कर बालक रूप उपायँदा प्यारा चंडुर कंस केस मराहा ॥ आपे ही बल आपहै प्यारा बल भंने मूरख मुगधाहा ॥ सभ आपे जगत उपायँदा प्यारा बस आपे जुगति हथाहा ॥ गल जेवाडी आपे पायदा प्यारा ज्यों प्रभु खिंचे त्यों जाहा ॥ जो गरबे सो पचर्सी प्यारे जप नानक भगति समाहा ॥ ८२ ॥

जौलौं भाव अभाव यह मानें तौलौं मिलण दुराई ॥ आन आपना करत बिचारा तौलौं बीच बिपाई ॥ माधव ऐसी देहु बुझाई ॥ संतों साधु रहौं ओट चरना नहिं बिसरै मुहुत चसाई ॥ मन मुगध अचेत चंचल चित तुम ऐसी हृदय न आई ॥ प्राण पति त्यागि आन तें रच्या उरझो संग बैराई ॥ शोक न व्यापै आपन थापे

साधु सङ्गत बुद्धि पाई ॥ शाकतका बकना एउं जानो जैसे पवन झुलाई ॥ कोट प्राध अछादयो एह मन कहना कछु न जाई ॥ जन नानक दीन शरण आयो प्रभु सब लेखा रखो उठाई ॥ ८३ ॥

तन सन्तन का धन सन्तन का मन संतनका कीया ॥ सन्तप्रसाद हरि नाम ध्याया सर्व कुशल तब थीया ॥ सन्तन बिन अवर न दाता वीया ॥ जो जो शरण परे साधूकी सो पार-गामी कीया ॥ कोटि अपराध मिटहिं जन सेवा हरि कीर्तन रस गाइये ॥ ईहां सुख आगे सुख ऊजल जनका संग वडभागी पाइये॥रसना एक अनेक गुण पूरन जनकी केतक उपमां कहिये॥ अगम अगोचर सद अविनाशी शरण सन्तनकी लहिये ॥ निरगुण नीच अनाथ अपराधी ओट सन्तनकी आही ॥ बूडत मोहगृह अन्ध कूपमें नानक लेहु निवाही ॥ ८४ ॥

खोजत खोजत खोज विचारयो राम नाम तत्त्वसारा ॥ किल-विष काटे निमिष अराध्या गुरमुख पार उतारा ॥ हरिरस पीवो पुरुष ज्ञानी ॥ सुन सुन महा तृप्त मन पावे साधु अमृत बानी ॥ मुक्ति भुगति जुगति सचु पाइये सर्व सुखांका दाता ॥ अपने दास-को भगति दान देवे पूरण पुरुष विधाता ॥ श्रवणों सुनिये रसना गाइये हिरदय ध्याइये सोई ॥ करन कारन समरत्थ स्वामी जाते बृथा न कोई ॥ बडे भाग रत्न जन्म पाया करो कृपा कृपाला ॥ साधु संग नानक गुण गावे सुमिरे सदा सदा गोपाला ॥ ८५ ॥

जेती समग्री देखहु रे नर तेती ही छड जानी ॥ राम नाम सग कर व्योहारा पावहिं पद निरवानी ॥ प्यारे तू मेरो सुख दाता ॥ गुरु पूरे दीया उपदेशा तुमहीं संग पराता ॥ काम क्रोध लोभ मोह अभिमाना तामें सुख नहिं पाइये ॥ होहु रेनि तू सकलकी मेरे मन तौ आनँद मगल सुख पाइये ॥ घाल न भाने अन्तरविधि जाने

ताकी कर मन सेवा ॥ कर पूजा होम एह मनुआँ अकाल मूरत गुरुदेवा ॥ गोविंद दामोदर दयाल माधव पारब्रह्म निरंकारा ॥ नाम वर तन नामोवालेवा नाम नानक प्राण अधारा ॥ ८६ ॥

रत्न छाँड कौडी संग लागे जाते कछू न पाइये ॥ पूरन पारब्रह्म परमेश्वर मेरे मन सदा ध्याइये ॥ सुमिरो हरि हरि नाम प्रानी ॥ विनशै काची देह अज्ञानी ॥ मृगतृष्णा अरु सुपन मनोरथ ताको कछु न बडाई ॥ राम भजन विन काम न आवसि संग न काहू जाई ॥ हौं हौं करत विहाय अवस्था जिय को काम न कीना ॥ धावत धावत नहिं तृपतास्या राम नाम नहिं चीना ॥ स्वाद विकार विषय रस मातो असंख्य खते कर फेरे ॥ नानक की प्रभु पाहि बीनती काटो अवगुण मेरे ॥ ८७ ॥

गुण गावो पूरण अविनाशी काम क्रोध विष जारे ॥ विषम अग्निको सागर साधु संग उधारे । पूरे गुरु मेट्यो भ्रम अंधेरा । भज प्रेम भगति प्रभु नेरा । हरि हरि नाम निधान रस पीया मन तन रहे अघाई । जतकत पूर रह्यो परमेश्वर कत आवे कत जाई । जप तप संयम ज्ञान तत्त्ववेत्ता जिस मन बसे गुपाला । नाम रतन जिन गुरुमुख पाया ताकी पूरण घाला । कलि कलेश मिटे दुख सकल काटी यमकी फासा । कहु नानक प्रभु किरपा धारी मन तन भये विकासा ॥ ८८ ॥

माया मोह मगन अंधियारे देवनहार न जाने । जीउ पिंड साज जिन रच्या बल अपनो कर माने । मन मूढ देख रह्यो प्रभु स्वामी ॥ जो कछु करहि सोई सोई जाणे रहे न कछु छानी ॥ जिह्वा स्वाद लोभ मद मातो उपजे अनिक विकारा ॥ बहुत योनि भ्रमत दुख पाया हौं में बन्धनके भारा । देय किवाँड अनिक पडदेमे परदारा संग फाके ॥ चित्रगुप्त जब लेखा मांगहिं तब कौन पडद

तेरा ढाकै॥दीन दयाल पूरन दुख भंजन तुम बिन ओट न काई। काढि लेहु संसार सागर महि नानक प्रभु शरनाई ॥ ८९ ॥

सकल वनस्पति में वैसंदर सकल दूधमें घीया॥ ऊँच नीच में जोति समानी घट घट माधो जीया॥संतो घटघट रह्या समाह्यो॥ पूरनपूर रह्यो सर्वमें जल थल रमैया आह्यो॥ गुणनिधान नानक यश गावै सतगुरु भर्म चुकायो॥ सर्व निवासी सदा अलेपा सबमें रह्यो समायो॥ ९० ॥

अविनाशी जीवनको दाता सुमिरत सब मल खोई ॥ गुण-निधान भगवन को बर्नन विरला पावै कोई ॥ मेरे मन जप गुरु गोपाल प्रभु सोई ॥ जाकी शरण पर सुख पाइये बहुरि दुःख न होई ॥ बड़भागी साधुसंग प्रापत तिन भेटत दुर्मति खोई ॥तिनकी धूर नानक दास बांछै जिन हरि नाम हृदय परोई ॥ ९१ ॥

रामदास सरोवर न्हाते। सब उतरे पाप कमाते॥ निर्मल होय कर अस्नाना। गुरु पूरे कीने दाना॥ सब कुशल क्षेम प्रभु धारे। सही सलामत सब थोकदा उबारे॥ गुरुका शब्द विचारे॥ साधु संग मल लाथी ॥ पारब्रह्म भयो साथी ॥ नानक नाम ध्याया ॥ आदि पुरुष प्रभु पाया ॥ ९२ ॥

प्राणी कौन उपाव करे ॥ जाते भगती रामकी पावै यमको त्रास हरै ॥ कौन कर्म विद्या कह कैसी धर्म कौन पुनि करई ॥ कौन नाम गुरु जाके सुमिरे भवसागर को तरई ॥ कलिमें एक नाम किरपानिधि जाहि जपे गतिपावै॥और धर्म ताके सम नाहिन यह विधि वेद बतावै॥ सुख दुख रहत सदा निरलेपी जाको कहत गुसाईं ॥ सो तुमहीमें बसे निरंतर नानक दर्पण न्याईं ॥ ९३ ॥

माई मैं किहि विधि लखों गुसाईं॥ महा मोह अज्ञान तिमिर में मन रह्यो उरझाई॥ सकल जन्म भ्रम ही भ्रम खोयो नहीं

स्थिर मति पाई ॥ विषयासक्त रह्यो निशिवासर नहिं छूटी अधमाई । साधु संग कबहूं नहिं कीना नहिं कीरति प्रभु गाई ॥ जन नानक मैं नाहीं कोऊ गुण राखि लेहु शरणाई ॥ ९४ ॥

माई मन मेरो वश नाहिं ॥ निशि वासर विषयनको ध्यावत किहि विधि रोकों ताहि ॥ वेद पुराण सिमृति के मत सुन निमिष न हिये बसावै ॥ पर धन पर दारा सों राच्यों बिरथा जन्म सिरावै ॥ मद माया के भयो बावरो सूझत नहिं कछु ज्ञाना ॥ घट ही भीतर बसत निरंजन ताको मर्म न जाना ॥ जबहीं शरण साधु की आयो दुरमति सकल बिनासी ॥ तब नानक चेत्यो चिंतामणि काटी यमकी फाँसी ॥ ९५ ॥

रे नर यह सांची जिय धार ॥ सकल जगतहै जैसे सुपना बिनशत लगत न बार ॥ बारू भीत बनाई रचपच रहत नहीं दिन चार ॥ तैसेही यह सुख माया को उरझ्यो कहा गवाँर ॥ अजहूं समझ कछू बिगर्यो नाहिन भज ले नाम मुरार ॥ कह नानक निजमति साधनको भाष्यो तोहिं पुकार ॥ ९६ ॥

मन रे गह्यो न गुरु उपदेश ॥ कहा भयो जो मूंड मुँडायो भगवो कीनो भेष ॥ साँच छाडके झूठहि लाग्यो जन्म अकारथ खोयो ॥ कर परपंच उदर निज पोष्यो पशु की नाईं सोयो ॥ राम भजन की गति नहिं जानी माया हाथ बिकाना ॥ उरझ रह्यो विषयन सँग बौरा नाम रत्न बिसराना ॥ रह्यो अचेत न चेत्यो गोविंद बिरथा औध सिरानी ॥ कह नानक हरि बिरद पछानो भूले सदा परानी ॥ ९७ ॥

जो नर दुखमें दुख नहिं मानै ॥ सुख सनेह अरु भय नहिं जाके कंचन माटी मानै ॥ नहिं निंदा नाहिं अस्तुति जाके लोभमोह अभिमाना ॥ हर्ष शोक तें रहै नियारो नाहिं मान अपमाना ॥ आसा मनसा

सकल त्यागिके जगत रहे नीरासा ॥ काम क्रोध जिहिं परसै नाहिंन तिहिं घट ब्रह्म निवासा ॥ गुरु किरपा जिहिं नरको कीनी तिहिं यह जुगति पछानी ॥ नानक लीन भयो गोविंद सों ज्यों पानी सँग पानी ॥ ९८ ॥

जब जरिये तब होय भसम तन रहै किरम दल खाई ॥ काची गागर नीर परत हैं या तन की यही बड़ाई ॥ काहे भया फिरतो फूल्या फूल्या ॥ जब दश मास ऊर्ध्व मुख रहना सो दिन कैसे भूल्या ॥ ज्यों मधु माखी त्यों सठोर रस जोर जोर धन कीया ॥ मरती बार लेहु लेहु करिये भूत रहन क्यों दीया ॥ देहरी लौं बरी नारि संग भई आगे सजन सुहेला ॥ मरघट लौं सब लोग कुटुंब भयो आगे हंस इकेला ॥ कहत कबीर सुनो रे प्रानी परे काल ग्रस कूआ ॥ झूँठी माया आप बँधाया ज्यों नलिनी भ्रम सूआ ॥ ९९ ॥

वेद पुरण सभी मत सुनके करी कर्मकी आशा ॥ काल ग्रसत सब लोग सयाने उठ पंडितपहिं चले निराशा ॥ मन रे सरचो न एको काजा भज्यो न रघुपति राजा ॥ वनखंड जाय योग तप कीनो कंदमूल चुन खाया ॥ नादी वेदी शब्दी मौनी यमके पट लिखाया ॥ भक्ति नारदी हृदय न आई काछ पूछ तन दीना ॥ रात रागिन डिभ होय बैठा उन हरि पहिं क्या लीना ॥ परयो काल सभी जग ऊपर माहिं लिखे ब्रह्मज्ञानी ॥ कहु कबीर जन भये खलासे प्रेम भगति जिहिं जानी ॥ १०० ॥

क्या पढिये क्या सुनिये ॥ क्या वेद पुराणा सुनिये ॥ पढ़े सुने क्या होई ॥ जो सहज न मिलया सोई ॥ हरिका नाम न जपसि गवाँरा ॥ क्या सोचहिं बारंबारा ॥ अँधियारे दीपक चहिये ॥ इक-वस्तु अगोचर लहिये ॥ वस्तु अगोचर पाई ॥ घट दीपक रह्यो

समाई ॥ कह कबीर अब जान्या ॥ जब जान्यां तो मन मान्या ॥ मन माने लोग न पतीजै ॥ न पतीजै तो क्या कीजे ॥ १०१ ॥

हृदय कपट मुख ज्ञानी ॥ झूंठे कहा विलोकन पानी ॥ काया मांसज कौन गुना ॥ जो घट भीतर है मलना ॥ लोकी अडसठ तीरथ न्हाई ॥ करुणापन तऊ न जाई ॥ कह कबीर बीचारी ॥ भवसागर तार मुरारी ॥ १०२ ॥

बहु प्रपंच कर परधन ल्यावै ॥ सुत दारा वहिं आन लुटावै ॥ मन मेरे भूले कपट न कीजे ॥ अंत निबेरा तेरे जीय पहिं लीजे ॥ छिन छिन तन छीजे जरा जनावै ॥ तब तेरी ओक कोई पानी हूँ न पावै ॥ कहत कबीर कोई नहिं तेरा ॥ हिरदय राम क्यों न जपहि सवेरा ॥ १०३ ॥

भूखे भगति न कीजे ॥ यह माला आपनि लीजे ॥ हौं मांगों संतन रेना ॥ मैं नहीं किसीका देना ॥ माधो कैसी बने तुम संगे ॥ आपन देहु तो लेवों मंगे ॥ दोय सेर मांगों चूना ॥ पाउ घीउ संग लूना ॥ आधसेर मांगो दाले ॥ मोको दोनों वखत जिमाले ॥ खाट मांगों चौपाई ॥ सिरहाना अवर तुलाई ॥ ऊपर को मांगो खींधा ॥ तेरी भगति करे जन थींधा ॥ मैं नाहीं कीना लब्बो ॥ इक नाम तेरा मैं फब्बो ॥ कह कबीर मनमान्या ॥ मनमान्या तो हरि जान्या ॥ १०४ ॥

पार परोसन पूछल्ल नामा कापहि छानि छवाई हो ॥ तो पहि दुगनी मजूरी देहौं मोकों बेढी देहु बताई हो ॥ री बाई बेढी देन न जाई देख बेढी रह्यो समाइ ॥ हमारे बेढी प्राण अधारा ॥ बेढी प्रीति मजूरी मांगे जो कोउ छान छवावै हो ॥ लोक कुटुंब सबहु ते तोरे तो आप न बेढी आवैहो ॥ ऐसो बेढी बरनि न साकों सब अंतर सब ठांई हो ॥ गूंगे महा अमृत रस चाख्या पूछे

कहन न जाई हो ॥ बेढी के गुण सुनरी बाई जलधि बांध ध्रुव थाप्योहो ॥ नामें के स्वामी मीय बहोरी लंक विभीषण आप्यो हो ॥ १०५ ॥

जब हम होते तब तू नाहीं अब तूहीं में नाहीं ॥ अनल अगम जैसे लहरि मय उदधि जल केवल जल माहीं ॥ माधव क्या कहिये भ्रम ऐसा ॥ जैसा मानिये होय न तैसा ॥ नरपति एक सिंहासन सोया सुपने भयो भिखारी ॥ अछत राज बिछुरत दुख पाया सो गति भई हमारी ॥ राज भुवंग प्रसंग जैसे है अब कछु मर्म जनाया ॥ अनिक कटक जैसे भूल परे अब कहते कहन न आया ॥ सर्व एक अनेकै स्वामी सब घट भुगवै सोई ॥ कह रामदास हाथ पे नेरे सहजे होय सो होई ॥ १०६ ॥

जो हम बांधे मोह फांस हम प्रेमबंधन तुम बांधे ॥ अपने छूटन की यतन करो हम छूटे तुम आराधे ॥ माधव जानतहो जैसी ॥ अब कहा करोगे ऐसी ॥ मीन पकर फांक्यो अरु काट्यो राध कियो बहु वानी ॥ खण्ड खण्ड कर भोजन कीनो तउ न बिसर्यो पानी ॥ आपन बापे नाहीं किसी को भावन को हरि राजा ॥ मोह पटल सब जगत व्याप्यो भगत नहीं संतापा ॥ कह रामदास भगति इक बाढी अब यह कासों कहिये ॥ जा कारन हम तुम आराधे सो दुख अजहूं सहिये ॥ १०७ ॥

दुर्लभ जन्म पुण्य फल पायो वृथा जात अविवेके ॥ राज इन्द्र सम सर गृह आसन बिन हरि भगति कहो किहि लेखे ॥ न विचार्यो राजा रामको रस जिहि रस अनरस बीसर जाहीं ॥ जान अजान भये हम बावर सोच असोच दिवस जाहीं ॥ इन्द्री सबल निबल विवेक बुधि परमारथ प्रवेश नाहीं ॥ कहियत आन अचरियत अनकछु समझ न परे अपर माया ॥ कह रामदास उदास दासमति परिहर कोप करो जियदाया ॥ १०८ ॥

सुखसागर सुरतरु चिंतामणि कामधेनु वश जाके ॥ चार पदारथ अष्ट दशा सिधि नव निधि करतल ताके ॥ हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥ अवर सब त्याग वचन रचना ॥ नानाख्यान पुराण वेद विध चौंतिस अक्षरमाहीं ॥ व्यास विचार कह्यो परमारथ राम नाम सर नाहीं ॥ सहज समाधि उपाधि रहत पुनि बडे भाग लवलागी ॥ कह रामदास प्रकाश हृदय धर जन्म मरन भय भागी ॥ १०९ ॥

नैनों नीर बहे तन क्षीना भये केश दुधबानी ॥ रूधा कंठ शब्द नहिं उचरे अब क्या करहि परानी ॥ रामराय होय वैद बनवारी अपने संतन लेहु उबारी ॥ माथे पीर शरीर जलन है करक कलेजे माहीं ॥ ऐसी वेदन उपज खरी भई वाकी औषध नाहीं ॥ हरि का नाम अमृत जल निर्मल यह औषध जग सारा ॥ गुरुप्रसाद कहे जन भीपण पावो मोक्ष द्वारा ॥ ११० ॥

राग धनाश्री ।

बडे बडे राजन अरु भूपन ताकी त्रिसना न बूझी ॥ लपट रहे माया रँग माते लोचन कछु न सूझी ॥ विषयामहिं किन हूं तृप्ति न पाई ॥ ज्यों पावक ईंधन नहीं धरापे बिन हरि कहो बिन अघाई ॥ दिन दिन करत भोजन बहु व्यंजन ताकी मिटे न भूखा ॥ उद्यम करे श्वान की नाई चारों कुटां धोखा ॥ कामवंत कामी बहु नारी पर गृह जोह न चूके ॥ दिन प्रति करे करे पछतावे शोक लोभ में सूके ॥ हरि हरि नाम अपार अमोलक अमृत एक निधाना ॥ सुख सहज आनंद सन्तनके नानक गुरुते जाना ॥ १११ ॥

हरि एक सिमर एक सिमर प्यारे ॥ कलिकलेश लोभ मोह महा भवजल तारे ॥ श्वास श्वास निमिष निमिष दिन सुरैन

चिता रे ॥ साधु संग जप निसंकमन निधान धारे ॥ चरनकमल नमसकार गुण गोविंद वीचारे ॥ साधु जनांकी रेणु नानक मंगल सुख सुधा रे ॥ ११२ ॥

काहे रे वन खोजन जाई ॥ सर्व निवासी सदा अलेपा तोहिं संग समाई ॥ पुष्पमध्य ज्यों वास वसत है मुकर माहीं जैसे छाई ॥ तैसेही हरि वसे निरंतर घट ही खोजो भाई ॥ बाहर भीतर एक जानो यह गुरु ज्ञान बताई ॥ जन नानक बिन आपा चीने मिटे न भ्रमकी काई ॥ ११३ ॥

साधो यह जग भर्म भुलना ॥ राम नाम का सिमरन छोड्या माया हाथ बिकाना ॥ मात पिता भाई सुत वनिता ताके रस लपटाना ॥ यौवन धन प्रभुताके मदमें अहनिशि रहे दिवाना ॥ दीन दयाल सदा दुखभंजन तामों मन न लगाना ॥ जन नानक कोटिनमें किनहूं गुरुमुख होय पछाना ॥ ११४ ॥

तिहिं योगी को जुगत न जानो ॥ लोभ मोह माया ममता पुनि जिहिं घट मोहिं पछानो ॥ परनिंदा स्तुति नहीं जाके कंचन लोह समानो ॥ हर्ष शोक ते रहे अतीता योगी ताहि बखानो ॥ चंचल मन दह दिशको धावत अचल जाहि ठहरानो ॥ कह नानक यह विधि को जो नर मुक्त ताहि तुम मानो ॥ ११५ ॥

दिनते पहर पहरते घडियां आयु घटे तन छीजे ॥ काल अहेरी फिरे वधिक ज्यों कहो कवन विधि कीजे॥सो दिन आवन लागा ॥ मात पिता भाई सुत वनिता कहो कोउ है है कांका ॥ जबलग जोति कायामें बरतें आपा पशू न बूझे ॥ लालच करे जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझे ॥ कहत कबीर सुनो रे प्राणी छोडो मनके भरमा॥केवल नाम जपो रे प्राणी परो एक की शरणा ११६॥

जो जन भाव भक्ति कछु जानै ताको अचरज काहो ॥ ज्यों जल जल में पैठ न निकसै त्यों ढुर मिल्या जुलाहो ॥ हरिके लोगा मैं तो मंतिका भोरा ॥ जो तन काशी तजहि कबीरा ॥ रमैये कहा निहोरा ॥ कहत कबीर सुनो रे लोई ॥ भर्म न भूलो कोई ॥ क्या काशी क्या ऊखर मगहर राम हृदय जो होई ॥ ११७ ॥

इन्द्रलोक शिवलोकहिं जैवो ॥ ओछे तप कर बाहर ऐवो ॥ क्या मांगों कछु थिर नाहीं ॥ राम नाम राख मनमाहीं ॥ शोभा राज विभव बडियाई ॥ अंत न काहू संग सहाई ॥ पुत्र कलत्र लक्ष्मी माया ॥ इनते कहु कवने सुख पाया ॥ कहत कबीर अवर नहिं कामा ॥ हमरे मन धन रामको नामा ॥ ११८ ॥

गहरी करके नीव खुदाई ऊपर मंडप छाये ॥ मार्कंडेय ते को अधिकाई जिन तृण धर मूंड बलाय ॥ हमरो करता राम सनेही ॥ काहे रे नर गरब करतहो बिनशि जाय झूंठी देही ॥ मेरी मेरी कौरव करते दुर्योधन सो भाई ॥ बारह योजन छत्र चले था देही गिरजन खाई ॥ सर्व सोनेकी लंका होती रावण से अधिकाई ॥ कहा भयो दर बांधे हाथी क्षणमें भई पराई ॥ दुर्वासासों करत ठगौरी यादव यह फल पाये ॥ कृपा करी जन अपने ऊपर नामदेव हरि गुण गाये ॥ ११९ ॥

हमसर दीन दयाल न तुम सर अब पतिआर क्या कीजे ॥ बचनी तोर मोर मन मानै जनको पूरन दीजे ॥ हौं बल बल जाउ रमैया कारने ॥ कारन कवन अबोल ॥ बहुत जन्म बिछुरे थे माधव यह जन्म तुम्हारे लेखे ॥ कह रामदास आश लग जीवो चिर भयो दर्शन देखे ॥ १२० ॥

धूप दीप घृत साज आरती ॥ वारने जाउँ कमलापति ॥ मंगला हरि मंगला ॥ राजा नित मंगल रामराय को ॥ उत्तम

दियरा निर्मल वाती ॥ तुही निरंजन कमलापाती ॥ रामा भगति रामानंद जानै ॥ पूरन परमानंद बखानै ॥ मदन मूरति भयतार गोविंदे ॥ सैन भणे भज परमानंदे ॥ १२१ ॥

कायो देवा कायो देवल कायो जंगम जाती ॥ कायो धूप दीप नैवेदा कायो पूजों पाती ॥ काया बहु खंड खोजते नव निधि पाई ॥ ना कछु आयबो ना कछु जायबो रामकी दुहाई ॥ जो ब्रह्मंड सोई पिंड जो खोजै सो पावै ॥ पीपा प्रणवै परमतत्त्व है सतगुरु होय लखावै ॥ १२२ ॥

राग जैतश्री ।

मन रे सांचा गहो विचारा ॥ राम नाम बिन मिथ्या मानो सगरो यह संसारा ॥ जाको योगी खोजत हारे पायो नहिं तिहिं पारा ॥ सो स्वामी तुम निकट पछानो रूप रेख ते न्यारा ॥ पावन नाम जगतमें हरि को कबहूं नाहिं सँभारा ॥ नानक शरण परचो जग बंदन राख्यो बिरद तिहारा ॥ १२३ ॥

नाथ कछुअ न जानो ॥ मन मायाके हाथ बिकानो ॥ तुम कहियतहो जगत गुरु स्वामी ॥ हम कहियत कलियुगके कामी ॥ इन पंचन मेरो मन जो बिगारचो ॥ पल पल हरि जीते अंतर पारचो ॥ जत देखौं तत दुखकी रासी ॥ अजहुं न पतियाय निगम भये साखी ॥ गौतम नारि उमापति स्वामी ॥ शीश धरनि सहस भग गामी ॥ इन दूतन खलबध कर मारचो ॥ बडो निलाज अजहुँ नहिं हारचो ॥ कह रामदास कहा कैसे कीजे ॥ बिन रघु-नाथ शरण काकी लीजे ॥ १२४ ॥

राग टोडी ।

धायो रे मन दह दिशि धायो । माया मगन स्वाद लोभ मोह्यो तिन प्रभु आप भुलायो ॥ हरि कथा हरि यश साधु संगत

सो इक मुहूर्त न यह मनलायो ॥ विगरचो पेख रंग कसुंभको पर गृह जोहन जायो॥चरणकमलसीं भाव न कीनो नहीं सतपुरुष मनायो ॥ धावतको धावहि बहु भांती ज्यों तेली वृषभ भ्रमायो ॥ नाम दान अस्नान न कीयो इक निमिष न कीरति गायो ॥ नाना झूँठ लाय मन तोष्यो नहिं बूझ्यो अपनायो ॥ पर उपकार न कबहूँ कीये नहिं सतगुरु सेव ध्यायो ॥ पंच दूत रच संगत गोष्ठी मतवारो मद मायो ॥ करों वीनती साधु संगत हरि भगत वच्छल सुन आयो ॥ नानक भाग पर्‌यो हरि पाछे राख लाज अपनायो ॥ १२५ ॥

माँगौं दान ठाकुर नाम ॥ अवर कछु मेरे सँग न चाले मिलै कृपा गुण ग्राम ॥ राज माल अनेक भोग रस सकल तरुवर की छाम ॥ धाय २ बहु विधिको धावै सकल निरारथ काम ॥ विन गोविंद अवर जे चाहों दीसै सकल बात हैं खाम ॥ कहु नानक सत रेणु मांगों मेरो मन पावै विश्राम ॥ १२६ ॥

कहों कहा अपनी अधमाई । उरझ्यो कनक कामिनीके रस नहिं कीरति प्रभु गाई ॥ जग झूँठेको साँच जनके तासों रुचि उपजाई ॥ दीनबंधु सुमिर्‌यो नहिं कबहू होत जो संग सहाई ॥ मगन रह्यो मायामें निशिदिन छुटी न मनकी काई ॥ कह नानक अब नाहिं अनत गति विन हरिकी शरनाई ॥ १२७ ॥

राग तिलंग ।

यक अर्ज गुफतम पेश तो दर गोश कुन करतार ॥ हक्का कबीर करीम तू बेऐब परवर दिगार ॥ दुनिया मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥ मम सर मू ईजराईल गीरिफ्तह दिल हेच नादानी ॥ जन पिसर पिदर बिरादरां कस नेस्त दस्तंगीर ॥ आखिर बिफफ्तम कस नदारद चूं शबद तकबीर ॥ शब रोज गश्तम दर हवा करदेम

बदी ख्याल ॥ गाहे न नेकी कार करदम् गम ईंचुनी अहवाल ॥ बद बख्त हराचू बखील गाफिर बेनजर बेबाक ॥ नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पा खाक ॥ १२८ ॥

चेतनाहै तो चेतले निशिदिनमें प्रानी ॥ छिन छिन अवध बिहात है फूटे घट ज्यों पानी ॥ हरि गुनि काहे न गावही मूरख अज्ञाना ॥ झूंठ लालच लागके नहिं मर्म पछाना ॥ अजहूं कछु बिगरयो नहीं जो प्रभु गुन गावै ॥ कहु नानक तिहिं भजन ते निरभय पद पावै ॥ १२९ ॥

मैं अंधले की टेक तेरा नाम खुदकारा॥मैं गरीब मैं मिस कीन तेरा नाम है अधारा ॥ करीमा रहीमा अलाह तू गनी ॥ हाजरा हजूर दरपेश तो मनी ॥ दरियाउ तू दिहंद तू बिस्यार तू धनी ॥ देहि लेहि एक तू दिगर को नहीं ॥ तू दाना तू बीना मैं बीचार क्या करी ॥ नामे चे स्वामी बखशिंद तू हरी ॥ १३० ॥

हले यारां हले यारां खुश खबरी ॥ बलबल जाउं रहीं बलबल जाउं ॥ नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउं॥ कुजा आमद कुजा रफती कुजा मेरवी ॥ द्वारका नगरी रास्ता बुगोई ॥ खूब तेरी पगरी मीठे तेरे बोल ॥ द्वारका नगरी काहेके मगोल ॥ चंदी हजार आलम एक लखाना ॥ हमचुनी पानशाह सांवले बरना॥ अश्वपति गजपति नरह नरिंद॥नामे के स्वामी मीर मुकुंद १३१॥

राग सूही।

नीच जाति हरि जपत्यां उत्तम पदवी पाय ॥ पूछो बिदुर दासी सुतहि कृष्ण उतारया घर जिस जाय॥हरिकी अकथ कथा सुनों जन भाई जित संशय दूख भूक सब लहजाय ॥ रामदास चमार अस्तुति करे हरि कीरति निमिष इक गाय ॥ पतित जाति

उत्तम भया चार वर्ण परे पग आय ॥ नामदेव प्रीति लगी हरिसेती लोक छीपा कहे बुलाय ॥ क्षत्री ब्राह्मण पीठ दै छोडे हरि नामदेव लिया मुख लाय ॥ जितने भगत हरि सेवका मुख अडसठ तीर्थ तिन तिलक कढाय ॥ जन नानक तिनको अनुदिन परसे जे कृपा करे हरिराय ॥ १३२ ॥

बाजीगर जैसे बाजीपाई ॥ नानारूप भेष दिखलाई ॥ स्वांग उतार थंभ्यो पासारा ॥ तब एको एकंकारा ॥ कवन रूप दृष्ट्यो कवन शायो ॥ कतहिं गयो वह कतते आयो ॥ जलते उठहि अनीक तरंगा ॥ कनक विभूषण कीने बहु रंगा ॥ बीज ते जो देख्यो बहु प्रकारा ॥ फल पाके ते एकंकारा ॥ सहस घटामें एक अकाश ॥ घटफूटते वही प्रकाश ॥ भ्रम लोभ मोह माया विकारा ॥ भ्रम छूटते एककारा ॥ वह अविनाशी विनशत नाहीं ॥ नाको आवै नाको जाहीं ॥ गुरु पूरे हौं मैं मल धोई ॥ कहु नानक मेरी परमगति होई ॥ १३३ ॥

सेवा थोरी मांगन बहुता ॥ महल न पावै कहतो पहुता ॥ जो प्रिय मानें तिनकी रीसा ॥ कूडे मूरख की हाठीसा ॥ भेष दिखावै सच न कमावै ॥ कहतो महलो निकट न आवै ॥ अतीत सदा ये मायाका माता ॥ मन नहीं प्रीत कहै मुखराता ॥ कहु नानक प्रभु विनय सुनीजे ॥ कुचल कठोर कामी मुक्त कीजे ॥ १३४ ॥

बुरे कामको उठ खलोया ॥ नामकी वेला पैंपै सोया ॥ अवसर अपना बूझे न अयाना ॥ माया मोह रंग लपटाना ॥ लोभ लहर को बिकस फूल बैठा ॥ साधु जनांका दर्शन डीठा ॥ कबहूं न समझे अज्ञान गँवारा ॥ बहुर बहुर लपट्यो जंजारा ॥ विषय नाद करण सुन भीना ॥ हरियश सुनत आलस मन कीना ॥

दृष्टि नाहीं रे पेखत अंधे ॥ छोड जाहिं झूठे सब धंधे ॥ कहु नानक प्रभु बखस करीजै। कर किरपा मोहिं साधु संग दीजै ॥ तौ कछु पाइये जो होइये रेना ॥ जिसहि बुझाये तसनाम लेना॥ १२५॥

कवन काज माया बडियाई ॥ जाको बिनशत वार न काई ॥ यह सुपना सोवत नहिं जानै ॥ अचेत व्यवस्था में लपटानै ॥ महामोह मोह्यो गवाँरा ॥ पेखत पेखत ऊठ सिधारा ॥ ऊँच ते ऊँच ताका दरबारा ॥ कई जंतु बिनाहि उपारा ॥ दूसर होया ना कोई होई ॥ जप नानक प्रभु एको सोई ॥ १२६ ॥

सुमिर सुमिर ताको हौं जीवा ॥ चरणकमल तेरे धोय धोय पीवा ॥ सो हरि संग अंतरयामी ॥ भगत जनांके संग स्वामी ॥ सुन सुन अमृत नाम ध्यावां ॥ आठ पहर तेरे गुण गावां ॥ पेख पेख लीला मन आनंदा ॥ गुण अपार प्रभु परमानंदा ॥ जाके सिमरन कछु भय न व्यापे ॥ सदा सदा नानक हरि जापे ॥ १२७॥

भली सुहावी छापरी जामें गुण गाये ॥ कितहीं काम न धौलहर जित हरि बिसराये ॥ अनंद गरीबी साधुसंग जित प्रभु चित आये ॥ जल जाउ एह बडपना माया लपटाये ॥ पीसत पीस ओढ़ कामरी सुख मन सन्तोपाये ॥ ऐसो राज न किते काज जिन नहिं तृपताये ॥ नग्न फिरत संग एकके ओह शोभा पाये ॥ पाटपटंबर बिरथिया जिहि रच लोभाये ॥ सब कछु तुम्हारे हाथ प्रभु आप करे कराये ॥ सास सास सिमरत रहां नानक दान पाये ॥ १२८ ॥

संताके कारज आप खलोया हरि कम्म करावन आया राम ॥ धरति सुहावी ताल सुहावा विच अमृत जल छाया राम ॥ अमृतजल छाया पूरन साज कारया सकल मनोरथ पूरे॥जैजैकार भया जग अंतर लाथे सकल बसूरे॥पूरन पुरुष अच्युत अविनाशी

यश वेद पुरणों गाया ॥ अपना विरद रख्या परमेश्वर नानक नामहि ध्याया ॥ १३९ ॥

अवतर आंय कहा तुम कीना ॥ राम को नाम न कबहूं लीना ॥ राम न जपो कवन मतिलागे ॥ मरजैबेको क्या करो अभागे ॥ दुख सुख करके कुटुम्ब जिवाया ॥ मरती बार इकसर दुख पाया ॥ कंठ गहन तब करन पुकारा ॥ कह कबीर आगे ते न सँभारा ॥ १४० ॥

अमल सिरानो लेखा देना ॥ आये कठिन दूत यम लेना ॥ क्या तैं खट्या कहां गवांया ॥ चलो शताब दिवान बुलाया ॥ चल दरहाल दिवान बुलाया ॥ हरि फरमान दरगह का आया ॥ करो अरदास गाव कछु बाकी ॥ लेहु निबेर आजकी राती ॥ कछु भी खर्च तुम्हारा सारो ॥ सुबह नमाज सराय गुजारो ॥ साधु संग जाको हरि रँग लागा ॥ धनि धनि सो जन पुरुष सभागा ॥ इतऊत जन सदा सुहेले ॥ जन्म पदारथ जीत अमोले ॥ जागत सोया जन्म गवांया ॥ माल धन जोर्‍या भया पराया ॥ कहु कबीर तेई नर भूले ॥ खसम बिसार माटी सँग रूले ॥ १४१ ॥

जो दिन आवे सो दिन जाहीं ॥ करना कूच रहन थिर नाहीं ॥ संग चलत हैं हमभी चलना ॥ दूर गमन शिर ऊपर मरना ॥ क्या तू सोया जाग अयाना ॥ तैं जीवन जग सच कर जाना ॥ जिन जिउ दिया सो रिजक अँबरावै ॥ सब घट भीतर हाट चलावै ॥ कर बंदगी छाँड मैं मेरा ॥ हिरदय नाम सम्हार सवेरा ॥ जन्म सिरानो पंथ न सवाँरा ॥ सांझ परी दह दिशि अँधियारा ॥ कह रामदास निदान दिवाने ॥ चेतत नहिं दुनियां फनखाने ॥ १४२ ॥

ऊंचे मंदिर साल रसोई ॥ एक घरी पुनि रहन न होई ॥ यह तन ऐसा जैसे घासकी टाटी॥जल गयो घास रल गयो माटी॥ भाई बंधु कुटुम्ब सहेरा ॥ वहभी लागे काढ़ सवेरा ॥ घरकी नारि वह रहे तन लागी ॥ वह तो भूत भूत कर भागी ॥ कह रामदास सभी जग लूटचा ॥ हो तो एक राम कह छूटचा ॥ १४३ ॥

राग विलावल ।

मनमें सिंचो हरि हरि नाम ॥ अनुदिन कीर्तन हरि गुण ग्राम॥ ऐसी प्रीति करो मन मेरे ॥ आठ पहर प्रभु जानो नेरे॥कह नानक जाके निर्मल भाग ॥ हरि चरनां तांका मन लाग ॥ १४४ ॥

तातो वाउ न लागई पारब्रह्म शरनाई॥चौगिरद हमारे राम कार दुख लगे न भाई॥सतगुरु पूरा भेटचा ॥ जिन बनत बनाई॥ राम नाम औषध दीया एका लव लाई॥राख लिये तिन रखन हार सब व्याधि मिटाई॥कह नानक कृपा भई प्रभु भये सहाई ॥ १४५ ॥

प्रभुजी तूं मेरे प्राण अधारे ॥नमसकार डंडौत वंदना अनिक बार जाऊँ बलिहारे ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत यह मन तुझ चितारे॥सुख दूख इस मनकी बिरथा तुझकी बिरथा तुझही आगे सारे ॥ तूं मेरी ओट बल बुद्धि धन तुमहीं तुमहीं मेरे प्रवारे ॥ जो तुम करो सोइ भल हमरे पेख नानक सुख चरना रे ॥ १४६ ॥

दुख हरता हरि नाम पछानो ॥ अजामील गनिका जिहि सिमरत मुक्त भये जिय जानो ॥ गजकी त्रास मिटी छिनहूमें जबहीं राम बखानो॥नारद कहत सुनत ध्रुव बालक भजन माहि लपटानो॥अचल अमर निरभय पद पायो जगत जाहि हैरानो॥ नानक कहत भगत रक्षक हरि निकट ताहि तुम मानो ॥१४७॥

हरिके नाम बिना दुख पावे ॥ भगति बिना संशय नाहिं छूटै गुरु यह भेद बतावे॥कहा भयो तीरथ व्रत कीये रामःशरण नाहि

आवै ॥ योग यज्ञ निष्फल तिहिं मानो जो प्रभु यश बिसरावै ॥ मान मोह दोनोंको परिहारि गोविंदके गुण गावै ॥ कह नानक यहि विधि को प्राणी जीवनमुक्त कहावै ॥ १४८ ॥

जामें भजन राम को नाहीं ॥ तिहिं नर जन्म अकारथ खोयो यह राखो मनमाहीं ॥ तीरथ करै व्रत पुनि राखै नहिं मनुआ वश जाको ॥ निष्फल धर्म ताहि तुम मानो साँच कहत मैं याको ॥ जैसे पाहन जलमें राख्यो भेदै नाहिं तिहि पानी ॥ तैसेही तुम ताहि पछानो भगतिहीन जो प्रानी ॥ कलिमें मुक्ति नाम ते पावत गुरु यह भेद बतावै ॥ कह नानक सोइ नर गुरुवा जो प्रभु के गुण गावै ॥

ऐसे यह संसार पेखना रहन न कोऊ पइहै रे ॥ सूधे सूधे रेंग चलो तुम नतरक धका दिवइहै रे ॥ बारे बूढे तरुने भैया सबहूं यम लै जइहै रे ॥ मानस बपुरा मूसा कीनो मीच बिलैया खइहै रे ॥ धनवन्ता अरु निरधन मनई ताकी कछू न कानी रे ॥ राजा परजा सम कर मानै ऐसो काल बडानी रे ॥ हरिके सेवक जो हरि भाये तिनकी कथा निरारी रे । आवहिं जाहिं न कबहूं मरते पारब्रह्म संगारी रे ॥ पुत्र कलत्र लक्ष्मी माया इहै तजहु जियजानी रे ॥ कहत कबीर सुनो रे संतहु मिलिहैं शारंगपानी रे ॥ १४९ ॥

विद्या न पढों वाद नहिं जानों ॥ हरि गुण कथत सुनत बौरानों ॥ मेरे बाबा मैं बौरा सब खलक स्यानी मैं बौरा ॥ मैं बिगरयो बिगरै नति औरा ॥ आपन बौरा राम कियो बौरा ॥ सतगुरु जारि गयो भ्रम मोरा ॥ मैं बिगरे अपनी मति खोई ॥ मेरे भर्म भूलो मत कोई ॥ सो बौरा जो आप न पछानै ॥ आप पछानै तो एकै जानै ॥ अबहिं न माता सो अरु कबहूं न माता ॥ कह कबीर रामहिं रंग राता ॥ १५० ॥

गृह तज वनखंड जाइये चुन खाइये कंदा ॥ अजहूँ विकार न छोडई पापी मन मंदा ॥ क्यों छूटो कैसे तरों भव जलनिधि भारी ॥ राख राख मेरे बीठुला जन शरण तुम्हारी ॥ विषय विषयकी वासना तजी नहिं जाई ॥ अनिक यतन कर राखिये फिर फिर लपटाई ॥ जरा जीवन यौवन गया कछु किया न नीका ॥ यह जियरा निरमोलको कौडीलग मीका ॥ कह कबीर मेरे माधवा तूं सर्वव्यापी ॥ तुम समसर नाहीं दयाल मोहिं सम सर पापी ॥ १५१ ॥

नित उठ कोरी गागर आने लीपत जीउ गयो ॥ ताना बाना कछू न सूझै हरि हरि रस लपट्यो ॥ हमारे कुल कौने राम कह्यो ॥ जबकी माला लई निपूते तबते सुख न भयो ॥ सुनहु जिठानी सुनहु दिरानी अचरज एक भयो ॥ सात सूत इन मुडिये खोये यह मुडिया क्यों मुयो ॥ सर्व सुखांका एक हरि स्वामी सो गुरु नाम दियो ॥ संत प्रहलादकी पैज जिन राखी हरनाकुश नख बिदर्यो ॥ घरके देव पितर को छोडी गुरुको शब्द लियो ॥ कहत कबीर सकल अघखंडन संतहिं ले उधर्यो ॥ १५२ ॥

राखि लेहु हमते बिगरी ॥ शील धर्म जप भगति न कीनी हौं अभिमान टेढ पगरी ॥ अमर जान संची यह काया यह मिथ्या काची गगरी ॥ जिनहिं निवाज साज हम कीये तिनहिं बिसार अवर लगरी ॥ संधिकि तोहि साध नहिं कहियो शरण परे तुमरी पगरी ॥ कह कबीर यह बिनती सुनियो मत घालो यमकी खबरी ॥ १५३ ॥

दारिद देख सबकोय हँसै ऐसी दशा हमारी ॥ अष्टादश सिद्धि करतले सब कृपा तुम्हारी ॥ तूं जानत मैं कछु नहीं भव खंडन राम ॥ सकल जीवन शरणागती प्रभु पूरण काम ॥ जो तेरी शर-

णागती तिन नाहीं भार ॥ ऊँच नीच तुमते तरे आल जु संसार ॥ कह रामदास अकथ कथा बहु काय करीजै ॥ जैसा तू तैसा तुहीं क्या उपमा दीजै ॥ १५४ ॥

जिहि कुल साधु वैष्णव होय ॥ वर्ण अवर्ण रंक नहिं ईश्वर विमल वास जानिय जग सोय ॥ ब्राह्मण वैश्य शूद्र अरु क्षत्रिय डोम चंडाल मलेच्छ मन सोय ॥ होय पुनीत भगवंत भजन ते आप तार तारे कुल दोय ॥ धन्य सो गाउँ धन्य सो ठाउँ धन्य पुनीत कुटम्ब सब लोय ॥ जिन पीया सार रस तजे आन रस होय रस मगन डारे विष खोय ॥ पंडित शूर छत्रपति राजा भगत बराबर और न कोय ॥ जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनत रामदास जन्में जग ओय ॥ १५५ ॥

नृप कन्याके कारने इक भयो भेष धारी ॥ कामारथी स्वारथी वाकी पैज सवारी ॥ तव गुण कहा जगत गुरु जो कर्म न नासै ॥ सिंह शरण कह जाइये जो जंबुक ग्रासै ॥ एक बून्द जल कारने चातक दुख पावै ॥ प्राण गये सागर मिले पुनि काम न आवै ॥ प्राण जो थाके थिर नहीं कैसे बिरमावो ॥ बूडमुये नौका मिले कहु काहि चढावो ॥ मैं नाहीं कछु हौं नहीं कछु आहि न मोरा ॥ औसर लज्जा राखलेहु सधना जन तोरा ॥ १५६ ॥

राग गौड ।

निमाने को जो देतो मान ॥ सकल भूँखे को करतो दान ॥ गरभ घोरमें राखनहार ॥ तिस ठाकुरको सदा नमस्कार ॥ ऐसो प्रभु मन माहिं ध्याय ॥ घट अवघट जत कतहिं सहाय ॥ रंक राउ जाके एक समान ॥ कीट हस्ती सकल पूरन ॥ बीयो पूछ न मसलत धरै ॥ जो कछु करै सो आपहिं करै ॥ जाका अंत न जानै कोय आये। आप निरंजन सोय ॥ आप अकार आप निरंकार ॥

घट घट घट सब घट आधार ॥ नाम रंग भगत भये लाल ॥ जस करते संत सदा निहाल ॥ नाम रंग जन रहे अघाय ॥ नानक तिन जन लागै पाय ॥ १८७ ॥

गुरुकी मूरत मनमें ध्यान ॥ गुरुके शब्द मंत्र मन मान ॥ गुरुके चरण हिरदै लै धारो ॥ गुरुपारब्रह्म सदा नमसकारो॥मत को भ्रम भूलै संसार ॥ गुरु बिन कोय न उतरत पार ॥ भूलेको गुरु मारग पाया ॥ अवर त्याग हरि भगती लाया ॥ जन्म मरण की त्रास मिटाई ॥ गुरु पूरे की बे अंतबड़ाई ॥ गुरुप्रसाद ऊरध कमल बिकास ॥ अंधकारमें भया प्रकाश ॥ जिन किया सो गुरु ते जान्या ॥ गुरु कृपाते मुगध मन मान्या ॥ गुरु करता गुरु करने योग्य॥गुरु परमेश्वर है भी होग ॥ कह नानक प्रभु यही जनाई॥ बिन गुरु मुक्ति न पाइये भाई ॥ १८८ ॥

राम नाम संग कर व्योवहार ॥ राम राम राम प्राण अधार ॥ राम राम राम कीर्तन गाय ॥ रमत राम सब रह्यो समाय ॥ संत जनां मिल बोलो राम ॥ सबते निरमल पूरण काम ॥ राम राम धन संच भँडार ॥ राम राम राम कर अहार ॥ राम राम बीसर नहीं जाय ॥ कर किरपा गुरु दियो बताय ॥ राम राम राम सदा सहाय ॥ राम राम राम लव लाय ॥ राम राम जप निर्मल भये ॥ जन्मजन्म के किल्बिष गये ॥ रमत राम जन्म मरन निवारै ॥ उचरत राम भय पार उतारै ॥ सभते ऊँच राम परकास ॥ निशि-बासर जप नानक दास ॥ १८९ ॥

अचरज कथा महा अनूप ॥ परमात्मा पारब्रह्मका रूप ॥ ना यह बूढा ना यह बाला ॥ ना इस दूख नहीं यमजाला ॥ ना यह बिनशै ना यह जाय ॥ आद जुगादी रह्या समाय ॥ ना इस उष्ण नहीं इस शीत ॥ ना दुशमन ना इस मीत ॥ ना इस हर्ष नहीं

इस शोग ॥ सभ कछु इसका यह करने योग ॥ ना इस बाप नहीं इस माया ॥ इह अपरंपर होता आया ॥ पाप पुण्य का इस लेप न लागै ॥ घट घट अंतर सदही जागै ॥ तीन गुणां इक शक्ति उपाया ॥ महामाया ताकी है छाया ॥ अछल अछेद अभेद दयाल ॥ दीनदयाल सदा कृपाल ॥ ताकी गति मित कछु न पाय ॥ नानक ताके बलबल जाय ॥ १६० ॥

संत मिलै कछु सुनिये कहिये ॥ मिले असंत मष्ट कर रहिये ॥ बाबा बोलना क्या कहिये ॥ जैसे राम नाम रम रहिये ॥ संतन सों बोले उपकारी ॥ मूरखसों बोले झखमारी ॥ बोलत बोलत बढै विकारा ॥ बिन बोले क्या करै विचारा ॥ कह कबीर छूछा घट बोलै ॥ भरया होय सो कबहुँ न डोलै ॥ १६१ ॥

नरू मरै नर काम न आवै ॥ पशू मरै दश काज सवाँरै ॥ अपने कर्मकी गति मैं क्या जानों मैं क्या जानों बाबा रे ॥ हाड जलै जैसे लकरी का तूला ॥ केश जलै जैसे घासका तूला ॥ कहत कबीर तबहीं नर जागै ॥ यम का डंड मूंडमें लागै १६२॥

भजा बांध भिला कर डारयो॥हस्ती कोप मूड महिमा रह्यो॥ हस्ती भागके चीसां मारै ॥ या मूरत के हौं बलिहारै ॥ आहि मेरे ठाकुर तुमरा जोर ॥ काजी बकवो हस्ती तोर ॥ रे महावत तुझ डारों काट ॥ इसहि तुरावहु घालो साट ॥ हस्तन तोरै धरै ध्यान ॥ वाके हिरदय बसै भगवान॥क्या अपराध संतहै कीना ॥ बांध पोट कुंजर को दीना ॥ कुंजर पोट लैलै नमसकारै ॥ बूझी नहीं काजी अँध्यारै ॥ तीन बार पतीया भरलीना ॥ मन कठोर अजहूं न पतीना ॥ कह कबीर हमरा गोबिंद ॥ चौथे पदमें जनकी जिंद ॥ १६३ ॥

ना इह मानुस ना इह देउ ॥ ना इह यती कहावै सेउ ॥ ना इह योगी ना अवधूता ॥ ना इस माय न काहू पूता ॥ या मंदिर में कौन बसाई ॥ ताका अंत न कोऊ पाई ॥ ना इह गिरही नाहिं उदासी ॥ ना इह राज न भीख मँगासी ॥ ना इस पिंड न रकतू राती ॥ ना इह ब्राह्मण ना इह खाती ॥ ना इह तपा कहावै शेख ॥ ना इह जीवै न मरता देख ॥ इस मरने को जो कोउ रोवै ॥ जो रोवै सोई पति खोवै ॥ गुरु प्रसाद मैं डगरो पाया ॥ जीवन मरन दोऊ मिटवाया ॥ कहु कबीर इह रामकी अंस ॥ जस कागद पर मिटै न मंस ॥ १६४ ॥

अश्वमेध यगने ॥ तुलापुरुष दाने ॥ प्राग अस्नाने ॥ तौ न पुंजहिं हरि कीरती नामा ॥ अपने रामहिं भज रे मन आलसि या ॥ गयो पिंड भरता बनारस असि बसता ॥ मुख वेद चतुर पढ़ता ॥ सकल धर्म अछिना ॥ गुरु ज्ञान इंद्री दृढ़ता ॥ षट्कर्म सहित रहता ॥ शिवा शक्ति सवाद ॥ मन छोड़ छोड़ सकल भेद ॥ सिमर सिमर गोविंदं ॥ भज नामा तरसि भवं ॥ १६५ ॥

नाद भ्रमे जैसे मिरगाये ॥ प्राण तजे वाको ध्यान न जाये ॥ ऐसे रामा ऐसे हेरों ॥ राम छोड चित अनत न फेरों ॥ ज्यों मीना हेरै पशुआरा ॥ सोना गढते हेरै सुनारा ॥ ज्यों विषयी हेरै परनारी ॥ कौडी डारत हिरै जुआरी ॥ जहिं जहिं देखों तहिं तहिं रामां ॥ हरिके चरण नित ध्यावै नामां ॥ १६६ ॥

मोको तारले रामा तारले ॥ मैं अजान जन तरबे न जानों बाप बीठुला बांहिदे ॥ नर ते सुर होयजात निमिषमें सतगुरु बुध सिखलाइ ॥ नरते उपज स्वर्गको जीत्यो सो औषध मैं पाई ॥ जहां जहां ध्रुव नारद टेके नेके टिकावो मोहिं ॥ तेरे नाम अवलंब बहुत जन उधरे नामेंकी निज मति इह ॥ १६७ ॥

हरि हरि करत मिटे सब भर्मा ॥ हरि को नाम लै उत्तम धर्मा ॥ हरि हरि करत जाति कुल हरी ॥ सो हरी अंधले-की लाकरी ॥ हरये नमस्ते हरये नमः ॥ हरि हरि करत नहीं दुख यमः ॥ हरि हरनाकुश हरे ॥ प्राण अजामिल कीयो वैकुंठहि थान ॥ सुआ पढावत गनिका तरी ॥ सो हरि नैनों-की पूतरी ॥ हरि हरि करत पूतना तरी ॥ बाल घातनी कपट हि भरी ॥ सिमरन द्रौपद सुता उद्धरी ॥ गौतम सती शिला निस्त-री॥केशी कंस मथन जिन कीया ॥ जीय दान कालीको दीया ॥ प्रणवै नामा ऐसो हरी ॥ जासु जपत भय अपदा टरी ॥ १६८ ॥

जे ओह अडसठ तीरथ न्हावै ॥ जे ओह द्वादश शिला पुजावै॥ जे ओह कूप तटा देवावै ॥ करे निंद सब बिरथा जावै ॥ साधु-का निंदक कैसे तरे ॥ सरपर जानो नरकहि परे ॥ जे वह ग्रहण करै कुरुखेत ॥ अरपै नारि शृङ्गार समेत ॥ सकली सिमृति श्रणी सुनै ॥ करै निंद कवनै नहा गुनै ॥ जे ओह आनक प्रसाद करावै ॥ भूमिदान शोभा मडप पावै ॥ अपना बिगार बिराना सांढै ॥ कर निंदा बहु योनी हांढै ॥ निन्दा कहा करो संसारा ॥ निंदक का परगट पाहारा ॥ निन्दक शोध साधु बीचारचा ॥ कहु रामदास पापी नर्क सिधारचा ॥ १६९ ॥

राग रामकली।

चार पुकारहि ना तू मानहि ॥ षट भी एका बात बखानहि ॥ दस अष्टी मिल एको कह्या ॥ तौ भी योगी भेद न लह्या ॥ किंगुरी अनूप बाजे ॥ योगीया मतवारो रे ॥ प्रथमे वस्या सतका खेडा ॥ तृतीये में कछु भया दुतेडा ॥ दुतीया अरधो अरध समाया ॥ एक रह्या तो एक दिखाया ॥ एकै सूत परोये मणिये ॥ गांठी भिन भिन भिन भिन तणिये ॥ फिरती माला बहु विधि भया ॥

खिच्या सूत तो आई थाय ॥ चहुँमें एकै मट है किया ॥ नाहि बिखडे थान अनिक खिडकिया ॥ खोजत खोजत द्वारे आया ॥ तौ नानक योगी महल घर पाया ॥ १७० ॥

कौडी बदले त्यागै रतन ॥ छोड जाय ताहूं का यतन ॥ सो संचय जो होछी बात ॥ माया मोह्या टेढा जात ॥ अभागे तैं लाज नाहीं ॥ सुखसागर पूरन परमेश्वर हरि न चेत्यो मनमाहीं ॥ अमृत कौडा विषया मीठी ॥ शाकतकी विधि नैनै डीठी ॥ कूड कपट अहंकार रिझाना ॥ नाम सुनत जनु बिछू डसाना ॥ माया कारन सदही झूरै ॥ मनमुख कबहु न अस्तुति करै ॥ निर्भय निरंकार दातार ॥ तिससों प्रीति न करै गवाँर ॥ सब साहाँ शिर साचाँ साह ॥ बेमुहताज पूरा पातसाह ॥ मोह मगन लपट्यो भ्रम गिहरे ॥ नानक तरिये तेरी मिहरे ॥ १७१ ॥

गऊ को चारे शारदूल ॥ कौडी का लख हुआ मूल ॥ बकरीको हस्ती प्रतिपाले ॥ अपना प्रभु नदर निहाले॥कृपानिधान प्रीतम प्रभु मेरे ॥ वर्ण न साकों बहु गुण तेरे॥दीसत मोसन खाय बिलाई ॥ महा कसाब छुरी सटपाई ॥ करनहार प्रभु हिरदय बूठा ॥ फाथी मछलीका जाला तूटा ॥ सूखे काष्ठ हरे चलूल ॥ ऊंचे थल फूले कमल अनूप ॥ अग्नि निवारे सतगुरु देव ॥ सेवक अपनी लायो सेव ॥ किरत धनाका करे उधार ॥ प्रभु मेरा है सदा दियार ॥ संतजनाका सदा सहाई ॥ चरण कमल नानक शरणाई॥१७२॥

रे मन ओट लेहु हरिनामा॥जाके सुमिरन दुरमति नाशै पावहिं पद निरवाना ॥ बडभागी तिहि जनको जानो जो हरिके गुण गावै ॥ जन्म जन्मके पाप खोयकै पुनि बैकुंठ सिधावे ॥ अजामिलको अंतकालमें नारायण सुधि आई ॥ जा गतिको योगीश्वर वांछत सो गति छिनमें पाई॥ नाहिंन गुण नाहिंन कछु विद्या धर्म

कौन गज कीना ॥ नानक बिरद रामका देखो अभयदान तिहि दीना ॥ १७३ ॥

साधो कौन जुगत अब कीजै ॥ जाते दुर्मति सकल विनाशै राम भगति मन जीजै ॥ मन मायामें उरझ रह्योहै बूझे नहिं कछु ज्ञाना ॥ कौन नाम जग जाके सिमरे पावै पद निरबाना ॥ भय दयाल कृपाल सन्तजन तब इह बात बताई ॥ सर्व धर्म मानो तिहिं कीयं जिहिं प्रभु कीरत गाई ॥ राम नाम नर निशिवासरमें निमिष एक उर धारे ॥ यमको त्रास मिटै नानक तिहिं अपनो जन्म सवाँरे ॥ १७४ ॥

प्राणी नारयण सुध लेहु ॥ छिन छिन औध घटै निशिवासर वृथा जात है देह॥तरुनापन विषयनमों खोयो बालापन अज्ञान॥ बिरध भयो अजहू नाहिं समझै कौन कुमति उरझाना ॥ मानुस जन्म दियो जिहिं ठाकुर सो तू क्यों बिसरायो ॥ मुक्त होत नर जाके सिमरे निमिष न ताको गायो ॥ मायाको मद कहा करतहै संग न काहू जाई ॥ नानक कहत चेत चिंतामणि ह्वै है अन्त सहाई ॥ १७५ ॥

कवन काज सिरजे जग भीतर जन्म कवन फल पाया ॥ भवनिधि तरन तारन चिंतामणि इक निमिप न इह मन लाया ॥ गोविन्द हम ऐसे अपराधी॥जिन प्रभु जीउ पिंड था दीया तिसकी भाउभक्ति नहिं साधी ॥ परधन परतन परतिय निंदा पर अपवाद न छूटै ॥ आवागमन होतहै पुनिपुनि इह प्रसंग ना टूटै॥जिहिं घर कथा होत हरि संतन इकोनिमिप न कीनो मैं फेरा ॥ लंपट चोर दूत मतवारे तिन सँग सदा बसेरा ॥ काम क्रोध माया मद मत्सर इह संपै मो माहीं ॥ दया धर्म अरु गुरुकी सेवा इह सुपनंतर नाहीं ॥

दीनदयाल कृपाल दामोदर भगत बछल भयहारी ॥ कहत कबीर भीर जिन राखो हरि सेवा करों तुम्हारी ॥ १७६ ॥

आनीले कागद काटीले गूडी आकाश मध्ये भरमीयले ॥ पंच जानां सों बात बतौआ चीत सो डोरी राखीयले ॥ मन राम नामा वेधीयले ॥ जैसे कनक कला चित मांडीयले ॥ आनीले कुंभ भराईले ऊदक राज कुआरि पुरंदरये॥हँसत विनोद विचार करतिहै चीत सो सागर राखीयले॥ मंदिर एक द्वार दस जाके गऊ चरावन छांडीयले॥पांच कोस पर गऊ चरावत चीत सो बछरा राखी-यले॥ कहत नामदेउ सुनो त्रिलोचन बालक पालन पौढीयले ॥ अंतर बाहर काज बिरूधी चीत सो बालक राखीयले ॥ १७७ ॥

बानारसी तप करे उलट तीर्थ मरे अग्नि दहै काया कलप कीजै ॥ अश्वमेध यज्ञ कीजै सोना दान दीजै राम नाम सर तऊ न पूजे ॥ छोड़ छोड रे पाखंडी मन कपट न कीजे ॥ हरिका नाम नित नितहिं लीजे॥गंगाजी गोदावरी जाइये कुंभ जो केदार न्हा-इये॥गोमती सहस गऊ दान कीजे ॥ कोटि जो तीर्थ करै तन जो हिमालै गौर रामनाम सर तऊ न पूजे॥अश्वदान गजदान सिहजा नारी भूमिदान ऐसो दान नित नितहिं कीजै ॥ आत्मजो निर्माय-लकीजे आप बराबर कंचन दीजै ॥ रामनाम सर तऊ न पूजै ॥ मनहिं न कीजे रोष यमहि न दीजे दोष निर्मल निर्वाण पद चीन लीजै॥ दशरथराय नंद राजा मेरा रामचंद्र प्रणवै नामा तत्वरस अमृत पीजै ॥ १७८ ॥

पढिये गुनिये नाम सब सुनिये अनुभव भाव न दरसे ॥ लोहा कंचन हिरण्य होय कैसे जो पारसहिं न परसे ॥ देव संशय गांठ न छूटे काम क्रोध माया मत्सर इन पचों मिल लूटे ॥ हम बड कवि कुलीन हम पंडित हम योगी संन्यासी ॥ ज्ञानी गुनी शूर

हम दाते इह बुद्धि कबहिं न नासी ॥ कहु रामदास सभी नहीं समझत भूल परे जैसे बौरे ॥ मोहिं अधार नाम नारायण जीवन प्राण धन मोरे ॥ १७९ ॥

राग नटनारायण ।

राम हौं क्या जाना क्या भावे ॥ मन प्यास बहुत दरशावे ॥ सोई ज्ञानी सोई जन तेरा जिस ऊपर रुचि आवे ॥ कृपा करो जिस पुरुष विधाते सो सदा सदा तुझ ध्यावे ॥ कवन योग कौन ज्ञान ध्यान कवन गुनी रीझावे॥सोई जन सोई निज भगता जिस ऊपर रंग लावे ॥ सोई मति सोई बुद्धि स्यानप जित निमिष न प्रभु बिसरावे॥संत संग लग इह सुख पायो हरिगुण सदही गावे॥ देख्यो अचरज महामंगल रूप कछु आन नहिं दृष्टावे ॥ कह नानक मोरचा गुरु लाह्यो तहिं गरभ योनि कहिं आवे ॥१८०॥

राग नट ।

मेरे सर्वस नाम निधान ॥ कर किरपा साधू संग मिल्यो सतगुरु दीनो दान ॥ सुखदाता दुख भंजन हार गाउँ कीर्तन पूरण ज्ञान ॥ काम क्रोध लोभ खंड कीने बिनश्यो मूढ अभिमान ॥ क्या गुण तेरे आँख बखाणां प्रभु अंतरयामी जान ॥ चरण कमल शरण सुखसागर नानक सद कुर्बान ॥ १८१ ॥

राग माली गौडा ।

धन्य धन्य राम बेणु बाजै ॥ मधुर मधुर धुन अनहद गाजै ॥ धन धन मेघा रोमावली ॥ धन धन कृष्ण ओढे कांबली ॥ धन धन तू माता देवकी ॥ जिहि गृह रमैया कमलापती ॥ धन धन बन खंड वृंदावना ॥ जहि खेले श्रीनारायना ॥ बेणु बजावै गोधन चारै ॥ नामे का स्वामी आनंद करै ॥ १८२ ॥

मेरो बाप माधो तू घन केशो साँवलियो बीठुलायले ॥ कर धरे चक्र वैकुण्ठ ते आये गज हस्तीके प्राण उधारियले ॥दुश्शासनकी सभा द्रौपदी अंबरलेत उबारियले॥ गौतम नारि अहल्या तारी पावन केतक तारियले ॥ ऐसा अधम अजाति नामदेव तव शरणागति आइयले ॥ १८३ ॥

राग मारू।

डरपै धरती अकाश नक्षत्रा शिर ऊपर अमर कगारा ॥ पौण पाडी बैसंदर डरपै डरपै इंद्र बिचारा॥एका निरभय बात सुनी ॥ सो सुखीया सो सदा सुहेला जो गुरु मिलगाय गुनी ॥ देह धार अर देवा डरपहिं सिद्ध साधक डर मोया ॥ लख चौरसी मर मर जन्में फिर फिर योनी जोया ॥ राजस सत्त्विक तामस डरपहिं केते रूप उपाया ॥ छल बपुरी इह कमला डरपै अति डरपै धर्मराया ॥ सकल समग्री डरहिं ब्यापी बिन डर करने हारा ॥ कह नानक भक्तनका संगी भक्त सोहैं दरबारा ॥ १८४ ॥

पांच वर्षको अनाथ धुरू बालक हरि सुमिरत अमर अटारे॥ पुत्र हेत नारायण कह्यो यम किंकर मार विदारे॥ मेरे ठाकुर केते अगनित उधारे ॥ मोहि दीन अलपमति निर्गुण परचो शरण द्वारे ॥ वालमीक सुपचारो तरचो बधिक तरे विचारे ॥ एक निमिष मन माहिं अराध्यो गजपति पार उतारे ॥ कीनी रक्षा भगत प्रहलादहिं हरनाकुश नखहिं विदारे ॥ विदुर दासीसुत भयो पुनीता सकले कुल उज्यारे ॥ कवन अपराध बतावों अपने मिथ्या मोह मगना रे ॥ आयो साम नानक ओट हरिकी लीजे भुजा पसारे ॥ १८५ ॥

हरिको नाम सदा सुखदाई॥जाको सिमर अजामिल उधरचो गनिकाहूँ गति पाई॥पंचालीको राजसभामें रामनाम सुध आई ॥

ताको दूख हरयो करुणामय अपनी पैज बजाई ॥ जिहि नर यश किरपा निधि गायो ताको भयो सहाई ॥ कह नानक मैं यही भरोसे गही आन शरणाई ॥ १८६ ॥

अब मैं कहा करों री माई ॥ सकल जन्म विषयन सों खोयो सिमरयो नाहिं कन्हाई ॥ काल फाँस जब गरमें मेली तिहिं सुध सब बिसराई ॥ राम नाम बिन या संकटमें को अब होत सहाई ॥ जो संपति अपनी कर मानी छिनमें भई पराई ॥ कह नानक यह सोच रही मन हरियश कबहुँ न गाई ॥ १८७ ॥

माई मैं मनको मान त्याग्यो ॥ माया के मद जन्म सिरायो राम भजन नहिं लाग्यो ॥ यम को दंड परयो शिर ऊपर तब सोवत तैं जाग्यो ॥ कहा होत अबके पछिताये छूटत नाहिन भाग्यो ॥ यह चिंता उपजी घटमें जब गुरु चरणन अनुराग्यो ॥ सुफल जन्म नानक तब हुआ जो प्रभु यशमें पाग्यो ॥ १८८ ॥

अच्युत पारब्रह्म परमेश्वर अंतरयामी ॥ मधुसूदन दामोदर स्वामी ॥ हृषीकेश गोवर्धन धारी मुरलीमनोहर हरिरंगा ॥ मोहन माधव कृष्ण मुरारे ॥ जगदीश्वर हरिजी असुर सँहारे ॥ जगजीवन अविनाशी ठाकुर घट घट वासी हैं संगा ॥ धरणीधर ईश नृसिंह नारायण ॥ दाढा अग्र पृथिवी धरायण ॥ बावन रूपकी यातुध करते सहबी सेती हैं चंगा ॥ श्रीरामचन्द्र जिस रूप न देख्या ॥ बनमाली चक्रपाणि दर्श अनूप्या ॥ सहस नेत्र मूरत है सहसा इक दाता सबहैं संगा ॥ भगत बच्छल अनाथहि नाथे ॥ गोपीनाथ सकल हैं साथे ॥ बासुदेव निरंजन दाते वर्ण न साको गुण अंगा ॥ मुकुंद मनोहर लक्ष्मीनारायण ॥ द्रौपदी लज्जा निवार उधारण ॥ कमलाकांत करे कौतूहल अनँद बिनोदी निहसंगा ॥ अमोघ दर्शन अजूनी संभो ॥ अकाल मूरत जिस कदे नाहीं खौ अविनाशी

अविगत अगोचर सब कछु तुझही है लग्ग ॥ श्रीरंग वैकुंठके वासी ॥ मच्छ कच्छ कूर्म आज्ञा औतरासी ॥ केशव चरित करै निराले कीता लोडे सो होयगा ॥ निरहारी निरवैर समाया ॥ धार खेल चतुर्भुज कहाया ॥ सांवलै सुन्दर रूप बनावहिं बेणु सुनत सब मोहेगा ॥ वनमाला विभूषण कमल नयन ॥ सुन्दर कुन्डल मुकुट बैन ॥ शंख चक्र गदा है धारी महासारथी सत्संगा पीत पीतांबर त्रिभुवन धनी ॥ जगन्नाथ गोपाल मुख भणी॥शारंगधर भगवान बीठुला मैं गणत न आवै सरबंगा ॥ निहकंटक निहकेवल कहिये धनंजय जल थल है महिये ॥ मिरतलोक प्याल समीपत स्थिर थान जिस है अभंगा ॥ पतितपावन दुख भय भंजन ॥ अहंकार निवारण है भव खंडन ॥ भगति तोषत दीन कृपाला गुण न कितही है भग्गा ॥ निरंकार अछल अडोलो जोतिसरूपी सब जग सोलो ॥ सो मिले जिस आप मिलाये आपहु कोय न पावैगा ॥ आपे गोपी आपे कान्हा ॥ आपे गऊ चरावै बाना ॥ आपि उपावहिं आपि खपावहिं तुध लेप नहीं इक तिल रंगा ॥ एक जीह गुण कवन बखानै ॥ सहस फणी शेष अन्त न जानै ॥ नूतन नाम जपै दिनराती इक गुण नाहीं प्रभु कहसंगा ॥ ओठ गही जग तपित शरनाया ॥ भयभ्यानक यमदूत दुस्तर है माया॥ होहु कृपाल इच्छा कर राखो साधु सन्तनके सग संगा ॥ दृष्टिमान है सकल मिथना ॥ इक मांगो दान गोविन्द सन्त रेना ॥ मस्तक लाय परमपद पावों जिस प्राप्त सो पावैगा॥ जिनको कृपा करी सुखदाते ॥ तिन साधू चरण लै हिरदे पराते॥ सकल नाम निधान तिन पाया अनहद शब्द पन बाजंगा ॥ कृत्तम नाम कथे तेरे जिहवा ॥ सत्त नाम तेरा परा पूर्वला ॥ कह नानक भगत पराशननाई देहु दर्श मन रंग लगाई ॥ १८९ ॥

जिन गढ़ कोट किये कंचनके छोड गया सो रावन ॥ काहे कीजत है मनभावन ॥ जब यम आय केशतें पकरै तहिं हरिको नाम छुडावन॥ काल अकाल खसमका कीना इह प्रपंच बधावन ॥ कह कबीर ते अंते मुक्ते जिन हिरदै राम रसायन ॥ १९० ॥

राजन कौन तुम्हारे आवै ॥ ऐसो भाव विदुर को देख्यो वह गरीब महि भावै ॥ हस्तीदेख भर्मते भूला श्रीभगवान न जान्या॥ तुमरो दूध विदुरको पानी अमृत कर में मान्या ॥ खीर समान साग मैं पाया गुण गावत रैनि विहानी ॥ कबीरको ठाकुर आनँद विनोदी जाति न काहूकी मानी ॥ १९१ ॥

चार मुक्ति चारों सिद्धि मिलके दुलह प्रभुकी शरण पऱ्यो ॥ मुक्ति भयो चौहूं युग जान्यो यश कीरति माथे छत्र धऱ्यो॥राजा राम जपत को को न तऱ्यो ॥ गुरु उपदेश साधुकी संगति भगत भगन ताको नाम पऱ्यो ॥ शंख चक्र माला तिलक विराजत देख प्रताप यम डऱ्यो ॥ निरभय भये राम बल गर्जत जन्म मरन संताप हऱ्यो ॥ अम्बरीषको दियो अभय पद राज विभीषण अधिक कऱ्यो॥नौ निधि ठाकुर दई सुदामहि धुरू अटल अजहूं न टऱ्यो ॥भगत हेत माऱ्यो हरनाकुश नृसिंहरूप होय देह धऱ्यो॥ नाभा कहे भगतवश केशव अजहूं बलिके द्वार खऱ्यो ॥ १९२ ॥

दीन बिसाऱ्यो दिवाने तैने दीन बिसाऱ्यो ॥ पेट भऱ्यो पशुआ ज्यों सोयो मानुष जन्म है हाऱ्यो॥साधु संगत कबहूं नहिं कीनी रच्यो धंधे झूठ ॥ श्वान शूकर वायस जिवें भटकत चाल्यो ऊठ ॥ आपनको दीर्घ कर मानै औरन को लघुमात ॥मनसा वाचा कर्मनामें देखे दोजक जात ॥ कामी क्रोधी चातुरी बाजीगर बेकाम ॥ निंदा करते जन्म सिरानो कबहुँ न सिमऱ्यो राम॥ कह कबीर चेते नहीं मूरख मुगध गवाँर ॥ रामनाम जान्यो नहीं कैसे उतरसी पार ॥ १९३ ॥

ऐसी लाल तुझ विन कौन करै ॥ गरीबनिवाज गुसैंयां मेरे माथे छत्र धरै ॥ जाकी जोत जगत कों लाये तापर तुही ढरै ॥ नीचहि ऊंच करै मेरा गोविंद काहू ते न डरै ॥ नामदेव कबीर त्रिलोचन सधना सैन तरै ॥ कह रामदास सुनहुँ रे संतहु हरि-जीते सभी सरै ॥ १९४ ॥

सुखसागर सुरतरु चिंतामणि कामधेनु वश जाके रे ॥ चारि पदारथ अष्ट महासिधि नवनिधि करतल ताके रे ॥ हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥ अवर सब छाँड वचन रचना ॥ नानाख्यान पुराण वेद विधि चौंतीस अक्षर माहीं ॥ व्यास विचार कह्यो परमारथ रामनाम सर नाहीं ॥ सहज समाधि उपाधि रहित है बडे भाग लव लागी ॥ कह रामदास उदास दास मति जन्म मरण भय भागी ॥ १९५ ॥

राग केदारा।

हरि बिन जन्म अकारथ जात ॥ तज गोपाल आन रँग राचत मिथ्या पहिरत खात ॥ धन यौवन संपै सुख भुगवै संग न निबहत मात ॥ मृगतृष्णा देख रच्यो बावर द्रुम छाया रँग रात ॥ मान मोह महामद मोह्यो काम क्रोधके घात ॥ कर गहि लेहु दास नानक को प्रभुजी होय सहात ॥ १९६ ॥

बिसरत नाहिं मनते हरी ॥ अब इह प्रीत महाप्रबल भई आन विषय जरी ॥ बूँद कहा त्याग चातक मीन रहत न घरी ॥ गुण गोपाल उचारत रसना टेंव एह परी ॥ महानाद कुरंग मोह्यो वेध तीक्षण सरी ॥ प्रभु चरनकमल रसाल नानक गांठ बांध परी ॥ १९७ ॥

अस्तुति निंदा दोऊ विवर्जित तजो मान अभिमाना ॥ लोहा कंचन सम कर जानै ते मूरत भगवाना॥तेरा जन एकआध कोई॥

काम क्रोध लोभ मोह विवर्जित हरिपद चीन्है सोई ॥ रजगुण तमगुण सतगुण कहिये यह तेरी सभ माया ॥ चौथे पदको जो नर चीन्है तिनहीं परमपद पाया ॥ तीर्थ वर्त नेम शुचि संयम सदा रहै निहकामा ॥ तृष्णा अरु माया भ्रम चूका चितवत आतम रामा ॥ जिहिं मंदिर दीपक प्रकास्या अंधकार तहिं नासा ॥ निरभय पूर रहे भ्रम भागा कह कबीर जन दासा ॥ १९८ ॥

किनहीं बनज्या कांसी तांबा किनहीं लौंग सुपारी ॥ संतन बनज्या नाम गोविंद का ऐसी खेप हमारी ॥ हरिके नामके व्योपारी ॥ हीरा हाथ चढ्या निरमोलक छूट गई संसारी ॥ साँचे लाये तौ सच लागे साँचके व्योहारी ॥ साँची वस्तुके भार चलाये पहुँचे जाय भँडारी ॥ आपहिं रत्न जवाहर मानक आपैहैं पासारी ॥ आपै दह दिस आप चलावे निहचल है व्यापारी ॥ मन कर बैल सुरत कर पैंडा ज्ञान गोन भरडारी ॥ कहत कबीर सुनो रे संतहु निबही खेप हमारी ॥ १९९ ॥

काम क्रोध तृष्णाके लीने गति नहिं एकी जानी ॥ फूटी आंखें कछू न सूझे बूड मुये बिन पानी ॥ चलत कत टेढे टेढे टेढे ॥ अस्थित चर्म विष्टाके मूंदे दुर्गंधहिके बेढे ॥ राम न जपहु कवन भ्रम भूले तुमते काल न दूरे ॥ अनिक यत्न कर इह तन राखहु रहै अवस्था पूरे ॥ आपन कीया कछू न होवे क्या को करे परानी ॥ जां तिस भावे सतगुरु भेटे एको नाम बखानी ॥ बलुआके घरुआ में बसते फुलवत देह अयाने ॥ कह कबीर जिहिं राम न चेत्यो बूडे बहुत सयाने ॥ २०० ॥

टेढी पाग टेढे चले लागे बीरे खान ॥ भाव भक्ति सों काज न कछु है मेरो काम दिवान ॥ राम विसारयोहै अभिमानी ॥ कनक कामिनी महा सुन्दरी पेख पेख सचु मान ॥ लालच झूंठ

विकार महामद इह विधि औध बिहानी ॥ कह कबीर अंतकी बिरियां लागो काल निदान ॥ २०१ ॥

चार दिन अपनी नौबत चले बजाय ॥ इतनाकु खटीया गढीया मटीया संग न कछू लेजाय ॥ दिहरी बैठी मिहरी रोवै द्वारे लौं सँग माय ॥ मरघट लग सब लोक कुटुंब मिल हंस इकेला जाय ॥ वह सुत वह वित वह पुर पाटन बहुरि न देखै आय॥कहत कबीर राम क्यों न सिमरो जन्म अकारथ जाय२०२

षट् कर्म कुल संयुक्त है हरि भगति हिरदय नाहि ॥ चरणारविंद न कथा भावे श्वपच तुल्य समान ॥ रे चित चेत चेत अचेत काहे न वालमीकहिं देख ॥ किस जानित किहि पदहिं अमरयो राम भगति विशेख ॥ श्वान शत्रु अजात सभते कृष्ण लावै हेत ॥ लोक बपुरा क्या सराहै तीन लोक परवेश ॥ अजामल्ल पिंगुला लुभत कुंजर गये हरिके पास ॥ ऐसे दुरमति निस्तरे तूं क्यों न तरे रामदास ॥ २०३ ॥

राग भैरव।

मेरी पटीयां लिखहु हरि गोविंद गोपाला ॥ दूजे भाय फाथे यम जाला ॥ सतगुरु करे मेरी प्रतिपाला ॥ हरि सुखदाता मेरे नाला ॥ गुरु उपदेश प्रहलाद हरि उचरे ॥ सासना ते बालक गमन करै ॥ माता उपदेशे प्रहलाद प्यारे ॥ पुत्र राम नाम छोडो जीय लेहु उबारे ॥ प्रहलाद कहै सुनो मेरी माय ॥ राम नाम न छोडो गुरु दीया बुझाय ॥ पंडामरका सभ जाय पुकारे ॥ प्रहलाद आप बिगड्या सभ चाटड़े बिगाडे ॥ दुष्ट सभामें मंत्र पकाया ॥ प्रहलादका राखा होय रघुराया ॥ हाथ खडग कर धाइया अति अहंकार ॥ हरि तेरा कहां तुझ लये उबार ॥ छिनमें भ्यानक रूप निकस्या थंभ उपार ॥ हरनाकुश नखीं

विदारच्या प्रह्लाद लीया उबार ॥ संतजनांके हरिजी कारज सवाँरे ॥ प्रह्लाद जनके इकीस कुल उधारे ॥ गुरुके शब्द हौं मै विष मारं ॥ नानक राम नाम संत निस्तारे ॥ २०४ ॥

तूं मेरा पिता तूंहीं मेरी माता तूं मेरे जीव प्राण सुखदाता ॥ तूं मेरा ठाकुर हौं दास तेरा ॥ तुझ बिन अवर नहीं कोइ मेरा ॥ कर किरपा करो प्रभु दात ॥ तुमरी अस्तुति करों दिनरात ॥ हम तेरे जंत्र तूं बजावन हारा ॥ हम तेरे भिखारी दान देहु दातारा ॥ तव प्रसाद रंगरस माणे ॥ घटघट अंतर तुमहिं समाणे ॥ तुमरी कृपाते जपिये नाउँ ॥ साधु संग तुमरे गुण गाउँ ॥ तुमरी दयाते होय दरद विनास ॥ तुमरी मायाते कमल विकास ॥ हौं बलिहार जाउँ गुरुदेव ॥ सफल दर्शन जाकी निर्मल सेव ॥ दया करो ठाकुर प्रभु मेरे ॥ गुण गावै नानक नित तेरे ॥ २०५ ॥

प्रथमें छोडी पराई निंदा ॥ उतर गई सभ मनकी चिंदा ॥ लोभ मोह सभ कीनो दूर ॥ परम वैशनो प्रभु पेख हजूर ॥ ऐसो त्यागी विरला कोय ॥ हरि हरि नाम जपे जन सोय ॥ अहंबुद्धि का छोडा संग ॥ काम क्रोध का उतरा रंग ॥ नाम ध्याये हरि हरि हरे ॥ साधु जनांके संग निस्तरे ॥ वरी मीत होये संमान ॥ सर्व महिं पूर्ण भगवान ॥ प्रभुकी आज्ञा मान सुख पाया ॥ गुरु पूरे हरिनाम दृढाया ॥ कर किरपा जिस राखे आप ॥ सोई भगत जपे नाम जाप ॥ मन प्रकाश गुरुते मति लई ॥ कह नानक तांकी पूरी पई ॥ २०६ ॥

सुख नाहीं बहुते धन खाटे ॥ सुख नाहीं पेखे निर्त नाटे ॥ सुख नाहीं बहु देश कमाये ॥ सर्व सुखां हरि हरि गुण गाये ॥ सुख सहज आनंद लहो ॥ साधु संगत पाइये बडभागी ॥ गुरु-मुख हरिहरि नाम कहो ॥ बंधन मात पिता सुत वनिता ॥ बंधन

कर्म धर्म हौं कर्ता ॥ बंधन काटनहार मन बसै ॥ तौ सुख पावै निज घर वसै ॥ सब याचक प्रभु देवनहार ॥ गुण निधान बेअंत अपार ॥ जिसनूं कर्म करे प्रभु अपना ॥ हरि हरि नाम तिन्ही जन अपना ॥ गुरु अपने आगे अरदास ॥ कर किरपा पुरुष गुरु तास ॥ कह नानक तुमरी शरणाई ॥ ज्यों भावै त्यों रखहु गुसाईं ॥ २०७ ॥

लाज मरै जो नाम न लेवै ॥ नाम बिहीन सुखी क्यों सोवै ॥ हरि सिमरन छाँड परमगति चाहै ॥ मूल विना शाखाकत आहै॥ गुरु गोविंद मेरे मन ध्याय ॥ जन्म जन्म की मैल उतारै ॥ बंधन काट हरि संग मिलाय ॥ तीर्थ न्हाय कहा शुच मैल ॥ मनको व्यापै हौं मैं मैल ॥ कोट कर्म बंधन का मूल ॥ हरिके भजन बिन बिरथा पूल ॥ बिन खाये बूझै नहिं भूँख ॥ रोग जाय तो उतरै दूख ॥ काम क्रोध लोभ मोह व्याप्या ॥ जिन प्रभु कीना सो प्रभु नहीं जाप्या ॥ धन धन साधु धन्य हरि नाउँ ॥ आठ पहर कीर्तन गुण गाउँ ॥ धन हरि भगति धन्य करनेहार ॥ शरण नानक प्रभु पुरुष अपार ॥ २०८ ॥

नाम लेत कछु विघ्न न लागे ॥ नाम सुनत यम दूरहू भागे ॥ नामलेत सभ दूखहिं नाम॥नाम जपत हरिचरण निवास॥निरविघ्न भगति भज हरि हरि नाउँ ॥रसिक रसिक हरिके गुण गाउँ॥हरि सिमिरत कछु चाख न जोहै ॥ हरि सिमरत देत देउ न पोहै ॥ हरि सिमरत मोह मान न बंधै ॥ हरि सिमरत गर्भ योनि न रुंधै ॥ हरि सिमरन की सगली बेला ॥ हरि सिमरन बहु माहिं इकेला॥ जाति अजाति जपै जन कोय ॥ जो जापै तिसकी गति होय ॥ हरि का नाम जपीये साधु संग ॥ हरि के नाम का पूरन रंग ॥ नानकको प्रभु किरपा धार॥श्वास श्वास हरि देहु चितार॥२०९॥

तिन करते इक चरित उपाया ॥ अनहदबानी शब्द सुनाया ॥ मनमुख भूले गुरुमुख बुझाया ॥ कारन कर्ता करदा आया ॥ गुरु का शब्द मेरे अंतरध्यान ॥ हौं कबहुं न छोडो हरि का नाम ॥ पिता प्रहलाद पढ़न पठाया॥लै पाटी पांडे के आया ॥नामबिना नहिं पढों अचार ॥ मेरी पटीया लिख देहु गोविंद मुरार ॥ पुत्र प्रहलाद सों कह्यो माय ॥ प्रविर्त न पढहु रही समझाय॥निरभय दाता हरिजी मेरे नाल ॥ जे हरि छोडो तो कुल लागै गाल॥प्रह-लाद सभ चाटडे विगारे॥हमरा कहा न सुनै आपणेकारज सवाँरे॥ सभ नगरी में भगति दृढाई॥दुष्ट सभा का कछु न वसाई ॥ संडे मरके कीनी पुकार ॥ सभी दैत्य रहे झकमार ॥ भगत जनाकी पति राखै सोई ॥कीते के कहिये क्या होई ॥ किरत संयोगी दैत राज चलाया ॥ हरि नबूझे तिन आप भुलाया ॥ पुत्र प्रहलाद सों बाद रचाया॥अंधा न बूझे काल नेडे आया ॥ प्रहलाद कोठे विच राख्या डार दीया ताला ॥ निरभय बालक भूल न डरई मेरे अंतर गुरु गोपाला॥कीता होवै सरीकी करे अणहोंदा नाउँ धरा-या ॥ जो धुर लिखया सो आय पहुँचा जनसों बाद रचाया ॥ पिता प्रहलादसों गुरज उठाई ॥ कहां तुम्हारा जगदीश गुसाई ॥ जगजीवन दाता अंत सखाई ॥ जहिं देखां तहिं रह्या समाई॥थंभ उपाड हरि आप दिखाया ॥ अहंकारी दैत मार पचाया ॥ भगतां मन आनंद बजी वधाई ॥ अपने सेवक को दे वडिआई ॥ जंमण मरना मोह उपाया ॥ आवण जाणा करते लिख पाया॥प्रहलादके कारज हरि आप दिखाया ॥ भगतां का बोल आगे आया॥देव कुली लक्ष्मी को करहिं जैकार॥ माता नरसिंह का रूप निवार ॥ लक्ष्मी भय करे नसाके जाय॥प्रहलाद जन चरणों लागा आय॥ सतगुरु नाम निधान दृढाया ॥ राज माल झूँठी सभ माया ॥

लोभी न रहै लपटाय॥ हरि के नाम बिन दरगह मिले सजाय॥ कहै नानक सब को करै कराया॥ सो प्रमाण जिन्हीं हरिसों चित लाया॥ भगतांका अंगीकार करदा आया॥ करते आपणा रूप दिखाया॥ २१०॥

इह धन मेरे हरि को नाउँ॥ गांठ न बाँधों बेंच न खाउँ॥ नाउँ मेरे खेती नाउँ मेरे बारी॥ भगति करों जन शरण तुम्हारी॥ नाउँ मेरे माया नाउँ मेरे पूँजी॥ तुमहिं छोड जानों नहिं दूजी॥ नाउँ मेरे बांधव नाउँ मेरे भाई॥ नाउँ मेरे संग अन्त होय सखाई॥ माया में जिस रखे उदास॥ कह कबीर हौं ताको दास॥ २११॥

नांगे आवन नांगे जाना॥ कोय न रहि है राजा राना॥ राम राजा नौनिध मेरे॥ संपै हेत कलत धन तेरे॥ आवत संग न जात सँगाती॥ कहा भयो दर बांधे हाथी॥ लंका गढ़ सोने का भया॥ मूरख रावण क्या ले गया॥ कह कबीर कछु गुण बीचार॥ चले जुआरी दोय हथझार॥ २१२॥

गंगा के संग सरिता बिगरी॥ सो सरिता गंगा होय निबरी॥ बिगरयो कबीरा राम दुहाई॥ साँच भयो अनकतहिं न जाई॥ चन्दनके सँग तरुवर बिगरयो॥ सो तरुवर चंदन होय निवरयो॥ पारसके सँग तांबा बिगरयो॥ सो तांबा कंचन होय निवरयो॥ सन्तन संग कबीरा बिगरयो॥ कबीर रामहिं होयनिवरयो २१३॥

माथे तिलक हथ माला बाना॥ लोगन राम खिलौना जाना॥ जो हौं बौरा तौ राम तोरा॥ लोग मर्म कहि जानैं मोरा॥ तोरों न पाति पूजों न देवा॥ राम भगति बिन निहफल सेवा॥ सतगुरु पूजों सदा सदा मनावों॥ ऐसी सेव दरगहिं सुख पावों॥ लोग कहैं कबीर बौराना॥ कबीर का मर्म राम पहिचाना॥ २१४॥

निरधन आदर कोई न देय ॥ लाख यतन करै ओह चित न धरेय ॥ जो निरधन सरधन के जाय ॥ आगे बैठा पीठ फिराय ॥ जो सरधन निरधन के जाय ॥ दीया आदर लिया बुलाय ॥ निरधन सरधन दोनों भाई ॥ प्रभुकी कला न मेटी जाई ॥ कह कबीर निरधनहै सोई ॥ जाके हिरदय नाम न होई ॥ २१५ ॥

गुरु सेवा ते भगति कमाई॥तब इह मानस देही पाई॥इस देही को सिमरे देव॥सो देही भज हरि की सेव॥भजहु गोविंद भूल मत जाहु मानुस जन्म का एही लाहु ॥ जबलग जरा रोग नहिं आया ॥ जबलग काल ग्रसी नहिं काया॥जबलग विकल भई नहिं बानी॥ भजले रे मन सारँगपानी ॥ अबना भजहि भजहि कब भाई ॥ आवै अन्त न भज्या जाई ॥ जो कछु करहि सोई अब सार ॥ फिर पछताहु न पावहु पार ॥ सो सेवक जो लायो सेव॥तिनहीं पाये निरंजन देव ॥ गुरु मिल ताके खुले कपाट ॥ बहुरि न आवे योनी बाट ॥ इही तेरा औसर इह तेरी बार ॥ घटभीतर तूं देख विचार ॥ कहत कबीर जीत कै हार ॥ बहुविध कह्यो पुकार पुकार ॥ २१६ ॥

सभ कोइ चलन कहत वहां ॥ न जानो बैकुंठ है कहां॥ आप आपका मर्म न जाना ॥ बातनहीं बैकुंठ बखाना ॥ जबलग मन बैकुंठ की आस ॥ तबलग नाहीं चरण निवास ॥ खाई कोट न परल पगारा ॥ ना जानो बैकुंठ दुआरा ॥ कह कबीर अब कहिये काहि ॥ साधु संगत बैकुंठहि आहि ॥ २१७ ॥

क्यों लीजै गढबंका भाई ॥ दोवर कोट अरु तेवर खाई ॥ पांच पचीस मोह मदमत्सर आडी परबल माया ॥ जन गरीब को जोर न पहुँचे कहा करो रघुराया ॥ काम किवाँरी दुख-सुख दरवानी पाप पुण्य दरवाजा ॥ क्रोध प्रधान महाबड द्वन्द

तहिं मना मवासी राजा ॥ स्वाद सनाह टोप ममताको कुबुद्धि कमान चढाई ॥ तृष्णा तीर रहे घट भीतर यो गढ लियो न जाई ॥ प्रेम पलीता सुरत हवाई गोला ज्ञान चलाया ॥ ब्रह्म अग्नि सहजे परजाली एकहि चोट सिझाया ॥ सत संतोष ले लरने लागा तोरे दोय दरवाजा ॥ साधु संगत अरु गुरुकी किरपा ते पकर्‍यो गढ को राजा ॥ भगवत भीरि शक्ति सिमरनकी कटी काल भय फाँसी ॥ दास कबीर चढ्यो गढ ऊपर राज लियो अविनासी ॥ २१८ ॥

गंग गुसाइँन गहर गंभीर ॥ जंजीर बाँध कर खरे कबीर ॥ मन न डिगै तन काहेको डराय ॥ चरण कमल चित रह्यो समाय ॥ गङ्गाकी लहर मेरी टुटी जंजीर ॥ मृगछाला पर बैठे कबीर ॥ कह कबीर कोउ सङ्ग न साथ ॥ जल थल राखनहै रघुनाथ ॥ २१९ ॥

कोटि सूर जाके परकास ॥ कोटि महादेव अरुक विलास ॥ दुरगा कोटि जाके मर्दन करै ॥ ब्रह्मा कोटि वेद उच्चरै ॥ जो जांचो तो केवल राम ॥ आन देव सो नाहीं काम ॥ कोटि चन्द्रमें करहिं चराक ॥ सुर तैंतीसों जेवहिं पाक ॥ नव ग्रह कोटि ठाढे दर्बार ॥ धर्म कोटि जाके प्रतिहार ॥ पवन कोटि चौबारे फिरहि॥ वासुकि कोटि सेज विस्तरहि ॥ समुद्र कोटि जाके पनिहार ॥ रोमावलि कोटि अठारहि भार ॥ कोटि कुबेर भरहिं भंडार ॥ कोटिक लक्ष्मी करहि शृँगार ॥ कोटिक पाप पुण्य बहु हरहिं ॥ इन्द्र कोटि जाके सेवा करहिं ॥ छपन कोटि जाके प्रतिहार ॥ नगरी नगरी खियत अपार ॥ लट छूटी बरतै विकराल ॥ कोटि कला खेलै गोपाल ॥ कोटि यक्ष जाके दर्बार ॥ गंधर्व कोटि करहिं जैकार ॥ विद्या कोटि सभी गुण कहै ॥ तऊ पारब्रह्म का

अंत न लहै ॥ बावन कोटि जाके रोमावली ॥ रावणसेना जहि ते छली ॥ सहसकोटि बहु कहत पुरान ॥ दुर्योधनका मथ्या मान ॥ कंदर्प कोटि जाके लवै न धरहिं ॥ अन्तर अन्तर मनसा हरहिं ॥ कह कबीर सुन सारंग पान ॥ देह अभय पद मांगो दान २२०

रे जिहूबा करों शतखंड ॥ नाम न उचरस श्रीगोविंद ॥ रँगीली जिहूबा हरि के नायँ ॥ सुरंग रंगीले हरि हरि ध्याय ॥ मिथ्या जिहूबा अवरे काम ॥ निर्वाण पद इक हरि का नाम ॥ असंख्य कोटि अन पूजा करी ॥ एक न पूजस नामहि हरी ॥ प्रणवै नामदेउ इह कारण ॥ अनंत रूप तेरे नारायण ॥ २२१ ॥

परधन परदारा परहरी ॥ ताके निकट बसहि नरहरी ॥ जो न भजंते नारायना ॥ तिनका में न करों दर्शना ॥ जिनके भीतर है अन्तरा ॥ जैसे पशु तैसे वह नरा ॥ प्रणमत नामदेउ ना कहि विना ॥ ना सोहै बत्ती सुलक्षना ॥ २२२ ॥

दूध कटोरी गडवे पानी ॥ कपिल गाय नामे दुह आनी ॥ दूध पियो गोविंदराय ॥ दूधपियो मेरो मन पतिआय ॥ नाहीं तो घरको बाप रिसाय ॥ सोरन कटोरी अमृत भरी ॥ लै नाम हरि आगे धरी ॥ एक भगत मेरे हिरदे बसे ॥ नामे देख नारायण हँसे ॥ दूध प्याय भगत घर गया ॥ नामे हरि का दर्शन भया २२३

मैं बहुरी मेरा राम भरतार ॥ रचरच ताको करो शृंगार ॥ भले निंदो भले निंदो भले निंदो लोग ॥ तनमन राम प्यारे योग ॥ वाद विवाद काहू सों न कीजे ॥ रसना राम रसायन पीजे ॥ अब जिय जान ऐसी बन आई ॥ मिलों गुपाल निशान बजाई ॥ अस्तुति निंदा कर नर कोई ॥ नामे श्रीरंग भेटल सोई ॥ २२४ ॥

कबहूं खीर खांड घिउ न भावै ॥ कबहूं घर घर टूक मँगावै ॥ कबहूं कूरन चने विनावै ॥ ज्यों राम राखै त्यों रहिये रे भाई ॥

हरि की महिमा कछु कथन न जाई ॥ कबहूँ तुरे तुरंग नचावै ॥ कबहूं पांय पनहीं हूँ न पावै ॥ कबहूं खाट सुपेदी सुहावै ॥ कबहूं भूमिपे आर न पावै ॥ भनत नामदेव इक नाम निस्तारे ॥ जिहिं गुर मिलै तिहिं पार उतारे ॥ २२५ ॥

हँसत खेलत तेरे देहुरे आया ॥ भगति करत नामा पकर उठाया ॥ हीनडी जाति मेरे यादव राया ॥ छींपे के जन्म काहे-को आया ॥ ले कमली चल्यो पलटाय ॥ देहुरे पाछे बैठा जाय ॥ ज्यों ज्यों नामा हरिगुण उचरे ॥ भगत जनां को देहुरा फिरे २२६

घर की नारि त्यागे अंधा ॥ परनारी सों घाले धंधा ॥ जैसे सिंबल देख सुआ बिगसाना ॥ अंत की बार मूआ लपटाना ॥ पापी का घर अग्नी माहिं ॥ जलत रहै मिटवै कब नाहिं ॥ हरि की भगति न देखे जाय ॥ मारग छोड़ अमारग पाय ॥ मूलहु भूला आवै जाय ॥ अमृत डार लाद विष खाय ॥ ज्यों वेश्याके पडे अखारा ॥ कापर पहर करे शृंगारा ॥ पूरे ताल निहाले सास ॥ वाके गले यमका है फांस ॥ जाके मस्तक लिख्यो कर्मा ॥ सो भज परहै गुरुकी शर्ना ॥ कहत नाम-देउ इह बीचार ॥ इन विधि संतहु उतरो पार ॥ २२७ ॥

संडामरका जाय पुकारे ॥ पढै नहीं हमहीं पचहारे ॥ राम कहै करताल बजावे ॥ चटिया सभी बिगारे ॥ राम नाम जपबो करै ॥ हिरदय हरिजीको सिमरन धरे ॥ बसुधा बश कीनी सभ राज बिनती करै पटरानी ॥ पत प्रहलाद कह्यो नाह मानै तिनतो औरहि ठानी ॥ दुष्ट सभा मिलि मंत्र उपाया करसहि औध वनेरी ॥ गिरि तर ज्वाला भय राख्यो राजा राम माया फेरी ॥ काढ खड्ग काल भय कोप्यो मोहिं बताय जों तोहि राखै ॥ पीतांबर त्रिभुवन धनी थंभ माहिं हरि भाखै ॥ हरनाकुश जिन

नखहिं विदारयो सुर नर किये सनाथा ॥ कह नामदेउ हम नर-हरि ध्यावहिं राम अभय पददाता ॥ २२८ ॥

सुलतान पूँछे सुन वे नामा ॥ देखों राम तुम्हारे कामा ॥ नामा सुलताने बांधला ॥ देखो तेरा हरि बीठुला ॥ बिसमल गऊ देहु जिवाय ॥ नातर गरदन मारों ठांय ॥ बादशाह ऐसी क्यों होय ॥ बिसमल किया न जीवै कोय ॥ मेरा कीया कछू न होय ॥ करिहै राम होयहै सोय ॥ बादशाह चढयो अहंकार ॥ गज हस्ती दीनों चमकार ॥ रुदन करै नामे की माय ॥ छोड राम क्यों न भजहि खुदाय ॥ ना हौं तेरा पूंगडा ना तूं मेरी माय ॥ पिंड परे तो हरिगुण गाय ॥ करे गजिंद शुंड की चोट॥नामा उबरै हरिकी ओट ॥ काजी मुल्ला करहि सलाम ॥ इन हिंदू मेरा मल्या मान॥ बादशाह बीनती सुनेह ॥ नामेसरभर सोना लेह ॥ माल लेउँतो दोजक परों॥दीनछोड दुनियाको भरों॥ पावों बेडी हाथों ताल॥ नामा गावे गुण गोपाल ॥ गंग यमुन जो उलटी बहै ॥ तौ नामा हरि करता रहै ॥ सात घडी जब बीती सुनी ॥ अज हूं न आयो त्रिभुवन धनी ॥ पाखंतन बाज बजायला ॥ गरुड चढे गोविंद आयला ॥ अपने भगत पर की प्रतिपाल ॥ गरुड चढे आये गोपाल ॥ कहहि तो धरनि इकोडी करों ॥ कहहिं तो लेकर ऊपर धरों ॥ कहहि तो मूई गऊ देहुं जिवाय ॥ सब कोई देखै पति-याय ॥ नामा प्रणवै सेलम सेल ॥ गऊ दुहाई बछरा मेल ॥ दूध हि जब मटुकी भरी ॥ ले बादशाहके आगे धरी ॥ बादशाह महलमें जाय ॥ औघटकी घट लागी आय ॥ काजी मुल्लाँ बिनती फर-माय ॥ बखशी हिंदू मैं तेरी गाय ॥ नामा कहै सुनो बादशाह ॥ इह कछु पतीया मुझे दिखाय ॥ इस पतीयेका इहै प्रमान ॥ साँच सील चालहु सुलतान ॥ नामदेव सब रह्या समाय ॥ मिल हिंदू सभ

नामे पहि जाहि ॥ जो अबकी बार न जीवै गाय ॥ तो नामदेवका पतीया जाय ॥ नामे की कीरति रही संसार ॥ भगत जनां लै उधरचा पार ॥ सकल कलेश निंदक भ्या खेद ॥ नामे नारायण नहीं भेद ॥ २२९ ॥

जो गुरुदेव तो मिलै मुरार ॥ जो गुरुदेव तो उतरै पार ॥ जो गुरुदेव तो वैकुण्ठ तरै ॥ जो गुरुदेव तो जीवत मरै ॥ सत्य सत्य सत्य सत्य सत्य गुरुदेव ॥ झूठ झूठ झूठ झूठ आन सभ सेव ॥ जो गुरुदेव तो नाम दृढावे ॥ जो गुरुदेव न दह दिस धावै ॥ जो गुरुदेव पंच ते दूर ॥ जो गुरुदेव न मरबो झूर ॥ जो गुरुदेव तो अमृत बानी ॥ जो गुरुदेव तो अकथ कहानी ॥ जो गुरुदेव तो अमृत देह ॥ जो गुरुदेव नाम जप लेह ॥ जो गुरुदेव भवन त्रय सूझै ॥ जो गुरुदेव ऊँचपद बूझैं ॥ जो गुरुदेव तो सीस अकास ॥ जो गुरुदेव सदा साबास ॥ जो गुरुदेव सदा बैरागी ॥ जो गुरुदेव परनिंदा त्यागी ॥ जो गुरुदेव बुरा भला एक ॥ जो गुरुदेव ललाटहि लेख ॥ जो गुरुदेव कंध नहिं हिरै ॥ जो गुरुदेव देहुरा फिरै ॥ जो गुरुदेव तो छांपर छाई ॥ जो गुरुदेव सहस निकसाई ॥ जो गुरुदेव तो अडसठ न्हाया ॥ जो गुरुदेव तन चक्र लगाया ॥ जो गुरुदेव तो द्वादश सेवा ॥ जो गुरुदेव सभी विष मेवा ॥ जो गुरुदेव तो संशा टूटै ॥ जो गुरुदेव तो यमते छूटै ॥ जो गुरुदेव तो भौजल तरै ॥ जो रुगुदेव तो जन्म न मरै ॥ जो गुरुदेव अठदश व्योहार ॥ जो गुरुदेव अठारहि भार ॥ बिन गुरुदेव अवर नहिं जाई ॥ नामदेव गुरुकी शरणाई ॥ २३० ॥

आउ कलंदर केशवा ॥ कर अवदाली भेशवा ॥ जिन आकोश कुलहि शिर कीनी कोशै सप्त पियाला ॥ चमर पोसका मंदिर तेरा इह विधि बने गुपाला ॥ छपनकोट का पेहन तेरा सोलह

सहस हजारा ॥ भार अठारह मुदगर तेरा सहनक सभ संसारा ॥ देही महजिद मन मौलाना सहज निमाज गुजारै ॥ बीबीकौला सौका इन तेरा निरंकार आकारै ॥ भगति करत मेरे ताल छिनाये किहि पै करों पुकारा ॥ नामे का स्वामी अंतरयामी फिरे सकल बेदेसारा ॥ २३१ ॥

राग वसन्त हिंडोल ।

शालग्राम विप पूज मनावो सुकृत तुलसी माला ॥ राम नाम जप बेडा बांधो दया करो दयाला ॥ काहे कलरा सिंचो जन्म गवाँवो॥ काची ढहग दिवाल काहे गच लावो ॥ कर हरिहट माल टिंड परोवो॥ तिस भीतर मन जोवो॥ अमृत सिंचो भरो क्यारे तौ माली के होवो ॥ काम क्रोध दोय करो बसोले गोडो ॥ धरती भाई ज्यों गोडो त्यों तुम सुख पावो किर्त न मेटयो जाई ॥ बगुले ते पुनि हँसुला होवे जे तू करहि दयाला ॥ प्रणमत नानक दास न दासा दया करो दयाला ॥ २३२ ॥

माधो इह तन मिथ्या जानो ॥ या भीतर जो राम बसत है सांचो ताहि पछानो ॥ इह जग है संपति सुपने की देख कहा ऐडानो ॥ संग तिहारे कछू न चाले ताहि कहा लपटानो ॥ अस्तुति निंदा दोऊ परिहरि हरि कीरति उर आनो ॥ जन नानक सभही में पूरन एक पुरुष भगवानो ॥ २३३ ॥

राग वसन्त ।

पापी हींये में काम बसाय ॥ मन चंचल याते ग्ह्यो न जाय ॥ योगी जंगम अरु संन्यास ॥ सभही पर डारी इह फाँस ॥ जिहि जिहि हरि को नाम सम्हार ॥ ते भवसागर उतरे पार ॥ जन नानक हरि की शरनाय ॥ दीजे नाम रहे गुण गाय ॥ २३४ ॥

माई मैं धन पायों हरि नाम ॥ मन मेरो धावन ते छूट्यो कर बैठो विश्राम ॥ माया ममता तनते भागी उपज्यो निर्मल ज्ञान ॥ लोभ मोह यह परस न साके गही भगति भगवान ॥ जन्म जन्म का संशय चूका रत्न नाम जब पाया ॥ तृष्णा सकल विनाशी मनते निज सुख माहिं समाया ॥ जाको होत दयाल कृपानिधि सो गोविंद गुणगावै ॥ कह नानक यह विधि की संपै कोऊ गुरुमुख पावै ॥ २३५ ॥

मन कहा बिसार्‌यो रामनाम ॥ तन विनशै यम सों परै काम ॥ इह जग धूएँ का पहार ॥ तैं सांचा मान्यो किहिं विचार ॥ धन दारा संपति और गेह ॥ कछु संग न चालै समझ लेह ॥ इक भगति नारायण होय संग ॥ कह नानक भज तिहिं एक रंग ॥ २३६ ॥

कह भूल्यो रे झूठे लोभ लाग ॥ कछु बिगर्‌यो नाहिंन अजहुं जाग ॥ सम सुपनेके इह जग जान ॥ विनशै छिनमें साँचीमान ॥ संग तेरे हरि बसत नीत ॥ निशिबासर भज ताहि मीत ॥ बार अंत की होय सहाय ॥ कह नानक गुण ताके गाय ॥ २३७ ॥

सुन साखी मन जप प्यार ॥ अजामल उधर्‌या कह एकवार ॥ बालमीकहिं होया साधु संग ॥ ध्रुव को मिल्यो हरि निशंक ॥ तेर्‌यां संतां जाचों चरण रेन ॥ ले मस्तक लावों कर कृपा देन ॥ गणिका उधरी हरि कहे तोत ॥ गजेंद्र ध्यायो हरि कियो मोक्ष ॥ विप्र सुदामे दारिद भंज ॥ रे मन तू भी भज गोविंद ॥ बधिक उधार्‌यो खम प्रहार ॥ कुबजा उधरी अंगुष्ठ धार ॥ विदुर उधार्‌यो दासत भाय ॥ रे मन तू भी हरि ध्याय ॥ प्रहलाद रखी हरि पैज आप ॥ वस्त्र छीनत द्रौपदी रखी लाज ॥ जिन जिन सेवया अंत बार ॥ रे मन सेव तूं परहिं पार ॥ धन्ने सेवया बाल बुद्धि ॥ त्रिलोचन गुरु मिल भई सिद्धि ॥ वेणी को गुरु कियो

प्रकास ॥ रे मन तूभी होहिं दास ॥ जैदेव त्यागयो अहंमेव ॥ नाई उधरयो सैन सेव ॥ मन डिगै न डोलहि कहूँ जाय ॥ मन तूभी तरसहि शरण पाय ॥ जिहिं अनुग्रह ठाकुर कियो आप॥सो तैं लीने भगत राख ॥ तिनका गुण अवगुण न विचारयो कोय ॥ इह विध देख मन लगा सेय ॥ कबीर ध्यायो एक रंग ॥ नामदेव हरिजी बसस्सि संग॥ रामदास न्याये प्रभु अनूप ॥ गुरु नानक देव गोविन्द रूप ॥ २३८ ॥

पंडित जन माते पढ़ पुरान ॥ योगी माते योग ध्यान ॥ संन्यासी माते अहंमेव ॥ तपसी माते तप के भेव ॥ सभ मद माते कोऊ न जाग ॥ संग ही चोर घर मुसन लाग ॥ जागे शुकदेव अरु अक्रूर ॥ हनुमंत जागे धर लंगूर ॥ शंकर जागे चरण सेव ॥ कलि जागे नामा जैदेव ॥ जागत सोवत बहु प्रकार ॥ गुरुमुख जागे सोई सार ॥ इस देही के अधिक काम ॥ कह कबीर भज राम नाम ॥ २३९ ॥

इस तन मन मध्ये मदन चोर ॥ जिन ज्ञान रत्न हरि लीन मोर ॥ मैं अनाथ प्रभु कहों काहि ॥ को को न बिगूतो मैं को आहि ॥ माधो दारुन दुख सह्यो न जाय ॥ मेरी चपल बुद्धि सों कहा बसाय ॥ सनक सनंदन शिव शुकादि ॥ नाभि कमल जाने ब्रह्मादि ॥ कवि जन योगी जटा धार ॥ सभ आपन औसर चले सार ॥ तूं अथाह मोहिं थाह नाहिं ॥ प्रभु दीनानाथ दुख कहों काहि ॥ मेरो जन्म मरण दुख आप धीर ॥ सुखसागर गुण रम कबीर ॥ २४० ॥

कहत जाइये रे घर लागो रंग ॥ मेरा चित न चलै मन भयो पंग ॥ एक दिवस मन भई उमंग ॥ घस चन्दन चोआ बहुसुगन्ध ॥ पूजन चाली ब्रह्म ठाय ॥ सो ब्रह्म बतायो गुरु मनहि

माहिं ॥ जहाँ जाइये तहिं जल पखान ॥ तूं पूर रह्यो है सभ समान ॥ वेद पुराण सब देखे जोय ॥ ऊहाँ तौ जाइये जो ईहाँ न होय ॥ सतगुरु मैं बलिहारी तोर ॥ जिन सकल विकल भ्रम काटे मोर ॥ रमानन्द स्वामी रमत ब्रह्म ॥ गुरुका शब्द काटै कोटि कर्म ॥ २४१ ॥

तुझहिं सुझन्ता कछु नाहिं ॥ पहिरावा देखे ऊभ जाहिं ॥ गर्ववती का नाहीं ठाउँ ॥ तेरी गर्दन ऊपर लवै काउँ ॥ तू काहि गर्वहिं बावली ॥ जैसे भादों खूबरा जो तूं तिससे खरी उतावली ॥ जैसे कुरंग नहीं पायो भेद ॥ उन सुगन्ध ढूँढ प्रदेश ॥ अप तन का जो करे विचार ॥ तिस नहिं यम किङ्कर करे खुआर ॥ पुत्र कलत्र का करहि अहंकार ॥ ठाकुर लेखा मंगन हार ॥ फेडेका दुख सहे जीउ ॥ पाछे किसहि पुकारहिं पीउ पीउ ॥ साधू की जो लेहि ओट ॥ तेरे मिटहिं पाप सभ कोट कोट ॥ कह रामदास जो जपहि नाम ॥ तिस जाति न जन्म न योनि काम ॥ २४२ ॥

सुरहि की जैसी तेरी चाल ॥ तेरी पूंछट ऊपर झमक बाल ॥ इस घर में है सो तू ढूँढ खाहि ॥ और किसही के तू मतिही जाहि ॥ चाकी चाटहि चून खाहि ॥ चाकीका चीथरा कहां लेजाहि ॥ छीकेपर तेरी बहुत डीट ॥ मत लकरी सोंटा तेरी परै पीठ ॥ कह कबीर भोग भले कीन ॥ मति कोऊ मारै ईंट डीम ॥ २४३ ॥

राग सारंग ।

जप मन राम नाम पढ सार ॥ राम नाम बिन थिर नहिं कोई और निष्फल सभ निस्तार ॥ क्या लीजै क्या तजिये बौरे जो दीसे सो छार ॥ जिन विषय को तुम अपने कर जानो सो छोड जाहु शिर भार ॥ तिल तिल पल पल औधि पुनि घाटै बूझ न

सके गवाँर ॥ सो कछु करे जो साथ न चाले इह शाकत का
आचार ॥ सत जनां के सङ्ग मिल बौरे तौ पावहिं मोक्ष द्वार ॥
बिन सतसंग सुख किने न पाया जाय पूछहु वेद विचार ॥ राणा
राउ सभी कोऊ चालै झूठ छोड जाय पासार ॥ नानक संत सदा
स्थिर निश्चल जिन राम नाम आधार ॥ २४४ ॥

ठाकुर तुम शरणाई आया ॥ उतर गयो मेरे मनका संशा
जबते दर्शन पाया ॥ अनबोलत मेरी बिर्था जानी अपना नाम
जपाया ॥ दुख नाठे सुख सहज समाये अनंद २ गुण गाया ॥
बाहँ पकर कढ़ लीने अपने गृह अंध कूप ते माया ॥ कह नानक
गुरु बंधन काटे बिछुरत आन मिलाया ॥ २४५ ॥

गोविंदजी तूं मेरे प्राण अधार ॥ साजन मीत सहाई तुमहीं
तू मेरो परिवार ॥ कर मस्तक धार्यो मेरे माथे साधु संग गुण
गाये ॥ तुमरी कृपा ते सभ फल पाये रसिक राम नाम ध्याये ॥
अविचल नींव धराई सतगुरु कबहूं डोलत नाहीं ॥ गुरु नानक
जब भये दयाला सर्व सुखांनिधि पाहीं ॥ २४६ ॥

हरि बिन तेरो कौन सहाई ॥ काकी मात पिता सुत बनिता
को काहूको भाई ॥ धन धरनी अरु सम्पति सगरी जो जो मान्यो
अपनाई ॥ तन छूटे कछु संग न चालै कहा ताहि लपटाई ॥ दीन
दयाल सदा दुखभजन तासों रुचि न बढ़ाई ॥ नानक कहत जगत
सभ मिथ्या ज्यों सुपना रैनाई ॥ २४७ ॥

कहा मन विषयनसों लपटाई ॥ या जग में कोउ रहन न पावै
इक आवै इक जाई ॥ काको तन धन संपति काकी कासों नेह
लगाई ॥ जो दीसे सो सकल विनाशै ज्यों बादर की छाई ॥ तज
अभिमान शरण संतन गहु मुक्त होहु छिन माहीं ॥ जन नानक
भगवंत भजन बिन सुख सुपने भी नाहीं ॥ २४८ ॥

कहा नर अपनो जन्म गँवावै ॥ माया मद विषया रस राच्यो राम शरण नहिं आवै ॥ इह संसार सकल है सुपनो देख कहा लोभावै॥ जो उपजे सो सकल विनाशे रहन न कोऊ पावे ॥मिथ्या तन सांचों कर मान्यो इह विधि आप बँधावे ॥ जन नानक सोऊ जग मुक्ता राम भजन चित लावे ॥ २४९ ॥

मन कर कबहुँ न हरिगुण गायो ॥ विषयासक्त रह्यो निशि-वासर कीनो अपनो भायो ॥ गुरु उपदेश सुन्यो नहीं कानन पर-दारा लपटायो ॥ परनिंदा कारन बहु धावत आगम नहिं समझा-यो ॥ कहा कहों में अपनी करनी जिहिं विध जन्म गवांयो ॥ कह नानक सभ औगण मोमें राख लेहु शरनायो ॥ २५० ॥

कहा नर गरबस थोरी बात ॥ मन दश नाज टका चार गांठी ऍडो टेढो जात ॥ बहुत प्रताप गाउँ सों पाये द्वै लख टका बरात॥ दिवस चार की करो साहिबी जैसे बन हर पात ॥ ना कोऊ लै आयो इह धन ना कोऊ ले जात ॥ रावण हू ते अधिक छत्रपति छिन में गये बिलात ॥ हरिके सन्त सदा थिर पूजा जो हरि नाम जपात ॥ जिनको कृपा करत हैं गोविंद ते सतसङ्ग मिलात ॥ मात पिता बनिता सुत सम्पति अंत न चलत संगात ॥ कहत कबीर राम भज बौरे जन्म अकारथ जात ॥ २५१ ॥

काहेरे मन विषया बन जाय॥ भूलो रे ठग मूरी खाय॥ जैसे मीन पानी में रहै ॥ काल जाल की सुध नहिं लहै॥ जिह्वा स्वादी लीलत लोह ॥ ऐसे कनक कामिनी बांध्यो मोह ॥ ज्यों मधु माखी सँचै अपार ॥ मधु लीनो मुख दीनो छार ॥ गऊ बाछ को संचै क्षीर ॥ गला बांध दुह लेय अहीर ॥ माया कारन श्रम अतिकरै॥ सो माया ले गाडै धरै ॥ अति संचै समझै नहिं मूढ ॥ धन धरती तन है गयो धूड़ ॥ काम क्रोध तृष्णा अति जरै ॥ साधु संगत

कबहूँ नहिं करै ॥ कहत नामदेउ ताचीआन ॥ निरभय ह्वै भजिये भगवान ॥ २८२ ॥

बदो क्यों ना होड़ माधो मोसों ॥ ठाकुर ते जन जन ते ठाकुर खेल परचोहै तोसों ॥ आपन देव देहरा आपन आप लगावे पूजा ॥ जल ते तरंग तरंग ते है जल कहन सुनन को दूजा ॥ आपहिं गावै आपहिं नाचै आप बजावै तूरा ॥ कहत नामदेउ तू मेरो ठाकुर जन ऊरा तू पूरा ॥ २८३ ॥

तैं नर क्या पुराण सुन कीना ॥ अनपायनी भगति नहिं उपजी भूखे दान न दीना ॥ काम न विसरयो क्रोध न विसरयो लोभ न छूटयो देवा ॥ परनिंदा मुखते नहिं छूटी निफल भई सभ सेवा ॥ बाट पार घर मूस विगनो पेट भरै अपराधी ॥ जिहिं पर-लोक जाय अपकीरत सोई अविद्या साधी ॥ हिंसा तो मन ते नहिं छूटी जीय दया नहिं पाली ॥ परमानंद साधु संगत मिल कथा पुनीत न चाली ॥ २८४ ॥

हरि विन कौन सहाई मनका ॥ मात पिता भाई सुत वनिता हित लागो सभ फनका ॥ आगेको कछु तुलहा बांधो क्या भर-वासा धनका ॥ कहा बिसासा इस भांडे का इतनक लागै ठनका ॥ सकल धर्म पुण्य फल पावो धूर वांछहु सभ जनका ॥ कहै कबीर सुनो रे संतहु इह मन उडन पखेरू वनका ॥ २८५ ॥

राग मल्लार ।

माई मोहिं प्रीतम देहु मिलाई ॥ सकल सहेली सुख भर सूती जिहिं घर लाल बसाई ॥ मोहिं अवगुण प्रभु सदा दयाला मोहिं निर्गुण क्या चतुराई ॥ करों बराबर जो पिया संग राती इह मेरी ढीठाई ॥ भई निमाणी शरण इक ताकी श्रीसतगुरु पुरुष सुख

दाई ॥ एक निमिष में मेरा सभ दुख काट्या नानक सुख रैन बिहाई ॥ २५६ ॥

मेरे प्रीतम प्राण पियारे ॥ प्रेमभक्ति अपनो नाम दीजे दयाल अनुग्रह धारे ॥ सुमरों चरण तिहारे प्रीतम हृदय तिहारी आसा ॥ संत जनां पै करों बेनती मन दर्शनको प्यासा ॥ बिछुरत मरन जीवन हरि मिलते जन को दर्शन दीजै ॥ नाम अधार जीवत धन नानक प्रभु मेरे किरपा कीजे ॥ २५७ ॥

हरिके भजन कौन कौन न तारे ॥ खग तन मीन तन मृग तन बराह तन साधु संग उधारे ॥ देव कुल दैत्य कुल यक्ष किन्नर नर सागर उतरे पारे ॥ जोजो भजन करे साधुसंग ताके दुःख बिदारे ॥ काम क्रोध महा बिषया रस इनते भये निरारे ॥ दीनदयाल जपहिं करुणामय नानक सद बलिहारे ॥ २५८ ॥

हे गोविंद हे गोपाल हे दयाल लाल ॥ प्राणनाथ अनाथ सखे दीन दरद निवार ॥ हे समर्थ अगम्यपूर्ण मोहि मया धार ॥ अंधकूप महा भ्यान नानक पार उतार ॥ २५९ ॥

मेरीले गोपाल राय अकुल निरंजन ॥ भगति दान दीजे याचहि संतजन ॥ याचहि धरि दिग दिसे सरायचा बैकुंठ भवन चित्रशाला सप्त लोक सामान पूरीयले ॥ याचहिं घर लक्ष्मी कुआरी॥ चंद सूरज दीवडे कौतुक काल बपुडा कोतवाल सुकरासिरी ॥ सो ऐसा राजा श्रीनरहरी ॥ याँचे घर कुलाल ब्रह्मा चतुर्मुख डांवडा जिन विश्व संसार राचीले ॥ जाके घर ईश्वर बावला जगत गुरु तत्त्व सारखा ज्ञान भाषीले॥ पाप पुण्य याँचे डांगी द्वारे चित्रगुप्त लेखीया ॥ धर्मराय परली प्रतिहार ॥ सो ऐसा राजा श्रीगोपाल॥ याँचे घर गण गंधर्व ऋषि बपुरे ढाडीया गावत आछे॥ सर्व शास्त्र बहुरूपिया अनगरूआ आखाडा ॥ मंडलीक बोल

बोलहिं काछे ।। चौर ढूल याँचै हैं पवन ।। चेरी शक्ति जीतले भवन ।। अंड टूक याचै भसमती ।। सो ऐसा राजा त्रिभुवन पती ।। याँचै घर कूर्मा पाल सहस्र फनी बासक सेज वालूआ ।। अठारा भारवनासपती मालणी छिनवे करोडी मेघमाला पाणी हारीया ।। नख प्रसेव याँचै सुरसरी सप्त समुंद्र याँचै घडथली ।। एते जीव यांचै वरतनी ।। सो एसा राजा त्रिभुवन धनी ।। यांचै घर निकटवर्ती अर्जुन धुरू प्रहलाद अंबरीष नारद नेजे सिद्ध बुद्ध गण गंधर्व बानवे हेला ।। एते जीय याँचहि हैं घरी ।। सर्वव्यापक अंतर हरी ।। प्रणवे नामदेउ तांची आण ।। सकल भगत यांचै नीसाण ।। २६० ।।

मोको तू न बिसार तू न बिसार ।। तू न बिसारे रमैया ।। आलावंती एहभ्रम जोहै मुझ ऊपर सभको पिला ।। शूद्रशूद्र कर मारउठायो कहा करों बाप बीठला ।। मूए हूए जो मुक्ति देहमें मुक्ति न जानै कोयला ।। एहपंडीया मोको ढेढ कहत तेरी पेज पिछौडी होयला ।। तूं जो दयाल कृपाल कहियत हैं अति भुज भयो अपारला ।। फेर दिया देहुरा नामे को पंडीयन को पिछ वारला ।। २६१ ।।

नागर जनां मेरी जाति बिख्यात चमारं ।। हृदय राम गोविंद गुणसारं ।। सुरसरी सलिल कृत वारुणी रे संत जन करत नहीं पानं ।। सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहीं होय आनं ।। तरतार अपवित्र कर मानीये रे जैसे कागरा करत बीचारं ।। भगति भागवत लिखिये तिहि ऊपरे पूजिये कर नमस्कारं ।। मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवनां नितहि बानारसी आस पासा ।। अब विप्र प्रधान तिहि करहि दंडौत तेरे नाम [illegible] ।। २६२ ।।

हरि जपत तेऊ जनां पदम कमलास पति तास सम तुल्य नहीं आन कोऊ ॥ एक ही एक अनेक ह्वै विस्तरयो आन रे आन भरपूर सोऊ ॥ जाके भागवत लेखिये अवर नहिं पेखिये तासु की जाति आछोप छीपा ॥ व्यासमें लेखिये सनक में पेखिये नाम की नामना सप्त दीपा ॥ जाके ईद बकरीद कुलगऊ रे बध करहिं मानिये सेख सहीद पीरा ॥ जाके बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी तिहु रे लोक प्रसिद्ध कबीरा ॥ जाके कुटुंब के ढेढ़ सभ ढोर ढोवन्त फिरहिं अजहूं बनारसी आस पासा ॥ आचार सहित विप्र करहि डंडौत तिन तनय रविदास दासानु-दासा ॥ २६३ ॥

राग कान्हरा।

चरण शरण गोपाल तेरी ॥ मोह मान द्रोह भ्रम राख लीजे काट बेरी ॥ बूडत संसार सागर ॥ उधरे हरि सिमर रत्नाकर ॥ शीतल हरि नाम तेरा ॥ पूरनो ठाकुर प्रभु मेरा ॥ दीनदरद निवार तारन ॥ हरि कृपानिधि पतित उधारन ॥ कोटि जन्म दूख कर पायो ॥ सुखी नानक गुरु नाम दृढ़ायो ॥ २६४ ॥

राग प्राभती।

प्रभु की सेवा जन की शोभा ॥ काम क्रोध मिटे तिस लोभा ॥ नाम तेरा जन के भंडार ॥ गुणगावहिं प्रभु दर्शनप्यार ॥ तुमरी भगती प्रभु तुमहीं जनाई ॥ काठ जेवरी जन लिये छुडाई ॥ जो जन राता प्रभुके रंग ॥ तिन सुख पाया प्रभु के संग॥ जिस रस आया सोई जाना ॥ पेख पेख मनमें हैराना ॥ सो सुखिया सभते ऊतम सोय ॥ जाके हिरदय बस्य प्रभु सोय ॥ सोई निहचल आवै न जाय ॥ अनुदिन प्रभु के हरिगुण गाय ॥ ताको करो सकल

नमस्कार ॥ जाके मन पूरण निरंकार ॥ कर किरपा मोहिं ठाकुर देवा ॥ नानक उधरै जनकी सेवा ॥ २६५ ॥

गुण गावत मन होय अनंद ॥ आठ पहर सिमरो भगवंत ॥ जाके सिमरन कलिमल जाहि ॥ तिस गुरु की हम चरनी पाहि ॥ सुमति देवो संत प्यारे ॥ सिमरो नाम मोहिं निस्ता ॥ जिन गुरु कह्या मारग सीधा ॥ सकल त्याग नाम हरि गीधा ॥ तिस गुरु के सदा वलि जाइये ॥ हरि सिमरन जिस गुरुते पाइये। बूडत प्रानी जिन गुरुहि तराया । जिस प्रसाद मोहै नहिं माया ॥ हलत पलत जिन गुरा सँवारचा ॥ तिस गुरु ऊपर सदा हौं वारचा ॥ महा मुगधते कीया ज्ञानी ॥ गुरु पूरेकी अकथ कहानी ॥ पारब्रह्म नानक गुरुदेव ॥ वड भाग पाइये हरि सेव ॥ २६६ ॥

मनमें क्रोध महा अहंकारा ॥ पूजा करहि बहु विस्तारा ॥ कर स्नान तन चक्र बनाये ॥ अंतरकी मल कबहू न जाये ॥ इत संयम प्रभु किनहूं न पाया ॥ भगौनी मुद्रा मन मोह्या माया ॥ पाप करहि पंचो के बसरे ॥ तीर्थ न्हाय कहहिं सब उतरे ॥ बहुरी कमावहिं होय निशंक ॥ यमपुर बांध खरे कालंक ॥ घुंघर बांध बजावहिं ताला ॥ अंतर कपट फिरहिं बैताला ॥ वरमी मारी सांप न मूआ ॥ प्रभु सब कछु जानै जिन तू कीया ॥ पुंअर ताय गेरी के वस्त्रा ॥ अपदा का मारचा गृहते नसता ॥ देश छोड पर-देशहि धाया ॥ पंच चंडाल नाले लै आया ॥ कान फराय हिराये टूका ॥ घर घर मांगै तृसावनते चूका ॥ विनता छोड बद नजर परनारी ॥ वैस न पाइये मादुखारी ॥ बोलै नाहीं होयबैठामौनी ॥ अंतर कपल भवाइये जोनी ॥ अन्न ते रहिता दुख देही सहिता ॥ हुकम न बूझै व्याप्या ममता ॥ विन सतगुरु किने न पाई परमगते पूछहु सकल वेद सिमृते ॥ मन मुख कर्म करे अजाई ॥ ज्यों बालू

घर ठौर नठाई ॥ जिसनूं भये गोविंद दयाला ॥ गुरु का वचन तिन बांध्यो पाला ॥ कोटि मध्ये कोई संत दिखाया ॥ नानक तिनके संग तराया ॥ जे होवै भाग तौ दर्शन पाइये॥आप तरै सभ कुटुंब तराइये ॥ २६७ ॥

राग जैजैवंती।

राम भज राम भज जन्म सिरात है ॥ कहों कहा बार बार समझत नहिं क्यों गवाँर बिनशत नहीं लगै बार ओर सम गात है ॥ सकल भर्म डार देह गोविंदको नाम लेह अंत बार संग तेरे यही एक जात है ॥ विषया विष ज्यों बिसार प्रभु को यश हिये धार नानक जन कह पुकार औसर बिहात है ॥ २६८ ॥

रे मन कौन गति होयहै तेरी ॥ इह जगमें राम नाम सों तो नहीं सुन्यो कान विषयनसों अति लुभान मति नाहिन फेरी ॥ मानुस को जन्म लीन सिमरण नहिं निमिष कीन दारा सुख भयो दीन पगहुँ परी बेरी ॥ नानक जन कह पुकार सुपने ज्यों जग पसार सिमिरत नहिं क्यों मुरार माया जाकी चेरी ॥ २६९ ॥

बीत जैहै बीत जैहै जन्म अकाज रे ॥ निशि दिन सुनके पुराण समझत नहिं रे अजान काल तो पहुँच्यो आन कहां जैहै भाज रे ॥ अस्थिर जो मान्यो देह सो तो तेरी है है खेह क्यों ना हरि को नाम लेह मूरख निलाज रे ॥ राम भगति हिये आन छोडदे तू मनको मान नानक जन कह बखान जग में बिराज रे ॥ २७० ॥

वाहि गुरू वाहि गुरू वाहि गुरू वाहिजी ॥ कमलनयन मधुर बैन कोटि सैन संग शोभ कहत मा जसोध जिसहिं दही भात खाहिंजी ॥ देख रूप अति अनूप मोह महा मग्न भई किंकिणी

शब्द झनतकार खेल पाहिजी ॥ काल कलम हुकम हाथ कहो कौन मेट सकै ईश थंभ ज्ञान ध्यान धरत हिये चाहि जी ॥ सत्य साँच श्रीनिवास आदि पुरुष सदा तुही वाहि गुरू वाहि गुरू वाहि गुरू वाहि जी ॥ २७१ ॥

राम नाम परम धाम शुद्ध बुद्ध निराकार बेशुमार सर्वर को काहिजी ॥ सुथिर चित्त भगत हित्त भेष धर्यो हरनाकुश हर्यो नख विदार जी ॥ शंख चक्र गदा पद्म आपि आप कियो छद्म अपरंपर पारब्रह्म लखै कौन ताहि जी ॥ सत्य साँच श्रीनिवास आदिपुरुष सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिजी २७२॥

पीत वसन कुंद दशन प्रिया सहित कंठ माल मुकुट शीश मोर पंख चाहि जी ॥ वे वजीर बड़े धीर धर्म अंग अलख अगमखेल किया आपणे उछाहिजी ॥ अकथ कथा कथी न जाय तीन लोक रह्या समाय स्वतेसिद्ध रूप धर्यो शाहन के शाह जी ॥ सत्य साँच श्रीनिवास आदिपुरुष सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जी ॥ २७३ ॥

चौपाई ।

सिमरो सिमर सिमर सुख पावो॥कलि कलेश तन माहिं मिटावो ॥ सिमरो जासु विश्वंभर एकै॥नाम जपत अनगिनत अनेकै॥ वेद पुराण सिमृत सुधाक्षर ॥ कीने रामनाम इक अक्षर ॥ किणका एक जिस जीय बसावै ॥ ताकी महिमा गनी न आवै ॥ कांछी एको दर्श तिहारो ॥ नानक उन सँग मोहिं उधारो ॥ २७४ ॥

प्रभुके सिमरन ऋद्ध सिद्ध नौनिधि ॥ प्रभुके सिमरन ज्ञान ध्यान तत्त्व बुद्धि ॥ प्रभु को सिमरन जप तप पूजा ॥ प्रभुके सिमरन विनशै दूजा ॥ प्रभुके सिमरन तीर्थ अस्नानी ॥ प्रभुके

सिमरन दरगहि मानी ॥ प्रभुके सिमरन होय सुभला ॥ प्रभुके सिमरन सुफल फला ॥ ते सिमरहिं जिन आप सिमराये ॥ नानक ताके लागों पाये ॥ २७५ ॥

प्रभुको सिमरें सो पर उपकारी ॥ प्रभुको सिमरें तिन सद प्रभु बलिहारी ॥ प्रभु को सिमरें सो मुख सुहावे ॥ प्रभु को सिमरें तिन सूख बिहावे ॥ प्रभु को सिमरें तिन आत्मा जीता ॥ प्रभु को सिमरें तिन निर्मल रीता ॥ प्रभुको सिमरहिं तिन अनँद घनेरे ॥ प्रभु सिमरहिं बसहिं हरि नेरे॥संत कृपाते अनुदिन जाग॥ नानक सिमरन पूरे भाग ॥ २७६ ॥

जहि मात पिता सुत मीत न भाई ॥ मन ऊहां नाम तेरे संग सहाई ॥ जहि महा भ्यार दूत यमदले ॥ तहिं केवल नाम संग तेरे चले ॥ जहिं मुशकल होवे अति भारी ॥ हरि को नाम छिनमाहिं उधारी ॥ अनिक पुरश्चर्ण करत नहीं तरे ॥ हरिको नाम कोटि पाप परिहरे ॥ गुरमुख नाम जपहु मन मेरे ॥ नानक पावहु सुख घनेरे ॥ २७७ ॥

जिहि मारग के गिने जाहि न कोसा ॥ हरि का नाम ऊहाँ संग तोसा ॥ जिहि पैंड महा अंध गुबारा ॥ हरि का नाम संग उज्यारा ॥ जहां पंथ तेरा को न स्यानू ॥ हरि का नाम तहां नाल पछानू ॥ जहिं महाभ्यार तप बहु घाम ॥ तहिं हरिके नामकी तुम ऊपर छाम॥जहां तृषा मन तुझ आकरषे ॥ तहि नानक हरि हरि अमृत बरषै ॥ २७८ ॥

हरि हरि जनके माल खजीना ॥ हरि धन जन को आप प्रभु दीना ॥ हरि हरि जनके ओट सतानी ॥ हरि प्रताप जन अवर न जानी ॥ ओत प्रोत जन हरि रसराते ॥ शुन्न समाधि नाम रस माते ॥ आठपहर जन हरि हरि जपै ॥ हरि का भगत प्रगट

नहिं छपै ॥ हरि की भगति मुक्ति बहु करे ॥ नानक जन केते तरे ॥ २७९ ॥

जाप ताप ज्ञान सभ ध्यान ॥ षड्शास्त्र सिमृत व्याख्यान ॥ योग अभ्यास कर्म धर्म क्रिया ॥ सकल त्याग वन मध्ये फिरया ॥ अनिक प्रकार किये बहु यत्ना ॥ पुण्य दान होमे बहु यत्ना ॥ शरीर कटाय होमे कर राती ॥ व्रत नेम करे करे बहु भाँती ॥ नहीं तुल्य राम नाम बिचार ॥ नानक गुरुमुख नाम जपिये इक बार ॥ २८० ॥

सकल पुरुषमें पुरुष प्रधान ॥ साधु संग जाका मिटै अभिमान ॥ आपन को जो जानै नीचा ॥ सोऊ गिनिये सभते ऊंचा ॥ जाका मन होय सकलकी रीना ॥ हरि हरि नाम तिन घट घट चीना ॥ मन अपने ते बुरा मिटाना ॥ पेखे सकल सृष्टि साजना ॥ सुख दुख जन सम दृष्टेता ॥ नानक पाप पुण्य नहिं लेपा ॥ २८१ ॥

निरधनको धन तेरो नाउँ ॥ निथावें को नाम तेरा थाउँ ॥ निमाने को प्रभु तेरो मान ॥ सकल घटों को देवहु दान ॥ करन करावन हार स्वामी ॥ सकल घटोंके अन्तरयामी ॥ अपनी गति मति जानहु आपे ॥ आपन संग आप प्रभु राते ॥ तुमरी अस्तुति तुमते होय ॥ नानक अवर न जानत कोय ॥ २८२ ॥

सर्व धर्म में श्रेष्ठ धर्म ॥ हरिको नाम जप निर्मल कर्म ॥ सकल क्रिया में उत्तम क्रिया ॥ साधुसंग दुर्मति मल हरिया ॥ सकल उद्यम में उद्यम भला ॥ हरि का नाम जपहु जिय सदा ॥ सकल बानी में अमृत बानी ॥ हरिको यश सुन रसन बखानी ॥ सकल थान ते सो उत्तम थाउँ ॥ नानक जिहिं घट बसै हरि नाउँ ॥ २८३ ॥

जिहि प्रसाद घर ऊपर सुख बसाहिं ॥ सुत भ्रात मीत वनिता संग रसहिं ॥ जिहिं प्रसाद पीवहि शीतल जला ॥ सुखदाई पवन

पावक अमला ॥ जिहिं प्रसाद भोगहिं सभ रसा ॥ सकल समग्री संग साथ बसा ॥ दीने हस्त पांव कर्ण नेत्र रसना ॥ तिसहिं त्याग अवर संग रचना ॥ ऐसे दुख मूढा अंधव्यापे ॥ नानक काढि लेहु प्रभु आपे ॥ २८४ ॥

आदि अन्त जो राखनहार ॥ तिससों प्रीति न करै गवाँर ॥ जाकी सेवा नव निधि पावै ॥ तासों मूढ़ मन नहिं लावै ॥ जो ठाकुर सद सदा हजूरे ॥ ताको अंधा जानत दूरे ॥ जाकी टहल पाव दरगहि मान ॥ तिसहि बिसारै मुग्ध अजान ॥ सदा सदा इह भूलन हार ॥ नानक राखन हार अपार ॥ २८५ ॥

रत्न त्याग कौडी सँग रचै ॥ साँच छोड झूँठ सँग मचै ॥ जो छडना सो स्थिर कर माने ॥ जो होवन सो दूर पराने ॥ छोड जाय तिसका श्रम करै ॥ संग सुहाई तिस परिहरै ॥ चन्दन लेप उतारै धोय ॥ गरदन प्रीति भसम सँग होय ॥ अंधकूपमें पतित विकाल ॥ नानक काढ लहु प्रभु दयाल ॥ २८६ ॥

संग सहाई सों आवै न चीत ॥ जो बैराई तासों प्रीत ॥ बलुआ के गृह भीतर बसे ॥ आनंद केलि माया रँग रसै ॥ दृढ कर मानै मनहि प्रतीत ॥ काल न आवै मूढे चीत ॥ बैर विरोध काम क्रोध मोह ॥ झूँठ विकार महालोभ द्रोह ॥ याहू जुगति बिहाने कई जन्म ॥ नानक राखि लेहु आपन कर कर्म ॥ २८७ ॥

तुम ठाकुर तुम पहि अरदास ॥ जीउ पिंड सब तुमरी रास ॥ तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥ तुमरी कृपा में सुख घनेरे ॥ कोय न जाने तुमरा अंत ॥ ऊंचे ते ऊँचा भगवंत ॥ सकल समग्री तुमरे सूत्रधारी ॥ तुमते होय सो आज्ञाकारी ॥ तुमरी गति मति तुमहीं जानी ॥ नानक दास सदा कुरबानी ॥ २८८ ॥

मिथ्या तन धन कुटुंब सबाया॥ मिथ्या हौं मैं ममता माया॥ मिथ्या राज यौवन धन माल ॥ मिथ्या काम क्रोध विकराल॥ मिथ्या रथ हस्ती अश्व बस्त्रा ॥ मिथ्या रंग सङ्ग माया पेख हँसता ॥ मिथ्या द्रोह मोह अभिमान ॥ मिथ्या आपन ऊपर करत गुमान ॥ अस्थिर भगति साधु की शरण ॥ नानक जप जप जीवै हरि के चरण ॥ २८९ ॥

मिथ्या श्रवण परनिंदा सुनहिं ॥ मिथ्या हस्त परद्रव्यको हरहिं ॥ मिथ्या नेत्र पेखत पर त्रिया रूपाद॥ मिथ्या रसना भोजन अन्न स्वाद ॥ मिथ्या चरण पर विकार को धावहिं ॥ मिथ्या मन पर लोभ लुभावहिं ॥ मिथ्या तन नहिं पर उपकारा ॥ मिथ्या बास लेत विकारा ॥ बिन बूझे मिथ्या सब भये ॥ सफल देह नानक हरि हरि नाम लये ॥ २९० ॥

बिरथी शाकत की आरजा ॥ सांच बिना कहि होवत सूचा॥ बिरथा नाम बिना तन अंध ॥ मुख आवत ताके दुरगंध॥ बिना सिमरन दिन रैन बिर्था बिहाय ॥ मेघ बिना ज्यों खेती जाय ॥ गोबिंद भजन बिन बिरथे सब काम ॥ ज्यों कृपण के निरर्थ दाम ॥ धन्य धन्य ते जन जिहिं घट बस्यो हरि नाउ ॥ नानक ताके बलबल जाउँ ॥ २९१ ॥

रहत अवर कछु अवर कमावत ॥ मन नहिं प्रीत मुखो गढ लावत ॥ जाननहार प्रभु प्रवीन ॥ बाहर भेष न काहू भीन ॥ अवर उपदेशो आप नहिं करै ॥ आवत जावत जन्मै मरै ॥ जिसके अन्तर बसै निरंकार ॥ तिसकी सीख तरै संसार ॥ जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥ नानक उन जन चरण पराता ॥ २९२ ॥

मिथ्या नाहीं रसना परस ॥ मनमें प्रीति निरंजन दरस ॥ पर-त्रिय रूप न पेखै नेत्र ॥ साधुकी टहिल सन्त सङ्ग हेत ॥ कर्ण न सुनै काहूकी निंदा ॥ सभ ते जानै आपन को मंदा ॥ गुरुप्रसाद

विषया परिहरै ॥ मनकी वासना मनते टरै ॥ इंद्रीजित पंच दोष ते रहित ॥ नानक कोटि मध्ये कोऊ ऐसा अपरस ॥ २९३ ॥

कई कोटि राजस तामस सात्विक ॥ कई कोटि वेद पुराण सिमृत अरु सासत ॥ कई कोटि कीये रत्न समुंद ॥ कई कोटि नाना प्रकार जंत ॥ कई कोटि कीये चिरजीव ॥ कई कोटि गिर मेरु स्वर्ण थीवे ॥ कई कोटि यक्ष किन्नर पिशाच ॥ कई कोटि भूत प्रेत सूकर मृगाच ॥ सभते नेरे सभते दूर ॥ नानक आप अलिप्त रह्या भरपूर ॥ २९४ ॥

छिनमें नीच कीटको राज ॥ पारब्रह्म गरीब निवाज ॥ जांकी दृष्टि कछु न आवे ॥ तिस ततकाल दहि दिशि प्रगटावे ॥ जाको अपनी करे बखशीश ॥ ताका लेखा न गिने जगदीश ॥ जीव पिण्ड सभ तिसकी रास ॥ घट घट पूरण ब्रह्म प्रकाश ॥ अपनी बनित आप बनाई ॥ नानक जीवे देख वडाई ॥ २९५ ॥

जिसके अन्तर राज अभिमान ॥ सो नर्क पाती होवत श्वान ॥ जो जाने मैं यौवन वंत ॥ सो होवत विष्टा का जंत ॥ आपनको कर्मवंत कहावे ॥ जन्म मरण बहु योनि भ्रमावे ॥ धन भूमिका जो करे गुमान ॥ सो मूरख अंधा अज्ञान ॥ कर किरपा जिसके हिरदय गरीबी बसावै ॥ नानक इहां मुक्ति आगे सुख पावे ॥ २९६ ॥

धनवंत होय कर गर्बावे ॥ तृण समान कछु सङ्ग न जावे ॥ बहु लशकर मानुस पर करे आश ॥ पल भीतर ताका होय विनाश ॥ सभतें आप जानै बलवंत ॥ छिनमें होय जाय भसमंत ॥ किसे न बदै आप अहंकारी ॥ धर्मराय तिस करे खुआरी ॥ गुरुप्रसाद जाका मिटे अभिमान ॥ सो जन नानक दरगहि परवान ॥ २९७ ॥

नहिं कछु जन्मैं नहिं कछु मरै ॥ आपन चलित आपही करै ॥ आवन जावन दृष्ट अनदृष्ट ॥ आज्ञाकारी धारी सम-

सृष्ट ॥ आपे आप सकल में आप ॥ अनिक जुगति कर थाप्यो थाप ॥ अविनासी नहीं कछु खड ॥ धारन धार रह्यो ब्रह्मंड ॥ अलख अभेवं पुरुष प्रताप ॥ आप जपाये तो नानक जाप२९८॥

टूटी गांठन हार गोपाला॥सर्वं जीया आपे प्रतिपाला ॥सकल की चिन्ता जिस मन माहिं ॥ तिसते विर्था कोई नाहिं ॥ रे मन मेरे सदा हरि जाप॥ अविनाशी प्रभु आपे आप ॥ आपन कीया कछू न होय ॥ जैसो प्राणी लोचै कोय ॥ तिस बिन नाहीं तेरे कछु काम ॥ गति नानक जप एक हरि नाम ॥ २९९ ॥

मन मूरख काहे बिललाइये ॥ पूर्व लिखेका लिख्या पाइये ॥ दुख सूख प्रभु देवनहार ॥ अवर त्याग तू तिसै चितार ॥ जो कछु करै सोई सुख मान ॥ भूला काहे फिरै अयान ॥ कौन वस्तु आई तेरे संग ॥ लपट रह्यो रस लोभी पतंग ॥ राम नाम जप हिरदय माहीं ॥ नानक पत सेती घर जाहीं ॥ ३०० ॥

जाकी लीला की मिति नाहीं ॥ सकल देव हारे अवगाहीं ॥ पिता का जन्म क्या जानै पूत ॥ सकल परोई अपने सूत ॥ सुमति ज्ञान ध्यान जिन देय ॥ जन दास नाम ध्यावहि सेय ॥ तिहिं गुणमें जाको भरमाये॥जन्मि मरै फिर आवै जाये ॥ ऊंच-नीच तिसके अस्थान ॥ जैसा जनावै तैसा नानक जान॥३०१॥

नाना रूप नाना जाके रंग ॥ नाना भेष करहि इक रंग॥नाना विधि कीनो विस्तार ॥ प्रभु अविनाशी एकंकार ॥ नाना चरित करे छिन माहिं ॥ पूर रह्यो पूरन सभ ठाहिं ॥ नाना विधि कर बनत बनाई ॥ अपनी कीमत आपे पाई ॥ सभघट तिसके सभ तिसके ठाऊँ ॥ जप जप जीवै नानक हरि नाउँ ॥ ३०२ ॥

अपने जन का परदा ढाके ॥ अपने सेवकको सिरपर राखे ॥ अपने दासको देय बडाई ॥ अपने सेवकको नाम जपाई ॥

अपने सेवक की आप पतिराखै ॥ ताकी गति मति कोय न लाखे ॥ प्रभुके सेवक को कोई न पहुँचे ॥ प्रभु सेवक ऊंच ते ऊंचे ॥ जो प्रभु अपनी सेवा लाया ॥ नानक सो सेवक दहि दिशि प्रगटाया ॥ ३०३ ॥

नीकी कीरीमें कल राखै ॥ भसम करै लशकर कोटि लाखे ॥ जिसका श्वास न काढत आप ॥ ताको राखत देकर हाथ ॥ मानुस यत्न करत बहु भांत ॥ तिसके कर्तब बिरथे जात ॥ मारे न राखै अवर न कोय ॥ सर्व जिया का राखा सोय ॥ काहे शोच करो रे प्रानी ॥ जप नानक प्रभु अलख विडानी ॥ ३०४ ॥

निर्गुण आप सगुण भी ओही ॥ कलाधार जिन सकली मोही ॥ अपने चरित प्रभु आप बनाये ॥ अपनी कीमत आपै पाये ॥ हरि बिन दूजा नाहीं कोय ॥ सर्व निरंतर एको सोय ॥ ओत प्रोत रम्या रूप रंग ॥ भये प्रकाश साधु के संग ॥ रच रचना अपनी कल धारी ॥ अनिक बार नानक बलिहारी ॥ ३०५ ॥

संग न चालै तेरे धना॥तू क्या लपटाहि मूर्ख मना ॥ सुत मीत कुटुंब अरु वनिता ॥ इनते कहो तुम कवन स नाता ॥ राज रंग माया विस्तार ॥ इनते कहो कवन छुटकार ॥ अश्व हस्ती रथ असवारी ॥ झूँठा दंभ झूँठ पासारी ॥ जिन दीये तिन बुझे न बिगाना ॥ नाम बिसार नानक पछताना ॥ ३०६ ॥

गुरु की मति तूं लेह अयाने ॥ भगति विना बहु डूबे स्याने ॥ हरि की भगति करो मन मीत ॥ निर्मल होय तुम्हारो चीत ॥ चरण कमल राखो मन माहिं ॥ जन्म जन्म के किल्विष जाहिं ॥ आप जपो अवरां नाम जपावो ॥ सुनत कहत रहत गति पावो ॥ सारभूत सत्य हरिको नाउँ॥सहज सुभाय नानक गुण गाउँ३०७॥

साजन संत करो यह काम ॥ आन त्याग जपो हरि नाम ॥ सिमर सिमर सिमर सुख पावो॥आप जपो अवरां नाम जपावो॥ भगति भाव तरिये संसार ॥ बिन भगति तन होसी छार ॥ सर्व कल्याण सुख निधि नाम॥बूडत जात पाये विश्राम॥ सकल दुःख का होवत नास ॥ नानक नाम जपो गुण तास ॥ ३०८ ॥

प्रभु बखशिंद दीन दयाल ॥ भगत वत्सल सदा कृपाल ॥ नाथ अनाथ गोविंद कृपाल ॥ सर्व घटां करत प्रतिपाल ॥ आदि-पुरुष कारण भर्तार ॥ भगत जनां के प्राण अधार ॥ जो जो जपै सो होय पुनीत ॥ भगतिभाव लावै मनहीत ॥ हम निर्गुणि यार नीच अजान ॥ नानक तुमारी शरण पुरुष भगवान ॥ ३०९ ॥

सर्व वैकुंठ मुक्ति मोक्ष पाये ॥ एक निमिष हरिके गुण गाये ॥ अनिक राज भोग बडाई ॥ हरिके नाम की कथा मन भाई ॥ बहु भोजन कापर संगीत ॥ रसना जपती हरि हरि नीत ॥ भली सुकरनी शोभा धनवंत ॥ हिरदय बसै पूर्ण गुरु मंत ॥ साधु संग प्रभु देहु निवास ॥ सर्व सुख नानक प्रकास ॥ ३१० ॥

आप कथै आप सुननो हार ॥ आपहिं एक आप निस्तार ॥ जां तिस भावै तां सृष्टि उपजाय ॥ आपणे भाणे लय समाय ॥ तुमते भिन्न नहीं कछु होय।आपन सूत सब जगत परोय ॥ जाको प्रभुजी आप बुझाये ॥ सच्च नाम सोई जन पाये ॥ सो समदरशी तत्त्वका वेता ॥ नानक सकल सृष्टि का जेता ॥ ३११ ॥

जीव जंतु सब ताके हाथ ॥ दीनदयाल अनाथ को नाथ ॥ जिस राखै तिस कोय न मारै ॥ सो मूआ जिस मनों विसारै ॥ तिस तज अवर कहां को जाय ॥ सब शिर एक निरंजन राय ॥ जीय की जुगत जाके सब हाथ ॥ अंतर बाहर जानो साथ ॥ गुण निधान बेअंत अपार ॥ नानकदास सदा बलिहार ॥ ३१२ ॥

पूरे गुरु का सुन उपदेश ॥ पारब्रह्म निकट कर पेख ॥ श्वास श्वास सिमरो गोविंद ॥ मन अंतरकी उतरै चिंद ॥ आश अनित्य त्यागो तरंग ॥ संतजनां की धूरि मन मंग ॥ आप छोड विनती करो ॥ साधु संग अग्नि सागर तरो ॥ हरिधन के भर लेहु भंडार॥ नानक गुरु पूरे नमस्कार ॥ ३१३ ॥

राग रामकली।

जग दाता सोई भक्त बच्छल तिहुं लोयजी ॥ गुरु शब्द समावय अवर न जाने कोयजी॥ अवरो न जाने शब्दगुरुके एक नाम ध्यावहे ॥ प्रसाद नानक गुरु अंगद परम पदवी पावहे ॥ आया हकारा चल्लन वारा हर राम नाम समाइया ॥ जग अमर अटल अतोल ठाकुर भक्ति ते हर पाइया ॥ हर भाणा गुरु भाया गुरु जावे हर प्रभु पास जी ॥ सतगुरु करे हर पै वीनती मेरी पैज राखो अरदासजी ॥ पैज राखो हर जनहिं केरी हर देहु नाम निरंजनो ॥ अंत चल दियां होय बेली यमदूत काल निखंजनो ॥ सतगुरु की वेनती पाई हर प्रभु सुनी अरदासजी ॥ हर धार कृपा सतगुरु मिलाया धन्य धन्य कहे शाबाम जी ॥ मेरे सिख सुनो पुत्त भाईहो मेरे हर भाणा आउ मैं पासजी ॥ हर भाना गुरु भाइया मेरा हर प्रभु करे शाबासजी ॥ भक्त सतगुरु पुरुष सोई जिस हर प्रभु भाना भावये ॥ आनन्द अनहद वजें बाजे हर आप गल मेलावये ॥ तुसी पुत्त भाई परवार मेरा मन वेखो कर निरजासजी ॥ धुर लिख्या परवाणा फिरे नाहीं गुरु जाय हरि प्रभु पास जी ॥ सतगुरु भाणे आपणे वह परवार सदाइया ॥ मत मैं पिच्छे कोई रोवसी सो मैं मूल न भाइया ॥ मित्त पहिजै मित्त विगसै जिस मित्तकी पैज भावये ॥ तुसीं वीचार देखो पुत्त भाई हर सतगुरु पैनावये ॥ सतगुरु परतक्ष होंदे वह राज आप टिकाइया ॥ सब सिख बंधप पुत्त भाई

रामदास पैरीं पाइया ॥ अंते सतगुरु बोल्या मैं पिच्छे कीर्तन करो निर्वाण जी ॥ केशो गुपाल पण्डित सद्दो हर हर कथा पढैं पुराण जी ॥ हर कथा पढिये हर नाम सुनिये बेवान हर रंग गुरु भावये ॥ पिंड पत्तल किरया दीवा फुल्ल हर मर पावये ॥ हर भाइया सतगुरु बोल्या हर मिल्या पुरुष सुजानजी ॥ रामदास सोढी तिलक दीया गुरु शब्द सच्च नीशानजी ॥ सतगुरु पुरुष यह बोल्या गुरु सिखां मन्न लई रजायजी ॥ मोहरी पुत्त सन्मुख होइया रामदासहिं पैरैं पाय जी ॥ सभ पवे पैरी सतगुरु केरी जित्थे गुरू आप रख्या ॥ कोई कर बखीली निभे नाहीं फिर सतगुरु आन निवाइया ॥ हर गुरुहिं भाना दई वडियाई धुर लिख्या लेख रजाय जी ॥ कहे सुन्दर सुनो सन्तो सभ जगत पैरी पाइया ॥ ३१४ ॥

इति श्रीग्रंथसाहिबके पद सम्पूर्ण ।

राग कान्हरा ।

ल्यावो मैया मोहिं चंद खिलौना ॥ लाख योजन पर चन्द बसतहै कैसे आवै लाला नंदजीके भौना ॥ जल का थार भर लाई नँदरानी लीजो श्याम तुम चंदखिलौना ॥ जल में हाथ डारे नंदनंदन हिले चंद हँसे श्याम सलोना॥सूरदास प्रभु तुमरे दरशको खेल कियो अचरज मन भौना ॥ ३१५ ॥

राग देश ।

रूखडी न खाइयो स्वामी रूखडी ना खाइयो ॥ हाथ हमारे घिरत कटोरी अपना बांटा लेजाइयो ॥ दौड दौडे जात स्वामी रोटडियां मुख माहीं ॥ हमतो दौडे पहुँच न साकें मेल लेहु गोसाईं ॥ घट घट वासी सर्व निवासी पलमें भेष बँटाया ॥ कूकर ते ठाकुर ह्वै प्रगटे नामदेव दर्शन पाया ॥ ३१६ ॥

एक भरोस जानकी वरको ॥ वस प्रभु धाम नाम भज सुख-कर लीला हग उर शारँग धरको ॥ श्रवण कथा शिर नाय स्वामी पद कारज राम जहां लग करको ॥ भाल तिलक भुज अंक बाण धनु तुलसीदास विभूषण गर को ॥ कर्म योग वेदांत सांख्य मन तत्त्व विचार निरक्षर क्षरको ॥ ज्ञान विराग त्याग तप संयम सब फल सार भजन रघुवर को ॥ नवनिधि आठ सिद्धि नाना सुख त्याग आश विश्वाम अपरको ॥ बैजनाथ बलि जाउँ सुयम सुन सुरतरु कर रघुनाथ कुँवरको ॥ ३१७ ॥

कबित्त ।

करीहैं गरीबी तो विभीषणने राज पायो, रावण ने करी खुदी खोई खूबी जानकी ॥ ध्रुवने गरीबी के अटलपद राज पाये, केशी कंस छयो सुधि ना रही गुमानकी ॥ द्रौपदी गरीबी करी नगन न होन पाई, पचि हारे कौरो देख लीला भगवान की ॥ गरीबी औ बंदगी की चारों वेद स्तुति करें, कहे को गरीबी यह बीबी है जहान की ॥ ३१८ ॥

राग कन्हरा ।

दीनबंधु दीनों की हरते थे पीर ॥ अबतो मैं जाना सोयो मध्य क्षीर ॥ वहां पर जो बैठेहो लाकरके ध्यान ॥ ताते बिसारी है तारन की बान ॥ पौरुष पुराना कि बूढ़ भये ॥ सभी बात छोडी कि मौनी भये ॥ अगर तुमने यह बात समझी नहीं ॥ कहूं गरुड उडकर गयोहै कहीं ॥ ताते हो बैठेहो बाहन बगैर ॥ मेरी बेर एती क्यों लाई है देर ॥ रावण को मारा सो बल है कहां ॥ समुद्र को बांधा सो दल है कहां ॥ कुम्भकर्ण मारा किसी तौर से ॥ कुफर लोग कहते कि प्रभु और से ॥ औरन को तारा था होकरके शेर ॥ मेरी बेर क्यों एती लाई है देर ॥ ३१९ ॥

राग मलार ।

मेरे ही आंगन बरसें ॥ रिम झिम बरसें मेरे आंगन मिलबे को जियरा तरसें ॥ चतुर सुघर सुन्दर बालम को नित चाहत दरसें ॥ नजरू के प्रभु सुधहूं न लीनी कहि न जात कछु हरिसें ॥ ३२० ॥

राग रेखता ।

हम होरहीं अधीर सखी श्याम नहीं आये ॥ सुनतेही टेर धाये गज डूबते बचाये ॥ अब मेरी बार स्वामी कछु काम ने भुलाये ॥ प्रहलादको उबार्‌यो नरसिंहरूप धार्‌यो ॥ शत्रुओंको घेरा दलमें भक्तोंके काम मार्‌यो ॥ नारायण वाकी महिमा काहू न पार पाये ॥ नंदजूके बहुत प्यारे सिर मोर मुकुट धारे॥३२१॥

कवित्त ।

जात पाँत न्यारी करी हमरी तुम्हारी नाथ, केवट को कर्म एक नीके कै निहारिये ॥ तुम तो उतारो भवसागर परमारथ, सरिता उतार हम कुटुम्ब गुजारिये ॥ नाईते न नाई लेत धोबी ना धुलाई लेत, देके उतराई मोहूँ जात ना बिगारिये ॥ ऐसा अधमाई जान आपको उतार दीनो, थारे घाट आये नाथ मोहूं को उतारिये ॥ ३२२ ॥

गजल ।

श्रीकृष्णचंद महाराजने गोकुलका आना छोड दिया ॥ बंशी-बट यमुना तट का अब ठीक ठिकाना छोड दिया ॥ निशदिन प्यारी व्रज वासिन वे तटपर आना छोड दिया ॥ मिश्री मेवा भोग लगावें माखन खाना छोड दिया ॥ कंस मार भये अब राजा धेनु चराना छोड दिया ॥ रास मंडल सब भूल गई हँसना इतराना छोड दिया ॥ निशदिन व्रज बन के पंछी पानी

अरु दाना छोड़ दिया ॥ अबतो प्रीति करें कुबरी संग वंशी का बजाना छोड दिया ॥ खुशरंग प्राण रहें अब कैसे मुखडा दिखलाना छोड दिया ॥ ३२३ ॥

राग पीलो ।

लालन प्यारो झूलत वट संकेत ॥ सँगझूलत वृषभानु नंदिनी ललिता झूटे देत ॥ रमक झमक झूलत पिया प्यारी जो चाहें सुखलेत॥कुंभनदास लालन गिरिधरकीसखियां बलैयां लेत ३२४

राग कान्हरो ।

आज नीकी बनी श्रीराधिका नागरी ॥ रस भरे अधरन मधु भरे नैना गात सुकुमार वटा छारही रूपकी॥सुंदर कपोलन छूट रही अलकाँ माथेको टीको अधिक बन्यो आली री ॥ नंददास की छबीलीसी अति प्यारी श्याम मनोहर पायो सुहाग री ॥ ३२५ ॥

मेरे मन बस गयो सीताराम ॥ जटा मुकुट मुनि भेष धरयो है कठिन धनुष लिये सारंगपान ॥ गौर वर्ण सिया जनक नंदनी रघुवर हैं सुन्दर घनश्याम ॥ सरयू के तीर अयोध्या नगरी विहरत हैं लक्ष्मण अरु राम ॥ आसानंद कहे कर जोरी चौसठ घडी आठों याम ॥ ३२६ ॥

टुक देइ ग्वारन मक्खन कुडे ॥ थोडा देनीयां बहुता संगदा छिक्यों लाहुदा ढक्कन कुडे ॥ नौ लख धेनु लखरी घर नंददे अजे भी आउंद तक्कन कुडे ॥ त्रैलोकीदा ठाकुर संगदा मक्खनेदा की रक्खन कुडे ॥ मीराके प्रभु गिरधर नागर चरण कमल चित रक्खन कुडे ॥ ३२७ ॥

राग कल्याण ।

बांके सांवरियाने घेरी मोहिं आनके ॥ हौं जो गई यमुन जल भरने मारग रोक्यो मेरो आनके ॥ वृन्दावन की कुंज गली में मुरली बजावे आन तान के ॥ मीराके प्रभु गिरधर नागर प्रीति पुरातन जानके ॥ ३२८ ॥

राग पीलो ।

ब्रजवासी कन्हैयालाल तुमको मेरी स्वामी हो वंदना॥ राधाके हाथ मेंहदी सोहै लालन के हाथ हो कंगना ॥ प्यारी के माथे बिंदी सोहे लालन के मस्तक हों चन्दना ॥ चलो री मैयो रल देखन जाइये अलकां वालेदा दर्शन पाइये जहां बसें नन्दको नन्दना ॥ प्यारी ने इक टोना कीना अलकांवाले नूं वस कर लीना गृन्द ल्याई मालन हो बंगना ॥ ३२९ ॥

मान मनायो राधा प्यारी॥ मानसरोवर मान कर बैठी कुंजन कुंज लता री ॥ दोऊ कर जोरे करत विनती संग लिये ललिता री ॥ पुरुषोत्तम प्रभु तुमरे दरश को मैं तो शरण तिहारी॥३३०॥

राग कान्हरो ।

मेरो यामों लागा लाग रह्यो री मोहन मीत कन्हैया ॥ इस गिरिधरकी या छबि ऊपर वेर वेर बल गैया ॥ सुन्दर वदन कमलदल लोचन अलकां अलक छवैया ॥ कृष्णदास प्यारी वश मोहन मुरली के सरस बजैया ॥ ३३१ ॥

मेरी गति जानकी जीवन राम ॥ चौरासीको भटकत आयो कहीं न पायो विश्राम ॥ यही लोक परलोक हमारा चरण कमल नित ध्यान ॥ जन माधोके तन मंदिरमें विराजत सीताराम ॥ ३३२ ॥

राग परज।

राघोजू महराज सांवल बनरा॥ अजब बन्यो तिहारी अँखियन कजरा दशरथ सुत महाराज॥ रत्न मौर केसरिया बागो और विविध मणि साज॥ रामसखे लखि रूप अटक मन तन मन रही न सम्हार॥ ३३३॥

राग विहाग।

ऐसी मोसो कीनी री मा नन्द को छैल अतिही ढीठ॥ हौं जो गई यमुना जल भरने आज॥ संग की जो हमरी पलमें बिछो ड दीनी भुज भर मोहूं गर लगावे और कहा कहूं मोहिं आवत लाज॥ जब हौं करी पुकार इधर उधर कर निहार लपट झपट करके गह्यो मोको डर देन लाग्यो॥ भूषण बिखार दीने हौं तो बेहाल आली भलो री भलो ब्रज को राज॥ ३३४॥

राग जैजैवंती।

कारी रैन दुख दैन पल पल तो सतावे मैन कारे बिन सैयां कारी करी मोरी कारी॥ आप कारे निशि कारी कांधे कामरि- या कारी कोकिला पुकारी कारी पवन बंध डारी॥ कारे भुवंग डसी रोम रोम विष राची बिरहों की मरोर ठाढी हाय हाय कर- न लागी॥ सूरदास यों विचारी कारे कृष्ण हो बिहारी कारेजी सों कहियो जाय बन्दना हमारी॥ ३३५॥

ऐसी तो व्याकुल बाजी जियामें उपाधि लागी ऐसी आवत मनमें लीजिये बनवास री॥ नादकी मरोद सुनी सुध बुध न रही मोरी बांस की बँसुरिया सोतो भरन लागी श्वास री॥ कुलहू की लाज गई लाज हू की लाज गई सूख गयो माँस मेरो निकस आई पांसुरी॥ ढूंढके कटाय डारूं सभी बाँस बनके उपजेंगे न बाँस फेर बाजेगी न बांसुरी॥ ३३६॥

राग पीलो

मोहन चलो चलो कदमकी छैयां रे कदमकी छैयां ॥ मोरे डारो गलेमें बैयाँ ॥ राधा रानीजी तोरे हार हियेमें सोहै री हिये सोहै ॥ थारी चितवन मेरा मन मोहै ॥ मोहना तूतो यमुनानिकट भयो ठाढोरे निकट भयो ठाढो॥मोसे नेहा लगायो अति गाढो॥ राधा रानी जी तूतो यमुना निकट भई ठाढी री निकट भई ठाढी॥ मोरी लागी प्रीति अति गाढो ॥ मोहना तोरे कान कुंडल गल माला रे कुंडल गल माला ॥ दोऊ नैना बने बिशाला ॥ राधा रानीजी तूतो बडी ब्रजकी सखियां री ब्रजकी सखियां ॥ मोरी लागी निमानी अँखियां ॥ मोहना तूतो चन्द्रसखीको प्यारो रे सखी को प्यारो ॥ नन्दजूको राजदुलारो ॥ ३३७ ॥

राग सोरठ ।

महाराज धनधन कुबरी ॥ इस कुबरीने जादू कीना मेरा श्याम बश करलीना ॥ सोलासौ गोपी सुंदर इकते इक कहाँ गई उनकी बुधि री ॥ ईख छोड प्रभु आक चचोरत करीम कहत वृषभानुकी सुना री ॥ ३३८ ॥

राग कन्हरा ।

रही दाम श्याम मथन देत नाहिं दहियां ॥ यशुदा दधि मथन लागी लालजीको भूँख लागी महरी थन उमंग आये दूध धार बहिया ॥ नन्दलाल मथनी गहीनन्दनारि मगन भई देख देखलालजीको प्रेम आँसू बहिया ॥ श्याम सुन्दर गोद लिये अंग अंग मग्न भई दीनी जब चूँची सुख आनंद हो रहियां ॥ जाको शिव ध्यान लावें ब्रह्मा नहिं पार पावें धन्य धन्य मयाराम गोकुलकी मैयां ॥ ३३९ ॥

राग सोरठ ।

रघुनाथ नाथ मेरे ॥ मैं वर्ण न सकों गुण तेरे ॥ प्रथम मीन रूप प्रभु धारयो ॥ शंखासुर गर्व निवारयो ॥ ब्रह्माको वेद जो दीने ॥ सब काज सुरनके कीने ॥ प्रभु कच्छप रूप बनायो ॥ मंद्राचल पीठ धरायो ॥ सूकर नरहरि प्रभु धारा ॥ प्रहलाद भक्त उबारा ॥ तुमहो बलि वामन स्वामी ॥ तुम परशुराम अभिमानी ॥ तुमहो रघुवंश उजागर ॥ भये कृष्ण नन्दजूके नागर ॥ बुध कल्की स्वरूप तुम्हारा ॥ सब संतनके रखवारा ॥ अद्भुत गति नाथ तुम्हारी ॥ भज राम सखे बलिहारी ॥ ३४० ॥

राग कान्हरा ।

गाइये महारानी श्री राधे ॥ जाको नाम नेक मुख निकसत विनशत कोटि कोटि अपराधे ॥ जाको ध्यान धरत योगी जन शिव विरंचि रहे लाय समाधे ॥ याहीतें ब्रजराज युगल वर लागो रहत नेह निशिदिन राधे ॥ ३४१ ॥

राग देश ।

श्रीवृन्दावन वास दीजिये यही हमारी आशा है ॥ यमुना तीर छाय माधुरी जहां रसिकों का बासा है ॥ सेवा कुंज मनोहर सुंदर इक रस बारोंमासा है ॥ ललित किशोरीको दिल बेकल युगल रूप रस प्यासा है ॥ ३४२ ॥

राग सोरठ ।

मोहिं लगे री श्यामके नयन बान ॥ मानो तिरछी कर भौंहें कमान ॥ भई घायल बिसर गयो खान पान ॥ वाके मोर मुकुट गर गुंजमाल ॥ अधरन पै बंशी रसाल ॥ नेक सुध न रही वाकी सुनत तान ॥ वा दिनते नहीं मेरे दिलको चैन ॥ वाकी साँवरी सूरत बसी मोरे नैन ॥ कहे सूरदास कब मिलोगे कान्ह ॥ ३४३ ॥

देखो आली ठाढ़े कदम की छैयां ॥ नँदनन्दन वृषभानु नंदिनी दोउ दे रहे गलबैयां ॥ भूल गयो उन गगर उठाइबो बिसर गई इन गैयां ॥ ललित किशोरी प्रीति बढी अति दोउ जन लेत बलैयां ॥ ३४४ ॥

राग बसंत।

देखके जाना फाग मोहन प्यारे बंशी वारे ॥ पीत वसन सब सखी बनी हैं सब विध पीत सुभाग ॥ कंचनकी पिचकारी बनी है भरी रंग रस भाग ॥ उडत गुलाब अबीरके बादर गावत बहु विध राग ॥ नाचत सकल उमग प्रेम रस बढ्यो जात अनुराग ॥ दास गुलाब देहु चतुराई निज पदमें अनुराग ॥ ३४५ ॥

राग कान्हरा।

मैं तुम्हरी शरणागत प्यारे ॥ परमानंद मुकुन्द परातम दीना-नाथ सकल भय टारे ॥ दामोदर अच्युत अघनाशक पाप हरन तव नाम मुरारे ॥ व्यापक एक अखंड अगोचर नाम न रूप प्रकाशन वारे ॥ दास गुलाब बसो चित हमरे चार पदारथ याहि मँझारे ॥ ३४६ ॥

गजल।

दिला यक दम न हो गाफिल य दुनिया छोड जाना है ॥ बगीचे छोडकर खाली जमीं अंदर समाना है ॥ बदन नाजुक गुलों जैसा जो लेटे सेजफूलों पर ॥ होगा एक दिन मुरदा यही कीडों ने खाना है ॥ न बेली होयगा भाई न बेटा बाप ना माई ॥ क्या फिरना है सैदाई अमल ने काम आना है ॥ फिरिश्ते रोज करते हैं मुनादी चार कुंटोंमें ॥ महल्ला ऊंचियों वाले जहां को छोड जाना है ॥ प्यारे नजर कर देखो पडी जो माडियां खाली ॥ गये सभ

छोड़ यह फानी दगाबाजी क बाना है ॥ गलत फहमी यहै तेरी नहीं आराम इस जग में ॥ मुसाफर बेवतन है तू कहां तेरा ठिकाना है ॥ प्यारे नजर कर देखो न खेशों में कोई तेरा ॥ जनो फरजंग सभ कूकें किसे तुझको छुड़ाना है ॥ तमामी रैन गफलत में गुजारें चारपाई पर ॥ गुजारें रोज खेलों में वृथा आयू गँवाना है ॥ य होंगे मर बसर लेखे हशरके रोज ऐ गाफिल ॥ य दोजख बीच वद अमलीमें तन अपना जलाना है ॥ ३४७ ॥

राग देश ।

माल जिन्होंने जमा किया बनजारे हारे जाते हैं ॥ भाई बंधु कुटुम्ब कबीला दावा करकर खाते हैं ॥ जभी मुसाफर मार जायगा सभी अलग हो जाते हैं ॥ तू क्या जाने सोई का रस्ता बाटर मारग बहुत से हैं ॥ इस रस्तेके बीच मुसाफर अकसर मारे जाते हैं ॥ ऊंचे नीचे महल बनाये बैठ रहे चौबारे में ॥ जागत रहना सोना नाहीं हाथ पसारे जाते हैं ॥ अग्नि पलीता राज दंड अरु चोर मूस ले जाते हैं ॥ राम नाम पर कभी न दीना माल जमाई खाते हैं ॥ भाई बन्धु संबंधी मारे सभी अलग होजाते हैं ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो अपने हाथ जलाते हैं ॥ ३४८ ॥

जरा टुक सोच ऐ गाफिल क्या दमका ठिकाना है ॥ निकल जब यह गया तन से तो सभ अपना बिगाना है ॥ मुसाफर तू है और दुनिया सरां है भूल मत गाफिल ॥ सफर परलोक का आखिर तुझे दरपेश आना है ॥ लगाता है अबस दौलत पै क्यों तू दिल को अब नाहक ॥ न जावे संग कछु हरगिज यहीं सभ छोड जानाहै ॥ न भाई बन्धु है कोई न कोई आशना अपना ॥

बखूबी गौर कर देखा तो मतलबका जमानाहै ॥ रहो लग याद में हकके अगर अपनी शफा चाहो ॥ बली दुनिया के धंधों में हुआ तू क्यों दिवाना है ॥ ३४९ ॥

राग माँझ ।

दूनियाँ झूँठी ते साईं सच्चा पर दुनिया प्यारी लग्गे ॥ सच्च छोड के झूठ ब्याझे न्याउं प्या तेरे अग्गे ॥ घर जिहिंदे बिच दुशमन होवन ओह किचरक ताईं तग्गे ॥ संतरैन ओह कदी न मिलमन जो दुनियाँ दे ठग्गे ॥ ३५० ॥

दुनियाँ झूँठी ते लोकभी झूँठे सब झूँठे दावे करदे ॥ सेई दुनियाँ जेढी साथ न जावे तिस पिच्छे लड २ मरदे ॥ खास खजाना अन्तर तेरे ढूँढे हर दर दर दे ॥ संतरैनि ओह कदीं न मिलनी जो दुनियाँ दे बरदे ॥ ३५१ ॥

बांकियां पग्गां ते टेढीयां चालां गह न छड्डे कदाईं ॥ आप छड्ड तां सब कुछ पावें ओड़क एन्हां रहना नाहीं ॥ मुडकंदे तू पच्छो तासीं जद ताण न रहसी बाहीं ॥ संतरैन तूं समझ सबेरे नहीं रोसे देंदे छाहाईं ॥ ३५२ ॥

एह जुवानी तेरी मस्त दिवानी कुछ अग्गे दा करी तोसा ॥ कई जुवानियां तैं अग्गे छड्डियां हुण इसदा कौन भरोसा ॥ मिल सतगुरु कम्ल करलै झबदे पकड़ रही कोई गोशा ॥ संतरैन ढिल्ल तेरी बह्लो रब्ब नहीं तेरे नाल रोसा ॥ ३५३ ॥

अज्जदा कम्मन घत्तीं कल्हते की जानां कल्ह केहा ॥ संता नाल गुजरान जो थीवे भावें खाके बेहा त्रेहा ॥ हुणदियां भुल्लया नूं ठौर न को ना कोई सुख सुनेहा ॥ संतरैन हुण ढिल्ल न करिये तैनूं लक्खां दी गल्ल एहा ॥ ३५४ ॥

राग बिहाग।

टुक बूझ कवन छिप आया है ॥ इक नुकते में जो फेर पडा तब ऐन गैन का नाम धरा जब मुरशद नुकता दूर किया तब ऐन ऐन कहाया है ॥ तुमीं इलम किताबां पढदेहो केहं उलटे मैंने करदेहो बेमूजब ऐवें लडदेहो केहा उलटा वेद पढ़ाया है ॥ दूई दूर करो कोई सोर नहीं हिंदू तुरक सैयद कोई होर नहीं सब साधु लखो कोई चोर नहीं घट घट में आप समाया है ॥ न मैं मुल्लां ना मैं काजी ना मैं सुन्नी ना मैं हाजी बुल्ला शोह नाल लाई बाजी अनहद शब्द बजाया है ॥ ३८८ ॥

राग गौरी।

राम भज गुजरिये ऐसा दही बरोल ॥ मन कर मटुकी तन कर मथनियां पाले प्रेमकी डोर ॥ राम नाम का माखन कढले छाँछ छाँछ दे छोड ॥ यह बेला तेरे हाथ न आवे खरचेगी लाख करोड ॥ दुर्गादास बड़भागन गुजरी साध संगत ना छोड ॥ ३८६ ॥

गजल।

कल्ह हवस इस तरह से तरगीब देती थी मुझे। खूब मुलके हम हैं और सर जमीने हम हैं ॥ इतने में इबरत पुकारी इक तमाशा मैं तुझे॥ चल दिखाऊँ तू जो सैदे आजका महबूस है॥ मैंने जाना था कि लेजावेगी बुस्तांकी तरफ ॥ या किनारे आवे खुरम या बियाबां की तरफ ॥ ले गई इकबारगी गोरे गरीबां की तरफ ॥ जिस जगा जानो तुमन्ना हरतरह मायूसहै॥मरकदे दो तीन दिखलाकर लगी कहने मुझे॥ यह सिकंदरहै य दाराहै य कैकाऊसहै॥ यह वो है जिसको कि हफत अकलीम का उतरा था ताज ॥

ये वो हैं जिनका फरिश्तों से न मिलता था मजाज ॥ पूँछ तू इनसे कि मालो मिकनते दुनियाँ से आज ॥ कुछ भी इनके पास गर अज हसरतो अफसोस है ॥ ३९७ ॥

राग आसा ।

चले गये सभ अचलके मुँह में खुश्की रही ना तरी रही ॥ सभ निशान मिट गये तिन्हा दे नाम न नामावरी रही ॥ यह दो दिन जीवन दुनिया का क्या शाह अमीर वजीर बने ॥ कंगाल करी गुजरान जगत में दो दिन चरचा खरी रही ॥ पल छिन में कूच नगारा है कोइ जुलम करे कोइ अदल करे ॥ जब मौत ने आकर पकड़ लिया तब मनकी मनमें धरी रही ॥ ३९८ ॥

राग धनाश्री ।

मिल लेहुनी महेलडियोनी मैं माहुरडै वर जाणानी ॥ एथे रहन किसीदा नाहीं चलना वारो वारी ॥ चंगी चंगरी पकड मंगाइया मैं किमदी पनिहारी ॥ जिन्हां दे पल्ले वारी खर्च बनेग सोइयो शोह नूं प्यारी ॥ बाबल मेरे दाज रंगाया इक चोली इक चुन्नी॥दाज बाबलदा देखके मैं आंसू भर भर रुन्नी ॥ इक विछोडा मैं नूं सैयां वाला मैं डारों कुंजविछुन्नी ॥ रंगरंगीले सूलां मोढे चहूंवल पैदियां झोकां॥एथेदे दुख नाल चलनगे मैं अगले किसनूं सौंपां ॥ सास ननंद मैंनूं मारत ताने बनी मुसीबत मैं नूं॥बुल्लेशाह दातार मुनींदा बेला अटक न जाइये ॥ अदल करे ता ठौर न कोई फजलों बखरा पाइये ॥ ३९९ ॥

पढ़ले इशक किताब मेरा बीबा हुण केहीं तोबा तोबा ना कर मेरा यार ॥ सांवें देकर लवें सवाये डुढेयां चक लेखे लाये कूड किताबां सिर पर चाइयाँ एहो तेरा इतबार ॥ डूबीयां

नदीयां तुला पुराना सिरपर गठरी भारी ॥ अमलां वाले लंघ २ जांदे मैं रहगई औगुनहारी ॥ नारूंड तर वन्ने लग्गे डुब्बे जिन्हां सिरभार ॥ हत्थी मी महिंदी चोटी मी माखन कपड़े रंगालये तेले ॥ स्याही गई न सुफेदी आई लगडा इशक कवेले ॥ दिलदा महरम कोई न मिल्या जेदा साथ करे उस वेले ॥ कर कर सिदक बडा बिच वेढ रब्ब मिलावे मेरा यार सुपनेदे अंदर जम्या जाया सुपने पलना पाया ॥ सुपनेदे अंदर चोला सीता सुपने पाड हंढाया ॥ सुपनेदे अंदर व्याह कराया सुपने लै गलनाया ॥ बुल्हा शाह दिवाना होया पल पल करे दीदार ॥ ३६० ॥

राग कान्हरा ।

सँभलके नेहु लगावें दिलबर आखर नूं पछतावेंगा ॥ जांदा यार न आवे फर ओथे बेपरवाहियां ढेर ओथे दहल खलोबन शेर बहिंदा तूं भी जावेंगा ॥ कललां दे घर पासे ओथे आवन मस्त प्यासे ओथे भर भर देंदे कासे तेरा जीउ ललचावेंगा ॥ इक नांदे पोप लहाइंदे इक आरयां नाल चराइंदे इक सूली चाइ चढ़ाई दे तेरा दिल कतरावेंगा ॥ बुल्या गैर शरानाहो सुखदी नींद न भर भर सो ऐनल हक तूं रिंदय वगो चढ सूली ढोला गावेंगा ॥ ३६१ ॥

राग धनाश्री ।

मेरी फरियादहै महाराज ॥ यह तो माया सिंहनी रोक रहीहै चारों धाम ॥ मेरे भागनेकी ठौर नहीं संकट से लेहु निवाज ॥ हाथ खड्ग लिये यम खड़ा घडी दो को लेगा मार ॥ मेरा साहिब मचला हो रह्या में किहिदर करों पुकार ॥ हमसों कारज बिगड़ या प्रभु तुमहीं लेहुगे सँवार ॥ जे में मनों बिमारया प्रभु तूं

न अंत बिसार ॥ ईहां तो दुःख बहुतेरे हैं किसनूं सुनावां रोय ॥ गरीब जनकी विनती मैं फिर न आऊं इस लोय ॥ ३६२ ॥

राग गौरी ।

उड़ रे पखेरू दिन तौ रहगया थोड़ा ॥ उड़त्यांउडत्यां जन्म गवाँया जहां शहर तहाँ डेरा ॥ चुन चुन कंकर महल बनाया मूरख कहे घर मेरा ॥ ना घर तेरा ना घर मेरा चिडियां रैन बसेरा ॥ शाह हुसेन फकीर साईदा जंगल होगया डेरा ॥ ३६३ ॥

राग धनाश्री ।

धृग धृग नर नारी नाम विन ॥ नाम विना हरिके भजन विना ॥ विधवा नारि जैसे करत शिंगार ॥ शोभा न पावे विन भरतार ॥ तेग विना कैसे रजपूत ॥ नाम विना कैसे अवधूत ॥ जिस कुल में नहिं हरिको दास ॥ मो कुल जानो साधो भूत पिशाच ॥ कहे कबीर सुनो अटल प्रताप ॥ तन मन धन मंतन पर वार ॥ ३६४ ॥

राग प्रभाती ।

एक घडी मैं नाम न जप्या एवें सारी रमर विहानी ॥ रल मिल मैयां पनियें न चलियां जिन्हां ने भरया सिर पर धरया मैं तां कुचज्जी डोले हत्थ नलाया खाली घडा लैके घर नूँ सिधानी रल मिल मैयां तिंजन लाये जिन्हा कत्ते दाज रंगाये मैंतां कुचज्जी चरखे दंत न पाया ना मेरा पेटा ना मेरी तानी ॥ रौले में आये रौले में चल्ले समझ कुचज्जी ये तूं होजा स्यानी ॥ बुल्लेशाह रल मिल मैयां पत्तन मल्ले जिन्हांने मल्ले कर्म सवल्ले इकतां लंघ गैयां कर कर हल्लेम तां खडी हां विच्च न मानी ॥ ३६५ ॥

माये खेलन दे दिन चारनी फेर खेलन तेरे किन आवन ॥ चरखा भन्न परोटरे जारूं पूनियां रुलियां बजार ॥ कोटि सुरेश ब्रह्मा

बीत गयेहैं सरग अपार ॥ रावण भरत मानधातासे राजे मरे हजार ॥ जे सुर नर मुनि देखन आवें गिरेंगे सभ सिर भार ॥ चन्द सूर सरिता पति नाशें हमरो कौन विचार ॥ दास गुलाब विराग भयो मन झूँठो सभ संसार ॥ ३६६ ॥

राग देश ।

भाई तैंने सितम गुजारा रे ॥ दिलमें राम विसारा ॥ बालापन औ तरुण अवस्था जब नहिं राम सँभारा ॥ वृद्ध भया कफ बायने घेरा थकत भया हंकारा ॥ महल गाडियां छिनमें छीने बाँध वाट पर डारा रे ॥ शाह से सभ भये बटेऊ लुटन लगा घर बारा रे ॥ धरे ढके को पूछन लागे कुटुम्ब कबीला सारा रे ॥ मर्म कर्म की कोई नपूछे दगाबाज संसारा रे ॥ नंगे पैर कटीला रस्ता ज्यों खांडे की धारा रे ॥ विश्वामित्र महबूब साहिब को भजले बारं-बारा रे ॥ ३६७ ॥

राग कालिंगडा ।

जो तूं राम नाम चित धरतो ॥ अबको जन्म आगलो तेरो दोऊ जन्म सुधारतो ॥ नफा होत साधकी सङ्गत मूल गांठ ते न टरतो ॥ तंदुल घृत सँवार हरिजूको सन्त परासो करतो ॥ यमको त्रास सभी मिट जातो भगत नाम तेरो परतो ॥ सूरदास वैकुंठ पन्थमें कोऊ न फेंट पकरतो ॥ ३६८ ॥

राग गौरी ।

श्यामकी बंशी ना दूंगी ॥ श्यामकी बंशी पाई जो वन मैं राख छिपाऊं अपने तनमें कुबरी सोच करेगी मनमें कहु कुंवर में क्या न करूंगी ॥ हटो सखी मोहिं जिन समझावो नहीं तो विष मैं खाय मरूंगी ॥ अपने तनको घायल करूंगी एककी लाख करोड कहूँगी ॥ प्रीति छिपाई छिपत न मोहन अब लागे कुबरी सँग

सोहन तुमतो लागे हमको कोहन हरि के द्वार पुकार करूंगी॥इत ते आवत उत चमकावत इत उत कछु दर्श दिखावत जैसा नाच नचाया हमको तैसा नाच नचा छोडूँगी॥ मुराद अलीकी साँची बात ना कोई छल बल ना कोई घात प्रभुको पाया अपने हाथ कहो सखी में क्या करूंगी ॥ ३६९ ॥

गजल ।

दरश अपना जो तुम रघुवर दिखादोगे तो क्या होगा ॥ जो तुम भानु सो कुल भानु तेरा भानुका सा मुखडा ॥ सकुचा है मन कमल मेरा खिलादोगे तो क्या होगा ॥ अब इस संसार सागरमें मेरी नैया जो बहती है ॥ निकट तटके जो तुम रघुवर लगादोगे तो क्या होगा ॥ इसी संसार रजनी में मुझे आते बडे स्वपने ॥ सोये गफलतमें मुझको तुम जगादोगे तो क्या होगा ॥ लगीहै प्यास खुशदिलको तेरे दर्शन की है भगवन् ॥ बरसा कर स्वाती की बून्दें मिटादोगे तो क्या होगा ॥ ३७० ॥

राग होरी ।

मन मोहन रिझवार री तेरे नयन सलोने ॥ तू अलबेली आन गामकी अबहीं आई है गोने ॥ सिखवन देहों सिखावन लेहों पग जिन धरत अगोने ॥ अबकी होरी तेरे बगरमें करन कौतुक होने ॥ दया सखी या ब्रजमें बसिके नेह निभायो कौने ॥ ३७१ ॥

राग कन्हारा ।

भूरि भाग भाजन भई ॥ रूपराशि अवलोकि बन्धु दोउ प्रेम सुरंग रई ॥ कहा री करूं किहि भाँति सराहूं नहिं करतूत नई ॥ विन कारण करुणाकर रघुवर किहिं २ गति न दई ॥ करि बहु विनय राख उर मूरति मंगल मोद मई ॥ तुलसी ह्वै विशोक पति लोकहिं प्रभु गुण गुणत गई ॥ ३७२ ॥

कवित्त ।

पढे वेद सारे जप तप व्रत धारे करे, गङ्गा औ प्रयागनकी सेवा मन लायके ॥ कञ्चन औ नारी गज बाजी असवारी दान, करे कुरुक्षेत्र माहिं पंडितको पायके ॥ करे हयमेध कन्यादान सरब-स्व देत, श्रौत औ समारत की नीकी विधि भायके ॥ ईश नाम गान सम होत ना गुलाब अंग, वेद औ पुरान व्यास कही समुझायके ॥ ३७३ ॥

गजल ।

सोच कर चलना मुसाफिर यां ठगों का गाम है ॥ इस सरां के बीच आके बहुत से मारे गये ॥ अब कदम रखना वहांके होने वाली शामहै॥ पांचों चोर बसें नगरीमें सोते को लूटा करें ॥ जागना तुमको मुनासिब पहले तेरे दामहै ॥ दोस्त सभ दुश्मन तुम्हारे इनसे बचना तमाम है ॥ बाजीगर पुतली नचावें काढे अपना कास है ॥ यादोपति यजमान हमारे तिनके घर जाना हमें ॥ जाति का ब्राह्मण गावे खुशदिल जिसका नाम है ॥३७४॥

दीजिये दर्शन मुझे बंसीके बजानेवाले ॥ दूधके खानेवाले मा खनके चुरानेवाले ॥ गजने टेर करी द्वारकासे धाये ॥ सभामें द्रौपदीके चीर बढ़ानेवाले ॥ चौंक सुपनेमें पड़ी दुख गये सोहन को ॥ डार गलबैयां गले छोड़ जगानेवाले ॥कुब्जाको राज दिया हमको बैराग बनाया ॥ क्या और नहीं है मन भसम रमा-नेवाले ॥ ३७५ ॥

राग जंगला ।

नामको अधार मेरे नामको आधार ॥ मेरी मेरी करत जात दिन ही रैन सारा ॥ नजर भरके देख प्राणी धुंधका पसारा ॥ यमुनामें गेंद गिरी ग्वाल बाल हारा ॥ कालीनाग नाथ लीनें

कृष्ण भयो कारा ॥ राजा बलिके द्वारे ठाढे वामन रूप धारा ॥ बीस भुजा रावन की छिन में काट डारा ॥ मथुरा में जन्म लीनो गोकुला सिधारा ॥ कंसको निरवंश कीनो मोरमुकटवारा ॥३७६॥

गोविंद नहीं गाया तैनें गाया क्या नर बावरे ॥ अहिरन की चोरी करें करे सुई का दान रे ॥ कोठे चढ़के देखन लागे आवत कहां विमान रे ॥ महल चुनाये वाडी चुनाई और चुनाया दलान रे ॥ इक दिन तुम पर ऐसा होगा पडे रहो मैदान रे ॥ माटी का पुतला बनाया धरचो आदमी नाम रे ॥ आपही बैठे गह मुसा- फिर कहा बसाया गाम रे ॥ पतिव्रता भूखी मरे वेश्या चाबें पान रे ॥ साधू खावे सूखे टुकडे माल मसखरे खान रे ॥ पाथरकी तैं नाव बनाई उतरा चाहे पार रे ॥ कहत कबीर सुनों भाई साधो डुबेगा मँझधार रे ॥ ३७७ ॥

राग कलिंगडा ।

मुखडा क्या देखे दर्पनमें ॥ तेरे दया धर्म नहीं मनमें ॥ आंब की डाल कोयलिया बोले सुअना बोले वनमें ॥ घर त्यागी तो घर में राजी फक्कर राजी वनमें ॥ ऐंठी धोती पाग लपेटी तेल चुआ जुलफनमें ॥ गली गली की सखी रिझाई दाग लगायो तनमें ॥ पाथर की इक नाव बनाई उतरा चाहे छिनमें ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो यह क्या चढेंगे रनमें ॥ ३७८ ॥

राग जंगला ।

श्रीरामचंद्र दशरथ सुत नंदन यह पद भज मन मोरा रे ॥ बालापन में खेल गँवाई ज्वानी योवन जोरा रे ॥ वृद्ध भयो चिंता तब उपजी अब क्या करत निहोरा रे ॥ पांचों चोर समझ कर पकडो चढो प्रेमरस घोडा रे ॥ ज्ञान खड्ग से मार गिरावो यह मुरखा नर तोरा रे ॥ भूला भूला कहा फिरत है जग में जीवन

थोरा रे ॥ धरे रहें सभ रंगमहल तेरे जंगल होत बसेरा रे ॥ भवसागर की धार कठिन है वहां तोरा नहीं मोरा रे ॥ कहत कबीर सुनो भाई सधो समझ देख मन भोरा रे ॥ ३७९ ॥

राग देश ।

ब्रजराजके सखि इश्क का मेरे दिल में तीर समागया ॥ वो जो दर्द था सो बना रहा न बताके कोई दवा गया ॥ मुझे आज वह ब्रजमोहना मिला नंदरायके द्वार पै॥नई नई तरह की वो सैन से पिया प्यारा जादू चला गया ॥ मैं तो ढूँढती उन श्यामको चहुँ ओर ब्रज कुंजन गली ॥ पिया हँसके बंशी बजा बजा नई सिरसे नेह लगा गया ॥ इक पल में होश हवास को लिया लूट कुंज विहारीने ॥ दिखलाके बांकी सी अदा मन हरके वनको चला गया ॥ कहं रहमके भला इंद्रमणि मेरे दिल को सबरो करार अब॥नई छैल श्याम लचक २ मुझे बांकीझांकी दिखा गया ३८०॥

राग रेखता देश ।

वो झलक जो मोरमुकुट कीथी मुझे लखके श्याम लखा गया ॥ बसी जबसे चितवन चित में आ चितचोर ही में समागया ॥ वो सरूप रूप था जलवागर लजे कोटि रवि शशि दृष्टिकर ॥ भौंहें कुटिल शोभा श्यामकी दृग देख मृग शरमा गया ॥ कानों में कुंडल की दमक दो नागिनी छूटीं अलक ॥ विसियर है विष में विष भरा डसा मन मेरा लहरा गया ॥ कटि पीत पट शिर पै मुकुट तिरछी लटक निर्तत मटक ॥ मुरली मधुर अधरन धरी रस भीनी तान सुनागया ॥ इच्छा शरण आया तेरी रख लाज अब गिरिधर मेरी ॥ मनमें कसक बाकी रही सुपने में दरश दिखागया ॥ ३८१ ॥

राग काफी।

बागों ना जा रे तेरी काया में गुलजार करनी। क्यारी बायकेरे रहनी कर रखवार॥ दया पोद सूखे नहीं रे क्षमा शील जल डार॥ मन माली प्रबोध केरे संयम की कर बार॥ दुर्मत काग उडाय कर रे देखे क्यों न बहार॥ मनगुलाब चितके बडारे फूलरही फुलवार॥ मुक्त कली खिल रही सदा गंध पहरे क्यों न हार॥ लोभलहर गहरी नदी रे लख चौरासी धार॥ निगुरे निगुरे बहगये रे संत उतर गये पार॥ अष्ट कमल दल ऊपरे रे माया अपरंपार॥ कहत कबीरा चित चेतले रे आवागौन निवार॥ ३८२॥

बसोजी म्हारे नैनन में सियराम॥ जनकनंदनी जगत बंदनी रघुनायक घनश्याम॥ कनक मंडप तले रत्न सिंहासन युगल मूरति अभिराम॥ सरयू के तीर अयोध्या नगरी चित्रकूट निजधाम। तुलसीदास प्रभुकी छवि निरखत लजत कोटि शत काम॥ ३८३॥

कवित्त।

बैठिये न जहां तहां संगति कुसंगतिमें, कायर के संग शूर भागे पै भागे॥ फूलकी सुवास जैसे वासना में सोय रही, कामिनीके संग काम जागेपै जागे॥ अंग अंग घर बसे बैरागी के घर कैसो, काम क्रोध लोभ मोह पागे पै पागे॥ काजर की कोठरी में कैसहू चतुर घुसो, एक रेख काजर की लागे पै लागे॥ ३८४॥

गजल।

हमनहै इश्क के माते हमन को दौलतां क्यारे॥ नहीं कछुमालकी परवा किसीकी मिन्नतां क्या रे॥ हमनको खुश्क रोटी बस कमरको इक लँगोटी बस॥ सिरे पर एक टोपी बस हमन को इज्जतां क्यारे॥

कबा शाला वजीरों को जरी जरबक्त अमीरों को॥हमन जैसे फकीरों को जगत की नेयतां क्या रे ॥ जिन्होंके सुख न स्याने हैं उन्हींको खलक मानेहैं ॥ हमन आशिक दिवानेहैं हमन को मजलसां क्या रे ॥ कियो हम दरदका खाना लियो हम भेमका बाना ॥ बली-बस शौक मन माना किसीकी ममलतां क्या रे ॥ ३८५॥

लावनी ।

मोहिं बिसरत नहिं सुध मनम घडी पल तेरी॥श्रीकृष्ण खबर ना लई आज तक मेरी ॥ तेरे इशक में महा श्याम रंज बहुतेरा॥ कूचे में देते हरदम सांसों फेरा॥ नहिं लगा पता कहुँ यार ठिकाना तेरा॥ किस जगा लगाया हमें बतलाना डेरा ॥ हम चाकर होरहे बदिल निगाह कित फेरी ॥ श्रीकृष्ण० ॥ कर प्रीत बढा परतीत कहा डरते हो ॥ उलफत का कदम पाछे को कहा धरते हो ॥ आंखों में असर जादू का विकल करते हो ॥ मारे नयन अदा तिरछी सों कतल करते हो ॥ मेरे मार विरह शमशीर किया तन ढेरी ॥ श्रीकृष्ण० ॥ दिन रैन तसव्बुर ही में गुजर सब जाती ॥ दर्शन बिन देखे नैन धडकती छाती ॥ काबू से निकल गये कृष्ण बडे तुम घाती ॥ तकदीर बिना तदबीर काम नहिं आती ॥ क्या विपरीत कृष्ण तुम भोल पन पर गेरी ॥ श्रीकृष्ण० ॥ सहताहूं कृष्ण सब रंज सबर नहिं मुझको ॥ अब सहूं कहांतक कृष्ण सुनाऊं तुझको ॥ कथ गावत कवि प्रभु दयाल ख्याल रग रग को ॥ हर वक्त भरोसा राख कृष्णके संगको ॥ अब दे हमको दीदार करी क्या देरी ॥ श्रीकृष्ण० ॥ ३८६ ॥

सो जन मस्ताना जिन २ पायो पद निर्वान॥मगन होय चढ गयो गगन पै अधर धार धर ध्याना॥लगन लाय बिसराय विश्वको अनहद शब्द पछाना ॥ पर्म सुन्न में पर्चा हूआ चेतन चरण

समाना ॥ निर्गुणसेज तेजकी नगरी यहि अबिगत अस्थाना ॥ लक्ष कला लिये चन्द्र प्रकाशे कोटिकला लिये भाना ॥ जगमग लगी महलके भीतर देखत दरश दिवाना ॥ बरसे पदम दामिनी दमके हर हीरों की खाना ॥ गमसे दूर अगमसे आगे अद्भुत अजब ठिकाना ॥ खुलगयो कमल नवल बर पायो नित प्रति अमृत पाना ॥ अमरकन्द दुख भंजन द्वारा जिस घर भर्म भुलाना ॥ स्तुति निंदा दोउ त्यागो खोजो पद निर्वाना ॥ हर्ष शोक से रहे अतीता तिन जग तत्त्व पछाना ॥ पांच पचीस पुरी तज भागे जीत लियो मैदाना ॥ नितानंद महबूब स्वामी अब निश्चय कर जाना ॥ ३८७ ॥

राग आसावरी।

रे मन समझ सोच विचार ॥ ढार पांसा साधु संगत फेर रसना सार ॥ राख सतरह सुन अठारह नरद पांचो मार॥डारदें तू तीन काणे चतुर चौंक निहार ॥ मानुषी यह देह फिर नहिं आवे बारंबार ॥ सूरदास गोविंद भजन बिन चले दोउ कर झार ॥ ३८८ ॥

राग जंगला।

जन्म तेरो बातों में बीत गयो ॥ तेंने कबहू न कृष्ण कह्यो ॥ पांच बरस का आला भोला अबतो बीस भयो ॥ मकर पचीसी माया कारण देश विदेश गयो ॥ तीस बरसकी अब मति उपजी लोभ बढे नित नयो ॥ माया जोरी लाख करोरी अजहुँ न तृप्त भयो ॥ वृद्ध भयो तब आलस उपजी कफ नित कण्ठ रह्यो॥साधु कि संगति कबहुँ न कीनी विरथा जन्म गयो ॥ यह संसार मतलबका लोभी झूँठा ठाट रच्यो ॥ कहत कबीर समझ मन मूरख तूं क्यों भूल गयो ॥ ३८९ ॥

राग परज ।

दूर रहो रघुवीर खरे मम नावन नाहिं सो पाद छुवावो ॥ दारुनमें पुनि शैलन में कछु अंतर होय तौ नाथ बतावो ॥ मानुष चूरन नाव लगाय सो दीनदयाल न काज गवाँवो ॥ राजकुमार पखार लेहो पद तौ मम नावनके ढिग आवो ॥ ३९० ॥

राग होरी ।

झटक्यो मोरा चीर मुरारी ॥ गागर शीश रंगकी झटकी बेसर मुडगई सारी ॥ रेशम बंद बसनके टूटे झडगइ कोर किनारी ॥ ब्रजमें अनोखा खिलारी ॥ लेकर चीर कदम चढ़ बैठो हौं जल माँझ उघारी ॥ संगकी सखी मेरी बगर परोसन कर बिनती सब हारी ॥ अरज मानो गिरधारी ॥ अगर सुनै मेरी बगर सुनैगी सास सुने देवे गारी ॥ कंत सुने मेरो धूम मचावें और सुनै सखी सारी ॥ब्रज बसना मोहिं भारी ॥ ३९१ ॥

नाचत देदे तारी ग्वाल मोहना संग खरे ॥ इत ब्रजनारी भरत पिचकारी उडत अबीर गुलाल कञ्चन कलश भरे ॥ इत मुरली डफ बाज रहीहै बीन पखावज ताल ॥ कृष्णदास प्यारी रँग छिडकत लपट झपट ब्रजबाल लालन लाल गरे ॥ ३९२ ॥

रँगीली रघुवर की होरी॥तुम देखो री भर नैन रैन दिन प्रेम रंग बोरी ॥ छबीली खेलें दोउ जोरी ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन बोल हो होरी॥ उमँग नहिं मनमें कछु थोरी ॥ उडत अबीर गुलाब लालभइ अवध नगर खोरी ॥ उमड धुन चली चहुं ओरी ॥ डफ मृदंग मुरचंग झांझ झालर कल घनघोरी॥ लोक कुल लाज कान चोरी ॥ गावत गारि धमार सभी मिल रही न कछु चोरी ॥ देव देखन आये दौरी ॥ छाये व्योम विमान गान कर बरौ

ओ री ॥ मगन भईं अवध नगर गोरी ॥ रत्नहरी बलिहार राम छबि निरखत तृण तोरी ॥ ३९३ ॥

प्रिया प्रेमनगरमें आज खेल ले होरी ॥ हरियश अतर अबीर उडाले कायाकी करले झोरी ॥ श्वास श्वास हरिनाम सुमिर ले सीख मानले मोरी ॥ मानुष जन्म अमोलक पायो थिर ना रहत बहोरी ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो लागी प्रीत न तोरी॥३९४॥

राग खमाच ।

छबि पर वारियां प्यारे तेरी मैं छबि पर ॥ कोटि मदन दशरथ के कुवँरकी मारत अलकां कारियां ॥ नीरवी सजल लाल अंजन युत लागत अँखिया प्यारियां ॥ राम सखे दृग ओट न करि हों करों न छिन भर न्यारियां ॥ ३९५ ॥

राग देश ।

सखी री मोहन मुसकाने लागी कोई पै जाने ॥ रात मोहन सुपने में देखे शिथिल भये मोरे प्राने ॥ विरहो हूक लागी पसरी में नैन नीर बरसाने ॥ सखी जियरा अकुलाने ॥ हौं जो चढी थी अपनी अटा पर वह झट निकस्यो आने ॥ मंद हँसन मुख देख कृष्णको क्या हौं कहे बखाने ॥ सखी कोइ पीर न जाने ॥ हौं घायल मृगी ज्यों भ्रमत परी धरणि पर आने ॥ मंत्र यंत्र औषध विसराये विसरे सभी उपाव सखी कोइ लोग स्याने ॥ और उपाय नहीं कोऊ दूजो श्याम मिलावो आने ॥ जानत हैं पिया पीर हमारी सूरदास के प्राण सखी कोइ और न जाने ॥ ३९६ ॥

राग ध्रुपद ।

सोल्ह शृंगार धारे नील सेवन सों कारे आवत प्रमोद बन सजनी यह को है ॥ चदन सुगंध पान फूल तेल जुलफन अंजन लगाये नैन मैनन कर जोहै ॥ वन्दन कसन भूषण मोती मणि

माणिक धनुषबाण तरकश लिये कर्रन अतिही सोहै ॥ पाँयन पनहीं लाल मजे जनु काम जाल रामसखे बाँको रूप सबको मन मोहै ॥ ३९७ ॥

शब्द।

बदियां नाकर गाफला मत होवे दिलगीर ॥ लोहे वांगर ताइये तेरे गलविच पैन जर्जीर ॥ जां यम आवे पकड लेजावे कौन बंधावेगा धीर ॥ आगे तेरा संग न साथी ना भाई ना वीर ॥ जे कुछु करें तो छूट सकें नहि सौंह जमांदी पीर ॥ बंदा दरगे खाक दी कह नानक शाह फकीर ॥ ३९८ ॥

राग बरवा।

अब मैं अपने रामको रिझाऊं ॥ नाम ध्याऊं भजन गुणगाऊं॥ पातपात में साहिब मेरा मुड़ मुड़ शीश नवाऊं ॥ गंगा न जाऊं यमुना न जाऊं ना कोइ तीरथ न्हाऊं ॥ अडसठ तीरथ घटके भीतर तिनहीं में मल मल न्हाऊं॥ औषध न खाऊं बूटी न लाऊं ना कोइ वैद्य बुलाऊं ॥ पूरन गुरु मिले अविनाशी भर्मके पुरजे उडाऊं ॥ ज्ञान कटारा कस कर बांधों सुरति कमान चढाऊं ॥ पांचों चोर बसें घटभीतर उनको मार गिराऊं ॥ योगी होय न जटा बढाऊं न अंग विभूति रमाऊं॥ जो रँग रँग्यो आप विधाता और क्या रंग लगाऊं॥ डाली न छेडूं न पत्ता तोडूँ ना कोइ जीव सताऊं॥ देहरा न पूजों न देवल पूजों परम ज्योति मिल जाऊं॥ चंद्र सूरज दोउ सम कर राखों सुखमन सेज बिछाऊं॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो आवागौन मिटाऊं॥ ३९९ ॥

शब्द।

जब पलाश फूलन पर आवै॥ पात पात कर आप लुटावै॥ काला मुँह कर जग दिखलावै तब॥लालनकी लाली पावै॥४००॥

राग भैरवी ।

की कुछ भेट सुदामें आँदी बीज की पाया घन्ने ॥ बक्कुलियां दी टिंड चबाई और चबाये गन्ने ॥ रोटी उत्ते साग खिलाया छाह पलाई छन्ने ॥ तिन्हां नाल शरी कत केही साहिब जिन्हां दी मन्ने ॥ ४०१ ॥

कवित्त ।

अंगुरी पै गिरि धारचो गोकुला बचाय लीनी, विपति तो सुदामाजू की छिन में मिटाई है ॥ द्रौपदीकी लाज कीनी भरी सभामें न जान दीनी, पारथकी भारत में कीनी सहाईहै ॥ जहां जहां भीर परी तहां तहां रक्षा करी, कहत कबि मार्कंडे ऐसे होत आई है ॥ बार बार कर पुकार कहों सुनो दीनानाथ, मेरी वेर एती देर काहेको लगाई है ४०२ ॥

सवैया ।

लाय समाधि रहे ब्रह्मादिक योगी भये पर अन्त न पाये ॥ सांझ के भोरहिं भोरके सांझहि शेष सदा नित नाम जपाये ॥ ढूंढ फिरे त्रैलोकी में साखी सु नारद लेकर वीण बजाये ॥ ताहि अहीरकी छोहरियां छछियाभर छांछपर नाच नचाये ॥ ४०३ ॥

राग तिलंग ।

दीनानाथ अब बार तुम्हारी ॥ पतित उधारन बिरद जानके बिगरी लेहु सँवारी ॥ बालापन खेलत ही खोयो युवा विषय रस माते ॥ वृद्ध भये सुध प्रगटी मोको दुखित पुकारत ताते ॥ सुत न तज्यो प्रिया ना तज्यो भ्रात तज तनुते त्वचा भई न्यारी ॥ श्रवण न सुनत चरण गति थाकी नैन भये जल धारी ॥ पलित केश कफ कण्ठ महँध्यो कल न पडे दिन राती ॥ माया मोहन

छांडैं तृष्णा यह दोऊ दुखदाती ॥ अब यह व्यथा दूर करबको और न समरथ कोई ॥ सूरदास प्रभु करुणासागर तुमते होय सो होई ॥ ४०४ ॥

रे मन मूरख जन्म गँवायो ॥ कर अभिमान विषय सों राच्यो श्याम शरण नहिं आयो ॥ यह संसार फूल सेमरको सुन्दर देख लुभायो ॥ चाखन लाग्यो रुई उडगई हाथ कछू नहिं आयो ॥ कहा होत अबके मन सोचे पहिले नाहिं कमायो ॥ सूरदास भगवंत भजन बिन शिर धुन धुन पछितायो ॥४०५ ॥

राग देश।

कहां लगाई एती देर ॥ अरे अरे सांवरे रे ॥ हौं गुजराती शिव को उपासी पूजों सांझ सबेर ॥ भक्ति मर्मकी सार न जानो हांसी कराई मेरी ढेर ॥ ऊँचे चढके टेर सुनाऊँ अब सुनियो म्हारी टेर ॥ क्या कहीं काज सवाँरे भगतनके क्या निद्रा ने लिये घेर ॥ नरसी के प्रभु अधम उधारन राखिये अबकी बेर ॥ ४०६ ॥

राग खमाच।

कैसी बँसिया बजाय जादू डारा रे ॥ श्रवण सुनत नहिं परत चैन तन मन तुमपै वारा रे ॥ बांकी छबि दिखलाई चित चपल चलाई ऐसी बातें बतलाई मेरा जिया ललचाई कर तिरछी नजर भर मारा रे॥जाकी मधुरी हँसन मुसकान तकन झमकन झुमकन कर मुरली लसन धर ध्यान दुलारे मन थारा रे ॥ ४०७ ॥

राग तिलंग।

जग जानी कछु मसलत करले जांदी रैन बिहानी ॥ तेरे कोलो लख चल चल जांदे तैं मन एक न आनी ॥ एक घडी हरि भजन न कीता दिसदा काल सिरानी ॥ शाहहुसेन फकीर साईंदा आखर दुनिया फानी ॥ ४०८ ॥

राग बरवा ।

मन मस्ताइय छड हो यारा ॥ यह दिन जांदे गिणवे ॥ आगे मंजलां भारियां गौरे भार न लद वो यारा ॥ मगमंगदा बादसाहीयां मनदे आँखे न लग होय यारा ॥ शाहहुसेन फकीर साईंदा मन मुरशिद बिच लभ वो यारा ॥ ४०९ ॥

राग विहाग ।

घूघट चक सज्जना हुन शरमां केहीयां रखीयां वे ॥ जे जाना तूं एवें करनी मैं मूल न लांदी अखियां वे ॥ दो नैनां दा तीर बनाया मैं आजज दे सीने लाया घायल करके मुख छपाया यह घातां किन दसीयां वे ॥ जुलफ कुंडल ने घेरा पाया विछु अर बनके डंग चलाया कहुरवां तेरे की हथ आया एह रीतां कित्थों सिखीयां वे ॥ मैं अयाणी नेहुडा की जाणा तिंजन बैठी मौजां माणां इशक तेरा मैनूं सौण न देंदा मैं डरदी आखन सकीयां वे ॥ हस रस के मैं लाइयाँ आपे रोशन होई नूं झिडकन मापे एक इशक दे वडे स्यापे तूं भुला बैठो अखीयां वे ॥ मैं बन्दी दा जे तूं मांड करदी नां आवीं फेरा पाई मिहर करीं ते मुख दिखलाई मैं काग उडांदी थकीयां वे ॥ बुल्हे शाह ने ना तरसावीं करी अनायत मैं बल आवीं शाह अनायत गल नाल लावीं मैं तेरी हो हो नच्चीयां वे ॥ ४१० ॥

गजल ।

श्यामकी ऊधो जुदाई अब सही जाती नहीं ॥ न चैन दिनको रातको आंखों में नींद आती नहीं ॥ बेवफा हमसे खफा हो जा दिया सौतनको दिल ॥ क्या खता मेरी खबर भेजी कोई पाती नहीं ॥ दिल दिया गैरोंको हमदम गमदिया हमको सनम ॥ अब कोई मिलने की सूरत हमको दिखलाती नहीं ॥ छोड कर

माखन औ मिसरी वह गये पीनेको छाँछ ॥ ताब जुगनू की कहीं महताब को पाती नहीं ॥ क्या कहैं गोकुल के तुमसे हाल बरसाने के हम ॥ कुंजकी कोई गली हरगिज हमें भाती नहीं ॥ उनकी उलफतमें हमेशा गोपियां गाती थीं राग ॥ वह गये जबसे कोई गाती हैं परभाती नहीं ॥ कानों में मुद्रा गले सेली मलें तनुमें विभूत ॥ होवें हम योगिन उन्हें कहते शरम आती नहीं ॥ मार कर आसन लिये माला करो कुंजन भजन ॥ यह सखुन लिखते तबीअत तरस कुछ खाती नहीं ॥ आइये गोकुल मनोहर आरजू करते गणेश ॥ है कोई दाना सखी हम दमको समझाती नहीं ॥ ४११ ॥

कवित्त ।

दास तो तिहारे जो उदास तो तिहारे दूर पास तो तिहारे आम खास तो तिहारे हैं ॥ दीन तो तिहारे मतिहीन तो तिहारे जो नवीन तो तिहारे पराचीन तो तिहारे हैं ॥ कूर तो तिहारे गुणपूर तो तिहारे राचे नूर तो तिहारे सांचे शूर तो तिहारे हैं ॥ भायक तिहारे यशगायक तिहारे हो सहायक हमारे हम पायक तिहारे हैं ॥ ४१२ ॥

सुदामा तन हेरे तो रंक हू ते राव कीने, बिदुर तन हेरे तो राजा कीने चेरे ते ॥ कूबरी तन हेरे तो सुंदर स्वरूप कीने, द्रौपदी तन हेरे तो चीर बाढे टेरे ते ॥ कहत छत्रशाल प्रहलादकी प्रतिज्ञा राखी, हरनाकुश मारयो का नेक नजर फेरे ते ॥ कामी अभिमानी गुनी ज्ञानी भये कहा होत, नामी नर होत गरुडगामी के हेरे ते ॥ ४१३ ॥

राग धनाश्री ।

जन्म गँवायो ऊआ बाई ॥ भजे न चरण कमल यदुपतिके रह्यो विलोकत छाई ॥ धन यौवन मद ऐंडो ऐंडो ताकत नारि पराई ॥ लालच लुब्ध श्वान जूंठन ज्यों सोऊ हाथ न आई ॥ रंचकांच सुख लाग मूढ़ मति कंचन राशि गवांई ॥ सूरदास प्रभु छांड सुधारस विषय परम विष खाई ॥ ४१४ ॥

राग सोरठ ।

नहीं ऐसो जन्म बारंबार ॥ क्या जानूं कछु पुण्य प्रगट मानुसा अवतार ॥ बढ़त पलपल घटत छिनछिन चलत न लागे बार ॥ बिरछ के ज्यों पात टूटे लगे नहिं पुनिडार ॥ भवसागर अति जोर कहिये विषम औखी धार ॥ सुरत का नर बांध बेडा बेग उतरो पार ॥ साधु संतां ते महंतां चलत करत पुकार ॥ दास मीरां लाल गिरिधर जीवना दिन चार ॥ ४१५ ॥

राग देश ।

कहि न जाय छवि राधावरकी ॥ चटकीली उरमाल विराजे मटकीली गति श्याम सुन्दर की ॥ मोती लोल चारु नासामें चन्दन खौर आड केसरकी ॥ अटक रह्यो मन ललित माधुरी निरख लटक वा मुरलीधरकी ॥ ४१६ ॥

रेखता ।

फरजंग नंदजूका मन बीच भामदा ॥ वर पायोहै कहांसे सुन्दर सुहामदा ॥ लटकों की चाल चलता प्यारा मेरे आमदा॥ गल जामा है जरी का कटि काछनी बनी ॥ पीले दुपट्टे वाला बीडे चबामदा ॥ कुण्डल झलकते हैं दरुस्त गोशे में ॥ आवाज

बाँसुरी की शीरीं बजामदा ॥ काँधे कमरिया सोहै गैया चरामदा ॥ मीर माधो बलिहारी यश तेरा गामदा ॥ ४१७ ॥

राग सिंध।

दसीयो मोहन किस दानी ॥ आवंदा जावंदा नजर न आवे अजब तमाशा इसदानी ॥ दधि मेरी खायो मटुकिया फोरी लोभी यह गोरस दानी ॥ मात यशोदा दही बिलोवे माखन लैलै नमदानी ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर लूंलूं दे बिच रसदानी ॥ ४१८ ॥

राग सिंधडा।

क्या कहें आलममें इन्सान या हैवान थे ॥ खाक थे क्या थे गरज इक आनके मिहिमान थे ॥कर रहे थे अपना कब्जा गैरों के इमलाक पर ॥ छीनली जब उसने तो जाना कि हम नादान थे ॥ एक दिन इक उस्तख्वाँ पर जापडा मेरा जो पाउँ ॥ क्या कहें उस वक्त मेरे दिलमें क्या क्या ध्यान थे ॥ पाउँ पडतेही गरज उस उस्तख्वाँ ने आह की ॥ अरकहा जालम कभी हमभी तो साहिब जान थे ॥ दस्तो पा जानूँ शिरो गर्दन शिकम पुश्तो कमर ॥ देखने को आंख और सुन्नेकी खातर कान थे ॥ अबरू ओ बीनीजबी नकशो नगारे खालो खत ॥ लाल मरवारीद से बिहतर लबो दंदान थे ॥ रातके सोनेको क्या क्या नरमो नाजुक थे पलंग ॥ दिनकी खातर बैठनेको ताक औ ऐवान थे ॥ लग रहाथा दिल कहीं चंचल परीजादोंके साथ ॥ कुछ किसीसे अहद था और कुछ कहीं पैमान थे ॥ गुलबदन और गुलअजारों मे कनारो बोस्ता ॥ कुछ निकालेथे हवस कुछ और भी अरमान थे ॥ होरही थी चहचही और मच रही थी कहकही ॥ साकी औ

सागर सुराही अतर फूल और पान थे ॥ एकही चक्कर अजल ने आनकर ऐसा दिया ॥ न तो हम थे न वह सारे ऐश के सामान थे ॥ ऐसी बेरहमी से मत रख पाऊँ हमपै ऐ नजीर ॥ वो मियाँ हमभी कभी तेरी तरह इन्सान थे ॥ ४१९ ॥

राग पहाडी ।

गोविंद लीना मोल ॥ कोई कहै महँगा कोई कहै सस्ता लिया तराजू तोल ॥ व्रजके लोग करें सभ चर्चा लिया बजाके ढोल ॥ सुर नर मुनि जाको पार न पावें ढक लिया प्रेम पटोल ॥ जहर प्याला रानाने भेज्या पिया में अमृत झोल ॥ मीरा प्रभुके हाथ बिकानी मैं सर्वस दीना घोल ॥ ४२० ॥

राग पीलो ।

व्रजमोहन आयो रे ग्वालिन मिलन चली ॥ मोहनी बिरहों विराजे रे शिरापर झूल रही ॥ गल नरमेदा जामे रे मोतियां तनी ओ तनी ॥ राधे शिर धर मटुकी रे बेचा में दूध दही ॥ केहा चेटक लायो वे भुल गया दूध दही ॥ पुत्र नंद वाला वे कीता मैं आज सही ॥ लक पटीया सोहे वे हीरीयां जडत जडी ॥ श्यामा मैं नहीं रहना वे तेरी या व्रज नगरी ॥ विच मथुरा नगरी आवे कान्हा जगात लई ॥ यश केवल गावे रे चरनी में लाग रही ॥ ४२१ ॥

राग पहाडी ।

श्यामा तेरी बंशी सितम करेंदी ॥ यंत्र मंत्र जादू टोना पढ़ पढ़ मन वश करलेंदी ॥ जब सोऊं तो नींद न आवे अँखियाँ जल बरसेंदी ॥ कृष्णदास हित प्रीत रीत वश चरण कमल चित देंदी ॥ ४२२ ॥

राग जंगला ।

आली मोहिं लागत वृंदावन नीको ॥ घर घर तुलसी ठाकुर पूजा दर्शन गोविंदजीको ॥ निर्मल नीर बहत यमुनाको भोजन दूध दही को ॥ रत्न सिंहासन आप विराजे मुकुट धर्‍यो तुलसी को ॥ कुंजन कुंजन फिरत राधिके शब्द सुनत मुरली को ॥ मीराके प्रभु गिरधर नागर भजन विना नर फीको ॥ ४२३ ॥

राग रामकली ।

निरख सखी शोभा श्रीराम की ॥ मग्न भई लग्न लागी हीयरामें सुध न रही तन मन धन धाम की ॥ साँवरे वरण मनके हरण मनसिज मन मोह करण अरुण वरण सुंदर अभिरामकी ॥ पीत वसन कंद दशन मंद हसन लसन फसन अलक कुण्डल बर बाम की ॥ रत्न हरी कर विचार पल पल पर प्राण वार छबि निहार दशरथ सुत श्याम की ॥ ४२४ ॥

गजल ।

हमनसे मत मिलो लोगो हमन रवफती हिवाने हैं ॥ खुशी का राह छोडा है कठिन में जा समाने हैं ॥ तजी खिदमत वजीरी की पाई लज्जत फकीरी की ॥ चढे किश्ती सबूरीकी फकरके यह मकाने हैं ॥ हमन दिन रैन रोतेहैं गमो मे जान खोतेहैं ॥ शूलों कि सेज सोते हैं विरहोंके यह निशाने हैं ॥ हमारा यार औ जानी पीवे हरि नामका पानी ॥ कि आखिर होवना फनी वली गमे समाने हैं ॥ ४२५ ॥

राग पहाडी ।

यशोदाजी के द्वारे पर नीमायं मैं बार बार जानीयां ॥ गिरिधर मैनू नजर न आवे सौ सौ फेरा पानीयां ॥ लाजकी मारी मैं

कुछ नहीं सकदी दूतां थों शरमांनीयां ॥ कृष्ण सखी प्यारे दर्शन बाझौ कुञ्ज वांगू कुरलानीयां ॥ ४२६ ॥

राग जंगला ।

रघुवर चरण शरण सुखदायक क्यों न गहो मन मेरे ॥ कोटि जन्मके संचित सगरे पाप विनाशें तेरे ॥ जिन चरणन की शरण गही ते उधरे पतित घनेरे ॥ अजामील गणिका गज गीधन हरि पुर किये बसेरे ॥ जिन चरणन की रेणु परस मुनि पत्नी तरी सबेरे॥ भालु भील रजनीचर वानर काट गये भव फेरे ॥ कोटि कलंक मिटे कुमतिन के जिन चरणन के हेरे ॥ रत्नहरी हम जान भयेहैं इन चरणनके चेरे ॥ ४२७ ॥

राग देश ।

मैंने थारा काई बिगारयो काज ॥ मोसे क्यों रूसे महराज ॥ लोक लाज कुल कान गवाँई तज कुटुंब शरणागत आई कीनी प्रीत नन्द के नन्दन छाँडत आई न तोको लाज ॥ कुब्जा कूड कंसकी दासी जा मुख देखत आवत हांसी ऊंच नीच तुमने कछु न विचारी चेरी करी शिरताज ॥ इतनी विनती मानो हमारी जन्म जन्म की मैं दासी तिहारी श्रीव्रजनिधिके कुञ्जविहारी आन उधारो मोहिं आज ॥ ४२८ ॥

राग सिंध ।

आज अति बाढयोहै अनुराग ॥ पूत भयो री नंद महरके बडे प्रेम बडभाग ॥ दई सबच्छ लच्छ धेनू अरु नंद बढायो त्याग ॥ गुनी गण वंदी जन सब मांगत पायो अपनो लाग ॥ कूदें ग्वाल मनो रण जीते आनंद फूले बाग ॥ गोपी गोप ओप

सबके मुख गावत मङ्गल राग ॥ हरद दूध दधि माखन छिड़-कत मच्यो बधैया फाग ॥ परमानंद दास भक्तन के भयो सो परम सुहाग ॥ ४२९ ॥

राग पीलो ।

आज माई गोकुल भयो री आनन्द ॥ रानी यशोमति बालक जायो प्रगटचो पूरण चन्द ॥ व्रज वनिता सब बन ठन आई गावत नाना छंद ॥ सूरदास प्रभु पूरण प्रगटे मेट दिये दुख द्वन्द ॥ ४३० ॥

राग जंगला ।

कोई असां नाल चल्ले मेरीयो सैयो नी ॥ असां तां मुलक अडिठड़े नूं जावनां ॥ अडिठड़े देशके मरहम नाहीं खर्च नहीं कछु पल्ले ॥ दूर गयाँ दी खबर न आइया कोई सुनेहडा घल्ले ॥ कतने कारन गोहड़े आंदे चर्खा मूल न हल्ले ॥ हार सिंगार सभी कुछ देनीहां दस्ना दे देनीहां छल्ले ॥ एथोंदा खटिया एथे रह-जाना झाड पल्लू उठ चल्ले ॥ शाहहुसेन फकीर साईंदा आखर जाना इकल्ले ॥ ४३१ ॥

राग पहाड ।

हमरी प्रणाम बांके विहारी को ॥ मोर मुकुट माथे तिलक वि-राजे कुंडल अलकां कारी को ॥ अधर मधुर धर बंशी बजावे रीझ रिझावै राधा प्यारी को ॥ यह छवि देख मग्न भई मीरा मोहन गिरिवर धारी को ॥ ४३२ ॥

शब्द ।

हर हर हर भज मेरया मना यह औसर नहिं पावेगा ॥ अधम कर्म ते बाज न आवे बाँध्याय मपुर जावेगा ॥ सोई यो तेरे सङ्ग

चलेगा सन्त जना भुगतावेगा ॥ गाढे काम न कर मेरे जीउडे फेर जन्म नहिं आवेगा ॥ नाथ नवल गुरु मिहर करे भव सागर तर घर जावेगा ॥ ४३३ ॥

राग प्रभाती ।

इके रामे नूं नहीं सभालदा ॥ नर देह अमोलक पाइयां विषयां संग लाग गवाँइया चंगा औसर ऐवें तूं टालदा ॥ मिल गोविंद प्रीत न मानिया तेरा जिद अजाई जानिया भय करिये जमदे जालदा ॥ तेरे शिरपर लेखा लेखिये जग कूड पसारा पेखिये सुपने ज्यों बाजी देखिये कुछ तोसा करले नालदा ॥ हरिनाम गुनाहीं वखूशदा यम संकट ते प्रभु रखदा सच्चा नाथ सुनिहडा आखदा तै नूं भय न व्याधे कालदा ॥ ४३४ ॥

आनंद मंगल गावो मोरी सजनी। भयो प्रभात बीत गई रजनी॥ उदर निरंतर फूली फुलवारी । तहां मेरी मनसा करे रखवारी ॥ बरखे अमी नाना फल लागे । कही न जाय कछु अचरज वाके ॥ बिरछा एक अमृत फल लागे । पावें गे कोई संत सभागे ॥ कहत कबीर गूंगे की सैना ॥ सतगुरु शब्द परख कर लेना ॥ ४३५ ॥

भला जाग रे सारी रैन बिहानी ॥ जात जन्म अंजली को पानी ॥ घडा घडी घडियाल बजावे ॥ चंद्र सूरज तुझे कह समुझावें ॥ पल पल औध घटत नित जावे ॥ गया श्वास कभी हाथ न आवे ॥ बहता पानी तरुवर छाया ॥ छिन छिन काल ग्रसे तेरी काया ॥ बाल अवस्था खेल गँवाई ॥ भर ज्वानी कछु काम न आई ॥ सतगुरु सेवा यह धन माया ॥ दास कबी रचर-ण लपटाया ॥ ४३६ ॥

कवित्त।

गुणीजन सेवक रु चाकर चतुरके हैं, कबिनके मीत चित हित गुणगानी के ॥ साधनसों सीध महाबाँके हम बाँकन सों,हरिचंद नकद दमाद अभिमानी के ॥ चाहबे की चाह काहूकी न कछु परवाह, नेही नेहके दिवाने सूरत निवानी के ॥ सर्वस रसिक के सुदास दास प्रेमिनके, सखा प्यारे कृष्णके गुलाम राधारानी के ॥ ४३७ ॥

सवैया।

धूत कहो अवधूत कहो रजपूत कहो जुलहा कहो कोऊ ॥
काहूकी बेटी सों बेटा न ब्याहन काहूकी जात बिगार न सोऊ॥
तुलसी सरनाम गुलाम है राम को जाके रुचै सो कहो कछु ओऊ॥
मांगके खैबो मर्जीतको सोयबो लेबेको एक न देबेको दोऊ॥४३८॥

कवित्त।

लाजको जहाज डूब्यो शीलको समुद्र सूख्यो, दयाके खजाने कीनो नाली कोऊ लै गयो ॥ सत्यहू की कोठी लूटी धर्मकी धुजाही टूटी, पाप घर घर घट घट बीच छै गयो ॥ संतनको दोष कहा होत कोऊ देत नाहीं, नाहीं को नकाब घर घर में कह गयो ॥ संत कहैं चेत रे तूं चेत रे अचेती नर, पुण्य धर्म दया बीज अंश कहँ रह गयो ॥ ४३९ ॥

राग झूलना।

दुनियाके परपंचों में हम मजा नहीं कछु पायाहै ॥ भाई बंधु पिता माता सुत सबसों चित अकुलायाहै ॥ छोड छाँड घर गाम नाम कुल यही पंथ मन भायाहै ॥ ललित किशोरी आनंद घन सों अब हठ नेह लगाया है ॥ ४४० ॥

क्या करनाहै संतति संपति मिथ्या सब जग माया है ॥ शाल दुशाले हीरा मोती में क्यों मन भर्मायाहै ॥ माता पिता पुत्र बंधू सब गोरख धंध बनाया है ॥ ललित किशोरी आनँद घन हरि हिरदे कमल बसाया है ॥ ४४१ ॥

राग होरी ।

राधावर खेलत होरी ॥ नंदगामके ग्वाल इते उत बरसानेकी गोरी ॥डफ करताल बजावत गावत केसर कुंकुम घोरी ॥ परस्पर रंग में बोरी ॥ दशहूं दिशान गुलाल घुमंड में काहू कछु लखै न परो री ॥ उचक आय धाय चन्द्रावलि ललितादिक लै दौरी ॥ गह्यो हरिको बरजोरी ॥ गारी गावत नारी सभी मिल नागरी योवन जोरी ॥ नंदके लाल बडे रसिया हो करो इनसों बरजोरी॥ फाग में कौन की चोरी ॥ छीन लई बनमाल मुरलिया पीत बसन लियो छोरी ॥ नागरी वेष बनाय कहत देखो नंदराय की छोरी ॥ बनी छबि काम करोरी ॥ तारी दंदे नचावत ग्वालिनि अपनी अपनी ओरी ॥ वा दिनकी सुध भूली लला यमुना तट चीर हरो री ॥ आज यह दाँव परो री ॥ कृष्णरंग मन भावत फगुवा लेकर बहुत निहोरी॥ हौं अधीन वृषभानु सुताके विनय करों कर जोरी ॥ लाज कछु रहीहै न थोरी ॥ ४४२ ॥

सवैया ।

आपनी ओरकी चाहें लिखी लिखीजात कथा उत मोहन ओरकी ॥
प्यारे दया कर वेग मिलो सही जात व्यथा नहिं मान मरोर की ॥
आपहिं बांचत अंग लगावत हो किन आनी चिठी चितचोरकी ॥
राधिके मौन रही धर ध्यान औ ह्वैगई मूरति नंदकिशोर की४४३॥

कवित्त।

मुनि मख राख्यो मार ताडका सुबाहु वीर, चरण छुवाय जिन शिला तार दीना है॥ सो कवि रसील आय मिथिला शहर माहिं, नर अरु नारिनको मन हरलीना है ॥ सोई यह सलोने सुकुमार दशरत्थजूके, गजत निहार कोटिकाम छवि छीनाहै ॥ मेरी महारानी तीन लोकमें प्रमानी सिया, सोनेकी अँगूठी राम साँवरो नगीनाहै ॥ ४४४ ॥

राग झूलना।

जङ्गलमें अब रमते हैं दिल बस्ती से घबराताहै ॥ मानुष गन्ध न भाती है संग मर्कट मोर सुहाना है॥ चाक गरेवाँ करके दमदम आहीं भरने भाता है ॥ ललित किशोरी इश्क रैन दिन यह सब खेल खिलाना है ॥ ४४५ ॥

राग झिंझोटी।

तेरी खातर श्यामां वे मैं योगिन होइयाँ ॥ अङ्ग अग छाई श्यामां वे मैं मल मल रोई प्रीति लगी तन बारी ॥ केधर जावां श्यामा वे मैं केन्हू आखाँ ॥ प्रीत लगी श्यामा दिल अन्दर राखाँ ॥ विरहों दी अग्नि करके मैं जारी ॥ तैनाँ श्यामाँ मेरी सुधहूँ न लीनी ॥ व्याकुल करके वे मैं कमली कीनी ॥ चन्दसखी बलिहारी ॥ ४४६ ॥

छला मोको यमुना जान न देय नन्दमहर दा छू करू ॥ बालूडा तोडे मेरा चोलूडा फाडे छैलावे मैकी हँस हँस गारीयाँ देय ॥ चोलूडा फाडे मेरा तालूडा तारे छैलावे सानूँ हस्से गलाँ-दा केय ॥ जित मिलदा तित करे मसूरताँ छैला व साडा

लगाँदा नेह ॥ कीकर बसना गोकुल नगरी छैलावे एहनूं कोई समझावो एह ॥ मयाराम असीं देखी देखी जीवना छैलावे साडे मन तन बस रहचा एह ॥ ४४७ ॥

राग बिलावल ।

ऊधो इतनी कहियो जाय ॥ अति कृश गात भई हैं तुम बिन बहुत दुखारी गाय ॥ जल समूह वर्षत अँखियन ते हूंकत लैलै नाउँ ॥ जहाँ जहाँ गउ दोहन करते ढूंढ़त सोइ सोइ ठाउँ ॥ परत पछार खाय तेही छिन अति व्याकुल ह्वै दीन ॥ मानों सूर काढ डारी हैं बारि मध्य ते मीन ॥ ४४८ ॥

राग सोरठ ।

मेरी कौन गति ब्रजनाथ ॥ भजन विमुख अरु शरण नाहिन फिरत विषयन साथ ॥ हौं पतित अपराध पूरण भर्‍यो काम विकार ॥ काम कुटिल अरु लोभ चितवन नाथ तुम न विसार ॥ उचित अपनी कृपा करहो तऊ जान्यो जाय ॥ सोऊ करहो जे चरण सेवे सूर जूँठन खाय ॥ ४४९ ॥

राग होरी ।

ऊंचो गोकुल गाम जहाँ हरि खेलत होरी ॥ चल सखि देखन जाहिं पिया अपने की जोरी ॥ बाजत ताल मृदंग और किन्नर की जोरी ॥ गावत देदे गारि परस्पर भामिनि गोरी ॥ बुका सुरंग अबीर उडावत भर भर झोरी ॥ इत गोपिनके झुण्ड उत हरि हलधर जोरी ॥ नवल छबीले लाल तनी चोली की तोरी ॥ राधा चली रिसाय ढीठसों खेले को री ॥ खेलत कैसो मान सुनो वृषभानु किशोरी ॥ सूर सखी उर लाये हँसत भुज गह झकझोरी ॥ ४५० ॥

राग सोरठ ।

प्रभु हो कबलों नाच नचैहो ॥ अपने जनके निलज तमाशे कबलौं जगहिं दिखैहो ॥ कबलौं इन बिमुखनके मुख सों निज गुण गणहिं लजैहो ॥ कबलौं जिनपै सतत हँसत यम तिनसों हमहिं हँसैहो ॥ छिन छिन बूडत जात पंक लख मोहिं कब चित्त द्रवैहो ॥ जन्म जन्मके निज हरिचन्दहिं फिरिकै कब अपनैहो ॥ ४९१ ॥

कुंडलिया ।

प्राण पुत्र दोऊ बडे चारों युग परमान ॥ सो दशरथ नृप परिहरचो वचन न दीनो जान ॥ वचन न दीनो जान बडेन की बूझ बडाई ॥ बात रहे सो काज और वरु सर्वस जाई ॥ कह गिरिधर कविराय भये दशरथ प्रणवाना ॥ वचन कहे नहिं तजे तजे निज सुत अरु प्राणा ॥ ४९२ ॥

रही न रानी केकयी अमर भई यह बात ॥ कौन पूर्वले पाप ते वन पठयो जगतात ॥ बन पठयो जगतात कन्त सुरलोक सिधारचो ॥ जिहिं सुतकाजहि मरचो राउ नहिं वदन निहारचो ॥ कह गिरिधर कविराय भई यह अकथ कहानी ॥ यश अपयश रहिगयो रही नहिं केकयि रानी ॥ ४९३ ॥

साईं वैर न कीजिये गुरु पंडित कवि यार ॥ बेटा वनिता पौरिया यज्ञकरावन हार ॥ यज्ञ करावनहार राजमंत्री जो होई ॥ विप्र परोसी वैद आपको तपै रसोई ॥ कह गिरिधर कविराय बात चतुरन के ताई ॥ इन तेरह सों तरह दिये बनिआवै साईं ॥ ४९४ ॥

दौलत पाय न कीजिये सुपने में अभिमान ॥ चंचल जल दिन चार को ठाउं न रहत निदान ॥ ठाउं न रहत निदान जियत जग में यश लीजे ॥ मीठे वचन सुनाय विनय सबही की

कह गिरिधर कविराय अरे यह सब घट तोलत ॥ पाहुनि निशि-दिन चार रहत सबहीके दौलत ॥ ४५५

गुणके गाहक सहस नर बिन गुण लहै न कोय ॥ जैसे कागा कोकिला शब्द सुने सभकोय ॥ शब्द सुने सभकोय कोकिला सबहि सुहावन ॥ दोऊ एकै रंग काग सभ भये अपावन ॥ कह गिरिधर कविराय सुनो हो ठाकुर मन के ॥ बिन गुन लहै न कोय सहस नर गाहक गुनके ॥ ४५६ ॥

चूकै कबहुं न चुगुल नर अरु चूकै सभकोय ॥ बरकन्दाज कमानियां चूक उन्होंमे होय ॥ चूक उन्हों से होय जे बांधैं बर-छी गुल्ला ॥ चूक उन्होंमे होय पढ़ै पंडित अरु मुल्ला ॥ कह गि-रिधर कविराय कलाहू ते नट चूकै ॥ चुगुल चौकसीदार ससुर कबहूं नहिं चूकै ॥ ॥ ४५७ ॥

नैनोंकी नोकै बुरी निकसि जात जस तीर॥हेरे घाव न पाइये बंधा सकल शरीर ॥ बंधा सकल शरीर बैद क्या कर बैदाई ॥ करिहो कोटि उपाय घाव नहिं देत दिखाई ॥ कह गिरिधर कवि-राय बिरहनी देत है चोकै ॥ समझ बूझके चलो बुरी नैननकी नोकै ॥ ४५८ ॥

विना विचारे जो करे सो पाछे पछताय ॥ काम बिगारे आपना जग में होत हँसाय ॥ जग में होत हँसाय चित्त में चैन न आवै ॥ खान पान सन्मान राग रंग मनही न भावै॥कह गिरि-धर कविराय दुःख कछु टरत न टारे ॥ खटकत है जिय माहिं कियो जो विना विचारे ॥ ४५९ ॥

बीती ताहि विसार दे आगेकी सुध लेहु ॥ जो बनिआवे सह-जहीं ताहीमें चित देहु ॥ ताही में चित देहु बात जोई बनि-

आवै ॥ दुर्जन होय न कोय चित्त में खता न पावे ॥ कह गिर-धर कविराय यही कर मन परतीती ॥ आगे को सुख होय समझ बीती सो बीती ॥ ४६० ॥

सांई अपने चित्तकी भूल न कहिये कोय ॥ तबलग मनमें राखिये जबलग काज न होय ॥ जबलग काज न होय भूल कबहूँ नहिं कहिये ॥ दुर्जन हँसे न कोय आप सियरे हो रहिये ॥ कह गिरिधर कविराय बात चतुरनके तांई ॥ करतूती कहदेत आप कहिये नहिं सांई ॥ ४६१ ॥

सांई अगर उजारमें जगत महा पछताय ॥ गुणगाहक कोऊ नहीं जाहि सुबास सुहाय ॥ जाहि सुवास सुहाय शून्य वन कोऊ नाहीं ॥ कै गीदर कै हरिण सो तो कछु जानत नाहीं ॥ कह गिरिधर कविराय बडा दुख यही गुसांई ॥ अगर आककी राख भई मिल एकै सांई ॥ ४६२ ॥

षट् पद ।

दया चट्ट होगई धर्म धँसिगयो धरन में ॥ पुण्य गयो पाताल पाप भयो बरन बरन में॥राजा करे न न्याव प्रजाकी होत खुवारी॥ घर घर भे बेपीर दुखित भे नर अरु नारी ॥ उलट दान गजपति लह शील सँतोप किते गयो ॥ वैताल कहे सुन विक्रम तो अब कलियुग परगट भयो ॥ ४६३ ॥

कुण्डलिया ।

कीच पीछले धोयके आगे नाहिं लगाव ॥ ऐसा तुझको फेर रे मिले न जल्दी दाव ॥ मिले न जलदी दाव भनत गुरु सुने न बहरे ॥ सर्व समग्री हुँदियां भूल्यो सिखर दुपहरे ॥ कह गिरिधर कविराय धँसो मत कर्दमबीच ॥ ऊँचे मारग चलो जहां फिर लगै न कीच ॥ ४६४ ॥

रकम भुलाई बदबखत ऐसो भयो बेहोश ॥ हिसाब म समझै अकल में देत औरको दोस ॥ देत और को दोष यही तो बडी खराबी ॥ तकब्बर मदिरापान कियो बनरह्यो शराबी ॥ कह गिरिधर कविराय धोखे चन्दन के ल्यायो बकम ॥ घर में पेड मलयागिरि नाहिं पछाने रकम ॥ ४६५ ॥

झगडा तन पाइया तूहीं इसे निबेर ॥ औरन से निबडे नहीं यही अटपटो फेर ॥ यही अटपटो फेर तुही सुरझाये सुरझे ॥ और लगायो हाथ तो उलटो दूनो उरझे ॥ कह गिरधर कविराय भ्रांतिका पटको पगडा ॥ अहंब्रह्म जप सदा तभी मिटिहैं यह झगडा ॥ ४६६ ॥

जङ्गल में मङ्गल तुझे जो तू होवे फकर ॥ खिदमत तेरी सभ करें जब दिलके छोडे मकर ॥ दिलके छोडे मकर फकीरी का रंग लागे ॥ मूलसहित संसार रोग मगरा भ्रम भागे ॥ कह गिरिधर कविराय कुफरके तोडे सङ्गल ॥ जहँ इच्छा तहँ रहो नगर हो अथवा जंगल ॥ ४६७ ॥

कथा यथा शुकदेव की कहत सुनत भये पार ॥ शम दम आदि विराग विन कर खावो रुजगार ॥ करखावो रुजगार मोक्षपद नाहीं पैये ॥ सुनी सुनाई बात कहूं साधूपद लहिये ॥ कह गिरिधर कविराय दुखावो काहे मत्था ॥ इक प्रत्यक बोध विहीन निरर्थक है सब कत्था ॥ ४६८ ॥

बेटा बेटी भारजा भाई सुत संसार ॥ पिता पितामह आदि जो सब शरीर के यार ॥ सब शरीरके यार नाहिं इनमें कोउ तेरो ॥ भयो तुझे परमाद जो बनरह्यो इनको चेरो ॥ कह गिरिधर कविराय सभनका झगडा मेटो ॥ ना तू बाप किसीका तेरा कोई न बेटो ॥ ४६९ ॥

रोना तेरा तब मिटै जब होवै निष्काम ॥ सकल वासना नाश बिन होय न तुझे अराम ॥ होय न तुझे अराम समझ मन तूं दिल अन्तर ॥ काटे महाभुजङ्ग पढे बिच्छूके मंतर ॥ कह गिरिधर कविराय अविद्याका तजो कोना ॥ आओ अपनी तरफ जहाँ फिर रहे न रोना ॥ ४७० ॥

किरपा देह अध्यामकी अविद्याको परताप ॥ बेमुख भये सरूपते जपै अनातम जाप ॥ जपै अनातम जाप न सार असार बिचारें ॥ लौकिक शब्द विचित्र परस्पर बैठ उचारें ॥ कह गिरिधर कविराय आपको मान्यो सिरपा ॥ भयो मलिन संकल्प देह अध्यासकी किरपा ॥ ४७१ ॥

कवित्त ।

पूंछ पूंछ मुख राखें मूछनके केश नाखें, मधु बैन भाषें कहैं हम ज्ञानी हैं ॥ देहको असत्य कहैं विषैनमें मन बहैं, भोगन को चित्त चहैं यही तो हैरानी हैं ॥ जबही आपको जाना तनु मिथ्या कर माना फेर, चहैं खूब खाना जानिये तूफानी हैं ॥ शिकल औलियाओंकी काम शयतानोंके हैं, जम्बुककी चाल चलैं सिंह जैसी बानी हैं ॥ ४७२ ॥

सवैया ।

तिल तैलके संग लहैं दुखको रस संगहिते जग ईख पेड़ाये ॥ फलसंगते पादप ईंट सहैं अरु गंधके सङ्गते फूल तपाये ॥ कर तन्दुल सङ्गति को जगमें पुनि शीश विषे तुप मूसल खाये ॥ तिल ईख समंकर खोटन संगत या जगमें दुख कौन न पाये ॥ ४७३ ॥
जिनके रथनेमि दरारन के मत सागर हैं अबलौं जगमाहीं ॥
जिन चापन गोसनके बल ते सम शैल बटोर धरे धर माहीं ॥
सुरराज डरे जिनके बलते यमराज जिते जिहिंते जग माहीं ॥

मन ते जगभीतर नाहिं रहे अब और रहे कहु को जगमाहीं ४७४॥
नादके लोभ तजे मृग प्राण सो बीन सुने अहि आप बँधाये ॥
मीन सो त्यांग अगाध जलै उर लोभ जगे गल लोह पहाये ॥
कागज की पुतली करिनी वश मत्त गयंद सो अंकुश खाये ॥
या भुविमंडलमाहिं सुनो उरलोभ करे दुख कौन न पाये ४७५॥
नभमें सुरलोक रचे हरिजी अरु भूमि विषे निधि क्षीर बनाये ॥
मणि हीरन के गिरि कूट रचे फल फूलन के वन कोटि उपाये ॥
सब लोकन को प्रभु पोषत हो सभ भूंख मिटे तुम में मन लाये ॥
बिन प्रेम कहा फल फूल दिये बिन ते पदपंकजकी रज पाये ४७६
वर कौन मँगों तुमते हरिजी थिर नाहिं रहे जग भीतर कोई ॥
नहिं राज रहे गज वाजि रहे तनुलौं मिटिजाय पिखों जग जोई॥
बिन ते पदकंज लहे न कहूँ सुख जो नर दूर फिरे तिहुँ लोई ॥
पदमंजुल जो सनकादि भजें तिनकी प्रभु सेव दिजे मम सोई ४७७
विधि एक अनीति रची जग में शुभ संतनके तन पेट लगायो ॥
मुख चार न फेर विचार कियो तृण पल्लव नाहिं अहार बनायो ॥
अति दीन मलीन दुखी नर जो तिनके घर भीतर भीख मँगायो ॥
मनकेअनुमाररचो जगकोविधिजानतहीं नहिं सीखबनायो ४७८॥
खान मिला अरु पान मिला बहु मान मिला धन धाम रहाई ॥
कुल मोट मिला गढ़तोप मिला पृथ्वी राज मिला सेन बहु पाई॥
पुत्र मिला अरु पौत्र मिला बहु मित्र मिला दिन दिन अधिकाई ॥
गजवाजिमिलावहुताजीमिलासबही सुखधूरसमानकहाई ४७९॥
प्रेम लग्यो परमेश्वर सों तब भूल गयो सगरो घर बारा ॥
ज्यों उनमत्त फिरे जितही तित नेक रहे न शरीर सँभारा ॥
श्वास उसाँस उठे सभ रोम चले दृग नीर अखंडित धारा ॥
सुंदर कौन करे नवधा विधि छाक परचो रस पी मतवारा ४८०॥

कवित्त ।

नीर बिन मीन दुखी क्षीर बिन शिशु जैसै, पीरकी औषध बिन कैसे रह्यो जात है ॥ चातक ज्यों स्वाति बूंद चंद को चकोर जैसे, चंदनकी चाहकर सर्प अकुलात है ॥ निर्धन ज्यों धन चाहे कामिनी को कंत चाहे, ऐसी जाकी चाह नाहि कछु न सुहात है ॥ प्रेमको प्रवाह ऐसे प्रेम तहां नेम कैसे, सुन्दर कहत यह प्रेमहीकी बात है ॥ ४८१ ॥

कुंडलिया ।

बानी बहुत प्रकार है ताको नाहीं अंत ॥ जोई अपने काम की सोई सुने सिधांत ॥ सोई सुने सिधांत संतजन गावत होई ॥ चित्त आन के ठौर सुने जो नित प्रति सोई ॥ यथा हंस पय पिये रहे ज्यों को त्यों पानी ॥ ऐसे लहे विचार शिष्य बहुविध है बानी ॥ ४८२ ॥

सवैया ।

जानु भुजा कटि केहरि के सम कंजप्रभा दृग हैं मदमाते ॥
कोटि सुरागण नाचत हैं अरु गंध्रब आय सभी पुर गाते ॥
भौन भँडार अपार भरे धन या विधि आप रचे सो विधाते ॥
यों विध याहि भई तो कहा जब जानकीनाथके रंग न राते ४८३॥
दश चार सौ भौन रचे जिनके इक आहि बली भुवमंडलमाहीं ॥
जिनके दश चार सौ भौन बली इक त्याग गये तृणज्यों घरमाहीं॥
दश चार सो भौन को भोगत है इक एकहिं राज करे जगमाहीं॥
दश बीसक ग्रामको राज लहे नर क्यों गरबे अपने उरमाहीं ४८४॥
धन ईश दियो जगभीतर जो बिन बुद्धि गयो न कछू फल पाये॥
शुभ संतनकी नहिं सेव करी अरु विप्रनते नहि यज्ञ कराये ॥
नहिं कूप खने जलहेत कभी घरभीतर ना जलताल बनाये ॥

बलहीनन को सुखदान दिये नहीं दीननको दुख दूर मिटाये४८५॥
अपने हित त्याग करे परके हित ते नर उत्तम हैं जगमाहीं ॥
अपने हित संग करे परको नर आहि समान वही भवमाहीं ॥
अपने हित नाश करे परको हित राक्षस हैं नर ते जगमाहीं ॥
बिनही अपने हित नाशकरे परको हित ते नरकौन कहाहीं॥४८६॥
जो सुख है सतसंगति में चतुरानन में सुख नेक न पायो ॥
जो सुख इद्रके लोक नहीं अरु सो सुख शंभु के ध्यान न आयो॥
सो सुख जाप न ताप किये अरु सो सुख योग न ज्ञान दृढायो॥
सो सुखहै सतसंगतिमें अविनाशीके रूपमें जाय समायो॥४८७॥

राग प्रभाती ।

आपे खेल खिलाडी सतगुरु आपे लीला धारी है ॥ आसमान तें तंबू बनाया जमीं गलीचा भारी है ॥ चंद्र सूर्य्य दोउ मिसल बनाये तेरी कुदरत न्यारी है ॥ राम नाम का चौपड मांड्या तू पाँसा जग सारी है॥पाँसा चाहे तिसे जितावे सारी कौन विचारी है॥पंजों छिकयो नरद बचावे बाजी कठिन करारी है ॥ जिसकी नरद पक्की घर आवे सोइ यो सुघड खिलारी है ॥ शृंगी जैसे वनमें लूटे शंकर नेजा धारी है ॥ बडे बडे हंकारी लूटे रैयत कौन विचारी है ॥ जिनको बल है सतगुरु पूरा तिनका जगत भिखारी है ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो अबके जीत हमारी है ॥ धन धन केशवा कटत कलेशवा गावत शेश महेशवा रे ॥ गज के कारण धाये प्यादवा नाम धरायो हरि सँगवा रे ॥ प्रह्लाद दास प्रह्लादवाके कारण रघवाके भये अब बघवा रे ॥ ४८८ ॥

शब्द ।

राम फकीरी उन्हांदी थींदी बाग जिन्हांदा हरया ॥ अंद्रो शार्दा नाहरो बार्दी इश्क नगारा धरया ॥ शूरा ठिल्ल बडया बिच

रणदे मौतों मूल न डग्या ॥ हरगोविंद ओही शूरमां जो पंज जित घर बड़या ॥ पंजे मेरे वीर प्यारे नाउँ पंजांदा छेया ॥ पंजे मैनूं एउँ लग रहे ज्यों कमली नूं लेहा ॥ पंजे उठके करन त-गादा इक्को पंजां जेहा ॥ हरगोविंद इक बस्य न हुंदा दोष पंजां नूं केहा ॥ ४८९ ॥

यह मन लोभी लालची आँखे मूल न लग्गे ॥ कन्नी सुणदा आँ-खी देखे वाणी मूल न लग्गे ॥ श्रीभागवत गीता पढ़दे देखे पौन हुलारे वग्गे ॥ हरगोविंद सभ रुढ़दे देखे काम लहरके अग्गे ४९०॥

श्वासो श्वासीं कर गुजारा तेरा साहिब भला करेसी ॥ छेड तकब्बर ढेह पौ बूहे तेरी कदीं तां कूक सुनेसी ॥ मत संतोष न छड्डी बंदे होनी होय सो होसी ॥ हरगोविंद उठ भजन करो प्रभु बिरद की लाज रखेसी ॥ ४९१ ॥

सवैया ।

नाहिं फले जगमाहिं निशेश दिनेश फले जग में कछु काहीं॥
पुण्य बिना फल आहि कहाँ विधिलोक सो भूमि रसातल माहीं॥
नाहिं सुरेश फले जगमें सो महेश फले जगमें कछु काहीं ॥
और फले नहिं को जगमें कृत पुण्य फले द्रुम ज्यों ऋतु माहीं४९२॥
इक देवहिं वदत हो भुव में जोइ चातुर ते खल सेव कराये ॥
जग भिक्षुकको छिन एक भये महिमंडल राजको सुक्ख भुगाये ॥
महिमंडलके पति को छिन एक दरे दर माहिं सो भीख मँगाये ॥
भुवमाहिं अगाध गती तिनकी सभ हार परे गति कोय न पाये४९३
ढिग बैठ धनी नरके हरिजी निज प्राणन रोक सु बैन उचारे ॥
नहिं बैठ तपोवन में हरिजी फल खाय सदा तव नाम सँभारे ॥
धन पावन को निशि नींद तजी हरि पावन को नहिं नैन उघारे॥

जगमें शुभकाज बिसारतहों विधि कौन सुधा सुख पाउँ मुरारे ४९४
तातको आयसु मान चले जिनके पदपंकज पूजत लोई ॥ राज-विभूति तजी छिन में वनको निकसे जननी बहु रोई ॥ तो न फिरे पुर को हरिजू जब भ्रात गहे कर में पद दोई ॥ धर्म बराबर राज नहीं यह सूचत राम सनातन जोई ॥ ४९५ ॥

रघु भूप दिलीप तजी क्षितिहै अरु जाय बसेमो तपोवन माहीं ॥ अज नाभिको नंदन त्याग विभूति गयो वनको न रमें पुरमाहीं ॥ महिमंडल राजको त्याग दियो पुरमंडल त्यागनमें श्रम नाहीं ॥ अब औरन बात कहाकहिये रघुबीर विभूति तजी छिनमाहीं ४९६ ॥

जे चतुराननके सुत चार गही न विभूति रमे हरिमाहीं ॥ यद्यपि हैं हरि पूरण ते अबलौं गति हैं शुभ संतनमाहीं ॥ शेष समीप सुनें हरिको यश शंभु समीप सदा चल जाहीं ॥ होवत हैं गुण उत्तम नाश कुसंगतितें सनकादि डराहीं ॥ ४९७ ॥

शेष धरे धरनी शिर में अरु सूर फिरे सो सदा नभ माहीं ॥ धार गदा अबलों हरिजी बलि द्वार रहे सो पतालके माहीं ॥ धरे हला-हल लोक चरे हग शंकर नीठ धरे जगमाहीं ॥ प्राणसमान धरे व्रत को दुख भूरि भये व्रत टारत नाहीं ॥ ४९८ ॥

कवित्त।

एक ब्रह्म मुख सों बनाय कर कहतहैं अंतःकरण तो विकारन सोंइ भर्योहै ॥ जैसे ठग गोबरको कूपो भर राखत है सेर पंच घृत लेके ऊपर ज्यों कर्योहै ॥ जैसे कोई भाँड माही प्याज को छिपाय राखे चौथरा कपूरको ले मुख बांधि धर्यो है ॥ सुंदर कहत ऐसे ज्ञानी हैं जगत माहि तिनको तो देख कर मेरो मन हर्यो है ॥ ४९९

देह सों ममत्व पुनि गेह सों ममत्व सुत दारा सों ममत्व मन मायामें रहत है ॥ थिरता न लहै जैसे कंदुक चौंगान माहिं कर्मन के वश मारचो धक्का को सहत है ॥ अंतःकरण तो सदा जगत सों रच रह्यो मुखसों बनाय बात ब्रह्मकी कहत है ॥ सुंदर याहीते मोहिं अधिक अचंभो आहि भूमिपर परचो कोऊ चंद्रको गहत है ॥ ८०० ॥

एकनके वचन सुनत अति सुख होय, फूलसे झरत हैं अधिक मनभावने ॥ एकनके वचन तो असि मानो वरपत, श्रवनके सुनत लगत अलखावने ॥ एकनके वचन कटुक कटु विषरूप, करत मरत छेद दुख उपजावने ॥ सुंदर कहत घट घट में वचन भेद, उत्तम रु मध्य अरु अधम सुहावने ॥ ८०१ ॥

प्रथम हिये विचार डीम सों न दीजे डार, ताहीते सु वचन सँभार कर बोलिये ॥ जाने न कुहेत हेत भावे तैसी कहै देत, कहिये सो तब जब मन माहिं तोलिये ॥ सबहीको लागे दुख कोऊ नहीं पावे सुख, बोलके वृथाही तातें छाती नहीं छोलिये ॥ सुंदर समझ कर कहिये जु नीकी बात, तबहीं तो वदन कपाट गृह खोलिये ॥ ८०२ ॥

और तो वचन ऐसे बोलत हैं पशु जैसे, तिनके तो बोलवे में ढंगहू न एक है ॥ कोऊ रात दिवस बकत ही रहत ऐसे, जैसी विधि कूपमें बकत मानो भेक है ॥ विविध प्रकार कर बोलत जगत सब, घट घट प्रति मुख वचन अनेक है ॥ सुन्दर कहत ताते वचन विचार लहु, वचन तो वही जामें पाइये विवेक है ॥८०३॥

वचन ते आन मिले वचन विरोध होय, वचन ते राग बढे वचन ते दोष जू ॥ वचन ते ज्वाल उठे वचन शितल होय, वचन ते मुदित वचन ही ते रोष जू ॥ वचन ते प्यारो लगे वचन ते

दूर भगे, वचन ते मरजाय वचनते पोष जू ॥ सुन्दर कहत यह वचन को भेद ऐसो, वचन ते बंध होत वचन ते मोक्ष जू ॥५०४॥

देखै तो विचार कर सुनैं तो विचार कर, बोले तो विचार कर करे तो विचार है ॥ खाय तो विचार कर पीवे तो विचार कर, सोवे तो विचार कर जागे तो न टार है ॥ बैठे तो विचार कर उठै तो विचार कर, चले तो विचार कर सोई मतिसारहै॥ देय तो विचारकर लेय तो विचार कर, सुन्दर विचार कर याही निरधारहै ॥५०५॥

सवैया ।

जो परब्रह्म मिल्यो कोउ चाहत तो नित संत समागम कीजै ॥ अंतर मेट निरंतर ह्वैकर लै उनको अपनो मन दीजै ॥ वे मुख-द्वार उचार करें कछु सो अनायास सुधारस पीजै ॥ सुन्दर सूर प्रकाश भयो जब और अज्ञान सभी तम छीजै ॥ ५०६ ॥

कवित्त ।

धूल जैसो धन जाके शूल संसार सुख भूल जैसो भाग देखे अंत जैसी यारी है ॥ पाप जैसी प्रभुताई शाप जैसो सनमान बडाई बिच्छुन जैसी नागिन सी नारी है ॥ अग्नि जैसो इन्द्र-लोक विघ्न जैसो विधिलोक, कीरति कलंक जैसी सिद्धि सी ठगारी है ॥ वासना न कोई वाकी ऐसी मति सदा जाकी, सुन्दर कहत ताहि वंदना हमारी है ॥५०७॥

जिन तन मन प्राण दीने सब मेरे हेत, औरहू ममत्व बुद्धि आपनी उठाई है ॥ जागतहू सोवत हू गावत हैं मेरे गुण, करत भजन ध्यान दूसरो न कोई है ॥ तिनके मैं पीछे लाग्यो फिरत हों निशि दिन, सुन्दर कहत मेरी उनते बडाई है॥ वेहैं मेरे प्रिय मैंहूं उनके अधीन, सदा संतनकी महिमा तो श्रीमुख सुनाईहै॥५०८॥

साँचे उपदेश देत भली भली शिख देत, समता सुबुद्धि देत कुमती हरत हैं ॥ मारग दिखाय देत भावहू भगति देत, प्रेमकी प्रतीत देत अभग भरत हैं॥ ज्ञान देत ध्यान देत आतम विचारदेत, ब्रह्मको बताय देत ब्रह्ममें चरत हैं ॥ सुन्दर कहत जग संत कछु लेत नहीं, संतजन निशिदिन देबोही करत हैं ॥ ५०९ ॥

सवैया ।

प्रीति की रीत कछू नहिं राखत जाति न पाँति नहीं कुलगारो॥
प्रेमको नेम नहीं कहुँ दीसत लाज न कान लग्यो सब खारो ॥
लीन भयो हरिसों अभिअंतर आठोंही याम रहे मतवारो ॥
सुदर कोऊक जान सके यह गोकुलगामको पैंडोही न्यारो ५१०॥

है दिलमें दिलदार सही अँखियां उलटी कर ताहि चितैये ॥
आबमें खाकमें बादमें आतश जानमें सुन्दर जान जनैये ॥
नूरमें नूरहै तेज में तेजहै ज्योति ते ज्योति मिले मिलजैये ॥
क्या कहिये कहते न बनै कछु जो कहिये कहतेही लजैये॥५११॥

कवित्त ।

जाहिके विवेक ज्ञान ताहि के कुशल भयो, जाही ओर जाय बाको ताही ओर सुख है॥ जैसे कोई पायँन पैजारको चढ़ाय लेत, ताको तो न कोऊ काँटे खोबरे को दुख है ॥ भावे कोऊ निंदा करै भावे तो प्रशंसा करै, वे तो देखे आरसी में अपनोही मुख है ॥ देहको ब्योहार सभ मिथ्या कर जानत हैं, सुंदर कहत एक आतमाही रुख है ॥ ५१२ ॥

सवैया ।

सूरके तेजते सूरज दीसत चन्द्रके तेजते चन्द्र उजासी ॥ तारे के तेजते तारे हूँ दीसत बीजुली तेजते बीज चकासी ॥ दीपके

तेजते दीपक दीसत हीरेके तेजते हीरोही भासी ॥ तैसेही सुन्दर आतम जानहु आपके ज्ञानते आप प्रकासी ॥ ५१३ ॥

कवित्त ।

एक तो श्रवण ज्ञान पावक ज्यों देखियत मोयाजाल परसत वेगि बुझिजात है॥एक है मनन ज्ञान बिजली ज्यों घनमध्य माया-जल बरषत तामें न बुझात है ॥ एक निदध्याम ज्ञान वडवा अनल जैसे प्रगट समुद्रमाहिं मायाजल खात है॥ अनुभौ साक्षात ज्ञान प्रलैकी अगिनि सम सुंदर कहत द्वैतप्रपंच बिलात है॥५१४॥

भोजनकी बात सुन मनमें मुदित भयो मुखमें न परै जौलों मेलिये न ग्रास है ॥ सकल सामग्री आन पाकको करन लागो मनन करत कब जेंवों यह आस है ॥ पाक जब भयो तब भोजन करन बैठो मुखमें मेलत जाय यह निदध्याम है ॥ भोजन पूरण कर तृपित भयो है जब सुंदर साक्षातकार अनुभौ प्रकाश है ॥५१५ ॥

जबहीं जिज्ञासा होय चित्त एकठौर आन मृग ज्यों सुनत नाद श्रवण सो कहिये ॥ जैसे स्वाति बूँदहू को चातक रटन पुनि ऐसेही मनन करे कब बूँद लहिये॥रात्रिको चकोर जैसे चंद्रमाको धरे ध्यान ऐसे जान निदध्याम दृढ कर गहिये॥यही अनुभव यही कहिये साक्षातकार सुन्दर पारे ते गल पानी होय रहिये॥५१६॥

काहूको पूँछत रंक धन कैसे पाइयत कान देके सुनत श्रवण सोई जानिये ॥ उन कह्यो धन हम देख्योहै अमुक ठौर मनन करन भयो कब घर आनिये ॥ फेर जब कह्यो धन गाड़चो तेरे घरमाहिं खोदन लग्यो है जब निदध्याम ठानिये ॥ धन निकस्यो है जब दारिद गयो है तब सुन्दर साक्षातकार तृपति बखानिये ॥ ५१७ ॥

सवैया।

ऋषिनारि तरी कपि रीछ तरे सो लँगूर तरे जिहिं नाम उचारे॥
बन भीलसुता जिहिं नाम तरी सो जटायु विहंगम जाहिं उधारे॥
अब चेतन बात कहाकहिये जड भूधर नाम तरे निधि खारे॥
अब औसर राम भजो मन रे दुख मेटि तरो भवसागर पारे ५१८॥
भव हारकके चित नेम कहे यम है भवहारक और बखाने॥
इक त्याग कहे इक दान कहे इक योग सो साधन के उर ठाने॥
इक यज्ञ कहे तपसा परसाधन तीरथवास सो एक प्रमाने॥
ब्रज है भवहारक एक भने हमतो एक रामहि नाम पछाने ५१९॥
जग मानव देह मिले न सदा नर राम भजो जिहितें सुख पावो॥
जग भोग बराटकके बदले न अमोलक लाल अकाज गवांवो॥
लरकापन जाठर में बल छीन सो योवन में दृढ पुण्य कमावो॥
शुभसीख इहै जन मान चलो जिहितें नहिं अंत समै पछतावो॥५२०
जग रूखन सूखन भोजन के फल फूलन के तनु पालन कीजे॥
जग बैठ जहां तहां ठौर भली प्रभु पावनको उर जाप जपीजे॥
तृण कोमल तान बिछाय भले दृग नींद भरे धर माहिं सोईजे॥
धूरत मूढ दियाकुल बैन सो भूपतिके नहिं पास बहीजे॥५२१॥
शैलशिलातल सेज करे गिरी कंदर ही गृह है बन माहीं॥
पादपछाल सों चीर करे अरु मीत सखा मृग है बन माहीं॥
भोजन पादपको फल है जलपान करे झिरना गिरी माहीं॥
पेटके हेत न सेव करे नर ते नर ईश गीने भवमाहीं॥ ५२२॥
धन्य भई तिनकी जननी किरतारथ सो जग वेदन गाई॥
कुल पावन ताहि करी सगरी जग धन्य भई तिन मीत सखाई॥
पद कंजन तासु पुनीत धरा रज पावन ते जनपाप मिटाई॥
जो भुवमंडलमाहिं भजे छिन एक एकागर राम सहाई॥५२३॥

कुण्डलिया।

बादल दौरे जातहैं दौरत दीसत चन्द ॥ देहसंग ते आतमा चलत कहैं मतिमन्द ॥ चलत कहै मतिमन्द आतमा अचल सदा हीं ॥ हलत चलत यह देह थापले आतम माहीं ॥ सुन्दर चंचलबुद्धि समझ ताते नहिं बौरे ॥ दौरत दीसै चंद जात हैं बादल दौरे ५२४ ॥

सब कोऊ ऐसे कहैं काटत हैं हम काल ॥ काल नाश सबको करै वृद्ध तरुण अरु बाल ॥ वृद्ध तरुण अरु बाल शाल सबहिन को भारी ॥ देह आपको मान कहत हैं नर अरु नारी ॥ सुन्दर आतम अमर देह मरिहै घरखोऊ ॥ काटत हैं हम काल कहत ऐसे सब कोऊ ॥ ५२५ ॥

राग माली गौड।

हरि नाम ते सुख ऊपजै मन छांड आन उपाय रे ॥ तनुकष्ट कर कर जो भ्रमै तो मरण दुःख न जाय रे ॥ गुरु ज्ञानको विश्राम गह जिन भ्रमै दूजी ठौर रे ॥ योग यज्ञ कलेश तप व्रत नाम तुल्य न और रे ॥ सब सन्त यूंहीं कहत हैं श्रुति सिमृत ग्रंथ पुराण रे ॥ दास सुन्दर नामते गति लहै पद निरवाण रे ॥५२६॥

राग मारू।

सोई जन रामको भावै हो ॥ कनक कामिनी परिहरै नहिं आप बँधावै हो ॥ सबही सों निर्वैरता काहू न दुखावहि हो ॥ शीतल वाणी बोलके रस अमृत प्यावै हो ॥ कैतो मौन गहेरहै कै हरि गुण गावै हो ॥ भर्म कथा संसारकी सब दूर उडावै हो ॥ पांचों इन्द्रिय वश करै मन मनहिं मिलावै हो ॥ काम क्रोध अरु लोभको खन खोद बहावै हो ॥ चौथेपदको

चीन्हके ता माहिं समावै हो ॥ सुन्दर ऐसे साधके ढिग काल न आवै हो ॥ ५२७ ॥

राग बरवा ।

मानती न प्यारी सखियां सब हारी हारी ॥ जब हरि वेष कियो युवतीको पहिन कुसुमरी सारी ॥ मुकुट उतार गुही शिर वेनी नख शिख मांग सवाँरी ॥ कुंडल त्याग तरोना पहिरे कंकण नूपुर बारी ॥ काजर नैन कठिन कुच कंचुकि वेसर चूरी सवाँरी ॥ नखन महावर तिलक आडदे भये कपट नट नारी ॥ प्रण करि चले संग ललिता के मोहे देत हित कारी ॥ कृष्णदास आली करसों पकर लिये मिले कुंज पिय प्यारी ॥ ५२८ ॥

राग परज ।

रघुबर तेरोही दास कहाऊं ॥ तुमरोही नाम जपों निशि बासर तुम्हरेही गुण गाऊं ॥ तुमहीं मेरे प्राण जीवन धन तुम तजि अनत न जाऊं॥तुम्हरे चरण कमलको मधुकर रत्नहरी सुख पाऊं॥५२९॥

राग भैरवी ।

डरदा डरदा अर्ज इक करदा ॥ सुन नैनूं दरियाउ मिहरदा ॥ तू लाडाला दशरथ रघुबर दा ॥ कर बरदा मैनूं अपने घरदा ॥ रत्नहरि हुण केहा पड़दा ॥ ५३० ॥

राग होरी ।

मैंतो तुमसों होरी खेलों कान्ह साँवरे ॥ अबीर गुलाल भरे भर डारों यह मेरे मन चाव रे ॥ केसर रंग भिजोवों तोको भाग कहां अब जाव रे ॥ सब दिनकी अब कसर निकारों कहा करोगे राव रे ॥ रत्नहरी प्रभु या होरीमें लाग्यो हमरो दाव रे ॥ ५३१ ॥

राग कालिंगड़ा।

होरी नन्द नन्दन खेलें अब कैसे लाज रहे ॥ जो कोउ जाय यमुन जल भरने वाही पै रंग बहे ॥ बाट चलत वह ढीठ लँगरवा बरजोरी बैयां जो गहे ॥ रत्नहरी या व्रजको बसिबो अब कैसे निबहे ॥ ५३२ ॥

राग केदार।

पूरी न परत प्रहलादकी प्रतिज्ञा राखी खम्भ हू से निकस नृसिंह देह धारी है ॥ द्रौपदीकी लाज काज द्वारका में धाये आली संकट बिडार गज दीन हितकारी है ॥ सुदामा गरीबको सो मंदिर कनक कियो गौतमकी नारी चर्ण छायके उधारी है ॥ दशरथनंदन श्रीरामचन्द्र विनै सुनो एते काज किये प्रभु मेरो काज भारी है ॥ ५३३ ॥

कवित्त।

गर्व ते सुलक्ख जाय मूमता ते यश जाय, कुपुत्र ते कुल जाय जोग तो कुसंग ते ॥ लाड किये पुत्र जाय शोकते शरीर जाय, भूँख ते मर्जाद जाय बुद्धि जाय भंग ते ॥ कपट ते मित्र जाय लोभ ते बडाई जाय, मांग हू ते मान जाय पाप जाय गंग ते ॥ नीति विना राज जाय क्रोध ते तपस्या जाय, रजपूती जाय जब मुंड जात जंग ते ॥ ३३४ ॥

राग गौरी।

कदम चढ लाल बुलावत गैयां ॥ बंशी टेर सुनी जब श्रवणन जहिं तहिं ते उठ धैयां ॥ आवो रे सब सखा संगके कर पावो इक ठैयां॥ गोविंद प्रभु बल्दाऊसे कहत हैं अब घरको बगदैयां ॥५३५॥

राग बिलावल ।

सखी री मुझे आज मिले नँदलाल ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल गल बैजंती माल ॥ पीत वमन घनश्याम मनोहर घूंघरवाले बाल॥देखदेख मोहनकी छबिको तनक न तनकी सँभाल॥ लक्ष्मी नारायण को जाने आगे कौन हवाल ॥ ५३६ ॥

राग सोरठ ।

डगर में प्यारी आज मिले कहीं श्याम ॥ लट पट पाग सोहे पचरंगी पीताम्बर अभिराम ॥ नख शिख अमित आभरन मनोहर बंशीधर गुणधाम ॥ देख जाय पद नखकी शोभा कोटि लजावत काम ॥ लक्ष्मीनारायण दर्शनबिन तलफूं आठों याम॥५३७॥

सवैया ।

लालहि लालके लालहि लोचन लालनके मुख लालहि बीरा ॥ लाल बनी कछनी कटि लालके लाल के शीश सु लालहि चीरा ॥ लालहि बाग बने अतिसुंदर लाल खडे यमुनाजीके तीरा॥ गोविंद यों प्रभु शोभा बखानत लालके कंठ विराजत हीरा॥५३८॥
पीरोंहि कुण्डल पीरोहि नूपुर पीत पीतांबर ओढे ओ ठाढो ॥ पीत बनी कटि काछनियां अरु पीरोसो खौर बन्यो चहिं गाढो॥ पीरोहि मूकुट लालको सोहत पीरोहि खोर बन्यो पटुकाको ॥ गोविंद यों प्रभु शोभा बखानत पीरो लकुट्ट लियो हथ गाढो५३९
धौरेहि मोहन धौरेहि सोहन धौरेहि चन्दन खौर विशाल ॥ धौरे कडे कर हाथन सोहैं औ धौरे मोहैं गल फूलनहार ॥ धौरो दधि बेचन को निकसी मग रोकत मोहिं नन्दको लाल ॥ गोविंद यों प्रभु शोभा बखानत धौरी सोहै गल मोतिनमाल ॥ ५४० ॥
कारेहि मोहन कारेहि सोहन चाल कालिंदीजूके तट आयो ॥

कालींकलिंदिनि कारिहु नागिन कारो सो नागहु जाय जगायो॥ कारे को नाथ लिये छिनमें जब शीशके ऊपर नृत्य करायो ॥ गोविंद यों प्रभुशोभा बखानत कारोमो नाथकेनाथकहयो५४१॥

राग सोरठ

चल हरि तोहिं बुलावें श्रीराधे ॥ तोरे सङ्ग है प्रीत श्यामकी और त्रिया नहिं भावे ॥ राधा राधा करत रहतहैं खान पान नहिं भावे ॥ कृश तनु भयो वियोग तुम्हारे वंशी नाहिं बजावे ॥ सूर श्याम पै चलो सखी री काहेको मिनत करावे ॥ ५४२ ॥

राग पीलो ।

प्यारी लाल तोरे री आधीन ॥ सुन सजनी हम सांची बखानें तुम जल हो वह मीन ॥ तोरे रस वश श्याम सुन्दर मन जो वर चाहत दीन ॥ विठ्ठल विपुल विनोद विहारन होत मनावत लीन ॥ ५४३ ॥

प्यारी लाल तोरे ललित गुण गाने ॥ सुन सजनी हम सांची बखाने चल सुन अपने काने ॥ जो तुम श्याम होवे वह श्यामा तो तुम वेदन जाने ॥ विठ्ठल विपुल विनोद विहारन वादही रूसा ठाने ॥ ५४४ ॥

राग बरवा ।

लाडिली प्यारिये दर्शन देहु लाडिली प्यारिये ॥ ललिताकहै सुनिये प्यारी राधे मानले अर्ज हमारिये ॥ यह तो बातें तोहिं कौन सिखावे मान तजो मिलो कुंज विहारिये ॥ विठ्ठल विपिन विनोद विहारन श्री वृषभानु दुलारिये ॥ ५४५ ॥

आपन चालिये महाराज लाला न कीजिये लाज ॥ मैंतो निहारी आनाकारिन कहा कहो व्रजराज ॥ मोसों जो तुम कोटि

पठावो प्यारी नहीं मानत आज ॥ सूरदास बडजन जो कहगये आप काज महाकाज ॥ ५४६ ॥

राग विहाग ।

प्यारी नेक निरखों नवरंग लालहिं ॥ तोहिं पदपंकज तल रज वंदत तिलक बनावत भालहिं ॥ तेरे वर्ण वसन आभूषण उर चंपेकी मालहिं ॥ श्रीबिट्ठल विपिन विनोद विहारन भुज भर वाहि विशालहिं ॥ ५४७ ॥

राग सोरठ ।

श्रीराधे नामकी बलिहारी ॥ जाके नाम लिये दुख नाशें सुखके हों अधिकारी ॥ शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक मुनि जन नर औ नारी ॥ हित आनंद पर कृपा कीजिये श्रीवृषभानु-दुलारी ॥ ५४८ ॥

राग कान्हरो ।

श्रीराधे राधे राधे हो श्री राधे राधे राधे ॥ वृषभानु नंदनी जगत बन्दनी अद्भुत रूप अगाधे ॥ जाको रूप जगतको मोहै सुख संपति लिये साधे ॥ रूप रसिक चितवन में बस भयो प्राण पपीहा बाधे ॥ ५४९ ॥

राग सोरठ ।

मैं न जाऊं हरी पास री सजनी मैं न जाऊं हरी पास ॥ श्याम रचे अब और त्रियन सँग हमसों भये उदास॥ कारो री कपटी अब हम चीनो आगे था विश्वास ॥ सूरश्याम पै मैं न जाउँगी आली तो सम पठ्हैं पचास ॥ ५५० ॥

राग पीलू ।

चल री नई कुञ्ज बुलाई राधे ॥ तुम बिन व्याकुल कुँवर कन्हाई कहा मान जिया ठान रही अरु तुमसों चतुर न कोय ॥ छांड देय निठुराई इतनी कहा हमारा मानो नवनागर ब्रजबाल ॥ मनमोहन आधीन तिहारे बिहरो दे गल बाहिं कारण कौन रुसाई ॥ या सुन प्रीति किशोरी किशोरी उर बाढ़ी नंदलाल ॥ वेग उठी मिलिधाय पिया सों मदन खुशाल मनाइ बहुत भांति समझाई ॥ ८८१ ॥

राग बसन्त ।

देखो देखो ब्रजबासिनके भाग ॥ मोहन संग होरी खेलत फाग ॥ जाको निगम उचारें बार बार ॥ कछु कहि न सकें महिमा अपार ॥ ब्रह्मादिक जाको न पावें अन्त ॥ सो ग्वारिन संग खेलत बसन्त ॥ एक कहै मोरे बैठो आय ॥ एक कहै मुरली बजाय ॥ एक पीतांबर लेत छिनाय ॥ अद्भुत लीला लखी न जाय ॥ एक परस्पर करें बात ॥ एक माला गुंथ ल्याई अनेक भांत ॥ एक बीड़ी बिमल बनाय देत ॥ कर जूंठ अपने हरी को देत ॥ एक कहै चलो कुंज ओर ॥ जहं गुंजत कोकिल नचत मोर ॥ एक कहै कंधे उठाय ॥ परमानंद स्वामी रहे लुभाय ॥ ८८२ ॥

नवल बसंत नवल श्रीवृन्दावन नवले फूले फूल ॥ नवले कान्ह नवल सब गोपी निरतत एकै तूल ॥ नवल कुमकुमा केसर नवले नवले बसन अमोल ॥ नवल यमुना जल पल्लव शाखा नवल पवन की झूल ॥ नई नई छींट लगीं केसर की मेटत मन को शूल ॥ नये नये बाजे बाजत श्रीभट कालिंदीके कूल ॥ ८८३ ॥

देखो वृन्दावनके कैसे भाग ॥ जहां राधा माधो खेलत फाग ॥ कई कोटिक ब्रह्मादिक कई कोटि इंद्र ॥ कई कोटिक आदित्य कोटि चन्द्र ॥ जाको ध्यान धरत मुनि रहे हैं हार ॥ ताको सकल

गोप मिल देत गार॥जाके मोर मुकुट माथे तिलक भाल॥ललित माल लोचन बिशाल॥ जाको शेष सहस मुख लहे न अन्त॥ ताको गुण गावत नारद बे अन्त॥ जाको अगम निगम ते अगम पुंज॥ सो तो हाहा करत फिरत कुंज कुंज॥ सूरदास मैं तुम्हारो दास॥ कबहुं न पावों यमकी त्रास॥ ५९४॥

ऐसो बालक खेले नन्ददुआर॥तीन लोक जाके मुख मँझार॥कान कुण्डल जाके पदम पाउँ॥ वसुदेव पिता देवकी माउ॥ कोटि भानु जाका दिव्य शरीर॥सो तो धेनु चरावे यमुना तीर॥ जाको निगम कहत हैं नेत॥ नेत सो तो गोपनके संग हेरी देत॥ पाउँ पताल जाका शिर अकास॥ताको जानतहै कोउ हरिको दास॥ शिव सनकादिक करत सेव॥ब्रह्मादिक जाको लहै न भेव॥कहत कबीर जाको गुण अपार॥ताको सुमर सुमर नर उतरे पार५९५॥

राग सोरठ ।

देखो री या बनी गूँथी नन्दके कुमार॥ करकोमल फूलनके गजरे औ पहराये हार॥ तू बड़भागिन भानुनन्दनी बश किये कृष्ण मुरार॥ उठ बरसानाबर मिलु चल अबहीं छिन छिन होत अबार॥ ५९६॥

राग बिलावल ।

सोहन छबीला मन भासदा सैयो मैनूं॥ मृदु मुसकासदा चित लल चासदा नाहक जी तरसासदा॥नान नमानी ने घायल करयां मन बिच फंदा पासदा॥दिल बिच उपजी आतश बिरहोंदी ब्रजनिधि मैन चलासदा॥ ५९७॥

सवैया ।

बलि बामन जीवको मन राख भली बिधि सों उन यज्ञ पढी ।

सन्मानके दान दियं द्विज देवन नेकहु नाहिन भौंह चढी ॥ लकुटी पकडे हरि आये तहाँ महि माँग लई करबेको मढी ॥ तहँ बावनके कर अंगके संग सुखी लकडी बिनपात बढी ॥ ५५८ ॥

राग झंझोटी ।

जा दिन मन पंछी उड जैहैं ॥ ता दिन तेरे तनु तरुवरके सबै पात झरि जैहैं ॥ घरके कहैं बेग ही काढो भूत भये कोउ खैहैं ॥ जा प्रीतम सों प्रीति घनेरी सोऊ देख डरैहैं ॥ कहँ वह ताल कहाँ वह शोभा देखत धूर उडैहैं॥ भाई बंधु कुटुम्ब कबीला सुमर सुमर पछितैहैं ॥ बिना गुपाल कोऊ नहिं अपना यश कीरति रहजैहैं ॥ सो तो सूर दुर्लभ देवनको सतसंगति में पैहैं ॥ ५५९ ॥

राग बसन्त ।

होये री त्यार बसन्त खेलनको दशरथके सुत चार ॥ राम रु लक्ष्मण भरत शत्रुहन चारों राजकुमार ॥ पहरे पीत पीतांबर वस्त्र तुरियनके असवार ॥ उडत गुलाल लाल भये बादर केशर पडत फुहार ॥ घनियर गरजे बादर बरसे बिजली की चमकार ॥ या छबि निरख श्रीराम दूल्हौंकी अग्रदास बलिहार ॥ ५६० ॥

राजत राम जानकी जोरी ॥ चतुर नारि डारत तृण तोरी ॥ श्याम सरोज जलज सुन्दर वर दुलहिनि तडित बरन तनु गोरी॥ मंडप में दोउ ओर मनोहर राठत चूनरी पीत पिछोरी ॥ कनक कलश सजदेत भाँवरी देख रूप शारद भई बोरी ॥ व्याह समय शोभित वितान तर उपमा कौन कहे मति थोरी ॥ मनो मदन मंजुल मंडप तर छबि शृंगार शोभा इक ठोरी ॥ सतानन्द वशिष्ठ आदिदे वंश प्रशंस करें दोउ ओरी ॥ गान

निशान घेद धुन सुन सुन मुनि वर्षत सुमन झकोरी ॥ नैननको फल लेत मुदित मन सखि अशीश दें ईश निहोरी ॥ तुलसिदास छबि देख मगन भये क्या बरणों रसना इक मोरी ॥ ५६१ ॥

राग भैरवी।

सुन मैया मेरी तू जननी यह मोहिं बहुत खिझावें ॥ ग्वाल बाल लिये संगहिं खेलूं खेलन मोहिं न पावें ॥ गह २ बाहिं लेजातीहैं घर को करसों ताल बजावें ॥ मोहिं कहैं वर नाच रे छोरा माखन तोहिं खिलावें ॥ नाचों तो नवनीत न देवें पीत पछोरी लावें ॥ कोऊ कछनी छीन लेत है मुरली कोउ चुरावें ॥ भागजाउँ पाछे पड मोको पुनि गह कंठ लगावें ॥ यह अनीति कैसे कर सहिये और ठौर उठजावें ॥ दया राम सुन हँसी यशोदा झूँठी चेरियां लावें ॥ ५६२ ॥

राग कान्हरो।

या मोहनके मैं रूप लुभानी ॥ हाटबाट मोहिं रोकत टोकत या रसियाकी मैं सारि न जानी ॥ सुन्दरवदन कमलदललोचन बांकी चितवन मंद मुसकानी ॥ यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावें वंशी में गावें मीठी वानी ॥ तन मन धन गिरिधरपर वारूं चरण कमल मीरा लपटानी ॥ ५६३ ॥

राग होरी।

होरीको छैल मोहिं ढूँढत डोलै अब कित्थे जाय छिपां मोरी दैया ॥ लाजभरी गारी बंशी में मेरो नाम लेले गावै कन्हैया ॥ सास सदा मेरे वैर पडी है ननँद निगोरी करै लड़ैया ॥ कृष्ण जीवन लच्छीरामके प्रभु प्यारे फागन मास बडो दुखदैया ॥ ५६४ ॥

राग भैरवी ।

तू न भयो अपना रे लोभी मन ॥ यह संसार ओसको मोती जैसे रैनका सुपना ॥ जैसे आगको रोकत धुआं ज्यों दर्पणको ढकना ॥ ऊधोदास यह गावे राम नामका जपना ॥ ६६५ ॥

राग गौरी ।

बांको छैल गुमानी मैया तेरो ॥ संग लिये लरिकनको डोले बोले अटपटी बानी ॥ बाट घाट दधि खोमही खावे और फोडे जो मथानी ॥ दधि मेरो खायो घनेरो नायो भाजनको पछितानी ॥ आवे पौर दौर कर पकरों तू घर जाहि सयानी ॥ दामोदर घर दूध घनेरा नंद महरि मुसकानी ॥ ६६६ ॥

राग जंगला ।

मैंनो थारे दामन लगी जी गोपाल ॥ किरपा कीजो दर्शन दीजो सुध लीजो ततकाल ॥ गल बैजंती माल विराजे दर्शन भई हैं निहाल ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर भक्तनके रछपाल॥६६७॥

जिन पायो ऊधो प्रेमही मे पायो रे ॥ बिना प्रेम कछु हाथ न आयो रे ॥ घस घस चंदना लगावे मधुसूदन कहो काह योग उस कुबरी कमायो रे ॥ तुम जो कहत ऊधो प्रेम तज योग लीजे प्रेम कौन घाट याग कौन बडो आयो रे ॥ सूरश्याम जीके आगे ऐसे जाय कहियो ऊधो तुम जो पठाया योग पानी में बहायो रे ॥ ६६८ ॥

नेह जुरयो नँदनंदन सों अब कैसे लाज रहे मेरी सजनी ॥ यह अँखियां अब रह न सकत हैं देखे बिना ब्रजराज री सज-नी ॥ अटके नैन माधुरी मुसकन भूल गये सब काज री सज-नी ॥ देह गेहकी सुध बिसरानी रहो गिरो भाव आज री स-जनी ॥ लोक लाज कुल कान छूटगई लखा निरख ज्यों

बाज री सजनी ॥ मयागम अब ओट न कोऊ ज्यों खन सिंधु जहाज री सजनी ॥ ५६९ ॥

राग विहाग ।

मैंनूं अयानी संदेशा श्यामदा सुनो ब्रजनार भला ॥ योगकी पतियां पठाई मोपे रल मिल करे री विचार ॥ ऐसी करी जैसी देखी न सुनी री हम संग नंदकुमार ॥ सूर श्याम बिन तरफत निशि दिन जानै न निपट गवाँर ॥५७०॥

राग जैजैवंती ।

बहुत तुम कहत सभ चलो या मात रै तात रस मत्त यसुमत्त रानी ॥ देख लई लच्छ कर पुत्रकी पच्छकर अच्छ भर बात हमरी न मानी ॥ चलो सब बाम गृह काम तज ढूँढिये घेर कर आज कुल छाँड कानी ॥ देहिंगी धाम सम्मान सों कान्हको बांध कर देहु भये नये दानी ॥ लेगये श्याम वनधाम सब सखिन को झपट पट ओट बंशी बजानी ॥ निज मुख आपही बोल उठे बाजी कहूं बाजी कहें या दिशा बजन जानी ॥ ५७१ ॥

गजल ।

यशोदा ढीठ है तेरो किशोरी ॥ झपट गह चट मेरी बैयां मरोरी ॥ गई दधि बेचने में ब्रजकी खोरी ॥ कह्यो मुसकायके कहँ जात गोरी ॥ अचानक टार घूंघट पट कन्हाई ॥ लगायो कंठ मोतिनमाल तोरी ॥ भरी शिरसे गगरिया धरणि पटकी ॥ बहुत हटकी न मानी एक मोरी ॥ कियो मोहिं बावरी चितवन मिलाके ॥ नजानूं कौनसी डारी ठगोरी ॥ महरी तैंने अनोखो पूत जायो ॥ फिरे वन वन करे

माखन की चोरी ॥ बसेंगी जायके कहि अंत ठौरें ॥ जुगल चरणों-में मैं करती निहोरी ॥ ८७२ ॥

राग देश ।

चलो री आली बशीबट तीरें ॥ रट लागी श्रीराधे राधे ना-गर नटवर श्याम शरीरें ॥ कहूं लकुट कहुं मुकुट पीत पट शिथिल अंग मन विरह अधीरें ॥ ललित किशोरी सुन व्याकुल गति चल मिल मेटो मदनकी पीरें ॥ ८७३ ॥

सवैया ।

शैल कपीचर पार परे यहि भाँति सुन्यो हरिजी बल तोरा ॥ है मन चंचल वानर सो अरु शैल समान सो चित्त कठोरा ॥ नाहिं करी तपसा तुम्हरी बल ओसर बैन सुनो प्रभु मोरा ॥ नाथ भले बलवान हुते मम दासकी बेर भयो बल थोरा ॥ ८७४ ॥

गहे तंदुल ब्राह्मणके करसे तब आपद ताकी सु दूर निवारी ॥ गज कंज दिये तब ग्राह कटे फल खायके भील सुता सो उधारी ॥ गल फूलनमाल गही कुबजा तब कूबरिकी कटि नाथ सवाँरी ॥ बिन मूल न काम करो हरिजी जग लोगन की गति तैं उर धारी ॥ ८७५ ॥ गुण थोरेही ते प्रभु रीझ रहो वह भूल गई अब बानि तुम्हारी ॥ फल फूलन ते बन भील सुता मथुरा पुरमें हरि कूबरी तारी ॥ गणिका गजराज उधार करे तो दयालु हुते सु मुकुंद मुरारी ॥ अब के करुणा हरि पीठ दई अरु के कर फारयो तो कागज कारी ॥ ८७६ ॥

कब आवेंगे वे मम ऊपर ते दिन देह रटे मम गंग किनारे ॥ सबही जगते पुनि शांत लहे मुख नाम सों शीश गँगोदक धारे ॥ पुनि बैठ शिलातल में हरिकी पदवी दृग मेलके नीत

चितारे ॥ हरि ध्यान समै तनु मोहि गिरे जल मात समान सो सँग सँभारे ॥ ५७७ ॥

जा जलको विधि पान कर्‌यो पुनि पावन वामनपाद पखारे ॥ शंकर पावन हेर उरे पुनि शीश निरंतर सो जल धारे ॥ भूप भगीरथके तपसा पुनि जा जल सों कुल भूपति तारे ॥ सो जल पावन मैं परसों सो पिवों उर में बडभाग हमारे ॥ ५७८ ॥

कुंचित हैं अलकौं श्रुति ऊपर कुंडल हैं शुभ कानन माहीं ॥ कुंडलके कच मेचक में लसिकै तडिता घन मेचक जाहीं ॥ बोल समै छबि पुंज तरंग कपोलन सागर ते निकसाहीं ॥ नैन हरें मद कंजनके सम आननके शशि कोटिन नाहीं ॥ ५७९ ॥

हरिके पद पंकज प्रेम करे न करे हरि वेमुख लोकन संगा ॥ नहिं आपन मान सो भूल चहै पुनि औरन को न करे मन भंगा ॥ सब और तजे जग अंग महा सो रहे हरि पूरण के रुपरंगा ॥ इक ठौर अहार करे न सदा शुभ संत धरे व्रत नीर विहंगा ॥५८०॥

हरिनाम भजे जग भीतरजो जननी सुत या विधिको उपजाये॥ अथवा जननी सुत सोइ जने रणभीतर जो अरिके दल घाये ॥ सिर लौं धन दान करे जगमें शुभकै जननी सुत यो निपजाये॥ इन तीन विना कृमिके सुतके हित यौवन नाहिं अकाज गँवाये ॥ ५८१ ॥

गजल।

नहीं हम वेदके वादी विरागी मन हमारा है ॥ नहीं हम वेष के योगी हमारा पंथ न्यारा है ॥ रहे हम सुन्न के मंडल जहां बहु वेशुमारा है ॥ नहीं वहँ जाय हरयककी जहां हम जीव डारा है ॥ देखा दिल दूरबीनी से जहँ तहां पीव प्यारा है ॥ करैं हम एक की सेवा बली जिसका पसारा है ॥ ५८२ ॥

राग सारंग ध्रुपद ।

बैठे हरि राधा संग कुंज भवन अपने रंग कर मुरली अधर धार सारँग वही गाई है ॥ मोहन अतिही सुजान सर्व कला गुण-निधान एक तान बूझ चूकके बजाई है ॥ प्यारी जब गह्यो बीन चेत्यो तब गुण प्रबीन अति नवीन अतिनवीन ओही तान गाई है ॥ वल्लभ गिरिधरन लाल रीझ दीनी अंकमाल भले जू भले दयाल संतन सुखदाई है ॥ ८८३ ॥

गजल ।

आशिक हुआहूँ उसपै जो नजरों से दूर है ॥ साया उसका यह जग जोकुछ जहूरहै॥जोहैख्यालवहमफहमसोंपरेमनम॥मुरशिदकी सैन बैन में हाजिर हजूर है ॥ औं साफ उसकी जात का क्योंकर करूँ बयां ॥ क्या ताब है किसी में अकल क्या शऊर है ॥ घायल किया है मेरे तई उसके इश्कने ॥ दिल जान उस सजन पै मेरा चूर चूर है ॥ यह काम आशकीका सुनो राम रूप मे ॥ पहिले फना जो होय तो फिर वही नूर है ॥ ८८४ ॥

राग प्रभाती ।

बन पड़ तो नेकी करना आखिर तो है मरना ॥ धन यौवनके जोर जुलममें इतना नहीं उछलना ॥ कभी जालमें फँस जावोगे जस जंगलको हरना ॥ गुर्नी गरीबनको हक नाहक इतना नहीं रगरना ॥ दो दिनकी हशमत है तेरी साहिब सों कछु डरना ॥ कुफल करे अधर्मकी दौलत सिमृल बांस का फलना ॥ अभी तुझे मालूम न पड़ता अंत पड़ेगा भरना ॥ जान बूझ टेढे रस्ते पर बंदे कदम न धरना ॥ देव देव कह राम राम भवसागर पार उतरना ॥ ८८५ ॥

कोई सफा न देखा दिलाका यह सांचा बना झिलमिल का ॥ कोइ बिल्ली कोइ बकुला देखा महिर फकीरी खिलका ॥ बाहर मुख सों ज्ञान छांटते भीतर गोरा छिलका ॥ औगनके पिसने में शूरमां पटतर लोढ़ा शिलका ॥ राम नाम में अजब आलसी जैसे मग मंजिल का ॥ राम लगन बिन जप तप झूठा झूठा तप का फाजिल का ॥ क्या कहें गुरुदेव न पाया महरम आंखके तिल का ॥ ५८६ ॥

तेरी खाक फकीरी दिल से चाह न छूटी ॥ मान बडाई जादिन भाई तादिन किसमत फूटी ॥ अपने में सारो जग देखत रसकी लूटा लूटी ॥ या मति बिन दिन दिन तनु छीयो शिर की कूटा कूटी ॥ पूरी बिपति सहेती आई प्रीति रामसे छूटी ॥ सेवा पूजा सब ठग हारी मिसल जालकी खूटी ॥ चेटक नाटक नट विद्यासे सारी खिलकत जूटी ॥ मिले नहीं वसुदेव दुलारे प्राण सजीवन बूटी ॥ ५८७ ॥

हरि सों लागा रहु रे भाई तेरी बनत बनत बनजाई ॥ ऐसा भजन करो घट भीतर छोड कपट चतुराई ॥ सेवा बंदगी और अधीनता सहज मिलें रघुराई ॥ दुनियां दौलत माल खजाना ब-नियां बैल चलाई ॥ एक बात मोहिं लागे अचंभव खोज खबर नहिं पाई ॥ स्याही गई सफेदी आई अब क्या करिहो भाई ॥ राम नाम सुमिरन नहिं कीना बिरथा जन्म गँवाई ॥ ध्रुव प्रल्हाद नाम से तर गये तर गये सदन कसाई ॥ हरिकी सरवर कौन करे रो नानक बात बताई ॥ ५८८ ॥

मुख सों राधा कृष्ण बोल तेरा क्या लगेगा मोल ॥ तेरे हाथ पाँव नहिं हलते दश बीस कोश नहिं चलते गिरहों कि गांठ नहिं

खुलती तू मनकी गुंडी खोल ॥ तेरा घोडा है बहु रंगी घोडेकी पां-
च बछेरी यह पांचों फिरे लुटेरी पांचोंकी बाग मरोर ससार का-
चकी बाजी तू किस पर होय राजी यह सकली सुपन समाजी तू
तिस पर मन ना डोल ॥ तोहिं बहुत गुरू समझावे तू फिर कर
जन्म न पावे साँचा हरिचरणों लावे झूठे जगका नाता तोड ५८९

राग कलिंगडा ।

लाल तोहि हौंहीं आज मनाऊं ॥ झीनी स्वर मों रट मुरली
में राधे राधे गाऊं ॥ नटवर वेष बनाय आपनो भामिनी तुमहिं
बनाऊं ॥ अलकन छिटक अंश अपने नव वेणी शीश गुथाऊं ॥
दे नव भाल अरुण बेंदी हों केसर खोर लगाऊं ॥ तुम बैठो गह
मौन मानिनीहौं बलि विनय सुनाऊं ॥ भृकुटी तान विलोको तुम
हौं टोडी हाथ लगाऊं ॥ अंबर झटक मोर मुख बैठो हौं नहीं
सम्मुख आऊं ॥ कुटिल बोल बोलो घूंघट मे हौं झुकि नैन मि-
लाऊं॥ललित किशोरी नवल वधू तुम हौं नव रसिक कहाऊं ५९०

प्यारी हा कैसे कर मान रचाऊं ॥ कैसे कर नैन तरेरैं तुमपै
कैसे कर भौंह चाढाऊं ॥ कैसे कर बैन कुटिल निकसे मुख कैसेकर
दीठ दुराऊँ ॥ कैसेकर झटक नील पट कर मों हाहा तुमहिं ख-
वाऊं ॥ कैसे कर विनय ललित मुख प्यारी इन श्रवणनहिं सुनाऊं ॥
ललित किशोरी श्रमित तुमहिं क्यों देख धीर उर लाऊं ॥५९१॥

राग सोरठ ।

पिया ते मैं क्यों कीनो मान ॥ मोहन आय झरोखा झांके
मैं कीनो अभिमान ॥ लागी लगन गोपाल पिया तो छाँड

दई कुल-कान ॥ पुरुषोत्तम प्रभु आन मिलावो नातर तजूँगी प्रान ॥ ५९२ ॥

तुम सुनिये हो बलि राजा वसुधा काहूकी न भई ॥ सतयुग में हरणाकुश राजा चारों खूट मही ॥ अतिव प्रचंड महीपति राजा वाहूके संग न गई ॥ त्रेता में रावण भयो राजा कञ्चन कोट मई ॥ इक लख पूत सवा लख नाती लकडी काहू न दई ॥ द्वापरमें दुर्योधन राजा नौलख भीड़ मही ॥ सोरा योजन वाके छत्र झुलत रहे मटी गिधन लई ॥ सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग चारों युगन मही ॥ कहत सूर वई नर झूँठे जिन यह अपनी कही ॥५९३॥

राम नाम इक सार और सब झूँठो है संसारा ॥ रामको नाम अमीरस भाजन सो मोहिं अधिक पियारा ॥ भाई बंधु अरु लोक कुटुंब सब मात पिता सुत दारा ॥ अंत समय कोइ काम न आवे देखो दृष्टि पसारा॥यह देही सुमिरनको दीनी मिलत न बारंबारा॥ ताको पाय वृथा क्यों खोवत भजत न एको बारा ॥ जगतसिंधु में आन फँस्योहै उठत भँवर भ्रम भारा ॥ युगल चरन की नौका काजै उतर जाय भवपारा ॥ ५९४ ॥

राग प्रभाती।

राम प्रताप न जाने पिता तू रामप्रताप न जाने ॥ राज पाय बौराने ॥ नरका शंखा मधुकैटभ हरणाकुश बलवाने॥तिन तिनका तिनका कर तोर्यो ऐसे शारँगपाने॥जाकी कृपा भई जग विजयी तासों वैर सो ठाने॥देखो नैन रैन कर सुपना सब तज भज भग-वाने॥रोम २ रम रह्यो रमापति वेद पुराण बखाने॥निशिदिन अज हर ध्यान धरत हैं तू कैसे रिस माने ॥ सह नहिं सकत त्रास

भक्तनके भक्तन हाथ बिकाने ॥ सब कल्यान ज्ञान कर देखो युगल चरण लपटाने ॥ ५९५ ॥

लावनी ।

कैसे कहूं कछु नहिं आवत जिय दुख कैसो भारी है ॥ कोई गाय गवल समझावो यह क्या बात विचारी है ॥ आठ मास दश गर्भ में राख्यो शरद गर्भ ऋतु न्यारीहै ॥ सो कैसे जननी विष प्यावं बाजी कठिन करारी है ॥ राम नाम उरसो नहिं छोडत हठ कर कहत पुकारी है ॥ बार बार बहु विधि समुझायो विनती कर २ हारी है ॥ ५९६ ॥

हे माता मन शोच न कीजे राम नाम पद भारी है ॥ जहँ जहँ भीर परी भक्तन पर तहँ २ आय निवारी है ॥ घट घट में जल थल में व्यापक हरिकी लीला न्यारी है ॥ युगलदास प्रभुके चरणन पर बार बार बलिहारी है ॥ ५९७ ॥

राग सोरठ ।

राखि लेहु भगवान अबकी राखि लेहु भगवान ॥ खंभ सों मोहिं बांध दीनों खड्ग लीनों तान ॥ करके यत्न अनेक हारो रह्यो एक न आन ॥ अबतो कठिन कृपान ताने लियो चाहत प्रान ॥ मोहिं बेग उबार लीजे सुनिये कृपानिधान ॥ युगल चरण सनेह चाहत धरत तेरो ध्यान ॥ ५९८ ॥

राग ठुमरी ।

लीजिये करुणानिधान बेग सुरत जनकी ॥ पाप पीन पुण्य क्षीण काय वाक मन मलीन दीन वित्त हीन चित्त आश न गुण गनकी ॥ काल कर्म गुण सुभाव सुखप्रद प्रभु पद विहाय भ्रमत भ्रमत पंथ अमित ऐसी रुचि मनकी ॥ स्वारथ हित द्वार

द्वार बारम्बार कर पसार लाभ तिरस्कार हानि अशन हूँ वमनको॥ जानत हूँ प्रभु कृपाल भंजन भव फन्द जाल शरण पाल बान प्रणत दीनता हरनकी॥ काचो मन राचो नहिं रावरे सनेह साँचो हरे कौन नाथ विन त्रिविध ताप तनकी॥ द्रुपदसुता जानकी गजेंद्रको उबार पैज राखी प्रह्लाद तथा पांडुके सुतन की॥ साँचेहूँ झूँठ रामदास नाम नाते नाथ कीजिये सम्हार लाज राखो निज पनकी॥ ५९९॥

राग जंगला।

हरि बिन को राखे पति मेरी॥ अंधको अंध महा जो दुशासन आन सभा में घेरी॥ भीषम द्रोण कर्ण से बैठे इनहूँ नेक न हेरी॥ अब मति भ्रष्ट भई सबहिनकी पकरलियो ज्यों चेरी॥एक विश्वास यही दृढ़ मेरे कृष्ण कृष्ण कह टेरी॥ सूरदास प्रभु बसन बढ़ाये ह्वै गयो पर्वत ढेरी॥ ६००॥

कोइ दमका इहां गुजारा रे तुम किस पर पाउँ पसारा रे॥ इहां पलक झलक दा मेला है कुछ करले यह अब बेला है कोइ चल का इहां नजारा रे॥ इहां रात सराय का रहना है कछु स्थिर होय न रहना है उठ चलना सांझ सकारा रे॥ ज्यों जल बीच बतासा है त्यों जग का सभी तमासा है यह अपनी आंख निहारा रे॥ देखन में जोइ आवे है सभ खाक माहिं मिल जावेहै यह सभी कालको चारा रे॥ दृष्ट मान सब नाशी है इस कालकी सभ पर फाँसी है इस काल सभनको मारा रे॥ जिन के दर नौबत बाजे हैं वे तख्त छोड़ कर भाजे हैं जिनके लशकर लाख हजारा रे॥ कई पीर पिगंबर हुए हैं इस काल ने सभी

बिगोए हैं यह सभही ऊपर भारा रे ॥ कई गौस कुतुब सभ घेरे हैं इस काल ने सभी निबेरे हैं तू किनमें कौन विचारा रे ॥ यह मनुष देह कब पावे है यह वादही वाद गँवावे है क्यों अपना काज बिगारा रे ॥ ६०१ ॥

सवैया ।

दीन मलीन दुखी अँगहीन विहंग पर्यो क्षिति छीन दुखारी॥
राघव दीनदयालु कृपालु को देख दुखी करुणा भइ भारी ॥
गीध को गोद में राखि कृपानिधि नैनसरोजन में भरि बारी ॥
बारहिं बार सुधारत पंख जटायुकी धूरि जटानसों झारी॥६०२॥
वेदविरुद्ध महामुनि सिद्ध सशोक किये सुरलोक उजार्यो ॥
और कहा कहुं सीय हरी तबहूँ करुणानिधि कोप निहार्यो ॥
सेवकक्षोभ ते छाँडी क्षमा तुलसी लख्यो राम स्वभाव निहार्यो॥
तौलौं न दाप दलो दशकंधर जौलौं विभीषण लात न मार्यो ६०३

कवित्त ।

नीर भरे नैन मुख बैन हू न सके बोल है, ना तन सुध सुख ऐन लख आई है ॥ आली सभ बूझे हर्ष कारण तू कहे क्यों न, चैन अति पाय अंग पुलकावलि छाई है ॥ बोली धर धीर बाग देखन द्वै कुँवर आये, अंग अंग शोभा सभभांति सों सुहाई है ॥ श्याम गौर वे किशोर कैसे करि गाय कहूं बैन है अनैन नैन बैन नाहिं पाई है ॥ ६०४ ॥

रूठे क्यों न राजा वाते कछु नहीं काज एक तूही महराजा और कौनको सराहिये ॥ रूठे क्यों न भाई वाते कछू न बसाई एक तूहीहै सहाई और कौन पास जाइये ॥ रूठे शत्रु मित्र उदासीन आठों याम एक रावरे चरणनके नेहको निवाहिये ॥

लोक सब झूठा एक तूहीहै अनूठा सभ चूमेंगे अँगूठा प्रभु तू न रूठा चाहिये ॥ ६०५ ॥

राग बिहाग ।

अबकी राखि लेहु भगवान ॥ हम अनाथ बैठी द्रुम डरियां पारधी साध्यो बान ॥ ताके डर निकसन चाहतहों ऊपर रह्यो शचान ॥ दोऊ भांति दुख भयो कृपानिधि कौन उबारै प्रान ॥ सुमरतही अहि डस्यो पारधी लाग्यो तीर शचान ॥ सूरदास गुण कहँ लग बरणों जै जै कृपानिधान ॥ ६०६ ॥

राग प्रभाती ।

उठ जाग घुराडे मार नहीं ॥ यह सोण तेरे दरकार नहीं ॥ इक रोज जहांनों जानाहै जा कबरे बिच समानाहै तेरा गोशत कीडे खाना है रख चेता मारग विसार नहीं ॥ तेरा साहा नेडे आया है कछु चोली दाज रँगाया है कि अपना आप वजाया है ऐ गाफल तैनूं सार नहीं ॥ तू सोके उमर गँवाई है तेरी साइत नेडे आई तू चरखे तंद न पाई है क्या करसी दाज तयार नहीं ॥ तू जिस दिन यौवन मत्तीसें तेनाल हूरांदे रत्ती सें हो गाफिल दुनिया सुत्ती सें हुन बाहीं तेरी बहार नहीं ॥ तू मुडढों बहुत कुचज्जी सें तू हर पूजा तू लज्जी में तू खावा खाणं रज्जी सें तें कोलों कोण बेजार नहीं ॥ अज कल्ह तेरा मुकलावा नी क्यों सुत्ती हैं कर दवानी अनडिठयां नाल मलावा नी यह भलके गर्म बजार नहीं ॥ तू एस जहानों जायेगी फिर कदम न एथे पायेगी यह यौवन रूप वजायेगी तें रहना बिच संसार नहीं ॥ बुल्लाशाहे बिन कोई नहीं एथे ओथे दोहीं सराईं संभल संभल कदम टिकाईं फिर आवन दूजीवार नहीं ॥ ६०७ ॥

राग होरी-भैरव

प्रातकाल नंदलाल खेलत हैं होरी॥आई आनंद भरी ब्रज की सब गोरी ॥ कंचन पिचकारी हाथ औ गुलाल झोरी ॥ शीश पाग लटक रही केसर रँग बोरी ॥ बल्लभ गोपाल निरख विहँसत मुख मोरी ॥ ६०८ ॥

राग भैरव ।

शोभा सदन वदन दोउ देखे ॥ आलस अंग जंग निशि जागे भरे विनोद अपार विशेखे॥ भूषन वसन मणिन हारावलि ललित नैन काजर छवि रेखे ॥ रसिक खुशाल विलोकन या छवि राधावर सुखसार विशेखे ॥ ६०९ ॥

राग होरी-देश ।

वीर यह पीर न जाने री मोरी आंखिन मलत अबीर ॥ हटके ते आगेही अटकत भर पिचकारी ताने सुरझावत पट बूँद झपट हँस अंतर कपोलन माने ॥ ललित किशोरी निपट हठीलो नट नंद को नहिं माने ॥ ६१० ॥

राग मालकौंस ।

आली दशरथसुत सुखदैना ॥ भरनैना देखो मो नैना ॥ सुर नर मुनि मन हरन वरन वर कोटि काम सुन्दर सुखमंदिर तन मन धन न्योछावर कीनो निरख सखिन मन चैना ॥ कमल-नैन सुन्दरकपोल अलकन झलकन कुंडल सुलोल मुसकानमंद सुखकंद चंद सुख मधुर मधुर वर वैना ॥ अंग अंग वारूं अनंग शिव धनुष भंग कर रंग आवन सिया अंग अंग रस रंग रंग मगे रत्नहरी सुख ऐना ॥ ६११ ॥

राग मलार ।

यह दोउ झूलत रंग हिंडोरें ॥ दशरथ सुत अरु जनकनन्दनी चितवन में चित चोरें॥नान्ही नान्ही बून्दन पवन पुरवैया बरसत थोरें थोरें ॥ हरी हरी भूमि घटा झुक आई सरयू लेत हिलोरें॥हय दल पैदल जगदल रथदल कोट बने चहुँ ओरें ॥ उपवन माहिं मधुर स्वर बोलें कोकिल मोर चकोरें ॥ रत्न जडितको बन्यो हिंडोरा रेशम लागी डोरें॥अरस परस दोउ झूल झुलावें इक साँवर इक गोरें ॥ वामें विमल सखी उरझानी अपनी अपनी ओरें ॥ तुलसिदास अनुकूल जानके सियाजी हँसी मुख मोरें ॥६१२॥

राग प्रभाती ।

में विरागन श्याम दी लाल वे मेरा पीया बनला देयो ॥ इक अंधेरी कोठरी लाल वे जित्थे दीवा न बाती ॥ बाहोंफडके ले चले लाल वे कोई सङ्ग न साथी॥ऊंचा पीपल जाड़ला लाल वे लागरां लेन हुलारे ॥ कोठे चढके देखदी लाल वे प्यारा नजर न आवे ॥ दुलडी तिलडी चौलडी लाल वे गल प्रेम जंजीरी ॥ जा पुच्छो बुल्लेशाह नूं मुशकल बनी है फकीरी ॥ ६१३ ॥

शब्द ।

जिन्हा नूं शौक माईदा लग्गा सभ कुछ शिर पर झलदे॥झक्ख झेडे बाय अंधेरी वांग पर्वत ना हलदे ॥ मुख विच रज्ज नंग विच कज्जन भुखखे है इस गल दे ॥ कहे ग्वार जिन्हा अखूखीं देख्या क्या कहे सुख पल दे ॥ ६१४ ॥

श्याम बिना ऊधो ऐसे भई मैं ज्यों मछली बिन पानी ॥ पत्ती रेता पई तड़फूफां बैद किसे ना जानी ॥ कुंडी दरद फराकत वाली

देही दरद रजानी ॥ महासिंह साडा जीवन ताहीं मिलसी सारँ-
गपानी ॥ ६१५ ॥

माए नी मैं रहां कुआरी बांदी की सुख पाया ॥ सोना देके लाल व्याहज्या तांबा निक्कल आया॥खुल्हे केश गले बिच मेरे जो लिख्या सो पाया ॥ मयाराम जदतों सातों विछड़े तदतों योग कमाया ॥ ६१६ ॥

माए नी सुन मेरि ये माए आप पैयां शिर भारे॥लोक जानत हथ मेहँदी रँगुली लोहू भिन्ने हथ सारे ॥ मारां लत्त बुझावां वत्ती अग लावां इस खारे शगना वारे ॥ जिन्हादे नाल मुहब्बत साडी लद्द चले बनजारे ॥ ६१७ ॥

माय नी सुन मेरी ये माय की तदवीरां करिये ॥ योगन बनके न मिल्या साँवरा केहडे पंथ नूं फडिये॥ज तप करिये माधो वन में वहां सांवरा वरिये ॥ मयाराम साडा जीवन ताहीं जा यमुना डुब मरिये ॥ ६१८ ॥

जवकी श्यामा तैं वंशी वजाई तब मैं आइयाँ वन में ॥ सुन सुन तेरी मुरली दीयाँ घनघोराँ ताकत रही न तन में ॥ रंग रँगीला छैल छबीला ठाकुर मेरा गौंआं चारे वन में॥ उस दिन ते बलिहारी ऊधो जिस दिन ठाकुर जन्में ॥ ६१९ ॥

वाएनी तू बरग मवेले छम छम वगदी जाईं ॥ जो कछु हाल असाडा देख्या प्यारे नूं आख सुनाईं ॥ साडी वलों तूं मिन्नत करके गल विच पलड़ा पाईं ॥ सूरदास प्रभु रोदी न छड़ गये एह गल आख सुनाईं ॥ ६२० ॥

शिर धर मटकी जानी यां लटकी ॥ श्याम मिला मैंनूं खिलदा॥ सांवल कोलों नैन छिपाये उस डेरा मल्या दिलदा ॥ सांवल मैंडा में सांवल दी फरक न रह्या विच तिलदा ॥ लख ग्वार पई झख मारे दिल दित्यां ते दिल मिलदा ॥ ६२१ ॥

राग जंगला ।

हटडी छोड चल्यां बनजारा ॥ इस हटडी विच मानक मोती कोई विरला परखन हारा ॥ इस हटडी के नौ दरवाजे दशवां ठाकुरद्वारा ॥ निकल गई थंभी ढैह पया मन्दर रल गया चिक्कड गारा ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो झूठा जगत पसारा ॥६२२॥

राग कान्हरो ।

तन मन धन वारो सांवरी सूरत माधुरी मूरत कुण्डल की झलक पर ॥ मुकुट लटक धरन रह्यो मतवारो रह्यो मतवारो ऐन सैन बैन नैन जग में उजियारो ॥ सुर नर मुनि ध्यान धरत मया-राम प्यारो ॥ ६२३ ॥

राग सोरठ ।

पढो भैया रे कृष्ण गोविंद मुरार ॥ कह प्रह्लाद सुनो रे बालक लीजो जन्म सुधार ॥ को है हरनाकुश अभिमानी जो सकिहै तुम्हैं मार॥राखन हार और है कोऊ श्याम धरे भुज चार॥ पूरण पुरुष नरायण स्वामी सो कारि हैं रखवार ॥ सूरदास प्रभु हरि सों सीता कभूं न आवे हार ॥ ६२४ ॥

राग मालकौंस ।

निपट बंकट छवि अटके मेरे नैना ॥ देखत रूप मदन मोहन

को पियत पियूप न मटके ॥ वारिज भवां अलक टेढी मानो अति सुगंध रस अटके ॥ टेढो कटि टेढी कर मुरली टेढी पाग लर लटके । मीरां प्रभुके रूप लुभानी गिरिधर नागर नटके ॥६२५॥

राग बसंत ।

खेलत विपिन बसंत लाडिले नेह भरे पिय प्यारी ॥ रत्न जडित सिंहासन बैठे मध्य फुली फुलवारी ॥ तन सुख केसर भीने बागे अनुरागे छवि धारी ॥ भूषन भूपित अंग अंग द्युति दमक चमक मन हारी ॥ ताल मृदंग उपंग बजावत गावत अलि सुख कारी ॥ रस सरिता ललितादिक नितत आनँद मगन महा री ॥ उडत अबीर गुलाल लाल घन वन छवि छाय बिहारी ॥ निरखत लाल रूप हि दंपति प्राख संपदा वारी ॥ ६२६ ॥

कवित्त ।

गगनके मंडलमें चंद्रमा मसालची किये हैं लाख तारे वाके दीपक दर्बार हैं ॥ ब्रह्माहू वजीर विष्णु कारदार देखियत शंकर दीवान रु गणेश चोबदार हैं ॥ शीलहू की लक्षमी सो सदा अंग संग रहे कुबेर भंडारी और इंद्र जमींदार हैं ॥ कहे अवधूत प्यारे समझ विचार देखो राजनृपति राजा महाराजा करतार हैं ॥६२७॥

राग वसंत ।

फूली वनराई वेलरियां कोयल बोले अंब की डार ॥ भौंरा गुंजार करत ऋतु वसंत आई लों खिली बहार ॥ भाँति भाँतिके वृक्ष झुकत झुकत झूम रहे पपीहा पिया पिया कर पुकार ॥ नार बार ग्वाल नार थिरत थिरत घूम रही हाथ लिये करवा फिरत

हैं चहुँ ओर ॥ हरिदासके प्रभु मुदित मुदित भये मोतिनकी माल गरे सज शृङ्गार ॥ ६२८ ॥

राग मालकौंस ।

परब्रह्म परमेश्वर पुरुषोत्तम परमानंद नंदनंदन यशोदानंद आनंदकंद श्रीगोविंद ॥ करुणामय कमलनैन कृपासिंधु सर्व चैन पूरण करता किशोर गुणनिधान गोकुलचंद ॥ दीनानाथ दुख-भंजन भक्तवच्छल जगवंदन ॥ जगजीवन जगतनाथ ब्रजपति हर दीन बंधु॥राम रूप राधावर गोबर्धन कर पर धर रंगनाथ हृषी-केश गावत गुण भये अनंद ॥ मधुसूदन मदनमोहन मुरलीधर सर्व सोहन वासुदेव बनवारी काटो दुख द्वंद फंद ॥ जन गरीब यश सुन सुन लाग रही अंतर धुन केशव बनवारी ब्रजपति गो-कुलचंद ॥ ६२९ ॥

राग भैरवी ।

सब मति हू ते यह मति भावै ॥ एक अधार नाम यश कीर्त्तन जब कब पार लगावै ॥ धर्म कर्म तीरथ व्रत संयम योग यज्ञ श्रुति गावै ॥ नहिं अधिकार नहीं बल माया चंचल मन न टगावै॥ नाना ग्रंथ वेद विधि नाना काहेको डहकावै ॥ भक्तराम प्रभु प-तित पावन हैं यह भरोस जिय आवै ॥ ६३० ॥

राग देश ।

ग्वारिनि जान उरहनो देह ॥ पूछो तो यह बात श्याम सों किहिं विधि जुरचो सनेह ॥ प्रथम जाय बन बसी वृक्ष ह्वै छोड ग्राम अरु मेह ॥ एक पाँय सहे मैं सब दुख हिम ग्रीपम अरु मेह ॥

तजे सुभार फूल फल शाखा औरं सुखाई देह ॥ मारचो तन मन अंग सुलाखत विविध बनाये बेह ॥ जा देहीको गर्व करत हो मुरली सों अति नेहु ॥ सूरश्याम यहि भाँति रिझावो तुमहुँ अधर रस लेहु ॥ ६३१ ॥

जिन्हां नूं लग्गे प्रेम तमाचे घरदे कम्मो गैयां॥मात पिता कुल आलम सारा वर्जन सब भी सैयां ॥ लख लख ताने लख लख बदियां वह भी शिरपर सहियां ॥ डुब्ब गया सब लहणा देणा खूह विच पैयां बहियां ॥ उन्हाँदा मुडन बिहागी केहा जढियाँ प्रेम फाही विच पैयां ॥ ६३२ ॥

कवित्त ।

द्वारकाके बीच पाँसा खेलें हरि रुकमिनि वाही समे भीरजानी पूर्ण भगवंतजी ॥ डारे दल श्यामजीने कह्यो सुख अबै खबै रुकमिनि पूछे यह दाव क्याहै कंतजी॥द्रौपदी है भक्त प्यारी दुसासन दुख दीन भारी समै भीर जान देतहों पटंतरी ॥ कहै सयाराम धाम त्याग श्याम दौर आये चीर तो बढाये पीर सहै नहिं संत की ॥ ६३३ ॥

संतन सहाय सदा शंख चक्र धारे गदा पद्म लिये हाथ प्रभु पूरण गोपाल जू ॥ भईहों निराश साथ रहा है न कोई मेरे पाउं परें नाथ हारे दीननदयाल जू ॥ पाऊं दुख भारी हा मुरारी सुनो विनै मेरी केशौ गिरधारी लज्जा राखो नंदलाल जू ॥ कहै सयाराम धाम त्याग श्याम दौर आये चीर तो बढाये कहू पीरे कहूँ लाल जू ॥ ६३४ ॥

राग सोरठ।

सुवा चल वा वनको रस लीजै ॥ जा वन कृष्ण नाम अमृत रस श्रवण पात्र भर पीजै ॥ को तेरो पुत्र पिता तूं काको मिथ्या भ्रम जग केरो ॥ काल मँजार ले जैहै तोको तू कहे मेरो मेरो ॥ हरि नाना रस मुक्त क्षेत्र चल तोको दिखराऊं ॥ सूरदास साधन की संगति बडे भाग्य जो पाऊं ॥ ६३५ ॥

राग विहाग।

भरोसो दृढ इन चरणन केरो ॥ श्रीयदुनाथ नख चन्द्र छटा विन सब जग मांझ अँधेरो ॥ साधन और नहीं या कलि में जासे होय निवेरो ॥ सूर कहा कहे द्विविध आँधरो बिना मोल को चेरो ॥ ६३६ ॥

राग भैरव।

सुमिर मन गोपाल लाल सुंदर अति रूप जाल मिटिहैं जंजाल सकल निरखत संग गोपबाल ॥ मोर मुकुट शीश धरे वन-माला सुभग गरे सबको मन हरे देख कुंडलकी झलक गाल ॥ आभूषण अंग सोहे मोतिनके हार पोहे कंठ सिरि मोहे हग गोपी निरखन निहाल ॥ छीत स्वामी गोवर्द्धन धारी कुँवर नंद सुवन गाइनके पाछे २ धरत हैं लटकीली चाल ॥ ६३७ ॥

राग देश।

चार बरन में सोई बडा जिन राधाकृष्णा रटा रटा ॥ काहेको जोडे माल खजाने काहेको छावत ऊंची अटा ॥ जब यमकी तलबी आवेगी छोडजाय सब लटा पटा ॥ यह दम हीरालाल

अमोलिक पल पल जाता घटा घटा ॥ वहां आया कौल करार कर यहां फिरता तू नटा नटा ॥ अपने कुटुंबको ऐसा देखे पलक उठाये पटा पटा ॥ जब तेरा हंसा चल्या जात है छोड जाय तू राजपटा ॥ यह संसार मतलब का गरजी बातां करता झूँठमठा ॥ चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि कानन कुंडल मुकुट जटा ॥ ६३८ ॥

राग होरी जंगला ।

कैसे होरी खेलों पिया संग दुबिधा रार मचाय रही रे ॥ पांच पचीसों फाग रच्योहै ममता रंग बनाय रही रे ॥ नाचत लाज कर्म के आगे संशय भाव बताय रही रे ॥ करके शृंगार कुमति बैठी भर्मके घुँघुरू बजाय रही रे ॥ यह तीनों ताल मृदंग बजावें मैं मैं रागिनी छाय रही रे ॥ कपट कटोरा मधु विष भर २ तृष्णा मन को छकाय रही रे ॥ याहि जीवको वश कर अपने हंसको काग बनाय रही रे ॥ जान बूझके सुनो भाई साधो संत जना ने पीठ दई रे ॥ दास कबीर कहें कर जोरी हमरी तो ऐसीही बीत गई रे ॥ ६३९ ॥

राग चौबोला ।

कोइ हाल मस्त कोइ माल मस्त कोइ तूती मैना सूये में ॥ कोइ खान मस्त पहिरान मस्त कोइ राग रागनी धूये में ॥ कोइ अमल मस्त कोइ रमल मस्त कोइ सतरंज चौपड जूये में ॥ इक २ मस्ती बिन और मस्त सब गिरे अविद्या कूये में ॥ ६४० ॥

कोइ अकल मस्त कोइ शकल मस्त कोई चंचलताई हांसी में ॥ कोइ वेद मस्त कोइ तिब्ब मस्त कोइ मक्केमें कोइ काशी में ॥

कोइ ग्राम मस्त कोइ धाम मस्त कोइ सेवक में कोइ दासी में ॥
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब फँसे अविद्या फाँसी में ६४१॥

कोइ पाट मस्त कोइ ठाट मस्त कोइ भैरव में कोइ काली में ॥
कोइ ग्रंथ मस्त कोइ पंथ मस्त कोइ श्वेत पीत रँग लाली में ॥
कोइ काम मस्त कोइ खाम मस्त कोइ पूरण में कोइ खाली में ॥
इक खुद मस्ती बिन और मस्तसब बँधे अविद्या जाली में६४२॥

कोइ हाट मस्त कोइ घाट मस्त कोइ बन पर्वत ऑजारा में ॥
कोइ जात मस्त कोइ पांत मस्त कोइ तात भ्रात सुत दारा में ॥
कोइ कर्म मस्त कोइ धर्म मस्त कोइ मसजिद ठाकुरद्वारा में ॥
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब बहे अविद्या धारामें॥६४३॥

कोइ राज मस्त गज वाजि मस्त कोइ छप्पर में कोइ फूले में ॥ कोइ युद्ध मस्त कोइ क्रुद्ध मस्त कोइ खड्ग कुठार बसूले में ॥ कोइ प्रेम मस्त कोइ नेम मस्त कोइ छींके में कोइ झूले में ॥
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब पडे अविद्या चूले में॥६४४॥

कोइ साक मस्त कोइ खाक मस्त कोइ खासे में कोइ मलमल में ॥ कोइ योग मस्त कोइ भोग मस्त कोइ स्थिति में कोइ चलचल में ॥ कोइ ऋद्धि मस्त कोइ सिद्धि मस्त कोइ लेन देन की गल गल में ॥ इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब फँसे अविद्या दलदल में ॥ ६४५ ॥

कोइ ऊर्द्ध मस्त कोइ अधो मस्त कोइ बाहरमें कोइ अंतरमें ॥
कोइ देश मस्त बिदेश मस्त कोइ औषधि में कोइ मंतर में ॥
कोइ आप मस्त कोइ ताप मस्त कोइ नाटक चेटक तंतर में ॥
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब भ्रमे अविद्या जंतर में ६४६॥

कोइ सुष्ट मस्त कोइ तुष्ट मस्त कोइ दीरघ में कोइ छोटे में ॥ कोइ गुफा मस्त कोइ सुफा मस्त कोइ तूँबे में कोइ लोटे में ॥ कोइ ज्ञान मस्त कोइ ध्यान मस्त कोइ असली में कोइ खोटे में॥ इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब रहे अविद्या टोटे में ॥६४७॥

यह लौकिक मस्त कहाँ लौं वरणों हैं मायाके दंगल में॥ कौन करै तिनकी गिनती मन जकडे हैं दृढ संगल में ॥ छिनमें रुष्ट तुष्ट इक छिनमें स्थिती सदा अमंगल में ॥ इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब भूले अविद्या जंगल में ॥ ६४८ ॥

शब्द ।

नर तीव्र भयो वैराग तो मान अपमान क्या ॥ जान्यो अपना आप तो वेद पुराण क्या ॥ खुदमस्ती कर मस्त तो मदिरा पान क्या ॥ किचा जिनको देह अध्यास तो आतमज्ञान क्या ६४९॥

वीतरागको संसारकी लोड़ क्या ॥ तृणवत जान्यो जगत तो लाख करोड क्या ॥ चाह रज्जू सों बँध्यो तो फेर मरोड़ क्या ॥ किचा भ्रांति साथ विवाद तो फिर होड क्या ॥ ६५० ॥

ततपद त्वंपद अर्थ भली विधि जानिये ॥ वाच्य लक्ष्य का भेद युगल पहिचानिये ॥ विरोधी अंश को त्याग अविरोधी मेलिये ॥ किचा या विधि भव संसार युगत सों हेलिये॥६५१॥

राग कान्हरा ।

होन सो जो रघुनाथ ठटी ॥ पच पच रहे सिद्ध अरु साधक मुनि नरहू नर्धी न घटी॥योगी योग धरत मन अपने शिर पर राख जटी ॥ ध्यान धरत महादेव अरु ब्रह्मा तिनहू पै न घटी ॥ यती

तपी तापस आराधे कोऊ पुनि रहै व्रती ॥ सूरदास भगवंत भजन बिन कर्म फास न कटी ॥ ६९२ ॥

राग बिलावल।

रे मन जन्म पदारथ जात ॥ बिछुरे मिलन बहुरि कब ह्वै है ज्यों तरुवरके पात॥ सुनत बात कफ कंठ विरोधी रसना टूटी बात ॥ प्राण लिये यम जात मूढ़ मति देखत जननी तात ॥ छिन इक माहिं कोटि युग बीतत पीछे नरककी बात ॥ यह जग प्रीति सुआ सेमरको चाखत ही उडि जात ॥ यमके फंद नहीं पड़ बौरे चरणन चित्त लगात ॥ कहत सूर वृथा यह देही अंतर क्यों इतरात ॥ ६९३ ॥

राग रामकली।

अपनो आप मैंने जो बिसरयो ॥ जैसे श्वान कांच मंदिर में भ्रमि भ्रमि भूंकि मरयो ॥ ज्यों केहरि प्रतिबिंब देखके आपन कूप परयो ॥ जैसे गज लखि फटिक शिलामें दशनन जाय अरयो॥ मर्कट मूँठ छांड नहिं दीनी घर घर भ्रमत फिरयो ॥ सूरदास नलिनीको सुअना कहु कौने पकरयो ॥ ६९४ ॥

राग भूपाली।

विश्वपतीके ध्यानमें जिसने लगाई हो लगन ॥ क्यों न हो उसके शांती क्यों न हो उसका मन मगन ॥ काम क्रोध लोभ मोह शत्रु हैं सब महाबली ॥ इनके हननके वास्ते जितना हो तुझसे कर यतन ॥ ऐसा बना सुभावको चित्तकी शान्तीसे तू ॥ पैदा न ईर्षाकी आंच दिलमें करे कहीं जलन ॥ मित्रता सबसे मनमें रख त्यागके वैर भावको ॥ छोंडदे टेढ़ी चालको ठीक कर अपना तू चलन ॥ जिससे अधिक न है कोई जिसने रचा है यह जगत ॥

उसकाही रख तू आसरा उसकी ही तू पकड शरन ॥ छोडके राग द्वेषको मनमें तू उसका ध्यान कर ॥ तुझपै दयाल होवेंगे निश्चय है यह परमात्मन् ॥ जैसा किसीका हो अमल वैसाही पाता है वह फल ॥ दुष्टोंको कष्ट मिलताहै शिष्टों का होना दुख हरन ॥ आप दया स्वरूप हैं आपहीका है आसरा ॥ किरपा दृष्टि कीजिये मुझपै हो वक्त जब कठिन ॥ मनमें हो मेरे चांदना मोक्षका रस्ता मिले ॥ मारके मनजो केवला इंद्रियों को करै दमन ॥ ६५५ ॥

अथ रागरत्नाकरकी आरती ।

जय जगदीश हरे ॥ भक्त जनोंके संकट छिनमें दूर करे ॥ जो ध्यावे फल पावे दुख विनशे मन का ॥ सुख संपति गृह आवे कष्ट मिटे तन का ॥ मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी ॥ तुम विन और न दूजा आश करूं जिसकी ॥ तुम पूरण परमात्मा तुम अंतर यामी ॥ पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी ॥ तुम करुणाके सागर तुम पालनकरता ॥ मैं मूरख खल कामी कृपा करो भरता ॥ तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपती ॥ किस विधि मिलूं गुसाईं तुमको मैं कुमती ॥ दीनबंधु दुखहरता ठाकुर तुम मेरे ॥ अपने हाथ उठावो द्वार पड़्या तेरे ॥ विषय विकार मिटावो पाप हरो देवा ॥ श्रद्धा भक्ति बढ़ावो सन्तनकी सेवा ॥ ६५६ ॥

जय सच्चिदानन्द ॥ ॐ तत सत ॥

इति श्रीरागरत्नाकरे चतुर्थभागसम्पूर्णम् ॥

समाप्तोऽयं ग्रंथः ।

छन्द ।

रामकृष्ण रस रसिक चकोरहु पियहु मधुर रस अमी अघाय ॥
जाते क्षुधा तृषा नहिं लागे कोह मोह रुज जाय नशाय ॥
पियतहि जगै भक्ति उर प्रभुकी कलिमल भगे लगे नहिं देर ॥
भवनिधि तरन उपाय अन्य जग यहि ते सुलभ न दूसर हेर ॥
कृत युग ध्यान यज्ञ त्रेता महँ द्वापर किये चरणकी सेव ॥
जो गति लहत जीव सो कलिमहँ प्रभु गुण गाय सहजमहँ लेव ॥
रागनको भंडार ग्रंथ यह अति उदार लखि सज्जन वृन्द ॥
पढैं सुनैं गावैं लव लावैं पावैं परम ब्रह्म आनंद ॥
बाल चरित्र कृष्ण रघुवरको लीला ललित लिखी यहि माहिं ॥
अहै गायकनको जीवन धन भगतन भगति सिंधु शक नाहिं ॥
मति अनुसार सुधारि यथा विधि रामकृष्ण पदरज लवलीन ॥
शोधन कियो वंदि कवि याकहँ जस कछु प्रभु उर प्रेरण कीन ॥
खेमराजकी विनय कान करि धरि उर ध्यान गुनहिं मतिमान ॥
भूल चूक लखि करहिं क्षमापन प्रभु गुण ग्रथित ग्रंथ यह जान ॥

आपका कृपाभिलाषी–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम) मुद्रणालयाध्यक्ष-मुम्बई.

जाहिरात।

(संगीत–राग गद्य पद्य क...

सूरसागर–सूरदासजीकृत संपूर्ण भ... होस्कंध विविध प्रकारके रागरागिनियोंमें भक्तगण ... करने योग्य अतिललित माधुरी भाषा संयुक्त ....॥) ६)

भजनामृत सागर–इसमें मगल गौरी होली जयध्वनी पद विनय आरती इत्यादि अनेक भजन हैं भगवत् भक्तोंके वास्ते अति उत्तम है. ॥|=)

ब्रजविहार–वृन्दावन निवासी श्रीनारायणस्वामी जी कृत इसमें श्रीकृष्णचंद्र आनंदकंद वृन्दावनविहारी तथा श्रीवृष–भानु नंदनी राधे महरानीकी संपूर्ण लीलाओंका वर्णन सुन्दर अनेक प्रकारके भजन दोहे कवित्त और वार्तिकमें अति मधुर–तासे किया गया है. २)

अनुभवरस–इस ग्रंथमें वृन्दावनविहारी आनन्दकन्द कृष्णचन्द्रजी की परम मनोहर अनेक लीलायें यथाक्रम राग रागिनियोंमें वर्णित हैं, विलायती कपडे की जिल्दसहित १।)

शैवमनोरंजनी–शिवभक्ति देवीसहाय इत्यादि भक्तनके अपूर्व भजन राग रागिनीमें वर्णित है. ।)

भजनमनोरंजनी–अर्थात् इसमें अतिमनोहर भजन कवित्त दोहा सवैया स्तोत्र आदि अत्यंत सुन्दर पद हैं.

सम्पूर्ण पुस्तकोंका "बडा सूचीपत्र" अलग है मँगालीजिये।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम) प्रेस–बंबई.